CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महापुरुषों के जन्मदिन (१ जन.'८८ से ६ अप्रै.'८९ ई. तक)

महापुरुष	तारीख सन् १९८८ ई. वार	महापुरुष	तारीख सन् १९८८ ई. वार
स्वामी विवेकानन्द जी	११ जन. चं.	गोस्वामी श्री तुलसी दास	२० अग. श.
श्री स्वामी रामानन्दाचार्य	११ ,, चं.	श्री महात्मा गांधी	२ अक्टू. र.
नेताजी सुभाष	२३ ,, श.	श्री माध्वाचार्य	२० ,, गु.
लाला लाजपतराय	[illegible] ,, [illegible]	श्री जवाहर लाल नेहरू	१४ नवं. चं.
श्री गुरु रविदासजी	२[illegible] फर. मं.	श्री वीर वैरागी	२१ ,, चं.
श्री रामकृष्ण परमहंस	१[illegible] ,, शु.	भगवान् श्री सत्य साईबाबा जी	२३ ,, बु.
श्री चैतन्य महाप्रभु	[illegible] मार्च गु.	सन् १९८९ ई	
श्री वल्लभाचार्य ज.	१२ अप्रै. मं.	नेताजी सुभाष	२३ जन. चं.
श्री छत्रपति शिवाजी	१८ ,, [illegible]	लाला लाजपतराय	२८ ,, श.
जगद्-गुरु श्री शंकराचार्य	२१ ,, गु.	स्वामी विवेकानन्द जी	२९ ,, र.
श्री रामानुजाचार्य (उ. भारत)	२२ ,, शु.	श्री स्वामी रामानन्दाचार्य	२९ ,, र.
महाकवि श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर	७ मई श.	श्री गुरु रविदासजी	२० फर. चं.
श्री महाराणा प्रताप	१७ जून शु.	श्री रामकृष्ण परमहंस	९ मार्च गु.
लोकमान्य बा. गंगाधर तिलक	२३ जुला. श.	श्री चैतन्य महाप्रभु	२२ ,, बु.

सिक्खों के गुरुपर्व (१ जन.'८८ से ६ अप्रै.'८९ ई. तक)

अवतार दिन	ता. स. १९८८ ई. वार
श्री गुरु हरराय जी	३१ जन. र.
,, ,, तेग बहादुर जी	७ अप्रै. गु.
,, ,, अर्जुन देव जी	९ ,, श.
,, ,, अंगद देव जी	१७ ,, र.
,, ,, अमरदास जी	३० ,, श.
,, ,, हरगोबिन्द जी	३० जून गु.
,, ,, हरकिशन जी	६ अग. श.
,, ,, रामदास जी	२६ अक्टू. बु.
,, ,, नानक देव जी	२३ नवं. बु.
सन् १९८९ ई.	
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	१४ जन. श.

गुरयाई मिली	सन् १९८८ ई.
श्री गुरु हरराय जी	१६ मार्च बु.
,, ,, अमरदास जी	१८ ,, शु.
,, ,, तेग बहादुर जी	१ अप्रै. शु.
,, ,, हरगोबिन्द जी	९ मई चं.
,, ,, अर्जुन देव जी	१३ सितं. मं.

गुरयाई मिली	सन् १९८८ ई.
श्री गुरु रामदास जी	२४ सितं. श.
,, ,, अंगद देव जी	३० ,, शु.
,, ,, हरकिशन जी	२ नवं. बु.
,, ,, गोबिन्द सिंह जी	१२ दिसं. चं.
सन् १९८९ ई.	
श्री गुरु हरराय जी	४ अप्रै. मं.

ज्योति ज्योति समाए	सन् १९८८ ई.
श्री गुरु अंगद देव जी	२१ मार्च चं.
,, ,, हरगोन्न्दि जी	२२ ,, मं.
,, ,, हरकिशन जी	१ अप्रै. शु.
,, ,, अर्जुन देव जी	१८ जून श.
,, ,, रामदास जी	१४ सितं. बु.
,, ,, अमरदास जी	२५ ,, र.
,, ,, नानक देव जी	५ अक्टू. बु.
,, ,, हरराय जी	२ नवं. बु.
,, ,, गोबिन्द सिंह जी	१४ ,, चं.
,, ,, तेग बहादुर जी	१३ दिसं. मं.

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)

(१ जन. '८८ से ६ अप्रैल १९८९ ई. तक)

प्रारम्भ काल तारीख	घं. मि.	समाप्ति काल तारीख	घं. मि.	प्रारम्भ काल तारीख	घं. मि.	समाप्ति काल तारीख	घं. मि.
६ जन. '८८	१४।१०	८ जन. '८८	२०।२२	३० अग. '८८	१।३७	३१ अग. '८८	२१।४२
१६ ,, ,,	५। ५	१८ ,, ,,	१। ५	८ सितं. ,,	४।३३	१० सितं. ,,	१०।३९
२४ ,, ,,	७।३७	२६ ,, ,,	६।४८	१८ ,, ,,	३।२६	२० ,, ,,	३।४५
२ फर. ,,	२०।३२	५ फर. ,,	२।४०	२६ ,, ,,	१२।२७	२८ ,, ,,	७।२९
१२ ,, ,,	१४।३०	१४ ,, ,,	११।४७	५ अक्टू. ,,	१०।४७	७ अक्टू. ,,	१६।५४
२० ,, ,,	१७। ४	२२ ,, ,,	१४।३६	१५ ,, ,,	९। १	१७ ,, ,,	१०। ०
१ मार्च ,,	२।४३	३ मार्च ,,	८।५१	२३ ,, ,,	२३।१४	२५ ,, ,,	१८।२०
१० ,, ,,	२१।२०	१२ ,, ,,	२०। ९	१ नवं. ,,	१८। २	३ नवं. ,,	२३।५४
१९ ,, ,,	४। ४	२१ ,, ,,	०।३०	११ ,, ,,	१४।५२	१३ ,, ,,	१५।२२
२८ ,, ,,	९।२५	३० ,, ,,	१५।३५	२० ,, ,,	८। ०	२२ ,, ,,	४।१३
७ अप्रै. ,,	२।४९	९ अप्रै. ,,	२। ९	२९ ,, ,,	२।२८	१ दिसं. ,,	७।४६
१५ ,, ,,	१४।२२	१७ ,, ,,	१०।५४	८ दिसं. ,,	२२।२८	१० ,, ,,	२२। १
२४ ,, ,,	१६।५६	२६ ,, ,,	२३। ४	१७ ,, ,,	१४।१४	१९ ,, ,,	११।४३
४ मई ,,	८।५४	६ मई ,,	७।३७	२६ ,, ,,	११।२०	२८ ,, ,,	१६। ५
१२ ,, ,,	२२।२८	१४ ,, ,,	१९।५९	५ जन. '८९	७।४७	७ जन. '८९	६।५८
२२ ,, ,,	१। १	२४ ,, ,,	७। १	१३ ,, ,,	१९।३६	१५ ,, ,,	१७।१५
३१ ,, ,,	१६।४२	२ जून ,,	१४।२५	२२ ,, ,,	१९।३०	२५ ,, ,,	०। ६
९ जून ,,	४।२५	११ ,, ,,	२।५४	१ फर. ,,	१७।२९	३ फर. ,,	१७।२१
१८ ,, ,,	९। ०	२० ,, ,,	१४।५१	१० ,, ,,	२।४२	११ ,, ,,	२३। ९
२८ ,, ,,	२। २	२९ ,, ,,	२३।१४	१९ ,, ,,	२।१६	२१ ,, ,,	७।१२
६ जुलाई ,,	९।४९	८ जुलाई ,,	८।२४	१ मार्च ,,	१।५८	३ मार्च ,,	३।१२
१५ ,, ,,	१६।१५	१७ ,, ,,	२२। ५	९ ,, ,,	१२।३१	११ ,, ,,	७।२३
२५ ,, ,,	११।४५	२७ ,, ,,	९।२४	१८ ,, ,,	८। ५	२० ,, ,,	१३।२४
२ अग. ,,	१६।३३	४ अग. ,,	१४। ९	२८ ,, ,,	८।३८	३० ,, ,,	११। २
११ ,, ,,	२२।३८	१४ ,, ,,	४।३३	५ अप्रै. ,,	२३।४४		
२१ ,, ,,	२०।२९	२३ ,, ,,	१९।२४				

पंचक का प्रारम्भ और समाप्ति काल (१ जन. '८८ से ६ अप्रैल '८९ ई. तक)

प्रारम्भ काल तारीख	घं. मि.	समाप्ति काल तारीख	घं. मि.	प्रारम्भ काल तारीख	घं. मि.	समाप्ति काल तारीख	घं. मि.
२१ जन. '८८	२।५५	२५ जन. '८८	६।५२	२३ सितं. '८८	१०।११	२७ सितं. '८८	९।४७
१७ फर. ,,	१४।१८	२१ फर. ,,	१५।२९	२० अक्टू. ,,	१८।५७	२४ अक्टू. ,,	२०।४३
१६ मार्च ,,	१। ४	२० मार्च ,,	२। १	१७ नवं. ,,	१।१५	२१ नवं. ,,	६। ७
१२ अप्रै. ,,	९।२७	१६ अप्रैल ,,	१२।२९	१४ दिसं. ,,	६।३६	१८ दिसं. ,,	१२।५७
९ मई ,,	१५।२७	१३ मई ,,	२१। ८	१० जन. '८९	१३।३४	१४ जन. '८९	१८।१८
५ जून ,,	२०।५४	१० जून ,,	३।३३	६ फर. ,,	२३।१०	११ फर. ,,	०।४४
३ जुला. ,,	३।४४	७ जुला. ,,	८।५५	६ मार्च ,,	१०।१७	१० मार्च ,,	९।४७
३० ,, ,,	१२।५०	३ अग. ,,	१५। ४	२ अप्रैल ,,	२०।४२	६ अप्रै. ,,	२०।४२
२६ अग. ,,	२३।३२	३० ,, ,,	२३।२३				

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुम्भ महापर्व प्रयागराज (६ फरवरी १९८९ ई०)

"कुम्भ पर्व का उद्गम, माहात्म्य एवं स्नान तिथियां"

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ-साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जो ऐहलौकिक और पारलौकिक दोनों दृष्टियों से महत्त्व रखता है। वो शारीरिक और आत्मिक शुद्धि पर समानरूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भ पर्वों का स्थान विशालता और अलौकिक-माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रति तीन-२ वर्षों के अन्तर पर हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह आकृष्ट करने के लिए भारत ही नहीं समस्त विश्व में विख्यात हैं। यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बड़े 'जनसंगम' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भ पर्व भी ग्रहों की राशि-नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। ये कुम्भ पर्व सूर्य, गुरु और चन्द्र की ही विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करते हैं।

प्रयाग (इलाहाबाद) का कुम्भ पर्व, जो विशाल जन सम्मर्द को आकृष्ट करने में विश्व के किसी भी धार्मिक या अन्य मेले से कहीं आगे है, वृषस्थ गुरु और मकरस्थ सूर्य के काल में माघी अमा के दिन मनाया जाता है।—

मकरस्थे दिवानाथे वृषराशिगते गुरौ। प्रयागे कुम्भ योगो वै माघमासे विधुक्षये ॥

इस वर्ष (स. २०४५ वि.) में भी माघी अमा चन्द्रवार (६ फरवरी १९८९ ई०) को सूर्य मकर में और गुरु वृष में होगा। अतः इस दिन प्रयागराज में कुम्भपर्व का योग है। उ. प्र. सरकार ने इस कुम्भ मेले के लिए करोड़ों रुपये व्यय करके धार्मिक श्रद्धालुओं के आवास स्नान आदि की विस्तृत व्यवस्था की है। मेले के आयोजक अधिकारियों का अनुमान है कि इस वर्ष प्रयागराज कुम्भ महा पर्व पर लगभग एक करोड़ व्यक्ति सम्मिलित होंगे। आध्यात्मिक और अधिभौतिक दुःखों से मुक्ति के इच्छुक लोग इस मेले में लाखों वीतराग आत्मज्ञ महात्माओं के दर्शन और उपदेशों द्वारा अपने आपको कृतकृत्य कर सकेंगे। यह कुम्भ मेला लगभग एक मास तक (पूरा माघ मास) चलता है, क्योंकि तीर्थ स्थान पर विशेषतः 'त्रिवेणी संगम' पर 'माघस्नान' माहात्म्य की शास्त्रों में भारी चर्चा है। यहां हम श्रद्धालु पाठकों के लिए इस कुम्भ पर्व के उद्गम, माहात्म्य, स्नानदिन तथा कुम्भ पर्व के अवसर पर किए जाने योग्य दानादि धर्मकृत्यों पर विस्तृत प्रकाश डालेंगे।

कुम्भ पर्व क्यों मनाये जाते हैं ?

समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृत प्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक में छिपाया गया। इन चारों स्थलों पर अमृतकलश से अमृत के बिन्दु छलक कर गिरे। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक-२ बार कुम्भ पर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुर संग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की। यही कारण है इन दोनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भ पर्व मनाए जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि—दैत्य-देवों की छीना-झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदे हरिद्वार आदि में गिरीं, इसीलिए इन स्थलों पर कुम्भ पर्व मनाए जाते हैं।

प्रयाग कुम्भ पर्व (६ फरवरी १९८९ ई०) की स्नान तिथियां

पौष शुक्ल एकादशी से माघ शुक्ल एकादशी, पौषी पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा तक (पूरा चान्द्र माघ मास) अथवा मकर संक्रांति से कुम्भ संक्रांति तक (पूरा सौर माघ मास) प्रतिदिन प्रातः किसी भी नदी, तालाब, तीर्थ पर स्नान करने का बड़ा माहात्म्य है;—

माघ स्नाने च यः स्नायान्नैरन्तर्येण भारत। पौण्डरीक फलं तस्य दिवसे दिवसे भवेत् ॥

गंगा-यमुना एवं सरस्वती जैसी पावन नदियों के संगम (त्रिवेणी) में तो माघ स्नान का माहात्म्य ही अलौकिक है, इस मासावधि चलने वाले माघस्नान की कुछ तिथियां तो विशेष योगों के सम्बन्ध के कारण बहुत ही पवित्र मानी गई है। कुम्भ मेले में एक मास तक प्रयाग वास करने वाले श्रद्धालुओं को इन तिथियों में त्रिवेणी संगम पर स्नान करने से विशेष पुण्यलाभ होगा। यहां हम उन सभी तिथियों का विवरण दे रहे हैं जो विशेष योग या योगों के कारण इस प्रयाग कुम्भ पर त्रिवेणी संगम में स्नान के लिए विशेष माहात्म्य रखती हैं। इस कुम्भ पर्व की स्नान तिथियां इस प्रकार हैं—

प्रथम स्नान तिथि—इस कुम्भ पर्व का सर्वप्रथम स्नान पौष शुक्ल षष्ठी शुक्रवार (१३ जनवरी १९८९ ई०) मकर संक्रांति के दिन होगा। इस दिन त्रिवेणी में स्नान करना पुण्यदायक है। सौरमास की दृष्टि से यह माघस्नान की पहली तिथि है।

द्वितीय स्नान तिथि—पौष शुक्ल सप्तमी शनिवार (१४ जनवरी १९८९) को सारा दिन प्रातः से सूर्यास्त तक मकर संक्रांति का पुण्यकाल होगा। इस दिन प्रातः त्रिवेणी संगम में स्नान का माहात्म्य १३ जनवरी '८९ वाले स्नान से कहीं अधिक है।

तृतीय स्नान तिथि—पौष शुक्ल एकादशी मंगलवार (१७ जनवरी '८९) को भी एकादशी में स्नान दान पुण्यप्रद होगा। एक परम्परा के अनुसार माघस्नान का आरम्भ इसी तिथि को किया जाता है।

चतुर्थ स्नान तिथि—पौषी पूर्णिमा शनिवार (२१ जनवरी '८९) के दिन भी त्रिवेणी में स्नान से पुण्यलाभ होगा। पूर्णिमा तिथि स्नानदानादि के लिये विशेष पुण्यप्रदा मानी गई है; क्योंकि चान्द्र गणनानुसार माघ मास के स्नान का आरम्भ इसी दिन होता है। शास्त्र कहते हैं कि—अपनी परम्परा के अनुसार पौष शुक्ल एकादशी या पौषी पूर्णिमा को माघ स्नान आरम्भ करना चाहिये।

पंचम स्नान तिथि—माघ कृष्ण चतुर्दशी रविवार (५ फरवरी '८९) को सायं ३ घं. ५९ मि. से ६ फर.'८९ के सूर्योदय तक 'अर्धोदय योग' बन रहा है, जो प्रयाग जैसे तीर्थ पर दुर्लभ है। इस योग में स्नान जपदानादि का विशेष माहात्म्य धर्मशास्त्रकारों ने लिखा है।

माघामायां व्यतीपाते आदित्ये विष्णु दैवते। अर्धोदयं तदित्याहुः सहस्त्रार्क ग्रहैः समम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुम्भ पर्व की प्रमुख स्नान तिथि—माघी अमावस चन्द्रवार (६ फरवरी' ८९) के दिन गुरु वृष में सूर्य मकर में होगा। इसलिए इस दिन प्रयागराज में कुम्भ पर्व का योग होने से त्रिवेणी संगम पर स्नान करने से परम पुण्य लाभ होगा। इसी दिन पुण्यदर्शन मठाधीशों, शंकराचार्यों एवं संत महात्माओं का शाही स्नान होगा। शास्त्रों का कहना है कि इस कुम्भ योग में त्रिवेणी-संगम पर स्नान दान से जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है और विगत कल्पपर्यन्त (४,३२,००,००,००० वर्षों में) किए गए सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

काश्याः शतगुणं प्रोक्त गंगा-यामुनसंगमे। सहस्रगुणिता सापि भवेत्पश्चिमवाहिनी ॥
पश्चिमाभिमुखी गंगा कालिन्द्या सह संगता। हन्ति कल्पकृतं पापं सा माघे नृप दुर्लभा ॥

ध्यान रहे—इस वर्ष सोमवती अमावस, अर्धोदय एवं महोदय योग भी कुम्भ प्रमुख स्नान के दिन मिल रहे हैं, जिससे इस कुम्भ पर्व का माहात्म्य कई गुना अधिक हो गया है। सोमवती अमावस के स्नान का माहात्म्य तो इस तिथि को पूरा दिन होगा ही, अर्धोदय योग भी इस दिन सूर्योदय से पहले विद्यमान होगा। इस समय संभव हो तो त्रिवेणी में, अन्यथा अन्यत्र गंगा-यमुना में, स्नान करके महापुण्य अर्जित किया जा सकता है। इसी दिन दोपहर के ११ बजकर ४३ मिनट तक महोदय योग भी बनता है, जिसका माहात्म्य अर्धोदय योग से कुछ ही कम माना गया है। इस योग की कालावधि में यथा संभव त्रिवेणी आदि में स्नान से पुण्यलाभ प्राप्त करें। यदि भीड़ के कारण इस योग की कालावधि में त्रिवेणी में स्नानावसर न मिले तो अन्यत्र गंगा-यमुना आदि में भी स्नानदानादि से इस योग के माहात्म्य का लाभ उठाया जा सकता है।

सप्तम स्नान तिथि—माघ शुक्ल सप्तमी रविवार (१२ फर. १९८९ ई.) को कुम्भ संक्रांति के पर्व में त्रिवेणी संगम में स्नान करके दानादि पूर्वक पुण्यलाभ करें; यह तिथि कुंभ संक्रमण के साथ ही 'रथ सप्तमी' और 'महाजया सप्तमी' के कारण और भी पुण्यदायक बन गई है। रथ सप्तमी के दूसरे दिन सूर्योदय से पहले अरुणोदय वेला में स्नानदान से करोड़ों सूर्य ग्रहणों के समय किए गए स्नानादि से उत्पन्न पुण्य के समान पुण्य की प्राप्ति होती है; ऐसा शास्त्र कहते हैं—

अरुणोदयवेलायां शुक्ला माघस्य सप्तमी। प्रयागे यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा ॥

धर्मशास्त्र के इस वचन के अनुसार इस वर्ष १२ फरवरी को सूर्योदय से पूर्व अरुणोदय वेला में रथ सप्तमी के समय त्रिवेणी में अवगाहन करके महापुण्य संचय का समय आ रहा है। इसी दिन (१२ फर. १९८९ को) शुक्ला सप्तमी तिथि में कुम्भ संक्रांति होने से महाजया सप्तमी का योग भी है। महाजया सप्तमी के इस योग में जप स्नान दानादि से अपरिमेय पुण्य प्राप्त होता है; ऐसा शास्त्र वचन है—

शुक्लपक्षे तु सप्तम्यां यदा संक्रमते रविः। महाजया तदा स्याद्धि सप्तमी भास्करप्रिया ॥
स्नानं दानं तथा होमः पितृदेवादिपूजनम्। सर्वं कोटिगुणं प्रोक्तं भास्करस्य वचो यथा ॥

अष्टम स्नान तिथि—माघ शुक्ला एकादशी गुरुवार (१६ फर. '८९) को एकादशी की पुण्य तिथि में भी त्रिवेणी में स्नान पुण्यप्रद माना है। कुछ लोग परम्परानुसार इसी तिथि में माघ स्नान समाप्त मानते हैं। इस दिन भीष्म द्वादशी भी है।

नवम (अन्तिम) स्नान तिथि—माघी पूर्णिमा चन्द्रवार (२० फर. '८९) के दिन पूर्णिमा की पवित्र तिथि में इस कुम्भ महापर्व का अन्तिम स्नान होगा, क्योंकि चान्द्रमास के अनुसार माघी पूर्णिमा माघ स्नान की समापन तिथि है। "इस दिन सूर्यास्त के बाद खग्रास चूड़ामणि चन्द्र ग्रहण" भी होगा। ग्रहण कालावधि में त्रिवेणी स्नान तथा दान द्वारा विशेष पुण्यलाभ श्रद्धालुओं को मिलेगा। इसी स्नान के साथ प्रयागराज का कुम्भ मेला भी आगामी बारह वर्षों के लिए श्रद्धालु यात्रियों के साथ ही प्रयाग से विदाई ले लेगा।

ऊपर हमने छोटी-बड़ी सभी स्नान तिथियों की चर्चा की है। "इन स्नान तिथियों के अतिरिक्त माघ कृष्ण तृतीया बुधवार (२५ जन '८९) को संकट चतुर्थी, माघ शुक्ल पंचमी शुक्रवार (१० फर. '८९) को वसन्त पंचमी एवं माघ शु. अष्टमी चन्द्रवार (१३ फर. '८९) को भीष्माष्टमी के दिन भी त्रिवेणी में स्नान करना पुण्यदायक होगा।" संभव हो तो उपरोक्त सभी स्नान तिथियों को त्रिवेणी संगम स्थल पर स्नान करने का प्रयत्न करना चाहिए। जो लोग इस कुम्भ पर्व पर एक मास तक प्रयाग में वास करेंगे, वे तो पूरा माघ मास प्रतिदिन त्रिवेणी संगम में स्नान करेंगे ही।

जो प्रयागराज न जा सकें वे कैसे पुण्यलाभ करें ?

यदि कोई श्रद्धालु प्रयाग न जा सके तो वह माघ मास में अथवा केवल कुम्भ पर्व के दिन समीपस्थ किसी भी महानदी के संगम पर, वहां भी न जा सके तो किसी महानदी में, यहां भी न पहुंच सके तो किसी छोटी नदी में, वहां भी संभव न हो तो किसी समीपस्थ तालाब, बावड़ी में स्नान करें। यदि शारीरिक दुर्बलता आदि के कारण बावड़ी तक जाना भी संभव न हो तो घर पर ठण्डे पानी से, यदि रुग्णादि अवस्था में शीतल जल से भी स्नान करना कठिन हो तो गर्म जल से भी स्नान करके माघ स्नान का फल प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा दयालु शास्त्रकारों द्वारा सर्वविध असमर्थ श्रद्धालुओं को भी माघ स्नान का यथासंभव फल प्राप्त कराने के लिये उदार विकल्प दिए हैं। उल्लिखित असमर्थता की स्थिति में माघ स्नान मंत्र उच्चारण करते हुए प्रयागराज (त्रिवेणी-संगम) का ध्यान करके जहां कहीं भी स्नान करना चाहिये। समुद्र तटवर्ती लोगों को इस माघ मास में समुद्र स्नान करना चाहिए; क्योंकि शास्त्रों ने माघ में समुद्र स्नान को अतिप्रशस्त लिखा है—

यत्र कुत्रापि यो माघे प्रयाग स्मरणान्वितः। करोति मज्जनं तीर्थे स लभेद् गाङ्गमज्जनम् ॥

स्नान का काल

स्नान का सर्वोत्तम काल अरुणोदय काल है (सूर्योदय से पहले पूर्वी क्षितिज में जो प्रकाश नजर आता है उसे अरुणोदय कहते हैं।) अरुणोदय काल में भी स्नान के लिए वह समय सर्वोत्कृष्ट है जब तारे दिखाई पड़ रहे हों, इसके बाद सूर्योदय तक का काल जब तारे छुप चुके हों, अपेक्षाकृत कुछ कम महत्व का है। सूर्योदय के बाद प्रातः काल स्नान के लिए सामान्य माना गया है।

उत्तमं तु सनक्षत्रं लुप्ततारं तु मध्यमम्। सवितर्युदिते भूपततो हीनं प्रकीर्तितम् ॥

नारद पुराण में तो सूर्योदयानन्तर स्नान का माहात्म्य लिखा है;—

सम्प्राप्ते माघ मासे तु तपस्विजनवल्लभे। क्रोशन्ति सर्वं वारीणि समुद्गच्छति भास्करे ॥
पुनीमस्तस्य पापानि त्रिविधानि न संशयः।

कुम्भ पर्व के प्रमुख स्नान के दिन (६ फर. '८९ ई. को) तो अरुणोदय काल से लेकर सारा दिन सूर्यास्त तक त्रिवेणी में कभी भी स्नान किया जा सकता है; क्योंकि कुम्भ योग के कारण वह पूरा दिन पवित्र माना जाता है। यदि इस दिन किसी को अर्धोदय या महोदय पर्व के काल में स्नान का अवसर मिल जाए तो उसे विशेष भाग्यशाली समझना चाहिए।

[शेष पृष्ठ ११३ पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहण विवरण (सं. २०४५ वि.)

[गणितकर्त्ता—प्रियव्रत-शक्तिधर शर्मा]

इस वर्ष (वि. सं. २०४५ में) भूगोल पर निम्नांकित चार ग्रहण होंगे।

(१) खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण (२७ अगस्त १९८८ ई०)
(२) खग्रास चन्द्र ग्रहण (२० फरवरी १९८९ ई०)
(३) कंकण सूर्य ग्रहण (११ सितम्बर १९८८ ई०)
(४) खण्डग्रास सूर्य ग्रहण (७ मार्च १९८९ ई०)

इन ग्रहणों में से सूर्य ग्रहण ११ सितम्बर १९८८ ई० को तथा चन्द्र ग्रहण २० फर. १९८९ ई० को भारत में दृश्य होंगे। इनके अतिरिक्त २७ अगस्त १९८८ ई० को चन्द्र ग्रहण भारत के अन्तिम पूर्वी छोर नागालैण्ड आदि में ही दिखाई देगा। ७ मार्च १९८९ को सूर्य ग्रहण भारत में कहीं भी दृश्य न होगा।

भारत में दृश्य इन ग्रहणों का विवरण इस प्रकार है;—

(१) खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण (२७ अगस्त १९८८ ई०)

यह चन्द्र ग्रहण लगभग पूरे भारतवर्ष में दिखाई नहीं देगा। भारत के केवल अन्तिम पूर्वी छोर पर (पूर्वी-अरुणाचल, नागालेण्ड तथा मणिपुर में) चन्द्रमा ग्रस्त ही उदित होगा, चन्द्रोदय के होने पर १०-११ मिनट के बाद ही यह ग्रहण समाप्त हो जाएगा। वैसे तो यह ग्रहण भा.स्टॅं.टा. के अनुसार मध्याह्नोत्तर ३ बजकर ३५ मि. पर प्रारम्भ होगा और इसका मध्यकाल ४ बजकर ३४ मि. और ग्रहण-मोक्ष सायं ५ बजकर ३३ मि. पर होगा। इस प्रकार कुल पर्वकाल १ घण्टा ५८ मि. होगा। भारत में तो केवल अन्तिम पूर्वी कुछ भागों में चन्द्रमा का उदय ग्रहण समाप्त होने से कुछ ही मिनट (लगभग ११ मिनट से कम समय) पहिले होगा। अतः भारत के अन्तिम पूर्वी भाग में कुछ मिनट के लिए ही चन्द्रमा का मामूली सा भाग ग्रस्त देखा जा सकेगा। भारत से बाहर के पूर्वी देशों में यह अधिक समय के लिए दृश्य होगा। साथ दिए गए चित्र नं. १ में भारत का उत्तर-पूर्वी भाग दिखाया गया है। इस चित्र में 'क-ख' रेखा से बाईं ओर के देश-प्रदेशों में यह ग्रहण नहीं दीखेगा; क्योंकि यहां चन्द्रोदय से पहले ही यह ग्रहण समाप्त हो जाएगा और 'क-ख' रेखा के दाईं ओर स्थित देश-प्रदेशों में यह ग्रहण देखा जा सकेगा। चित्र में प्रदर्शित रेखा 'क-ख' देखने से स्पष्ट है कि यह ग्रहण भारत में पूर्वी अरुणाचल प्रदेश, पूर्वी आसाम और नागालैण्ड-मणिपुर के कुछ भागों में ही अधिक से अधिक १०-११ मिनट के लिए देखा जा सकेगा। इन प्रदेशों के भी उन भागों में जहां क्षितिज पर्वत श्रृंखला से ढका है, वहां यह ग्रहण नहीं दीखेगा। वहां ग्रस्त चन्द्रमा क्षितिज से ऊपर अवश्य होगा लेकिन क्षितिज में पर्वत श्रृंखला से वह आच्छन्न होगा अतः ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

ग्रहण का सूतक—क्योंकि यह ग्रहण पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., राजस्थान आदि में कहीं भी दिखाई नहीं देगा—अतः इन सभी प्रान्तों में इसका सूतक नहीं लगेगा और न ही इस का कोई माहात्म्य होगा। भारत के अन्तिम पूर्वी छोर आसाम, नागालैण्ड, मणिपुर आदि भागों में ही जहां यह ग्रहण दिखाई देगा वहां इस ग्रहण का सूतक २७ अगस्त को प्रातः ६ बजकर ३५ मिनट पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण राशि फल—ग्रहण कुम्भ राशि शतभिषा नक्षत्र पर होगा, अतः (भारत के अन्तिम पूर्वी छोर के निवासी) इस राशि वाले लोगों के लिए अशुभ होगा।

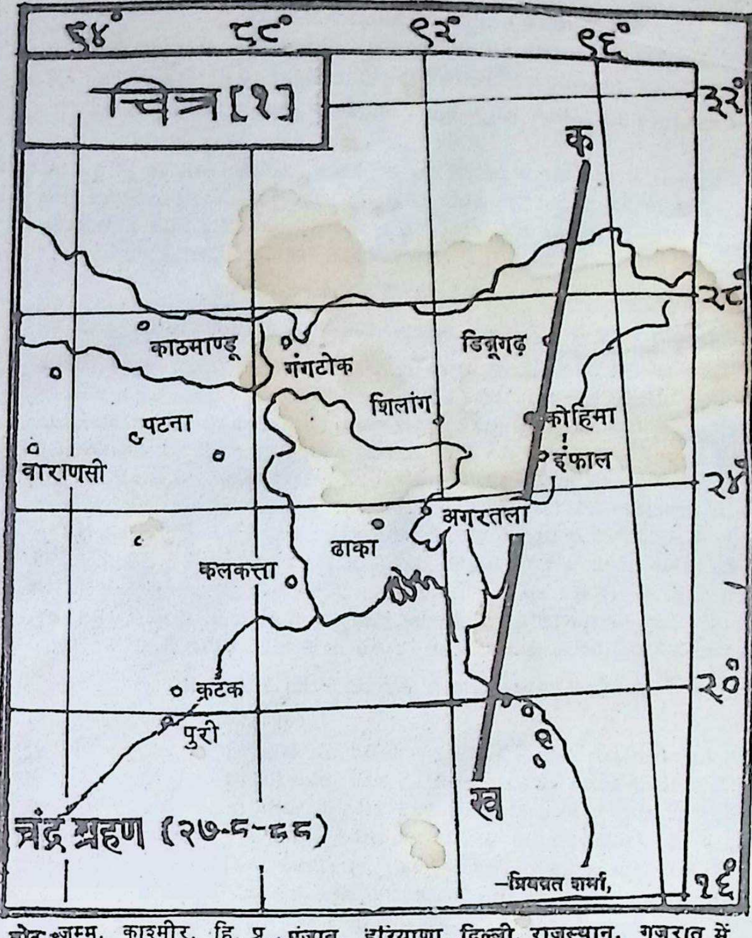

नोट: जम्मू, काश्मीर, हि. प्र., पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात में एवम् म. प्र., महाराष्ट्र और उ. प्र. आदि में यह ग्रहण नजर नहीं आएगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

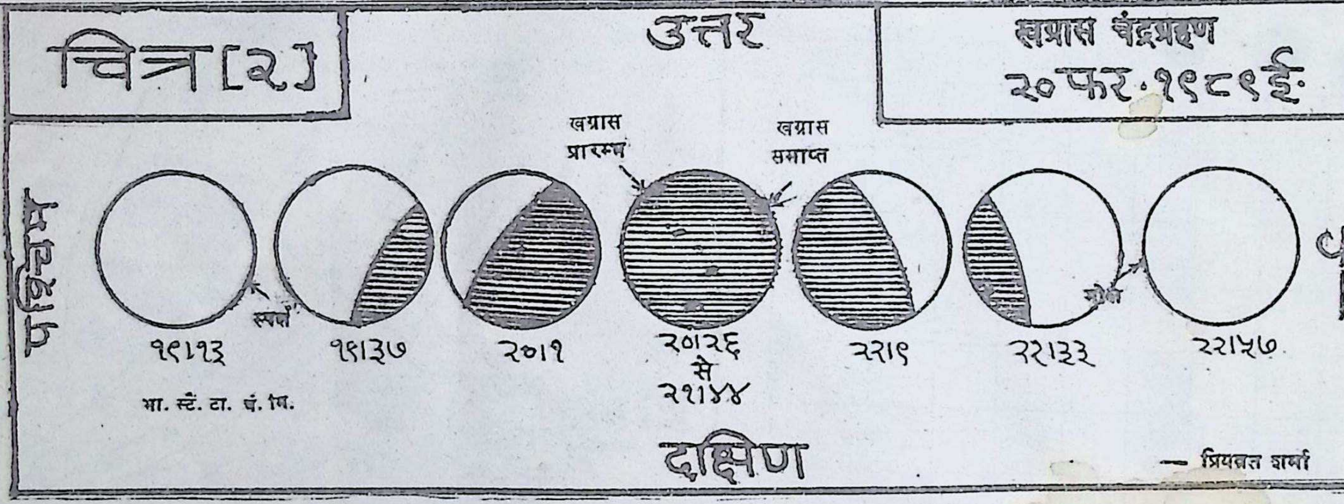

(२) खग्रास चूड़ामणि चन्द्रग्रहण (माघ शुक्ल पूर्णिमा, सोमवार, २० फर. '८९ ई.)

यह ग्रहण २० फरवरी सन् १९८९ ई० को भारत के सभी भागों में दृश्य होगा। ग्रहण सोमवार को होने से 'चूड़ामणि' योग बनता है। इस ग्रहण के प्रारम्भ और समाप्ति काल आदि नीचे दिए जा रहे हैं—

ग्रहण प्रारम्भ—सांय ७ घं. १३ मि.	**खग्रास समाप्त**—रात्रि ९ घं. ४४ मि.
खग्रास प्रारम्भ—रात्रि ८ घं. २६ मि.	**ग्रहण समाप्त**—रात्रि १० घं. ५७ मि.
ग्रहण मध्य—रात्रि ९ घं. ५ मि.	**पर्वकाल**—३ घं. ४४ मि.

यह ग्रहण पाकिस्तान के अन्तिम-पश्चिमी-छोर (लगभग ६१° पूर्वी रेखांश) पर ठीक चन्द्रोदय के समय ही प्रारम्भ होगा। पाकिस्तान के पश्चिम में स्थित इराक, ईरान, टर्की, अरब आदि सभी देशों में यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा; अर्थात् वहां चन्द्रोदय से पहिले ही ग्रहण लग जाएगा। भारत और पाकिस्तान के सभी प्रदेशों में तो यह ग्रहण प्रारम्भ से अन्त तक दिखाई देगा; अर्थात् इन देशों में यह ग्रस्तोदय नहीं है। इसी प्रकार यह ग्रहण भारत के अन्य पड़ोसी देश लंका, नेपाल, भूटान, वर्मा आदि में भी प्रारम्भ से अन्त तक देखा जा सकेगा।

चित्र नं. २ में ग्रहण के स्पर्श, मोक्ष, खग्रास एवं बीच की स्थितियों की आकृतियां तथा स्पर्श, मोक्ष एवं खग्रास प्रारम्भ-समाप्ति की दिशाएं प्रदर्शित की गई हैं। चित्र में आकृतियों के साथ-२ समय भारतीय स्टैंडर्ड टाईम (घं.-मि.) में दिया गया है। खग्रास स्थिति के नीचे २० घं. २६ मि. से २१ घं. ४४ मि. लिखा है। अर्थात् इस ग्रहण की खग्रास स्थिति रात्रि में ८ घं. २६ मि. से ९ घं. ४४ मि. तक (१ घं १८ मि. के लिए) रहेगी।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक २० फरवरी १९८९ ई० को दिन के १० बजकर १३ मि. पर प्रारम्भ होगा। ग्रहण के सूतक और ग्रहण के समय बूढ़े, बच्चे और रोगियों के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को कुछ खाना-पीना नहीं चाहिए।

ग्रहण का माहात्म्य—वैसे तो सूर्य-चन्द्र के प्रत्येक ग्रहण में स्नानदान पूजा का शास्त्रों में माहात्म्य लिखा है। लेकिन चूड़ामणि ग्रहण का स्नानदानादि के लिए विशेष माहात्म्य शास्त्रों में बतलाया गया है। यदि सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण क्रमशः रविवार और सोमवार को घटित हों तो उन्हें 'चूड़ामणि-ग्रहण' की संज्ञा दी जाती है। चूड़ामणि ग्रहण में स्नान दान आदि का माहात्म्य (पुण्यकाल) दूसरे सामान्य ग्रहणों से करोड़ गुणा अधिक माना गया है। यहां व्यास जी का वचन है—

**"रविग्रहः सूर्यवारे सोमे सोमग्रह स्तथा। चूड़ामणिरिति ख्यातस्तत्राऽनन्त फलं भवेत्॥
वारेष्वन्येषु यत्पुण्यं ग्रहणे चन्द्र-सूर्ययोः। तत्पुण्यं कोटि गुणितं ग्रासे चूड़ामणौ स्मृतम्॥**

यह २० फरवरी वाला चन्द्र ग्रहण भी सोमवार को हो रहा है, अतः यह चूड़ामणि ग्रहण ही है।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण सिंह राशि और मघा नक्षत्र में हो रहा है, अतः यह ग्रहण जन्म राशि सिंह और जन्म नक्षत्र मघा वालों के लिए विशेषकर अशुभ फल देने वाला है। अलग-२ जन्म राशि वालों के लिए इस ग्रहण का शुभ किंवा अशुभफल नीचे कोष्ठक में देखें :—

जन्म राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	चिन्ता	कष्ट	धन-लाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्री/पतिकष्ट	सुख

ग्रहण का अन्य फल—माघ मास में ग्रहण हो रहा है, अतः आगे वर्षा पर्याप्त, खेती अच्छी हो। सोमवार के दिन है—अतः तेल, घी, चावल, चना आदि के व्यापार में लाभ रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्य ग्रहण (११ सितम्बर १९८८ ई०, भाद्रपद कृष्ण अमावस, रविवार)

यह सूर्य ग्रहण भारतवर्ष में सर्वत्र खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। हिन्दमहासागर में इसे कंकणाकृति के रूप में देखा जा सकेगा। इसके अतिरिक्त इण्डोनेशिया, न्यूजीलैण्ड, एन्टार्कटिका, अफ्रीका के अन्तिम पूर्वी छोर एवं एशिया के दक्षिणी भागों में भी यह ग्रहण दिखाई देगा।

यहां चित्र नं. ३ में भारत के मानचित्र पर इस ग्रहण के स्पर्श एवं मोक्ष की रेखाएं दिखाई गई हैं,। इस चित्र की सहायता से भारत के मानचित्र पर प्रदर्शित स्पर्श-मोक्ष रेखाओं के आधार पर भारत के किसी भी स्थान के स्पर्श-मोक्ष सहज ही जाने जा सकेंगे।

चित्र नं. ४ में इस ग्रहण के परम ग्रासमान का भारतवर्ष के अन्तर्गत अक्षांश-रेखाओं के लिए आलेख दिया गया है। इस आलेख की सहायता से किसी भी स्थान के अक्षांश-रेखांश लेकर परम ग्रासमान जाना जा सकता है।

(चित्र नं. ३)

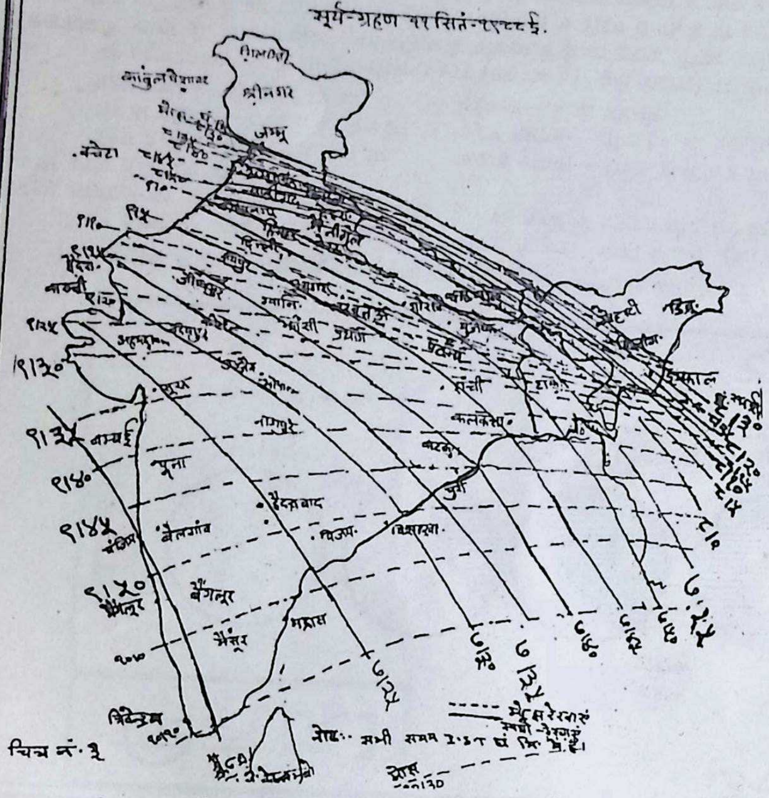

(चित्र नं. ४)

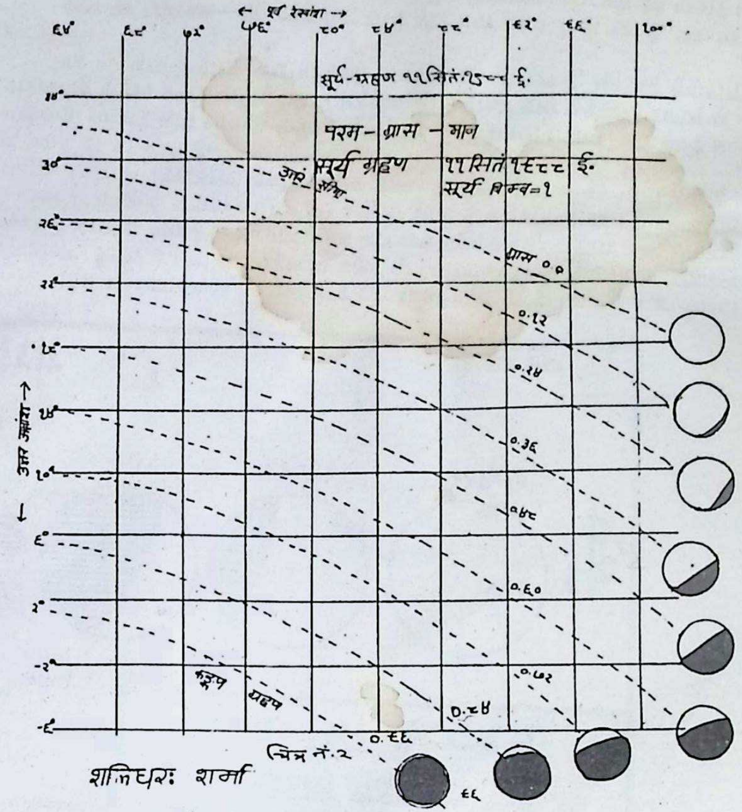

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्र नं. ५ में इस ग्रहण की विभिन्न अक्षांश-रेखांशों पर स्पर्श-मोक्ष की दिशाएं तथा परम ग्रास दिये हैं। इन की सहायता से अभीष्ट स्थान के अक्षांश-रेखांश की सहायता से वहां ग्रहण की स्पर्श एवं मोक्ष की दिशाएं तथा मध्य की स्थिति का रूप सहज ही अनुमानित किया जा सकता है।

(चित्र नं. ५)

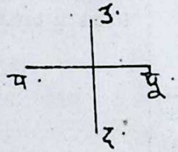

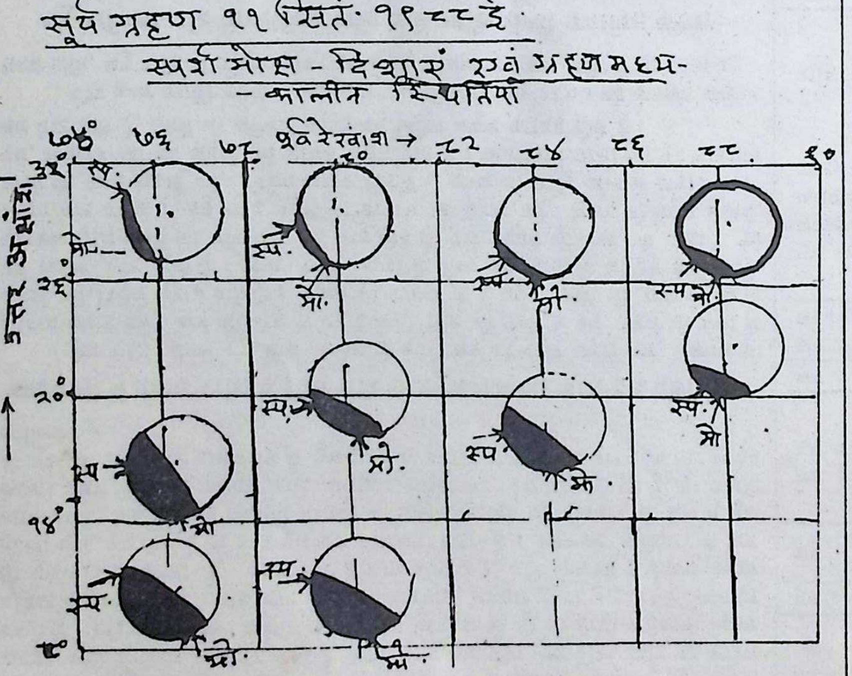

भारत के कुछ प्रमुख शहरों के लिए इस ग्रहण के स्पर्शकाल, मध्यकाल, परमग्रास तथा मोक्षकाल आगे तालिका में दिये जाते हैं।

सूर्य ग्रहण ११ सितम्बर १९८८ ई.

सभी समय इण्डियन स्टैण्डर्ड टाईम में दिए गये हैं—

शहर	प्रारम्भ घं. मि.	मध्य घं. मि.	परमग्रास मान सूर्य विम्ब=१	समाप्त घं. मि.
१ अमृतसर	७।५७	८।२२	०.०५	८।४७
२ अम्वाला	७।५२	८।२३	०.०७	८।५६
३ इलाहाबाद	७।४१	८।२९	०.१८	९।२०
४ उज्जैन	७।२९	८।२५	०.२९	९।२७
५ कलकत्ता	७।४५	८।३७	०.१९	९।३२
६ काञ्चीपुरम्	७।२३	८।३८	०.५४	१०। ४
७ कुरुक्षेत्र	७।४९	८।२४	०.०९	९। ०
८ कोहिमा	८।१६	८।४०	०.०३	९। ४
९ गोहाटी	८। ८	८।३७	०.०५	९। ७
१० चण्डीगढ़	७।५५	८।२३	०.०६	८।५२
११ जयपुर	७।३८	८।२४	०.१८	९।१२
१२ जालन्धर	७।५४	८।२३	०.०६	८।५२
१३ जोधपुर	७।३४	८।२२	०.२१	९।१४
१४ देहली	७।४५	८।२४	०.१२	९। ४
१५ देहरादून	७।५४	८।२४	०.०७	८।५४
१६ नागपुर	७।२९	८।२९	०.३२	९।३६
१७ नैनीताल	७।५२	४।२५	०.०९	९। ०
१८ पटना	७।४७	८।३१	०.१४	९।१८
१९ पूना	७।२१	८।२७	०.४४	९।४१
२० पुरी	७।३५	८।३७	०.२९	९।४४
२१ बंगलौर	७।२१	८।३६	०.५५	१०। १
२२ बम्बई	७।२२	८।२६	०.४२	९।३८
२३ भोपाल	७।३१	८।२७	०.२७	९।२८
२४ मद्रास	७।२३	८।३८	०.५३	१०। ४
२५ रोपड़	७।५५	८।२३	०.०६	९।४२
२६ लखनऊ	७।४४	८।२७	०.१४	९।१३
२७ लुधियाना	७।५२	८।२३	०.०७	८।५६
२८ वाराणसी	७।४२	८।३०	०.१७	९।२०
२९ शिमला	७।५८	८।२३	०.०५	८।४९
३० शिलांग	८। ५	८।३८	०.०७	९।११
३१ श्रीनगर	अदृश्य	अदृश्य	अदृश्य	अदृश्य
३२ सोलन	७।५४	८।२३	०.०७	८।५५
३३ हरिद्वार	७।५२	८।२४	०.०८	८।५७

(शेष १९८ पर)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं गुरु-राहु का गोचरफल (वि. सं. २०४५)

जन्म कुण्डली में शनैश्चर का शुभग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, तो ढैय्या और साढ़ेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र-शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढ़ेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धन हानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्म कुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश भी हो तो ढैय्या-साढ़ेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश पंचमेश, नवमेश होकर ३।६।११वें स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि अष्टवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखायें हों तो अशुभ फल निश्चित देता है। शान्त्यर्थ शनिवार के दिन सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिये या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न, गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को दें, या बन्दरों को गुड़-चने डालते रहें। अष्टगंध से शुभ-मुहूर्त्त में बना हुआ शनियन्त्र धारण करना विशेष शान्तिप्रद है।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि के अशुभ फल का काल इस प्रकार है :

मेष राशि वालों को बीच के अढ़ाई वर्ष, वृष को पहले अढ़ाई वर्ष, मिथुन को अन्तिम अढ़ाई वर्ष, कर्क को बीच के अढ़ाई वर्ष, सिंह को पहले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष खराब होते हैं। कन्या को प्रारम्भ के ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष नेष्ट होते हैं। तुला राशि वालों के लिए साढ़ेसाती के अन्तिम अढ़ाई वर्ष, वृश्चिक राशि वालों को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट होते हैं, परन्तु इनमें भी मध्य के अढ़ाई वर्ष विशेष नेष्ट समझें। धनु राशि वालों को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष, मकर को पहले ५ वर्ष, उसमें भी पहले अढ़ाई वर्ष, विशेष खराब होते हैं। कुम्भ को आदि अन्त के अढ़ाई-अढ़ाई वर्ष, विशेषत: अन्तिम अढ़ाई वर्ष अधिक अशुभ होते हैं। मीन राशि वालों को पूरे साढ़ेसात वर्ष नेष्ट होते हैं, उनमें भी अन्तिम अढ़ाई वर्ष विशेष अशुभ फलप्रद होते हैं।

पौष कृष्ण दशमी बुधवार तदनुसार १६ दिसंबर सन् १९८७ को तुलास्थ चन्द्र के समय **शनि, धनु राशि में** प्रविष्ट होकर इस संवत् के अन्त तक धनु राशि में ही रहेगा।

धनु-राशिस्थ-शनि निम्नांकित राशि वाले व्यक्तियों को प्रभावित करेगा :

वृष—इस राशि के लिए शनि की ढैय्या, स्वर्णपाद है।
फल—धनहानि, मनोद्वेग, चिन्ता, रोग एवं राजभय।
कन्या—शनि की ढैय्या; चांदी के पाए।
फल—व्यापार में लाभ, सम्मान मिले, पदोन्नति योग बने।
वृश्चिक—साढ़ेसाती पैरों पर; लोहे के पाए।
फल—पारिवारिक कलह, व्यापार में हानि, ब्लडप्रैशर, रोग, रक्त प्रकोप से कष्ट।
धनु—साढ़ेसाती हृदय पर; सोने के पाए।
फल—पारिवारिक कलह, रोग, अर्थहानि, मन अशांत।
मकर—साढ़ेसाती मस्तक पर; तांबे के पाए शुभ है।
फल—लाभ अच्छा हो, सभी प्रकार की सुख-समृद्धि रहे।

शेष किसी भी राशि वाले को ढैय्या या साढ़ेसाती नहीं है।

गोचरस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

२ फरवरी, सन् १९८८ ई० को बृहस्पति मेष राशि में आकर १९ जून, १९८८ ई० तक मेष राशि में रहता है।

मेष राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
भय	आधि, व्याधि	प्रगति	धन-हानि	धन-लाभ	धन-नाश	सम्मान	रोग	सुख	धन-हानि	शरीर कष्ट	धन-लाभ

१९ जून, १९८८ ई० को गुरु वृष राशि में प्रविष्ट होकर सं० २०४५ वि० के अन्त तक वृष राशि में रहता है। वृष राशि के गुरु का प्रत्येक राशि के लिए अच्छा-बुरा फल इस प्रकार है:—

वृष राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
धन लाभ	भय	रोग भय	प्रगति	धन हानि	धन लाभ	धन नाश	सम्मान	रोग भय	सुख लाभ	धन हानि	शरीर कष्ट

गुरु का विशेष फल—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र बन्धु मिलाप मान वृद्धि, खुशी, धनलाभ व शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करता है और जिन राशि वालों को अशुभ फलप्रद होता है उन्हें धन, मान-हानि व सन्तति की ओर से चिन्ता, वृथा यात्रा, शारीरिक कष्ट, बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फलप्रद होता है।

गोचरस्थ-राहु का शुभाशुभ फल

६ मार्च, सन् १९८८ ई० को राहु कुम्भ राशि में आकर इस संवत् के अन्त तक कुंभ राशि में ही चलेगा।

कुम्भस्थ राहु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
धन लाभ	कलह	दु:ख	धन नाश	राज भय	महा सुख	धन क्षय	अपमान	सौभा-ग्य	कलह	भय	विनाश

राहु का विशेष फल—राहु जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है उस राशि वाले व्यक्ति को प्रिय मिलन द्रव्यलाभ, स्वास्थसुख, घर में सन्तोष, कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल देता है। जिन राशि वालों को मध्यम होता है उन्हें यदाकदा किंचित् शत्रुभय, कुछ हानि, लाभ कम, वृथा कलह, द्रव्यचिन्ता आदि फल देता है, और जिन राशि वालों को अशुभ होता है उन्हें अकस्मात् हानि, चोर-रोगभय खर्च अधिक, मित्र-बन्धुवियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देता है।

शान्त्यर्थ—प्रत्येक मास के पहले बुधवार की रात को तैलपक्व भोज्य गरीबों को दें या कुत्तों को डालें, दुर्गापाठ करें। राहु शान्तियन्त्र धारण करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०४५ वि., सन् १९८८-८९ ई.)

[विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति पर ग्रहजन्य विश्लेषण]

★ भारत में राजनैतिक-जटिलता, 'विपक्षी जनमोर्चा' विपक्षी पार्टियों का सत्तारूढ़ पार्टी के लिए सरदर्द, लेकिन परिणाम अर्थहीन। दलीय महत्त्वाकांक्षाओं के कारण एवं व्यक्तिवाद के कारण जनमोर्चा अन्ततः छिन्न-भिन्न।

★ प्रजातान्त्रिक-मूल्यों के पुनः स्थापित करने की आवश्यकता का महत्त्व, आर्थिक अपराध देश के विकास के लिए घातक।

★ दक्षिण प्रशान्त में अशान्ति, समुद्री भू-भाग पर प्राकृतिक प्रकोप से हानि।

★ चीन का तिब्बत पर बल प्रयोग, निकट भविष्य में बड़ा परिवर्तन असंभावित।

★ भारत सरकार पर अविश्वसनीयता का संकट एवं राजनैतिक जटिलता के प्रभाव।

★ विश्व में आतंकवाद का विषवृक्ष, महाशक्तियों के प्रभाव क्षेत्र।

★ खाड़ी युद्धाग्नि तीव्र, विश्वशान्ति को खतरा, समाधानार्थ प्रयत्न जारी।

★ वर्षारम्भ से जून तक एवं संवत् के अन्त के तीन मास विश्व के लिए विशेष घटनापूर्ण, प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं राजनैतिक उलटफेर संभावित।

'ज्योतिषं चक्षुः' अर्थात् शास्त्रों में ज्योतिष को 'नेत्र' की संज्ञा दी गई है। 'नेत्र' ही ऐसी इन्द्रिय है, जिससे हम अतीत को देखते आए हैं, वर्तमान को प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं; इसी 'शास्त्र-चक्षु' के माध्यम से ऋषि लोग 'साक्षात्कृत धर्मा' कहे गए हैं एवं भविष्य को साक्षात् प्रत्यक्षवत् अनुभव करते रहे हैं। भवभूति ने बड़े आत्मसम्मान के साथ उत्तर रामचरित में स्पष्ट लिखा है;—"आविर्भूत-ज्योतिषां ब्राह्मणानां ये व्यवहारास्तेषु मा संशयोऽभूत्। भद्राह्येषां वाचि लक्ष्मीर्निषिक्ता, नैते वाचं विप्लुतार्थां वदन्ति॥" स्पष्ट है, कि ज्योतिष शास्त्र मनुष्य की ज्ञानेन्द्रिय नेत्र की भान्ति पुरातन काल से ही महत्त्वपूर्ण शास्त्र रहा है। इस शास्त्र का ज्ञान गुरुशिष्य परम्परया अनन्तकाल से चला आया है। "वर्तमान अतीत से ही निकला है" आज हम जो देख रहे हैं वह कल का ही परिणाम है। अतीत में वर्तमान कैसे संवलित है?—एवं वर्तमान का भविष्य के साथ कैसा सम्बन्ध है?—यह ज्ञान, ज्योतिष शास्त्र के चिन्तन से ही संभव है। जिस प्रकार शब्द में अर्थ प्रच्छन्न रूप से रहता है, जिस प्रकार अग्नि में तेज हमेशा विद्यमान है उसी प्रकार प्रत्येक कार्य में कारण छुपा रहता है। कार्य और कारण के बीच सम्बन्ध का चिन्तन ही विज्ञान का चरम-लक्ष्य है। विश्व में जो भी घटित हो रहा है, उसका कारण अवश्य है, आज भले ही हम प्रत्येक कार्य के कारण का निर्देश करने में समर्थ न हों, परन्तु यह तथ्य है, कि भविष्य में जो भी घटित होगा, वह अतीत से विच्छिन्न नहीं है। आप कल जो होंगे वह आज का ही जोड़ होगा, आज तक आप जो कुछ हैं वह गत दिनों का परिणाम है। स्पष्ट है—जो कल को घटित होने वाला है, वह किसी सूक्ष्म अर्थ में कल भी मौजूद होना चाहिए;—इसी मौलिक चिन्तन ने पचानवें हजार वर्ष से भी पहिले भारत में ज्योतिष शास्त्र को जन्म दिया था।

ज्योतिष शास्त्र एक वैज्ञानिक-चिन्तन है; यह शास्त्र नक्षत्रों का अध्ययन मात्र ही नहीं, भविष्य को टटोलने की चेष्टा भी है। यह ब्रह्माण्ड एक इकाई है, इससे अलग होकर कोई भी वस्तु अस्तित्त्वहीन हो जाती है। इसमें कोई भी चीज अलग नहीं, सब संयुक्त होकर ब्रह्माण्ड रूप में दिखाई देती है।

ब्रह्माण्ड में कोई भी तारा कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, वह जब भी अपनी स्थिति को बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को प्रभावित अवश्य करता है। सूर्य चाहे कितनी ही दूरी पर हो, जब वह अधिक उत्तप्त होता है तो पृथ्वी के जलवायु एवं प्राणीमात्र की रक्त की धाराओं में विशेष गतिमत्ता आया करती है, सम्पूर्ण विश्व प्रभावित होता है।

उल्लिखित विवरण से स्पष्ट है, कि—ज्योतिष शास्त्र के प्राणभूत ग्रह कोई निष्क्रिय अग्निपिण्ड ही नहीं है अपितु वे अत्यन्त सक्रिय जीवन्त संगठन हैं। ग्रहराज सूर्य की तरङ्गों में प्रतिपल विलक्षण-रूपान्तरण होते रहते हैं। सूर्य की तरङ्गों में क्षणिक-रूपान्तरण भी पृथ्वी के प्राणों को कम्पित करता है।

इस पृथ्वी पर कुछ भी ऐसा घटित नहीं होता, जो ग्रहों पर कुछ घटित हुए बिना यहां घटित हो जाता हो। जब सूर्य-ग्रहण होता है, तो जंगलों में पक्षी चौबीस घन्टा पहिले गीतगाना बन्द कर देते हैं। पूरे ग्रहण के समय सारी पृथ्वी मौन हो जाती है। जंगली जानवर भयभीत हो जाते हैं, किसी बड़ी आशंका से त्रस्त मालूल देते हैं। बन्दर वृक्षों को छोड़कर नीचे आजाते हैं, भीड़ जुटाकर किसी सुरक्षा के उपाय में लगे मालूम देते हैं। बन्दर, जो निरन्तर शोरगुल और चंचल क्रिया-कलाप में व्यस्त रहते हैं, वे सूर्य-ग्रहण के समय इतने मौन हो जाते हैं, जितने कि साधु और सन्यासी ध्यान में नहीं होते। स्पष्ट है, कि आकाशीय-पिण्डों का विश्व की घटनाओं से कुछ सम्बन्ध अवश्य है;—इस बात को विश्व के अठत्तर प्रतिशत व्यक्ति स्वीकार करते हैं। इन अठत्तर प्रतिशत व्यक्तियों में सामान्यजन ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक-विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग भी सम्मिलित है।

ग्रह गतिवश विश्व की परिस्थितियां करवट लेती आई हैं और विश्व की घटनाओं को साक्षित्व प्रदान करने वाले इतिहास का निर्माण होता आया है। घटनाक्रम का शुभाशुभत्व सफलता किंवा असफलता के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने भाग्य पर इतराता या भाग्य को कोसता देखा गया है। आखिर इस घटनाक्रम की जन्मदात्री कौन सी अदृश्य शक्ति है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिसे मनुष्य 'भवितव्यता' या 'ईश्वरीय इच्छा' नाम से स्वीकार करता है । तर्कसंगत विश्लेषण एवं अनुसन्धान के परिणामस्वरूप 'कालविधान शास्त्र-ज्योतिष शास्त्र' ने अघटित घटनाक्रम को जन्म देने में ग्रहजन्य आकर्षण-विकर्षण एवं युति-प्रतियुति को प्रमुखतः कारण माना है । इसमें सन्देह नहीं, कि भूकम्प, भयरोग, विग्रह आदि अभी विघ्न-जनीन घटनाओं को जन्म देने में ईश्वरीय प्रेरणा से संचालित-ग्रहों की गति भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है ।

पच्चानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रह नक्षत्रों की जैसी स्थिति थी, उसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है । चिरन्तन काल से ही महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर परम्परया चिन्तन होता आरहा है । इस शास्त्र से प्राप्त संकेत के आधार पर अपनी बुद्धि के अनुसार सूक्ष्म ग्रह गति से प्राप्त संकेत ग्रह को ही 'भविष्यवाणी'-के रूप में प्रतिफलित करके विश्व में घटित होने वाली घटनाओं का चित्र अपने लाखों प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थापित करते हुए ६० गौरवपूर्ण वर्ष प्रतीत हो चुके हैं ।

आपके इस लोकप्रिय पञ्चाङ्ग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्री जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है । आज भी यह पञ्चाङ्ग अपनी सफल आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्य वाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांग गणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में सर्वोपरि लोकप्रिय है ।

इस पञ्चाङ्ग की सर्वाङ्गशुद्ध गणित एवं विद्वत्तापूर्ण आकर्षक लेखों के कारण यह पञ्चाङ्ग भारत के मूर्धन्य धर्माचार्यों द्वारा सम्मानित हो चुका है । सूक्ष्मातिसूक्ष्म ग्रहगणित, विद्वत्तापूर्ण शोध लेखों एवं अन्य उपयोगी विषयवस्तु के कारण विद्वद्वर्ग एवं धर्माचार्यों के आशीर्वाद के रूप में जो श्रेय एवं गौरव इस पञ्चाङ्ग को आज तक प्राप्त हो रहा है; वह हमारी जीवन की उपलब्धि है;—यह पंचांग इन सभी विद्वान-धर्माचार्यों का हार्दिक ऋणी है । श्रीमार्त्तण्ड पंचांग की विगत वर्षों की भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा यहां विहङ्गम दृष्टि से कर देना उचित समझते हैं—

भारत के स्वतन्त्र होने की घोषणा, श्री महात्मा गांधी, नेहरू जी एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी आदि भारत के गण्यमान्य व्यक्तियों के निधन किंवा हत्याकाण्ड की आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्यवाणी, रूस के बुल्गानिन एवं ख्रुश्चेव के अचानक अपदस्थता व पदत्याग की भविष्यवाणी, चीन में चाऊ-माऊ युगान्त की घोषणा, कांग्रेस का विभाजन, जनता पार्टी की विजय एवं पतन की आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्यवाणी, श्रीमती गांधी के पुनः सत्तारूढ़ होने की घोषणा, भारत-पाक युद्ध, ईरान-इराक युद्ध एवं भूतपूर्व ऐतिहासिक भूकम्प किंवा प्रलयंकारी तूफानों की भविष्यवाणी, इसके अतिरिक्त भारत एवं देशान्तरों में घटित होने वाली असंख्य सफल भविष्यवाणियों की अक्षरशः सफलता का श्रेय आपके इस पंचांग को प्राप्त हो चुका है । यद्यपि स्थानाभाव के कारण सभी सफल भविष्यवाणियों को यहां अंकित करना संभव नहीं; पुनरपि कुछेक आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां सं. २०४३ एवं सं. २०४४ से यहां प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं—

(१) संवत् २०४३ के श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग में पृष्ठ ३६ कालम प्रथम में पंजाब प्रान्त के बारे में स्पष्ट घोषणा की गई थी; कि **"विधानसभाई चुनावों में अकाली दल बहुमत प्राप्त करके मन्त्रि-मण्डल बना लेगा । अकाली दल प्रधान यह सरकार स्थिति पर नियन्त्रण पाने में अन्ततः असफल रहेगी । आपसी विरोध एवं फूट के कारण यह सरकार अपनी अवधि पूर्ण न कर सकेगी । २४ जुलाई (१९८५ ई.) को प्रधान मंत्री एवं अकाली दल के मध्य समझौते पर हस्ताक्षर सायं पौने ६ बजे धनु लग्न में हुए थे । इस समय शनि-मंगल का दृष्टि सम्बन्ध शुभ नहीं । यह समझौता चिरकाल तक चलने वाला नहीं, यह ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है ।** इस भविष्यवाणी के अक्षरशः सत्य-सिद्ध होने से पाठक बन्धुओं ने ज्योतिशास्त्र की वैज्ञानिकता एवं सत्यता को स्वीकारा है एवं हमारा उत्साह बढ़ाया है । पाठक जानते ही हैं, कि पंजाब में मन्त्रि-मण्डल भंग होकर राष्ट्रपति शासन लागू हुआ एवं समझौता आज तक कार्यान्वित नहीं हो सका ।

(२) सं. २०४४ वि. में 'पंजाब' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ नं. १६ पर पंजाब में बरनाला सरकार के परिवर्तन की भविष्यवाणी इस प्रकार की गई थी,—**"बृहस्पति का सं. २०४४ में मीन से सहसा मेष राशि में प्रवेश शासन तन्त्र में विशेष परिवर्तन का संकेत देता है"**—सं. २०४४ में ही शासन राज्यपाल के हाथ आगया, यह सब जानते हैं ।

(३) सं. २०४३ वि. के पृ. ३६ पर कालम २ में 'दिल्ली' शीर्षक के अन्तर्गत श्री राजीव गांधी को आत्मरक्षार्थ दो वर्ष के लिए विशेष सावधान किया गया था— **"वृश्चिक राशि के शनि की अवधि में (अर्थात् दो वर्ष तक) प्रधान नेता को आत्मरक्षार्थ विशेष सावधान रहना चाहिए ।"** पाठक जानते हैं कि सन् १९८७ में हमारे प्रधान मन्त्री पर दो बार प्रहार हो चुका है, एक वार राजघाट पर दूसरी बार लंका यात्रा के अवसर पर । इस प्रकार यह सावधान रहने की भविष्यवाणी सफल रही ।

(४) सं. २०४४ के पञ्चांग में की गई आश्चर्यजनक भविष्यवाणी, जोकि अक्षरशः सत्यसिद्ध हो चुकी है—"सं. २०४४ भारत के लिए चुनौती पूर्ण"—इस शीर्षक के अन्तर्गत हमने स्पष्ट घोषणा की थी—**"चालीसवें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की सत्तारूढ़ पार्टी को चुनौतीपूर्ण समय का सामना करना पड़ेगा । परन्तु भारत गणतन्त्र के ३८वें वर्ष लग्न में मंगल, राहु तथा नेपच्यून की स्थिति इन विकट परिस्थितियों पर नियन्त्रण में सफलता देगी । वर्ष लग्न एवं भारत की स्वतन्त्रता का जन्मलग्न वृष ही है । जन्म लग्न एवं वर्षलग्न का एक होना, योग भारत के लिए नानाविध समस्याओं को जन्म देने वाला पेचीदा होगा । ४०वें वर्ष में भारत सरकार को अघटित घटनाओं का सामना करना पड़ेगा । प्रान्तीय समस्याएं कहीं विकट रूप धारण करेंगी । विरोधी दल में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति पनपेगी । सत्तारूढ़ दल में आन्तरिक फूट एवं असन्तोष से चिन्ताजनक स्थिति बनेगी । आगे कांग्रेस ई. में विशेष परिवर्तन व विघटन का योग है । वर्षेश शुक्र, अष्टमस्थ मंगल के साथ 'इत्थशाल योग' बनाता है । चन्द्रमा आन्तरिक-शान्ति के भाव (सप्तमभाव) में नीचस्थ है एवं शनि के सन्निकर्ष में है । मुंथा चतुर्थ भाव में शनि-मंगल से दृष्ट है;— यह ग्रहस्थिति देश में कहीं उत्पात, प्राकृतिक-प्रकोप से भयंकर हानि, दुर्घटना में जनहानि एवं हत्याकाण्ड का संकेत देती है ।······देश में कहीं अघटित राजनैतिक उलटफेर एवं साम्प्रदायिक तत्व कहीं शान्ति को भंग करेंगे ।······भारतीय शासनतन्त्र के सामने अन्य अनेक विध समस्याएं आएंगी, जिन्हें भारत के अग्रणी नेता विवेक पूर्वक सुलझाने का प्रयास करेंगे । कुछ प्रान्तों की पुरानी सुलझाई हुई समस्याएं पुनः उजागर होंगी जोकि शासन तन्त्र के लिए सरदर्द बनेंगी ।······देश में साम्प्रदायिक विषवृक्ष पनपने लगेंगे, जो आगे निकट भविष्य में ही सारे देश में एक रूप सामाजिक-व्यवस्था प्रतिष्ठापित करने के प्रयासों को विफल बना देंगे । सत्तारूढ़ पार्टी को विवेक से काम लेना होगा ।"**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस उल्लिखित भविष्यवाणी का प्रत्येक अंश अपने आप ही ज्योतिष शास्त्र की सत्यता का डंका बजा रहा है। बोफोर्स एवं प्रादेशिक उलझनों में फंसी सत्तारूढ़ पार्टी को सं. २०४४ में भयंकर चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ा है। विपक्षी दल **'जनमोर्चा'** बनाकर ध्रुवीकरण स्थिति में आ रहा है; पंजाब, आसाम, नागालैण्ड आदि की अनेक प्रान्तीय समस्याएं उलझी हुई हैं। इस प्रकार प्रत्येक अंश अपने आप में पूर्ण सत्य सिद्ध हो चुका है, हो रहा है। **सं २०४४ की उद्धृत भविष्यवाणी क्या सारे गत-संवत् का 'वर्षफल' मालूम नहीं देती ? जनता स्वयं मूल्यांकन करे।**

(५) (सं. २०४४ की) **कुण्डली में अष्टमस्थ नेपच्यून एवं मंगल का सम्बन्ध किसी पड़ोसी देश की गुप्तचाल एवं कुनीति के द्वारा सीमा प्रान्तों पर अशान्ति का सूचक है** (पृष्ठ १८, कालम १)। पाक द्वारा सीमा प्रान्तों पर सैन्य हलचल एवं प्रच्छन्नरूप से सीमा वर्ती प्रान्तों में वातावरण अशान्त बना है—यह नेता स्वयं कहते हैं।

(६) **"इसवर्ष भारतवर्ष के पूर्वी एवं उत्तरी प्रान्तों में शत्रु देश की गतिविधि एवं अवैध घुसपैठ से वातावरण अशान्त होने का योग है लेकिन भारत का कुशल नेतृत्व एवं सशक्त सैन्यबल शत्रुदेश की गतिविधि को नाकामयाब कर देगा** (सं. २०४४ वि. पृष्ठ १८, कालम २, पंक्ति ३ से ७)। सीमा प्रान्तों पर अवैध घुसपैंठ की खबरें, बराबर मिली हैं। परिणाम स्वरूप सीमा-सील का प्रश्न उठा था। तथा सियाचिन पर पाक का हमला भी इस भविष्यवाणी की सफलता को पुष्ट करता है।

(७) सं. २०४४ वि. के पंचाङ्ग में पृ. १९ पर हरियाणा शीर्षक के अन्तर्गत लिखा था—**"१३ मई तक प्रधान शासक को पार्टी को बल देने के लिए प्रयत्नशील रहना पड़ेगा। विपक्षी दल में एकता से सत्तारूढ़ पार्टी को भय है।"** लोकदल से कांग्रेस की पराजय होने से यह वक्तव्य सही सिद्ध हुआ है।

(८) सं. २०४४ वि. में पृष्ठ १९ कालम २ पर **'भारत की वर्षा एवं जलवायु'** शीर्षक के अन्तर्गत 'नोट' लिखकर इसवर्ष वर्षा की कमी व अकाल की सूचना निम्नांकित प्रकार से दी गई थी—

नोट—"संवत् के शुरू से ११ मई तक एवं १२ अगस्त से २७ सितम्बर तक शनि-मंगल का दृष्टि-सम्बन्ध अनेकत्र वर्षा में अवरोधक होने से कृषकों के लिए चिन्ता का कारण बनेगा; एवं कुछ प्रान्तों में अतिवृष्टि से हानि किंवा बाढ़ आदि से जनधन हानि (भी) होगी।" पाठको, इस वर्ष अनेक प्रान्त वर्षा न होने से अकाल ग्रस्त हो गए हैं तथा बिहार, आसाम आदि कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ से हानि भी हुई है—यह सर्वविदित है।

(९) 'जम्मू-काश्मीर' शीर्षक में सं. २०४४ में लिखा था—**"अब संवत् मध्य के बाद यहां पुनः निर्वाचन होंगे तथा किसी पार्टी विशेष की मदद से पुनः अनुभवी नेता शासन को संभालेगा।"** इस भविष्यवाणी के अनुसार श्री फारुक अब्दुल्ला कांग्रेस के सहयोग से निर्वाचन लड़के मुख्यमन्त्री बने हैं।

(१०) सं. २०४४ वि. में पृष्ठ १९ पर 'दिल्ली' इस शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट घोषणा की थी—**"संवत् के आरम्भ से २७ सितम्बर तक का समय सत्तारूढ़ पार्टी के लिए अग्निपरीक्षा का है। पार्टी में आन्तरिक वैमत्य उभरेंगे। प्रधान नेता पार्टी में संशोधनार्थ कुछ विशेष परिवर्तन करेंगे, कुछ व्यक्ति असन्तुष्ट दल बनें, देश के प्रधान नेता के लिए यह वर्ष अग्निपरीक्षा का है।"** सत्तारूढ़ पार्टी (कांग्रेस ई.) को भारी संकट में से गुजरना पड़ रहा है, पार्टी के प्रतिष्ठित श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा अन्य वरिष्ठ व्यक्ति पार्टी से निष्कासित किए गए, ऐसी स्थिति में वे असन्तुष्ट दल बना चुके हैं। श्री राजीव गांधी (देश के प्रधान नेता) को भी पार्टी की सत्ता को कायम रखने एवं अपने पद की गरिमा को यथावत् बनाए रखने के लिए बोफोर्स आदि संकटों एवं देश की विषमतम समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है—यह उनके लिए 'अग्निपरीक्षा' ही सिद्ध हो रही है। **क्या इस भविष्यवाणी को चमत्कार नहीं कहेंगे। २७ अगस्त १९८६ को लिखी गई इन भविष्य-वाणियों की सत्यता के बारे में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।**

विज्ञ पाठक वृन्द को हम यह स्पष्ट कर देना ठीक समझते हैं, कि श्री मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रही भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं उनमें पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ गुरु चरणों की कृपा ही समझते हैं, या जनता जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं जो विभिन्न प्रान्तों से पत्राचार द्वारा भविष्य वाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रतिवर्ष प्रेरित करते रहते हैं। अब हम सं. २०४५ वि. का पूरी तरह चिन्तन करके भावी घटना चक्र का आगे संक्षेपेण कुछ लिखना प्रासंगिक समझते हैं।

संवत् २०४५ वि. की ग्रहस्थिति का विश्व पर प्रभाव

इससे पहिले कि हम सं. २०४५ की ग्रहस्थिति पर विचार करें; हमें गतवर्ष के अन्तिम चरण (जन., फर., मार्च) की ग्रहस्थिति पर कुछ ध्यान देना आवश्यक प्रतीत होता है। सं. २०४४ में धनु संक्रान्ति के दिन सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करते ही शनि भी (१६ दिसम्बर को ही) सूर्य के साथ धनु राशि में पदार्पण करेगा। सूर्य-शनि पिता-पुत्र होने पर भी परस्पर शत्रु हैं। धनुस्थ शनि का फल इस प्रकार लिखा है—

"मिथुन-स्त्री-धनुर्मीन-राशौ मन्दो यदा भवेत्।
तदा भूपाः विनश्यन्ति पृथ्वी शोणित पूरिता॥"

स्पष्ट है, कि धनुस्थ-शनि विश्व के प्रधान-प्रतिष्ठित-व्यक्तियों के लिए कष्टप्रद, भयंकर परिणाम वाला सिद्ध होगा। पाठक ध्यान दें कि १५ जनवरी सन् १९८८ ई. तक शनि-सूर्य का एक राशि में एक नक्षत्र में एक साथ रहना राजनैतिक जगत् में भयंकर परिणाम वाला होगा। विश्व के कुछ राष्ट्र अराजकता की स्थिति में दिखाई देंगे, कहीं शासक-शासित में मतभेद से गृह युद्ध की स्थिति बनेगी, कहीं शासनतन्त्र में अप्रत्याशित-परिवर्तन होंगे। लोकतन्त्र की भावना प्रबल होगी, तथाकथित लोकतन्त्र एवं फौजी तानाशाह विषम परिस्थिति में उलझेंगे, प्रतिष्ठित नेता किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होगा। १३ फरवरी सन् १९८८ ई. को मंगल धनु राशि में आकर शनि के साथ सम्बन्ध बनाएगा, लेकिन २ फरवरी को वृहस्पति मेष राशि में आकर धनु राशिस्थ शनि-मंगल को विशेष दृष्टि से देखेगा; अतः **"युद्धदौशनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष कारकौ"** प्रमाणानुसार शनि-मंगल के एकत्र होने पर विश्व के कुछ राष्ट्रों की स्थिति में राजनैतिक उथल-पुथल के आसार बनने पर भी कुछ प्रमुख राष्ट्र नायकों की मध्यस्थता से स्थिति संभल जाएगी।

ग्रह स्थिति के आधार पर यह स्पष्ट मालूम देता है, कि दिसम्बर १९८७ से मार्च १९८८ तक का समय विशेष घटनापूर्ण अवश्य रहेगा, कहीं भयंकर राजनैतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन होंगे, कहीं दुर्भिक्ष, भूकम्प, तूफान, अतिवर्षा एवं कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हानि भी होगी। इसी बीच नवम्बर (१९८७) मध्य के बाद किसी दुर्घटना किंवा हत्याकाण्ड से विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होगा।

सं. २०४५ वि.—१८ मार्च सन् १९९८ ई. को ७ बजकर ३० मि. पर सूर्यदेव मीनलग्न में प्रवेश करके नए वर्ष का शुभारम्भ करेंगे। इस समय की ग्रहस्थिति इस प्रकार है—वर्षप्रवेश कुण्डली में सप्तमभाव पर सूर्य-चन्द्र एवं शनि की दृष्टि है, अतः उत्तर-पूर्वी देशों में युद्धोन्माद तीव्र होगा, देशों की नीति प्रधान-नेता के लिए प्रतिकूल सिद्ध होगी, कहीं सत्ता हस्तान्तरण किंवा दुर्घटना में जन-धन हानि का योग है। आश्विन-चैत्र एवं माघ मास विशेष घटनापूर्ण सिद्ध होंगे। श्रावण में तूफान, बाढ़ किंवा दुर्घटनाएं अधिक होंगी। दशम भाव में शनि-मंगल का सम्बन्ध कहीं आन्तरिक कलह से शासन तन्त्र में परिवर्तन किंवा कहीं युद्धाग्नि को बढ़ावा मिलेगा। कुछ देश आर्थिक संकट ग्रस्त होंगे, प्रगतिप्रद योजनाओं में बाधा आएगी।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

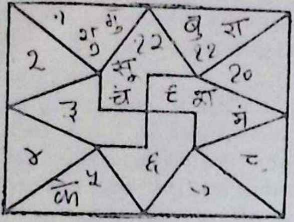

जगत् लग्न कुण्डली

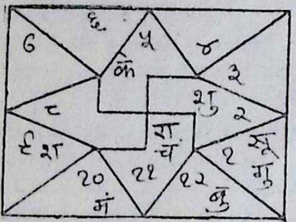

जगत् लग्न कुण्डली में लग्नेश-सूर्य उच्च राशि में आकर नवम स्थान में वृहस्पति के साथ सम्बन्ध करता है,—यह योग विश्व के शक्तिशाली देशों (महाशक्तियों) के लिए अनुकूल है, प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की दौर बरकरार बना रहेगा। संवत् का मध्य कुछ राष्ट्रों के लिए नई उलझनों वाला होगा। रूस, फ्रांस, इटली आदि देश किसी उलझन में पड़ेंगे। जापान, तिब्बत, चीन, लंका आदि के प्रधान नेताओं को कुछ संकट का सामना करना पड़ेगा। अमेरिका एवं ब्रिटेन भी इस समय विश्व में घटित होने वाले घटनाक्रम से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। इस वर्ष में समुद्र तटवर्ती भू-भाग पर भयंकर तूफान आदि से जन-धन हानि का योग बनता है; समुद्र तटवर्ती लोग सावधान रहें। नववर्ष प्रवेश एवं जगत् कुण्डली के अनुसार यह वर्ष महाशक्तियों के प्रधान वर्ग के लिए एवं अरब राष्ट्र, टर्की, मेसोपोटामिया, ग्रीस, इराक-ईरान अफगानिस्तान आदि के लिए उलझन पूर्ण है।

इसवर्ष ग्रहपरिषद् के निर्वाचन में आठ पद क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं तथा दो पद शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं जिसमें शुक्र एवं मंगल ने तीन-तीन पदों पर कब्जा कर रक्खा है। दलित एवं मजदूर वर्ग के प्रतिनिधिग्रह-मंगल को वर्षा-पानी, फल-पुष्प एवं रक्षा-प्रतिरक्षा सेना विभाग को प्राप्त हुआ है। ग्रह परिषद् के पद विभाजन को दृष्टि में रखते हुए यह स्पष्ट संकेत मिलता है, कि इस वर्ष मुस्लिम राष्ट्रों में युद्धाग्नि तीव्र होगी एवं पाकिस्तान, अरबराज्य, ईराक-इरान आदि में सन्धिवार्ताएं विफल होंगी एवं युद्धोन्माद से जन-धन हानि होगी। पाकिस्तान आदि में आन्तरिक कलह, क्लेश बढ़ेंगे। विश्व में समाज-वादी देश अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में विशेष रुचि लेंगे। राजा शुक्र ने खजाना एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर प्रभुत्व पाया है। वर्षारम्भ में ही शुक्र-गुरु दोनों इकट्ठे हैं; इसवर्ष विश्व में यान्त्रिक प्रतिष्ठान अधिक स्थापित होंगे, व्यापारिक क्षेत्र में नई क्रान्ति आएगी, नए-नए कार्यक्रम एवं व्यापारिक सन्धियां होंगी जिससे प्रगतिशील राष्ट्रों पर महाशक्तियों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा। यह संवत् प्रगतिशील राष्ट्रों के लिए विशेष विचार-पूर्वक सन्धिवार्ता करने का है।

वर्षारम्भ से २७ मार्च तक धनु राशि में शनि-मंगल का सम्बन्ध अवश्य है लेकिन इन पर वृहस्पति की दृष्टि होने से यह सम्बन्ध विशेष नेष्ट फलप्रद नहीं। फिर भी कहीं दुर्घटना एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानिप्रद समाचार मिलेंगे। ब्रिटेन, आयरलैण्ड, अमेरिका, अफ्रीका एवं यवनराष्ट्रों में कहीं अशान्ति के समाचार मिलेंगे। अप्रैल में शनि-यूरेनस, नेपच्यून वक्री हो रहे हैं, वैशाख कृष्ण अमावस भी शनिवारी है; २० अप्रैल को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति होगी एवं २५ अप्रैल को बुध-गुरु की अंशात्मक युति का प्रभाव शुभाशुभ दोनों तरह का होगा। लेकिन मंहगाई के खिलाफ जनता का आक्रोश बढ़ेगा; हड़ताल, घेराव, अपहरण, हत्याकाण्ड किंवा दुर्घटना-विशेष में हानि से अशान्ति बढ़ेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में कुछ विशेष समस्या सामने आएगी। १० अप्रैल से ३ मई तक बुध-गुरु दोनों अतिचारी स्थिति में हैं। गुरु आगे २४ मई तक अतिचारी बना रहता है;—इस अवधि में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा, कहीं वर्षा का आधिक्य व कहीं वर्षा की कमी से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी; इस अतिचारित्त्व का फल शास्त्रों में नेष्ट ही लिखा है—

> "यदाशुभग्रहः कश्चिदतिचारं करोति च।
> तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्॥"

मई में कुम्भ राशि में मंगल एवं राहु का सम्बन्ध होगा। राहु-मंगल पर शनि की दृष्टि भी है; यह मंगल-राहु का सम्बन्ध जून के अन्त तक चलेगा। यह योग विश्व में अघटित घटनाओं को जन्म देने वाला है। दो विरोधी राष्ट्रों में भयंकर मतभेद विश्वशान्ति के लिए खतरा बनेगा। इराक-ईरान, अफ्रीकी देश, अरब गणराज्य एवं पाक-बंगलादेश आदि में कहीं परस्पर तनाव से स्थिति उत्तरोत्तर खराब होगी, यावन देशों में से किसी नेता को पदत्याग के लिए विवश होना पड़ेगा। हत्याकाण्ड एवं विस्फोट अधिक होंगे। अग्निकाण्ड एवं दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी कुछ देशों में जनता को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। मई से जून के बीच विश्व में उग्रवाद अनेकत्र सिर उठाएगा, और यह विषवृक्ष अनेकत्र प्रबल होता नजर आएगा। १९ जून को वृष राशि का वृहस्पति शुक्र के साथ सम्बन्ध करेगा। गुरु-शुक्र का युद्ध २९ जुलाई तक चलेगा।—"गुरु-शुक्रावेक राशिगतौ दुर्भिक्ष दुःखदौ।" यह योग कहीं दुर्भिक्ष एवं अप्रिय घटना को जन्म देता है।

इसवर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार वाह्य हस्तक्षेप से एशियाई देशों के मसले जटिल हो जाएंगे, जिससे एशियाई देशों की आर्थिक प्रगति एवं विकास की गति पर असर पड़ेगा। संवत् मध्य में एशियाई देशों में 'सैनिकीकरण की बढ़ रही प्रवृत्ति', एक चिन्ता का कारण बनेगी; परमाणु निरस्त्रीकरण के नारे व्यर्थ सिद्ध होंगे। हिन्दमहासागर एक अशान्त क्षेत्र बनने लगेगा। दक्षिण प्रशान्त में फिजी एक अलग तरह का दक्षिणी अफ्रीका का रूप लेगा, जात, रंग, मूलजाति आदि के मसले विकट होंगे, हत्याओं की संख्या बढ़ेगी। अल्पवर्ग बहुवर्ग पर हावी होने की प्रवृत्ति से कुछ देशों में घोर अशान्ति पनपेगी, जिससे कुछ शान्तिप्रिय देशों का हस्तक्षेप अनिवार्य हो सकता है। ग्रहचाल के अनुसार मई से अक्टूबर तक यहां के प्रशासक नाटकीय ढंग से कथनी-करनी में अन्तर स्पष्ट करेंगे और सेनातन्त्र एवं लोकतन्त्र की भावना में संघर्ष होगा, परिणाम स्वरूप अशान्ति बढ़ेगी। फिजी, फिलिपीन्स आदि में सैनिक सरकार अधिक देर टिकेगी नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रावण में पांच शनिवार होने से कहीं भूकम्प एवं प्राकृतिक प्रकोप से, हानि किंवा विश्व में नानाविध रोग पनपेंगे ।

"शनिवाराः यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी । महर्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला मही ॥"

श्रावण शुक्ल में तिथिक्षय होने से आगे कार्तिक में किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से पदरिक्त होगा, कहीं सत्ता का हस्तान्तरण होगा—

श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत् ।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत् ॥

ग्रहगति से यह ज्ञात होता है कि जून से अगस्त तक किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदरिक्त होगा एवं किसी देश में सत्ताहस्तान्तरण का योग है । १६ सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर शनि-मंगल से देखा जा रहा है, यह योग १६ अक्टूबर तक चलेगा । इस समयावधि में विश्व के प्रधान नायकों को विषम परिस्थिति का सामना करना होगा । विश्व में हत्याकाण्ड एवं उग्रवादी घटनाएं अधिक होंगी । २० से २५ अक्टूबर तक 'दिग्दाह योग' बनेगा, ऋतु के विरुद्ध धूलवर्षा, दिशाएं रक्तवर्ण बनेंगी—यह योग भी विश्वशान्ति के लिए अशुभ माना गया है—

सूर्याद् विधुः सप्तमं पंचमः स्यात् भौमीसुतो याति तथारिगेहे ।
दिग्दाहयोगो मुनिभिः प्रदिष्टः स जात उल्कापतनादिकारी ॥"

नवम्बर, दिसम्बर मास प्रायः शान्तिपूर्ण निकलेंगे । फिर भी नवम्बर १, ५ तथा दिसम्बर १५, १७, २०, २१, २७ एवं ३१ घटनापूर्ण होंगे । २१ नवम्बर से ९ दिसम्बर तक शुक्र-शनि के मध्य का होना शुभ है ।

गच्छतोऽग्रे शुक्रशनी बुधः पृष्ठं समाश्रितः । धन-धान्याकुला पृथ्वी प्रजाः क्रन्दन्ति नित्यशः ॥

माघ से चैत्र तक का समय भी विशेष घटनापूर्ण सिद्ध होगा । २० फरवरी को खग्रास चूड़ामणि चन्द्रग्रहण विश्व के विकासशील देशों में आर्थिक संकट पैदा करेगा । धनिक वर्ग के लिए यह समय कुछ संकटपूर्ण मालूम देता है । ७ मार्च के लगभग सूर्य-शुक्र-बुध एवं राहु कुम्भ राशि में आकर लगभग मार्च मध्य तक इसी राशि में रहेंगे । कहीं वर्षा की कमी एवं कहां वर्षा अधिक होने से हानि एवं प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि की सूचना देता है । २८ फरवरी १९८९ ई. से संवत् के अन्त तक मंगल-गुरु वृष राशि में एक साथ रहेंगे;—यह योग वर्षा काल में वर्षा की कमी से कृषकवर्ग को चिन्तित करेगा । कुछ भागों में वर्षाधिक्य किंवा प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसल को हानि भी पहुंचेगी ।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की वर्ष कुं.

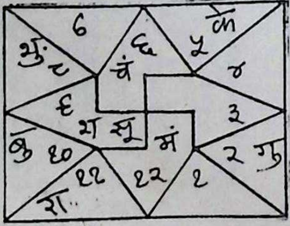

यूरोपीय देशों की इस वर्ष कुण्डली के अनुसार चतुर्थ स्थान में शनि-सूर्य का होना अपने निजी देशों (मित्र देशों) के साथ सम्बन्ध स्वार्थपूर्ण रहेंगे । ब्रिटेन, आयरलैण्ड, फ्रांस, रोम, इटली, स्पेन, पश्चिमी जर्मनी, डैन्मार्क आदि में विघातक शस्त्रों की बिक्री पर बल दिया जाएगा । कहीं उग्रवाद को हवा मिलेगी । किन्हीं दो महाशक्तियों में प्रभावक्षेत्र बढ़ाने की होड़ से शक्ति सन्तुलन बिगड़ेगा । अर्जेन्टीना, इण्डोनेशिया, कांगो, टांगानिका, ब्राजील एवं दक्षिणी अफ्रीका के अन्दरूनी वातावरण बिगड़ेंगे, शासक के विरुद्ध बगावत व कहीं रंगभेदनीति के विरुद्ध आवाज जोर पकड़ेगी । यूरोप के देशों में मुद्रास्फीति बढ़ेगी । बेरोजगारी समस्या बनेगी, इसी कारण से विदेशियों के प्रति विद्रोह भी कहीं उभरेगा । जून से अगस्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार यूरोपीय देशों में आन्तरिक समस्याएं जटिल होंगी ।

यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति के आधार पर यूरोप के देशों में मैत्री सम्बन्ध कुछ कमजोर होंगे, अनेकों देशों की विदेशनीति में नाटकीय परिवर्तन होंगे । छठे राहु होने से शत्रुदेश सिर उठायेंगे । लेकिन फिर भी यह वर्ष यूरोपीय देशों के लिए विशेष घटनापूर्ण नहीं है । हां, यूरोपीय समुद्रतटवर्ती देशों में भूकम्प या तूफान आदि से जोरदार धन-जन की हानि का योग है ।

मुस्लिम देश

इसवर्ष मुस्लिम-वर्षारम्भ १५ अगस्त १९८८ को ही है । वर्ष कुण्डली में ग्रहस्थिति इस प्रकार है— मुस्लिम वर्षप्रवेश मंगलवार को हुआ है, अतः विश्व के अनेक भाग अकाल-ग्रस्त होंगे । समयानुसार उचित वर्षा न होने से फसल क्षतिग्रस्त होगी । प्राकृतिक-प्रकोप से धन-जन हानि का भी योग है । यावन राष्ट्रों की कुण्डली में धनस्थानगत राहु पर शनि की दृष्टि है, कुछ मुस्लिम देशों का धन युद्धसामग्री एवं शस्त्रभण्डारण के लिए व्यय होगा । वृष राशि वाले दो देशों के मध्य युद्धाग्नि तीव्र होगी, परिणामस्वरूप महाशक्तियों की मध्यस्थता से अढ़ाई वर्ष बाद स्थिति पर नियन्त्रण पाना संभव होगा । कुछ यावन राष्ट्रों को परस्पर कटुता विनाश के कगार तक पहुंचा सकती है । किसी राष्ट्र विशेष में जनाक्रोश उग्ररूप धारण करेगा कि प्रधान नेता को पदत्याग के लिए विवश होना पड़ेगा । गोचरस्थ ग्रहस्थिति के अनुसार मई से अगस्त तक की अवधि में यावन राष्ट्रों में कई तरह के उलट-फेर होंगे । पाकिस्तान, बंगलादेश, अफगानिस्तान, इराक, ईरान एवं अफ्रीकी देशों के लिए यह वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहेगा । बेरुत में शिया-सुन्नी मुसलमानों में विरोध बढ़ेगा । लेबनान में शासन के विरुद्ध विरोधी पक्ष प्रबल होगा । फिलस्तीन में प्रधान वर्ग के लिए संकटपूर्ण समय है । पाक-बंगलादेश की राजनीति में नाटकीय परिवर्तन होंगे । बलोचिस्तान एवं सिन्ध क्षेत्र का वातावरण अशान्त बनेगा । समस्या विकटरूप धारण करेगी, शासकों को हल ढूंढना कठिन होगा । परिणामस्वरूप क्रान्ति का वातावरण बनेगा । संवत् के प्रारम्भ से अक्टूबर तक का समय मुस्लिम देश विशेष के लिए विशेष संकटपूर्ण सिद्ध होगा । कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, चक्रवात व दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि का योग भी बनता है । यूनान, टर्की एवं अरब गणराज्यों में भी आन्तरिक अशान्ति से वातावरण क्षुब्ध रहेगा ।

मुस्लिम राष्ट्रों की वर्ष कुं.

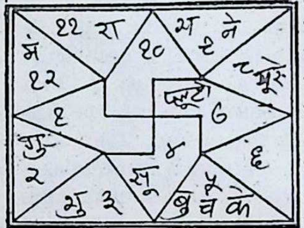

भारत एवं भारत सरकार

स्वतन्त्र भारत के ४१वें वर्ष प्रवेश कालीन कुण्डली में वर्ष लग्न का मालिक सूर्य है, सूर्य-बुध-शुक्र वर्षलग्न से द्वादशस्थ हैं, लग्नस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि है—यह ग्रहस्थिति भारत देश के प्रतिकूल वातावरण को जन्मदेने वाली है । वर्ष लग्न में शनि-मंगल का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध १६ दिसम्बर १९८७ तक राजनैतिक स्थिति को प्रभावित करेगा । प्रधान नेता श्री राजीव गांधी एवं ४१वें वर्ष की ग्रहगति के अनुसार यह वर्ष कांग्रेस (ई.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वतन्त्र भारत का जन्म लग्न

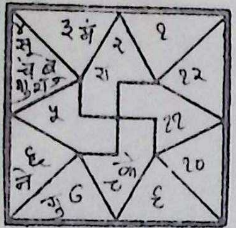

१५ अग. '४७ शुक्रवार
इष्ट ४५।१८

स्वतन्त्र भारत के ४१वें वर्ष का उदय

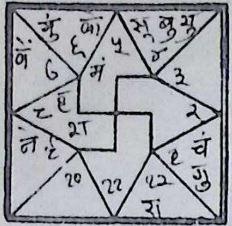

१५ अग. १९८७ ई.

भारतीय गणतन्त्र का ३९वां वर्ष प्रवेश

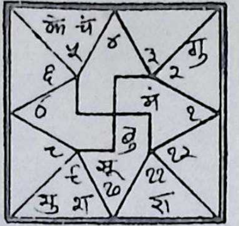

के लिए भयंकर अग्निपरीक्षा का है, श्री राजीव गांधी की यथालब्ध जन्मकुण्डली के अनुसार श्री गांधी का जन्मलग्न सिंह ही है, अतः १६ दिसम्बर तक का समय भारत एवं भारत सरकार दोनों के लिए चुनौतीपूर्ण तो है ही। नानाविध समस्याएं उपस्थित होंगी। २ फरवरी सन् १९८८ से १९ जून १९८८ ई. तक की गोचरस्थ-ग्रहस्थिति के अनुसार उलझी हुई कुछ समस्याओं का हल निकलने की संभावना बनेगी। प्रधान नेता का मनोबल बढ़ेगा। लेकिन सं. २०४५ की ग्रहस्थिति पर ध्यान देना अनिवार्य है। इसवर्ष वृष संक्रान्ति शनिवारी, मिथुन संक्रान्ति मंगलवारी, कर्क संक्रान्ति शनिवारी एवं सिंह संक्रान्ति मंगलवारी होने से ये चारों संक्रान्तियां क्रूरवारों को आ रही हैं—यह एक प्रकार का खप्परयोग बनता है। इस योग का प्रभाव भारत की सामाजिक एवं आर्थिकनीति पर विशेषरूप से पड़ेगा। कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी; कुछ प्रान्त तूफान, भूकम्प, समुद्री तूफान, हिमपात आदि प्राकृतिक-आपदा के शिकार होंगे। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी तेजी आने से जनमानस में सरकार के प्रति आक्रोश दिखाई देगा।

भारत शासनतन्त्र पर अविश्वसनीयता की छाया

सं. २०४५ की ग्रहस्थिति के अनुसार पंजाब, असम, विहार, त्रिपुरा एवं गुजरात आदि में प्रशासन के अनिर्णय की स्थिति में समुचित पग न उठाने के कारण वातावरण प्रतिकूल बनेगा, शासनतन्त्र को एतदर्थ भारी संकट का सामना करना पड़ेगा। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में उलटफेर होंगे। सत्तारूढ़ पार्टी का ढांचा लड़खड़ाता मालूम देगा, आर्थिक समस्याएं गंभीर होंगी। ऐसा प्रतीत होने लगेगा कि शासन समस्या ससाधान में निरुत्तर है; सत्तारूढ़दल में आन्तरिक विद्रोह प्रवल होगा। आभास होने लगेगा, कि—देश में गैरकांग्रेसी सरकार की ओर रुख वन रहा है, लेकिन कुछ परिवर्तन चाहने पर भी अन्ततः जनता को अपने कल्पित विकल्प से निराशा मिलेगी। जून के वाद यह सब मिथ्या भ्रान्ति मालूम देगी, वृषराशि में वृहस्पति के आने पर प्रधाननेता को पूर्णजन सहयोग प्राप्त होगा, ध्रुवीकरण हतप्रभ होने लगेगा। ग्रहचाल के अनुसार इस समय कोई भी नेता राजनैतिक आर्थिक किंवा सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम नहीं है। ग्रहस्थिति के अनुसार विपक्ष, जन-मानस में नई जागरूकता, नई उम्मीद, नया आत्मविश्वास जागृत करने में अन्ततः असमर्थ रहेगा।

मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के लिए समय चुनौतीपूर्ण है, विपक्ष ने भ्रष्टाचार को मुद्दा वनाकर सत्तारूढ़ केन्द्रीय पार्टी को अपदस्थ करके मिश्रित-सरकार का जो स्वप्न (प्रच्छन्नरूप से) संजोया है, वह जनजीवन को दुविधा में अवश्य डालदेगा। दक्षिणपूर्व के अनेक प्रान्त सत्तारूढ़ दल के हाथ से निकल चुके हैं। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं साम्प्रदायिक असन्तोष बढ़ेगा। कुछ प्रान्तों में पृथकराष्ट्रवाद एवं भाषावाद के कारण वातावरण अशान्त होने का भी योग है।

२७ मार्च से १९ जून के मध्य कुछ प्रान्तों के मन्त्रिमण्डलों में विशेष रद्दोबदल होगी; एवं विपक्ष का स्वप्न धूमिल होने लगेगा। इस अवधि में अनेक प्रान्तों में हत्याकाण्ड, घेराव एवं अकाल की छाया से जनजीवन अपने आपको सुरक्षित अनुभव न करेगा। सत्तारूढ़ पार्टी यदि इस अवधि में अपनी छवि उत्तम बना पाई तो समाजवाद, गरीबी उन्मूलन बीससूत्रीय एवं समप्रक्रान्ति के नारों से भटकी हुई जनता का विश्वास सरकार प्राप्त कर सकेगी, अन्यथा स्थिति सत्तारूढ़दल के कन्ट्रोल से वाहर हो जाएगी।

स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली के चौथे भाव में शनि-हर्शल हैं, इन पर मंगल की दृष्टि भी है अतः पड़ोसी देशों की गतिविधि एवं कुनीतिचक्र से भारत सरकार को सावधान रहना चाहिए। उत्तरपूर्वी सीमा पर सेना को सन्नद्ध रखना पड़ेगा। पाकिस्तान के साथ सियाचिन विवाद का हल न निकलने के कारण यह विवाद दोनों देशों के लिए मंहगा पड़ेगा। मित्र देशों से भी किसी मुद्दे को लेकर कुछ मनमुटाव संभव है। नये व्यापारिक समझौते बनेंगे, किसी देश के साथ विशेषकारणवश व्यापारिक सन्धि को भंग करना पड़ेगा। नए मित्र देश बनेंगे, जिससे भारत को लाभ होगा।

वर्षकुण्डली में लग्नस्थ मंगल केन्द्रत्रिकोणेश है, सर्वविध बाधाओं को पार करके भारत की आजादी अक्षुण्ण रहेगी। मंगल सैन्यशक्ति को नवनवायुधों से युक्त बनाकर विरोधी देश की सेना का मुंहतोड़ जवाव देने में समर्थ बनाएगा। देश की वर्षकुण्डली के अनुसार लग्नेश, द्वितीयेश-व्ययेश एवं तृतीयेश-दशमेश का बारहवें भाव में होना देश में राजनैतिक परिवर्तन-संवर्धन के सूचक हैं। बेरोजगारी, विषमता, बिखराव जैसी समस्याएं गम्भीर रूप धारण करेंगी, कानून-व्यवस्था चौपट होती नजर आएगी, नौकरशाही एवं भ्रष्टाचार के काण्ड जोर पकड़ेंगे। सत्तारूढ़ पार्टी को हम ज्योतिषदृष्टया सावधान करदेना उचित समझते हैं, कि यदि सं. २०४५ के अक्टूबर तक भारत की गरिमा को गिरने से न रोका एवं जनमानस के विश्वास को जीतने का प्रयास न किया गया तो इसका परिणाम पार्टी एवं पार्टी के नेताओं के लिए अहितकर सिद्ध होगा।

भारतीय गणतन्त्र कुण्डली में सप्तमभाव खलाक्रान्त एवं खलयुत है; गुप्तशत्रु एवं ध्रुवीकरणता को प्राप्त विपक्षीदलों से देश में सत्तादल के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पनपेगा, परन्तु सप्तमभाव पर वृहस्पति की दृष्टि होने से 'जनमोर्चा' व्यक्तिवाद एवं दलीय महत्वाकांक्षाओं के कारण छिन्नभिन्न हो जाएगा एवं सत्तारूढ़दल पुनः बल प्राप्त कर सकेगा—ऐसा संकेत मिलता है, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

१२ मई से ३ जून तक की अवधि में राहु-मंगल कुम्भराशि में मेल कर रहे हैं; इन पर शनि की दृष्टि भी है, इसलिए यह समय भारत एवं भारत सरकार के लिए, सत्तारूढ़ पार्टी के लिए अग्निपरीक्षा का है, अगर इस क्रूर ग्रहस्थिति में सत्तादल विपक्ष को सन्तुष्ट किंवा जनता का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहा तो सत्ता में परिवर्तन का संकेत स्वप्नमात्र ही रहेगा और विपक्षीदल का प्रभाव नगण्य होने लगेगा, अन्यथा सन् १९८८ में ही परिणाम दलविशेष के विरोध में रहेंगे। इस अवधि में भारत में कुछ प्रान्तों में विशेष घटनाक्रम जारी रहेगा, कहीं हत्या, आतंक भय, रोग एवं अग्निकाण्ड आदि से किंवा तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि का भी योग वनता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६ फरवरी १९८९ ई. से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का षडष्टक भारत की सीमाप्रान्तों पर भयावह स्थिति पैदा करेगा। विरोधी देश की गतिविधि से इस अवधि में सतर्क रहना नितान्त आवश्यक है। संवत् का उत्तरार्ध प्रधाननेता के सामने अनेक विषम समस्याओं वाला होगा, जिसे बुद्धिबल एवं विवेक से ही हल किया जा सकेगा। भारत की विदेश-नीति में कुछ विशेष परिवर्तन संभव है।

श्री राजीव जी की कुण्डलियां कई उपलब्ध हैं जिनके लग्नों में भिन्नता है। हमारे विचार से यथालब्ध सिंह लग्न वाली कुण्डली के अनुसार यह वर्ष श्री राजीव जी के राजनैतिक जीवन के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसवर्ष की भारत की वर्षलग्न कुण्डली एवं श्री राजीव गांधी जी की जन्म कुण्डली दोनों का लग्न सिंह होने से यह वर्ष भारत सरकार के लिए 'द्विजन्मा योग' जैसा ही भयावह है। अतः हमारा अनुरोध है; कि प्रधाननेता की सुरक्षा व्यवस्था को दृढतर करना चाहिए एवं श्री गांधी को जनमानस पर विजय पाने एवं अविश्वास का संकट दूर करने के लिए देश की समस्याओं को आत्मसात् करके हल ढूंढना होगा अन्यथा द्विजन्मा जैसा योग इस 'अविश्वास-संकट' का लाभ उठाने के लिए विपक्ष को प्रेरित करेगा, जिससे देश को भारी संकट एवं राजनैतिक अस्थिरता का सामना करना पड़ेगा। यह वर्ष आपके प्रधान पद की अग्निपरीक्षा वाला है।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

इसवर्ष संवत् के पूर्वार्ध में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विशेष रद्दोबदल एवं नई व्यापारिक-सन्धियां होंगी। भारत की फ्रांस, अमेरिका, रूस, अफ्रीकी देशों, जापान, कनेडा के साथ व्यापारिक सम्बन्ध गहरे होंगे। ऊनी, रेशमी कपड़े, इन्जीनियरिंग का सामान, तम्बाकू एवं चमड़े, रुई, कपास आदि के व्यापार से भारत के व्यापारिक प्रतिष्ठान लाभान्वित होंगे। रूस, मिश्र एवं अफ्रीकी देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़तर होते जाएंगे।

भारत की जलवायु एवं वर्षा

इसवर्ष वर्ष के चारस्तम्भों में जलस्तम्भ १ प्रतिशत ही है, अतः यह वर्ष वर्षा पानी की दृष्टि से विशेष समस्यापूर्ण ही मालूम देता है। इसवर्ष वर्षापानी के स्वामी मंगल होने से भी भारत के कुछ प्रान्तों में इसवर्ष अनावृष्टि एवं कहीं अतिवृष्टि होने से फसल को हानि पहुंचेगी। लेकिन इसवर्ष रोहिणी का वास समुद्र में होने से वर्षा के बारे में विशेष चिन्ता की बात नहीं।

आर्द्राप्रवेश कुं. में दशम भाव पर रा. मं. की दृष्टि होने से राष्ट्र के नेतावर्ग को वर्षा में अनियमितता होने से समयानुकूल वर्षा न होने से किंवा कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि से चिन्तित रहना पड़ेगा। जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी से शासनतन्त्र पर जनाक्रोश बढ़ेगा, किसी विशिष्ट व्यक्ति के पदरिक्त होने का भी योग है। संवत् के प्रारम्भ में वृष, मिथुन, कर्क, सिंह संक्रान्तियों के क्रूरवारों में होने से खप्पर योग वर्षा में कमी का सूचक है।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली

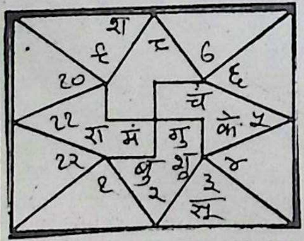

संवत् के शुरू में अप्रैल तक तापमान बढ़ेगा। पुनरपि ७, १०, १३, १४, १६ अप्रैल से १ मई तक भूटान, सिक्कम, हि. प्र. एवं पूर्वी आसाम में वर्षा होगी। मई २, ६, ७, ८, १२, १४ एवं १६ से ३१ मई तक भूटान, शिलांग, सिक्कम, हि. प्र. एवं लंका के पश्चिमी छोर में वर्षा होगी। जून में उत्तरी भारत में गर्मी बढ़ेगी। पुनरपि १५ से २५ जून के मध्य हि. प्र., हरियाणा, बम्बई, मध्यपंजाब में बादल वर्षा के योग है। ६ जुलाई तक अनेकत्र वर्षा होगी। ११ जुलाई तक वर्षा की कुछ प्रान्तों में कमी रहेगी। पुनरपि १० से १३ जुलाई तक बादलचाल वर्षा होती रहेगी। १६ से २८ जुलाई तक उत्तरी भारत में सर्वव्यापी वर्षा के योग है। हि. प्र., बम्बई, गोवा, पंजाब, हरियाणा में वर्षा अच्छी हो। २ से २५ अगस्त के अन्दर एवं ३०, ३१ अगस्त को अनेक प्रान्तों में वर्षा होगी। सितम्बर में २ से ६ तक बादल, खण्डवर्षा, बूंदाबांदी के साथ ऋतु में परिवर्तन आएगा, गर्मी की विदाई का समय मालूम देगा। आगे वर्षा के अवरोध के योग हैं।

१५ अक्टूबर से पक्षान्त तक हिमशिखरों पर हिमपात के समाचार मिलेंगे। तापमान कम होगा। २६ अक्टूबर से ४ नवम्बर तक शीतऋतु का आगमन स्पष्ट होगा एवं शीत जोर पकड़ेगा, उत्तरी भारत के मैदानी इलाकों में भी शीत अनुभव होगा। नवम्बर, दिसम्बर में शीतरोग व्याप्त होंगे। वर्षा, बूंदाबांदी एवं बादलचाल से शीतलहर जोर पकड़ेगी। कहीं ओलापात व हिमपात से हानि भी हो। १२ मई से ३ जून १९८८ ई. तक राहु-मंगल का राशि-सम्बन्ध भी वर्षा में कमी करता है। ८ से १८ एवं २२ से २९ तथा ३१ जन.' ८९ को जोरदार शीतलहर बनेगी, धुन्द आदि का वातावरण भी बनेगा। ७ से २५ फरवरी एवं १६ से १८ फरवरी तक ऋतु परिवर्तन अनुभव होगा। फरवरी-मार्च १९८९ में आगे मंगल पीछे सूर्य होने से अनेकत्र वर्षा की कमी अनुभव होगी।

नोट—यह वर्षा का विचार स्थानीय नहीं है, जिन तारीखों में वर्षा लिखी है, वर्षा होगी परन्तु पंजाब में ही होगी। इतना सूक्ष्म विचार यहां नहीं किया जा सका है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन है। १२ मई से ३० जून १९८८ तक राहु-मंगल कुम्भ राशि में रहेंगे, इस समय यहां भारी सावधानी रखनी आवश्यक है। अशान्ति बढ़ेगी। सैन्यबल की मदद से यहां शान्ति संभव होगी। यहां का युवावर्ग एवं प्रमुख सिक्खवर्ग के विचारों में अन्तर होने से आपसी तनाव बढ़ेगा। किसी प्रमुख नेता के जीवन को भय है। केन्द्र को आतंकवाद के विरुद्ध विशेष नीति बनानी पड़ेगी। इसवर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार यहां सर्वमान्य नेता की कमी अखरेगी परिणामस्वरूप स्थिति पूर्णतया सुधरती मालूम नहीं देगी।

हरियाणा—प्रभावराशि मिथुन है। १ जुलाई १९८८ ई. से जनवरी १९८९ के प्रथम सप्ताह तक मिथुन राशि पर मंगल-शनि की नजर होने से यहां के प्रशासक का प्रभाव कुछ क्षीण होने लगेगा। राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा। यहां की शपथ कालीन कुण्डली के अनुसार बुध-सूर्य ये दोनों लग्नेश मंगल के साथ बैठे हैं, शनि तृतीयेश-चतुर्थेश लग्न में हैं। अनेकविध समस्याओं के आने पर भी प्रधाननेता की गद्दी को भय नहीं। हां, आर्थिक संकट किंवा राजनैतिक गतिरोध से कुछ समस्यायें सामने अवश्य आयेंगी। मुख्य-मंत्री के स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष कुछ अच्छा नहीं, अतः स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। जातिवाद, बेरोजगारी आदि समस्या के समाधानार्थ विशेष खर्च होगा, खनिज उद्योग, औद्योगिक क्षेत्र आदि में विशेष सुधार होंगे। हरियाणा में भाजपा का प्रभावक्षेत्र क्षीण होगा। कांग्रेस कुछ क्षेत्रों में सिर उठाएगी। विद्युत् संकट एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमाचल प्रदेश—प्रभाव राशि मीन है । संवत् का पूर्वार्ध एवं अन्तिम दो मास इस प्रान्त के लिए कठिन परिस्थितियों वाले हैं । प्रधान नेता के विरुद्ध विरोधी ग्रुप सक्रिय होगा, कुछ सत्तारूढ़ दल के नेताओं में आपसी अनबन का प्रभाव पार्टी के नेतृत्व पर पड़ेगा । परिणामस्वरूप प्रधान नेता को कई विषमताओं का सामना करना पड़ेगा । औद्योगीकरण में तीव्रता, वृक्षारोपण को प्राथमिकता दी जाएगी एवं वन आधारित उद्योगों में कमी आएगी ।

उत्तर प्रदेश—प्रभाव राशि धनु है । १९ जून १९८८ से पहिले यहां के प्रधान नेता को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा । १९ जून के बाद धनु राशि पर वृहस्पति की दृष्टि शुभ रहेगी । फिर भी धनु राशि में शनि होने से फरवरी १९८९ ई. से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल के षडष्टक में राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा, उत्तराखण्ड की मांग जोर पकड़ेगी, मन्त्रिमण्डल में विस्तार किंवा परिवर्तन का संकेत मिलता है । यहां सत्तारूढ पार्टी में आपसी फूट से रानैतिक स्थिति विषम होगी । लोकदल की गतिविधि एवं विपक्षी जनमोर्चे से जनता दुविधाग्रस्त होगी । संवद् का अन्तिमभाव यहां के नेताओं के लिए नेष्ट है ।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क है । २ फरवरी १९८८ से ही यहां समस्याएं खड़ी होंगी । मारवाड़ का क्षेत्र तुलाराशि के प्रभाव क्षेत्र में आता है । इसक्षेत्र में मेषस्थ वृहस्पति की स्थिति में प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी । १९ जून १९८८ ई. के बाद मारवाड़ क्षेत्र में प्रगति मन्द पड़ेगी, प्रधाननेता के सामने कुछ नई समस्याएं आएंगी । मई से जून तक इस प्रान्त के किसी भाग में दुर्भिक्ष की स्थिति बनने से यहां की आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी । नई योजनाओं में बाधा उपस्थित होगी । संवत् के अन्तिम दो-तीन मास में जनमानस के विश्वास को दृढ़ रखने के लिए सत्तारूढ़दल को दृढ़निश्चय से परिश्रम करना होगा, विपक्षीदल का प्रयास निष्क्रिय सिद्ध होगा । इस संवत् में भूकम्प, तूफान, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदा से भी अशान्ति होगी । पाक से संलग्न भूभाग पर सावधान रहना होगा, घुसपैठ किंवा कुचक्र से हानि का प्रयास करेगा ।

बिहार—यहां सुधारात्मक योजनाएं कार्यान्वित होंगी । गरीबीस्तर को सुधारने के लिए नई योजनायें बनेंगी । शासकवर्ग एवं शासित में किसी बात को लेकर विरोध पैदा होगा । लूटपाट, डकैती की घटनाएं अधिक होंगी । बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि के समाचार मिलेंगे । इसप्रान्त की आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी ।

महाराष्ट्र—प्रभावराशि वृश्चिक है । जून १९८८ के बाद वृषराशि का वृहस्पति इस प्रान्त के लिए विशेष शुभ रहेगा । शनि के प्रभावक्षेत्र से यह प्रान्त निकलचुका है । पुनरपि संवत् के पूर्वार्घ में जातीयदंगे कहीं स्थिति को अशान्त बनायेंगे । प्राकृतिक प्रकोप से फसल को हानि होगी । आर्थिक संकट के कारण विकासशील कार्यों को पूर्ण करने में बाधा उपस्थित होगी, सत्तारूढ़दल का प्रभाव बना रहेगा ।

बंगाल—प्रभावराशि मकर है । १२ मई १९८८ ई. तक प्रधाननेता के सामने नई समस्या उपस्थित होगी । जून तक यहां की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर कमजोर होने से शासक वर्ग के प्रति जनाक्रोश बढ़ेगा । संवत् के अन्त में शनि-मंगल का षडष्टक यहां के मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन लाने वाला है ।

उडीसा—गोचरस्थ ग्रहस्थिति के अनुसार यहां के विरोधीपक्ष में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति पनपेगी, परिणामस्वरूप प्रधाननेता को अनेकविध समस्याओं का सामना करना पड़ेगा । समुद्रतटवर्ती भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि का भी योग है ।

जम्मू-काश्मीर—प्रभावराशि तुला है । मई के बाद राष्ट्रविरोधी तत्वों के विरुद्ध सख्ती से व्यवहार करना पड़ेगा, अन्यथा उग्रवाद किसी न किसी रूप में जोर पकड़ जाएगा, हत्याकाण्ड एवं अराजकता जैसा व्यवहार असह्य होगा । संवत् के पूर्वार्घ में एवं संवत् के अन्तिम तीनमास यहां के सीमाप्रान्तों पर विशेष निगरानी के हैं, सीमाप्रान्तों पर घुसपैठ एवं लौजी हलचल से वातावरण अशान्त रहे ।

कुछ अन्य राष्ट्र

पाकिस्तान—प्रभावराशि कन्या है । धनुराशि के शनि की कन्याराशि पर विशेष दृष्टि होगी । अगस्त १९८८ से पहिले या फरवरी-मार्च १९८९ ई. की समयावधि में यहां राजनैतिक परिवर्तन होंगे । युद्ध की तैयारी एवं शस्त्र भण्डारण की प्रवृत्ति बढ़ेगी । उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्तों पर अशान्ति बढ़ेगी सिन्ध-बलोचिस्तान अशान्त क्षेत्र बनेंगे । इस संवत् में देशान्तर की मदद से अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति होगी । विपक्षी एकता से प्रधानशासक को चिन्तित रहना पड़े । लद्दाख एवं सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल प्रयोग से शान्तिभंग करे ।

ब्रिटेन—प्रभावराशि मेष है । राशीश-मंगल का राहु के साथ सम्बन्ध किसी भाग में अशान्ति का कारण बनेगा । जून तक विशेष घटनाचक्र चले । लेकिन स्थिति नियन्त्रण में रहेगी । एशियाई मूल के लोग नई नीतियों से चिन्तित रहेंगे ।

रूस—प्रभावराशि कुम्भ है । संवत् के प्रारम्भ से जून तक का समय अशुभ है । अफगानिस्तान की समस्या में अन्य देशों की अभिरुचि से तनाव बढ़े, रूस अपनी प्रतिष्ठा कायम रखेगा ।

इराक-ईरान युद्ध—इस वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार फारस की खाड़ी में बड़े टकराव की आशंका बढ़ेगी, खाड़ी युद्ध में विस्तार एवं राजनैतिक टकराव की संभावना संवत् मध्य तक बढ़ेगी । जापान, सोवियत संघ एवं अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस की अभिरुचि से स्थिति बिगड़ेगी । अरब देश भी ईरान के विरुद्ध आयेंगे । संवत् के अन्त में युद्धाग्नि तीव्र होगी ।

अमेरिका—प्रभावराशि मिथुन है । प्रधान नेता के लिए समय कष्टपूर्ण है । स्वास्थ्य चिन्ताकारक रहे । खाड़ी युद्ध में विशेष अभिरुचि रहे । प्रभावक्षेत्र विस्तार की प्रवृत्ति बढ़ेगी, किसी देश-विशेष से सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे ।

श्रीलंका—दक्षिणी गोलार्ध पर शनि की दृष्टि है । दक्षिणी भाग में तमिल विरोधी हिंसा को बलपूर्वक हमेशा के लिए समाप्त करना संभव न होगा । कुछ समय के लिए दिसम्बर (१९८७ ई०) तक संघर्षपूर्ण वातावरण के बाद सामयिक सफलता मिलेगी । भारत की भूमिका भारतीय तमिलों में अशान्ति का कारण बनेगी, जिसके प्रभाव दूरगामी होंगे ।

पाठकों ! अतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता इस कलियुग में कठिन ही है । पुनरपि ज्योतिर्विज्ञान दृष्टया एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं अल्पविषयीं मति में स्फुरित हुई हैं, आपके समक्ष उपस्थित कर दी गई हैं । आगे कर्तुमकर्तु-मन्यथाकर्तु समर्थ, भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु भी हैं । उनकी प्रबल माया-शक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य लेखन में प्रवृत्ति बालचापल ही तो है ।

"तत्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन ।" शुभ चिन्तक—

१६ अगस्त १९८७ ई० **इन्दुशेखर शर्मा**

श्री मार्त्तण्ड भवन, कुराली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यापार विमर्श (सं. २०४५ वि.)

'व्यापारे वसति लक्ष्मीः—यह युक्ति अनुभव के आधार पर खरी उतरती है; क्योंकि सेवावृत्ति वाला व्यक्ति कभी लक्षाधीश नहीं देखा गया। हां, व्यापार के माध्यम से व्यक्ति कोट्यधीश बने हैं।

जीवन के सभी पहलुओं पर विचार करने से यह बात निस्सन्देह सत्य सिद्ध हो चुकी है, कि भाग्य में जितना आपको लाभ होना लिखा है, उतना ही होगा। भाग्य के द्वारा निर्धारित अधिकार से अधिक आपका परिश्रम एवं विद्या भी आपको नहीं दिला सकते— "भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।" मनुष्य की वुद्धि भी भाग्य के संकेत पर ही मनुष्य को हानि-लाभ की ओर प्रेरित करती है। मनुष्य के भाग्य में हानि-लाभ के संकेत को पढ़ने के लिये ग्रहगति का रहस्यात्मक-ज्ञान मनुष्य को ऋषियों से प्राप्त हुआ है। अतः **व्यापार बढ़ाने से पहले संभावित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहगति को ध्यान में रखना परमावश्यक है, अपनी कुण्डली में नेष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। आपके लिये इस वर्ष जो ग्रह लाभप्रद है, उससे सम्बन्धित वस्तु के व्यापार से लाभ ले सकते हैं। अतः वर्षारम्भ में ही जन्मपत्र भेजकर व्यापारिक दृष्टि से विचार करा लेना आवश्यक है।**

संवत् २०४५ में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो आदि के चार एवं युति-प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है, कि इस साल व्यापारिक जगत् में विशेष उथल-पुथल होगी। गुड़, ज्वार, मक्का, बाजरा, चना, खांड, रुई में भयंकर तेजी आयेगी, सरसों, तिल, तेल, घी एवं रेयान, चांदी, सोना आदि के भावों में भी जबरदस्त उतार-चढ़ाव आयेंगे। कहने का तात्पर्य यह है, कि इस वर्ष **व्यापारिक क्षेत्र में रंक से राजा एवं राजा से रंक बना देने वाले विशेष योग हैं। अतः वार्षिक ग्राहक बनकर समय-समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें। इस वर्ष ग्रहचाल के खिलाफ चलने वाले व्यापारी भारी हानि में रहेंगे। नोट करलें।**

'व्यापार विमर्श' में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को सावधान करते रहे हैं। गत वर्ष भी हजारों व्यापारी सोना, चांदी एवं अन्य जिन्सों में लाभ उठा चुके हैं। ताजा परामर्श प्राप्त करके हमारे ग्राहक व्यापारी लाखों का लाभ उठा गये हैं। सं. २०४४ **में तेलों, तिलहनों में भयंकर तेजी से व्यापारी हमारे परामर्श से करोड़पति बने हैं, हमने पृष्ठ नं. ३१ पर कालम नं. २ में १९ अगस्त के व्यापारिक फलादेश में स्पष्ट रूप से व्यापारियों को "सरकार की व्यापारिक नीति को ध्यान में रखकर काम करने की सलाह" दी थी एवं तेल, तिलहन आदि में जबरदस्त मन्दे की घोषणा की थी; तदनुसार तिलहन एवं तेलों में एकदम भयंकर मन्दा आया, और व्यापारी हानि से बच गये।** इस वर्ष भी हम सं. २०४५ में ग्रहगति के अनुसार तेजी-मन्दी की विशेष लाइनों का संकेत यहां देंगे, तथा सामयिक तेजी-मन्दी का भी विवेचन करेंगे। फिर भी व्यापारियों से आग्रह है, कि वे निम्नांकित हिदायतों को ध्यान में रखते हुये अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करने के लिये आगे बढ़ें।

वायदा-व्यापारियों के लिये हिदायतें

(१) सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रखो, कि वायदा व्यापार में नुकसान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुकसान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुकसान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे कि सबसे पहले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ-साथ ग्रहगति के आधार पर निर्णय कर लें, कि यह समय इस वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का? मन में यह धारणा बांधकर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार की लहर तेजी की चल रही हो तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि यह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बेचाव करते रहिये, थोड़ा-थोड़ा सौदा काट कर नफा से सुलटते रहिए। (५) व्यापार की लहर तेजी की है या मन्दी की? यह जानने के लिए 'खास' वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु में हर तीसरे, चौथे, आठवें दिन मन्दी के या तेजी के नये-नये भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो, कि वस्तु में अब मन्दे की लहर चल रही है, उसे मन्दे के उछाले में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव छूटते चले जायें और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नये बनते जाएं तो समझ लें कि तेजी की लहर चल रही है, ऐसे समय जब ग्रह चाल से भी तेजी नजर आये तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मानलो, आपने तेजी का काम किया। उधर सौदा करते ही बाजार में मन्दे की लहर चल रही हो तो किसी भी समय तेजी का उछाला आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे। हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुये अपनी पाराशरी शुभ दशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इसके विरुद्ध खोटी ग्रह स्थिति वाले व्यापारियों को वायदों का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानि हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अतः समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा लाभ उठा सकते हैं।

अप्रैल—मासारम्भ में ही बुध ग्रह मीन राशि में आकर सूर्य के साथ सम्बन्ध करेगा, [ध्यान रहे—गत मास २८ मार्च को शनि-मंगल का राशि सम्बन्ध समाप्त हो चुका है; इस लिए गुड़, तिलहन, तेलों एवं सोना, चांदी में उत्तम तेजी का चांस इस समय तक का निकल गया है, अब बाजारों में उक्त चीजों में कुछ पहले की निस्पत सामान्य एवं टैम्परेरी मन्दे का वातावरण बनेगा।] लेकिन सूर्य-बुध का राशि सम्बन्ध फिर भी अनाजों एवं बिनौला में तेजी लाएगा; वायदा के व्यापारी इस चांस से दैनिक लाभ ले सकते हैं। इस समय गुड़, खांड, शक्कर में मन्दी, सोना, चांदी में घटा-बढ़ी के साथ पहले तेजी, बाद में उतनी मन्दी संभव है।

३ अप्रैल को उ.भा. नक्षत्र में बुध का पदार्पण भी बाजारों में कोई विशेष घटा-बढ़ी का सूचक नहीं है। **४ अप्रैल को सूर्य-बुध एवं बुध-शुक्र की अंशात्मक युति तथा ५ अप्रैल को सूर्य-शुक्र की अंश युति का प्रभाव वायदा व्यापार पर पड़ेगा, परिणामस्वरूप गुड़, रस-कस, खांड, शक्कर, चावल, चना, रुई एवं चांदी में अचानक तेजी से लाभ मिलेगा।** ४-५ अप्रैल को तेजी खेलने वाले व्यापारी लाभ लेंगे;—ऐसा विचार है, फिर भी समय पर ताजा मशवरा प्राप्त करें तो अधिक ठीक रहेगा।

७ अप्रैल को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आजाता है, इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होता है तथा साथ ही यूरेनस वक्री हो जाता है;—सोना, चांदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खांड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल और ऊन में मन्दा आने की सम्भावना है, हाजर के व्यापारी माल खरीदने का मन बनावें, आगे लाभ की स्थिति बनेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१० अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आकर, सूर्य के साथ नक्षत्र सम्बन्ध भी करने लगा है, लेकिन १० अप्रैल को ही शनि धनु राशि में वक्री हो रहा है; **यह समय व्यापारियों के लिये बड़ा महत्वपूर्ण है, व्यापारी सावधानी से काम करें,—१०, ११ अप्रैल के लगभग सट्टा के व्यापारी मोटा नफा कमाएंगे। हमारे विचार से इन दिनों गुड़, खांड में भारी तेजी का झटका आयेगा; लेकिन सरसों, तेल, तोड़िया में भारी मन्दी आ सकती है, विचार पूर्वक काम करें, अन्यथा भारी हानि उठानी पड़ेगी।**

१२ अप्रैल को श्रवण नक्षत्र का मंगल अनाजों, दालवाना में अचानक भारी तेजी कारक है। जौ, चना, तिल, अफीम एवं सोना, चांदी आदि धातु तेज रहेंगे।

१३ अप्रैल को मेष संक्रांति बुधवार को लग रही है, ध्यान देने योग्य बात यह है, कि सूर्य मेष राशि में संक्रमण करके वृहस्पति के साथ मेल करेगा;—इसलिए बाजारों में अचानक मन्दे का संचार होगा। **इस समय बाजारों में मन्दा आने पर व्यापारियों को तुरन्त स्टाक कर लेना चाहिए और वायदा व्यापारी १३, १४, १५ अप्रैल को दुतरफा सौदा करके या केवल मन्दे का वायदा करके लाभ ले सकेंगे।** सूर्य-वृहस्पति का राशि सम्बन्ध मन्दी कारक ही रहेगा, ऐसा मालूम देता है। **लेकिन यह मन्दी ज्यादा से ज्यादा दो दिन रहेगी, बाद में तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, खांड, चीनी एवं दालवाना तथा मोटे अनाजों में जोरदार तेजी बनेगी, उत्तम लाभ मिलेगा।**

१६ अप्रैल को शनिवारी अमावस (शनैश्चरी अमावस) बाजारों में तेजी का इसारा करती है, अतः १३ अप्रैल के करीब खरीदे गए माल को सैटल करके इस समय नफा प्राप्त कर सकते हैं। शनि-यूरेनस-नेपच्यून वक्री हैं अतः इस समय मंहगाई की ओर सरकार का ध्यान जा सकता है,—सरकारी गतिविधि को ध्यान में रखते हुए काम करें, अन्यथा हानि भय है।

१७ अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर सूर्य तथा वृहस्पति के साथ मेल करेगा—यह योग खास मन्दे का झटका देने वाला है। मूंगा-मोती आदि जवाहरात, सोना, चांदी आदि धातु, गेहूं, चना, जौ आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खांड, शक्कर में मन्दे का वातावरण बनेगा।

२२ अप्रैल को मृगशिरा में शुक्र एवं २३ अप्रैल को बुध-गुरु दोनों भरणी नक्षत्र में आ जाते हैं, गेहूं, चना, ज्वार, मूंग, मोठ, चावल, जौ, तिल, उड़द, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहिले कुछ मन्दा आएगा, बाद में शीघ्र ही तेजी का वातावरण बनेगा।

२३ अप्रैल को शनिवार के दिन **बृहस्पति अस्त हो जाता है; इस समय बाजारों का रुख देखकर काम करें; हमारे विचार से रुई और शेयरों के बाजारों में अचानक जोरदार तेजी आएगी; सोना, चांदी एवं अनाजों में तो मन्दे का ही रुख रहेगा।** रुई, चांदी एवं तिलहन तेलों के व्यापारी सूझबूझ से काम करें, तभी लाभ ले सकेंगे।

२५ अप्रैल को बुध-गुरु की 'अंशात्मक युति' होगी, बुध-गुरु-सू. पर मंगल की नजर है, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से फसल को हानि वा किसी अफवाह से बाजार गर्म होंगे, अचानक तेजी और अचानक मन्दे का वातावरण बनेगा। इस समय तेल, तिलहन, गुड़ एवं सोना, चांदी के व्यापारी विचारपूर्वक काम करके लाभ लें।

२७ अप्रैल को सूर्य भी भरणी नक्षत्र में आजाता है, २९ अप्रै. को बुध भरणी नक्षत्र से निकल कर कृत्तिका नक्षत्र में आ जाता है,—यह योग सोना, तांबा, पीतल के बर्तन, गेहूं, चना, जौ, चावल, मोठ, रुई, सरसों, अलसी, गुड़, खांड, घी में तेजी का रुख बनाएगा। चांदी चावल में खास घटा-बढ़ी के बाद मन्दा बनेगा।

नोट—इस मास में जब भी मन्दा आये तो खरीदो और जब भी तेजी का झटका आए तो बचो—यही करें, क्योंकि कोई एक बड़ी लम्बी लाईन बनने का योग इस मास में नहीं है।

मई—मई मास के प्रारम्भ में ही बुध वृष राशि में आकर शुक्र के साथ राशि सम्बन्ध करेगा। जब बुध किसी शुभ ग्रह के साथ सम्बन्ध करता है तो शुभ फल करता है, जब अशुभ ग्रह के सम्पर्क में आता है तो अशुभ फल देता है—यह बुध का स्वभाव है। बुध अफवाहों का बोलवाला बनाकर तेजी-मन्दी पर प्रभाव डालता है। जब बुध, शुक्र के साथ सम्बन्ध करता है तो बुध बाजारों में विशेष तेजी या मन्दी लाता है। वृष राशि में अकेला बुध मन्दी कारक होता है, लेकिन शुक्र के साथ मिलकर कई बार जोरदार तेजी भी लाता है, अतः **इस समय बाजार का रुख देखकर काम करें;-अन्यथा हानि भय है।**

ध्यान रहे—गतमास १० अप्रैल से ३ मई तक गुरु एवं बुध दोनों अतिचारी रहेंगे—इसका फल शास्त्रों में राजनैतिक विप्लव, कहीं राजनैतिक गतिरोध एवं कुछ प्रान्तों में आगे प्राकृतिक प्रकोप से कृषि हानि आदि से व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होंगे; व्यापारी विचार-पूर्वक काम करें।

ग्रहचाल के अनुसार १५ दिन में रुई में मन्दी आकर पीछे कुछ तेजी आयेगी। चांदी, गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, में तेजी का वातावरण रहेगा। वस्त्र, रुई एवं शेयर बाजार में मन्दा आने का योग है।

२ मई को बुध का उदय होगा, इसी दिन शुक्र मिथुन राशि में आकर शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा, साथ ही इस दिन मंगल धनिष्ठा नक्षत्र में पदार्पण करेगा;—**यह दिन वायदा व्यापारियों के लिए खास सावधानी का है, रुई, कपास, सूतवस्त्र, बारदाना, एरण्डी, तिल-तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि तिलहन तेलों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी जोरदार तेजी का बोलवाला रहेगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, भी तेज रहेंगे। अलसी, गुड़, घी में जोरदार घटा-बढ़ी होगी।**

३ मई को सूर्य-गुरु की अंशात्मक युति भी अनाज एवं तिलहन में तेजी का संकेत देती है। **[२ मई से ७ मई तक एकतरफा लाईन उत्तम-मध्यम रूप से चलेगी।]**

६ मई को रोहिणी का बुध रुई, कपास, सूत, वस्त्र, रेशम, सरसों, तिल-तेल, लाल मिर्च, हींग, शेयर तेज करेगा।

७ मई को भरणी के तृतीय चरण में गुरु का प्रवेश चांदी, सोना आदि धातु, हीरा-मणि आदि जवाहरात, अलसी, चावल, जौ, गेहूं, तिल, उड़द, मूंग, मोठ, तूअर, चना एवं ऊन में कुछ मन्दे का रुख बनाएगा। लेकिन शीघ्र ही ८ मई को पू.भा. नक्षत्र का राहु एवं पू.फा. नक्षत्र का केतु दालवाना, अनाजों एवं तिलहन में तेजी ला देगा। **तेजी में बचें, मन्दे में खरीदें—इस सिद्धान्त से लाभ ले सकेंगे।**

१० मई को कृत्तिका नक्षत्र का सूर्य घी, रुई, सोना, चांदी, सरसों, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई एवं दालवाना में तेजी कारक है।

विशेष—**१३ मई को मंगल कुम्भ राशि में आकर राहु के साथ सम्बन्ध करेगा। ध्यान दें—राहु-मंगल पर शनि की दृष्टि भी है, शनि वक्री है। शनि-मंगल-राहु ये तीनों क्रूर**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह जब आपस में दृष्टि सम्बन्ध या राशि सम्बन्ध करते हैं तो बाजारों में जबरदस्त हलचल होती है। मंगल ग्रह विशेषतः वायु-वर्षा को प्रभावित करता है; इस ग्रह का प्रभाव विशेषतः रुई, नरमा, कपास, तिलहन, तेल, गुड़, चांदी, सोना और शेयर बाजारों पर होता है। रुई, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, कपास, सरसों आदि की फसल के बारे में अफवाहें फैलेंगी, जिससे बाजार ऊँचे उठेंगे। इस समय तिलहन के व्यापारी तेजी का काम करके उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे।

१४ मई को **वृष संक्रांति शनिवार को आ रही है; वृष राशि में स्थित सूर्य-बुध पर राहु युत मंगल की नजर है; इसलिए यह संक्रांति बाजारों में चली आ रही तेजी को और बढ़ावा देगी।** सोना चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, खल, बिनौला, दालवाना एवं चावल, ज्वार, बाजरा आदि में अच्छी तेजी आयेगी। **१० मई से १४ मई तक तिलहन, गुड़, तेल, रुई आदि में जोरदार तेजी से वायदा के व्यापारी लाभ उठा सकते हैं, इस वक्तताजा मशवरा हासिल करें, तो अधिक ठीक रहेगा।** १५ मई को मृगशिर का बुध, सूर्य के साथ होने से एवं बुध पर मंगल की नजर होने से तेजी का ही माहौल बना रखेगा। १७ मार्च को मंगलवार एवं रोहिणी नक्षत्र में चन्द्रदर्शन भी मूंग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, मूंगफली एवं अन्य तिलहनों में, तथा सोना, चांदी में तेजी का ही सूचक है। इस समय गुड़ भी तेज रहेगा। **१९ मई को वृहस्पति का उदय होगा एवं २० मई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय चली आ रही तेजी या मन्दी की चाल अचानक बदल सकती है; विचार पूर्वक काम करें अन्यथा हानि सम्भव है।** हमारे विचार से गेहूं, चावल, चना, ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, एवं अन्य दालवाना में टैम्परेरी तेजी आकर तुरन्त कुछ मन्दे का वातावरण बनेगा। **इस समय वायदा व्यापारी ताजा मशवरा हासिल करें, तो अच्छा रहेगा।** २१ मई को भर.नक्षत्र का गुरु बाजारों में कुछ मन्दा करेगा।

व्यापारी सावधान—[**१० मई से १८-मई तक सभी बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी के बाद १९ मई का दिन विशेष सतर्क रहने का है;**—इस समय हमारे साथ पत्र व्यवहार करने वाले व्यापारी विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं एवं भारी हानि से बच सकते हैं।

२२ मई को **मंगल शतभिषा में एवं शुक्र वक्री हो रहा है एवं २३ मई को बुध मिथुन-राशि में आकर शुक्र के साथ फिर से राशि सम्बन्ध बनाएगा। इस प्रकार शुक्र-बुध पर शनि की पूर्ण-दृष्टि है,—यह योग निश्चय ही तेजी का है।** घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, रुई, सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा में तेजी का झटका आएगा। रुई और शेयर बाजारों में जोरदार तेजी की उम्मीद है। २४ मई को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य एवं वक्री शुक्र मृग. में आकर चली आ रही तेजी को और भड़का देंगे। **३१ मई को मिथुन राशि का बुध वक्री हो जाता है। इस प्रकार वक्री-बुध और वक्री शुक्र पर शनि की नजर बहुत महत्वपूर्ण है।** इस समय रुई, गुड़, चना, चावल, सोना, चांदी, सरसों, तिलहन, घी, तेल, खल में जोरदार तेजी आएगी; लाभ ले सकते हैं।

[ध्यान दें—२२ मई से ३१ मई तक बाजारों में जोरदार तेजी आएगी—इस समय पत्र व्यवहार करें;—ताजा विमर्श प्राप्त करें।

जून—गत मास के अन्त में तेजी की आशा लगाए बैठे व्यापारियों के लिए ४ जून को होशियार रहना चाहिए। ४ जून को वक्री बुध अस्त हो जाता है। पाट, हैसियन और शेयर-मार्कीट मन्दे होंगे। रुई में झटके के साथ अच्छी मन्दी आने का योग है। इस दिन कृत्तिका नक्षत्र का गुरु भी गुड़, खाण्ड, चांदी और सोना के व्यापार में मन्दे का रुख बनाएगा। साथ ही ५ जून को शनि वक्री हालत में मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर रुई, कपास, चांदी, रसकस एवं सेन्धा नमक में टैम्परेरी तेजी करेगा। बुध-शुक्र पर शनि की नजर होने से जो मन्दे का रिएक्शन ठहरेगा नहीं; अतः वायदा व्यापारी इस चांस से लाभ उठा सकते हैं। मास के आरम्भ में अनाजों व दालवाना में तेजी रहेगी। [**अनाज के व्यापारी ध्यान रखें**—कि यदि अनाजों का भाव पहिले मन्दा हो तो खरीदें, शनि के मूल में रहने पर अनाज तेज होंगे; यदि पहले अनाज तेज रहे हों तो मूल के शनि में अनाजों में मन्दा होगा—ऐसा अन्दाजा रखें।] ७ जून को सूर्य मृगशिरा में पदार्पण करेगा, सूर्य का विशेष सम्बन्ध रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, हल्दी, काली मिर्च आदि से है। मृगशिरा नक्षत्र बुध-शुक्र से सम्बन्ध रखता है। वृष राशि का सूर्य रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, नारियल एवं सभी प्रकार के फलों को तेज करता है।

विशेष—इस मास में १० जून का दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, इस दिन बुध एवं शुक्र की अंशात्मक युति होगी, इसी दिन उल्टी चाल से चल रहे बुध एवं शुक्र फिर से वृष राशि में एक साथ दाखिल हो रहे हैं, साथ ही शुक्र पश्चिम में अस्त हो जाता है। इससे पहले कि वे व्यापार को आगे बढ़ावें, हमसे पत्र-व्यवहार करें, अन्यथा भारी लाभ से वंचित रहेंगे।

१० जून के लगभग से ही व्यापार में भारी उथल-पुथल होगी, बाजारों में जबरदस्त तेजी या मन्दी के रिएक्शन आएंगे। लाखों रुपये कमाने का चांस है, वे ही व्यक्ति इस चांस से लाभ उठा सकेंगे जो इस समय पूरी फीस भेजकर ताजा मशवरा हासिल करेंगे। साधारणतया हम यह संकेत दे देना उचित समझते हैं कि—इस समय विदेशी डिमाण्ड से आयात-निर्यात की खबरों का व्यापार पर प्रभाव पड़ेगा। वृष राशि के बुध-शुक्र के साथ सूर्य का भी सम्बन्ध है, इसलिए यह समय हरेक व्यापारी के लिए विशेष सावधानी से काम करने का है। अपने मन से या अन्दाजा से काम करना खतरनाक है।

अकेला शुक्र मन्दी कारक है, परन्तु जब इसका सम्बन्ध बुध के साथ होता है तो जोरदार मन्दी कर देता है, अर्थात् चले आ रहे ट्रेण्ड को बढ़ावा देता है, यदि शुक्र के वृष में आने पर बाजार तेज रहें तो बुध का शुक्र के साथ मेल होने पर जोरदार तेजी बना करती है—यह अनुभव में आया है। लेकिन १० जून की स्थिति में कुछ अन्तर है, बुध-शुक्र दोनों वक्री हैं, दोनों के अंश बराबर हैं, इनके साथ सूर्य का सम्बन्ध भी है, साथ ही इन पर मंगल की नजर भी है, अतः व्यापारी जोरदार तेजी या मन्दे का मन बनाकर काम करें। **बाजार के रुख को देखकर चलने वाले व्यापारी लाभ लेंगे।** हमारे विचार से इन दिनों लोगों की क्रय शक्ति बढ़ेगी। रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, चांदी, सोना, कपड़ा, सूत में विशेष तेजी आएगी; विदेशी निर्यात आदि की घोषणा से मार्कीट में जोरदार तेजी को बढ़ावा मिलेगा। रुई के व्यापारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारी एवं मोटे अनाज एवं दालवाना के व्यापारी विशेष लाभ प्राप्त करेंगे। ऋतु विपर्यय एवं वर्षा की कमी से कहीं दुर्भिक्ष आदि की स्थिति बनेगी। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सरसों, अलसी, एरण्ड, बिनौला, सोना, चांदी, गुड़, घी एवं मूंगफली आदि में अचानक तेजी एवं मन्दे के झटके आएंगे।

१३ जून को मंगल पू.भा. में एवं १४ जून को कर्क संक्रांति भी मंगलवार को ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगी, प्रभावस भी मंगलवार को आ गई है। १३ जून को सूर्य एवं शुक्र की अंशात्मक युति भी हो रही है। इस सारी ग्रह स्थिति का प्रभाव तेजी कारक ही रहेगा। रेशम, सून, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, मोंठ, उड़द, गेहूं, चना, चावल आदि प्रत्येक जाति का अनाज एवं सोना, चांदी में भी जबरदस्त तेजी बनेगी। १४ जून को मलमास समाप्त हो जाता है;—ज्येष्ठ मलमास का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है—"ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्य-निष्पत्तिरुत्तमा"। अर्थात् ज्येष्ठ मास अधिक होने से प्रशासक के अपदस्थ किंवा आकस्मिक निधन से अराजकता एवं राजनैतिक अस्थिरता का योग बनता है तथा अनाजों की फसल आगे अच्छी होती है। तात्पर्य यह है, कि जून मास के लगभग राजनैतिक गतिविधि को ध्यान में रखते हुए कारोबार बढ़ावें, मंहगाई के विरोध में शासक कोई विशेष कानून भी बना सकता है। १५ जून को बुधवारी चन्द्र-दर्शन चांदी, सोना, बारदाना, गुड़, खाण्ड में कुछ मंदे का रुख बनाएगा। रुई, सूत व धातुओं में कुछ तेजी ही रहेगी।

आगे १६ जून को अपनी डायरी में नोट कर लें—१६ जून को वृहस्पति वृष राशि में प्रवेश करेगा एवं इसी दिन शुक्र पूर्व दिशा में उदय होगा। इस ग्रह स्थिति का प्रभाव बाजारों में जबरदस्त होगा। व्यापारिक वस्तुओं में जबरदस्त उथल-पुथल होगी, वायदा के व्यापारी प्रत्यक्ष मिलें या पत्र द्वारा परामर्श प्राप्त करें तो लाभ रहेगा। शुक्र-बुध-वृहस्पति तीनों वृष राशि में एकत्र हो गए हैं। व्यापारी ध्यान दें—इस समय यदि तेजी का रुख बने तो तेजी में रहें, यदि मन्दे का रुख बने तो मन्दे में रहें,—भयंकर तेजी या मन्दे का चांस बन रहा है; समय पर पूरी तरह विचार करके अपने ग्राहकों को लिखेंगे। परन्तु इस समय हमारे विचार से आगे रुई में जबरदस्त तेजी की लम्बी लाईन बनेगी; रुई में १०० रुपये या अधिक की तेजी अवश्य बनेगी—ऐसी ग्रह स्थिति है; समय से पहले ही मन्दा होने पर रुई का स्टाक करना लाभप्रद रहेगा। १६ जून की ग्रहचाल के अनुसार चांदी, मजीठ, मोती, मूंगा, नमक, लाल रंग की चीजें, गुड़, लालमिर्च एवं श्रीफल में मन्दा बन सकता है; आगे चैत्र में घी एवं श्रावण में चना में तेजी आएगी। इस समय अनाजों में कुछ तेजी रह सकती है। इस मास में सरकार की व्यापारिक चाल से अचानक बाजारों में मन्दा आने का भय है, विचारपूर्वक काम करें।

२१ जून को मंगल एवं राहु की अंशात्मक युति होगी, साथ ही सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। आज से वर्षा ऋतु की शुरूआत है। इस दिन मंगल-राहु की अंशयुति एवं मंगल-राहु पर शनि की दृष्टि होने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, तिलहन एवं तेलों में, रुई, सूत, कपास, अलसी, एरण्ड, खल, बिनौला में तथा चना, दालवाना में अचानक तेजी बनेगी,—इस समय स्टाक निकाल देने से लाभ मिलेगा। कहीं वर्षा की कमी व कहीं वर्षा से हानि होने के समाचारों से बाजार चढ़ेंगे।

२२ जून को शुक्र वक्री हालत में रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा, साथ ही इसी दिन बुध पूर्व दिशा में उदित हो जाता है;—चांदी, सोना में तेजी आएगी, तिल, घी, लालमिर्च भी तेज होंगे। गुड़ आदि में कुछ मन्दे का रुख बन सकता है। २४ जून को बुध मार्गी होगा; रुई में कुछ मन्दी के बाद तेजी आएगी, चांदी में घटा-बढ़ी चलेगी, गेहूं, जौ, चना, अनाज तेज होंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी आएगी, रसकस मंदे एवं सोना तेज रहेगा। इसके बाद मासान्त तक बाजारों में अस्थिरता रहेगी।

जुलाई—मास के आरम्भ में ही मंगल मीन में आ रहा है। मीन राशि में मंगल की स्थिति मूल रूप से मन्दे की सूचक है। मंगल का विशेष प्रभाव तेलवाना, रुई, कपास, शेयर बाजार, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चांदी एवं तिलहन पर होता है। अत: मीन के मंगल में रुई, सोना, चांदी, एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में भी प्राय: मन्दे का ही रुख रहता है। [इस मन्दे का प्रभाव ६ जुलाई तक चलेगा।] मासारम्भ में वर्षा का योग अच्छा है।

७ जुलाई को मंगल उ.भा. में आने से देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ, सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी आती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ७ जुलाई से बाजारों में तेजी का रुख बनेगा। आगे १० जुलाई को पू.भा. १ में राहु एवं पू.फा. ३ में केतु का प्रवेश भी तेजी को और बढ़ावा देगा। अनाज, तिलहन, तेल, मूंग, उड़द में राहु पर शनि की नजर होने से विशेष तेजी का योग बनेगा। ११ जुलाई तक प्राय: तेजी रह सकती है।

१२ जुलाई को आर्द्रा नक्षत्र का बुध मन्दा ला सकता है, सावधान रहें। आर्द्रा नक्षत्र विशेषत: तेलवाना को प्रभावित करता है; लेकिन इस समय बुध-सूर्य दोनों इकट्ठे हैं, बुध-सूर्य पर शनि की दृष्टि है,—अत: आर्द्रा नक्षत्र का बुध मन्दी कारक होने पर भी मन्दा नहीं करेगा;— ऐसा विचार है। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ, सरसों, मूंगफली, एरण्ड, बिनौला एवं तेलों में कुछ तेजी का ही विचार है, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करने की सलाह है। १६ जुलाई को कर्क संक्रांति शनिवारी है; कर्क संक्रांति के समय बुध भी कर्क राशि में ही है, कहीं वर्षा की कमी व कहीं अत्यधिक वर्षा से फसलों को हानि पहुँचेगी। रुई, सूत, कपास, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, तिलहन एवं तेल, दालवाना आदि में तेजी आएगी। अनाजों एवं दालों में अच्छी तेजी आने का योग है। इस समय यदि अनाजों का पहले स्टाक किया हुआ हो तो स्टाक निकाल दें, सोना, चांदी एवं स्टील आदि के व्यापारी स्टाक करें—आगे अच्छा लाभ मिलेगा।

१७ जुलाई को शुक्र मृगशिरा में आकर मंगल से देखा गया है। अनाजों में टैम्परेरी मन्दे का रुख बनाएगा, लेकिन गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे। १६ जुलाई को सूर्य पुष्य में आकर तिल, तेल, सरसों, मद्य, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, गुग्गल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सण, अन्नवस्त्र, सिक्का, सोना, चांदी तेज रहेंगे। रुई में पहले तेजी और फिर मन्दी आएगी। [१२ से १६ जुलाई तक बाजारों में जोरदार उथल-पुथल होगी, परन्तु हमारा विचार इस समय विशेष तेजी का ही है।] आगे २० जुलाई से ८ अगस्त तक बुध अतिचारी रहेगा, यह योग अफवाहों से अच्छी तेजी या कभी अच्छी मन्दी करेगा; ताजा मशवरा प्राप्त करें। २० जुलाई को चांदी, चावल, कपास, रुई, सूत में अचानक जोरदार मन्दा आने का चांस है—सावधानी से काम करें।

२२ जुलाई को बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा; अनाज, घी आदि मन्दे होंगे, रुई में घटा-बढ़ी, पहले तेज, बीच में मन्दी, अन्त में फिर तेज रहेगी। सोना में घटा-बढ़ी के बाद तेजी आएगी। २३ जुलाई को वक्री शनि मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में आएगा, साथ ही इस दिन प्लूटो मार्गी हो रहा है। शनि-शुक्र परस्पर एक दूसरे को देख रहे हैं। रुई, कपास, बिनौला, चांदी, रसकस, सेंधा नमक एवं धातुओं में तेजी बनेगी। अनाजों एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दालवाना के व्यापारी सावधान, अचानक मन्दे का झटका आ सकता है। २५ जुलाई को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। यह समय सावधानी से व्यापार करने का है; अचानक झटके के साथ बाजार उठेंगे और गिरेंगे। हमारे विचार से इस समय रुई में कुछ मन्दा आकर तेजी बनेगी, चांदी में घटा-वढ़ी से तेजी। गुड़, रसकस, तेल, मूंगफली, सरसों एवं सोना में तेजी के वाद मन्दा आ सकता है। २७ जुलाई को पुष्य नक्षत्र का बुध भी बाजारों में मन्दी कारक ही रहेगा;—सोना, चांदी, रुई में झटके के साथ मन्दा आने का योग है। बाजार के रुख को देखकर काम करें। [२५ से २८ जुलाई तक बाजार प्रायः नर्म ही रहेंगे।]

२६ जुलाई को शुक्र मिथुन में आकर शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध बनाता है, शनि-शुक्र का यह दृष्टि सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण है, साथ ही शुक्र पर मंगल की भी दृष्टि है, स्पष्ट है कि शुक्र को शनि-मंगल देखते हैं। यह योग बाजारों में एकदम झटके के साथ तेजी ला देने वाला है। फिर भी बाजार के रुख के खिलाफ न चलें—यह हिदायत है, कदाचित् तेजी की जगह मन्दा चलने लगे तो जोरदार मन्दा भी बन सकता है, लेकिन हमारा विचार तेजी का ही है। रुई, कपास, सूत, वस्त्र, वारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, चावल, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी एवं अन्य तेलों, एवं खल-बिनौला में तेजी रहेगी—ऐसा विचार है।

[इस मास में किसी भी वस्तु की एक लम्बी लाईन नहीं चलेगी, बाजारों में कभी जोरदार तेजी या मन्दी बनेगी, अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें तो लाभ होगा। मन्दे में खरीद कर तेजी में माल सैटल कर देने वाली नीति से लाभ लें।] २६ जुलाई की ग्रह स्थिति विशेष ध्यान देने योग्य है, क्योंकि शुक्र ग्रह मन्दी कारक है, परन्तु जब क्रूर ग्रहों के साथ दृष्टि सम्बन्ध करता है तब यह मन्दे की जगह तेजी करता है—यह अनुभव में आया है; फिर भी बाजार के रुख को देखकर ही चलें यह परामर्श है। जुलाई २६ को यदि तेजी बनती है तो मासान्त तक तेजी ही रहेगी।

अगस्त—मास के प्रारम्भ में लगभग २ अगस्त को सूर्य, बुध आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करते हैं। सूर्य-बुध दोनों कर्क राशि में ही हैं। ३ अगस्त को सूर्य-बुध की अंशात्मक युति भी हो रही है। इन दिनों मौसम एवं जलवायु का असर व्यापार पर अवश्य होगा। कहीं वर्षा की अधिकता से फसल को नुकसान होगा, जिस कारण रुई, बिनौला, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, तिल-तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च में तेजी आएगी। यह तेजी लगभग उत्तम-मध्यम रूप से ६ अगस्त तक चल सकतीं है। ७ अगस्त को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होकर अनाजों के वाजार में कुछ मन्दा ला सकता है। लेकिन यह मन्दी स्थिर नहीं होगी, क्योंकि शनि-मंगल की शुक्र पर विशेष दृष्टि है। शुक्र मन्दी कारक होने के वावजूद भी इस वक्त तेजी कारक ही मालूम देता है। ९ अगस्त के करीब व्यापारियों का बहुत ही सावधानी से काम करने की सलाह है। क्योंकि ९ अगस्त को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करके राहु द्वारा दृष्ट है। इसलिए चांदी, सोना, सूत, रुई एवं ऊनी कपड़े, इमली आदि खट्टे पदार्थ, कपूर, गुड़, खांड, शक्कर आदि में झटके के साथ तेजी एवं मन्दी लाएगा। गेहूं, चना, जौ एवं रुई में तेजी का ही रुख रहेगा। इस प्रकार ९ अगस्त से १३ अगस्त तक बाजारों में एक तरफा रुख नहीं बनेगा। इसलिए व्यापारी मन्दे में खरीद कर तेजी में बेचने का इरादा रखें।

१४ अगस्त को इतवार के दिन चन्द्र-दर्शन होगा एवं इसी दिन मंगल रेवती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। रेवती नक्षत्र का मंगल गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में मन्दा करेगा, ऐसा विचार है। चांदी में खास तेजी आने का भी योग है, सोना कुछ मन्दा रहेगा। रुई में घटा-वढ़ी के बाद तेजी आएगी। यह मन्दे का रुख दो दिन बना रह सकता है। १६ अगस्त का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस तारीख को नोट कर लें। इस दिन मंगलवार को सिंह संक्रांति एवं बुध पू.फा. नक्षत्र में आकर पश्चिम में उदित हो रहा है। इस दिन गुरु रोहिणी नक्षत्र में भी दाखिल होगा। १६ से २० अगस्त तक बाजारों में विशेष रद्दो-बदल होगी। १६ अगस्त को सूर्य सिंह राशि में आकर केतु और बुध के साथ मेल करेगा। सूर्य पर राहु की दृष्टि भी है, यह समय अनाजों, तिलहन बाजारों में जोरदार तेजी कारक साबित होगा। केतु के साथ बुध का मेल होते ही बुध तेजी लाता है, साथ ही सूर्य का सन्निध्य और भी तेजी कारक रहेगा। चांदी, सोना, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, लालमिर्च एवं गुड़ में भी तेजी का रुख बनेगा। शेयर मार्कीट एवं अनाजों में कुछ मन्दा आ सकता है। वायदा व्यापारी २० तारीख तक सावधानी से काम करें।

२० अगस्त को बुध एवं केतु की अंशात्मक युति हो रही है। जब भी बुध क्रूर ग्रह के साथ युति करता है तो बाजारों में तेजी का रुख बढ़ जाता है। झूठी एवं सच्ची अफवाहों से बाजारों में झटके के साथ तेजी और मन्दी आती है। हमारे विचार से २१ अगस्त झटके के साथ तेजी वाला साबित होगा। रुई, कपास, तेल, तेलवाना, हल्दी एवं अनाजों में झटके के साथ तेजी आएगी। २२ अगस्त को शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होगा। शुक्र का असर कपास, रुई, गुड़, खाण्ड एवं चांदी के बाजारों पर ज्यादातर होता है। शुक्र पर शनि एवं मंगल की खास दृष्टि है। इसलिए धान, बिनौला, सरसों में तेजी रहेगी। सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत में कुछ मन्दा आने की सम्भावना है।

२४ अगस्त को बुध उ.फा. नक्षत्र में आकर उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी लाएगा। रुई में घटा-वढ़ी के बाद मन्दा आने का चांस है। इस दिन चांदी में भी मन्दा रहेगा। २६ अगस्त से महीने के अन्त तक का समय बहुत महत्त्वपूर्ण है। महीने में सबसे ज्यादा तेजी इन दिनों में है। २६ अगस्त को मंगल वक्री हो जाता है। शनि पहले ही वक्री चल रहा है। इसी दिन बुध कन्या राशि में आकर मंगल, शनि द्वारा पूरी तरह दृष्ट है। २७ तारीख को पूर्णिमा शनिवारी है एवं ३० अगस्त को शनि धनु राशि में मार्गी हो जाता है। व्यापारी ध्यान दें कि साल के शुरू से २९ अगस्त तक शनि वक्री था। ३० अगस्त को शनि के मार्गी होने की पोजीशन खास ध्यान देने योग्य है। इस समय सरकार की व्यापारिक पोजीशन पर गौर करना आवश्यक है नहीं तो व्यापार में नुकसान हो सकता है। रुई, सोना, चांदी, अलसी, लालमिर्च, गेहूं एवं लाल रंग की अन्य वस्तुओं में काफी तेजी आने का योग है। मंगल जिस राशि में वक्री होता है उस राशि वाली चीजों में जोरदार तेजी आया करती है। हमारे विचार से तेल, तिल, सरसों, बिनौला एवं रुल में बहुत जोरदार तेजी आयेगी। इस समय बाजार का रुख देखकर काम करें। बाजार के विरुद्ध काम करने वाले व्यापारी नुकसान में रहेंगे। हाजर के व्यापारी २६ से ३० तारीख तक तेजी का कार्य करके लाभ ले सकते हैं।

सितम्बर—मासारम्भ में ही शुक्र कर्क राशि में दाखिल होगा, जब भी शुक्र अकेला किसी राशि में आता है तब प्रायः मन्दे का वातावरण बनाया करता है, इस समय शुक्र पर किसी भी शुभ या क्रूर ग्रह की नजर नहीं है, अतः गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, वारदाना, चावल और चांदी में अच्छी मन्दी आ सकती है; लेकिन कदाचित् बाजार उल्टा चले तो हरगिज बाजार के खिलाफ काम न करें। वैसे कर्क राशि का शुक्र अपने राशिभोग में रुई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में पहले अच्छी मन्दी, बाद में तेजी करता है। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खांड, शक्कर में हमारा विचार कुछ तेजी-मन्दे के बाद तेजी आ जाने का है। २ सितं. को बुध हस्त नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध पर मंगल-शनि और बृहस्पति की दृष्टि है, इस समय गेहूं, चना, चावल एवं सोना, चांदी में तेजी और मन्दे के झटके आएंगे। गुड़ एवं तिलहन, तेल के व्यापारी विचारपूर्वक काम करके लाभ लें। ३ सितं. को अगस्त्य के उदित होने पर बाजार एकतरफा चलेंगे, सभी चीजों के भाव सम रहेंगे।

४ से ७ सितं. तक की ग्रहचाल के अनुसार रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी आएगी। गुड़, खांड, शक्कर, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग में सामान्यतया मन्दा रहेगा। इस अवधि में जब भी मन्दा आए तो खरीदें और जब तेजी बने तो बेचें, क्योंकि बाजारों में उथल-पुथल के चांस ज्यादा हैं। ६ सितं. को प्लूटो स्वाती नक्षत्र के चौथे चरण में आएगा एवं इसी दिन सूर्य और केतु की अंशात्मक युति हो रही है—इस युति का प्रभाव बाजारों में तेजी का रहेगा। ७ सितं. को मंगल उ.भा. में आ जाता है और यूरेनस मार्गी हो रहा है। सुगन्धित चीजें, सोना, चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना में तेजी आएगी। ११ सितं. को राहु शतभिषा के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इसी दिन चूड़ामणी सूर्य ग्रहण हो रहा है। इस समय व्यापारी बड़ी सावधानी से काम लें, अचानक मन्दे का रुख बन सकता है। चांदी, रुई, चावल में अचानक मन्दा आ जाने से तेजी में रहने वाले व्यापारियों को नुकसान रहेगा। १२ सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आकर रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल तेज करेगा। १३ सितं. को मंगलवारी चन्द्रदर्शन एवं बुध, चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई एवं चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेजी आएगी एवं अनाजों में तेजी का ही रुख रहेगा।

१६ सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इस प्रकार सूर्य, बुध पर शनि, मंगल, गुरु को नजर भी है। इस समय बाजार के विरुद्ध चलने वाले व्यापारी नुकसान में रहेंगे। बाजार का रुख देखकर व्यापार बढ़ावें। सूर्य ग्रहण का असर मूंगफली, अनाज, एरण्ड, अलसी, तेल, घी, सोना, हल्दी, कालीमिर्च एवं शेयर बाजार पर विशेष होता है। इस समय ग्रहचाल के मुताबिक रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ एवं लाल रंग की चीजों में तेजी आएगी। १७ सितं. को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में आकर रुई में कुछ मन्दा एवं चांदी, चावल में भी कुछ मन्दे का रुख बनाएगा। इस समय चांदी में वायदा के व्यापारी मन्दा लगाकर लाभ ले सकते हैं। २० सितं. को बुध तुला राशि में आता है एवं बुध पर मंगल की खास नजर है। तुला राशि का बुध यद्यपि बाजारों में मन्दा ही लाता है, फिर भी बुध पर मंगल की नजर होने से जोरदार मन्दा आने का योग नहीं है। रुई, गुड़, खाण्ड एवं अफीम में तेजी का योग है। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में कुछ मन्दा आकर फिर तेजी आने का योग है।

हमारे विचार से २० सितं. से २५ सितं. तक बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी ही चलेगी। २१ सितं. को नेपच्यून मार्गी हो जाता है। इस समय जीरा, कालीमिर्च, धनिया आदि के व्यापारी तेजी का काम करके लाभ ले सकते हैं। २३ ता. को वृहस्पति वक्री हो रहा है। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि अनाज, अलसी एवं घी में मन्दे का रिऐक्सन आ सकता है। चांदी, सोना आदि धातु एवं ऊनी कपड़ों में तेजी का रुख रहेगा। २६ सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आकर गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खांड, कपास, रुई, सूत, जूट, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी में तेजी कारक है। २८ एवं २९ सितम्बर व्यापारियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। २८ सितं. को बुध तुला राशि में वक्री हो रहा है। इस समय मंगल, बुध, वृहस्पति, राहु तथा केतु; ये पांचों ग्रह वक्री हैं। वक्री मंगल की दृष्टि वक्री बुध पर है एवं दूसरे दिन २९ सितं. को शुक्र मघा नक्षत्र, सिंह राशि में प्रवेश कर रहा है। यह चांस वायदा व्यापारियों के लिए विचारपूर्वक काम करने का है। बाजार के रुख को देखकर कार्य करें। हमारे विचार से घी, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, सोना, तांबा, लाल चन्दन, मजीठ, लालमिर्च, रसादि पदार्थ एवं पशुओं में तेजी कारक है। इस समय रुई में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। हमारे विचार में रुई में पहले मन्दा फिर तेजी का रुख रहेगा। मास के अन्त तक बाजार का रुख देखकर कार्य करने से लाभ रहेगा।

अक्टूबर—मासारम्भ से ४ अक्टूबर तक बाजार पहले की तरह चलते रहेंगे। ८ अक्टूबर को बुध के अस्त होने पर रुई में झटके के साथ जोरदार मन्दी आने का योग है, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें। बुध वक्री होकर अस्त हुआ है; इसलिए गेहूं, चना, चावल आदि अनाजों में तेजी रहेगी। चांदी तेज एवं शेयर बाजार मन्दे रहेंगे, लेकिन ६ अक्टूबर को वक्री हालत में कन्या राशि में प्रवेश करेगा। शनि मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में आ जाएगा। इस समय गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खांड एवं हल्दी में तेजी आने का योग है। रुई एवं चांदी में मामूली मन्दा आकर तेजी आएगी। ध्यान रहे—अगर इस समय आपके पास स्टाक ज्यादा हो तो कुछ स्टाक निकाल दें एवं लाभ ले लें।

१० अक्टूबर इस माह में व्यापारियों के लिए बहुत ही सावधानी से कार्य करने का है। इस दिन चित्रा नक्षत्र का सूर्य एवं पू.फा. नक्षत्र का शुक्र बाजारों में जोरदार तेजी-मंदी लाएंगे। हमारे विचार से इस दिन सोमवती अमावस होने से झटके के साथ मन्दा बनेगा और यह मन्दे की लाईन कुछ दिन तक लगातार चल सकती है; इसलिए व्यापारियों को सूचित किया जाता है कि बाजार के खिलाफ कार्य करने से नुकसान उठा सकते हैं। पू.फा. नक्षत्र का शुक्र गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग एवं चना में कुछ मन्दा ला सकता है। गुड़, खांड, अरहर में तेजी रहेगी। तेल, तिलहन के व्यापारी तेजी से निकल जाएं तो अच्छा होगा। ११ अक्टूबर को सूर्य, बुध की अंशात्मक युति होगी। सूर्य, बुध पर शनि, मंगल, वृहस्पति की दृष्टि है। वायदा व्यापारी इस दिन तेजी का सौदा करके लाभ लेंगे। बाजार बन्द होने तक इन्तजारी न करें। जब भी अच्छा नफा मिले तो सौदा सैटल कर लाभ ले लें। १२ अक्टूबर को बुध हस्त नक्षत्र में आकर गेहूं आदि अनाजों में मन्दा लाएगा। १५ तारीख को शुक्र-केतु की युति झटके के साथ बाजारों में तेजी का रुख बनाएगी। इस समय रुई, खांड, गुड़, चांदी में अच्छी तेजी आने का योग है।

१६ अक्टूबर को रुई एवं चांदी में अचानक मन्दा आएगा। अनाजों में भी कुछ तेजी आएगी, लेकिन १० अक्टूबर से लगभग १६ अक्टूबर तक मन्दे की प्रधानता रहेगी; अतः विचारपूर्वक कार्य करें। १८ अक्टूबर को बुध के पूर्व में उदय होने पर रुई में पहले मन्दी आकर बाद में १५ दिन के लगभग तेजी का महौल रहेगा। गेहूं, जौ, चना में भी तेजी रहे। तिल, घी एवं लालमिर्च में भी अच्छी तेजी आने का योग है।

२० अक्टूबर को शनि, यूरेनस की युति होने से कुछ इलाकों में प्राकृतिक प्रकोप से फसलों को नुकसान होगा। इस समय तेलवाना के बाजार काफी ऊँचे जा सकते हैं। वायदा व्यापारियों के लिए यह एक अच्छा चांस है। इसी दिन २० अक्टूबर को ही कन्या राशि में बुध मार्गी हो जाता है, इस समय हाजर एवं वायदा व्यापारियों को सावधानीपूर्वक कार्य करना होगा। रुई में मंदी-तेजी के झटके आएंगे। चांदी में घटा-बढ़ी के बाद बाजार तेज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहेंगे। गेहूं, जौ, चना अनाजों में तेजी का रुख रहेगा। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि में बाजार अनिश्चित रहेगा। इस समय पत्र व्यवहार करके ताजा मशवरा हासिल करें।

२१ अक्टूबर को शुक्र उ.फा. नक्षत्र में दाखिल होगा। गेहूं आदि अनाजों एवं रुई में तेजी आएगी। सोना, चांदी आदि धातुओं में उतार-चढ़ाव रहेंगे। २३ अक्टूबर को तुला राशि का नीचस्थ सूर्य स्वाती नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस समय सूत, सण, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, मिर्च, अलसी, सरसों, गुग्गल में तेजी आएगी। **२४ अक्टूबर को व्यापारी ध्यान दें, जब भी शुक्र बुध के साथ मेल करता है तो तेजी या मन्दी की एक तरफा लाईन बन जाती है, इसलिए २४ तारीख के लगभग व्यापारी बाजार के रुख का ध्यान रखकर कार्य करें। अगर बाजारों में मन्दा चल रहा है तो २४ तारीख को शुक्र के कन्या राशि में आने पर जोरदार मन्दा आ सकता है, अगर तेजी चल रही हो तो जोरदार तेजी आ सकती है। इसलिए बाजार के रुख को देखकर ही कार्य करें।** हमारे विचार से यह चांस तेजी का है। क्योंकि शुक्र बुध पर मंगल की नजर है। चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेजी आएगी। गेहूं आदि हर प्रकार के अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊनी व रेशमी कपड़ों में तेजी बनेगी। चावल, रुई, चांदी में जोरदार तेजी का झटका आ सकता है।

२७ अक्टूबर को बुध चित्रा नक्षत्र में प्रवेश होता है एवं मंगल भी मार्गी हो रहा है। मंगल के मार्गी होने पर वायदा बाजार में जो चीज मंदी हो वह तेज और जो वस्तु तेज हो उसमें मन्दा आ जाता है इसलिए बाजार के रुख को देखकर कार्य करें। हमारे विचार से तीन दिन के भीतर रुई में जोरदार मन्दी आएगी। तेल, सोना, पीतल, चांदी के बाजार तेज रहेंगे। अनाजों में भी तेजी का रुख रहेगा।

नोटः--इस मास में बाजारों की लम्बी लाईन बनती मालूम नहीं देती, लेकिन ता. १०, ११, १५, १८, २०, २४, २७ अक्टूबर की तारीखें व्यापारियों के लिए खास लाभप्रद मालूम देती है फिर भी मौके पर ताजा मशवरा हासिल कर लें तो अच्छा रहेगा।

नवम्बर—मासारम्भ में ही सूर्य और बुध की समकल युति हो रही है, साथ ही शुक्र हस्त नक्षत्र में आ रहा है, बुध-शुक्र दोनों कन्या राशि में युत हैं एवं मंगल, शनि, गुरु की इन दोनों पर दृष्टि है। बुध कन्या राशि का स्वामी है, कन्या राशि रुई, कपास, तेल-वाना, ज्वार, मक्का, बिनौला, कुंकुम, केसर, कस्तूरी से सम्बन्ध रखती है। इस समय फसल के नष्ट होने या खराब होने की खबर से बाजार गर्म होंगे। **नोट**—यदि इन दिनों अनाजों व दालों में मन्दा हो तो स्टाक करने से आगे लाभ मिलेगा। इस समय गुड़, खांड, शक्कर में घटा-बढ़ी रहेगी। २ नवम्बर को बुध तुला राशि में आकर नीच राशि के सूर्य के साथ मेल करेगा। बुध-सूर्य पर मंगल की दृष्टि होने से यह योग तेजीकारक ही है। बुध जब भी क्रूरग्रह के साथ सम्बन्ध बनाता है तो तेजीकारक ही होता है। रुई, गुड़, खांड, सोना तेज होंगे। चांदी, अलसी, सोना, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में अच्छी घटा-बढ़ी के बाद तेजी प्रधान रहेगी।

५ नवंबर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आता है एवं इसी दिन सूर्य-प्लूटो की अंशात्मक-युति भी हो रही है। जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खांड, रुई, सूत, सरसों, तिल एवं एरण्ड में तेजी आएगी; अलसी और चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी का वातावरण बनेगा। ६ नवम्बर को स्वाती नक्षत्र का बुध रुई में अचानक मन्दे का रुख बनेगा—विचारपूर्वक काम करें। १० नवम्बर को पूर्व दिशा में बुध का अस्त होना अनाज, घी आदि में कुछ मन्दा बनाकर तेजी करेगा। रुई में पहले तेजी, बीच में मन्दी अन्त में फिर तेजी आएगी; सोने में घटा-बढ़ी होकर तेजी का रुख रहेगा।

[इस मास में १२ नवम्बर तक बाजारों में अनिश्चितता रहेगी; इस अवधि में जब भी मन्दा आए तो खरीदें और तेजी में बेचने का विचार बनायें।] १३ नवम्बर को राहु शतभिषा के तीसरे चरण में एवं केतु पू. फा. के प्रथम चरण में आता है, राहु पर शनि की दृष्टि भी है; अतः घी, तेल, गुड़, खाण्ड, तिलहन में झटके के साथ तेजी आएगी;—इस समय अगर अच्छा नफा मिले तो स्टाक निकाल देना चाहिए। १५ नवम्बर को मंगलवारी सूर्य संक्रांति होगी;-यहां वृश्चिक राशि के सूर्य पर वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि होने से जोरदार तेजी न आकर बाजार कुछ नर्म ही रहेंगे, फिर भी तेलवाना में प्रायः तेजी ही रहेगी। **१८ नवम्बर को शुक्र तुला राशि में आकर बुध के साथ मेल करता है; इस प्रकार बुध-शुक्र पर मंगल की दृष्टि है;—यह योग भी जोरदार तेजी का ही है। लेकिन बाजार के रुख को देख कर काम करें। २० नवम्बर तक शुक्र-बुध का राशि-सम्बन्ध बना रहेगा, इसके बाद बुध राशि बदलेगा। जब तक दोनों एक राशि में रहेंगे, तब तक रुई, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, गुड़, खांड, तिल, अलसी, तोरिया, एरण्ड आदि तिलहन एवं दालवाना में तेजी का रुख रहेगा—ऐसा विचार है।**

१९ नवम्बर को अनुराधा नक्षत्र का सूर्य जौ, चना आदि अनाजों, ऊन व सोना, चांदी में तेजी करेगा, अलसी, लाल मिर्च में भी तेजी का रुख रहेगा। **[१३ से १९ नवम्बर तक बाजारों में तेजी का बोलबाला रहेगा।]** २१ नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा तथा सूर्य-बुध पर वृहस्पति की दृष्टि होने से घी, तेल, सरसों में भाव सामान्य रहें तथा रुई, चांदी के भाव में कुछ तेजी, अनाजों में अच्छा मन्दा आने का योग है। २३ नवम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आजाता है, और इसी दिन बुध अनुराधा नक्षत्र में आएगा। सूर्य एवं बुध का अनुराधा नक्षत्र में होना सूत, रुई, सोना, चांदी में मन्दे का ही वातावरण रखता है; गुड़, खांड में सामान्यतः तेजी का रुख रहेगा। २८ नवम्बर को वक्री वृहस्पति कृत्तिका के तीसरे चरण में आकर अनाजों व रुई में मन्दे का रुख बनाएगा। मासान्त में बाजार अनिश्चित रहेंगे। **[इस मास में बाजार के रुख को देख कर काम करने वाले व्यापारी लाभ ले सकते हैं। बाजारों में विशेष झटके के साथ तेजी-मन्दी आने से हानि भी हो सकती है, अतः इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें—यह हिदायत है।]**

दिसम्बर—मास के शुरू में ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध घी, गुड़, खांड, चावल में कुछ अस्थाई तेजी का रुख बना सकता है; साथ ही २ दिसम्बर को सूर्य भी ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। सोना, चांदी, जावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खांड में तेजी बनेगी। रुई में पहले मन्दा आकर तेजी आएगी। लेकिन बुध-सूर्य पर वृहस्पति की नजर होने से कोई विशेष तेजी की संभावना नहीं बनती। ४ दिसम्बर को विशाखा नक्षत्र का शुक्र रुई व अनाजों में मन्दे का रिएक्शन लाएगा—व्यापारी सोच समझ कर काम करें। शुक्र पर मंगल की नजर होने से जोरदार मन्दा भी नहीं बनेगा—यह भी ध्यान में रखकर काम करें। यह मन्दा दो दिन चल सकता है। **[५ दिसम्बर तक साधारण तेजी या मन्दे के रिएक्शन आएंगे।]** ६ दिसम्बर को विशाखा नक्षत्र में प्लूटो दाखिल होगा। विशाखा नक्षत्र का सम्बन्ध शनि से है, शनि जैसा ही प्लूटो प्रभावकारक सिद्ध होगा। गेहूं, चावल, चना, मूंगफली, अलसी, एरण्ड, तेल, घी में तेजी का झटका आएगा।

९ दिसम्बर को यूरेनस मूल के तीसरे चरण में आजाता है; ध्यान रखें—शनि भी मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में ही चल रहा है, शनि-प्लूटो का एकराशि एवं एक नक्षत्र-चरण में होना विशेष महत्व रखता है;—यह योग वायदा व्यापार एवं हाजर का काम करने वाले व्यापारियों के लिए विशेष लाभप्रद रहेगा। नोट करें—रुई, कपास, बिनौला,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चांदी, चावल, गुड़, खांड, शक्कर, तिलहन एवं तेलों में जोरदार झटके के साथ तेजी या मन्दी आवेगी—इस समय बाजार के रुख को देखकर काम करें। १० दिसम्बर को रेवती नक्षत्र का मंगल गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा एवं दालवाना में अचानक मन्दा ला सकता है; सोना भी कुछ मन्दा रहेगा, रुई में घटा-बढ़ी के बाद तेजी रहेगी। इस समय चांदी के व्यापारी ध्यान दें—चांदी में झटके की तेजी आ सकती है, विचारपूर्वक काम करें। इसी दिन (१० दिसम्बर को ही) बुध मूल धनु में आजाता है, धनु राशि में आकर बुध-शनि के साथ मेल करेगा, बुध जब भी क्रूर ग्रह के साथ मेल करता है तब-तब मन्दे के स्थान पर तेजी करता है, इसलिए १० दिसम्बर को बहुत ही एतिहात से काम करें, वरना जबरदस्त लाभ की जगह हानि भी हो सकती है। इस समय हमारे विचार से रुई, कपास, सूत, चांदी में इस दिन जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। दोतरफा खेलने वाले लाभ ले सकेंगे। ज्यादातर हमारा विचार इस दिन जोरदार तेजी का ही है।

१२ दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर सूर्य से सम्पर्क करेगा, इस प्रकार सूर्य-शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि भी है, १५ दिसम्बर तक सूर्य-शुक्र एक जगह पर ही रहेंगे। रुई, शेयर, चांदी में पहले मन्दी, पीछे तेजी आए, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में एवं अलसी में तेजी का रुख रहेगा। इस मास में १५ दिसम्बर को सूर्य मूल धनु में आजाता है, शुक्र अनुराधा में एवं शनि मूल नक्षत्र के भी इसी दिन आएगा। १५ दिसं. को ही बुध-प्लूटो एवं बुध-यूरेनस की युति भी हो रही है,—यह दिन व्यापार में विशेष उथल-पुथल का है, विचारपूर्वक काम करें, क्योंकि इस दिन शनि-बुध एवं सूर्य ये तीनों ग्रह इकट्ठे एक ही राशि में आरहे हैं; ये जोरदार तेजी बाजारों में लावेंगे। रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, खल एवं घी में अच्छी तेजी से उत्तम लाभ मिलेगा। [६ से १७ दिसम्बर तक बाजारों में उत्तम-मध्यम रूप से अच्छी तेजी चलेगी-ऐसा विचार है।]। १८ दिसम्बर को बुध पू.षा. नक्षत्र में आएगा, बिनौला, खल एवं अन्य तिलहन तेज होंगे। अनाज एवं चांदी में झटके के साथ कुछ मन्दा आकर तेजी बनेगी।

२० दिसम्बर को शनि-प्लूटो एवं बुध-यूरेनस की युति होगी, इस समय सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, खांड, तिल, सरसों, एरण्ड, तोरिया, बिनौला एवं तेलों में जोरदार तेजी आने का योग है। २१ दिसम्बर को सूर्य-यूरेनस की युति भी तेजी ही करेगी। २४ दिसम्बर को बुध का पश्चिम में उदय रुई व शेयर बाजारों में झटके के साथ तेजी या मन्दा बनेगा। २५ दिसम्बर को ज्येष्ठा नक्षत्र का शुक्र सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल तेल में कुछ मन्दा करेगा, अनाजों में तेजी आएगी। २७ दिसम्बर सूर्य+शनि की युति होगी, इस दिन बुध उ.षा. में एवं वक्री बृहस्पति कृत्तिका के दूसरे चरण में आकर बाजार का रुख बदलेंगे, अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें। लेकिन सूर्य-शनि की युति तेल, तिलहन, अनाजों में कुछ झटके की तेजी करेगी, यह तेजी ठहरेगी नहीं, तुरन्त लाभ लेलेना चाहिए। २८ दिसं. को पू.षा. नक्षत्र का सूर्य एवं २९ दिसम्बर को मकर राशि का बुध तिल तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खांड, हल्दी, रुई, सोना, चांदी में अच्छे उतार-चढ़ाव करेगा। ३१ दिसम्बर को सूर्य-नेपच्यून की युति अनाजों एवं दालवाना में तेजी को बल देगी।

जनवरी (सन् १९८९ ई०)—जनवरी के प्रारम्भ में ही ५ जनवरी को बुध श्रवण नक्षत्र में आता है, साथ ही इसी दिन शुक्र मूल धनु में आकर सूर्य एवं शनि के साथ मेल कर रहा है; गुड़, खांड, अलसी, चावल, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, सोना, चांदी, स्टील, रुई, सूत, कपास में तेजी का रुख रहेगा।

७ जनवरी को मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेष में आता है, इस दिन शनियारी अमावस भी है, शनियारी अमावस तेजी की तरफ इशारा करती है। ज्वार, बाजरा, चना, मक्का, गेहूं एवं दालों में कुछ मन्दे का झटका आकर तुरन्त तेजी बनेगी। गुड़, खांड, रुई, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, मूंगा-मोती आदि जवाहरात, लालमिर्च, कपास, पाट, बारदाना तथा तेलों, घी में तेजी बनेगी—वायदा व्यापारी लाभ लें। १० जनवरी को उ.षा. नक्षत्र का सूर्य उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खांड, लाल-शक्कर, कपास, सरसों, मूंज में तेजी लाएगा।

१२ जनवरी को व्यापारी विशेष सावधानी से काम करें, कुछ चीजों में अचानक मन्दा आने से हानि संभव है। रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली मन्दे होंगे। लोहा, जस्ता, सीसा, रंग, पेन्ट्स आदि पदार्थ, घास, लकड़ी, लहसुन, चावल, गुड़, खांड में तेजी आएगी। १३ जनवरी को शुक्रवारी मकर-संक्रांति होने से लालमिर्च, लाल-चन्दन, गेहूं, जौ, चना, चावल, गुड़, शक्कर में मन्दा; तेल, सरसों, अलसी, मक्का, ज्वार, बाजरा, ऊन, रेशम, मजीठ एवं गीली लकड़ी में तेजी आएगी; सोना, चांदी में घटा-बढ़ी, लोहा, जस्ता, पीतल एवं रंग भी तेज होंगे। नारियल, छुहारा, किशमिस आदि कर्याणा की वस्तुओं में मन्दा हो। यहां चना, चावल खरीद कर वैशाख में बेचने से अच्छा लाभ मिलेगा। १३ जनवरी को मकर संक्रांति के ऊपर लिखे विचार के साथ-२ यह भी ध्यान में रखें कि इस दिन शनि पू.षा. के प्रथम चरण में भी आ रहा है, साथ ही नेपच्यून पू.षा. के दूसरे चरण में भी इसी दिन दाखिल होता है; अतः इस समय लकड़ी खरीदने से आगे लाभ होगा, अनाजों के भाव मन्दे रहेंगे, विशेषतः—कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार, बाजरा में दक्षिण भारत में विशेष तेजी आएगी;—लाभ लें।

१५ जनवरी को राहु शतभिषा में आकर घी को तेज एवं अनाजों को मन्दा करता है। १६ जनवरी को बुध वक्री हो रहा है, इसी दिन शुक्र एवं शनि की अंशात्मक-युति भी हो जाती है, अचानक बाजार का रुख बदल सकता है। अतः बाजार के रुख को देखकर काम करें। शुक्र-शनि की अंशयुति एवं बुध का सूर्य के साथ रहकर वक्री होना बाजारों में तेजीकारक ही मालूम देता है। घी, गुड़, खांड, शक्कर में तेजी आएगी। चांदी, सोना, घी, सरसों, तोरिया, तिल, तेल एवं रुई में अच्छी तेजी आने का योग है। लेकिन अनाजों में विशेष तेजी न आकर रुख कुछ मन्दे की ओर रह सकता है।

१८ जनवरी को पश्चिम में बुध का उदय रुई एवं शेयर बाजारों में मन्दा बना सकता है, विचारपूर्वक काम करें। १९ जनवरी को शुक्र-नेपच्यून की युति मन्दे के बाद शीघ्र ही तेजी का झटका लाएगी। २० जनवरी को वृषराशि में बृहस्पति का मार्गी होना रुई, चांदी में मन्दे का रिएक्शन लाएगा, लेकिन चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तमाखू तेज रहेंगे। २३ जनवरी को श्रवण नक्षत्र का सूर्य २५ जनवरी को सूर्य-बुध की समकलयुति एवं २६ जनवरी को उ.षा. नक्षत्र में शुक्र का प्रवेश गुड़, खांड, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चावल, रुई, सूत, सण, सुपारी में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी करेगा।

२९ जनवरी को शुक्र मकर में आकर सूर्य तथा बुध के साथ मेल करता है, लेकिन सूर्य-बुध-शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि होने से गुड़, खांड, घी, गेहूं, चना, रुई, चांदी में अच्छी घटा-बढ़ी आकर अन्ततः मन्दा ही रहेगा। अन्त में ३१ जनवरी को भरणी नक्षत्र का मंगल एवं बुध का पूर्व में उदय होने से सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खांड, घी, लालमिर्च, अलसी एवं ऊन में तेजी आएगी, रुई में पहले मन्दा बाद में अच्छी तेजी हो। गेहूं, चना आदि अनाजों में तेजी ही रहेगी।

फरवरी (१९८९ ई०)—मास के प्रारम्भ में ही बुध-शुक्र की युति हो रही है। चांदी, चावल, रुई, कपास, सूत, सिल्क, रेयान में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, खांड, शक्कर, तेल, तिलहन आदि में पहले चली आ रही बाजारों में तेजी या मन्दे की लाईन को बल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिलेगा। अर्थात् इस समय बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दा आने का योग है, अतः सोच-समझकर ही काम करें, बाजार के रुख के खिलाफ काम न करें।

५ फरवरी को घनिष्ठा नक्षत्र का सूर्य, इसी दिन मूल के चौथे चरण में यूरेनस का प्रवेश तथा बुध का मार्गी होना विशेष महत्वपूर्ण है। अचानक बाजारों में खद्दोबदल होगी—विचारपूर्वक काम करें। पहले जिन चीजों में तेजी थी उनमें अचानक मन्दे का वातावरण बन सकता है। ६ फरवरी को सोमवती अमावस के दिन शुक्र श्रवण में आ रहा है, अतः सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द एवं अनाज में मन्दे का रुख रहेगा तथा अन्य बाजारों में भी मन्दे की लाईन बनने का योग है। तिल-तेल में कुछ तेजी रहेगी। इन दिनों वायदा व्यापारी मन्दा खेलकर लाभ लें। ७ फरवरी को मंगलवारी चन्द्र-दर्शन एवं ८ फर. को कुम्भ में सूर्य के आने पर घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई में तेजी एवं रुई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूं आदि अनाजों में गुड़, शक्कर, खांड में प्रायः मन्दे का रुख रहेगा। **८ फरवरी को कुम्भ के सूर्य के साथ राहु का योग अचानक उपरोक्त चीजों में जोरदार तेजी भी ला सकता है—ध्यान दें, समय पर ताजा मशवरा हासिल करें, तो अच्छा रहेगा।**

१३ फरवरी को पू.षा. के दूसरे चरण में शनि कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में तेजी से उत्तम लाभ देगा। गुड़, खांड, चांदी, सोना के व्यापारी मार्कीट के रुख के मुताबिक काम करें। १७ फरवरी को घनिष्ठा नक्षत्र का शुक्र चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास में तेजी करेगा एवं १८ फरवरी को शतभिषा का सूर्य, श्रवण का बुध एवं शुक्र का पूर्व में अस्त होना भी बाजारों में तेजी का ही सूचक है। चना, मक्का, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सोना, तांबा, जस्ता, सूत, सण, कपड़ा, तिल, अरण्ड, हींग, सरसों, दाख, छुहारा सोंठ, हल्दी, गुड़, खांड में तेजी का बोलबाला रहेगा। सोना, तांबा, जस्ता, पारा, केसर एवं सोनामक्खी में भी तेजी का ही रुख रहेगा। २० फरवरी को फाल्गुन में चन्द्र-ग्रहण अनाज व घी, तेल, गुड़, खांड आदि रसकस तेज हों, वर्षा की कमी से तेजी को हवा मिले।

व्यापारी ध्यान दें—२२ फरवरी को शुक्र कुम्भ राशि में दाखिल होकर सूर्य एवं राहु के साथ मेल करेगा एवं शुक्र-राहु-सूर्य पर शनि की नजर भी है; इसलिए रुई, चांदी, नरमा, सूत, कपास, गुड़, गेहूं, खांड, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, चावल, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी में जोरदार तेजी एवं झटके के साथ मन्दा आने का योग है। [शुक्र कुम्भ के २४ अंश पर आकर रुई में झटके के साथ अच्छी मन्दी लाएगा, यह स्थिति मार्च के पूर्वार्ध में ही आ जाती है]। हमारे विचार से तेजी का काम करने वाले विशेष लाभ प्राप्त करेंगे।

२३ फरवरी को मंगल कृत्तिका में एवं २६ फरवरी को शुक्र शतभिषा में आकर तेल, तिलहन, घी, चांदी, रुई में टैम्परेरी मन्दा लाकर तेजी करेंगे, सोना, चांदी, गुड़, खांड भी तेज रहेंगे। २८ फरवरी को मंगल वृष राशि में आकर वृहस्पति से मेल करेगा। जब भी मंगल वृष राशि में शुभग्रह से मेल करता है तो चली आ रही तेजी को रोकता है; अतः **बाजारों में आशा के अनुरूप तेजी नहीं आएगी, बाजारों में व्यापारिक वस्तुओं के भाव कुछ नर्म हो जाएंगे;** इस समय तेजी में रहने वाले व्यापारी हानि में रहेंगे। लाल मिर्च, लाल-चन्दन, केसर, कपूर, तेल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता व शेयर बाजारों में कुछ तेजी आकर मन्दा आएगा—ऐसा विचार है।

मार्च (१९८९ ई.)—मार्च के प्रारम्भ में चावल, बाजु में तेजी आयेगी, रुई में घटा-बढ़ी एवं सोना-चांदी सन्दे रहेंगे। ३ मार्च को शुक्र-राहु की युति होगी, ४ मार्च को सूर्य पू.भा. में होगा एवं शनि-नेपच्यून की समकल युति का प्रभाव तेल, तिलहन, गुड़, खांड, गुग्गल में तेजी कारक सिद्ध होगा। **६ मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य-शुक्र-राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। घी, तेल, खल, बिनौला, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, सरसों, तोरिया एवं गुड़, खांड में तूफानी तेजी आएगी, इस समय रुई, कपास, चांदी का बाजार भी गर्म रहेगा। [३ मार्च से ६ मार्च तक सभी बाजारों में अच्छी तेजी आयेगी—ऐसा विचार है।** १० मार्च को चांदी, सोना में मन्दा आएगा, अनाज तेज ही रहेंगे। ११ मार्च को मंगल और वृहस्पति की युति भी मन्दा करने वाली ही मालूम देती है। १३ मार्च को अनाज, रुई मन्दे, गुड़, खांड, चांदी, सोना के व्यापार में मामूली उतार-चढ़ाव आएंगे। १४ मार्च को मंगलवार वाले दिन मीन राशि में सूर्य आरहा है, तिल, तेल, अलसी, सरसों, खांड, गुड़, शक्कर, रुई, सोना तेज होंगे। प्रत्येक जाति के छोटे-मोटे अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दे की ओर झुकाव रहता है। १७ मार्च को उ.भा. का सूर्य एवं रोहिणी नक्षत्र का मंगल चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर; गेहूं एवं तेलों में तेजी लाएगा।

१८ मार्च को शुक्र मीन में आकर सूर्य के साथ राशि सम्बन्ध बनाएगा। अनाज, सरसों, तेल, अलसी, एरण्ड, तोरिया, गुड़, खांड, रुई और चांदी में धमाके की तेजी आ सकती है। १९ मार्च को सोना, चांदी, तांबा लोहा तथा अनाजों में मन्दे का रिएक्शन आ सकता है। २१ मार्च को भी चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, खांड, रुई, कपास आदि सफेद रंग की चीजों में मन्दा रहेगा।

२५ मार्च को बुध मीन राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। मीन राशि में शुक्र-सूर्य बुध का इकट्ठे होना बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दा लाएगा। इस समय बाजार के रुख को नजरन्दाज करने वाले व्यापारी भारी नुकसान में रहेंगे—यह नोट करलें। ३१ मार्च को रेवती नक्षत्र का सूर्य अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, रुई, गेहूं, जौ, चना एवं चावलों में तेजी ही करेगा। [२५ मार्च से मासान्त तक तेजी ही रहेगी, पूरा सही विवरण जानने के लिए—हमारे मैंबर बनकर खतोखितावत करें, पूरा मशवरा आपको समय पर मिलता रहेगा।]

नोटः—इस साल व्यापार में धन कमाने के सर्वोत्तम अनेकों चांस आ रहे हैं, रंक से राजा बना देने वाले चांस, हम अपने उन व्यापारियों को ही भेजेंगे जिनके नाम हमारे पास रजिस्टर में दर्ज हैं, रजिस्टर में नाम दर्ज कराने की फीस ५१ रुपये है। लाभ होने पर लाभांश का दशमांश भी ईश्वर को साक्षी रखकर भेजना होगा, अन्यथा आगे चांस न भेज सकेंगे। संवत् आरम्भ होने से पहले ही अपना नाम दर्ज करा लें ताकि आप हमारे सभी लाभप्रद चांस प्राप्त कर सकें। हम समय-समय पर ताजा मशवरा भी भेजेंगे, कृपया पत्र व्यवहार्थ ६० पैसे वाला बन्द लिफाफा अपना पता लिखकर अवश्य भेजें। अपना पता व नाम साफ-साफ लिखें।

शुभ चिन्तक

ज्योतिर्भूषण—पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A.
(सुपुत्र—पं. मुकुन्दवल्लभजी राज ज्योतिषाचार्य)
पता—इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A.
मार्तण्ड भवन, मु. पो.—कुराली,
जि.—रोपड़ (पंजाब)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(किन-किन दिनों में कब-कब यन्त्र-मन्त्र आदि सिद्ध करें)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिष ग्रन्थों में इस विषय में अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्ट रूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त शिरोमणि' में कहा है; कि—यदि क्रान्तिसाम्य के समय जप अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है;—"पातस्थिति कालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होम दानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम् ॥" यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे १ जनवरी १९८८ ई. से ६ अप्रैल १९८९ ई. तक की बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रांतिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों के निर्माण से एवं मन्त्र जाप से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सायन संक्रान्ति पुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्र ग्रहण के अलावा यन्त्रादि साधनां के लिए अर्घोदय योग, महोदय योग, महा महा वारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, वारुणी पर्व और षडशीतिमुख पुण्यकाल भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। षडशीतिमुख पुण्यकाल प्रतिवर्ष चार बार घटित होता है, जबकि शेष अर्घोदय योग आदि कभी-कभी आते हैं। नीचे कोष्ठक में साधकों के लिए इन सभी का निर्देश भी किया गया।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः सफल बनाने के लिए शास्त्र विहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगम शास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल (१ जनवरी '८८ से २० मार्च '८९ तक)

प्रारम्भ तारीख	घं.मि.	समाप्त तारीख	घं.मि.
१९८८ ई.		१९८८ ई.	
२० जन.	२०। २	२१ जन.	८। २
१९ फर.	१०।१४	१९ फर.	२२।१४
२० मार्च	९।१७	२० मार्च	२१।१७
१९ अप्रैल	२०।२३	२० अप्रैल	८।२३
२० मई	१९।३६	२१ मई	७।३६
२१ जून	३।३४	२१ जून	१५।३४
२२ जुलाई	१४।३०	२३ जुलाई	२।३०
२२ अगस्त	२२।३३	२३ अगस्त	१०।३३
२२ सितं.	१८। ८	२३ सितं.	६। ८
२३ अक्टू.	३।२३	२३ अक्तू.	१५।२३
२२ नवं.	१।५२	२२ नवं.	१३।५२
२१ दिसं.	१५। ९	२२ दिसं.	३। ९
१९८९ ई.		१९८९ ई.	
२० जन.	२।१२	२० जन.	१४।१२
१८ फर.	१७। ३	१९ फर.	५। ३
२० मार्च	१५। ७	२१ मार्च	३। ७

निरयण संक्रान्तियों के पुण्य काल में भी यन्त्रादि साधना की जा सकती है, लेकिन सायन-संक्रान्तियों के पुण्य काल इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व रखते हैं।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) (१ जनवरी '८८ से ६ अप्रैल १९८९ तक)

प्रारम्भ तारीख	घं.मि.	समाप्त तारीख	घं.मि.	प्रारम्भ तारीख	घं.मि.	समाप्त तारीख	घं.मि.
१९८८ ई.		१९८८ ई.		१९८८ ई.		१९८८ ई.	
१४ जन.	१३।४८	१४ जन.	१६।२६	८ अक्टू.	६।२४	८ अक्टू.	१०।४६
२६ ,,	१२।५७	२६ ,,	१८। १	२१ ,,	९।५७	२१ ,,	१३।४१
९ फर.	१२।२०	९ फर.	१६।५८	२ नवं.	१९। २	३ नवं.	०। २
२१ ,,	१०।३५	२१ ,,	१४।२१	१६ ,,	६। ८	१६ ,,	११। ०
६ मार्च	२। २	६ मार्च	६।१४	२८ ,,	१४।४५	२८ ,,	२०।५३
१८ ,,	४।२१	१८ ,,	७।४३	१२ दिसं.	१०।२४	१२ दिसं.	१६।३६
३१ ,,	१४।५८	३१ ,,	१९।१४	२५ ,,	९। ९	२५ ,,	१६।३५
१३ अप्रै.	९।२१	१३ अप्रै.	१२।५९	१९८९ ई.		१९८९ ई.	
२६ ,,	५।१४	२६ ,,	१०। २	३ जन.	१७।१२	३ जन.	२३।५६
९ मई	६।२७	९ मई	१०।५५	१६ ,,	४।३२	१६ ,,	१०। ६
२२ ,,	०। १	२२ ,,	६। १	२९ ,,	२०।३५	३० ,,	१।५७
४ जून	९।३०	४ जून	१५।१४	११ फर.	३।२९	११ फर.	७।३१
१७ ,,	१०।५६	१७ ,,	१८।१२	२४ ,,	११।३४	२४ ,,	१६।१०
२६ ,,	१८।५६	२७ ,,	१।४०	९ मार्च	१।३०	९ मार्च	४।५४
९ जुला.	६। ६	९ जुला.	१२।१०	२१ ,,	२३।१३	२२ ,,	३।३३
२३ ,,	७।५८	२३ ,,	१३।३६	४ अप्रै.	३।४५	४ अप्रै.	७।१६
४ अगस्त	९।३३	४ अग.	१४। ५				
१८ ,,	४।२३	१८ ,,	९। ३				
३० ,,	९।१५	३० ,,	१२।५३				
१२ सितं.	१८।२२	१२ सितं.	२२।३८				
२५ ,,	१०।४३	२५ ,,	१४। ५				

सूर्य और चन्द्रमा की राशियों के अनुसार जाना गया क्रान्तिसाम्य बहुत ही स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रांतिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्ति काल महापात गणित से जाना गया है, जो कि प्रामाणिक है।

वारुणी पर्व

प्रारम्भ तारीख	घं.मि.	समाप्त तारीख	घं.मि.
१९८८ ई.		१९८८ ई.	
१६ मार्च	११।४७	१६ मार्च	१४।२३

अर्घोदय योग

१९८९ ई.		१९८९ ई.	
५ फर.	१५।५९	६ फर.	सूर्योदय

महोदय योग

१९८९ ई.		१९८९ ई.	
६ फर.	सूर्योदय	६ फर.	११।४३

षडशीतिमुख पुण्यकाल

१९८८ ई.		१९८८ ई.	
१० जन.	२३। १	११ जन.	५। १
५ अप्रैल	१२। ६	५ अप्रैल	१८। ६
३ जुलाई	१५।५९	३ जुलाई	२१।५९
३० सितं.	२१।१७	१ अक्टू.	३।१७
१९८९ ई.		१९८९ ई.	
११ जन.	५।१०	११ जन.	११।१०

यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्त होने का काल लगभग है। इसमें कुछ मिनटों की स्थूलता सम्भव है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र गत कई वर्षों से देते आ रहे हैं। मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरु-मुख से प्राप्त करें एवं दृढ़ निश्चयी होकर जप अनुष्ठान आदि द्वारा सिद्धि प्राप्त करके यशोलाभ करें। **ध्यान रहे**—दीपमाला की रात्रि को या ग्रहण के समय यन्त्रों को लिखकर मन्त्रों को जप पूर्वक सिद्ध करके अविलम्ब ही चमत्कार देख सकते हैं। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश को प्राप्त कर सकता है:— **"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्"**।

—सम्पादक

अनुभूत कर्णपिशाचिनी मन्त्र प्रयोग

मन्त्र—"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाक् वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धि-दातायै नमः ॐ"।

विधि—उल्लिखित मन्त्र का जाप जल में खड़ा होकर करना पड़ता है। इस मन्त्र का तीर्थ या प्रतिष्ठित स्थान पर जल में खड़ा होकर पांच सौ बार जाप करें; उसके बाद होम तर्पण मार्जन करके पांच कन्याओं एवं तीन छोटे बच्चों को भोजन कराएं। तत्पश्चात् निम्नांकित-यन्त्र को शुद्ध भूमि पर दस हजार बार लिखें।

यन्त्र—

ह्रीं ८	१ ह्रीं	६ ह्रीं
ह्रीं ३	५ ह्रीं	७ ह्रीं
ह्रीं ४	९ ह्रीं	२ ह्रीं

इस प्रयोग के पूर्ण होने पर साधक की वाणी में सत्य का संचार होने लगता है, भूत-भविष्य-वर्तमान कहने की अद्भुत सामर्थ्य प्राप्त होती है। राजा-प्रजा सभी वशीभूत हो जाते हैं। यह चमत्कारपूर्ण भुवनेश्वरी कर्ण पिशाचिनी का विधान है। अनुष्ठान पूरा होने पर एकमाला मन्त्रजाप एवं ११ बार यन्त्र लेखन प्रतिदिन करें; चमत्कार देखें।

चौरभय से मुक्ति मिले

मन्त्र—तिस्रो भार्याः कफल्लस्य दाहिनी मोहिनी सती।
तासां स्मरण मात्रेण चौरो गच्छति निष्फलः॥
कफल्लकः कफल्लकः कफल्लकः।

विधि—रात्रि में शयन करने से पहिले उल्लिखित-मन्त्र पढ़ने से चोर से हानि का भय नहीं रहता।

सर्वविध ज्वर (बुखार) से मुक्ति पाने के लिए

बुखार से परेशान व्यक्ति को नीचे लिखे मन्त्र से सात बार जल अभिमन्त्रित करके पिला दें या निम्नांकित मन्त्र से ज्वरग्रस्त व्यक्ति को झाड़ दें, बुखार नहीं रहेगा। इस मंत्र को दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लेना चाहिए।

मन्त्र—"ॐ नमो अजयपाल की दुहाई, जो ज्वर रहै तो महादेव की दुहाई, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।"

धन-धान्य समृद्धि हेतु अन्नपूर्णा मन्त्र

मन्त्र—"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरी अन्नपूर्णे स्वाहा, क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ।"

विधि—इस मन्त्र का दो लाख बार जाप करना चाहिए। तिल, खील, दाख, लाल-धान का छिलका या कण एवं गोघृत से दशांश हवन करना चाहिए, घर में धन-धान्य वृद्धि होती है।

श्री हनुमान जी का सर्वसिद्धिप्रद अष्टादशाक्षर मन्त्र

मन्त्र—"ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को लालवस्त्र धारण करके एक लाख बार जाप करके सिद्ध करें। तत्पश्चात् खीर, दाल, रस, पलाश, पीपल एवं खैर की लकड़ी से हवन करें; अभीष्ट मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा।

पशुओं की रक्षा के लिए

गाय, भैंस को किसी प्रकार की बीमारी न आए; एतदर्थ वीरवार पुष्य नक्षत्र किंवा हस्त नक्षत्र रविवार वाले दिन नीचे लिखे मन्त्र को मिट्टी के सकोरे (वर्तन) के भीतर लिखकर पशुगृह में टांग दें, पशुओं पर कोई कष्ट नहीं आएगा।

मन्त्र—अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः करीटी श्वेतवाहनः। बीभत्सु विजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः। कपिध्वजो गुडाकेशो गांडवी कृष्ण सारथी। एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते॥"

इस मन्त्र को शुद्ध कागज पर लिखकर धूप-दीप करके पशुगृह में लालवस्त्र में बांध कर टांग देने से भी लाभ अनुभव किया है।

पतिवशीकरणार्थ तन्त्र प्रयोग

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे। खाद्ये पाने प्रदेयानि पतिवश्य कराणि हि॥

अर्थात्—जिसदिन इतवार को पुष्यनक्षत्र हो उसदिन अपामार्ग (पुठकण्डा) के बीज लाकर रखलें। भोजन में, मीठीवस्तु में या पानादि में देने से पति, पत्नि के अनुकूल व्यवहार करता है। इस तन्त्र का प्रयोग अनुचित कार्यार्थ करने पर कोई लाभ नहीं होता।

प्रेतपीड़ा या टोने आदि से बचने के लिए रक्षासूत्र

बारह वर्ष से कम आयु की कन्या के काते हुए कच्चे सूत के सात धागे लेकर उन पर सात गांठे लगालें। प्रत्येक गांठ पर सात बार निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें—

"ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ घोराणि तैरक्षस्मान् तथा भुवम्।"

यह प्रयोग अत्यन्त सफल है। गर्भावस्था में गर्भपातभय से मुक्ति एवं शत्रुकृत टोना किंवा प्रेतदि शान्ति के लिए अनुभूत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"ताजिक हिल्लाज" का वर्षफल प्रकरण

(वर्ष कुण्डली में ग्रह स्थिति का शुभाशुभ फल)

प्रियव्रत शर्मा—इन्दुशेखर शर्मा

[यवन ज्योतिषी हिल्लाज ने चार फलित ग्रन्थ लिखे हैं—हिल्लाज ग्रहफल, हिल्लाज जातक, हिल्लाज ताजिक और हिल्लाज दीपिका । ये ग्रन्थ अब लगभग अप्राप्य हैं । यहां हम 'हिल्लाज ताजिक' के वर्ष फल प्रकरण का अरिष्ट भाग दे रहे हैं । इसका अरिष्ट भंग वाला भाग अगले वर्ष (सं. २०४६ वि.) के पंचांग में दिया जाएगा । हिल्लाज ताजिक का यह दुर्लभ वर्षफल प्रकरण हमें पं. चक्रधर भट्ट शास्त्री (अध्यापक—राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डीम (शिमला) के प्राचीन पुस्तकागार से प्राप्त हुआ है । इसके लिए हम शास्त्री जी के आभारी हैं । इसकी पाण्डुलिपि वि. सं. १६३४ की लिखी हुई है, जो पाण्डुलिपिकार की संस्कृतानभिज्ञता के कारण भाषा की दृष्टि से अत्यन्त भ्रष्ट है, जिसे संशोधित करने में हमें काफी परिश्रम करना पड़ा है । इसके कुछेक स्थल अब भी किसी प्रकार का संगत अर्थ देने में असमर्थ हैं । ऐसे अस्पष्ट स्थलों को हमने कोष्ठक में दिया है । यहां हिल्लाज ने अत्यन्त कष्टप्रद, ग्रह स्थितियों को साक्षात् मृत्युप्रद लिख डाला है । दैवज्ञ को ऐसे स्थलों पर सर्वत्र शाब्दिक अर्थ नहीं ग्रहण करना चाहिये । इसकी संस्कृत भाषा का संशोधन मैंने एवं इसका हिन्दी रूपान्तर मेरे विद्वान अनुज चि. इन्दुशेखर शर्मा M.A., ज्योतिपाचार्य ने किया है । यह सारा फल वर्ष प्रवेश कालीन ग्रह स्थिति के आधार पर है, यह तो स्पष्ट ही है—प्रियव्रत शर्मा]

वर्षलग्न-रन्ध्रेशौ चतुर्थे निधनान्त्यगौ । मुंथेशो ह्यस्तगो यत्र तद्वर्षे मरणं ध्रुवम् ॥१॥

वर्ष लग्नेश एवं अष्टमेश, चतुर्थ-अष्टम् किंवा बारहवें भाव में हों तथा मुंथेश अस्त हो तो उस वर्ष मृत्यु निश्चित है ।

चन्द्रः पापान्वितो रन्ध्रे लग्नेशोऽरिगतोऽस्तगः ।
तद्वर्षे च भवेत् मृत्युः रक्षकः शंकरोऽपिचेद् ॥२॥

पापयुक्त चन्द्र यदि अष्टमस्थ हो, लग्नेश छठे भाव में अस्त हो तो उस वर्ष मृत्यु होती है, उसे शंकर भी नहीं बचा सकते ।

मुंथेशश्च त्रिके तिष्ठेत् जन्म लग्नाधिपोऽस्तगः ।
तद्वर्षे च भवेद् मृत्युः पुत्र-मान-धनैः सह ॥३॥

मुंथेश छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो, जन्म लग्नेश अस्त हो तो उस वर्ष जातक पुत्र-मान एवं धन-सहित नाश को प्राप्त होता है ।

जन्मलग्नाधिपः सौरिः रन्ध्रस्थः पाप संयुतः ।
चन्द्रे त्रिकगते नूनं रिष्टयोगो भवेत्तदा ॥४॥

यदि जन्म लग्नेश शनि वर्ष लग्न में अष्टमस्थ हो एवं पाप ग्रहों से युक्त हो तथा चन्द्रमा छठे, आठवें एवं बारहवें भाव में हो तो वर्ष नेष्टफल युक्त होता है ।

त्रिराशि-मुंथा-जनिलग्नाथारस्तंगताश्चाब्दपतिश्चनीचे ।
तदा च वर्षे सुर रक्षितोऽपि-प्राप्नोति नूनं निधनं मनुष्य ॥५॥

त्रिराशीश, मुंथेश एवं जन्म लग्नेश ये तीनों अस्त हों तथा वर्षेश नीचस्थ हो तो उस वर्ष देवताओं द्वारा रक्षा किए जाने पर भी मनुष्य निश्चय ही मृत्यु को प्राप्त होता है ।

छिद्राधिपे केन्द्रगते बलिष्ठे लग्नाधिपश्चास्तगतस्त्रिके वा ।
शूलं विरेकं पवनं च दाहं प्रलाप-तन्द्रादि करोति कष्टम् ॥६॥

अष्टमेश बलवान् हो एवं प्रथम, चतुर्थ, सप्तम किंवा दशम स्थान में हो; तथाच लग्नेश अस्त हो या त्रिक (छठे, आठवें व बारहवें भाव) में हो तो शूल, विरेचन (जुलाब), वायुरोग, अग्निदाह, किंच प्रलाप (उन्माद) आदि वर्ष कष्ट में होते हैं ।

लग्नस्थितो रन्ध्र विपक्षनाथो पापेक्षितस्तस्य खगस्य तुल्यम् ।
करोति नूनं विविधाङ्गकष्टं लग्नाधिपे मृत्युगते मृतिः स्यात् ॥७॥

षष्ठेश एवं अष्टमेश यदि पापदृष्ट (किंवा पापयुक्त) होकर लग्न में बैठे हों अथवा षष्ठेश, अष्टमेश में से कोई भी पापदृष्ट होकर लग्न में बैठा हो तो उस ग्रह के अपने गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार निश्चय ही उस वर्ष शरीर के अनेक अंगों में पीड़ा करता है, तथाच यदि वर्ष लग्न में लग्नेश मृत्यु स्थान में हो तो मृत्यु निश्चित है ।

चन्द्रान्वितो रन्ध्रगतोऽर्कपुत्रो लग्नाधिपो भास्कर मण्डलस्थः ।
करोति कष्टं पवनं च शूलं कासादि रोगेण नरस्य मृत्युम् ॥८॥

चन्द्रयुत शनि छठे हो या लग्नेश सूर्य के साथ हो तो वायुरोग, शूल, खांसी, दमा आदि रोगों से मृत्यु हो ।

पुराधिनाथे रवि मण्डलस्थे षडष्टमस्थे जनि लग्नाथे ।
यदा तदैवं प्रदिशन्ति सन्तः महाभयं भूपकृतं च कष्टम् ॥९॥

वर्ष लग्नेश सूर्य के साथ हो, जन्म लग्नेश छठे, आठवें स्थान में हो तो उस वर्ष में (बीमारी किंवा शत्रु आदि से) महाभय एवं राजभय से कष्ट होता है ।

सुरारि पूज्यो यदि नीचसंस्थः सुरेश पूज्यो परवर्गवर्ती ।
स्वप्ने न सौख्यं नहि वर्षमध्ये तदाफलं हायनजं तदानीम् ॥१०॥

यदि शुक्र नीचस्थ हो तथा गुरु-शत्रुक्षेत्री हो तो उस वर्ष स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता ।

अस्तंगतौ भार्गव-सोमपुत्रौ नीचस्थितो रात्रिपतिर्यदास्यात् ।
तदा वियोगं मरणं च कष्टं शरीर पीड़ामतुलां करोति ॥११॥

वर्ष कुण्डली में बुध-शुक्र अस्त हों एवं चन्द्रमा नीच राशि में हो तो उस वर्ष प्रिय विछोह, शरीर पीड़ा आदि भारी कष्ट एवं मृत्यु भय होता है ।

लग्नाधिनाथो मृतिभाव संस्थो भौमेक्षितोयस्य च शत्रुसंस्थः ।
अस्तंगतो वा भृगुजो बुधो वा शस्त्रादि घाताद् बहुधा व्यथा स्यात् ॥१२॥

लग्नेश अष्टमस्थ मंगल से दृष्ट और शत्रुक्षेत्री हो, तथाच शुक्र या बुध अस्त हों तो उस वर्ष शस्त्र प्रहार से अनेकविध कष्टों का सामना करना पड़ता है ।

नीचस्थितौ धर्मधनादिनाथौ वर्षाधिपो हीन बलश्च दृष्टः ।
क्रूरैस्तदा नाशमुपैति लक्ष्मीः सुसंन्ततं शक्र सुरक्षिताऽपि ॥१३॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

द्वितीयेश एवं नवमेश नीच राशिस्थ हों, वर्षेश हीन बली हो, तथाच—क्रूर ग्रहों से दृष्ट हों तो उस वर्ष निरन्तर धन का क्षय होता है, भले ही इन्द्र द्वारा वह सुरक्षित हो।

रात्रीश्वरो भास्कर मण्डलस्थः षष्ठे व्यये वा मृतिभाव यातः।
त्रिदोषजं स बहुभिः प्रकारैः करोति कष्टं मरणेन तुल्यम् ॥१४॥

चन्द्रमा सूर्य से युक्त हो किंवा चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) जन्य सन्निपातादि अनेक प्रकार के रोगों से मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

जनौ यदा रन्ध्रगतोऽर्क पुत्रो वर्षेश राशिर्यदि मृत्युभावे।
सौरेण युक्तः कुरुते नराणां भुजङ्ग-दंशान्मरणं हितस्य ॥१५॥

जन्मकालीन शनि अष्टमस्थ हो, वर्षेश की राशि वर्ष में अष्टमस्थ हो एवं शनि भी उसमें बैठा हो तो उस वर्ष में सर्पदंश से मृत्यु होती है।

सुखे यदा नीचगतश्च जीवः सुखाधिपः नीचगतः कलत्रे।
लग्नाधिपो मृत्युगतश्च वर्षे करोत्यरिष्टं हि चतुर्थमासे ॥१६॥

मकरस्थ गुरु चतुर्थ भाव में चतुर्थेश नीचस्थ होकर सप्तम में और लग्नेश अष्टम में हो तो उस वर्ष चौथे मास में कष्ट होगा।

कष्टं शरीरे ज्वरकासश्वासाः रुन्धन्ति जीवं हृदयं च वातात्।
करोति शीर्षेऽत्र तथाच पृष्ठे भौमो यदा राहुयुतः सुखस्थः ॥१७॥

मङ्गल राहु के साथ यदि चतुर्थ भाव में हो तो उस वर्ष ज्वर, खांसी, स्वाँस रोग हों, हृदय भी रोगाक्रांत हो, सिर और पीठ में भी कष्ट हो सकता है।

गुरुसितौ यदि चास्तमुपागतौ हिमरुचि निर्धने विबलो यदा।
विविधरोगवशात् निधनं व्रजेत् सुत धनैश्च तदा प्रमदादिभिः ॥१८॥

गुरु-शुक्र दोनों सप्तमस्थ हों तथा निर्बल चन्द्रमा अष्टम में हो तो अनेक रोगों के कारण जातक मृत्यु को प्राप्त हो, उसे स्त्री-पुत्र और धन-सम्पत्ति के बारे में भी कष्ट हो।

मन्दो व्यये छिद्रगतो विलोमः पापान्वितः पापविलोकितो वा।
जन्माधिपश्चास्तगतश्च वर्षे करोति कष्टं ननु सन्निपातात् ॥१९॥

वक्री शनि बारहवें या आठवें भाव में हो और जन्म लग्नेश किसी पापी ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर सप्तम में स्थित हो तो जातक को उस वर्ष सन्निपात रोग से कष्ट हो।

भौमान्वितो लग्नगतोऽर्क पुत्रो लग्नाधिपश्चन्द्र युतोष्टमस्थः।
करोति कष्टं ज्वर-सन्निपातान् मूर्छा-कफार्धश्च तवात्यरिष्टम् ॥२०॥

शनि-मंगल से युक्त होकर लग्न में हो और लग्नेश चन्द्र के साथ अष्टम में बैठा हो तो ज्वर, सन्निपात, मूर्छा, कफ आदि से कष्ट हो।

यदा छिद्रनाथस्तनु भाववासी तथा लग्ननाथोऽरिभावे यदि स्यात्।
तदा वर्षमध्ये नराणां हि मृत्युः भवेद् वायुपीडाऽथवा दैवयोगात् ॥२१॥

यदि अष्टमेश लग्न में और लग्नेश छठे भाव में हो तो उस वर्ष जातक की मृत्यु हो सकती है। अथवा वातपीड़ा सम्भव है।

छिद्राधिपश्चेत्तनुभाव यातो लग्नाधिपश्छिद्र गृहे तदानीम्।
करोति कष्टं निधनं च वर्षे धने कलत्रे स्वतनौ सुतादौ ॥२२॥

अष्टमेश लग्नस्थ हो एवं लग्नेश अष्टमस्थ हो तो उस वर्ष जातक की मृत्यु सम्भव है। जातक को स्त्री-पुत्र-धन सम्बन्धी एवं शारीरिक कष्ट भी हो सकता है।

लग्नाधिपो वा मृतिभावनाथो मेषे-तुले स्यात् किलयत्र वर्षे।
तद्वर्षमध्ये मरणं नराणां सुखे व्यये चाष्टमगेऽरिभावे ॥२३॥

जिस वर्ष लग्नेश अथवा अष्टमेश मेष या तुला राशि में होकर चौथे, आठवें, छठे या बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष जातक की मृत्यु हो सकती है।

तनौ यदा भूमिसुतोऽष्टमेशो व्ययाष्टमस्थ स्त्वधिकारहीनः।
पापान्वितो वारिगतो नराणां घातादयो वाग्निवशाच्च मृत्युः ॥२४॥

यदि मंगल लग्न में हो और अष्टमेश अधिकार शून्य होकर (अपनी राश्यादि में स्थित न होकर) आठवें, बारहवें या छठे भाव में किसी पापी ग्रह के साथ बैठा हो तो जातक की किसी चोट अथवा अग्नि के कारण मृत्यु हो।

विलोमगौ धर्म-समाङ्गनाथौ धर्मास्तगौ रन्ध्रगतः शनिः स्यात्।
तदा मनुष्यो व्रजतीह शीघ्रं यमस्य लोकं प्रवदन्ति विज्ञाः ॥२५॥

जिस वर्ष वक्री नवमेश और वर्ष लग्नेश नवम, सप्तम में हों, और शनि अष्टम में स्थित हो तो जातक उस वर्ष शीघ्र ही यमलोक चला जाएगा।

प्रसूतिकालेऽष्टमगो महीज्यः तद् भेव राशिर्यदि वर्षलग्ने।
क्रूरान्वितः स्यात् कफवात पित्तादसृक् विकारात्प्रकरोति कष्टम् ॥२६॥

जन्म के समय अष्टमस्थ मंगल जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी यदि वर्ष लग्न में क्रूर ग्रह युक्त हो त्रिदोष के कारण अथवा रक्त विकार से कष्ट हो।

स्वोच्चे सुवीर्योऽष्टमगोऽङ्गनाथः तथाब्दपो चास्तगतोऽल्पवीर्यः।
पञ्चाननो नाम हरेत्तु रिष्टं यथा गजेन्द्रो हरिदर्शनेन ॥२७॥

यदि बली लग्नेश अपनी उच्चराशि में हो और वर्षेश निर्बल होकर सप्तम से बैठा हो तो 'पञ्चानन' योग बनता है। यह योग इस प्रकार जातक के कष्टों को दूर करता है जैसे—विष्णु के चिन्तन ने गजेन्द्र के कष्टों को दूर किया था।

रन्ध्रारिगस्तुर्यपतिः सपापः क्रूरान्वितस्तुर्यगतश्च चन्द्रः।
तदा नराणां खलु मातुरङ्गे करोतिरिष्टं खलु निश्चयेन ॥२८॥

चतुर्थेश पाप युक्त होकर छठे या आठवें भाव में हों और पाप युक्त चन्द्रमा चतुर्थ भाव में बैठा हो तो उस वर्ष जातक की माता को निश्चित रूप से कष्ट हो।

लग्नाधिनाथो मृतिभाव यातो जन्माधिपश्चेद् व्ययभाव यातः।
असौम्य युक्तो विविधाङ्गकष्टं स्त्रियस्तथा भ्रातृ सुतादिकानाम् ॥२९॥

वर्ष लग्नेश अष्टम में और जन्म लग्नेश क्रूर युक्त होकर बारहवें भाव में हो तो जातक को अनेक प्रकार का शारीरिक कष्ट हो, और उसके स्त्र-पुत्री-भाई आदि सम्बन्धियों को भी कष्ट हो सकता है।

रन्ध्रारिगौ जन्म समाङ्गनाथौ पापेक्षितौ संग्रहणी विकारात्।
भवेद्रिष्टं च तथा ज्वरश्च भूपाद् भयं चैव विचिन्तनीयम् ॥३०॥

जन्म लग्नेश और वर्ष लग्नेश दोनों यदि पापदृष्ट होकर अष्टम या छठे भाव में स्थित हों तो जातक को संग्रहणी, ज्वर, राजभय आदि कष्ट हो सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नाधिपः पापयुतो व्ययस्थो गुन्था यदा रन्ध्रगता कुजेन ।
युक्तेक्षिता वा रुधिर प्रकोपात् कष्टं शरीरे निधनेन तुल्यम् ॥३१॥

पाप युक्त लग्नेश बारहवें पड़ा हो और गुन्था मंगल के साथ अष्टम में हो तथा उसे पापी ग्रह देख रहा हो या वह पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक को रक्त प्रकोप से मृत्यु तुल्य कष्ट हो।

अस्तंगतो जन्मलमाङ्गनाथो पापग्रहैर्युक्त-निरीक्षितो वा ।
तदा नराणां विविधं हि कष्टं नूनं शरीरे मरणेन तुल्यम् ॥३२॥

जन्म लग्नेश और वर्ष लग्नेश पापी ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर सप्तम में स्थित हों तो जातक को उस वर्ष मृत्यु तुल्य कष्ट हो।

लग्नाधिनाथो रविमण्डलस्थो लग्ने यदा नीचगतः खगश्च ।
व्यये स्थितो बन्धुपतिः सचाब्दे करोति कष्टं खलु(चोपकर्मतः) ॥३३॥

यदि लग्नेश सूर्य युक्त हो, लग्न में कोई नीचस्थ ग्रह हो और चतुर्थेश बारहवें पड़ा हो तो उस वर्ष जातक को············से कष्ट होता है।

लग्नाधिपः सौरिभगोऽष्टमस्थः सुखस्थितो वा यदि वक्रयातः ।
यमेन दृष्टः खलु सन्निपातात् करोतिरिष्टं विविधं प्रकारैः ॥३४॥

यदि लग्नेश शनि की राशि (मकर या कुम्भ) में स्थित हो या आठवें हो, अथवा वह वक्री होकर चतुर्थ में बैठा हो और उसपर शनि की दृष्टि हो तो सन्निपात से जातक पीड़ित हो।

कन्यासंस्थः सप्तमेन्दुः सपापो, लग्ने, सूर्यो, भार्गवश्चापि द्रव्ये ।
तस्मिन्नब्दे कामिनी-सङ्गमाद्यैः कोपावुष्टः मानवानां च मृत्युः ॥३५॥

जिस वर्ष पाप युक्त चन्द्रमा सप्तम में कन्यास्थ हो और लग्न में सूर्य तथा द्वितीय में शुक्र हो उस वर्ष कामिनी सङ्गम (यौन रोग) आदि से जातक की बुरी तरह मृत्यु हो।

कन्या लग्ने भार्गवो मृत्युसंस्थो जायाभावे चार्कजो पापदृष्टः ।
योगे ह्यस्मिन् मानवानां च कष्टं भार्या मृत्युर्निश्चितश्चात्र वर्षे ॥३६॥

वर्ष लग्न कन्या होने पर शुक्र अष्टम में और शनि पाप दृष्ट होकर सप्तम में हो तो उस वर्ष जातक की पत्नी की निश्चत मृत्यु हो।

शरीरं कृशं वृष्टितोऽग्नेर्भयं वा विरेकादिकं श्वासकासादिकं च ।
सतन्द्राथवा पातघातादि बाधा यदा भूसुतश्चन्द्र युक्तोऽष्टमस्थः ॥३७॥

जब चन्द्रयुक्त मंगल अष्टम में हो तब शरीर दुर्बल हो, वर्षा या अग्नि से भय हो, विरेक (उदर विकार), श्वास रोग, खांसी, ऊँचे स्थान से पतन, प्रहार आदि से कष्ट हो।

विनाशनाथो यदि कण्टकस्थो वपुः पति र्द्वाविशगोऽरिगो वा ।
मृतिः तदा स्यादथ पाप दृष्टे शरीरनाथे मृतिगे मृतिः स्यात् ॥३८॥

यदि अष्टमेश केन्द्रस्थ हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो और पाप दृष्ट लग्नेश अष्टम में हो तो जातक की मृत्यु हो।

लग्नाधिपो नीचगतोऽथवास्ते मृत्युस्थितः क्रूरगतश्च षष्ठे ।
उद्वेगचिन्तामसुखं भयं च निरुद्यमं हि प्रकरोति वर्षे ॥३९॥

यदि लग्नेश नीचस्थ हो, सप्तम, छठे या आठवें बैठा हो अथवा वह किसी पापी ग्रह के साथ स्थित हो तो जातक उद्विग्न, चिन्तित, दुःखी, भयभीत एवं उत्साहहीन हो जाता है।

शरीरं कृशं श्वासकासादि पीड़ा ज्वरार्तिश्च (तस्मा द्रुजा छत्रभङ्गः) ।
दृढं बन्धनं चाङ्गनानां च कष्टं यदा लग्नगश्चन्द्रयुक्तोऽर्क पुत्रः ॥४०॥

जब शनि चन्द्रयुक्त होकर लग्न में स्थित हो तब शरीर में दुर्बलता, श्वास रोग, खांसी, ज्वर (क्षत्र भङ्ग), दृढ़ बन्धन(कारागार) और स्त्री कष्ट होता है।

शूलं विरेकः पवनादि कष्टं दाहस्तथा शीतजलादि रोगः ।
धातुक्षयः घातभयं नराणां मारेऽर्कजे चन्द्रयुतेऽष्टमस्थे ॥४१॥

मंगल और शनि चन्द्रयुक्त होकर अष्टम में पड़े हों तो दर्द, उदर-विकार, वातादि कष्ट, दाह, शीत (नजला जुकाम), जलादि (जलोदरादि) रोग, धातु क्षय, चोट से जातक पीड़ित हो।

मृत्युस्थितो जन्मनि भूमिपुत्रः पापान्वितो हीनबलोऽस्त संस्थः ।
विरेक-तन्द्रा-ज्वर- घात पातात् करोति कष्टं विविधैः प्रकारैः ॥४२॥

जन्म लग्न में मंगल अष्टम में हो और वर्ष लग्न में वह पापयुक्त, निर्बल होकर सप्तम में बैठा हो तो जातक को उदर विकार, शैथिल्य, ज्वर, चोट व पतन से कष्ट हो।

शशांको यदा जन्मकालेऽष्टमस्थः तथावर्षलग्ने कलत्रे विवीर्यः ।
सुखस्थः शनिश्चारि युक्तश्च कूपेनिपातोऽथवा लोहघातेन मृत्युः ॥४३॥

जन्म कण्डली में चन्द्रमा अष्टम में और वर्ष कुण्डली में वह निर्बल होकर सप्तम में हो तथा शनि शत्रुयुक्त होकर चतुर्थ में स्थित हो तो जातक की कुंए में गिरने अथवा लोहे (शस्त्र) के प्रहार से मृत्यु हो।

कर्के त्रिके जन्मनि सूर्य पुत्रो वर्षे यदा लग्नगतोऽत्र सौरिः ।
चन्द्रोऽष्टमस्थानगतो नराणां करोति मृत्युं च जलोदराद्यैः ॥४४॥

जन्म लग्न में यदि शनि कर्कस्थ होकर त्रिक में हो और वर्ष लग्न में वह लग्न में तथा चन्द्रमा आठवें बैठा हो तो जातक की जलोदर आदि रोगों से मृत्यु हो।

त्रिकस्थितो जन्मनि भूमिपुत्रो वर्षे सुखस्थो दशमे रविश्च ।
मन्दान्वितो रन्ध्रगतश्च चन्द्रः शूलाख्य रोगेण करोति मृत्युम् ॥४५॥

जन्मकाल में मङ्गल त्रिक में और वर्ष लग्न में वह चतुर्थस्थ हो, सूर्य दशम में तथा शनि युक्त चन्द्रमा अष्टम में हो तो 'शूल' नामक रोग से मृत्यु होती है।

चन्द्रो यदा पापयुतोऽस्त संस्थो जायापतिः जन्मनि वर्षतो वा ।
अस्तंगतः कामि (नि) देहपीड़ां मृतेः समानां कुरुतेऽत्र वर्षे ॥४६॥

यदि चन्द्रमा पाप युक्त होकर सप्तम में हो, सप्तमेश जन्म लग्न या वर्ष लग्न में अस्त हो तो उस वर्ष पत्नी को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

रन्ध्रस्थाने जन्मकाले शनिश्चेद् वर्षे धर्मस्थानगो नीच संस्थः ।
क्रूरैर्युक्तो वक्रगो (वावमुख्यं) जातिभ्रंशो म्लेच्छता चापि वर्षे ॥४७॥

जन्म के समय यदि शनि अष्टम में और वर्ष लग्न में नीचस्थ होकर नवम में क्रूर युक्त तथा वक्री हो तो उस वर्ष जातक जाति से च्युत हो उसमें म्लेच्छ भाव (हिंसादि) पैदा हो।

[शेष पृष्ठ १९६ पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

[शेष पृष्ठ १६६ पर]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

शोध लेख—

धनु तथा मकर की आकाशीय-स्थिति के बारे में भारतीय-ज्योतिषियों की महाभ्रान्ति

लेखकः—प्रियव्रत शर्मा

[धनु और मकर द्विदेह राशियां हैं। इन्हें भारतीय ज्योतिष में पृष्ठोदय राशियां माना गया है। हमारे जातक-प्रश्न-ताजिक-मुहूर्त्त ग्रन्थकारों ने अधिकतर स्थलों पर इन राशियों के १५-१५ अंशों के दो-दो भाग करके प्रत्येक भाग को एक अलग राशि के समान मानते हुए उसके आधार पर फलादेश का निर्धारण किया है। इस शोध लेख को पढ़िए। यह एक आश्चर्यजनक तथ्य उद्घाटित करता है कि इन राशियों को इस प्रकार दो-दो समान भागों में विभाजित कर निर्धारित किए जाने वाले फलादेश का आधार वस्तुतः भ्रान्तिमूलक है।
—प्रियव्रत शर्मा]

आकाश में जिस वृत्त के मार्ग से हमारी पृथ्वी एक वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करती है; उसे हम **'क्रान्तिवृत्त'** कहते हैं। इस क्रान्तिवृत्त को एक बिन्दु से, जिसे 'पौष्णान्तबिन्दु' कहा जाता है, लेकर ३०-३० अंशों के समान-२ १२ भागों में विभाजित किया गया है। इन भागों को क्रमशः मेष-वृष आदि १२ राशियों की संज्ञाएं दी गई हैं। इन १२ राशियों का विन्यासक्रम क्रान्तिवृत्त में पश्चिम से पूर्व की ओर है। अर्थात् पृथ्वी के दैनिक भ्रमण के कारण जब पौष्णान्त बिन्दु हमारे पूर्व क्षितिज पर आता है, तब मेष राशि (या मेष लग्न) का प्रारम्भिक बिन्दु (अंश) उदय हो रहा होता है। इसके लगभग दो घन्टे वाद वृष राशि हमारे क्षितिज पर आ जाएगी। तदनन्तर इसी प्रकार क्रमशः अन्य मिथुन आदि राशियां हमारे क्षितिज पर आएंगी। इन तीस-२ अंशों की राशियों को इस लेख में हम **'अंशात्मक राशियां'** या संक्षेप में केवल **'राशियां'** ही कहेंगे।

इन बारह राशियों (अंशात्मक राशियों) के अपने-२ अलग-२ बारह तारापुञ्ज आकाश में स्थित हैं। इनमें से कुछ तारापुञ्ज तो अपनी राशि की ३० अंशों की सीमा के भीतर ही स्थित है, और उनका फैलाव ३० अंश से कम ही है। दूसरे कुछ तारापुञ्ज ऐसे भी हैं जिनके कुछ तारे अपनी राशियों की सीमा के थोड़ा बाहर इधर-उधर भी बिखरे हैं। संक्षेप में हम इस प्रकार कह सकते हैं कि मेष आदि राशियों के ये तारापुञ्ज अपनी-२ राशियों के लगभग आस-पास ही आकाश में स्थित हैं। इनमें से कुछ तारापुञ्ज ३० अंशों से कम और कुछेक ३० अंशों से अधिक स्थान को घेरे हुए हैं।

आकाशस्थ इन तारापुञ्जों के तारों को काल्पनिक रेखाओं से जोड़ने पर मेष (मेढ़ा), वृष (बैल) आदि प्राणियों की सी आकृतियां बनी नजर आती हैं। इन्हीं आकृतियों के अनुसार इन बारह तारापुञ्जों एवं इनसे सम्बद्ध अंशात्मक राशियों को मेष, वृष आदि संज्ञाएं दी गई हैं। राशियों के इन तारापुञ्जों को काल्पनिक रेखाओं से जोड़ने पर बनने वाले इन मेढ़ा, बैल आदि प्राणियों को हम इस लेख में राशियों के 'कल्पित प्राणी' कहेंगे। इसी प्रकार किसी भी राशि से सम्बद्ध तारापुञ्ज ~~को हम~~ यहां उस राशि का तारापुञ्ज कहेंगे।

यहां यह बतला देना अप्रासंगिक नहीं होगा कि जन्म आदि के समय चन्द्र आदि ग्रह जिन राशियों में स्थित होते हैं उनके कल्पित प्राणियों (मेढ़ा, बैल आदि) के गुण, अवगुण, प्रकृति, शारीरिक रचना, चेष्टा, स्थिति आदि का प्रभाव जातक आदि पर पूरी तरह पड़ता है। यह सिद्धान्त भारतीय एवं अभारतीय सभी दैवज्ञ फलादेश के निर्णय में अपनाते हैं। बृहज्जातक आदि ग्रन्थ उठाकर देखिए—सर्वत्र मेष आदि राशियों में उत्पन्न जातक की प्रकृति एवं शारीरिक लक्षणों का निर्धारण मेष आदि राशियों के कल्पित प्राणियों की प्रकृति आदि के अनुसार ही किया गया है। पूरा जातक, ताजिक, प्रश्न एवं मुहूर्त्त साहित्य देखने से स्पष्ट हो जाता है कि राशियों के प्राणियों की यह कल्पना फलित-ज्योतिष के सिद्धान्तों के संस्थापक तत्त्वों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

क्रान्तिवृत्त का मेषादि बारह राशियों में विभाजन निर्विवाद रूप से अभारतीय हैं। हमारे समस्त वैदिक वाङ्मय और प्राचीनतम ज्योतिष-साहित्य आर्च, याजुष और आथर्वण वेदाङ्ग-ज्योतिष में अश्विनी आदि २८ नक्षत्रों का तो स्पष्ट निर्देश है, लेकिन मेषादि राशियों की वहां चर्चा नहीं है। सूर्य सिद्धान्त आदि भारतीय ज्योतिष के प्राचीन मूल ग्रन्थों में भी २८ नक्षत्रों की योगताराओं और ब्रह्महृदय आदि सभी प्रमुख ताराओं के ध्रुवप्रोत वृत्तीय भोगों शरों का तो निर्देश है, लेकिन बारह राशियों में से किसी एक भी राशि की योगतारा का विवेचन इनमें नहीं है। फलित ज्योतिष के बृहज्जातक आदि ग्रन्थों में बारह राशियों के ग्रीक नामों (क्रिय, तावुरि आदि) का उन्मुक्त प्रयोग भी मेषादि राशियों के पाश्चात्य उद्गम की ओर संकेत करता है।

इन बारह राशियों को भारतीय ज्योतिषियों ने पाश्चात्य ज्योतिष जगत् से यद्यपि अविकल रूप में मूलतः अपनाया तथापि उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन के अनुसार इनके तारापुञ्जों को काल्पनिक रेखाओं से जोड़कर बनने वाली इनकी आकाशीय आकृतियों में कहीं-२ परिवर्तन भी किया। जैसे:—पाश्चात्य ज्योतिषियों ने आकाश में कन्या राशि के तारापुञ्ज को "हाथ में धान्य एवं वृक्ष की टहनी लिए एक लड़की" के रूप में देखा जबकि भारतीय ज्योतिषियों ने उसे "नौका में बैठी, हाथ में धान्य और अग्निज्वाला लिए लड़की" का रूप दिया। इसी प्रकार पाश्चात्य ज्योतिषियों ने मकर राशि के तारापुञ्ज को बकरी अथवा बकरी के मुंह वाली मछली की आकृति में देखा और उसे भारतियों ने "हरिण के मुंह वाला मगरमच्छ" माना। इस प्रकार अन्य और भी ऐसे परिवर्तन भारतीय ज्योतिषियों ने इन राशियों के कल्पित प्राणियों के शरीर स्थित एवं उनकी वेषभूषा आदि में किए, जो नगण्य से हैं।

इन सामान्य परिवर्त्तनों के अलावा एक विशेष परिवर्त्तन जो विशेष रूप से चर्चा के योग्य है, वह है—"धनु और मकर राशियों के कल्पित प्राणियों की स्थिति में व्यत्यय।" पाश्चात्य ज्योतिषियों द्वारा निर्धारित इनकी आकाशीय स्थिति में किए गए इस भारी परिवर्त्तन से इन राशियों से सम्बद्ध पूरा फलादेश भी पूरी तरह बदल गया है।

धनु और मकर राशियों के तारापुञ्जों से आकाश में बने नराश्व और मृगास्य आकृति वाले "कल्पित प्राणी" पाश्चात्य खगोल चित्रों के अनुसार पूर्वी क्षितिज पर क्रांति-वृत्त में सीधे उदित होते हैं, अर्थात् उनके मतानुसार ये दोनों राशियां शीर्षोदय हैं; जबकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय ज्योतिषियों के मतानुसार ये दोनों पृष्ठोदय हैं; अर्थात् क्षितिज पर जब ये उदय होती हैं तब इनके कल्पित प्राणियों का अन्तिम अवयव सर्वप्रथम क्षितिज पर आता है। लघु जातक के इस पद्य में यही बात कही गई है—

मेषाद्याश्चत्वारः सधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयाः ।
पृष्ठोदया विमिथुनाः शिरसाऽन्ये ह्युभयतो मीनः ॥

पाश्चात्य खगोल चित्रों में शीर्षोदय की स्थिति में दिखाई गई धनु और मकर राशियों को भारतीय ज्योतिषियों ने पृष्ठोदय राशियां क्यों माना (अथवा समझा) ? इसके लिए आगे दिए गए धनु और मकर राशियों के चित्र देखिए। इन चित्रों में धनु राशि और मकर राशि के तारापुञ्जों की दिशा सहित स्थिति भी दिखाई गई है। इन्हें देखने से स्पष्ट हो जाता है कि इन दोनों राशियों के तारापुञ्जों का विन्यास और आकृति पूर्व और पश्चिम की ओर लगभग समान है, जिससे इन दोनों राशियों के 'कल्पित प्राणियों' के मुख पूर्व या पश्चिम की ओर यथेच्छ माने जा सकते हैं। ऐसा करने में कोई अन्तर नहीं दीख पड़ता है। यही कारण है किसी प्राचीन भारतीय ज्योतिषी ने (सम्भवतः प्रथम शताब्दी के आस-पास) किसी अपने वैयक्तिक चिन्तन के आधार पर इन्हें पृष्ठोदय की स्थिति में (पूर्वाभिमुख) समझ लिया जिसे सभी परवर्त्ती भारतीय दैवज्ञों ने परम्परया यथावत् स्वीकार किया। सभी भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों ने निरपवाद रूप से इन दोनों राशियों को पृष्ठोदय ही माना है।

भारतीय फलित ज्योतिष के सिद्धान्त के अनुसार पृष्ठोदय और शीर्षोदय राशियों का प्रचुर फलादेश एक दूसरे से सर्वथा विपरीत अथवा पर्याप्त भिन्न होता है। जैसे—शीर्षोदय लग्न में प्रस्थान करने पर राजा को कार्यसिद्धि मिलती है और पृष्ठोदय में विफलता और सेना का पलायन—

शीर्षोदये समभिवाञ्छित कार्य सिद्धिः ।
पृष्ठोदये विफलता बलविद्रवश्च ॥

शीर्षोदय राशि में स्थित ग्रह अपनी दशा के प्रारम्भ में और पृष्ठोदय में स्थित ग्रह अन्त में फल देता है—

शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ फलदो भवेत् ।
पृष्ठोदयस्थः पाकान्तेसदा चोभयराशिगः ॥

शीर्षोदय लग्न हो तो बच्चे का प्रसव सिर की ओर से, पृष्ठोदय हो तो पैरों की ओर से होता है—

शीर्षोदये विलग्ने मूर्ध्ना प्रसवोऽन्यथोदये चरणैः ।—(सारावली)

वराहमिहिर भी यही कहते हैं कि बच्चे की गर्भ से मुक्ति क्षितिज में उदय हो रही राशि की स्थिति के अनुसार होती है—

यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तुतद्वत् ।—(बृहज्जातक)

इस प्रकार हमारे फलित ग्रन्थों में राशियों की पृष्ठोदय और शीर्षोदय स्थितियों पर आधारित फल की कमी नहीं है। प्रश्न ज्योतिष में तो राशियों की ये स्थितियां और भी अधिक महत्त्व रखती हैं। जैसा कि ऊपर दिए गए कुछ उद्धरणों से स्पष्ट है कि पृष्ठोदय और शीर्षोदय स्थितियों का फल परस्पर विपरीत और सर्वथा भिन्न होता है। अतः स्पष्ट है कि इन धनु और मकर राशियों से सम्बद्ध फलादेश पाश्चात्य मतानुसार अनेकत्र कुछ और तथा भारतीय मतानुसार कुछ और ही होगा और यह फलादेश इन दोनों मतों के अनुसार अधिकतर एक दूसरे से विपरीत होगा।

इस निबन्ध में अब हम भारतीय ज्योतिषानुसार धनु और मकर राशियों की पृष्ठोदय स्थिति की कल्पना से उत्पन्न एक ऐसी असह्य अव्यवस्था का निर्देश करेंगे जिसने भारत के शत-प्रतिशत जातक, ताजिक, प्रश्न एवं मुहूर्त्त ग्रन्थकारों को बुरी तरह अपना शिकार बना रखा है।

देखिए—इन दोनों राशियों के 'कल्पित प्राणी' द्विदेह (Bicorporates) हैं। जैसे धनु राशि का 'कल्पित प्राणी' 'नराश्व' और मकर का 'मृगास्य मकर' है। अर्थात् धनु राशि के कल्पित प्राणी के शरीर का प्रथमार्ध (First half) धनुर्धारी मनुष्य से और उत्तरार्ध (Hinder Part) घोड़े से बना है। इसी प्रकार मकर राशि के कल्पित प्राणी का प्रथमार्ध मृग का एवं उत्तरार्ध मकर (मगरमच्छ) का है।

ये दोनों राशियां भारतीय ज्योतिष के अनुसार पृष्ठोदय हैं। अर्थात् इन राशियों के कल्पित प्राणी जब उदय होते हैं (पूर्व-क्षितिज में आते हैं), तब सबसे पहले इनका पिछला भाग ही क्षितिज से ऊपर आता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार समझना चाहिए कि धनु और मकर राशियों के कल्पित प्राणियों के मुख पूर्व दिशा की ओर, और इनकी पीठ पश्चिम की ओर है। इस प्रकार स्पष्ट है—धनु राशि के 'कल्पित प्राणी' नराश्व का उत्तरार्ध (यानी अश्व वाला भाग) धनु राशि के प्रथमार्ध (० से १५ अंश तक वाले भाग) में और नराश्व का प्रथमार्ध (यानी धनुर्धारी मनुष्य वाला भाग) इसके उत्तरार्ध (१५ से ३० अंश तक वाले भाग) में स्थित है। इसी प्रकार मकर राशि के 'कल्पित प्राणी' मृगास्य मकर का उत्तरार्ध (यानी मगरमच्छ वाला भाग) मकर राशि के पूर्वार्ध (० से १५ अंश तक वाले भाग) में और इसका प्रथमार्ध (यानी हरिण वाला भाग) मकर राशि के उत्तरार्ध (१५ से ३० अंश तक वाले भाग) में रहता है, (स्पष्टता के लिए आगे दिया गया धनु-मकर का चित्र देखें)।

इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम प्रकारान्तर से इस तरह भी कह सकते हैं कि जहां इन राशियों के प्रथमार्ध भाग हैं, वहां इनके अपने-२ कल्पित प्राणियों के शरीर के उत्तरार्ध भाग हैं और जहां इनके उत्तरार्ध भाग हैं, वहां इनके अपने-२ कल्पित प्राणियों के शरीर के प्रथमार्ध भाग स्थित हैं।

अब हम एक आश्चर्यजनक तथ्य विद्वान् पाठकों के सम्मुख रखने जा रहे हैं, जिसे मैं समझता हूं, ऊपर दी गई विस्तृत विवेचना को पढ़ने के बाद, वे स्पष्टता से समझने की पूरी स्थिति में हैं—

भारतीय फलित ज्योतिष के जितने भी जातक, ताजिक, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि के ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उन्हें देखिए—उन सभी ग्रन्थों के रचयिताओं ने धनु राशि के प्रथमार्ध (शून्य से १५ अंश तक) को द्विपद, मनुष्य राशि और उत्तरार्ध (१५ से ३० अंश तक) को चतुष्पद पशुराशि कहा है। इसी प्रकार उन्होंने मकर राशि के प्रथमार्ध (शून्य से १५ अंश तक) को चतुष्पद, स्थलचर एवं उत्तरार्ध (१५ से ३० अंश तक) को जलचर बतलाया है। ताजिक नीलकण्ठी का यह वाक्य देखिए—

चापान्त्यभागस्य चतुष्पदत्वं ज्ञेयं मृगान्त्यस्य जले चरत्त्वम् ।

फलदीपिकाकार मन्त्रेश्वर भी यही कुछ कहते हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

चापाद्यर्धवषु नृयुग्घट तुला मर्त्याश्च कीटोऽलिमम् ।
त्वाप्याः कर्किमृगा परार्धशफराः शेषाः चतुष्पादकाः ॥

धनु और मकर के पूर्वार्ध-उत्तरार्ध भागों में उनके कल्पित-प्राणियों के शरीर के पूर्वार्ध-उत्तरार्ध भागों की स्थिति के बारे में बृहत्पाराशरकार भी ऐसी ही भ्रान्त-विवेचना उपस्थापित करते हैं—

... ... द्विपाद् ।
आदावन्ते चतुष्पात्सः समगात्रो धनुर्धरः ।
पूर्वेशो वसुधाचारी तेजोवान् पृष्ठतोद्गमी ॥
पृष्ठोदयो बृहद्गात्रः कर्बुरो वनभूचरः ।
आदौ चतुष्पदन्ते तु विपदो जलगो मतः ॥

देखिए—यहां पराशर के वाक्य में स्पष्ट 'वदतो व्याघात' (Contradiction) है। वे धनु और मकर राशियों को पृष्ठोदय भी कह रहे हैं और साथ ही इनके कल्पित-प्राणियों (नराश्व और मृगास्य मकर) के प्रथमार्ध (यानी नर और मृग वाले भाग) को इन राशियों के पूर्वार्ध (शून्य से १५ अंश वाले भाग) में तथा इनके कल्पित प्राणियों के उत्तरार्ध (यानी अश्व और मगरमच्छ वाले भाग) को इन राशियों के उत्तरार्ध (१५ से ३० अंश वाले भाग) में बतला रहे हैं, जो सर्वथा गलत है।

इस उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि—सभी फलित ग्रन्थकारों ने इन दोनों राशियों के प्रथमार्ध और उत्तरार्ध की प्रकृति (चतुष्पदत्व, द्विपदत्व, जलचरत्व आदि) का निर्णय करते हुए इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया कि पृष्ठोदय होने के कारण इन राशियों के प्रथमार्ध और उत्तरार्ध इनके कल्पित प्राणियों के प्रथमार्ध और उत्तरार्ध से बिल्कुल विपरीत स्थिति में हैं। उनकी इस अनवधानता का परिणाम यह हुआ कि इन राशियों के प्रथमार्ध और उत्तरार्ध पर आधारित उनके द्वारा निर्दिष्ट सारा फलादेश सर्वथा असंगत हो गया है। जबकि हम सविवरण यह प्रमाणित कर चुके हैं कि ये सभी फलित ग्रन्थकार धनु-मकर के पूर्वार्ध-उत्तरार्ध के निर्णय में यथार्थता से विलग हैं तो हम यह कहने का साहस कर सकते हैं कि इन सभी फलिताचार्यों का धनु-मकर के पूर्वार्ध-उत्तरार्ध पर आश्रित फल-निर्देश शत-प्रतिशत भ्रामक है।

देखिए—फलितकारों की एतद्विषयक भ्रान्ति के कुछ उदाहरण हम यहां उद्धृत कर रहे हैं—

यदि बलवान् चन्द्रमा जलचर राशि में बैठकर जलचर राशि वाले लग्न को देख रहा हो तो उस समय जातक का जन्म नाव, समुद्री जहाज या जलयुक्त प्रदेश में होता है—इस सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए 'दैवज्ञाभरणकार ने मकर लग्न के उत्तरार्ध को जलचर लग्न मान लिया, जो कि गलत है—

मृगापरार्धं झष-कर्किकौर्पिलग्नं च तत्रैव गृहे शशांकः ।
वीर्यान्वितः पूर्णतनुः प्रपश्यन् करोति सूतिं सलिले तदानीम् ॥

"नर राशियां लग्न में बलवान् होती हैं"—यह बतलाते हुए गर्ग महर्षि धनु के पूर्वार्ध को नर राशि कह गए। उन्हीं का कहना है कि जलचर राशियां चतुर्थ भाव में बली होती हैं। इसी प्रसंग में उन्होंने मकर राशि के उत्तरार्ध को जलचर मान लिया। दशम में चतुष्पद राशियों की बलवत्ता बतलाते हुए वे धनु राशि के उत्तरार्ध को चतुष्पद कहते हैं—

नृयुक्तुला घटः कन्या पूर्वमर्धं च धन्विनः ।
लग्नस्था बलिनो ज्ञेया एते हि नरराशयः ॥

चतुर्थे कर्कटो मीनो मकरार्धं च पश्चिमम् ।
विज्ञेया बलिनो नित्यमेते हि जलराशयः ॥

सप्तमे वृश्चिकः कीटो बलवान् परिकीर्तितः ।
धन्वन्त्याऽर्धाऽजगोसिंहा बलिनः खे चतुष्पदाः ॥—(गर्गः)

क्या गर्ग का यह वाक्य धनु और मकर की आकाशीय स्थिति (पूर्वाभिमुख स्थिति) के प्रतिकूल नहीं है?

वराहमिहिर के पुत्र पृथुयशा ने षट्पञ्चाशिका में राजा की विजय यात्रा-कालिक ग्रह स्थिति का फल लिखते हुए कहा है कि उस समय चतुष्पद राशि चतुर्थ भाव में हो तो शत्रु की सेना भाग खड़ी होती है—

झषालि कुम्भकर्कटा रसातले यदा स्थिताः ।
रिपोः पराजयस्तदा चतुष्पदैः पलायनम् ॥

यहां 'चतुष्पद' की व्याख्या करते हुए सुविख्यात ज्योतिर्विद् भट्टोत्पल ने धनु राशि के पश्चार्ध को चतुष्पद राशि लिख डाला—

"चतुष्पदैः पलायनम्। चतुष्पदाः मेष-वृष-सिंह धन्विपरार्धाः।"

इस प्रकार चतुष्पद, नर जलचर अरण्यचर राशियों पर आश्रित हमारे फलित-शास्त्रों में वर्णित वह सारा फलादेश, जिसका आधार धनु और मकर राशियां हैं, आमूल चूड़ निर्मूल सिद्ध होता है।

यद्यपि राशियों के आकाशस्थ तारापुञ्जों को काल्पनिक रेखाओं से जोड़कर उन्हें स्वकल्पना प्रसूत किसी प्राणी विशेष की आकृति देकर उस प्राणी के गुण-धर्मों को जातक आदि में आरोपित करने के इस फलित-सिद्धांत का एकमात्र मूल मिथ्या सादृश्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, फिर भी आश्चर्य और दुःख की बात है कि धनु और मकर राशियों से सम्बद्ध फलादेश के विषय में तो इस मिथ्या सादृश्य के सिद्धान्त का भी प्रयोग नहीं हो पाता। समझ में नहीं आता कि इस प्रकार की यह अक्षम्य अशुद्धि शताब्दियों से दैवज्ञ समाज की त्रिकालदर्शी दृष्टि में आने से बची कैसे रही।

लेख के अन्त में Sh. A. N. Shrinivasa Raghava Aiyangar द्वारा की गई 'पृष्ठोदय राशि' की परिभाषा पर भी कुछ शब्द टिप्पणी के रूप में यहां लिख देना आवश्यक समझता हूं—

"पृष्ठोदयो बृहद्गात्रः कर्बुरो वनभूचरः ।
आदौ चतुष्पदन्ते तु द्विपदो जलजो मतः ॥"

पराशर के इस मकर स्वरूप में साक्षात् परस्पर विरोधी विवेचन को देखकर बृहज्जातक के पूर्वार्ध पर 'अपूर्वार्थ प्रदर्शिका' टीका के लेखक श्री ए. एन. श्री निवास राघव आयंगर ने 'पृष्ठोदय राशि' की एक विलक्षण ही परिभाषा कर डाली, ताकि पराशर के उपरोक्त वाक्य में विरोध का परिहार हो सके। श्री आयंगर, जिन्होंने अपनी 'अपूर्वार्थ प्रदर्शिका' टीका में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहज्जातक के लगभग प्रत्येक श्लोक के अद्भुत से अद्भुत अनेक अर्थ बलात् निकाल कर अपने बुद्धि वैभव का अश्लाघ्य प्रदर्शन किया है, लिखते है—"कोई भी राशि पृष्ठ से उदय नहीं होती।" उन्होंने पृष्ठोदय का अर्थ ही सर्वथा बदला डाला है। वे कहते हैं, परम्परया ज्योतिर्विदों द्वारा पृष्ठोदय शब्द का "पृष्ठ से उदय होने वाली राशि"—इस प्रकार का जो अर्थ किया जा रहा है, वह गलत है। श्री आयंगर के अनुसार पृष्ठोदय वह राशि है जिसका पूर्णोदय उसके तारापुंज के पृष्ठस्थ (अन्तिम) तारे के उदय के बाद होता है—

"सः पृष्ठेनोदेति इत्यनेन पृष्ठोदयानन्तरमेव उदय पूर्णो भवति इत्यर्थ।"

—(अपूर्वार्थ प्रदर्शिका)।

श्री आयंगर द्वारा की गई पृष्ठोदय की यह विलक्षण, कल्पित परिभाषा वराहमिहिर, मन्त्रेश्वर, पृथुयशा आदि सभी जातक प्रश्न मुहूर्त्त ग्रन्थकारों एवं भट्टोत्पल आदि सभी टीकाकारों के अभिप्राय का सर्वथा उल्लंघन करती है। अपिच गणित भी बतलाती है- भारत एवं उत्तारी अक्षांश वाले अन्य सभी स्थलों पर मकर राशि का पृष्ठस्थ तारा (δ Capricorni) मकर राशि के पूर्णोदय के बाद ही उदित होता है। धनु राशि के पृष्ठस्थ तारे (T Sagittarii और π Sagittarii) भी दक्षिणी अक्षांश वाले सभी स्थलों पर धनु राशि के पूर्णोदय के बाद उदय होते हैं। इस प्रकार ये दोनों राशियां श्री आयंगर की परिभाषा के अनुसार पृष्ठोदय नहीं कहला सकतीं। किञ्च—उत्तारी अक्षांश वाले सभी स्थलों पर मिथुन और कुम्भ राशियों के पृष्ठस्थ तारे (β Geminorum और δ Aquarii) भी अपनी-अपनी राशियों के पूर्णोदय से पहले ही उदय हो जाते हैं। अतः श्री आयंगर की परिभाषा के अनुसार ये राशियां भी पृष्ठोदय कहलाएंगी, जबकि ज्योतिष-शास्त्र इन्हें शीर्षोदय राशियां कहता है। इस प्रकार स्पष्ठ है, श्री आयंगर द्वारा कल्पित पृष्ठोदय की परिभाषा गणित निकष पर भी खरी नहीं उतरती। (सभी राशियों के पृष्ठस्थ तारे उत्तारी और दक्षिणी अक्षांश स्थलों पर अपनी-अपनी राशियों के अन्तिम विन्दुओं से कितना समय पहले या बाद मे उदय होते हैं—यह स्पष्ट करने वाला कोष्ठक, जिसे भारी परिश्रम से तैयार किया गया है, यहां स्थानाभाव से नहीं दिया जा रहा है)।

श्री आयंगर द्वारा प्रतिपादित पृष्ठोदय की गणित-विरुद्ध परिभाषा को भी यदि हम 'वादिपरितोष न्यायेन' मान लें तो भी "यद्वद् राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत्।" "शीर्षोदये विलग्ने मूर्ध्नाप्रसवोऽन्यथोदये चरणैः।"—वृहज्जातक और सारावली आदि में बतलाए गए पृष्ठोदय राशियों के इस प्रकार के सभी फल व्यर्थ हो जाएंगे।

'जातकपारिजत' कार ने अपने 'पृष्ठोदय' शब्द के स्थान पर **'पृष्ठ पूर्वोदय'** शब्द का प्रयोग किया है जिसका स्पष्ट अर्थ है—"वह राशि जिसकी पृष्ठ पहले उदित हो" (पृष्ठपूर्वः उदयः यस्य सः राशिः)—

वीर्योपेता निशिवृष-नृयुक्कर्कि चापाजनक्राः।
हित्वा युग्मं भवनमपरे पृष्ठपूर्वोदयाश्च ॥—(जातक पारिजात)

इस तरह सुस्पष्ट है—श्री आयंगर कृत पृष्ठोदय के इस 'अपूर्व अर्थ' को कोई भी शास्त्रवाक्य स्वीकृति नहीं देता और गणित-प्रक्रिया से भी वह सर्वथा असंगत सिद्ध होता है। अतः पृष्ठोदय का वास्तविक और एकमात्र अर्थ वही मानना होगा, जो सभी ज्योतिष-शास्त्रियों द्वारा परम्परया माना जा रहा है और एतत्सम्बद्ध शास्त्र वाक्यों द्वारा जो पूरी तरह समर्थित भी है।

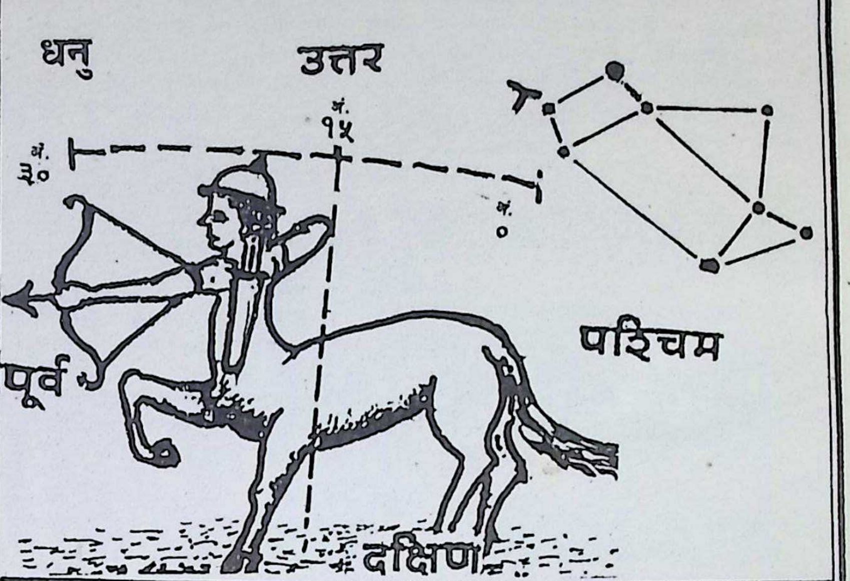

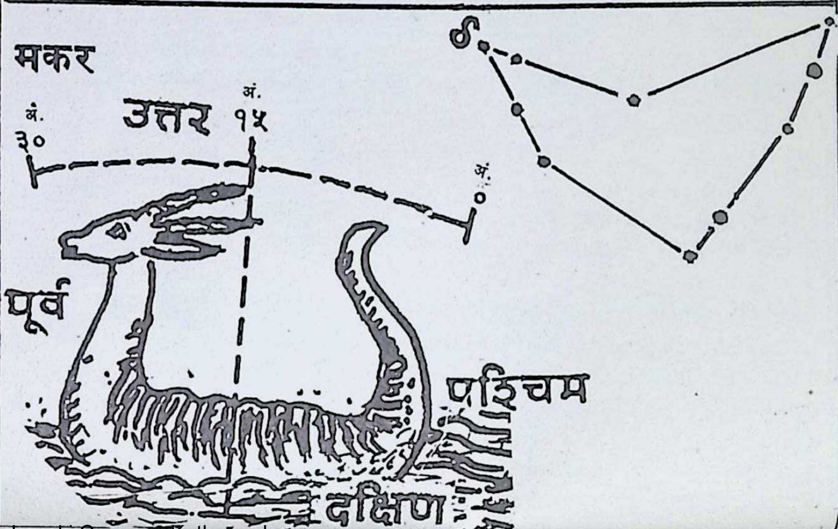

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समस्याएं और समाधान

लेखक :—प्रियव्रत शर्मा

[इस स्तम्भ के लिए हमें प्रश्नों—समस्याओं की भरमार प्राप्त होती है, जिनमें से चुनकर हम महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के ही उत्तर देते हैं। जिनके प्रश्नों के उत्तर इस स्तम्भ में प्रकाशित होते हैं उन प्रष्टाओं को हम पंचांग प्रकाशन से पूर्व पत्र द्वारा सूचना भी देते हैं, ताकि वे अपने प्रश्नों का उत्तर पंचाग में पढ़ सकें। अतः प्रश्न कर्त्ताओं को अपना पूरा पता अवश्य लिखना चाहिए। जिस पत्र द्वारा वे अपनी समस्या हमें भेजते हैं, उस पत्र के ऊपर "समस्याएं और समाधान स्तम्भ के लिए" अवश्य लिखें। —सम्पादक]

प्रश्न (१)—सूर्योदयात् इष्टकाल बनाने के लिए भा. स्टैं. टा. में दिए गए जन्म काल में से स्टैंडर्ड अन्तर चिन्हानुसार जोड़ना या घटाना चाहिए। इसके बाद उसमें से भा.स्टैं.टा. वाला सूर्योदय काल घटाकर इष्ट काल बनाना चाहिए, यह बात ज्योतिष की एक प्रचलित पुस्तक में मैंने पढ़ी है। क्या यह ठीक है ?

(२)—आपके पंचाग में दी गई अक्षांशादि सारणी में दिए गए स्टैंडर्ड अन्तर के मि.-सेकण्डों के धन(+) और ऋण(—) चिन्ह अन्य कुछ पंचांगों से नहीं मिलते। उदाहरणार्थ—चण्डीगढ़ का स्टैंडर्ड अन्तर आपके पंचांग में ऋण(—) चिन्ह वाला है, जबकि कुछ पंचांगों में यह धन(+) चिन्ह वाला है। यह अन्तर क्यों है ? —देवी सहाय शास्त्री, नाहन (हि.प्र.)

उत्तर (१)—'सूर्योदयात् इष्ट काल' का अभिप्राय है—विगत स्थानीय सूर्योदय काल से किसी अभीष्ट समय पर बीता घट्यादि काल। इसके लिए हमें उस अभीष्ट समय और स्थानीय विगत सूर्योदय के बीच की घंटा-मिनटात्मक कालावधि जाननी होगी। यह काल अवधि तभी जानी जा सकती है जबकि अभीष्ट समय में से स्थानीय विगत सूर्योदय काल घटा दिया जाए। अभीष्ट काल और सूर्योदय काल का अन्तर करना तभी उपयुक्त होगा जबकि ये दोनों काल एक जाति के हों (अर्थात् दोनों या तो स्थानीय काल में हों या स्टैंडर्ड टाइम में)। अगर इनमें से एक काल विजातीय है तब इन दोनों का अन्तर करना भारी गलती होगी। क्योंकि आजकल किसी बच्चे का जन्म काल और सूर्योदय काल दोनों भा.स्टैं.टा. में ही हमें ज्ञात होते हैं (अर्थात् हमारी सभी घडियां जिन्हें हम प्रयोग में लाते हैं, भा.स्टैं.टा. ही बतलाती हैं) अतः इन दोनों में किसी प्रकार का जोड़-घटाव किए बिना ही इन दोनों के अन्तर से इष्टकाल ज्ञात हो जाता है। यदि ज्योतिष की इस प्रचलित पुस्तक के अनुसार आप भा.स्टैं.टा. में प्राप्त जन्म काल में अभीष्ट नगर के स्टैंडर्ड अन्तर को चिन्हानुसार जोड़ या घटाकर उसका भा.स्टैं.टा. वाले सूर्योदय काल से अन्तर करेंगे तो "सूर्योदयात् इष्टकाल" न बनकर और ही कुछ बन जाएगा। क्योंकि भा.स्टैं.टा. में स्टैंडर्ड अन्तर का संस्कार करने पर जन्मकाल भा.स्टैं.टा. में न रहकर स्थानीय मध्यमकाल में हो जाएगा, अतः वहां यह आवश्यक हो जाएगा कि भा. स्टैं. टा. वाले स्थानीय सूर्योदय काल को भी स्टैंडर्ड अन्तर का संस्कार करके स्थानीय मध्यमकाल बनाया जाए। तभी उसका स्थानीय मध्यमकाल वाले जन्मकाल से अन्तर किया जा सकेगा, अन्यथा नहीं। लेकिन जन्म काल और सूर्योदयकाल दोनों ही हमें भा.स्टैं.टा. में प्राप्त होते हैं। इनके ही अन्तर से जब हमें इष्टकाल प्राप्त हो जाता है, तब इन दोनों में स्टैंडर्ड अन्तर को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने की क्रिया व्यर्थ का प्रयास होगा।

इष्ट साधनार्थ इस प्रकार की गलत प्रक्रिया अपनाने वाले कई ज्योतिषी हमारी दृष्टि में आए हैं। ये भ्रान्त ज्योतिषी स्थानीय मध्यम काल और स्टैंडर्ड टाईम की परिभाषाओं के ज्ञान से वंचित हैं। वे समझते हैं कि प्रत्येक नगर का सूर्योदय काल भले ही वह स्टैंडर्ड टाईम में होता है, स्थानीय काल है। जिससे वे स्टैंडर्ड टाईम में प्राप्त जन्मादि काल को भी स्टैंडर्ड अन्तर का संस्कार करके स्थानीय काल बना लेना उचित समझते हैं। ध्यान रहे कि किसी नगर का भा. स्टैं. टा. वाला सूर्योदय काल स्थानीय (उस नगर के) सूर्योदय का काल अवश्य है, लेकिन वह काल उस नगर के स्थानीय मध्यम काल में नहीं है, अपितु वह भारत की प्रामाणिक रेखा (८२ अंश ३० कला पूर्व) के स्थल का स्थानीय मध्यम काल है। यदि आप उसे स्थानीय (अपने नगर के) मध्यम काल में जानना चाहते हैं तो उस (भा.स्टैं.टा. वाले) सूर्योदय काल में उस नगर के स्टैंडर्ड अन्तर को चिन्हानुसार जोड़ दें या घटा दें। इस प्रकार वह सूर्योदय का काल उस नगर के स्थानीय मध्यम काल में बदल जाएगा। लेकिन भा. स्टैं. टा. वाले सूर्योदय काल को स्थानीय मध्यम काल में बदलना व्यर्थ है, क्योंकि बच्चे का जन्म काल जो हमारे पास है, वह भी भा. स्टैं. टा. में ही है। अतः इष्ट काल बनाने के लिए सूर्योदय काल भी हमें भा. स्टैं. टा. में ही अपेक्षित है।

जो ज्योतिषी भा. स्टैं. टा. वाले जन्मकाल में जन्म स्थल के स्टैंडर्ड अन्तर का संस्कार करके उसका भा. स्टैं. टा. वाले सूर्योदय काल से अन्तर निकालकर इष्ट काल बनाने की गलती करते हैं उन्हें उनकी गलती समझाने के लिए हम नीचे एक उदाहरण दे रहे हैं—

मान लीजिए—१ जनवरी को प्रातः ७ बजकर ३० मिनट पर कोई बच्चा चंडीगढ़ में पैदा हुआ। इसका जन्म कालिक इष्ट ज्ञात करना है। १ जनवरी को चंडीगढ़ में सूर्योदय काल (भा. स्टैं. टा.) ७ घं. २४ मि. है। स्पष्ट है वह बच्चा चण्डीगढ़ में वहां के सूर्योदय के ६ मिनट बाद ही पैदा हुआ है। अतः उसका जन्म कालिक इष्ट शून्य घड़ी १५ पल होगा। लेकिन जो कालानभिज्ञ ज्योतिषी बच्चे के जन्म काल (७ घं. ३० मि.) में से चण्डीगढ़ का स्टैंडर्ड अन्तर (—२२ मि. ३२ सै.) चिन्हानुसार घटाकर जन्म काल की स्थानीय मध्यम काल बनाकर उससे इष्ट काल बनाने की चेष्टा करेंगे उन्हें यहां अपनी गलती स्वयं ज्ञात हो जाएगी, क्योंकि ऐसा करने पर बच्चे का जन्म काल सूर्योदय काल से १६ मि. ३२ सै. पहले हो जाएगा।

इतना विस्तार से यह समझाने का कारण यह है कि हमें इस प्रकार की अक्षम्य गलती करने वाले बहुत से ज्योतिषी मिले हैं। आशा है इस विस्तृत विवरण से उनकी भ्रान्ति का निवारण पूरी तरह हो जाएगा। इसी प्रकार की एक समस्या का समाधान हम सम्वत् २०४४ के पंचांग में पृष्ठ ४० पर भी दे चुके हैं।

(२)—हमारे इस पंचांग में जिस नगर का स्टैंडर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है वहां भा.स्टैं.टा. में से स्टैंडर्ड अन्तर घटा देने पर, धन चिह्न वाला है तो जोड़ देन पर स्थानीय मध्यम काल बन जाता है। जिन पंचांगों में स्टैंडर्ड अन्तर के चिह्न हमारे पंचांग में दिए गए चिह्नों के विपरीत हैं वहां भा.स्टैं.टा. से स्थानीय मध्यम काल जानने के लिए स्टैंडर्ड अन्तर का चिह्न बदल कर भा.स्टैं.टा. में उसे जोड़ना या घटाना पड़ता है। जैसे—हमारे पंचांग में चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर —२२ मि. ३२ से. लिखा है। अतः किसी भी क्षण के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भा.स्टैं.टा. में से २२ मि. ३२ से. घटा देने पर चंडीगढ़ का स्थानीय मध्यम काल बनेगा। जिस पंचांग में चंडीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर +२२ मि. ३२ से. है, उसके अनुसार किसी क्षण के भा.स्टैं.टा. को चंडीगढ़ के स्थानीय मध्यम काल में बदलने के लिए स्टैण्डर्ड अन्तर का चिह्न बदल कर (धन को ऋण चिह्न बनाकर) उसे भा.स्टैं.टा. में से घटाना होगा।

दूसरे शब्दों में हम ऐसा कह सकते हैं—'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में किसी नगर के ऋण स्टैण्डर्ड अन्तर का अर्थ है कि उस नगर का स्थानीय मध्यम काल भारतीय प्रामाणिक रेखा (Indian Standard Meridian) वाले स्थल के स्थानीय मध्यम काल (भा.स्टैं.टा.) से उतना (स्टैण्डर्ड अन्तर तुल्य) पीछे रहता है और धन स्टैण्डर्ड अन्तर का अभिप्राय है कि उस नगर का स्थानीय मध्यम काल भारतीय प्रामाणिक रेखा वाले स्थल के स्थानीय मध्यम काल (भा. स्टैं. टा.) से उतना आगे रहता है। जिन पंचांगों में स्टैण्डर्ड अन्तर के चिन्ह हमारे पंचांग में दिए गए चिन्हों के विपरीत है, उनके अनुसार धन स्टैण्डर्ड अन्तर वाले नगरों में भा. स्टैं. टा. उस नगर के स्थानीय मध्यम काल से स्टैंडर्ड अन्तर तुल्य आगे और ऋण स्टैंडर्ड अन्तर वाले नगरों में पीछे रहता है।

प्रश्न (१)—विवाह संस्कार के लिए मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि अधिकतर मुहूर्त्त ग्रंथों में रोहिणी आदि ग्यारह नक्षत्र ही ग्राह्य लिखे हैं। आप कात्यायन मुनि के मतानुसार अश्विनी, चित्रा, श्रवण और घनिष्ठा इन चार और नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लगाते हैं। क्या यह बहुमत की अवहेलना नहीं है ?

(२)—विवाहांगकृत्यों (धान्यशोधन, गृहालंकरण आदि) के लिए "मुहूर्त्त चिन्तामणि" आदि में विवाह नक्षत्रों को ही ग्राह्य लिखा है। लेकिन "दैवज्ञ मनोहर" में अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले, चित्रा, विशाखाऔर ज्येष्ठा नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों को ही विवाहांग कृत्यों के लिए शुभ लिखा है। स्पष्ट है कि "दैवज्ञ मनोहर" अश्विनी और चित्रा को विवाहांग कृत्यों के लिए वर्ज्य कहता है, जबकि कात्यायन मुनि के अनुसार ये विवाह नक्षत्र हैं और "मुहूर्त्त चिन्तामणि" के अनुसार विवाहांग कृत्यों में ये नक्षत्र भी ग्राह्य होने चाहिए। इस विरोध का परिहार कैसे होगा ? —पं. जयराम शर्मा, बांजण (सोलन) हि.प्र.

उत्तर (१)—यद्यपि परवर्ती मुहूर्त्त ग्रंथों में अश्विनी, चित्रा, श्रवण, घनिष्ठा नक्षत्रों को विवाह नक्षत्रों में समाविष्ट नहीं किया गया है, लेकिन पारस्कर गृह्यसूत्र में इनका विवाह नक्षत्रों में स्पष्ट निर्देश है। क्योंकि गृह्य सूत्रों को हम मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि मुहूर्त्त ग्रन्थों से कहीं अधिक प्रामाणिक मानते हैं क्योंकि ये वेद की कोटि में आते हैं। यही कारण है—किसी कारणवश मुहूर्त्त परम्परा से निकले इन चार नक्षत्रों को हमारे आदरणीय स्व. पिता श्री पंडित मुकुन्दवल्लभ जी मुहूर्त्त जगत में पुनः प्रकाश में लाए। ध्यान रहे कि भारत के अनेक प्रान्तों के अनेक पंचांग इन चार नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्तों का निर्देश करते हैं।

(२)—विवाहांग कृत्यों के नक्षत्रों के बारे में "मुहूर्त्त चिन्तामणि" आदि मुहूर्त्त ग्रन्थ और "दैवज्ञ मनोहर" में काफी विरोध है। यह विरोध कात्यायन सम्मत विवाह नक्षत्रों (अश्विनी, चित्रा, श्रवण, घनिष्ठा) से ही सम्बन्ध नहीं रखता, अपितु मुहूर्त्त चिन्तामणि से भी इसका विरोध है। मुहूर्त्त चिन्तामणि का कहना है कि विवाहांग कृत्यों के लिए विवाह सम्मत सभी नक्षत्र ग्राह्य हैं। इसके अनुसार कृ., पू.फा., पू.षा और पू.भा. नक्षत्र (जो विवाह नक्षत्र नहीं हैं) विवाहांग कृत्यों के लिए ग्राह्य नहीं है, जबकि 'दैवज्ञ मनोहर' के मत में ये कृत्तिका आदि चार नक्षत्र भी विवाहाङ्ग कृत्यों के लिए ग्राह्य बतलाए गए हैं। विवाह के लिए कात्यायन सम्मत दो नक्षत्रों (श्रवण, घनिष्ठा) को भी दैवज्ञ मनोहरकार विवाहांग कृत्यों में ग्राह्य मानते हैं। इससे स्पष्ट है कि विवाहांग कृत्यों के लिये ग्राह्य नक्षत्रों के बारे में 'दैवज्ञ मनोहरकार' का निर्णय कात्यायन सम्मत दो (अश्विनी, चित्रा) विवाह नक्षत्रों के विरुद्ध और दो (श्रवण, घनिष्ठा) के अनुकूल है। अपि च मुहूर्त्तचिन्तामणि से भी इसका निर्णय भिन्न है। इस विरोध का एकमात्र समाधान यही है कि दैवज्ञ को विवाहांग कृत्यों के लिये शुभाशुभ नक्षत्रों का निर्णय अपनी स्थानीय परम्परा के अनुसार दैवज्ञ मनोहर या मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार करना चाहिये—"**दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।**" ध्यान रहे कि अश्विनी, चित्रा, श्रवण, घनिष्ठा नक्षत्रों को कात्यायन मतानुसार विवाहार्थ शुभ मानने पर मुहूर्त्त चिन्तामणि आदि के अनुसार इन्हें विवाहांग कृत्यों के लिये भी शुभ मानना पड़ेगा। क्योंकि दलन, कण्डन आदि विवाह कृत्य भी विवाह के अंग (विवाह तुल्य ही हैं) हैं। अतः विवाहार्थ शुभ माने गये सभी नक्षत्रों में इनका विधान अधिक तर्क संगत है। दैवज्ञ मनोहर का एतद् विषयक निर्णय इतना 'तर्कस्पर्शी' नहीं है।

प्रश्न—"**शनि-राहु-कुजादित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः विवाहिता तदा कन्या सा कन्या विधवा भवेत्।**" और "**मन्दार राहु केत्वर्का यदा जन्मर्क्ष संस्थिताः। पाणिग्रहो कर्त्तव्यो यस्माद्वैधव्यदो ध्रुवम्॥**" ये वाक्य बतलाते हैं कि वर या कन्या के जन्म नक्षत्र पर जब शनि, राहु, केतु, मंगल या सूर्य स्थित हों तो विवाह नहीं करना चाहिये। क्या यह वाक्य प्रामाणिक है ? —श्याम दैवज्ञ, सोलन (हि. प्र.)

उत्तर—ऊपर दिये प्रमाण वाक्य किस ग्रन्थ के हैं, उनके प्रणेता कौन हैं—यह ज्ञात नहीं है। अपि च यह मत "मुहूर्त्त चिन्तामणि" "वसिष्ठ संहिता" आदि प्रामाणिक ग्रन्थों द्वारा स्वीकृत नहीं है। अतः इसे मुहूर्त्त निर्णय में स्वीकार नहीं किया जाता। इन वाक्यों को मान्यता देने पर शनि जैसे मंद गति, क्रूर ग्रह द्वारा जन्म नक्षत्र आक्रान्त होने की स्थिति में लगभग तेरह मास तक लड़के या लड़की का विवाह नहीं हो सकता। अनेक बार तो वर और कन्या दोनों के जन्म नक्षत्रों में शनि, राहु, केतु जैसे मंद गति क्रूर ग्रहों की क्रमागत निरन्तर स्थिति की कालावधि कई वर्षों की भी हो सकती है, जिससे उन कई वर्षों में उस वर और कन्या का विवाह सम्भव नहीं होगा। सभी ज्योतिषी जानते हैं कि विवाह तिथि के निर्णय के लिये गोचरानुसार केवल सूर्य, चन्द्र और गुरु की स्थिति का ही विचार करने की परम्परा मुहूर्त्त शास्त्रों द्वारा प्रतिष्ठित है। शनि आदि क्रूर ग्रहों की जन्म नक्षत्र पर स्थिति की उन्होंने चर्चा नहीं की है और भी बात है कि यदि उपरोक्त वाक्यों को कोई इस तर्क पर प्रमाण मानता है कि जन्म नक्षत्र पर क्रूर ग्रह की स्थिति मङ्गल कृत्य के लिये अशुभ हैं तो जन्म राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति का काल भी मङ्गल कृत्यों के लिये वर्जित करना होगा। लेकिन ऐसा करने पर बहुधा वर और कन्या की राशियों पर क्रूर ग्रहों की स्थिति लगातार ३-४ या इससे भी अधिक वर्षों तक होने से विवाह न हो सकने की स्थिति बनने की पूरी सम्भावना है। क्या दैवज्ञ एवं जन सामान्य को यह स्वीकार होगा ?

प्रश्न—मङ्गल आदि क्रूर ग्रह अपनी उच्च आदि राशि में स्थित हों तो कुज दोष कारक नहीं होते—यह आपने पिछले वर्ष के श्री मार्त्तण्ड पंचाग में लिखा है। लेकिन अपनी उच्च आदि राशि में स्थित क्रूर ग्रह बलवान् हो जाने से अधिक कुज दोष कारक होना चाहिए, आपने इस सिद्धान्त के विपरीत लिखा है, ऐसा क्यों ?

—श्री महावीर ढण्ड ज्योतिषाचार्य, लक्ष्मणगढ़ (राज.)

उत्तर—किसी भी ग्रह का निर्बल होना उसे क्रूरतुल्य बना देता है, भले ही वह शुभ ग्रह क्यों न हो। अपनी उच्च आदि राशि में स्थिति ग्रहों को बली और नीच आदि में स्थिति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निर्बल बनाती है-। यह बात जातक ग्रन्थों में सर्वत्र उपलब्ध है, ग्रह की सबलता का अभिप्राय शुभफलप्रदत्त्व और निर्बलता का अशुभफलप्रदत्त्व है। जातक ग्रन्थों में देखिए—अपने उच्च आदि में स्थित मंगल आदि क्रूरग्रहों का फल भी शुभ ही लिखा है। अगर स्वोच्चादि स्थित क्रूरग्रह और भी अधिक अशुभफल देने वाले होते तो बृहज्जातक आदि में उनसे (स्वोच्च स्थित क्रूरग्रहों से) राजयोग आदि शुभफलों का निर्देश न होता। हां, कुछेक वाक्य ऐसे भी अवश्य मिलते हैं जिनमें इस सिद्धान्त का विरोध दिखाई देता है। परन्तु ऐसे वाक्य बहुत विरल हैं। इस विषय का विस्तृत विवेचन मैंने अपनी **"ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन"** पुस्तक में किया है।

प्रश्न—यदि जुड़वां दो बच्चों का जन्मकाल लग्नादि लगभग बराबर हों तो उनके भविष्य का निर्णय दैवज्ञ किस प्रकार करें?

—श्री योगीराज़ शर्मा, बस्ती मेहरां, फिरोजपुर (पं.)

उत्तर—जातकीय सिद्धान्तों के सामान्य नियमों के अनुसार तो इन दोनों का भविष्य परस्पर सदृश ही होना चाहिए, लेकिन जातक ग्रन्थकार यह भी बतलाते हैं कि जातक पर ग्रह स्थितियों का प्रभाव उसके वातावरण, परिवेश आदि से पर्याप्त परिवर्तित एवं परिवर्धित होता रहता है। अतः दैवज्ञ को उन दोनों जातकों के विभिन्न परिवेष, संगति आदि को ध्यान में रखकर उनके विषय में भविष्यवाणी करनी चाहिए। ध्यान रहे कि फलित सिद्धान्त के अनुसार यह स्पष्ट है,कि-अनुकूल या प्रतिकूल ग्रह स्थितियां जातक की प्रगति में सहायक और बाधक होती हैं लेकिन उनकी अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों जातक की तात्कालिक स्थिति (साधन सम्पत्ति आदि) से पर्याप्त न्यूनाधिक भी होती रहती है। अतः जातक के आसन्न भविष्य का फलादेश सुदूर भविष्य से सम्बद्ध फलादेश की अपेक्षा अधिक स्पष्टता और प्रतिज्ञापूर्वक दैवज्ञ कर सकता है, क्योंकि जातक की तात्कालिक परिस्थितियों, जो ग्रह योगों के प्रभाव का एक महत्त्वपूर्ण गुणक है, के प्रभाव को भी दैवज्ञ उस समय अपने मस्तिष्क में रखने की स्थिति में होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि दो जुड़वां बच्चे यदि विभिन्न परिवेष आदि में रहेंगे तो उनके जीवन में घटने वाली समान घटनाओं का चक्र सर्वथा समरूप नहीं होगा।

वैसे जुड़वां बच्चों के असमान भविष्य या जीवन के बारे में फलित ज्योतिष क्षेत्र में विशेष अनुसन्धान अपेक्षित है।

प्रश्न—बहुत बार हमने देखा है कि आपके पंचांग और पंजाब के एक दूसरे पंचांग में क्रान्तिसाम्य दोष के काल और तिथि पर भारी मतभेद रहता है, जिससे विवाहादि मुहूर्त्तों में वैमत्य उत्पन्न हो जाता है। ऐसा क्यों?—पं. अमर चन्द शर्मा, खरोग (कालका)

उत्तर—क्रान्तिसाम्य का सामान्य अर्थ है कि सूर्य-चन्द्र की क्रान्तियों में समानता। इस समानता को विवाहादि शुभ कृत्यों में शुभ नहीं माना जाता। सूर्य और चन्द्रमा की राशियों के आधार पर किया गया क्रान्तिसाम्य दोष का निर्णय नितांत स्थूल होता है। मुहूर्त्त चिन्तामणि के **"पञ्चास्याजौ गोमृगौ तौलिकुम्भौ.........."** आदि वाक्य द्वारा इसी प्रकार का स्थूल क्रान्तिसाम्य बतलाया गया है। सूर्य और चन्द्रमा की राशियों द्वारा निर्णीत क्रांतिसाम्य का दिन यथार्थ न होकर सम्भावित होता है, और उसका स्थिति काल भी सर्वथा त्रुटिपूर्ण होता है। सूर्य-चन्द्र की राशियों से निर्धारित क्रांतिसाम्य की स्थिति सर्वदा लगभग ५५ घण्टा तक मानी जाती है, जबकि गणित द्वारा प्रमाणित है कि इसकी स्थिति का परमाधिक काल ४७ घन्टा से अधिक नहीं हो सकता, यह परमाधिक काल भी सूर्य की परमक्रांति वाले कुछ ही दिनों में (२२ दिसं. और २१ जून के आसपास) ही सम्भव है, और यह भी तभी सम्भव है जबकि उन दिनों चन्द्रमा की परम क्रांति २४ अंश के लगभग हो। अन्य अधिकतर दिनों में तो क्रांतिसाम्य का काल लगभग ३ घण्टा तक भी हो जाता है। यथार्थ क्रांतिसाम्य काल का ज्ञान तो एक श्रमसाध्य लंबी गणित प्रक्रिया, जिसका नाम "महापात गणित" है, से ही सम्भव है। सूर्यसिद्धांत, सिद्धांत शिरोमणि आदि लगभग सभी सिद्धांत और करण ग्रन्थों में 'महापात' नाम का एक अलग अध्याय है जिसमें क्रांतिसाम्य दोष के प्रारम्भ और समाप्ति के निर्णय की लम्बी प्रक्रिया निर्दिष्ट है। महापात गणित से ज्ञात क्रांतिसाम्य के काल को ही विवाहादि शुभ कृत्यों में वर्जित करने का 'वशिष्ठ संहिता' आदि में निर्देश है—

शास्त्रात्समानीत-महातिपातः। सर्वंधृतो हन्ति वरं वधूं च ॥ (वसिष्ठ संहिता)

इस वाक्य की व्याख्या करते हुए मुहूर्त्त चिन्तामणि की पीयूषधारा टीका में स्पष्ट लिखा है कि महापात गणित से प्राप्त क्रांतिसाम्म काल ही दोषकारक है, अन्यकाल नहीं—

"शास्त्रात् गणितशास्त्रोक्तान्महापाताधिकारादित्यर्थः। तत्र हि योगादेव महापातस्यानीतत्वात् तस्यैव दोषत्वं नान्यस्येत्यर्थादुक्तं भवति।"

इस शास्त्रीय निर्देशानुसार हम अपने पंचांग में विवाहादि शुभ कृत्यों का काल निर्णय करते हुए महापात गणित से उपलब्ध क्रांतिसाम्य के काल को ही वर्जित करते हैं, सूर्य-चन्द्र को राशियों से उपलब्ध को नहीं। अन्य कुछ पंचांगकार तो महापात गणित के परिश्रम से घबराकर सूर्य-चन्द्र की राशियों के आधार पर ही क्रांतिसाम्य दोष का निर्णय कर लेते हैं। यही कारण है कि हमारे पंचांग और अन्य कुछ दूसरे पंचांगों द्वारा निर्णीत क्रांतिसाम्य दोष के काल में अनेकदा ऐकमत्य नहीं होता।

प्रश्न—विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलने का निर्देश किस शास्त्र में है?

उत्तर—यदि लड़का और लड़की दोनों अथवा इनमें से किसी एक की जन्मतिथि व जन्मकाल ज्ञात न हो तो उन दोनों के अष्टकूट गुणों की गणना केवल नाम नक्षत्र, नाम राशि से ही करनी चाहिए, ऐसा शास्त्राज्ञा है। यदि उनके **नामनक्षत्र :नामराशि** से अष्टकूट गुण पर्याप्त न मिलें, गण, नाड़ी आदि अपरिहार्य दोष हों तो विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलकर उसका उस अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम रख लेना चाहिए जिसके नक्षत्र राशि से वर की नाम राशि, नाम नक्षत्र का मिलान करने पर अष्टकूट गुण पर्याप्त मिल जाएं और गण, नाड़ी आदि दोष न रहें—यह परम्परा प्रचलित है। वैसे इस प्रकार के नाम परिवर्तन का साक्षात् निर्देश प्रचलित मुहूर्त्त ग्रन्थों में नहीं है, पुनरपि इस नाम परिवर्तन का मूल स्वर शास्त्र का वह सिद्धांत है,जिसके अनुसार अनेक नाम वाले जातक के नामों में सबसे बाद रखा गया नाम ही ग्राह्य माना गया है—

बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथंचन।
तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥ (स्वरशास्त्र)

'मुहूर्त्त मार्त्तण्ड' कार ने भी स्पष्ट लिखा है कि जिसके बहुत से नाम हों उसके अन्तिम नाम से ही उसके नक्षत्र और राशि का ज्ञान करना चाहिये—

"यदभिधा बह्वयोऽस्य नामान्तिमम्।"

इस सिद्धान्त का आश्रय लेकर ही विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलकर अष्टकूट के गुणों को अनुकूल बना लिया जाता है। वैसे इस परम्परा का प्रयोग संकट स्थिति में ही करना चाहिए।

प्रश्न—विकलान्त किंवा कलान्त अक्षांश-रेखांश जानने की प्रक्रिया क्या है?

—पं. महावीर प्रसाद शास्त्री, सादूलपुर (राज.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर—अक्षांश का ज्ञान सूर्य सिद्धान्त आदि में बतलाई गई प्रक्रिया (पलभा) द्वारा किया जा सकता है। रेखांश भी वेध द्वारा सूर्य केन्द्र के स्थानीय याम्योत्तर लंघन काल को जानने के बाद तात्कालिक वेलान्तर और स्टैण्डर्ड टाईम द्वारा जाना जा सकता है। अक्षांश और रेखांश के ज्ञान के लिए हमने कुछ वर्ष पूर्व श्री मार्त्तण्ड पंचांग में 'ज्योतिष यंत्र' शीर्षक लेखमाला के अन्तर्गत सरल यन्त्रों के निर्माण और प्रयोग की विधि भी सविवरण दी थी।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि अक्षांश-रेखांशों को विकला तक तो छोड़िए, कला तक की सूक्ष्मता से भी जानने के लिए सूर्यसिद्धांत आदि हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित प्रक्रिया सक्षम नहीं है, इतनी सूक्ष्मता के लिए तो अत्यन्त आधुनिक बहुमूल्य वेधयन्त्र ही सक्षम हैं। ये यन्त्र वेधशालाओं में ही सुलभ हैं। हां, प्रामाणिक एटलसों द्वारा इनका ज्ञान काफी सूक्ष्मता से किया जा सकता है।

प्रश्न—अत्यावश्यकता में नाड़ी दोष के निवारण के लिए महामृत्युञ्जय जप के साथ ३१ रत्ती सुवर्ण के दान का विधान आपके पञ्चाङ्ग में लिखा है। सुवर्ण की मात्रा ३१ रत्ती हो—इसमें शास्त्रीय प्रमाण क्या है?

—श्री सुरेन्द्र दत्त उनियाल, मखलोगी (टिहरी गढ़वाल)

उत्तर—नाड़ी आदि दोषों के निवारण के लिए ३१ रत्ती सुवर्ण की मात्रा के दान के बारे में यद्यपि मुहूर्त चिन्तामणि आदि में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है। पुनरपि ज्येष्ठा, मूल आदि नक्षत्रों में जन्म तथा अन्य अनेक दोषों के निवारण के लिए दान में दिए जाने वाले सुवर्ण की तीन मात्राएं दान देने वाले व्यक्ति के सामर्थ्य के अनुसार धर्मशास्त्रों में बतलाई गई है—(१) निष्क (=१६ माशा), (२) निष्कार्ध (=८ माशा), (३) निष्क चतुर्थांश (=४ माशा), ज्येष्ठा शान्तिविधान में लिखा है—

कर्षमात्र सुवर्णेन कर्षार्धेनाथ पादतः। तद्विधानं प्रकुर्वीत वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥

एक यह स्मृति वाक्य भी है—

गवामभावे निष्कः स्यात्तदर्धं पादमेव वा।

कर्ष और निष्क दोनों शब्द समानार्थक हैं। इस प्रकार स्पष्ट है—दोष निवारण के लिए ४ माशा सुवर्ण कम से कम अवश्य दान करना चाहिए। समान न्याय से यही मात्रा वर्ण, नाड़ी आदि दोषों की निवृत्ति के लिए भी मान ली गई है।

यद्यपि एक माशा(माष) में रत्तियों(गुंजाओं) का मान कहीं १०, कहीं ८ और कहीं ५ लिखा है। तथापि व्यवहार में अधिकतर ८ रत्ती का ही एक माशा माना जाता है। इसके अनुसार दान के लिए निर्धारित कम से कम सुवर्ण ४ माशा अर्थात् ३२ रत्ती होना चाहिए। पञ्चाङ्ग में यह मात्रा ३१ रत्ती लिखी है, क्योंकि माशा में रत्तियों की संख्या में मतभेद है, अतः ३१ और ३२ रत्तियों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। वैसे दानार्थ ३२ रत्ती की मात्रा लेना अधिक संगत है।

प्रश्न—हमारे प्राचीन भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में प्रतिपादित अयन दोलन के सिद्धान्त को आधुनिक नक्षत्र भौतिकी के सिद्धान्तों से खण्डित नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह दिव्यदर्शी ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रतिपादित यथार्थ सिद्धान्त है। विज्ञान की धारणाएं स्थाई नहीं हैं, जोकि वैज्ञानिकों द्वारा ज्ञात किए जा रहे नये-नये सिद्धान्तों से कालान्तर में बड़ी द्रुतगति से स्वयं आगे-आगे खण्डित होती जा रही हैं। इस बारे में आपका क्या मत है?

—श्री विश्वनाथ मेहता, शिमला (हि. प्र.)

उत्तर—मैं आपके इस तर्क से सहमत नहीं हूं। मानव की बुद्धि उत्तरोत्तर निरन्तर विकासशील है। ज्ञान-विज्ञान की उत्पद्यमान और वर्धमान नवीन शाखा-प्रशाखाओं के परस्पर मिश्रण से नित्य नई धारणाएं, सिद्धान्त उत्पन्न होकर विलीन हो रहे हैं, इसमें संदेह नहीं है। लेकिन वर्तमान सिद्धान्तों के इस भावी विलय की पूर्व कल्पना से हम वर्तमान किसी भी तत्कालिक सिद्धान्त को अग्राह्य नहीं ठहरा सकते। ऐसा करने से हम अपने ज्ञान का आधार ही खो देंगे, क्योंकि वर्तमान कोई भी सिद्धान्त, भले ही भविष्य में उसके निरास की सम्भावना क्यों न हो, हमारे भावी सिद्धान्त की आधार शिला है। यही कारण है कि सभी अन्वेषक, विचारक अपने क्षेत्र के वर्तमान सिद्धान्तों को तब तक तिरस्कृत नहीं करते जब तक उसके प्रतिकूल कोई ठोस तर्क या प्रमाण उन्हें प्राप्त नहीं हो जाता। मैं आपके इस मन्तव्य का प्रतिवाद नहीं करता कि प्रत्येक सिद्धान्त शाश्वत नहीं होता। लेकिन इस मन्तव्य के प्रभाव में प्रत्येक वर्तमान सिद्धान्त को सन्देह की दृष्टि से देखते हुए उसे अनन्तिम समझ कर आजीवन अनिश्चय के अन्धकार में जीना भी तो बुद्धिमत्ता का लक्षण नहीं है। ज्ञान की परिपूर्णता एक आदर्श स्थिति है। जिसे मानव शायद कभी प्राप्त नहीं कर सकता। इसकी प्राप्ति के लिए मानवता का यह अनादि प्रयास अनन्त भी है। यही कारण है-हम उसके ज्ञान में अज्ञात काल से आज तक उत्तरोत्तर परिवर्धन—परिवर्तन, जिसे विकास कहते हैं, देख रहे हैं। सभी ज्ञान शाखाओं का विश्वव्यापी विस्तृत साहित्य भी यह स्पष्ट करता है कि हमारे साम्मान्य ऋषि-मुनि-आचार्यों ने अपने पूर्वजों के अर्जित ज्ञान को आधार बनाकर आगे-आगे बहुत कुछ नया प्राप्त किया है, जिसके फलस्वरूप हमें किसी भी ज्ञान शाखा में मत-मतान्तरों की अच्छी लम्बी परम्परा देखने को मिलती है। ऐसी वैतमय परम्परा की स्थिति में सबसे परवर्त्ती विचारक द्वारा स्थापित प्रमाणसिद्ध सिद्धान्त को ही मान्यता देने का निर्देश हमारे ऋषियों-मुनियों ने स्वयं किया है—**"उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्"**।

यहां एक बात समझ में नहीं आती—जहां एक ओर आप आधुनिक विचारकों की धारणाओं को तात्कालिक कहकर अविश्वसनीय कहते हैं, वहां दूसरी ओर भारतीय ऋषि-मुनियों की धारणाओं को शाश्वत मानते हैं। क्या यह 'वदतो व्याघात' नहीं है?

अब लीजिए अयन-दोलन सिद्धान्त की स्वीकार्यता की बात। आधुनिक नव्यतम नाक्षत्र भौतिकी के सिद्धान्तों द्वारा बहुशः इस अयन दोलन सिद्धान्त की अवैज्ञानिकता प्रमाणित हो चुकी है। सूर्य सिद्धान्त में निर्दिष्ट **"त्रिंशत्कृत्यो युगे भानाम्..."** सूत्र से प्राप्त वार्षिक अयन-गति भी स्थाई रूप से एक रूप ही (५४ विकला प्रति वर्ष) प्राप्त होती है, जबकि अयन-दोलन की स्थिति में (Simple Harmonic Motion) में चलते किसी भी पदार्थ या बिन्दु की गति (Mean Position) पर परम और उसके दोनों ओर (Extrem Points) पर शून्य होती है। सूर्य सिद्धान्त के इस सूत्र के अनुसार परम (२७ अंश) अयनांश वाले बिन्दुओं पर (जहां सम्पात की दिशा के परिवर्तन की बात सोची जा रही है) भी ५४ विकला ही अयनगति प्राप्त हो रही है। आजकल लगभग २३¾ अयनांश हैं। S.H.M. के अनुसार इन दिनों सम्पात बिन्दु की वार्षिक गति १८ विकला होनी चाहिए। जबकि सूर्य सिद्धान्त के इस सूत्र के अनुसार अब भी यह ५४ विकला ही है। इस प्रकार सूर्य सिद्धान्त का अयन गति साधक यह सूत्र स्वयं स्पष्ट कर रहा है कि वसन्त सम्पात S.H.M. से नहीं चलता। इस तरह अयन दोलन का सिद्धान्त स्वयं सूर्य सिद्धान्त द्वारा ही निरस्त हो जाता है। सूर्य सिद्धान्त का अयनांश साधक यह पद्य प्रक्षिप्त है, इसकी पुष्टि में अनेक आभ्यन्तर प्रमाण हैं। यह प्रक्षेप आचार्य ब्रह्मगुप्त (७ वीं शताब्दी) के बाद हुआ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपिच अनेक मुञ्जाल आदि प्राचीन भारतीय ज्योतिषी भी **सूर्यसिद्धान्त** प्रतिपादित अयन दोलन के सिद्धान्त से सहमत नहीं हैं। वे वसन्त सम्पात का पूर्ण (३६० अंशों में) भ्रमण मानते हैं। ग्रह लाघवादि करण ग्रन्थ भी अयन दोलन से सहमत नहीं हैं।

Prof. H.L. Mehata का अयन दोलन समर्थक लेख पढ़ा, यह लेख भ्रामक है।

प्रश्न—(१) स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न साधन की प्रक्रिया की अपेक्षा साम्पातिक काल से लग्न साधन कहीं सरल है। यह आप अपने पञ्चाङ्ग में लिखते हैं, यह स्पष्ट करें।

(२)—साम्पातिक काल क्या है? १ जनवरी का साम्पातिक काल प्रतिवर्ष समान नहीं रहता। वह किसी वर्ष लगभग १ मिनट घटता है, और किसी वर्ष लगभग ३ मिनट बढ़ता है—ऐसा क्यों? —श्री केसरी लाल जी ज्योतिषाचार्य, ५ अंकपात, उज्जैन

उत्तर—(१) स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न-साधन के लिए सूर्य का तात्कालिक योगांश (राशि अंश आदि) और उस दिन का स्थानीय सूर्योदय काल अपेक्षित होता है। जबकि साम्पातिक काल से लग्न-साधन के लिए इन दोनों की अपेक्षा नहीं होती। साम्पातिक काल द्वारा ही वहां काम बन जाता है। किसी भी समय का साम्पातिक काल तीन-चार साम्पातिक काल सारणियों द्वारा बड़ी आसानी से जाना जा सकता है। दूसरी बात यह भी है-स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न सारणी से लग्न के राश्यादि प्राप्त करने के लिए दो बार त्रैराशिक करना पड़ता है, जबकि साम्पातिक काल से लग्न साधन की प्रक्रिया में केवल एक बार ही त्रैराशिक करने पर लग्न के राश्यादि प्राप्त हो जाते हैं।

(२)—आकाशीय विषुवद्वृत्त और क्रांतिवृत्त के उस सम्पात को, जहां से सूर्य उत्तर गोल में प्रविष्ट होता है, वसन्त सम्पात कहते हैं। यह वसन्त सम्पात ही सायन मेषारम्भ बिन्दु कहलाता है। भू-भ्रमण के कारण यह वसन्त सम्पात मध्यम सौर काल के अनुसार २३ घं. ५६ मि. ४.०९१ से. में हमारी पृथ्वी का पूरा एक चक्कर काटता है। (ध्यान रहे हमारे दैनिक प्रयोग में आने वाली घड़ियों द्वारा बतलाए गए घण्टा-मिनट ही मध्यम सौर काल के घण्टा-मिनट होते हैं)। भू-भ्रमण के कारण उत्पन्न वसन्त सम्पात के इस एक पूर्ण भ्रमण को साम्पातिक दिन (Sidereal day) कहा जाता है, जिसमें सांपातिक काल के अपने २४ घण्टे माने जाते हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि साम्पातिक काल का घण्टा मध्यम सौर काल के घण्टे से लगभग १० सैकिण्ड छोटा होता है। हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि एक मध्यम सौर दिन (मध्यम सौर काल के २४ घण्टों) में (अथवा यूं कहिए कि एक तारीख में) साम्पातिक काल के २४ घं. ३ मि. ५६.५५५ सै. होते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे (मध्यम सौर काल के) प्रत्येक २४ घण्टों में साम्पातिक काल ३ मि. ५६.५५५ सै. (अर्थात् ३.९४२६ मि.) आगे बढ़ जाता है। उदाहरणार्थ—आज की तारीख के प्रारम्भ में (रात के १२ बजे) साम्पातिक काल के जो घण्टा-मिनट होंगे, आने वाले कल को रात के १२ बजे (यानी आगामी तारीख के प्रारम्भ में) उनमें ३ मि. ५७ सै. की वृद्धि हो जाएगी। इसी प्रकार प्रतिदिन (२४ घण्टों में) वह साम्पातिक काल लगभग ३ मि. ५७ सै. उत्तरोत्तर बढ़ता जाएगा।

किस समय साम्पातिक काल कितना है—यह जानने का प्रकार यह है—

जब हमारे नगर के याम्योत्तर वृत्त पर वसन्त सम्पात होता है तब हमारे नगर में साम्पातिक काल ० घं. ० मि. ० सै. होता है। यानी उस समय साम्पातिक काल घड़ी (Sid[illegible] Clock), जो वेधशालाओं में ही होती है, ० घं. ० मि. ० सै. काल बतला रही होगी। इसके बाद वह घड़ी साम्पातिक दिन को २४ घण्टों में विभाजित करेगी। किस समय साम्पातिक काल कितना है यह इस घड़ी से कभी भी ज्ञात किया जा सकता है, क्योंकि यह साम्पातिक काल घड़ी सर्व उपलब्ध नहीं है। अतः किसी नगर में वर्ष के किसी भी दिन किसी समय साम्पातिक काल यदि हमें ज्ञात हो जाए तो हम उसमें साम्पातिक काल की दैनिक और घण्टा मिनटात्मक गति के अनुसार चालन देकर अन्य दिनों में भी किसी भी समय का साम्पातिक काल जान सकते हैं। २२ मार्च के दिन किसी भी नगर में स्पष्ट मध्याह्न के समय वसन्त सम्पात उस नगर के लगभग याम्योत्तर वृत पर होता है (अर्थात् उस समय वहां लगभग ० घं. ० मि. ० सै. साम्पातिक काल होता है)। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि साम्पातिक काल हमारी घड़ी द्वारा बतलाए गए (मध्यम सौर काल के) प्रत्येक २४ घण्टों में लगभग ३ मि. ५७ सै. बढ़ जाता है। साम्पातिक काल की इस गति (२४ घण्टों में होने वाली वृद्धि) के अनुसार हम चालन द्वारा वर्ष की किसी भी तारीख को अपने अभीष्ट काल में साम्पातिक काल सरलता से जान सकते हैं। इस पंचांग में जो "साम्पातिक काल कोष्ठक नं. (१) दिया गया है उसमें १९३६ ई. से १९९१ ई. सन् तक के ५६ वर्षों में १ जनवरी को चण्डीगढ़ के स्थानीय मध्यमकाल ० घं. ० मि. ० सै. पर जो साम्पातिक काल होगा वह दिया गया है। इसके अनुसार इसी पंचांग में दिए गए साम्पातिक काल कोष्ठक नं. (२), (३) और (४) की सहायता से इन ५६ वर्षों की किसी भी ता. को किसी भी समय साम्पातिक काल अन्य भारतीय नगरों में भी आसानी से जाना जा सकता है।

अब आप समझ सकते हैं कि श्री मार्तण्ड पंचांग में दिए गए "साम्पातिक काल कोष्ठक (१)" में १९३६ ई. से १९९१ ई. तक के वर्षारम्भ (१ जनवरी) का जो साम्पातिक काल दिया गया है वह एक वर्ष में कभी १ मि. कम और कभी लगभग ३ मि. ज्यादा क्यों हो जाता है? देखिए—इस कोष्ठक में १ जनवरी को चण्डीगढ़ के स्थानीय मध्यम काल ० घं. ० मि. ० सै. पर साम्पातिक काल के घण्टा-मि.-सै. दिए गए हैं। क्योंकि एक दिन में, जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं कि साम्पातिक काल ३.९४२६ मिनट बढ़ता है। अतः सामान्य (३६५ दिनों वाले) वर्ष में वह ३६५×३.९४२६ मिनट अर्थात् २३ घं. ५९ मि. ३ सै. और लीप (३६६ दिनों वाले) वर्ष में ३६६×३.९४२६ मिनट, अर्थात् २४ घं. २ मि. ५९ सै. बढ़ता है। "साम्पातिक काल कोष्ठक नं. (१)" देखिए—इसमें सामान्य वर्ष में साम्पातिक काल २३ घं. ५९ मि. ३ सै. और लीप वर्ष में २४ घं. २ मि. ५९ सै. ही बढा है।

धार्मिक		ज्योतिष	
वाल्मीकि रामायण रफ़	२५)००	भृगु संहिता	५१)००
,, ,, ग्लेज	३०)००	हस्त रेखा ज्ञान	१८)००
तुलसी रामायण	४०)००	ज्योतिष सर्व संग्रह	६)००
योग वशिष्ट पहला भाग	२५)००	सरल ज्योतिष	१२)००
,, ,, दूसरा ,,	२५)००	केरल ज्योतिष शास्त्र	१२)००
,, ,, सम्पूर्ण	५०)००	स्वर ,, ,,	१२)००
शिव पुराण	३५)००	प्रत्यक्ष त्रिकालज्ञ ज्योतिष	६)००
महाभारत	३०)००	शीघ्र बोध	४)५०
,, बतर्ज राधे श्याम	२५)५०	हनुमान ज्योतिष	४)५०
सुख सागर	४०)००	भृगु भूरू प्रश्नदीपिका	१२)००

धर्मसन (प्रकाशन) नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांशादि, सूर्योदयास्त और लग्न सारणियां

[प्रियव्रत शर्मा]

पिछले दो वर्षों से हम भारत के विभिन्न प्रदेशों के नगरों, उप-नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर, सूर्योदयास्त, लग्न सारणियां आदि वह सारी सामग्री इन स्तम्भों में देते आ रहे हैं जिसकी ज्योतिषियों को जन्म-पत्री आदि के निर्माण के लिए आवश्यकता पड़ती है। पिछले दो वर्षों में हम राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब के सैकड़ों नगरों, उप नगरों के अक्षांश आदि दे चुके हैं। इस वर्ष हम हिमाचल प्रदेश के साथ जम्मू-काश्मीर के भी अक्षांश आदि देना चाहते थे। लेकिन पंचांग की पृष्ठ संख्या बढ़ जाने के कारण इस वर्ष हम केवल हिमाचल प्रदेश के ही अक्षांश आदि दे रहे हैं। जम्मू-काश्मीर के लिए यह सामग्री अगले वर्ष इन्हीं पृष्ठों पर पाठकों को उपलब्ध होगी।

हमारी यह प्रतिज्ञा है—राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. आदि प्रान्तों के जितने छोटे-बड़े नगरों, उप-नगरों के अक्षांश-रेखांश हम इन पृष्ठों पर दे रहे हैं, उतने तो विश्व के मूर्धन्य एटलसों में भी आपको नहीं मिलेंगे। अगर आप ब्रिटानिका आदि विशाल एटलसों को देखेंगे तो आपको उनमें भी इन नगर, उप-नगरों में से अधिकतम तृतीयांश नगर, उप-नगरों के अक्षांश, रेखांश मिलेंगे। इन शेष नगर, उप-नगरों के अक्षांश-रेखांश हमने (Survey of India) के मानचित्रों (Oxford और Britannica) आदि प्रामाणिक एटलसों से भारी परिश्रम द्वारा (Reading) लेकर प्राप्त किये गये हैं। भिन्न-भिन्न प्रामाणिक इन एटलसों से प्राप्त अक्षांश-रेखांशों में भी २-४ कलाओं का अन्तर अक्सर देखने को मिलता है। यहां हमने उन्हीं परिणामों को स्वीकार किया है जो अधिकतर एटलसों द्वारा सम्मत परिणामों के आसन्नतम हैं। वैसे अक्षांश-रेखांशों में २-४ कलाओं के अन्तर से जन्मपत्र आदि की गणित में उत्पन्न स्थूलता से फलादेश में कोई अन्तर नहीं पड़ता। इस बारे में सं. २०४४ वि. के "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" में प्रकाशित मेरा लेख **"जन्मपत्र आदि की गणित में कितनी सूक्ष्मता युक्तियुक्त है"** पढ़ना चाहिए।

जैसा कि हम पहले भी लिख चुके हैं—ये अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ **"गणक मार्त्तण्ड"** से लिये जा रहे हैं, जिसमें भारत एवं विश्व के अन्य सभी देशों के हजारों नगरों के अक्षांश, रेखांश संकलित हैं।

हिमाचल प्रदेश के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अम्ब	३१।४२	७६। ७	२५।३२	किन्नेर	३२।२७	७७।५९	१८। ४	खोकसर	३२।२६	७७।१२	२१।१२	जांगला	३१।२१	७६।४२	२३।१२
अम्बोटा	३१।३९	७६। ४	२५।४४	कियारी घाट	३१। ०	७७। ५	२१।४०	गगरेट	३१।४०	७६। ४	२५।४४	जुब्बल	३१। ७	७७।३९	१९।२४
अर्की	३१। ९	७६।५८	२२। ८	किलार	३३। ८	७६।२४	२४।२४	गुम्मा	३१। ६	७७।२८	२०। ८	जोगिन्दर नगर	३१।५९	७६।४६	२२।५६
आनी	३१।२७	७७।२५	२०।२०	कुफरी	३१। ६	७७।१२	२१।१२	गोहर	३१।३४	७७। २	२१।५२	ज्वालामुखी	३१।५३	७६।१९	२४।४४
आराकोट	३१। ४	७७।५०	१८।४०	कुम्हार हट्टी	३०।५३	७७। ३	२१।४८	धुमारवीं	३१।२६	७६।४३	२३। ८	टीरासुजानपुर	३१।५१	७६।३२	२३।५२
इन्दोरा	३२। ७	७५।४०	२७।२०	कुल्लू	३१।५८	७७। ६	२१।३६	चचयोट	३१।३२	७७। १	२१।५६	ठयोग	३१। ७	७७।२१	२०।३६
ऊना	३१।२९	७६।१७	२४।५२	केलांग	३२।३७	७७। ५	२१।४०	चम्बा	३२।३४	७६। ८	२५।२८	डगशई	३०।५३	७७। ३	२१।४८
औट	३१।४७	७७।११	२१।१६	कोटखाई	३१। ८	७७।३६	१९।३६	चम्बी	३२। ९	७६।१५	२५।००	डंखरगोम्पा	३२। ६	७८।१२	१७।१२
कटराई	३२। ७	७७। ७	२१।३२	कोटगढ़	३१।१९	७७।२९	२०। ४	चांगो	३१।५९	७८।३७	१५।३२	डमटाल	३२।१२	७५।४०	२७।२०
कण्डाघाट	३०।५८	७७। ७	२१।३२	कोटला	३२।१३	७६। ४	२५।४४	चामुण्डा जी	३२। ७	७६।३२	२३।५२	डलहौजी	३२।३२	७५।५९	२६। ४
करछम	३१।३१	७८। ५	१७।४०	कौरिक	३२। ६	७८।३७	१५।३२	चायल	३०।५९	७७।१२	२१।१२	डाढ़	३२। ७	७६।३१	२३।५६
करसोग	३१।२३	७७।१३	२१। ८	क्वारसी	३२।१८	७६।३१	२३।५६	चिन्तपूरणी	३१।४९	७६। ७	२५।३२	डेरागोपीपुर	३१।५४	७६।१३	२५। ८
कसौली	३०।५५	७६।५७	२२।१२	खजियार	३२।३२	७६। ४	२५।४४	चीड़गांव	३१।१५	७७।५३	१८।२८	ढलियारा	३१।५१	७६।१२	२५।१२
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	२४।४८	खड़ा पत्थर	३१। ६	७७।३४	१९।४४	चुआरी खास	३२।२४	७६। २	२५।५२	तारादेवी	३१। ३	७७। ८	२१।२८
काजा	३२।१६	७८। ४	१७।४४	खणाग	३१।३१	७७।२३	२०।२८	चौपाल	३०।५७	७७।३६	१९।३६	तीन्दी	३२।४५	७६।२७	२४।१२
काला अम्ब	३०।३०	७७।१३	२१। ८	खदराला	३१।१६	७७।३७	१९।३२	जतोघ	३१। ६	७७। ७	२१।३२	तीसी	३२।४९	७६। ८	२५।२८
काल्पा	३१।३२	७८।१५	१७। ०	खुण्डनेवाल	३०।५६	७७।४२	१९।१२	जवाली	३२। ७	७६। २	२५।५२	त्रिलोकनाथ	३२।४४	७६।३९	२३।२४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमाचल प्रदेश के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
त्रिलोकपुर	३०।३४	७७। ९	२१।२४	नैनादेवी	३१।१९	७६।३०	२४। ०	मणिकर्ण	३२। २	७७।२१	२०।३६	सन्तोखगढ़	३१।२१	७६।२१	२४।३६
त्र्यूण्ड	३२।१७	७६।२२	२४।३२	नोगली	३१।२४	७७।३८	१९।२८	मण्डी	३१।४३	७६।५८	२२। ८	सपाटू	३०।५९	७६।५९	२२। ४
थरोट	३२।४२	७६।४८	२२।४८	पण्डोह	३१।४४	७७। ३	२१।४८	मनाली	३२।१६	७७।१०	२१।२०	सरकाघाट	३१।४३	७६।४७	२२।५२
थानेधार	३१।२०	७७।३४	१९।५४	परवाणू	३०।५०	७६।५७	२२।१२	मलाना	३२। ४	७७।१५	२१। ०	सराहन (नाहन)	३०।४३	७७।१३	२१। ८
ददाहू	३०।३६	७७।२६	२०।१६	पाओंटा साहेब	३०।२७	७७।३७	१९।३२	मशोबरा	३१। ८	७७।१३	२१। ८	सराहन (रामपुर)	३१।३१	७७।४८	१८।४८
देवठी	३०।५७	७७। ३	२१।४८	पालमपुर	३२। ७	७६।३३	२३।४८	मीनस	३०।४६	७७।४१	१९।१६	सल्लाघाट	३१।१०	७६।५९	२२। ४
देओट सिद्ध	३१।२८	७६।३४	२३।४४	पूह	३१।४७	७८।३६	१५।३६	मूरंग	३१।३७	७८।२८	१६। ८	सांगला	३१।२९	७८।१२	१७।१२
धर्मपुर	३०।५३	७७। २	२१।५२	फागू	३१। ५	७७।१९	२०।४४	यान्थंग	३१।५३	७८।३८	१५।२८	साहू	३२।३७	७६।१३	२५। ८
धर्मशाला	३२।१३	७६।१९	२४।४४	बजौरा	३१।५१	७७। ८	२१।२८	रवालसर	३१।३८	७६।५०	२२।४०	सुन्दर नगर	३१।३२	७६।५३	२२।२८
धारा	३१।५०	७७।१५	२१। ०	बंजार	३१।४०	७७।२१	२०।३६	राजगढ़	३०।५१	७७।२०	२०।४०	सिहुन्ता	३२।१८	७६। ८	२५।२८
धौलाकुआं	३०।३०	७७।२९	२०। ४	बद्दी	३०।५५	७६।४८	२२।४८	राजबन	३०।३४	७७।३६	१९।३६	सीमा	३१।१४	७७।५०	१८।४०
नगर	३२। ७	७७। ८	२१।२८	बरसर	३१।३२	७६।२८	२४। ८	रामपुर बुशहर	३१।२७	७७।३८	१९।२८	सुन्नी	३१।१४	७७। ६	२१।३६
नगरोटा बागवां	३२। ६	७६।२२	२४।३२	बनीखेत	३२।३३	७५।५८	२६। ८	रायसन	३२। ५	७७। ७	२१।३२	सैंज	३१।४९	७७।१९	२०।४४
नचर	३१।३३	७७।५६	१८।१६	बरोट	३२। २	७६।५०	२२।४०	रूपी	३१।३८	७७।५०	१८।४०	सोलन	३०।५५	७७। ९	२१।२४
नमगिया	३१।४९	७८।३९	१५।२४	बरोटी वाला	३०।५६	७६।४९	२२।४४	रोहड़ू	३१।१३	७७।४५	१९। ०	हडसर	३२।२२	७६।२३	२३।४८
नहुआ	३०।४८	७७। ६	२१।३६	बागी	३१।१५	७७।३३	१९।४८	लंगेरा	३२।५०	७५।५३	२६।२८	हमीरपुर	३१।४१	७६।३१	२३।५६
नादौन	३१।४८	७६।२१	२४।३६	बातल	३२।२२	७७।३६	१९।३६	लम्बागराओं	३१।५४	७६।३३	२३।४८	हरसी पत्तन	३१।५३	७६।३९	२३।२४
नारकण्डा	३१।१६	७७।२७	२०।१२	बिलासपुर	३१।२०	७६।४७	२२।५२	शर्चू	३२।४७	७७।३३	१९।४८	हरिपुर	३१।५९	७६। ५	२५।४०
नालदेरा	३१।११	७७।११	२१।१६	बैजनाथ	३२। ४	७६।३७	२३।३२	शाहपुर	३२।१२	७६।१०	२५।२०	हरिपुर धार	३०।५२	७७।२८	२०। ८
नालागढ़	३१। ३	७६।४२	२३।१२	भरमौर	३२।२७	७६।३२	२३।५२	शिमला	३१। ६	७७।१०	२१।२०	हाँसी	३२।२७	७७।५०	१८।४०
नाहन	३०।३३	७७।२१	२०।३६	भरवाईं	३१।४८	७६। ७	२५।३२	शोघी	३१। ३	७७। ६	२१।३६	हाटकोटी	३१। ८	७७।४५	१९। ०
निरमण्ड	३१।२७	७७।३४	१९।४४	भून्तर	३१।५३	७७। ७	२१।३२	संगरा	३०।४३	७७।२२	२०।३२				
नूरपुर	३२।१८	७५।५४	२६।२४	मंगवाल	३२। ०	७६। ९	२५।३६	सतीन	३०।३४	७७।३८	१९।२८				

हिमाचल प्रदेश के सभी नगरों का सूर्योदयास्त काल

[प्रियव्रत शर्मा]

आगे तीन पृष्ठों पर हिमाचल प्रदेश के सभी नगरों के अक्षांशों के लिए सूर्योदय और सूर्यास्त की सारणियां दी गई हैं। इनकी सहायता से हिमाचल प्रदेश के किसी भी नगर में किसी भी तारीख का सूर्योदय-सूर्यास्त काल (भा. स्टैं. टा.) तथा दिनमान इस तरह ज्ञात करें—

हिमाचल प्रदेश के जिस नगर का सूर्योदय आदि ज्ञात करना हो सबसे पहले "अक्षांश आदि सारणी" से उस नगर का अक्षांश और स्टैंण्डर्ड अन्तर मालूम कर लें। तब उस नगर के अक्षांश वाले कालम में सूर्योदय या सूर्यास्त की सारणी में से अपनी तारीख के आगे लिखे घण्टा-मिनट उठा लें। उनमें उस नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनट जोड़ देने पर उस नगर में उस तारीख का सूर्योदय या सूर्यास्त काल निकल आएगा। यह काल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम होगा। यहां अक्षांशों की शेष कलाओं के लिए त्रैराशिक करना चाहिए।

उदाहरण—२ मार्च को कुल्लू (हि. प्र.) में सूर्योदय ज्ञात करना है, कुल्लू के अक्षांश (उत्तर) ३१ अंश ५८ कला (अर्थात् ३२ अंश) तथा स्टैण्डर्ड अन्तर २१ मि. ३६ से. है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्योदय सारणी में ३२ अक्षांश वाले स्तम्भ में २ मार्च को ६ घं. २८ मि. लिखा है। इसमें कुल्लू का स्टैण्डर्ड अन्तर २१ मि. ३६ से. जोड़ने पर ६ घं. ४९ मि. ३६ से. मिले। यह २ मार्च को कुल्लू में सूर्योदय का समय (भा. स्टै. टा.) है।

इसी प्रकार २ मार्च को ही कुल्लू में सूर्यास्त का समय (भा. स्टै. टा.) जाना जा सकता है। सूर्यास्त सारणी में २ मार्च को ३२ अक्षांश के कालम में सूर्यास्त काल १७ घं. ५८ मि. लिखा है। इसमें कुल्लू का स्टैण्डर्ड अन्तर २१ मि. ३६ से. जोड़ने पर १८ घं. १९ मि. ३६ से. मिले। यह २ मार्च को कुल्लू में सूर्यास्त काल (भा.स्टैं.टा.) है।

उदाहरण :—१ जनवरी को बैजनाथ (हि.प्र.) में सूर्योदय, सूर्योदयास्त काल ज्ञात करना है। बैजनाथ के अक्षांश ३२ अं. ४ क. (अर्थात् ३२ अंश) तथा स्टैण्डर्ड अन्तर २३ मि. ३२ से. है। सूर्योदय सारणी में ३२ अक्षांश वाले स्तम्भ में १ जन. को ७ घं १ मि. है। इसमें बैजनाथ का स्टैण्डर्ड अन्तर २३ मि. ३२ से. जोड़ने पर ७ घं. २४ मि. ३२ से. हुआ जोकि १ जन. को बैजनाथ में सूर्योदय काल (भा.स्टैं.टा.) है।

इसी तरह १ जन. को ही बैजनाथ में सूर्यास्त का काल जानना है। सूर्यास्त सारणी में १ जन. को ३२ अक्षांश के कालम में सूर्यास्त काल १७ घं. ६ मि. लिखा है। इसमें बैजनाथ का स्टैण्डर्ड अन्तर २३ मि. ३२ से. जोड़ने पर १७ घं. २९ मि. ३२ से. मिले। यही १ जन. को बैजनाथ में सूर्यास्त काल (भा.स्टैं.टा.) है।

ध्यान रहे—इस ऊपर बतलाई गई पद्धति से जो सूर्योदय और सूर्यास्त का काल हमें प्राप्त होता है। यह वह काल है जब कि हम अपनी आंखों से सूर्य को पूर्वी क्षितिज में उदय होते और पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते देखते हैं, अर्थात् यह वह समय है जबकि हमें सूर्य-विम्ब की ऊपरी कोर प्रातः पूर्वी क्षितिज में और सायं पश्चिमी क्षितिज में लगी हुई नजर आया करती है। लेकिन वास्तव में उस समय सूर्य-विम्ब की ऊपरी कोर पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज से लगभग ३५ कला और सूर्य-विम्ब का केन्द्र लगभग ५० कला नीचे की ओर ही होता है। क्षितिज से इतना नीचे होते हुए भी सूर्य हमें किरण वक्री भवन (Refraction) के कारण क्षितिज पर नजर आता है। ऊपर बतलाई गई विधि से जो हमें सूर्योदय-सूर्यास्त प्राप्त होता है उसे हम दृश्य (दिखाई देने वाला) सूर्योदय-सूर्यास्त कहते हैं: दैनिक समाचार पत्रों में जो सूर्योदय-सूर्यास्त काल दिए होते हैं वह दृश्य ही होते हैं। जब सूर्य-विम्ब का केन्द्र वस्तुतः क्षितिज पर होता है, उस सूर्योदय-सूर्यास्त काल को ज्योतिष-शास्त्रीय (Astronomical) या गणितागत सूर्योदय-सूर्यास्त काल कहा जाता है। किसी समय का इष्टकाल और दिनमान जानने के लिए ज्योतिष-शास्त्रीय सूर्योदय-सूर्यास्त काल को ही प्रयोग में लाया जाता है और इन्हीं से लग्न और दशमलग्न स्पष्ट करना चाहिए—यह जरूरी है। अपने मास और अक्षांश के अनुसार आगे दी गई "केन्द्रोदय-सारणी" में से मिनट-सेकण्ड लेकर उन्हें दृश्य सूर्योदय में जोड़ने और दृश्य सूर्यास्त में से घटाने पर ज्योतिष-शास्त्रीय सूर्योदय-सूर्यास्त काल बन जाता है।

जैसे—ऊपर दिए गए उदाहरण में २ मार्च को कुल्लू में सूर्योदय का समय ६ घं. ४९ मि. ३६ से. मिला है। यह कुल्लू में दृश्य सूर्योदय का समय है। "केन्द्रोदय-सारणी" में मार्च के आगे ३२ अक्षांश के नीचे ३ मि. ४५ से. लिखे हैं। इन्हें कुल्लू के दृश्य सूर्योदय के इस काल (६ घं. ४९ मि. ३६ से.) में जोड़ देने पर ६ घं. ५३ मि. २१ से. कुल्लू में २ मार्च को ज्योतिषशास्त्रीय सूर्योदय काल (भा. स्टै. टा.) हुआ। इस दिन के दृश्य सूर्यास्त काल १८ घं. १९ मि. ३६ से. में से ३ मि. ४५ से. घटा देने पर ज्योतिष शास्त्रीय सूर्यास्त काल १७ घं. १५ मि. ५१ से. (भा.स्टै.टा.) मिला।

इसी प्रकार १ जन. को बैजनाथ के दृश्य सूर्योदय काल में केन्द्रीय सारणी से प्राप्त ४ मि. ६ से. जोड़ने और दृश्य सूर्यास्त काल में घटाने पर ७ घं २८ मि. ३८ से. और १७ घं. २५ मि. २६ से. क्रमशः ज्योतिष शास्त्रीय सूर्योदय और सूर्यास्त काल (भा.स्टैं.टा.) मिले।

ख्याल रहे—लग्न साधन के लिए इष्ट काल का साधन ज्योतिष शास्त्रीय सूर्योदय काल से ही करना चाहिए। अपि च दशम लग्न साधन के लिए दिनमान जानने के लिए ज्योतिष शास्त्रीय सूर्योदय और सूर्यास्त काल का ही अन्तर करना चाहिए।

केन्द्रोदय सारणी

मास	अक्षांश ३०° मि. से.	अक्षांश ३१° मि. से.	अक्षांश ३२° मि. से.	अक्षांश ३३° मि. से.
जनवरी	३।५९	४। २	४। ६	४।१०
फरवरी	३।५१	३।५४	३।५७	४। ०
मार्च	३।४०	३।४२	३।४५	३।४८
अप्रैल	३।३८	३।४०	३।४३	३।४५
मई	३।४५	३।४८	३।५१	३।५४
जून	४। २	४। ५	४। ८	४।१२
जुलाई	४। ३	४। ६	४।१०	४।१३
अगस्त	३।५२	३।५५	३।५८	४। १
सितम्बर	३।४०	३।४३	३।४६	३।४८
अक्टूबर	३।३८	३।४०	३।४३	३।४५
नवम्बर	३।४६	३।४९	३।५२	३।५४
दिसम्बर	४। ०	४। ३	४। ७	४।११

ध्यान रहे—यहां सूर्योदय सारणी और सूर्यास्त सारणी में दिये गये सूर्योदय-सूर्यास्त कालों को प्रतिवर्ष प्रयोग में लाया जा सकता है। क्योंकि किसी नगर में जिस तारीख को जो सूर्योदय और सूर्यास्त का काल होता है, उस नगर में हर वर्ष उस तारीख को वही सूर्योदय और सूर्यास्त का काल रहता है। इस काल में किसी-किसी वर्ष लगभग एक मिनट तक का अन्तर हो सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तारीख	सूर्योदय सारणी				सूर्यास्त सारणी				तारीख	सूर्योदय सारणी				सूर्यास्त सारणी			
	अक्षांश				अक्षांश					अक्षांश				अक्षांश			
	+३०°	+३१°	+३२°	+३३°	+३०°	+३१°	+३२°	+३३°		+३०°	+३१°	+३२°	+३३°	+३०°	+३१°	+३२°	+३३°
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. १	६।५६	६।५८	७। १	७। ३	१७।११	१७। ९	१७। ६	१७। ४	मार्च १४	६।१३	६।१३	६।१३	६।१४	१८। ७	१८। ७	१८। ७	१८। ६
३	६।५६	६।५८	७। १	७। ३	१७।१२	१७।१०	१७। ७	१७। ५	१६	६।१०	६।१०	६।१०	६।११	१८। ८	१८। ८	१८। ८	१८। ८
५	६।५७	६।५९	७। २	७। ४	१७।१४	१७।१२	१७। ९	१७। ७	१८	६। ८	६। ८	६। ८	६। ८	१८।१०	१८।१०	१८।१०	१८। ९
७	६।५७	६।५९	७। २	७। ४	१७।१५	१७।१३	१७।११	१७। ८	२०	६। ५	६। ५	६। ५	६। ५	१८।११	१८।११	१८।११	१८।११
९	६।५७	६।५९	७। २	७। ४	१७।१७	१७।१५	१७।१२	१७।१०	२२	६। ३	६। ३	६। ३	६। ३	१८।१२	१८।१२	१८।१२	१८।१२
११	६।५७	६।५९	७। २	७। ४	१७।१८	१७।१६	१७।१४	१७।११	२४	६। ०	६। ०	६। ०	६। ०	१८।१३	१८।१३	१८।१३	१८।१४
१३	६।५७	६।५९	७। १	७। ४	१७।२०	१७।१८	१७।१६	१७।१३	२६	५।५८	५।५८	५।५८	५।५७	१८।१४	१८।१४	१८।१५	१८।१५
१५	६।५७	६।५९	७। १	७। ४	१७।२२	१७।२०	१७।१८	१७।१५	२८	५।५६	५।५६	५।५५	५।५५	१८।१६	१८।१६	१८।१६	१८।१७
१७	६।५७	६।५९	७। १	७। ४	१७।२४	१७।२२	१७।२०	१७।१७	३०	५।५३	५।५३	५।५२	५।५२	१८।१७	१८।१७	१८।१८	१८।१८
१९	६।५६	६।५८	७। ०	७। ३	१७।२५	१७।२३	१७।२१	१७।१९	अप्रैल १	५।५१	५।५०	५।५०	५।४९	१८।१८	१८।१८	१८।१९	१८।१९
२१	६।५६	६।५८	७। ०	७। २	१७।२७	१७।२५	१७।२३	१७।२१	३	५।४८	५।४८	५।४७	५।४७	१८।१९	१८।२०	१८।२०	१८।२१
२३	६।५५	६।५७	६।५९	७। १	१७।२९	१७।२७	१७।२५	१७।२३	५	५।४६	५।४५	५।४५	५।४४	१८।२०	१८।२१	१८।२२	१८।२२
२५	६।५४	६।५६	६।५८	७। ०	१७।३०	१७।२८	१७।२६	१७।२५	७	५।४४	५।४३	५।४२	५।४२	१८।२२	१८।२३	१८।२३	१८।२४
२७	६।५४	६।५६	६।५८	६।५९	१७।३२	१७।३०	१७।२८	१७।२७	९	५।४१	५।४०	५।४०	५।३९	१८।२३	१८।२४	१८।२५	१८।२५
२९	६।५३	६।५५	६।५७	६।५८	१७।३४	१७।३२	१७।३०	१७।२९	११	५।३९	५।३८	५।३७	५।३७	१८।२४	१८।२५	१८।२६	१८।२६
३१	६।५२	६।५४	६।५५	६।५७	१७।३६	१७।३४	१७।३२	१७।३१	१३	५।३७	५।३६	५।३५	५।३४	१८।२५	१८।२६	१८।२७	१८।२८
फर. २	६।५०	६।५२	६।५४	६।५५	१७।३७	१७।३५	१७।३४	१७।३२	१५	५।३४	५।३३	५।३२	५।३२	१८।२६	१८।२७	१८।२८	१८।३०
४	६।४९	६।५१	६।५३	६।५४	१७।३९	१७।३७	१७।३६	१७।३४	१७	५।३२	५।३१	५।३०	५।२९	१८।२८	१८।२९	१८।३०	१८।३१
६	६।४८	६।५०	६।५१	६।५३	१७।४१	१७।३९	१७।३८	१७।३६	१९	५।३०	५।२९	५।२८	५।२६	१८।२९	१८।३०	१८।३१	१८।३३
८	६।४७	६।४८	६।५०	६।५१	१७।४२	१७।४१	१७।३९	१७।३८	२१	५।२८	५।२७	५।२६	५।२४	१८।३०	१८।३१	१८।३२	१८।३४
१०	६।४५	६।४६	६।४८	६।४९	१७।४४	१७।४३	१७।४१	१७।४०	२३	५।२६	५।२५	५।२४	५।२२	१८।३१	१८।३२	१८।३४	१८।३५
१२	६।४४	६।४५	६।४६	६।४८	१७।४६	१७।४५	१७।४३	१७।४२	२५	५।२४	५।२३	५।२१	५।२०	१८।३३	१८।३४	१८।३६	१८।३७
१४	६।४२	६।४३	६।४४	६।४६	१७।४७	१७।४६	१७।४५	१७।४३	२७	५।२२	५।२१	५।१९	५।१८	१८।३४	१८।३५	१८।३७	१८।३८
१६	६।४०	६।४१	६।४२	६।४४	१७।४९	१७।४८	१७।४७	१७।४५	२९	५।२०	५।१९	५।१७	५।१६	१८।३५	१८।३७	१८।३८	१८।४०
१८	६।३८	६।३९	६।४०	६।४२	१७।५०	१७।४९	१७।४८	१७।४७	मई १	५।१८	५।१६	५।१५	५।१३	१८।३७	१८।३८	१८।४०	१८।४१
२०	६।३६	६।३७	६।३८	६।४०	१७।५२	१७।५१	१७।५०	१७।४९	३	५।१६	५।१४	५।१३	५।११	१८।३८	१८।४०	१८।४१	१८।४३
२२	६।३५	६।३६	६।३७	६।३८	१७।५३	१७।५२	१७।५१	१७।५०	५	५।१५	५।१३	५।११	५।१०	१८।३९	१८।४१	१८।४३	१८।४४
२४	६।३३	६।३४	६।३५	६।३५	१७।५५	१७।५४	१७।५३	१७।५२	७	५।१३	५।११	५। ९	५। ८	१८।४०	१८।४२	१८।४४	१८।४५
२६	६।३०	६।३१	६।३२	६।३३	१७।५६	१७।५५	१७।५४	१७।५४	९	५।११	५। ९	५। ७	५। ६	१८।४२	१८।४४	१८।४६	१८।४७
२८	६।२८	६।२९	६।३०	६।३०	१७।५८	१७।५७	१७।५६	१७।५६	११	५।१०	५। ८	५। ६	५। ४	१८।४३	१८।४५	१८।४७	१८।४९
मार्च २	६।२६	६।२७	६।२८	६।२८	१७।५९	१७।५८	१७।५८	१७।५७	१३	५। ९	५। ७	५। ५	५। ३	१८।४४	१८।४६	१८।४८	१८।५०
४	६।२४	६।२५	६।२६	६।२६	१८। ०	१७।५९	१७।५९	१७।५८	१५	५। ७	५। ५	५। ३	५। १	१८।४६	१८।४८	१८।५०	१८।५२
६	७।२२	६।२३	६।२४	६।२४	१८। २	१८। १	१८। १	१८। ०	१७	५। ६	५। ४	५। २	५। ०	१८।४७	१८।४९	१८।५१	१८।५३
८	६।२०	६।२०	६।२१	६।२१	१८। ३	१८। ३	१८। २	१८। २	१९	५। ५	५। ३	५। १	४।५८	१८।४८	१८।५०	१८।५२	१८।५५
१०	६।१७	६।१७	६।१८	६।१८	१८। ४	१८। ४	१८। ३	१८। ३	२१	५। ४	५। २	५। ०	४।५७	१८।४९	१८।५१	१८।५३	१८।५६
१२	६।१५	६।१५	६।१५	६।१६	१८। ६	१८। ६	१८। ५	१८। ५	२३	५। ३	५। १	४।५९	४।५६	१८।५१	१८।५३	१८।५५	१८।५८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तारीख		सूर्योदय सारणी अक्षांश				सूर्यास्त सारणी अक्षांश			
		+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.	+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.
मई	२५	५। २	५। ०	४।५८	४।५५	१८।५२	१८।५४	१८।५६	१८।५९
	२७	५। १	४।५९	४।५७	४।५४	१८।५३	१८।५५	१८।५८	१९। ०
	२९	५। ०	४।५८	४।५६	४।५३	१८।५४	१८।५६	१८।५९	१९। १
	३१	५। ०	४।५८	४।५६	४।५३	१८।५५	१८।५७	१९। ०	१९। २
जून	२	४।५९	४।५७	४।५४	४।५२	१८।५६	१८।५८	१९। १	१९। ३
	४	४।५९	४।५६	४।५४	४।५१	१८।५७	१९। ०	१९। २	१९। ५
	६	४।५८	४।५६	४।५३	४।५१	१८।५८	१९। १	१९। ३	१९। ६
	८	४।५८	४।५६	४।५३	४।५१	१८।५९	१९। २	१९। ४	१९। ७
	१०	४।५८	४।५५	४।५३	४।५०	१९। ०	१९। ३	१९। ५	१९। ८
	१२	४।५८	४।५५	४।५३	४।५०	१९। १	१९। ४	१९। ६	१९। ९
	१४	४।५८	४।५५	४।५३	४।५०	१९। २	१९। ५	१९। ७	१९।१०
	१६	४।५८	४।५५	४।५३	४।५०	१९। २	१९। ५	१९। ७	१९।१०
	१८	४।५९	४।५६	४।५३	४।५१	१९। ३	१९। ६	१९। ८	१९।११
	२०	४।५९	४।५६	४।५३	४।५१	१९। ४	१९। ७	१९। ९	१९।१२
	२२	४।५९	४।५६	४।५३	४।५१	१९। ४	१९। ७	१९। ९	१९।१२
	२४	५। ०	४।५७	४।५४	४।५२	१९। ४	१९। ७	१९। ९	१९।१२
	२६	५। ०	४।५७	४।५५	४।५२	१९। ५	१९। ८	१९।१०	१९।१३
	२८	५। १	४।५८	४।५६	४।५३	१९। ५	१९। ८	१९।१०	१९।१३
	३०	५। १	४।५८	४।५६	४।५३	१९। ५	१९। ८	१९।१०	१९।१३
जुलाई	२	५। २	४।५९	४।५७	४।५४	१९। ५	१९। ८	१९।१०	१९।१३
	४	५। ३	५। ०	४।५८	४।५५	१९। ५	१९। ८	१९।१०	१९।१३
	६	५। ४	५। १	४।५९	४।५६	१९। ५	१९। ७	१९।१०	१९।१२
	८	५। ५	५। २	५। ०	४।५७	१९। ४	१९। ७	१९। ९	१९।११
	१०	५। ६	५। ३	५। १	४।५८	१९। ४	१९। ६	१९। ९	१९।११
	१२	५। ७	५। ४	५। २	४।५९	१९। ४	१९। ६	१९। ९	१९।११
	१४	५। ८	५। ६	५। ३	५। १	१९। ३	१९। ५	१९। ८	१९।१०
	१६	५। ९	५। ७	५। ४	५। २	१९। २	१९। ४	१९। ७	१९। ९
	१८	५।१०	५। ८	५। ५	५। ३	१९। २	१९। ४	१९। ६	१९। ९
	२०	५।११	५। ९	५। ७	५। ४	१९। १	१९। ३	१९। ५	१९। ८
	२२	५।१२	५।१०	५। ८	५। ५	१९। ०	१९। २	१९। ४	१९। ७
	२४	५।१३	५।११	५। ९	५। ६	१८।५९	१९। १	१९। ३	१९। ६
	२६	५।१४	५।१२	५।१०	५। ८	१८।५८	१९। ०	१९। २	१९। ४
	२८	५।१६	५।१४	५।१२	५। ९	१८।५६	१८।५८	१९। ०	१९। ३
	३०	५।१७	५।१५	५।१३	५।११	१८।५५	१८।५७	१८।५९	१९। १
अगस्त	१	५।१८	५।१६	५।१४	५।१२	१८।५४	१८।५६	१८।५८	१९। ०
	३	५।१९	५।१७	५।१५	५।१४	१८।५२	१८।५४	१८।५६	१८।५८

तारीख		सूर्योदय सारणी अक्षांश				सूर्यास्त सारणी अक्षांश			
		+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.	+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.
अगस्त	५	५।२०	५।१८	५।१६	५।१५	१८।५१	१८।५३	१८।५५	१८।५६
	७	५।२२	५।२०	५।१८	५।१७	१८।४९	१८।५१	१८।५३	१८।५४
	९	५।२३	५।२१	५।१९	५।१८	१८।४८	१८।५०	१८।५१	१८।५३
	११	५।२४	५।२२	५।२१	५।१९	१८।४६	१८।४८	१८।४९	१८।५१
	१३	५।२५	५।२३	५।२२	५।२०	१८।४४	१८।४६	१८।४७	१८।४९
	१५	५।२६	५।२५	५।२३	५।२२	१८।४२	१८।४४	१८।४५	१८।४७
	१७	५।२८	५।२६	५।२५	५।२३	१८।४०	१८।४१	१८।४३	१८।४४
	१९	५।२९	५।२८	५।२६	५।२५	१८।३८	१८।३९	१८।४१	१८।४२
	२१	५।३०	५।२९	५।२७	५।२६	१८।३६	१८।३७	१८।३८	१८।४०
	२३	५।३१	५।३०	५।२९	५।२७	१८।३४	१८।३५	१८।३६	१८।३८
	२५	५।३२	५।३१	५।३०	५।२८	१८।३२	१८।३३	१८।३४	१८।३६
	२७	५।३३	५।३२	५।३१	५।३०	१८।२९	१८।३०	१८।३१	१८।३३
	२९	५।३४	५।३३	५।३२	५।३१	१८।२७	१८।२८	१८।२९	१८।३०
	३१	५।३६	५।३५	५।३४	५।३३	१८।२५	१८।२६	१८।२७	१८।२८
सितंबर	२	५।३७	५।३६	५।३५	५।३४	१८।२२	१८।२३	१८।२४	१८।२५
	४	५।३८	५।३७	५।३६	५।३६	१८।२०	१८।२१	१८।२२	१८।२२
	६	५।३९	५।३८	५।३७	५।३७	१८।१८	१८।१९	१८।१९	१८।२०
	८	५।४०	५।३९	५।३९	५।३८	१८।१५	१८।१६	१८।१६	१८।१७
	१०	५।४१	५।४०	५।४०	५।३९	१८।१३	१८।१४	१८।१४	१८।१५
	१२	५।४२	५।४२	५।४१	५।४१	१८।१०	१८।११	१८।११	१८।१२
	१४	५।४३	५।४३	५।४२	५।४२	१८। ८	१८। ८	१८। ९	१८। ९
	१६	५।४४	५।४४	५।४४	५।४३	१८। ५	१८। ५	१८। ६	१८। ६
	१८	५।४६	५।४६	५।४५	५।४५	१८। ३	१८। ३	१८। ३	१८। ४
	२०	५।४६	५।४६	५।४६	५।४६	१८। ०	१८। ०	१८। ०	१८। १
	२२	५।४८	५।४८	५।४८	५।४७	१७।५८	१७।५८	१७।५८	१७।५८
	२४	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	१७।५६	१७।५६	१७।५६	१७।५६
	२६	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	१७।५३	१७।५३	१७।५३	१७।५३
	२८	५।५१	५।५१	५।५१	५।५२	१७।५०	१७।५०	१७।५०	१७।५०
	३०	५।५२	५।५२	५।५२	५।५३	१७।४८	१७।४८	१७।४८	१७।४७
अक्टूबर	२	५।५३	५।५३	५।५४	५।५४	१७।४६	१७।४६	१७।४५	१७।४५
	४	५।५४	५।५४	५।५५	५।५५	१७।४३	१७।४३	१७।४३	१७।४२
	६	५।५६	५।५६	५।५७	५।५७	१७।४१	१७।४१	१७।४०	१७।४०
	८	५।५७	५।५७	५।५८	५।५८	१७।३८	१७।३८	१७।३७	१७।३७
	१०	५।५८	५।५९	५।५९	६। ०	१७।३६	१७।३५	१७।३५	१७।३४
	१२	५।५९	६। ०	६। ०	६। १	१७।३४	१७।३३	१७।३२	१७।३२
	१४	६। ०	६। १	६। २	६। २	१७।३२	१७।३१	१७।३०	१७।३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तारीख		सूर्योदय सारणी				सूर्यास्त सारणी			
		अक्षांश				अक्षांश			
		+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.	+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.
अक्टूबर	१६	६। २	६। ३	६। ४	६। ४	१७।२९	१७।२८	१७।२७	१७।२७
	१८	६। ३	६। ४	६। ५	६। ६	१७।२७	१७।२६	१७।२५	१७।२५
	२०	६। ४	६। ५	६। ६	६। ७	१७।२५	१७।२४	१७।२३	१७।२२
	२२	६। ६	६। ७	६। ८	६। ९	१७।२३	१७।२२	१७।२१	१७।२०
	२४	६। ७	६। ८	६। ९	६।११	१७।२१	१७।२०	१७।१९	१७।१८
	२६	६। ९	६।१०	६।११	६।१२	१७।१९	१७।१८	१७।१७	१७।१५
	२८	६।१०	६।११	६।१२	६।१४	१७।१७	१७।१६	१७।१५	१७।१३
	३०	६।१२	६।१३	६।१४	६।१६	१७।१६	१७।१५	१७।१३	१७।१२
नवम्बर	१	६।१३	६।१४	६।१६	६।१७	१७।१४	१७।१३	१७।११	१७।१०
	३	६।१५	६।१६	६।१८	६।१९	१७।१२	१७।११	१७। ९	१७। ८
	५	६।१६	६।१८	६।१९	६।२१	१७।११	१७। ९	१७। ८	१७। ६
	७	६।१८	६।२०	६।२१	६।२३	१७। ९	१७। ७	१७। ६	१७। ४
	९	६।१९	६।२१	६।२३	६।२४	१७। ८	१७। ६	१७। ५	१७। ३
	११	६।२१	६।२३	६।२५	६।२६	१७। ७	१७। ५	१७। ३	१७। २
	१३	६।२३	६।२५	६।२७	६।२८	१७। ६	१७। ४	१७। २	१७। १
	१५	६।२४	६।२६	६।२८	६।३०	१७। ४	१७। २	१७। १	१६।५९
	१७	६।२६	६।२८	६।३०	६।३१	१७। ४	१७। २	१७। ०	१६।५८
	१९	६।२८	६।३०	६।३२	६।३३	१७। ३	१७। १	१६।५९	१६।५७
	२१	६।२९	६।३१	६।३३	६।३५	१७। २	१७। ०	१६।५८	१६।५६
	२३	६।३१	६।३३	६।३५	६।३७	१७। १	१६।५९	१६।५७	१६।५५
	२५	६।३३	६।३५	६।३७	६।३९	१७। १	१६।५९	१६।५७	१६।५४
	२७	६।३४	६।३६	६।३८	६।४१	१७। ०	१६।५८	१६।५६	१६।५४
	२९	६।३६	६।३८	६।४०	६।४३	१७। ०	१६।५८	१६।५६	१६।५३
दिसंबर	१	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	१७। ०	१६।५८	१६।५६	१६।५३
	३	६।३९	६।४१	६।४४	६।४६	१७। ०	१६।५८	१६।५५	१६।५३
	५	६।४१	६।४३	६।४६	६।४८	१७। ०	१६।५८	१६।५५	१६।५३
	७	६।४२	६।४४	६।४७	६।४९	१७। ०	१६।५८	१६।५५	१६।५३
	९	६।४४	६।४६	६।४९	६।५१	१७। ०	१६।५८	१६।५५	१६।५३
	११	६।४५	६।४७	६।५०	६।५२	१७। १	१६।५९	१६।५६	१६।५४
	१३	६।४६	६।४९	६।५१	६।५४	१७। १	१६।५९	१६।५६	१६।५४
	१५	६।४८	६।५०	६।५३	६।५५	१७। २	१७। ०	१६।५७	१६।५५
	१७	६।४९	६।५१	६।५४	६।५६	१७। २	१७। ०	१६।५७	१६।५५
	१९	६।५०	६।५३	६।५५	६।५८	१७। ३	१७। १	१६।५८	१६।५६
	२१	६।५१	६।५४	६।५५	६।५९	१७। ४	१७। २	१६।५९	१६।५७
	२३	६।५२	६।५५	६।५७	७। ०	१७। ५	१७। ३	१७। ०	१६।५८
	२५	६।५३	६।५६	६।५८	७। १	१७। ६	१७। ४	१७। १	१६।५९

तारीख		सूर्योदय सारणी				सूर्यास्त सारणी			
		अक्षांश				अक्षांश			
		+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.	+३०° घं. मि.	+३१° घं. मि.	+३२° घं. मि.	+३३° घं. मि.
दिसंबर	२७	६।५४	६।५६	६।५९	७। १	१७। ७	१७। ५	१७। २	१७। ०
	२९	६।५५	६।५७	७। ०	७। २	१७। ९	१७। ६	१७। ४	१७। १
	३१	६।५६	६।५८	७। १	७। ३	१७।१०	१७। ८	१७। ५	१७। ३

"गणक मार्त्तण्ड" के बारे में

ज्योतिष का यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अनेक अपरिहार्य कारणों से अभी तक प्रकाशित नहीं किया जा सका–हमें इसका खेद है। इसे प्रकाशित कर पाठकों तक पहुंचाने का हमारा पूरा प्रयत्न है। इस ग्रन्थ को उपलब्ध करने के लिए असंख्य ग्राहकों, विद्वानों के पत्र हमें भारी संख्या में प्राप्त होते रहते हैं। इन ग्राहकों से अनुरोध है कि इस बारे में वे पत्र लिखने का कष्ट न करें, क्योंकि इसके प्रकाशन की सूचना हम स्वयं "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" द्वारा देंगे। इसके लिए अभी हमें कोई एडवांस भी न भेजें।

ध्यान रखें—'गणक मार्त्तण्ड' के प्रकाशन और वितरण का अधिकार केवल **"श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, पो. कुराली (पंजाब)"** को ही है। यह ग्रन्थ इसी संस्था से ही प्राप्त हो सकेगा। दिल्ली या अन्य किसी भी शहर के विक्रेता से यह उपलब्ध नहीं होगा।

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

इस पुस्तक के लिए काफी ग्राहकों के एडवांस हमें प्राप्त हैं। अब बहुत शीघ्र ही हम यह पुस्तक उन्हें भेजने जा रहे हैं। प्रकाशन में विघ्न-बाधाओं के कारण यह अक्षम्य विलम्ब हुआ, जिससे ग्राहकों को इसके लिए इतनी लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ी। इस असुविधा के लिए हम उनसे क्षमा प्रार्थी हैं।

जम्मू-काश्मीर के अक्षांश आदि

सं. २०४६ वि. के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में जम्मू-काश्मीर के सभी छोटे-बड़े नगरों के अक्षांश-रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर सूर्योदयास्त काल और लग्न सारणियां दी जाएंगी। अपनी प्रति पहिले ही सुरक्षित करवालें—

मैनेजर :—

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय
पो. कुराली (रोपड़)
पंजाब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"गणक मार्त्तण्ड" से उद्धृत—

हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि उ. भारत के प्रान्तों के नगरों की लग्न सारणियां

लेखकः—प्रियव्रत शर्मा

पिछले वर्ष हमने अपने पाठकों को सूचित किया था कि हम सं. २०४५ वि. के पंचांग में हि. प्र. और जम्मू-काश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश, लग्न सारणियां, सूर्योदयास्त आदि देंगे। तदनुसार हम इस वर्ष हिमाचल के अक्षांश आदि दे रहे हैं। स्थान के अभाव के कारण इस वर्ष जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश आदि नहीं दे सके। सं. २०४६ के पंचांग में इन्हें हम इन्हीं पृष्ठों पर देंगे। इस वर्ष इसके लिए हम उनसे क्षमा चाहते हैं। जैसा कि हम पिछले वर्ष लिख चुके हैं-यह पूरी सामग्री हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ "गणक मार्त्तण्ड" से संक्षिप्त करके ली गई है। इस सामग्री को किसी भी रूप में कोई उद्धृत करने का साहस न करे।

आगे दो पृष्ठों पर उत्तर अक्षांश २४ से ३५ तक की लग्न सारणियां, जो समस्त उत्तर भारत के लिए उपयोगी हैं, दी गई हैं। इनकी सहायता से उ. भारत के किसी भी नगर में किसी भी समय का लग्न इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:—इष्टकाल का सूर्य स्पष्ट करके उसमें अयनांश जोड़ कर उसे सायन बना लीजिए (अपने सन् का अयनांश अगले पृष्ठ पर दिये गये 'अयनांश कोष्ठक' से जाना जा सकता है) इष्ट काल यदि घड़ी पलों में है तो उसे घण्टा-मिनटों में बदल लें। अपने नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में से (लग्न सारणी के अपने अक्षांश वाले कालम में से) इष्टकालिक सायन सूर्य के राशि-अंशों से घं. मि. उठायें। लग्न सारणी ६-६ अंशों के अन्तर पर बनी हुई है। अतः सूर्य की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बनाकर उन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनटों से गुणा करके ३६० का भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इसे सारणी से उठाये गये घं. मि. में जोड़ दें। अब इन घण्टा-मिनटों को इष्टकाल के घण्टा-मिनटों में जोड़ें। यदि यह जोड़ २४ घण्टा से ज्यादा हो तो उसमें से २४ घण्टा घटा कर शेष घं. मि. ही स्वीकार करें। इस प्रकार जो घं. मि. मिलें उन्हें अपने (अपने अक्षांश की) लग्न सारणी में ही ढूंढिये। सारणी में जहां इनके बराबर या इनके लगभग घं. मि. मिलें, उनके बाईं ओर पहले कालम में लिखे राशि-अंशों को अलग लिख लें। शेष मिनटों को ६ से गुणा करके उन्हें सारणी में दिए अन्तर मिनटों से भाग देकर दो लब्धियां (अं. क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ने पर आपका इष्ट-कालिक सायन लग्न स्पष्ट हो जायेगा। इसमें से अपने ईस्वी सन् का अयनांश घटा देने पर निरयण लग्न स्पष्ट होगा।

उदाहरण—कुल्लू (हि. प्र.) में २ मार्च १९८६ ई. को सायं ५ घं. ३० मि. (अर्थात् १७ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य १० रा. १७ अं. ५७ क. है। इसमें सन् १९८६ ई. का अयनांश २३ अं. ४० क. जोड़ने पर ११ रा. ११ अं. ३७ क. सायन स्पष्ट सूर्य हुआ और इस समय कुल्लू के आज के सूर्योदय काल (६ घं. ५३ मि.) से इष्टकाल १० घं. ३७ मि. बना। कुल्लू के अक्षांश ३२ अं. (उत्तर) है। ३२ अक्षांश वाली लग्न सारणी से सायन सूर्य के ११ रा. ६ अंश के आगे २२ घं. ५५ मि. है। सायन सूर्य के शेष ५ अं. ३७ क. की कलायें बनाईं, जो ३३७ हुईं। इन्हें सायन सूर्य ११ रा. ६ अं. के आगे ३२ अक्षांश वाली लग्न सारणी में लिखे १६ मि. से गुणा करके ३६० से भाग देने पर १५ मिनट मिले। इन्हें सारणी से मिले २२ घं. ५५ मि. में जोड़ने पर २३ घं. १० मि. हुए। इसमें इष्ट के १० घं. ३७ मि. जोड़ने पर ३३ घं. ४७ मि. मिले। क्योंकि यहां घण्टे २४ से ज्यादा हो गये हैं अतः इसमें से २४ घण्टे घटाए तो ९ घं. ४७ मि. प्राप्त हुए। ३२ अक्षांश वाली लग्न सारणी में ही ९ घं. ३९ मि. के बाईं ओर पहले कालम में ५ रा. ० अं. हैं, इन्हें अलग नोट किया। शेष ८ मिनटों को ६ से गुणा करके लग्न सारणी में ९ घं. ३९ मि. के आगे दिये अन्तर मिनट २९ से भाग देने पर दो लब्धियां १ अं. ३९ क. मिलीं। इन्हें अलग नोट किए ५ रा. ० अं. में जोड़ने पर ५ रा. १ अं. ३९ क. मिलीं। यह हमारे इष्ट काल पर कुल्लू में सायन लग्न स्पष्ट हुआ। सन् १९८६ का अयनांश २३ अं. ४० कला है, जिसे इस सायन लग्न में से घटाने पर ४ रा. ७ अं. ५९ क. हमारा इष्ट कालिक निरयण लग्न बन गया। **भारतीय ज्योतिष में सर्वत्र निरयण लग्न का ही प्रयोग होता है—** यह तो सभी ज्योतिषी जानते ही हैं।

दशम भाव साधन

दिनार्ध (दिनमान के आधे) को इष्ट में से घटाने पर शेष नतकाल होगा। दिनार्ध इष्ट काल से अधिक हो तो इष्टकाल में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाने पर नतकाल बनेगा। नतकाल के घड़ी-पलों को घं. मि. में बदल लें। "दशम लग्न सारणी" में से इष्ट कालिक सायन सूर्य के राशि-अंशों द्वारा घण्टा-मिनट उठाएं। सारणी में राशि-अंश ६-६ अंशों के अन्तर पर दिये गये हैं। अतः सायन सूर्य की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बनाकर उन्हें सारणी में दिये गये अन्तर-मिनटों से गुणा करके ३६० से भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इन्हें सारणी से उठाए गए घं. मि. में जोड़ दें। इसमें नतकाल भी जोड़िए। यदि यह योग (जोड़) २४ घण्टे से ज्यादा हो तो इसमें से २४ घण्टे घटा दें। इन घं. मि. को दशम सारणी में ढूंढिए। यदि इनके बिल्कुल बराबर घं. मि. सारणी में न मिलें तो इनसे कुछ कम घं. मि. सारणी में देखिए। इनके बाईं ओर सारणी में लिखे राशि-अंशों को अलग नोट कीजिए। शेष मिनटों को ६ से गुणा करके सारणी में दिए गए अन्तर-मिनटों से भाग देकर दो लब्धियां (अं. क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग नोट किये राशि-अंशों में जोड़ने पर सायन दशम लग्न स्पष्ट होगा। इसमें से अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न बन जायेगा।

उदाहरण—कुल्लू (हि. प्र.) २ मार्च १९८६ ई. को सायं ५ घं. ३० मि. (अर्थात् १७ घं. ३० मि. पर) दशम लग्न स्पष्ट करना है। इस समम सायन स्पष्ट सूर्य ११ रा. ११ अं. ३७ क. है, इस दिन कुल्लू में सूर्योदय ६ क. ५३ मि. और सूर्यास्त १८ घं. १६ मि. पर है, इन दोनों का अन्तर ११ घं. २३ मि. दिनमान हुआ, और दिनार्ध ५ घं. ४१ मि. बना। इष्टकाल १० घं. ३७ मि. है, इष्टकाल १० घं. ३७ मि. में से दिनार्ध ५ घं. ४१ मि. घटाने पर ४ घं. ५६ मि. नतकाल हुआ। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सायनसूर्य की ११ रा. ६ अं. के आगे २२ घं. ३१ मि. हैं, इन्हें अलग नोट किया। इष्टकालिक सायन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

सूर्य के शेष ५ अंश ३७ कलाओं की ३३७ कलाएं बनीं। दशम लग्न सारणी में ११ रा. ६ अं. के आगे अन्तर २३ मिनट लिखा है, अतः सायन सूर्य की इन शेष ३३७ कलाओं को २३ से गुणा करके ३६० से भाग देने पर २२ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें अलग नोट किये हुए २२ घं. ३१ मि. में जोड़ने पर २२ घं. ५३ मि. हुए। इसमें नतकाल ४ घं. ५६ मि. जोड़ने पर २७ घं. ४९ मि. मिले। इसमें से २४ घं. घटाने पर ३ घं. ४९ मि. बने। दशम सारणी में देखा तो ३ घं. २६ मि. के बाईं ओर १ रा. २४ अं. लिखे हैं। इन्हें अलग नोट किया। शेष(३ घं. ४९ मि. और ३ घं. २६ मि. के अन्तर) २३ मि. को ६ से गुणा किया और ३ घं. २६ मि. के आगे लिखे अन्तर २५ मिनट से भाग देने पर दो लब्धियां ५ अं. ३१ क. मिलीं, इन्हें अलग नोट किए १ रा. २४ अं. में जोड़ने पर १ रा. २९ अं. ३१ क. हमारा इष्ट कालिक सायन दशम लग्न बना। इसमें से सन् १९८६ का अयनांश २३ अं. ४० क. घटाने पर १ रा. ५ अं. ५१ क. निरयण दशम लग्न बन गया। भारतीय ज्योतिष में द्वादश भाव आदि के साधन के लिए निरयण दशम लग्न ही प्रयोग में लाया जाता है।

दशम लग्न सारणी सभी स्थलों(अक्षांशों) के लिए एक ही होती है-यह तो ज्योतिषी लोग जानते ही हैं।

ध्यान दें—लग्न और दशम भाव को कलान्त ही स्पष्ट करना चाहिए। यदि जन्म-काल, सूर्योदय या सूर्यास्त काल में कुछ ही सेकण्ड की भी अशुद्धि हो तो लग्न और दशम लग्न में विकलाओं की अशुद्धि अवश्य आती है। जन्मकाल, सूर्योदय या सूर्यास्त काल में १५ से. की अशुद्धि हो तो लग्न और दशम में सामान्यतया ४ कला की अशुद्धि रह जाती है।

दशमलग्न सारणी
(सभी स्थलों के लिए)

सूर्य या दशम रा. अं.	घं. मि.	अन्तर मि.	सूर्य या दशम रा. अं.	घं. मि.	अन्तर मि.
०। ०	०। ०	२२	६। ०	१२। ०	२२
०। ६	०।२२	२२	६। ६	१२।२२	२२
०।१२	०।४४	२२	६।१२	१२।४४	२२
०।१८	१। ६	२३	६।१८	१३। ६	२३
०।२४	१।२९	२३	६।२४	१३।२९	२३
१। ०	१।५२	२३	७। ०	१३।५२	२३
१। ६	२।१५	२३	७। ६	१४।१५	२३
१।१२	२।३८	२४	७।१२	१४।३८	२४
१।१८	३। २	२४	७।१८	१५। २	२४
१।२४	३।२६	२५	७।२४	१५।२६	२५
२। ०	३।५१	२५	८। ०	१५।५१	२५
२। ६	४।१६	२६	८। ६	१६।१६	२६
२।१२	४।४२	२६	८।१२	१६।४२	२६
२।१८	५। ८	२६	८।१८	१७। ८	२६
२।२४	५।३४	२६	८।२४	१७।३४	२६
३। ०	६। ०	२६	९। ०	१८। ०	२६
३। ६	६।२६	२६	९। ६	१८।२६	२६
३।१२	६।५२	२६	९।१२	१८।५२	२६
३।१८	७।१८	२६	९।१८	१९।१८	२६
३।२४	७।४४	२५	९।२४	१९।४४	२५
४। ०	८। ९	२५	१०। ०	२०। ९	२५
४। ६	८।३४	२४	१०। ६	२०।३४	२४
४।१२	८।५८	२४	१०।१२	२०।५८	२४
४।१८	९।२२	२३	१०।१८	२१।२२	२३
४।२४	९।४५	२३	१०।२४	२१।४५	२३
५। ०	१०। ८	२३	११। ०	२२। ८	२३
५। ६	१०।३१	२३	११। ६	२२।३१	२३
५।१२	१०।५४	२२	११।१२	२२।५४	२२
५।१८	११।१६	२२	११।१८	२३।१६	२२
५।२४	११।३८	२२	११।२४	२३।३८	२२
६। ०	१२। ०	२२	१२। ०	२४। ०	२२

अयनांश कोष्ठक

ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.
१९१०	२२।३६	१९२४	२२।४८	१९३८	२२।५९	१९५२	२३।११	१९६६	२३।२३	१९८०	२३।३५
१९११	२२।३७	१९२५	२२।४९	१९३९	२३। ०	१९५३	२३।१२	१९६७	२३।२४	१९८१	२३।३५
१९१२	२२।३८	१९२६	२२।४९	१९४०	२३। १	१९५४	२३।१३	१९६८	२३।२५	१९८२	२३।३६
१९१३	२२।३९	१९२७	२२।५०	१९४१	२३। २	१९५५	२३।१४	१९६९	२३।२५	१९८३	२३।३७
१९१४	२२।३९	१९२८	२२।५१	१९४२	२३। ३	१९५६	२३।१५	१९७०	२३।२६	१९८४	२३।३८
१९१५	२२।४०	१९२९	२२।५२	१९४३	२३। ४	१९५७	२३।१५	१९७१	२३।२७	१९८५	२३।३९
१९१६	२२।४१	१९३०	२२।५३	१९४४	२३। ४	१९५८	२३।१६	१९७२	२३।२८	१९८६	२३।४०
१९१७	२२।४२	१९३१	२२।५४	१९४५	२३। ५	१९५९	२३।१७	१९७३	२३।२९	१९८७	२३।४०
१९१८	२२।४३	१९३२	२२।५४	१९४६	२३। ६	१९६०	२३।१८	१९७४	२३।३०	१९८८	२३।४१
१९१९	२२।४४	१९३३	२२।५५	१९४७	२३। ७	१९६१	२३।१९	१९७५	२३।३०	१९८९	२३।४२
१९२०	२२।४४	१९३४	२२।५६	१९४८	२३। ८	१९६२	२३।२०	१९७६	२३।३१	१९९०	२३।४३
१९२१	२२।४५	१९३५	२२।५७	१९४९	२३। ९	१९६३	२३।२०	१९७७	२३।३२		
१९२२	२२।४६	१९३६	२२।५८	१९५०	२३।१०	१९६४	२३।२१	१९७८	२३।३३		
१९२३	२२।४७	१९३७	२२।५९	१९५१	२३।१०	१९६५	२३।२२	१९७९	२३।३४		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नसारणी (१म भाग)

(लगभग पूरे उत्तरी भारत के लिए)

सूर्य वा लग्न	अक्षांश +२४°	अन्तर	अक्षांश +२५°	अन्तर	अक्षांश +२६°	अन्तर	अक्षांश +२७°	अन्तर	अक्षांश +२८°	अन्तर	अक्षांश +२९°	अन्तर	अक्षांश +३०°	अन्तर	अक्षांश +३१°	अन्तर	अक्षांश +३२°	अन्तर	अक्षांश +३३°	अन्तर	अक्षांश +३४°	अन्तर	अक्षांश +३५°	अन्तर
रा. अ.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
०। ०	०। ०	१८	०। ०	१८	०। ०	१७	०। ०	१७	०। ०	१७	०। ०	१७	०। ०	१७	०। ०	१६	०। ०	१६	०। ०	१६	०। ०	१६	०। ०	१५
०। ६	०।१८	१८	०।१८	१७	०।१७	१८	०।१७	१७	०।१७	१७	०।१७	१७	०।१७	१६	०।१६	१७	०।१६	१६	०।१६	१६	०।१६	१५	०।१५	१६
०।१२	०।३६	१८	०।३५	१८	०।३५	१८	०।३४	१८	०।३४	१७	०।३४	१७	०।३३	१७	०।३३	१७	०।३२	१७	०।३२	१६	०।३१	१६	०।३१	१५
०।१८	०।५४	१८	०।५३	१८	०।५३	१८	०।५२	१८	०।५१	१८	०।५१	१७	०।५०	१७	०।४९	१७	०।४९	१६	०।४८	१६	०।४७	१६	०।४६	१७
०।२४	१।१२	१९	१।११	१९	१।११	१८	१।१०	१८	१। ९	१८	१। ८	१८	१। ७	१८	१। ६	१८	१। ५	१७	१। ४	१७	१। ३	१७	१। ३	१६
१। ०	१।३१	१९	१।३०	१९	१।२९	१९	१।२८	१९	१।२७	१८	१।२६	१८	१।२५	१८	१।२४	१८	१।२२	१८	१।२१	१७	१।२०	१७	१।१९	१७
१। ६	१।५०	२०	१।४९	२०	१।४८	१९	१।४७	१९	१।४५	१९	१।४४	१९	१।४३	१९	१।४२	१८	१।४०	१८	१।३९	१८	१।३७	१८	१।३६	१८
१।१२	२।१०	२१	२। ९	२०	२। ७	२०	२। ६	२०	२। ४	२०	२। ३	२०	२। २	१९	२। ०	१९	१।५८	२०	१।५७	१८	१।५५	१९	१।५४	१८
१।१८	२।३१	२१	२।२९	२१	२।२७	२१	२।२६	२१	२।२४	२१	२।२३	२०	२।२१	२०	२।१९	२०	२।१८	१९	२।१६	१९	२।१४	१९	२।१२	१९
१।२४	२।५२	२२	२।५०	२२	२।४८	२२	२।४७	२१	२।४५	२१	२।४३	२१	२।४१	२१	२।३९	२१	२।३७	२१	२।३५	१९	२।३३	१९	२।३१	२१
२। ०	३।१४	२३	३।१२	२३	३।१०	२३	३। ८	२२	३। ६	२३	३। ४	२२	३। २	२२	३। ०	२२	२।५८	२२	२।५६	२१	२।५४	२१	२।५२	२१
२। ६	३।३७	२४	३।३५	२३	३।३३	२३	३।३०	२३	३।२९	२३	३।२६	२४	३।२४	२३	३।२२	२३	३।२०	२३	३।१८	२२	३।१५	२३	३।१३	२२
२।१२	४। १	२४	३।५८	२४	३।५६	२३	३।५३	२४	३।५२	२४	३।५०	२४	३।४७	२४	३।४५	२४	३।४३	२४	३।४०	२२	३।३८	२४	३।३५	२४
२।१८	४।२५	२५	४।२२	२५	४।२०	२४	४।१७	२५	४।१६	२५	४।१४	२५	४।११	२५	४। ९	२५	४। ७	२४	४। ४	२४	४। २	२४	३।५९	२५
२।२४	४।५०	२५	४।४७	२६	४।४५	२५	४।४२	२६	४।४१	२६	४।३९	२५	४।३६	२६	४।३४	२६	४।३१	२६	४।२९	२५	४।२६	२६	४।२४	२५
३। ०	५।१५	२६	५।१३	२७	५।११	२६	५। ८	२७	५। ७	२६	५। ४	२७	५। २	२७	५। ०	२६	४।५७	२७	४।५५	२६	४।५२	२७	४।४९	२७
३। ६	५।४१	२७	५।४०	२७	५।३८	२७	५।३५	२७	५।३३	२७	५।३१	२७	५।२९	२७	५।२६	२७	५।२४	२७	५।२१	२७	५।१९	२७	५।१६	२७
३।१२	६। ८	२८	६। ७	२७	६। ५	२७	६। २	२८	६। ०	२८	५।५८	२८	५।५६	२७	५।५३	२८	५।५१	२८	५।४८	२८	५।४६	२८	५।४३	२८
३।१८	६।३६	२८	६।३४	२८	६।३२	२७	६।३०	२८	६।२८	२८	६।२६	२८	६।२३	२८	६।२१	२८	६।१९	२८	६।१६	२९	६।१४	२९	६।११	२९
३।२४	७। ४	२७	७। २	२७	७। ०	२८	६।५८	२८	६।५६	२८	६।५४	२८	६।५१	२९	६।४९	२९	६।४७	२९	६।४५	२९	६।४३	२८	६।४०	२९
४। ०	७।३१	२८	७।२९	२८	७।२७	२७	७।२६	२८	७।२४	२८	७।२२	२८	७।२०	२८	७।१८	२८	७।१६	२८	७।१४	२८	७।११	२९	७। ९	२९
४। ६	७।५९	२७	७।५७	२८	७।५५	२८	७।५४	२८	७।५२	२८	७।५०	२८	७।४८	२९	७।४६	२९	७।४४	२९	७।४२	२९	७।४०	३०	७।३८	३०
४।१२	८।२६	२८	८।२५	२७	८।२३	२८	८।२२	२७	८।२०	२८	८।१८	२९	८।१७	२८	८।१५	२९	८।१३	२९	८।११	२९	८।१०	२९	८। ८	२९
४।१८	८।५४	२७	८।५२	२८	८।५१	२७	८।४९	२८	८।४८	२८	८।४७	२८	८।४५	२८	८।४४	२८	८।४२	२९	८।४०	२९	८।३९	२९	८।३७	२९
४।२४	९।२१	२७	९।२०	२७	९।१८	२८	९।१७	२८	९।१६	२८	९।१५	२८	९।१३	२८	९।१२	२८	९।११	२८	९। ९	२९	९। ८	२९	९। ६	३०
५। ०	९।४८	२६	९।४७	२७	९।४६	२७	९।४५	२७	९।४४	२७	९।४३	२७	९।४१	२८	९।४०	२९	९।३९	२९	९।३८	२९	९।३७	२९	९।३६	२९
५। ६	१०।१४	२७	१०।१४	२६	१०।१३	२७	१०।१२	२७	१०।११	[illegible]	१०।१०	२८	१०। ९	२८	१०। ९	२८	१०। ८	२८	१०। ७	२८	१०। ६	२८	१०। ५	२९
५।१२	१०।४१	२६	१०।४०	२७	१०।४०	२७	१०।३९	२७	१०।३९	२७	१०।३८	२७	१०।३७	२८	१०।३७	२७	१०।३६	२८	१०।३५	२९	१०।३४	२९	१०।३४	२९
५।१८	११। ७	२७	११। ७	२७	११। ७	२६	११। ६	२७	११। ६	२७	११। ५	२८	११। ५	२७	११। ४	२८	११। ४	२८	११। ४	२८	११। ३	२९	११। ३	२८
५।२४	११।३४	२६	११।३४	२६	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३१	२९
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नसारणी (२य भाग)

(लगभग पूरे उत्तरी भारत के लिए)

सूर्य या लग्न	प्रक्षांश +२४°	अन्तर	प्रक्षांश +२५°	अन्तर	प्रक्षांश +२६°	अन्तर	प्रक्षांश +२७°	अन्तर	प्रक्षांश +२८°	अन्तर	अक्षांश +२९°	अन्तर	प्रक्षांश +३०°	अन्तर	अक्षांश +३१°	अन्तर	प्रक्षांश +३२°	अन्तर	प्रक्षांश +३३°	अन्तर	प्रक्षांश +३४°	अन्तर	प्रक्षांश +३५°	अन्तर
रा. अ.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६। ०	१२। ०	२६	१२। ०	२६	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२९
६। ६	१२।२६	२७	१२।२६	२७	१२।२७	२६	१२।२७	२७	१२।२७	२७	१२।२७	२८	१२।२८	२७	१२।२८	२८	१२।२८	२८	१२।२८	२९	१२।२८	२९	१२।२९	२९
६।१२	१२।५३	२६	१२।५३	२७	१२।५३	२७	१२।५४	२७	१२।५४	२८	१२।५५	२७	१२।५५	२८	१२।५६	२७	१२।५६	२८	१२।५७	२८	१२।५७	२९	१२।५७	२८
६।१८	१३।१९	२७	१३।२०	२६	१३।२०	२७	१३।२१	२७	१३।२२	२७	१३।२२	२८	१३।२३	२८	१३।२३	२९	१३।२४	२८	१३।२५	२८	१३।२६	२८	१३।२६	२९
६।२४	१३।४६	२६	१३।४६	२७	१३।४७	२७	१३।४८	२७	१३।४९	२७	१३।५०	२७	१३।५१	२८	१३।५२	२८	१३।५२	२९	१३।५३	२९	१३।५४	२९	१३।५५	२९
७। ०	१४।१२	२७	१४।१३	२८	१४।१४	२७	१४।१५	२८	१४।१६	२८	१४।१७	२८	१४।१९	२८	१४।२०	२८	१४।२१	२८	१४।२२	२९	१४।२३	२९	१४।२४	३०
७। ६	१४।३९	२७	१४।४१	२७	१४।४२	२७	१४।४३	२८	१४।४४	२८	१४।४५	२८	१४।४७	२८	१४।४८	२८	१४।४९	२९	१४।५१	२९	१४।५२	२९	१४।५४	२९
७।१२	१५। ६	२८	१५। ८	२७	१५। ९	२८	१५।११	२७	१५।१२	२८	१५।१३	२९	१५।१५	२८	१५।१६	२९	१५।१८	२९	१५।२०	२९	१५।२१	२९	१५।२३	२९
७।१८	१५।३४	२७	१५।३५	२८	१५।३७	२८	१५।३८	२८	१५।४०	२८	१५।४२	२८	१५।४३	२९	१५।४५	२९	१५।४७	२९	१५।४९	२९	१५।५०	३०	१५।५२	३०
७।२४	१६। १	२८	१६। ३	२८	१६। ५	२८	१६। ६	२८	१६। ८	२८	१६।१०	२८	१६।१२	२८	१६।१४	२८	१६।१६	२८	१६।१८	२८	१६।२०	२९	१६।२२	२९
८। ०	१६।२९	२७	१६।३१	२७	१६।३३	२७	१६।३४	२८	१६।३६	२८	१६।३८	२८	१६।४०	२९	१६।४२	२९	१६।४४	२९	१६।४६	२९	१६।४९	२९	१६।५१	२९
८। ६	१६।५६	२८	१६।५८	२८	१७। ०	२७	१७। २	२८	१७। ४	२८	१७। ६	२८	१७। ९	२८	१७।११	२८	१७।१३	२८	१७।१५	२९	१७।१८	२८	१७।२०	२९
८।१२	१७।२४	२७	१७।२६	२७	१७।२८	२७	१७।३०	२८	१७।३२	२८	१७।३४	२८	१७।३७	२७	१७।३९	२८	१७।४१	२८	१७।४४	२८	१७।४६	२८	१७।४९	२८
८।१८	१७।५१	२८	१७।५३	२७	१७।५५	२७	१७।५८	२७	१८। ०	२७	१८। २	२७	१८। ४	२७	१८। ७	२७	१८। ९	२७	१८।१२	२७	१८।१४	२७	१८।१७	२७
८।२४	१८।१८	२६	१८।२०	२७	१८।२२	२७	१८।२५	२६	१८।२७	२६	१८।२९	२७	१८।३१	२७	१८।३४	२६	१८।३६	२७	१८।३९	२६	१८।४१	२७	१८।४४	२७
९। ०	१८।४४	२६	१८।४७	२६	१८।४९	२६	१८।५१	२६	१८।५३	२६	१८।५६	२५	१८।५८	२६	१९। ०	२६	१९। ३	२६	१९। ५	२६	१९। ८	२६	१९।११	२५
९। ६	१९।१०	२५	१९।१३	२५	१९।१५	२५	१९।१७	२५	१९।१९	२५	१९।२१	२५	१९।२४	२५	१९।२६	२५	१७।२९	२४	१९।३१	२५	१९।३४	२४	१९।३६	२५
९।१२	१९।३५	२५	१९।३८	२४	१९।४०	२४	१९।४२	२४	१९।४४	२४	१९।४६	२४	१९।४९	२४	१९।५१	२४	१९।५३	२४	१९।५६	२४	१९।५८	२४	२०। १	२४
९।१८	२०। ०	२४	२०। २	२३	२०। ४	२३	२०। ६	२३	२०। ८	२३	२०।१०	२४	२०।१३	२३	२०।१५	२३	२०।१७	२३	२०।२०	२२	२०।२२	२३	२०।२५	२२
९।२४	२०।२४	२३	२०।२५	२३	२०।२७	२३	२०।२९	२३	२०।३१	२३	२०।३४	२२	२०।३६	२२	२०।३८	२२	२०।४०	२२	२०।४२	२२	२०।४५	२१	२०।४७	२१
१०। ०	२०।४७	२२	२०।४८	२२	२०।५०	२२	२०।५२	२१	२०।५४	२१	२०।५६	२१	२०।५८	२१	२१। ०	२१	२१। २	२१	२१। ४	२१	२१। ६	२१	२१। ८	२१
१०। ६	२१। ९	२१	२१।१०	२१	२१।१२	२१	२१।१३	२१	२१।१५	२१	२१।१७	२०	२१।१९	२०	२१।२१	२०	२१।२३	१९	२१।२५	१९	२१।२७	१९	२१।२९	१९
१०।१२	२१।३०	२०	२१।३१	२०	२१।३३	२०	२१।३४	२०	२१।३६	२०	२१।३७	२०	२१।३९	१९	२१।४१	१९	२१।४२	२०	२१।४४	१९	२१।४६	१९	२१।४८	१८
१०।१८	२१।५०	२०	२१।५१	२०	२१।५३	१९	२१।५४	१९	२१।५६	१९	२१।५७	१९	२१।५८	१९	२२। ०	१९	२२। २	१८	२२। ३	१८	२२। ५	१८	२२। ६	१८
१०।२४	२२।१०	१९	२२।११	१९	२२।१२	१९	२२।१३	१९	२२।१५	१८	२२।१६	१८	२२।१७	१८	२२।१९	१७	२२।२०	१८	२२।२१	१८	२२।२३	१७	२२।२४	१७
११। ०	२२।२९	१९	२२।३०	१९	२२।३१	१८	२२।३२	१८	२२।३३	१८	२२।३४	१८	२२।३५	१८	२३।३६	१८	२२।३८	१७	२२।३९	१७	२२।४०	१७	२२।४१	१७
११। ६	२२।४८	१८	२२।४९	१८	२२।४९	१८	२२।५०	१८	२२।५१	१८	२२।५२	१७	२२।५३	१७	२२।५४	१७	२२।५५	१६	२२।५६	१६	२२।५७	१६	२२।५८	१६
११।१२	२३। ६	१८	२३। ७	१८	२३। ७	१८	२३। ८	१८	२३। ९	१७	२३। ९	१७	२३।१०	१७	२३।११	१६	२३।११	१७	२३।१२	१६	२३।१३	१६	२३।१४	१५
११।१८	२३।२४	१८	२३।२५	१७	२३।२५	१८	२३।२६	१७	२३।२६	१७	२३।२६	१७	२३।२७	१७	२३।२७	१७	२३।२८	१६	२३।२८	१६	२३।२७	१५	२३।२९	१५
११।२४	२३।४२	१८	२३।४२	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४४	१७	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४५	१५
१२। ०	२४। ०	१८	२४। ०	१८	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"गणक मार्तण्ड" से उद्धृत—

हिमाचल प्रदेश आदि उ. भारत के प्रान्तों के सभी नगरों की दैनिक लग्न सारणी

लेखकः—प्रियव्रत शर्मा

उत्तर-

लग्न कोष्ठक (१)

अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
२२। ०	१२।२९	१४।१०	१६। ८	१८।२१	२०।३६	२२।४७	१। १	३।१४	५।३०	७।३५	९।२३	१०।५७
२२।३०	१२।२९	१४। ९	१६। ७	१८।२०	२०।३६	२२।४७	१। १	३।१५	५।३१	७।३६	९।२३	१०।५७
२३। ०	१२।२८	१४। ८	१६। ६	१८।१९	२०।३५	२२।४७	१। २	३।१६	५।३२	७।३७	९।२४	१०।५७
२३।३०	१२।२८	१४। ८	१६। ५	१८।१८	२०।३५	२२।४७	१। २	३।१६	५।३३	७।३८	९।२४	१०।५७
२४। ०	१२।२७	१४। ७	१६। ४	१८।१७	२०।३४	२२।४७	१। ३	३।१७	५।३४	७।३९	९।२५	१०।५७
२४।३०	१२।२६	१४। ६	१६। ३	१८।१६	२०।३४	२२।४७	१। ३	३।१८	५।३५	७।४०	९।२६	१०।५८
२५। ०	१२।२६	१४। ५	१६। २	१८।१५	२०।३३	२२।४६	१। ३	३।१९	५।३६	७।४१	९।२७	१०।५८
२५।३०	१२।२६	१४। ४	१६। १	१८।१४	२०।३३	२२।४६	१। ४	३।२०	५।३७	७।४२	९।२७	१०।५८
२६। ०	१२।२६	१४। ३	१६। ०	१८।१३	२०।३२	२२।४६	१। ४	३।२१	५।३८	७।४३	९।२८	१०।५८
२६।३०	१२।२६	१४। ३	१५।५९	१८।१२	२०।३१	२२।४६	१। ५	३।२१	५।३९	७।४४	९।२९	१०।५८
२७। ०	१२।२५	१४। २	१५।५७	१८।११	२०।३०	२२।४६	१। ५	३।२२	५।४१	७।४५	९।२९	१०।५८
२७।३०	१२।२५	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३०	२२।४६	१। ६	३।२३	५।४२	७।४६	९।३०	१०।५८
२८। ०	१२।२४	१४। ०	१५।५५	१८। ९	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२४	५।४३	७।४७	९।३०	१०।५८
२८।३०	१२।२४	१३।५९	१५।५४	१८। ८	२०।२९	२२।४६	१। ६	३।२५	५।४४	७।४८	९।३१	१०।५८
२९। ०	१२।२३	१३।५८	१५।५३	१८। ७	२०।२८	२२।४५	१। ७	३।२६	५।४५	७।४९	९।३१	१०।५९
२९।३०	१२।२३	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२७	२२।४५	१। ७	३।२७	५।४६	७।५०	९।३२	१०।५९
३०। ०	१२।२३	१३।५६	१५।५१	१८। ५	२०।२६	२२।४५	१। ७	३।२८	५।४७	७।५१	९।३३	१०।५९
३०।३०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८। ४	२०।२६	२२।४५	१। ८	३।२८	५।४८	७।५२	९।३३	१०।५९
३१। ०	१२।२२	१३।५५	१५।४८	१८। ३	२०।२५	२२।४५	१। ८	३।२९	५।५०	७।५३	९।३४	१०।५९
३१।३०	१२।२२	१३।५४	१५।४७	१८। २	२०।२५	२२।४५	१। ९	३।३०	५।५१	७।५४	९।३५	१०।५९
३२। ०	१२।२१	१३।५३	१५।४६	१८। १	२०।२४	२२।४५	१। ९	३।३१	५।५२	७।५५	९।३६	१०।५९
३२।३०	१२।२१	१३।५२	१५।४५	१८। ०	२०।२३	२२।४५	१। ९	३।३२	५।५३	७।५६	९।३६	१०।५९
३३। ०	१२।२०	१३।५१	१५।४३	१७।५८	२०।२२	२२।४४	१।१०	३।३३	५।५५	७।५८	९।३७	११। ०
३३।३०	१२।२०	१३।५०	१५।४२	१७।५७	२०।२२	२२।४४	१।१०	३।३४	५।५६	७।५९	९।३८	११। ०
३४। ०	१२।१९	१३।४९	१५।४१	१७।५६	२०।२१	२२।४४	१।११	३।३५	५।५७	८। ०	९।३८	११। ०
३४।३०	१२।१९	१३।४८	१५।४०	१७।५५	२०।२०	२२।४४	१।११	३।३६	५।५८	८। १	९।३९	११। ०
३५। ०	१२।१८	१३।४७	१५।३८	१७।५४	२०।२०	२२।४४	१।१२	३।३७	६। ०	८। २	९।४०	११। ०
३५।३०	१२।१८	१३।४६	१५।३७	१७।५३	२०।१९	२२।४४	१।१२	३।३८	६। १	८। ३	९।४१	११। ०
३६। ०	१२।१७	१३।४५	१५।३५	१७।५१	२०।१८	२२।४४	१।१३	३।३९	६। ३	८। ५	९।४१	११। ०
३६।३०	१२।१७	१३।४४	१५।३४	१७।५०	२०।१८	२२।४४	१।१३	३।४०	६। ४	८। ६	९।४२	११। ०

हम यहां दो लग्न कोष्ठक [लग्न कोष्ठक (१) और लग्न कोष्ठक (२)] दे रहे हैं। इनकी सहायता से आप उत्तर भारत के दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. आदि प्रान्तों के किसी भी नगर में किसी भी तारीख को अपने अभीष्ट लग्न का उदय (प्रारम्भ) काल (भा.स्टैं.टा.) सरलता से इस प्रकार जान सकते हैं—

जिस नगर में लग्नोदय जानना है उस नगर के अक्षांश और स्टैंडर्ड अन्तर "अक्षांशादि सारणी" से जान लें। अपने नगर के अक्षांशों के आगे अपने अभीष्ट लग्न के नीचे 'लग्न कोष्ठक (१)' में लिखे घण्टा-मिनट उठा कर उन में अपनी अभीष्ट तारीख के घण्टा-मिनट लग्न कोष्ठक (२) से लेकर जोड़ दें। इस योग फल में अपने नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनट भी चिह्न के विपरीत जोड़ें या घटाएं, (अर्थात् यदि स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण है तो इसे जोड़ें, धन है तो घटा दें)। ध्यान रहे—दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हि. प्र. प्रान्तों का स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण ही है, अतः इसे तो जोड़ना ही होगा।

इस उपरोक्त प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन बातों का ध्यान रखें—

(१) जिस वर्ष में आप लग्नोदय जानना चाहते हैं यदि वह लीप इयर हो तो २९ फरवरी के बाद की तारीखों में एक जोड़ कर ही लग्न कोष्ठक (२) को प्रयोग में लाएं। उदाहरणार्थ यदि सन् १९८४ ई. (लीप इयर) की ४ अप्रैल को किसी लग्न का उदय काल जानना है तो लग्न कोष्ठक (२) में से हमें ५ अप्रैल के घण्टा-मिनट लेने होंगे। यदि इसी वर्ष (सन् १९८४) में २५ फर. को लग्नोदय जानना हो तो लग्न कोष्ठक (२) में से २५ फर. के ही घण्टा-मिनट लेने होंगे।

(२) लग्न कोष्ठक (१) और लग्न कोष्ठक (२) से प्राप्त घं.-मि. के योग में स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ने या घटाने के बाद जो योगफल (घं.-मि.) मिले, यदि वह २४ घण्टा से अधिक हो तो उसमें से २४ घण्टा घटा कर शेष घण्टा-मिनट को लग्नोदय काल (भा.स्टैं.टा.) समझना चाहिए, अन्यथा (योगफल २४ घण्टा से अधिक न हो तो) उस योगफल में से ४ मिनट घटाकर शेष घण्टा-मिनट को लग्नोदय काल (भा.स्टैं.टा.) समझें।

(३) लग्न कोष्ठक (१) में अक्षांश ३०-३० कलाओं के अन्तर पर दिए गए हैं। अतः आपके अभीष्ट नगर के अक्षांश पूरे-पूरे इसमें न मिलें तो उनके समीपतम अक्षांशों के अनुसार ही इस कोष्ठक का प्रयोग करना चाहिए। स्पष्टता के लिए अगले पृष्ठ पर लिखा उदाहरण देखिए :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न कोष्ठक (२)

(लीप इयर में २९ फरवरी के बाद की तारीखों की जगह अगली तारीख लें।)

	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग'	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.	
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	ता.
१	२४। ०	२१।५८	२०। ७	१८। ५	१६। ७	१४। ५	१२। ६	१०। ४	८। २	६। ४	४। १	२। ३	१
२	२३।५६	२१।५४	२०। ३	१८। १	१६। ३	१४। १	१२। २	१०। ०	७।५८	६। ०	३।५७	१।५९	२
३	२३।५२	२१।५०	२०। ०	१७।५७	१५।५९	१३।५७	११।५८	९।५६	७।५४	५।५६	३।५४	१।५५	३
४	२३।४८	२१।४६	१९।५६	१७।५३	१५।५५	१३।५३	११।५५	९।५२	७।५०	५।५२	३।५०	१।५१	४
५	२३।४४	२१।४२	१९।५२	१७।४९	१५।५१	१३।४९	११।५१	९।४८	७।४६	५।४८	३।४६	१।४७	५
६	२३।४०	२१।३८	१९।४८	१७।४५	१५।४७	१३।४५	११।४७	९।४४	७।४२	५।४४	३।४२	१।४३	६
७	२३।३६	२१।३४	१९।४४	१७।४२	१५।४३	१३।४१	११।४३	९।४१	७।३८	५।४०	३।३८	१।४०	७
८	२३।३२	२१।३०	१९।४०	१७।३८	१५।३९	१३।३७	११।३९	९।३७	७।३४	५।३६	३।३४	१।३६	८
९	२३।२८	२१।२६	१९।३६	१७।३४	१५।३५	१३।३३	११।३५	९।३३	७।३०	५।३२	३।३०	१।३२	९
१०	२३।२४	२१।२२	१९।३२	१७।३०	१५।३१	१३।२९	११।३१	९।२९	७।२६	५।२८	३।२६	१।२८	१०
११	२३।२१	२१।१८	१९।२८	१७।२६	१५।२७	१३।२५	११।२७	९।२५	७।२२	५।२४	३।२२	१।२४	११
१२	२३।१७	२१।१४	१९।२४	१७।२२	१५।२४	१३।२१	११।२३	९।२१	७।१९	५।२०	३।१८	१।२०	१२
१३	२३।१३	२१।१०	१९।२०	१७।१८	१५।२०	१३।१७	११।१९	९।१७	७।१५	५।१६	३।१४	१।१६	१३
१४	२३। ९	२१। ७	१९।१६	१७।१४	१५।१६	१३।१३	११।१५	९।१३	७।११	५।१२	३।१०	१।१२	१४
१५	२३। ५	२१। ३	१९।१२	१७।१०	१५।१२	१३। ९	११।११	९। ९	७। ७	५। ८	३। ६	१। ८	१५
१६	२३। १	२०।५९	१९। ८	१७। ६	१५। ८	१३। ६	११। ७	९। ५	७। ३	५। ४	३। २	१। ४	१६
१७	२२।५७	२०।५५	१९। ४	१७। २	१५। ४	१३। २	११। ३	९। १	६।५९	५। १	२।५८	१। ०	१७
१८	२२।५३	२०।५१	१९। ०	१६।५८	१५। ०	१२।५८	१०।५९	८।५७	७।५५	४।५७	२।५४	०।५६	१८
१९	२२।४९	२०।४७	१८।५६	१६।५४	१४।५६	१२।५४	१०।५५	८।५३	६।५१	४।५३	२।५०	०।५२	१९
२०	२२।४५	२०।४३	१८।५२	१६।५०	१४।५२	१२।५०	१०।५१	८।४९	६।४७	४।४९	२।४७	०।४८	२०
२१	२२।४१	२०।३९	१८।४९	१६।४६	१४।४८	१२।४६	१०।४८	८।४५	६।४३	४।४५	२।४३	०।४४	२१
२२	२२।३७	२०।३५	१८।४५	१६।४२	१४।४४	१२।४२	१०।४४	८।४१	६।३९	४।४१	२।३९	०।४०	२२
२३	२२।३३	२०।३१	१८।४१	१६।३८	१४।४०	१२।३८	१०।४०	८।३७	६।३५	४।३७	२।३५	०।३६	२३
२४	२२।२९	२०।२७	१८।३७	१६।३४	१४।३६	१२।३४	१०।३६	८।३३	६।३१	४।३३	२।३१	०।३२	२४
२५	२२।२५	२०।२३	१८।३३	१६।३१	१४।३२	१२।३०	१०।३२	८।३०	६।२७	४।२९	२।२७	०।२९	२५
२६	२२।२१	२०।१९	१८।२९	१६।२७	१४।२८	१२।२६	१०।२८	८।२६	६।२३	४।२५	२।२३	०।२५	२६
२७	२२।१७	२०।१५	१८।२५	१६।२३	१४।२४	१२।२२	१०।२४	८।२२	६।१९	४।२१	२।१९	०।२१	२७
२८	२२।१४	२०।११	१८।२१	१६।१९	१४।२८	१२।१८	१०।२०	८।१८	६।१५	४।१७	२।१५	०।१७	२८
२९	२२।१०	२०। ७	१८।१७	१६।१५	१४।१६	१२।१४	१०।१६	८।१४	६।१२	४।१३	२।११	०।१३	२९
३०	२२। ६	— —	१८।१३	१६।११	१४।१३	१२।१०	१०।१२	८।१०	६। ८	४। ९	२। ७	०। ९	३०
३१	२२। २	— —	१८। ९	— —	१४। ९	— —	१०। ८	८। ६	— —	४। ५	— —	०। ५	३१
												०। १	३२

उदाहरण (१)—सुन्दरनगर (हि. प्र.) में १ जन. को मेष लग्न का उदय काल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करना है। सुन्दरनगर का अक्षांश ३१ अंश ३२ कला और स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) २२ मि. २८ से. (अर्थात् २२ मि.) है। लग्न कोष्ठक (१) में ३१ अंश ३० कला अक्षांश के आगे मेष के नीचे १२ घं. २२ मि. हैं। लग्न कोष्ठक (२) में १ जन. को २४ घं. ० मि. लिखे हैं। इन दोनों का योग ३६ घं. २२ मि. हुआ। इसमें सुन्दरनगर का स्टैण्डर्ड अन्तर २२ मि. ऋण होने से जोड़ा तो ३६ घं. ४४ मि. मिले। क्योंकि यहां घण्टे २४ से ज्यादा हैं, अतः इसमें से २४ घण्टे घटाए तो १२ घं. ४४ मि. हुए। यह जनवरी को सुन्दर-नगर में मेष लग्न का उदय (प्रारम्भ) काल (भा. स्टैं. टा.) हुआ।

उदाहरण (२)—सोलन (हि.प्र.) में २६ जनवरी को तुला लग्न का उदय (प्रारम्भ) ज्ञात करना है। सोलन के अक्षांश ३० अंश ५५ कला और स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) २१ मि. २४ से. (अर्थात् २१ मि.) है। लग्न कोष्ठक (१) में ३१ अंश ० कला अक्षांश के आगे तुला के नीचे १ घं. ८ मि. है। लग्न कोष्ठक (२) में २६ जनवरी को २२ घं. २१ मि. लिखा है। इन दोनों का योग २३ घं. २९ मि. हुआ। इसमें सोलन के स्टैण्डर्ड अन्तर के २१ मि. ऋण होने से जोड़े तो योगफल २३ घं. ५० मि. हुआ। क्योंकि यह योगफल २४ घं. से कम है, अतः इसमें से ४ मि. कम किए तो २३ घं. ४६ मि. हुए। यही सोलन में २६ जन. को तुला लग्न का प्रारम्भ काल (भा. स्टैं टा.) है।

उदाहरण (३)—कांगड़ा (हि. प्र.) में सन १९८० ई० की १ सितं. को मीन लग्न का उदय काल जानना है। कांगड़ा के अक्षांश ३२ अंश ५ कला और स्टैंडर्ड अन्तर (ऋण) २४ मि. ४८ से. (अर्थात् २५ मि.) हैं। लग्न कोष्ठक (१) में ३२ अंश ० कला अक्षांश के आगे मीन के नीचे १० घं. ५९ मि. हैं। यहां लग्न कोष्ठक (२) में हम १ सितं. के स्थान पर २ सितं. को प्रयोग में लाएंगे, क्योंकि हमारा यह वर्ष (१९८० ई०) लीप इयर है और हमारी यह तारीख २९ फरवरी के बाद की भी है। इस लग्न कोष्ठक (२) में २ सितं. को ७ घं. ५८ मि. दिए हैं, इसे १० घं. ५९ मि. में जोड़ा तो १८ घं. ५७ मि. हुए। इसमें कांगड़ा के स्टैंडर्ड अन्तर के मि. २५ ऋण होने से जोड़े तो योगफल १९ घं. २२ मि. मिला। क्योंकि यह योगफल २४ घं. से कम है, अतः इसमें से ४ मि. घटाए तो १९ घं. १८ मि. हुए। यह कांगड़ा में १ सितं. (१९८० ई०) को मीन लग्न के प्रारम्भ होने का काल (भा. स्टैं. टा.) है।

ध्यान दें—यहां तारीख का प्रारम्भ पाश्चात्य (अंग्रेजी) पद्धति के अनुसार रात के १२ बजे माना गया है।

इस उपरोक्त प्रक्रिया से प्राप्त लग्नोदय कालों में कभी-२ कुछ मिनटों का अन्तर हो सकता है, क्योंकि "लग्न कोष्ठक (१)" में प्रयुक्त राशियों के स्वोदय आसन्न मान के हैं। ये 'लग्न कोष्ठक' भी हमारे अप्रकाशित ग्रन्थ 'गणक मार्त्तण्ड' के उन विस्तृत लग्न कोष्ठकों से संक्षिप्त करके उद्धृत किए गये हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर का लग्नोदय काल सूक्ष्मता से तुरन्त जाना जा सकता है। "गणक मार्त्तण्ड" में दिए गए "लग्न कोष्ठक (१)" में राशियों के स्वोदयमान नितान्त सूक्ष्म हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल मलिन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत-स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवायें। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।५८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों में प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मंन्त्र का जाप करवाना-कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्य नारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी-चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका-स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका-स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, छींक भी किया, दीर्घकेश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्म समय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया, और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला वा जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था। जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ६५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुत्सित वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिका-गृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ६० वर्ष जीवे।

मीन—माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे, कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें-वही बालक का जन्मलग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।
सुता जन्म सिंहराशि में, धन-मृग जन्मे बाल। अर्ध-शब्द शिशुकरत भयो शापत बुद्धि रसाल॥

पितृपरोक्ष ज्ञान—(१) जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन चार योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शैय्या तहां भय जहां कुज होए। रविस्थान में दीप कही शनी लोह कही सोय?

जन्म कुण्डली में दिशा ज्ञान—प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय, तृतीय—ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम, षष्ठ—वायव्य। सप्तम—पश्चिम। अष्टम, नवम—नैऋत। दशम—दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

प्रसूति-स्थान से पाकशालादि विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

सूतिका—माता का बीजन या उत्तर में सिर, रक्त या लाल वस्त्र, कष्ट अधिक
इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए । दोहा—लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार । या लग्नपै दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार ॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों वो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशि का) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा-लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत ।

चन्द्रात्तैल-ज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना । सो० तनुस्थान शशि जाई, वां शशि षष्टे भवन में, शिशु जन्म तब आई, तब कहि दीपक तैल नहिं । सित शनिदशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीपक तैल सों युक्त कहि ।

लग्नाद्दीपवर्ति-ज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हो तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें ।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसारउपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह उतनी ही उपसूतिका कहना । परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें । यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों, तो उसकी गणना करें अन्यथा उसे नहीं जोड़ें । इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हों और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें अन्यथा नहीं जोड़ें । लग्नचन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीचे राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा । इस में भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रांतर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका ग्रह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना । उन ग्रहों में जो शुभग्रह हों वहां धर्मशील सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों में विधवा व दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषड्क्रान्त्येषु पादाः । लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०।२२ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना । तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना । इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रह युक्त हो वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना ।

दो०—मीन-मिथुन-सिंह-तुला, मेष होय तत्काल । अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल ॥

अथ चिह्नज्ञानम्—दोहा षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान । वामें कुछ लहसन कहे गर्गवचन परमाण ॥ भानु तथा सौरी तनधन कुज कण्टक चन्द । बालक के पद् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द । तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राह । वाम कर्ण या मस्तके व्यथा चिह्न दरशाह ॥ सुहृद भाव मे कवि तम भौम या सौरी लग्न । वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचे भृगु बसे तनु का चौथे मन्द । मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद ।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल में पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ें लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनि देकर कटि में बांधे और साथ ही "ओंमुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः । मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ।।" इस मंत्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीस का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे । स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा तन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर चलता कर लेवें, तब कष्ट को मिटाता है ।

बालक के लिए अरिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, वरहै शशी जो खीन । कण्टक शुभ खगना असैं, वेगि ताहि यमलीन ।
बसैं चन्द्रा द्वादसै अष्ट भवन २ पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ।।
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाप । एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ।
लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्म समय जो पाव । बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगा—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिक्धाम । वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम । सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसैं त्रिक जाय । जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिर्यघर नाय ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगा—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय । जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्रसिंह अज. दशम भानु कुज वास । मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ।

दुःखदयोगा—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश । जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ।। पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश । यया जोग जाके परे तनु मुख विश्वावीसं ।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय । वीर्य्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय ।।

बन्धनयोगा—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार । सो नर सूर कसूर करि निवसैं कारागार ।।

सर्पवेष्टितयोगा—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है ।

यमल जन्मयोगा—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना । अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है ।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९. स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मृत्यु-समय-विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हों, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना । अथवा—जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मरण कहना । अथवा चन्द्रमा जब लग्न राशि में आता है, तब मरण कहना । अथवा, वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मरण कहना चाहिए । किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे ।

सुखदयोगा:—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग । या केन्द्र गृह २ परे तो जानो सुख संग ॥ जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय । मित्र दृष्टि ता पर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीब (नपुंसक) योगा:—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान । शुक्र भवन ते रिष्फ षट बसे क्लिब जानु ॥

कुष्ठयोगा:—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त या केतु । श्वेत कुष्ठ को योग यह बरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कहु कुष्ठ । लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति दुष्ट ॥ जलगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंडे कुज साथ । पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ ॥ आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भगसून । भगतन शिखि वा युक्त त्रिक, जिन प्रति रुजि कहि दून ।

केमद्रुम:—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय । केमद्रुम यह योग है सब धन हारे सोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय । तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय ॥

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय । सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमे बसै ऋणी होय पति तासु । लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासू । क्रूर युक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच । सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच । राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति चोर । पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर । लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि । सप्तम कुज रण्ड कहे पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग । भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन जाको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम । रांड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम ॥ पाप ग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द । सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि । रूपवती तनु भृगु बसै बुधजन कहत विचारि ॥

वैधव्य विषकन्यायोगा:—चौ० रविवार द्वितीया जो होय । श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृत्तिका होय शनिश्चर वार ॥ सातें तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार । कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय । निश्चय विधवा जाने सोय ॥४॥ जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय । एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो । ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय ॥ मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार । सातें तिथि लीजे निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय । नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग सखी जो परे । तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान । सूर्य होत सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्याभंगयोगा:—जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय । अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादियोग:—शे अष्टमे काकवन्ध्या । मन्दार्कविष्टमे वन्ध्या । अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई-केन्द्रधात नभगा शुभ होई । नरतनु पाय कलत्र समोई । रानी होय बहुत धन ताके । मन प्रसन्न होई है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई । लाभ धन गुरु आवे धाई ॥ सो त्रिय होय नृपति की नारी । जग विख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई । शशि दृग केन्द्र भवन में होई ॥ ऐसे योग जन्म सुकुमारी ॥ रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा......कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर । पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताकों पति नृप शूर ॥ लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम । सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभावविचार:—पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि । केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत ॥

अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी वा घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता वा घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है । माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन में घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे । स्मरण रहे, कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है, प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृतक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शान्ति करने से शुभ है ।

त्रिखलजन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हों तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करे तो शुभ होता है । तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करे ।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हों तो माता-पिता, को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, पड़ोसियों को एवं टेवा बनाने वाले ज्योतिषी को भी भय होता है । ऊपर की प्रथम पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, अतः शान्ति करे । पहिले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी ।

एकनक्षत्रजनन-फलम्:—वृद्धगर्ग कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है । स्वर्णदान से कल्याण होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जो जोड़ें राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचरस्थ शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना	धन ला	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा
फलम्	(१।२।३च.) श्वसुरहानि	(२।३।४च.) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	(४च) देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है: यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करने चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल		आश्लेषा पाद फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	भ्रातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वो.	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. भा. माघ. आ.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातः संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृतं स्यान्मांगलं ध्रुवम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष बाधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग करदे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	सिरगणपीड़ा	कान्तिमुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पतिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	घर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	हृदरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कुनध्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकयुक्त
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	भूक्षा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठांत्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो, इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमे गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो, (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ ग्रह को ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे, त्रिक घान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगा:—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।

जारज योगाः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना.	भय	श्री:	मानभग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्र:	अन्नला:	धननाश	सुखं	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौम:	शत्रुभी:	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी:	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी.	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश:	सुखं	शोक:	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक;	धनला.	वस्त्रला.	दु:ख	धनलाभ	धनला.
शनि:	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी:	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशिके उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकभे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा के	ग्रहा:
मा.१	दि. २।	मा१॥	मा१	मा१२	मा. १	मा३०	मा १८	एकार्यभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते-	अन्ते	फलसमय:
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशे: प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणय:

सु.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल:	पन्ना	पु पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफल	लोहम्	वैडूर्यम्	नागपत्रं:	नागपत्रं:

पूतनाग्रसित लक्षण एवं शान्ति

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किंसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि उसे महापूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वनदेवता या नगरदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्रता में ही बालक के साथ सो जावे तो पापभंवा नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूल माला पहिना कर बाहर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या बंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा— जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निवासश्च तत्र रात्रौ—ॐ र्हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव ॥ इत्यस्य जपः ततोऽनेनेव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः ॥

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशुं शङ्ख मधुकैटभ-मर्दनः। प्रातः सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययोः ॥२॥ महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदनः। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि ॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ बाल पूतना विधान—आगे लिखे बाल कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्पर्श-स्पर्श निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान विधि तीन दिन निरन्तर करें । चौथे दिन पलास, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ, इनके पत्रों को उबाल कर बालक को मन्त्र पाठपूर्वक स्नान कराना तदन्तर कल्याणार्थ यथा शक्ति भिक्षुकों तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान्न भोजन कराना ॥ तदनन्तर ओं द्यौशांतिरन्तरिक्ष ॐ इत्यादि शांति मन्त्रों व मार्जन व मन्त्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखा-स्थान-स्पर्श पूर्वक यह मन्त्र पढ़े—ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ! ग्रहस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥ ओं सर्वमातर: इमं ग्रहं सहरतु हुं रादय२ स्फोटय २ स्वाहा । गर्ज २ से २ गृह्ण २ वामदंय २, हिम २, हवः एवं सिद्धि रुद्रो शापय स्वाहा ॥ इति रक्षा मन्त्रः ॥

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है ?	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दी वै श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।	राई, वच, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्ब-पत्र, गोघृत
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झण्डी, पुष्प चावलों के आटे के सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े मत्स्य व बकरे का मांस, संध्या समय पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखना ।	ओं नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्लांह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लं ह्लं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वितः स्थानाद्राशया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एक सेर लाल भात, आधे सेर पूर्ण पोली, (सुहाली) पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुख मंडिका	तिल-चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प	भात, सेर आटे के पूड़े आध सेर पूर्ण पोली, सायं, पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे ।	सुनन्दना विधानोक्त	लसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत
पञ्चम दिन मास वर्ष में, बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे	ओं भगवती ह्रींह्रीं ह्लं ह्लं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्णस्व ठःठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठःठः स्वाहा ।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में, वटकालिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७पूड़ियां, १ प्रहर दिनचढ़े पूर्व में चौरास्ते पर	योगिनी विधानोक्त	
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५ ।	भात, ७ पूड़ियां सायं काल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर	विडालिका विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत ।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चन्दन ५, रंग की झण्डी५ दीपक ५ ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग छाग मांस संध्या में चौरास्ते पर	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में, भवना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर	ओं नमो भगवतेवासुदेवाय कृष्णाय मंडल बलिमादाय हन२ हुंफट्स्वाहा	
दशम दिन मास वर्ष में, रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुने चावल, गौ घृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमों भगवते वैश्वदेवाय हन हु फट् स्वाहा	गोश्रृंग, लसुन, सांप की कांचली, निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत
एकादश दिन मास वर्ष में, सुर्यशना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर	ओं नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ओं ह्रीं फट् स्वाहा	
द्वादश दिन मास वर्ष में, अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर ।	ओं नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय२ हुं३ हन २ दुष्टानां ह्लां ह्लं स्वाहा	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग नक्षत्र	रोगशांत्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोग दिनसंख्या १च	२च	३च	४च	रोगशांत्यर्थ जपनीयमन्त्राः	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदानम्	९	११	१	२०	मृत्युञ्जयमन्त्र जपः	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य देवे ।
भरणी	गो-अन्नदिदान	०	८०	४०	११	यमायतवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में तिल चावल
कृत्तिका	स्वर्णदानम्	९	११	१६	२७	अग्निर्मर्धेति मन्त्रः	कछुए के मुख में घी दें
रोहिणी	घृतदानम्	३	९	१८	३०	ब्रह्मायेति मन्त्रः	सर्प को दूड़ दही खिलावे
मृगशिरा	तिलदानम्	९	५	७	१०	इमं देवेति मन्त्रः	खरगोश को दूध पिलावे
आर्द्रा	गोदान	०	१८	०	०	नमस्ते रुद्रइति मन्त्रः	बकरी के मुख में रक्त डालें
पुनर्वसु	पीतलदानम्	७	१४	२	२१	अदितिद्यौ रितिमन्त्रः	सूअर को धान्य खिलावे
पुष्य	तैलान्नदानम्	६	७	१०	२१	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डाले
आश्लेषा	गोऽजादिदानम्	०	०	४१	०	नमोऽस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
मघा	वस्त्राज्यदानम्	१५	७	१७	२०	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलावे
पू. फा.	भोजनदानम्	०	१५	०	३०	भगप्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दे
उ. फा.	अन्नदानम्	७	१४	७	६०	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलावे
हस्त	तैलदानम्	१५	१७	१५	०	उदुत्यंजातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलावे
चित्रा	दुग्धदानम्	११	९	९	१६	त्वष्टा तुरीगति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर व धतूरे के फूल वन में रखे
स्वाती	गोघृतदानम्	६०	१७	३०	०	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़ चावल खिलावे
विशाखा	गोस्वर्णदानम्	१५	०	४	१३	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़ भात की बलि दे
अनुराधा	गोघृतदानम्	६०	१२	३६	३०	नमोमित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुलथी सहित भात गुड़ दे
ज्येष्ठा	तिलदानम्	६९	९	६	४	त्रातारमिन्द्रमितिमन्त्रः	बन्दरों को गुड़ तिल डाले
मूल	रौप्यपात्रदा	०	९	१५	६	मातापुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलावे
पू. षा.	गोमुक्तादानम्	०	१५	२४	१०	आपो धर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोते की बलि दे
उ. षा.	भोजनदानम्	३०	२४	२६	१६	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डाले
श्रवण	श्रीफलदानम्	६०	२४	६	९	विष्णोररा. मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त मीठा की बलि दे
धनिष्ठा	अश्वान्नदानम्	१५	४	२०	२१	वसोःपवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही अन्न की बलि दे
शतभिषा	भोजनान्नदानम्	४	४५	३	२२	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलावे
पू. भा.	भोजनदानम्	०	१२	२१	१९	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि दे
उ. भा.	अन्नदानम्	१०	३	६	१५	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलावे
रेवती	फल दा. कन्यापू.	१८	१०	९	२०	पूषन्तवेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि दे

जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है उसे यहां कष्टावली में 'रोग नक्षत्र' का नाम दिया है ! रोग नक्षत्र को जानकर इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा । 'रोग निवृत्यर्थ बलिदान'—वाले कालम में घोड़ी हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलीद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें—ऐसा तीन दिन करें । साथ ही दान और जप भी करें ।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	८	९	१०
नक्षत्र	मूल	भ.	कृ.	रो.	श्लेषा

जन्मै सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय । चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय । गये गए ना बहुरे कूए नीर सुकाय ।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े । योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है ।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवमस्थानेश को दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है ।

विवाह स्त्रीसुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है ।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है ।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर व गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है ।

(४) सा० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है ।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिक स्पष्ट से सूर्य-स्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो तब पिता की मृत्यु होती है ।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उन की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है ।

नोट—

इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मन्त्र पृथक् पृथक् लिखा है वह न कर सके तो महामृत्युञ्जय ही करे । जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है उस चरणानुसार कष्ट दिन जाने, शून्य से विशेष भय जाने, दान जप करे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) रोग के शुरु दिन में जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा श्रवण या रिक्ता ४।९।१४ आर्द्रा या घनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पू.षा. या हस्त व पू.भा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

नाड़ी	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	आद्या
पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल.	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो	मध्या
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पूषा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्या

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निःसंदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग-त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०—१८वां, नक्षत्र दंष्ट्रा (दादढ़ा) होती है। काल के मुख दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांग चक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अङ्ग विशेष में पीड़ा कष्ट घाव फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु—विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो दैवज्ञ तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर निम्न-लिखित कालांग चक्र में दिए भावों के अनुसार उस 'पीड़ित-भाव' को देखे। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की सम्भावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति करावे। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांक चक्र

भाव→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अङ्ग→	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	वस्ति (मूत्राशय)	लिङ्ग गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद-युगल

तिथिकष्टावली

ति.	तिथीश	कष्टदि	बलि	दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्यबलि	घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायसबलि	भोजनदान
३	काम	७	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्नबलि	मूंगादान
५	सर्प	२१	पायसबलि	दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि	क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि	रौप्यदान
३०	पितर	१८	सूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली यन्त्रम्

वा.	वारेश	क. दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कुछ दैवज्ञ यहां भावों की जगह मेषादि राशियों की कल्पना करके इसी तरह से विचार करते हैं।

बाल-रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिलका, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल अगर, गाय का घी, इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खूं खुर्दनं खं हुं फट् स्वाहा"—इस मन्त्र का उच्चारण करे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहगोचराद्यैर्वंशा क्रमाद्ग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रह -दान-पदार्थाः												जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरीरक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उदड़	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल घोड़ा	शंप्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहुवे नम	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मसरी श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्येशवत्	मुन्येशमन्त्रः	मुन्येशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्ष पर्यन्त तीस या कम से कम १२ व्रत करे। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके ता लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दूर्वायुक्त आर्घ प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्र रोग, चर्म रोग एव अन्य शारीरिक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्य शान्ति का सरल उपचार :—लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग जैसे चादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना;

सोमवार के व्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पंक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र को ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही—चावल, घी-खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्धयर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्र शान्ति का सरल उपचार :- सफेद जुराब, रूमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चांदी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति—सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावे।

मंगल शान्ति का सरल उपचार :—लाल रंग की वस्तुओं का उपयोग रात को लाल वस्त्र पहनें, तांबे के बर्तन, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करें। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार से तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रह जन्म नेष्ट फल से मुक्ति मिलती है।

बुध शान्ति का सरल उपचार :—हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं हरा रूमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार व्रत करें। उस दिह पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करें। पीत पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डू भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र चने की दान आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धि कर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पति शान्ति का सरल उपचार ;—पीले वस्त्र रूमाल आदि पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथाशक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावें। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्र शान्ति का सरल उपचार :-सफेद वस्त्र, सफेद रूमाल आदि सफेद फूल, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिव पूजन।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से आरम्भ करे : व्रत ५१ या १९ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ में डाल दे। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनि शान्ति का सरल उपचार :—घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रूमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु, केतु शान्ति का सरल उपचार :-नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पेन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थं स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत, चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों, मालती पुष्प उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबाल कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल एवं से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, पवन, देवता ब्राह्मणों की वेदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिविचार—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वा रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्थान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६. कंगनी ७. **अष्टगंध**—अंगर, कस्तूरी, कुकुम कपूंर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कपूंर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत सफेद चन्दन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र

राशिज्ञाने विशेषः— नक्षत्र वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता । जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें । (संयोग वाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	नक्षत्राणि	प्रथमचरण	द्वितीय च०	तृतीय च०	चतुर्थ च०
मेष	अश्विनी	चू	चे	चो	ला
	भरणी	ली	लू	ले	लो
	कृत्तिका	अ	०	०	०
वृष	कृत्तिका	०	ई	उ	ए
	रोहिणी	ओ	वा	वी	वू
	मृगशिर	वे	वो	०	०
मिथुन	मृगशिर	०	०	का	की
	आर्द्रा	कु	घ	ङ	छ
	पुनर्वसु	के	को	ह	०
कर्क	पुनर्वसु	०	०	०	हि
	पुष्य	हु	हे	हो	डा
	आश्लेषा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मघा	मा	मी	मू	मे
	पू. फा.	मो	टा	टी	टू
	उ. फा.	टे	०	०	०
कन्या	उ. फा.	०	टो	पा	पी
	हस्त	पू	ष	ण	ठ
	चित्रा	पे	पो	०	०
तुला	चित्रा	०	०	रा	री
	स्वाती	रू	रे	रो	ता
	विशाखा	ती	तू	ते	०
वृश्चिक	विशाखा	०	०	०	तो
	अनुराधा	ना	नी	नू	ने
	ज्येष्ठा	नो	य	यी	यू
धनु	मूल	ये	यो	भा	भी
	पू. षा.	भू	ध	फ	ढ
	उ. षा.	भे	०	०	०
मकर	उ. षा.	०	भो	जा	जी
	अभिजित	जू	जे	जो	खा
	श्रवण	खी	खू	खे	खो
	धनिष्ठा	गा	गी	०	०
कुम्भ	धनिष्ठा	०	०	गू	गे
	शतभिषा	गो	सा	सी	सू
	पू. भा.	से	सो	दा	०
मीन	पू. भा.	०	०	०	दी
	उ. भा.	दू	थ	झ	ञ
	रेवती	दे	दो	चा	चि

ध्यान दें,—नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण इन अक्षरों से नहीं होता । यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा तो ङ की जगह घ, ञ की जगह दु तथा ण की जगह पू से नाम प्रारम्भ करें । ऐसा करने से नक्षत्र भेद नहीं होता ।

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते—विवाहे सर्वं मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो । उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तरा-षाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण १-१ चरण मानो । इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थं यहां लिखा गया है ।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम् ॥
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या ॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः ।
भोजा खागी मकरः गुसद कुम्भः दीथझञची मीनः ॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहां जो अक्षर प्रदक्षता है, वहां वह भी ले लिया गया है । जैसे—मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रह होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नो चरणों की एक राशि मेष हुई । इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें ।

टिप्पणी—(१) जज्ञोर्ज्ञः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः । कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । एवं त्यालारानस्य कुम्भराशि । (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात् । चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोको विवाहः षोडशी क्रिया ॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभाता रहती है । नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फला-देश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है । इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है । निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनपति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है । ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है । चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक (Tide Factor) सूर्य के ज्वार-भाटाक से दुगुना है । चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है । आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है । अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की पारिपाटी फलितज्ञों में हैं ।

नवीन-फलितवेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं । इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है । चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है । अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है । हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी का महत्त्व है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०४५ वि०)

राशि	वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १३ जून तक)	आषाढ़ (१४ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	शुभ में खर्च, स्थानान्तरण का विचार, चित्त खिन्न, सेहत मध्यम, कोष में कमी, कारोबार प्राय: ठीक, ता. अप्रैल १४, १५, २३, २४, २५, मई ३, ४, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजी जनों से असहयोग, स्थिर सम्पत्ति विवाद, शत्रु प्रबल, कारोबार कमजोर, तारीख मई २०, २१, २२, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	धन हानि भय, निजी जनों से वैमत्य, सन्तान के लिए विशेष खर्च, कारोबार में हानि, तारीख जून १७, १८; २७, २८, जुलाई ५, ६, १४, १५ अशुभ।
वृष	सेहत ठीक, आमदन से खर्च ज्यादा, सन्तति सुख, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, तारीख अप्रैल १६, १७, २६, २७, मई ५, ६ अशुभ।	मन अशान्त, आर्थिक लाभ, कारोबार में रुकावट, कार्यान्तर का असफल प्रयास, वृथा विवाद से बचें, नीच से भय, तारीख मई १४, १५, २३, २४, जून १, २, ३, १०, ११ अशुभ।	धन लाभ, सेहत ठीक, घरेलू झंझट बढ़ें, शत्रु प्रबल, कारोबार में रुकावट व हानि, तारीख जून १९, २०, २१, २९, ३०, जुलाई ७, ८ अशुभ।
मिथुन	शत्रु नाश, जमीन जायदाद में वृद्धि, स्त्री कष्ट, यात्रा में सुख, तारीख अप्रैल १८, १९, २०, २८, २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	सेहत ठीक, कारोबार में लाभ हो, उत्साह बढ़े, गुप्त चिन्ता, स्त्री कष्ट, भाग्य साथ न दे, तारीख मई १६, १७, २५, २६, २७, जून ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत कमजोर, धन लाभ होकर भी हानि हो, उत्साह वृद्धि, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट, तारीख जून २२, २३, जुला. १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
कर्क	लाभ होकर हाथ से निकले, मित्रों से मेल-मिलाप, शरीर कष्ट, मन खिन्न, स्त्री चिन्ता, तारीख अप्रैल २१, २२, मई १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	आर्थिक हानि, शत्रु हत प्रभ, यात्रा में चोट-भय, चोर-उचक्कों से सावधान, कारोबार ठीक, तारीख मई १८, १९, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	मन खिन्न, कर्जा बढ़े, चोट भय, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, आमदन से खर्च ज्यादा, तारीख जून १४, १५, १६, २४, २५, २६, जुलाई ३, ४, १२, १३ अशुभ।
सिंह	लाभ, फिर भी खर्च का फिकर, 'कार्यान्तर से विशेष लाभ, भ्रातृ सुख, मित्रों से मदद मिले, सन्तति चिन्ता, तारीख अप्रैल १४, १५, २३, २४, २५, मई ३, ४, १२, १३ अशुभ।	उदर विकार, सन्तान की ओर से चिन्ता, स्त्री हेतु विशेष खर्च, कारोबार ढ़ीला, तारीख मई २०, २१, २२, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	वायु विकार, अर्थ लाभ, योजना असफल, गुप्त चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार कुछ ठीक, तारीख जून १७, १८, २७, २८, जुलाई ५, ६, १४, १५ अशुभ।
कन्या	सेहत ठीक, धन लाभ, सन्तान से सुख, मित्रों से अनबन, स्त्री सुख, शत्रु वृद्धि, भाग्य साथ दे। तारीख अप्रैल १६, १७, २६, २७, मई ५, ६ अशुभ।	सम्पत्ति विवाद, वृथा कलह, घरेलू झंझट, शत्रु प्रबल, कारोबार कुछ ठीक, तारीख मई १४, १५, २३, २४, जून १, २, ३. १०, ११ अशुभ।	सेहत कुछ कमजोर, अर्थ लाभ, घरेलू उलझनें बढ़ें, परीक्षा में असफलता, निजी व्यक्ति से मनोबल प्रबल हों, ता. जून १९, २०, २१, २९, ३०, जुलाई ७, ८ अशुभ।
तुला	सेहत कुछ कमजोर, निजी जनों से अनबन, पराक्रम बढ़े, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, कारोबार कमजोर, तारीख अप्रैल १८, १९, २०, २८; २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	सेहत ठीक, निजी जनों से वैमत्य, सन्तान की ओर से चिन्ता, स्त्री से सहयोग, कारोबार की चिन्ता, तारीख मई १६, १७, २५, २६, २७, जून ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत ठीक, शत्रु शिर उठावें, सन्तान की तरफ से चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार मध्यम, तारीख जून २२, २३, जुलाई १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
वृश्चिक	नेत्र कष्ट, उत्साह बढ़े, जमीन जायदाद सम्बन्धी विवाद, सन्तति सुख, शत्रु प्रबल, स्त्री सुख, तारीख अप्रैल २१, २२, मई १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	सम्पत्ति लाभ की योजना, धन हानि भय, वृथा कलह से बचें, स्त्री कष्ट, शत्रु शिर उठायें, कार्यान्तर का विचार, तारीख मई १८, १९, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	शरीर कष्ट, आर्थिक हानि, विश्वस्त आदमी से हानि भय, वृथा कलह, स्त्री सुख, तारीख जून १४, १५, १६, २४, २५, २६, जुलाई ३, ४, १२, १३ अशुभ।
धनु	शरीर कष्ट, कर्जा चढ़े, कारोबार में लाभ होकर हानि, निजी जनों से अनबन, सन्तति चिन्ता, ता. अप्रैल १४, १५, २३, २४, २५, मई ३, ४, १२, १३ अशुभ।	समय उलझन पूर्ण है, विवाद से बचें, निजीजनों से परेशानी, स्त्री सम्बन्धी चिन्ता, कारोबार में रुकावट, तारीख मई २०, २१, २२, ३०, ३१, जून ८, ९ अशुभ।	राज भय, विवाद से बचें, सन्तान से सुख, स्त्री कष्ट, कारोबार में रुकावट, तारीख जून १७, १८, २७, २८, जुलाई ५, ६, १४, १५ अशुभ।
मकर	होंसला बना रहे, आर्थिक हानि, कर्जा बढ़े, निजी जनों से मेल, सम्पत्ति लाभ, तारीख अप्रैल १६, १७, २६, २७, मई ५, ६ अशुभ।	धन हानि का योग है, शनि-मंगलवार को आर्थिक हानि, सम्पत्ति लाभ, सन्तान सुख, स्त्री सुख, कारोबार यथावत्, ता. मई १४, १५, २३, २४, जून १, २, ३, १०, ११ अशुभ।	कर्जे से बचें, सम्पत्ति लाभ, सन्तान सुख, स्त्री सुख, कारोबार अपेक्षाकृत ठीक, तारीख जून १९, २०, २१, २९, ३०, जुला. ७, ८ अशुभ।
कुम्भ	मन खिन्न, उदर विकार, धन लाभ, निजी जन सहयोग, मित्र सुख, सन्तति चिन्ता, शत्रु प्रबल, तारीख अप्रैल १८, १९, २०, २८, २९, ३०, मई ७, ८ अशुभ।	आंख में मस्तक पीड़ा, अकस्मात् हानि भय, स्त्री कष्ट, कारोबार में नुकशान, तारीख मई १६, २७, २५, २६, २७, जून ४, ५, १२, १३ अशुभ।	सेहत का ध्यान रखें, पित्त विकार, वृथा व्यय, जायदाद से लाभ, कारोबार में नुकसान, तारीख जून २२, २३, जुलाई १, २, ९, १०, ११ अशुभ।
मीन	सेहत ठीक, धन लाभ, निजी जन से सुख, सन्तति कष्ट, शत्रु कमजोर, स्त्री से सन्तोष, कारोबार कमजोर, तारीख अप्रैल २१, २२, मई १, २, ९, १०, ११ अशुभ।	धन लाभ अच्छा, सेहत ठीक, निजी लोगों से अनबन, नीच से हानि भय, पैर पर चोट, कार्यान्तर का असफल विचार, ता. मई १८, १९, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ।	लाभ होकर भी हाथ से जाये, निजी जनों से सहयोग, आमदन से खर्च ज्यादा, मंगल-राहु का दान करें, तारीख जून १४, १५, १६, २४, २५, २६, जुलाई ३, ४, १२, १३ अशुभ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

२१, २२, मई १, २, ६, १०, ११ अशुभ । ता. मई १८, १९, २८, २९, जून ६, ७ अशुभ । १५, १६, २४, २५, २६, जुलाई ३, ४, १२, १३ अशुभ ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०४५ वि०)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)	भाद्रपद (१६ अगस्त से १५ सितम्बर तक)	आश्विन (१६ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक)
मेष	पित्त विकार, धन लाभ, भ्रातृ सुख, नेक आदमियों से मेल मिलाप, असफल योजना, गुप्त चिन्ता, ता. जुलाई १६, २४, २५, अगस्त १, २, १०, ११, १२ अशुभ ।	पित्त विकार, शरीर कष्ट, धन लाभ, असफल योजना, शत्रु प्रवल, कारोबार में रुकावट, तारीख अगस्त २०, २१, २२, २९, ३०, सितम्बर ७, ८ अशुभ ।	क्रोध बढ़े, धन लाभ लेकिन हानि भय, अच्छे लोगों से मेल, स्त्री सुख, बनते काम में रुकावट, तारीख सितम्बर १७, १८, २५, २६, अक्टूबर ४, ५, १४, १५ अशुभ ।
वृष	सेहत ठीक, धन लाभ, निजी जनों से अनबन, स्त्री सुख, कारोबार में हानि भय, क्रोध बढ़े, तारीख जुलाई १७, १८, २६, २७, अगस्त ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ ।	सेहत ठीक, वित्त लाभ, सज्जन व्यक्ति से मेल मिलाप, सम्पत्ति लाभ, सन्तति सुख, स्त्री सुख, कार्यान्तिर का विचार, तारीख अगस्त २३, २४, ३१, सितम्बर १, ९, १० अशुभ ।	वायु विकार, धन हानि, निजी जनों से अनबन, सन्तान की तरफ से चिन्ता, शत्रु भय, स्त्री सुख, तारीख सितम्बर १९, २०, २७, २८, अक्टूबर ६, ७, ८ अशुभ ।
मिथुन	वायु विकार, नेत्र कष्ट, उत्साह वृद्धि, स्त्री चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, आय से खर्च अधिक, तारीख जुलाई १९, २०, २१, २८, २९, अगस्त ६, ७, १५ अशुभ ।	शरीर सुख, उत्साह वृद्धि, बन्धुजन सहयोग, मन खिन्न, भाग्योदय में बाधा, कारोबार कमजोर, तारीख अगस्त १६, १७, २५, २६, सितम्बर २, ३, १२, १३ अशुभ ।	शिर पीड़ा, मन परेशान, उत्साह बना रहे, घरेलू झंझट, चिन्ता, कारोबार में उलझनें, तारीख सितम्बर २१, २२, २९, ३०, अक्टूबर ९, १० अशुभ ।
कर्क	सेहत ठीक, कार्यान्तिर से लाभ, सम्पत्ति विवाद, सन्तान से सुख, स्त्री चिन्ता, कारोबार कमजोर, तारीख जुलाई २२, २३, ३०, ३१, अगस्त ८, ९, अशुभ ।	चित्त खिन्न, धन लाभ होकर हानि भय, निजी जन सुख, स्त्री कष्ट, कारोबार यथावत, तारीख अगस्त १८, १९, २७, २८, सितम्बर ४, ५, ६, १४, १५ अशुभ ।	रोग भय, धन हानि, निजी जनों से विरोध, सन्तान से सुख, स्त्री कष्ट, खर्च ज्यादा, तारीख सितम्बर १६, २३, २४, अक्टूबर १, २, ३, ११, १२, १३ अशुभ ।
सिंह	वायु विकार, मन परेशान, निजी जनों से वैमत्य, शत्रु प्रवल, कारोबार में कुछ रद्दोबदल, खर्च ज्यादा, तारीख जुलाई १६, २४, २५, अगस्त १, २, १०, ११, १२ अशुभ ।	सेहत ठीक, धन लाभ, मित्र बन्धुओं से मेल, सन्तति चिन्ता, स्त्री सम्बन्धी उलझन, कारोबार ठीक, तारीख अगस्त २०, २१, २२, २९, ३०, सितम्बर ७, ८ अशुभ ।	रोग भय, अचानक कष्ट व खर्च, क्रोध बढ़े, स्वतन्त्र कारोबार में हानि, साझेदारी में लाभ, तारीख सितम्बर १७, १८, २५, २६, अक्टूबर ४, ५, १४, १५ अशुभ ।
कन्या	पित्त विकार, धन लाभ, निजी जनों का सहयोग, घरेलू झंझट बढ़ें, यात्रा में कष्ट, तारीख जुलाई १७, १८, २६, २७, अग. ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ ।	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, वृथा विवाद से बचें, निजी जनों से अनबन, स्त्री कष्ट, शत्रु प्रवल, कारोबार में रुकावट, तारीख अगस्त २३, २४, ३१, सितं. १, ९, १० अशुभ ।	पित्त विकार, धन लाभ, निजीजन विरोध, शत्रु बढ़ें, स्त्री हेतु खर्च, लाभ हो, तारीख सितम्बर १९, २०, २७, २८, अक्टू. ६, ७, ८ अशुभ ।
तुला	सेहत गड़बड़, आर्थिक लाभ होकर हानि, उत्साह कमजोर, पुत्र चिन्ता, शत्रु प्रवल, तारीख जुलाई १९, २०, २१, २८, २९, अगस्त ६, ७, १५ अशुभ ।	सेहत ढीली, उत्साह में कमी, सन्तति पक्ष से चिन्ता, चोट भय, हानि भय, तारीख अगस्त १६, १७, २५, २६, सितम्बर २, ३, १२, १३ अशुभ ।	शरीर कष्ट, उत्साह वृद्धि, सुख लाभ, अशुभ समाचार, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक, तारीख सितम्बर २१, २२, २९, ३०, अक्टूबर ९, १० अशुभ ।
वृश्चिक	सेहत कुछ ठीक, शिर में रोग, निजी जनों से सुख, वृथा कलह, स्त्री सुख, कार्यान्तिर से लाभ, तारीख जुलाई २२, २३, ३०, ३१ अगस्त ८, ९, अशुभ ।	क्रोध बढ़े, अकारण झंझट, निजी जनों से अनबन, मनोबल प्रबल, कारोबार कुछ कमजोर, तारीख अगस्त १८, १९, २७, २८, सितम्बर ४, ५, ६, १४, १५ अशुभ ।	अचानक लाभ होकर हानि, क्रोध बढ़े, अकारण कलह, सन्तान व स्त्री सुख, कार्यान्तिर का विचार, तारीख सितम्बर १६, २३, २४, अक्टू. १, २, ३, ११, १२, १३ अशुभ ।
धनु	लाभ होकर भी हानिभय, उत्साह बना रहे, मित्रों से मेल, शत्रु कमजोर, गुप्त चिन्ता, तारीख जुलाई १६, २४, २५, अगस्त १, २, १०, ११, १२ अशुभ ।	गुप्त चिन्ता, कर्जा चढ़े, पारिवारिक उलझनें, शिव पूजन से कल्याण, तारीख अगस्त २०, २१, २२, २९, ३०, सितम्बर ७, ८, अशुभ ।	धन हानि, वृथा विवाद, घरेलू झंझट, यात्रा में कष्ट, स्त्री सुख, कारोबार में कुछ रद्दोबदल, तारीख सितम्बर १७, १८, २५, २६, अक्टू. ४, ५, १४, १५ अशुभ ।
मकर	वायु रोग से पीड़ा, बीमारी पर खर्च, निजी जनों से विवाद, योजना सफल, स्त्री हेतु खर्च, कारोबार कुछ कमजोर, तारीख जुला. १७, १८, २६, २७, अग. ३, ४, ५, १३, १४ अशुभ ।	शरीर अस्वस्थ, वायु रोग, उदर विकार, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक, खर्च बढ़े, तारीख अगस्त २३, २४, ३१, सितम्बर १, ९, १० अशुभ ।	क्रोध बढ़े, मन अशान्त, आमदन से खर्च ज्यादा, कारोबार में रुकावट, वंश वृद्धि, तारीख सितम्बर १९, २०, २७, २८, अक्टूबर ६, ७, ८ अशुभ ।
कुम्भ	कष्ट, हानि भय, नीच व्यक्ति से सावधान, मित्र बन्धु से सुख, स्त्री कष्ट, कारोबार में कुछ रद्दोबदल, तारीख जुलाई १९, २०, २१, २८, २९, अगस्त ६, ७, १५ अशुभ ।	मन चिन्तित, धन लाभ, योजना सफल, स्त्री कष्ट, कारोबार में हानि भय, तारीख अगस्त १६, १७, २५, २६, सितम्बर २, ३, १२, १३ अशुभ ।	हानि, कष्ट भय, अच्छे लोगों से मेल, वायु रोग, कार्य हानि एवं राज भय, तारीख सितम्बर २१, २२, २९, ३०, अक्टू. ९, १० अशुभ ।
मीन	सेहत कुछ ठीक, अर्थ लाभ, निजी जनों से स्नेह, मित्रों से सुख, सन्तान हेतु खर्च, कारोबार की चिन्ता, तारीख जुलाई २२, २३, ३०, ३१, अगस्त ८, ९ अशुभ ।	सेहत ठीक, हानि भय, बन्धु सुख, स्त्री सुख, क्रोध बढ़े, व्यय अधिक, तारीख अगस्त १८, १९, २७, २८, सितम्बर ४, ५, ६, १४, १५ अशुभ ।	रोग, अशुभ समाचार, निजी लोगों से मदद, सन्तान लाभ, स्त्री कष्ट, हानि योग, तारीख सितम्बर १६, २३, २४, अक्टूबर १, २, ३, ११, १२, १३ अशुभ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०४५ वि०)

राशि	कार्तिक (१६ अक्टूबर से १४ नवम्बर तक)	मार्गशीर्ष (१५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक)	पौष (१५ दिसम्बर से १२ जनवरी १९८९ ई. तक)
मेष	स्वास्थ्य गड़बड़, कर्जा चढ़े, चिन्ता, उत्साह भंग, कारोबार कमजोर, शनि-मंगल-सू. दान से कल्याण, ता. अक्टू. २३, २४, ३१, नवम्बर १, २, १०, ११ अशुभ ।	सेहत गड़बड़, वित्त लाभ, सम्पत्ति विवाद, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ, ता. नवम्बर १९, २०, २७, २८, २९, दिसम्बर ७, ८, ९ अशुभ ।	वायु रोग, धन लाभ होकर हाथ से निकले, उत्साह वृद्धि, निजी जन विरोध, गुप्त चिन्ता, ता. दिसम्बर १६, १७, २५, २६, जनवरी (१९८९) ४, ५, १२ अशुभ ।
वृष	वित्त हानि, सम्पत्ति विवाद, योजना में हानि भय, मनोबल प्रबल, कारोबार पूर्ववत्, ता. अक्टू. १६, १७, २५, २६, नवम्बर ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ ।	वृथा क्रोध, घरेलू झंझट, यात्रा में कष्ट भय, कारोबार ठीक, व्यय अधिक, ता. नवम्बर २१, २२, ३०, दिसम्बर १, १०, ११ अशुभ ।	वित्त हानि, निजी लोगों से सहयोग, योजना सफल, कारोबार में रुकावट, ता. दिसं. १८, १९, २७, २८, २९, जनवरी (१९८९) ६, ७ अशुभ ।
मिथुन	शिर व नेत्र पीड़ा, धन लाभ होकर हानि भय, उत्साह प्रबल, क्रोध बढ़े, सम्पत्ति लाभ योग, ता. अक्टू. १८, १९, २०, २७, २८, नवं. ५, ६, ७ अशुभ ।	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, निजी जनों से सहयोग, सन्तान सुख, कारोबार ठीक, लाभ अच्छा, तारीख नवम्बर १६, २३, २४, दिसम्बर २, ३, ४, १२, १३ अशुभ ।	चिन्ता, धन लाभ, निजी जन सहयोग, मनोबल प्रबल, कारोबार कमजोर, ता. दिसं. २०, २१, २२, ३०, ३१, जनवरी (१९८९) ८, ९ अशुभ ।
कर्क	वायु रोग, अकारण विवाद से बचें, निजी जनों से वैमनस्य, वंश वृद्धि व कार्य में सफलता, ता. अक्टूबर २१, २२, २९, ३०, नवम्बर ८, ९ अशुभ ।	उदर विकार, सम्पत्ति लाभ, स्त्री कष्ट, धन हानि, वृथा व्यय, वृथा विवाद से बचें, तारीख नवम्बर १७, १८, २५, २६, दिसं. ५, ६, १४ अशुभ ।	सेहत ठीक, अच्छे लोगों से मेल, पैर पर चोट भय, कारोबार सम्बन्धी विवाद, मासान्त में हानि, ता. दिसम्बर १५, २३, २४, जनवरी (१९८९) १, २, ३, १०, ११ अशुभ ।
सिंह	रोग भय, वित्त हानि, जायदाद से लाभ, स्त्री सुख, कार्य में बाधा, तारीख अक्टूबर २३, २४, ३१, नवम्बर १, २, १०, ११ अशुभ ।	क्रोध बढ़े, नेक व्यक्ति से मेल मुलाकात, शत्रु हतप्रभ, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, तारीख नवम्बर १९, २०, २७, २८, २९, दिसं. ७, ८, ९ अशुभ ।	स्वास्थ्य विगड़े, धन लाभ, सन्तान कष्ट, कारोबार में लाभ होकर हानि, ता. दिसम्बर १६, १७, २५, २६, जनवरी (१९८९) ४, ५, १२ अशुभ ।
कन्या	क्रोध प्रकृति, निजी जन सहयोग, प्रिय मिलन, कारोबार में हानि भय, ता. अक्टूबर १६, १७, २५, २६, नवम्बर ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ ।	सेहत कमजोर, वित्त लाभ, निजी जनों से अनबन, सन्तान की तरफ से चिन्ता, आमदन से खर्च ज्यादा, तारीख नवम्बर २१, २२, ३०, दिसं. १, १०, ११ अशुभ ।	मन खुश, विवाद से दूर रहें, स्त्री सुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार, ता. दिसम्बर १८, १९, २७, २८, २९, जनवरी (१९८९) ४, ५, १२ अशुभ ।
तुला	मन अशान्त, घरेलू झंझट, स्त्री पक्ष से चिन्ता, कारोबार में रुकावट से हानि, ता. अक्टूबर १८, १९, २०, २७, २८, नवम्बर ५, ६, ७ अशुभ ।	सेहत ठीक, मित्र बन्धुओं से अनबन, स्त्री चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, हानि भय, ता. नवम्बर १६, २३, २४, दिसंबर १, १०, ११ अशुभ ।	सेहत ठीक, आर्थिक संकट, हिम्मत बनी रहे, गुप्त शत्रु से सावधान, कारोबार यथावत, ता. दिसं. २०, २१, २२, ३०, ३१, जन. (१९८९) ८, ९ अशुभ ।
वृश्चिक	मन ठीक, धन हानि का योग है, सन्तान सुख, शत्रु प्रबल, कार्यान्तर का विचार, आय से व्यय अधिक, ता. अक्टूबर २१, २२, २९, ३०, नवम्बर ८, ९ अशुभ ।	मन खिन्न, असफल योजना, नीच से भय, कारोबार ठीक, शिव पूजन से कल्याण, तारीख नवम्बर १७, १८, २५, २६, दिसं. ५, ६, १४ अशुभ ।	सेहत कमजोर, वायु विकार, हानि भय, सन्तति पक्ष से सन्तोष, शत्रु प्रबल, ता. दिसम्बर १५, २३, २४, जनवरी (१९८९) १, २, ३, १०, ११ अशुभ ।
धनु	वायु विकार, अकारण विवाद का भय, घरेलू झंझट बढ़ें, गुप्त चिन्ता, आमदन ठीक, ता. अक्टूबर २३, २४, ३१, नवम्बर १, २, १०, ११ अशुभ ।	विवाद से बचें, नेत्र व शिर पीड़ा, गुप्त चिन्ता, कारोबार यथावत, तारीख नवम्बर १९, २०, २७, २८, २९, दिसम्बर ७, ८, ९ अशुभ ।	हानि से बचें, सन्तान पक्ष से चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोबार ठीक, ता. दिसम्बर १६, १७, २५, २६, जनवरी (१९८९) ४, ५, १२ अशुभ ।
मकर	पित्त विकार, धन लाभ होकर हाथ से निकले, हौसला बुलन्द रहे, योजना सफल, कारोबार में कुछ रुकावट, ता. अक्टूबर १६, १७, २५, २६, नवं. ३, ४, १२, १३, १४ अशुभ ।	उदर विकार, धन लाभ, निजी जनों से सहयोग, सम्पत्ति विवाद, कारोबार ठीक, सन्तान हेतु खर्च, ता. नवम्बर २१, २२, ३०, दिसम्बर १, १०, ११ अशुभ ।	क्रोध बढ़े, मित्र जनों से विरोध, स्त्री सुख, कारोबार कुछ ठीक, ता. दिसम्बर १८, १९, २७, २८, २९, जन. (१९८९) ६, ७ अशुभ ।
कुम्भ	उदर विकार, धन लाभ, निजी जनों से वैमनस्य, सन्तान की तरफ से चिन्ता, अकस्मात लाभ का योग, ता. अक्टू. १८, १९, २०, २७, २८, नवं. ५, ६, ७ अशुभ ।	सेहत ठीक, धन लाभ, सम्पत्ति सुख, स्त्री सुख, कारोबार ठीक, तारीख नवम्बर १६, २३, २४, दिसंबर २, ३, ४, १२, १३ अशुभ ।	वित्त लाभ, निजी जनों से खट-पट, उत्साह प्रबल, करोबार ठीक, ता. दिसम्बर २०, २१, २२, ३०, ३१, जन. (१९८९) ८, ९ अशुभ ।
मीन	सेहत ठीक, स्वतन्त्र कारोबार में हानि भय, निजी जनों से अनबन, क्रोध बढ़े, तारीख अक्टूबर २१, २२, २९, ३०,	सेहत ठीक, स्वतन्त्र कार्य में हानि भय, उत्साह वृद्धि, कारोबार में मन न लगे, कारोबार संबन्धी विवाद, ता. नवम्बर	सेहत ठीक, चोर उचक्कों से सावधान, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार ता. दिसम्बर १५, २३, २४, जनवरी (१९८९) [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अनवन. क्रोध वढ़े. तारीख अक्टूबर २१. २२. २६, ३०. | चार में मन न लगे, कारोबार संबन्धी विवाद, ता. नवम्बर | का विचार ता. दिसम्बर १५, २३, २४, जनवरी (१९८९)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारह राशियों का मासिक फलादेश (संवत् २०४५ वि०)

राशि	माघ (१३ जनवरी १९८९ से ११ फरवरी तक)	फाल्गुन (१२ फरवरी से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)
मेष	सेहत विगड़े, वृथा व्यय, स्त्री सुख, करोबार ठीक, योजनाएं सफल, तारीख जनवरी १३, २१, २२, २३, ३१, फरवरी १, ९, १० अशुभ ।	उदर विकार, धन लाभ, सम्पत्ति सुख, स्त्री सुख, भाग्य साथ न दे, कारोबार में रुकावट, ता. फरवरी १७, १८, १९, २७, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ ।	वायु विकार, निजी जनों से हानि भय, चिन्ता, स्त्री सुख, कारोबार में हानि, तारीख मार्च १७, १८, २७, २८, अप्रैल ५, ६ अशुभ ।
वृष	उदर विकार, धन लाभ, भ्रातृ सुख, अच्छे लोगों से मेल, शुभ यात्रा, स्त्री कष्ट, ता. जनवरी १४, १५, १६, २४, २५, फरवरी २, ३, ४, ११ अशुभ ।	सेहत ठीक, उत्साह प्रवल, धन लाभ, स्त्री सुख, कारोवार ठीक, लाभ योग, तारीख फरवरी १२, २०, २१, मार्च २, ३, १०, ११ अशुभ ।	वित्त हानि, शत्रु शिर उठायें, कारोबार कुछ ठीक, सन्तान की तरफ से चिन्ता, तारीख मार्च १९, २०, २१, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ ।
मिथुन	मन प्रसन्न, धन लाभ, निजी जनों से सहयोग, शत्रु कमजोर, कारोबार ठीक, तारीख जनवरी १७, १८, २६, २७, फर. ५, ६ अशुभ ।	सेहत ठीक, धन लाभ, निजी जनों से अनवन, सन्तति चिन्ता, कारोवार कुछ ठीक, आय से व्यय अधिक, ता. फरवरी १३, १४, २२, २३, २४, मार्च ४, ५, १२, १३ अशुभ ।	लाभ योग ठीक, यात्रा में कष्ट, स्त्री सुख, कार्यान्तर से लाभ, तारीख मार्च २२, २३, ३१, अप्रैल १, २, ९, १० अशुभ ।
कर्क	सेहत ठीक, अर्थ लाभ, कष्ट, कारोवार में कुछ रुकावट, ता. जनवरी १९, २०, २९, ३०, फरवरी ७, ८ अशुभ ।	सफल योजना, हाथ तंग, वृथा विवाद, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार, तारीख फरवरी १५, १६, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ ।	सेहत ठीक, नेत्र कष्ट, निजी जन सहयोग, सन्तति सुख, स्त्री चिन्ता, आय से खर्च अधिक, तारीख मार्च १४, १५, १६, २४, २५, २६, अप्रैल ३, ४, ११, १२ अशुभ ।
सिंह	कारोवार, में सफलता, लाभ, यात्रा में कष्ट, आमदन से खर्च अधिक, तारीख जनवरी १३, २१, २२, २३, ३१, फरवरी १, ९, १० अशुभ ।	चिन्ता, निजी जन सहयोग, गुप्त शत्रु भय, किस्मत साथ न दे, तारीख फरवरी १७, १८, १९, २७, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ ।	सेहत ठीक, निजी जनों से अनवन, धन हानि भय, शत्रु प्रवल, कर्जा चढ़े, तारीख मार्च १७, १८, २७, २८, अप्रैल ५, ६ अशुभ ।
कन्या	सेहत ठीक, उत्साह वृद्धि, सत्पुरुषों से मेल, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर का विचार, ता. जनवरी १४, १५, १६, २४, २५, फरवरी २, ३, ४, ११ अशुभ ।	सेहत ठीक, वित्त हानि, स्त्री सुख, यात्रा सुख, कारोवार ठीक, तारीख फरवरी १२, २०, २१, मार्च २, ३, १०, ११ अशुभ ।	शरीर कष्ट, धन लाभ, वन्धु सुख, सन्तान हेतु विशेष खर्च, गुप्त चिन्ता, कारोवार ठीक, तारीख मार्च १९, २०, २१, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ ।
तुला	सेहत ठीक, हानि भय, सन्तान सुख, शत्रु प्रवल, कारोवार विगड़े, तारीख जनवरी १७, १८, २६, २७, फरवरी ५, ६ अशुभ ।	उदर विकार, धन हानि, सन्तति चिन्ता, स्त्री कष्ट, कारोवार ठीक, तारीख फरवरी १३, १४, २२, २३, २४, मार्च ४, ५, १२, १३ अशुभ ।	वायु विकार, निजी जनों से अनवन, यात्रा में हानि भय, स्त्री कष्ट, आय से व्यय अधिक, तारीख मार्च २२, २३, ३१, अप्रैल १, २, ९, १० अशुभ ।
वृश्चिक	उत्साह में कमी, आलस्य वढ़े, निजी जन सहयोग, स्त्री कष्ट, कारोवार ठीक, तारीख जनवरी १९, २०, २९, ३०, फरवरी ७, ८ अशुभ ।	वृथा विवाद, हानि भय, स्त्री सुख, उलझी समस्या का समाधान हो, तारीख फरवरी १५, १६, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ ।	सेहत ठीक, नई योजना, क्रोध वढ़े, कारोवार कमजोर, मासान्त में खर्च विशेष, तारीख मार्च १४, १५, १६, २४, २५, २६, अप्रैल ३, ४, ११, १२ अशुभ ।
धनु	सेहत ठीक, घरेलू झंझट, स्त्री सुख, कारोवार यथावत, ता. जनवरी १३, २१, २२, २३, ३१, फरवरी १, ९, १० अशुभ।	हिम्मत वढ़े, यात्रा में सुख, निजी जन चिन्ता, स्त्री सुख, कार्यान्तर का विचार, ता. फरवरी १७, १८, १९, २७, २८, मार्च १, ८, ९ अशुभ ।	सेहत प्रायः ठीक, लाभ होकर हानि भय, उलझन से वचें, कारोवार पूर्ववत, शनि दान, तारीख मार्च १७, १८, २७, २८, अप्रैल ५, ६ अशुभ ।
मकर	क्रोध वढ़े, धन लाभ, निजी जन विरोध, योजना में रुकावट, शत्रु प्रवल, स्त्री सुख, ता. जनवरी १४, १५, १६, २४, २५, फरवरी २, ३, ४, ११ अशुभ ।	कारोवार में मन लगे, गुप्त शत्रु से सावधान, यात्रा में कष्ट, स्त्री पक्ष शुभ, तारीख फरवरी १२, २०, २१, मार्च २, ३, १०, ११ अशुभ ।	वित्त हानि भय, निजी जन वियोग, शत्रु प्रवल, कार्यान्तर में हानि भय, तारीख मार्च १९, २०, २१, २९, ३०, अप्रैल ७, ८ अशुभ ।
कुम्भ	मन प्रसन्न, धन लाभ, निजी जनों से अनवन, सन्तान पक्ष शुभ, शत्रु कमजोर, ता. जनवरी १७, १८, २६, २७, फर. ५, ६ अशुभ ।	क्रोध वढ़े, धन लाभ, घरेलू झंझट, नीच से भय, कारोवार में रुकावट, तारीख फरवरी १३, १४, २२, २३, २४, मार्च ४, ५, १२, १३ अशुभ ।	पित्त विकार, अर्थ हानि, असफल योजना, स्त्री सुख, मासान्त में कुछ लाभ, तारीख मार्च २२, २३, ३१, अप्रैल १, २, ९, १० अशुभ ।
मीन	वृथा विवाद, धन हानि भय, उत्साह वढ़े, पुत्र-स्त्री पक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार, तारीख जनवरी १९, २०, २९, ३०, फरवरी ७, ८ अशुभ ।	स्वतन्त्र कार्य में हानि भय, सेहत ठीक, सम्पत्ति सुख, योजना सफल, स्त्री सुख, तारीख फरवरी १५, १६, २५, २६, मार्च ६, ७ अशुभ ।	उदर विकार, हानि भय, सम्पत्ति सुख, स्त्री कष्ट, कार्य में लाभ होकर हानि, शनि यंत्र धारण करें, ता. मार्च १४, १५, १६, २४, २५, २६, अप्रैल ३, ४, ११, १२ अशुभ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपका वर्तमान वर्ष कैसा रहेगा

आयु के वर्तमान वर्ष की संख्या, जन्म राशि की संख्या तथा जन्म नक्षत्र की संख्या, इन तीनों को जोड़कर तीन अलग-अलग स्थानों पर रखकर उन्हें क्रमशः २, ४ एवं ३ से गुणा करके इन गुणनफलों को क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग दें। भाग देने पर यदि पहले और तीसरे स्थान पर शून्य बचे तो वर्ष दुःखमय बीते। दूसरे स्थान पर शून्य बचे तो उस वर्ष धन हानि हो। तीनों स्थानों पर शून्य बचे तो मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट हो। यदि तीनों स्थानों पर शून्य के अतिरिक्त और कोई अंक बचे तो वह वर्ष विजय देने वाला समझना चाहिए।

उदाहरण—मान लीजिए आपकी आयु का चालू वर्ष ३५, जन्म राशि कर्क(४) एवं जन्म नक्षत्र पुष्य(८) है। इन तीनों संख्याओं का योग ४७ हुआ। इसे अलग-अलग २, ४, ३ से गुणा करने पर गुणनफल क्रमशः ९४, १८८ एवं १४१ हुए। क्रमशः ७, ८ एवं ६ से भाग देने पर पहले स्थान पर ३, दूसरे स्थान पर ६, तीसरे स्थान पर एक शेष बचा। क्योंकि तीनों स्थानों पर शेष शून्य नहीं, अतः यह वर्ष आपको सब कामों में विजय देने वाला शुभ रहेगा।

आज का दिन कैसा बीतेगा

प्रातःकाल उठकर पंचाङ्ग से ज्ञात करो, कि उस समय कौन सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के अनुसार एक चक्र बनाओ। इस चक्र में जहां एक लिखा है, वहां उस दिन के प्रातःकालीन नक्षत्र को लिखकर उससे आगे के नक्षत्रों को २, ३, ४ आदि अंकों के स्थानों पर लिखते हुए अभिजित सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो। अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है। यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख शान्ति से व्यतीत होगा। उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते और शेष भाग में चिन्ता, दुःख शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र त्रिशूल पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त की अशान्ति का कारण बने।

चक्र

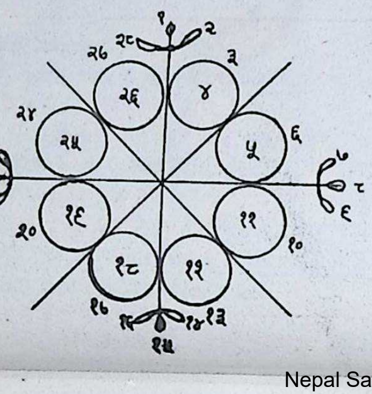

जप कार्य सिद्धि प्रश्न

६	१	८
७	५	३
२	९	४

भगवती माता का स्मरण करके साथ दिये गये पंचदशी यन्त्र पर एक उँगली रखें। यदि उँगली १, ५, ९ पर पड़े तो कार्य सिद्धि शीघ्र हो। यदि ३, ७ पर उँगली पड़े तो किसी की सहायता से कार्य सिद्धि हो, अगर ४ और ६ अंक पर उँगली पड़े तो भी कार्य सिद्धि हो, २ और ८ पर उँगली पड़े तो निश्चित ही कार्य हानि हो ऐसा समझें।

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्त्ता से १०८ अंकों के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलायें या लिखायें। उस अंक को १२ का भाग देकर शेष १, ९, ७ बचे तो देर से कार्य सिद्धि हो, यदि ८, ४, १०, ५ बचे तो देर से कार्य सिद्धि हो, ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३, ६, १२ या ० बचने से शीघ्र कार्य सिद्धि हो ऐसा फल कहें।

कार्याकार्य प्रश्न विचार

दिशा प्रहर संयुक्ता तारकावार मिश्रिताः।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणं॥
पंचके त्वरिता. सिद्धि षष्ठतुर्ये च दिनत्रयम्।
त्रिसप्तके विलम्बस्य द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिवौ॥

अर्थात् प्रश्नकर्त्ता का मुख जिस दिशा में हो उस दिशा की संख्या (पूर्व से लेकर दिशा की संख्या गणना करें) लेकर और प्रश्न के समय नक्षत्र, वार और समय के प्रहर सब मिलाकर आठ का भाग दें। यदि शेष १ या ५ बचे तो कार्य सिद्धि, यदि ६ और ४ बचे तो ३ दिन में कार्य पूर्ण हो, ३ या ७ बचें तो देरी से काम बने। २ और ८ बचे तो कार्य सिद्धि नहीं होगी ऐसा कहना चाहिए।

रोगोत्पत्ति, सन्तान प्रतिबन्धादि में देव दोष ज्ञान

प्रश्न लग्न से ३, ६, ९, १२ स्थान शुभ रहित कोई पाप ग्रह हो तो विष, जल, शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८, १२वें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, गुरु हो तो पितर दोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जल देवी का दोष, सूर्य हो तो देवी दोष (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष), शनि हो तो सती दोष, बुध हो तो भूत दोष, भौम हो तो शाकिनी दोष, स्वधर्म हानि अथवा ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२वें हो तो छाया चुड़ैल, चौथे शनि, मंगल, राहु, चौपटिया, बली वा नीच भौम १, ४, ८वें हो तो श्वश्रु के घर में मसाणी, १० सूर्य-मं. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८वें भौम नणद छोटी, ४ भौम भैण, १० मं.-गुरु सती कुल की, १० मंगल-चन्द्र अपने दुर्गा स्थान का दोष कहना।

यह ग्रह योग न हो तो केवल प्रश्न लग्न से दोष निम्नलिखित जानें। बलवान मेष लग्न में प्रश्न हो तो पितृ दोष कहें, वृष हो तो आकाश देवी का, मिथुन हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय, प्रेत दोष, कन्या में केवल ग्रह दोष, तुला में क्षेत्र पाल का, वृश्चिक में नाग का, धन में कर्मजन्य, मकर में श्री दुर्गा का, कुम्भ में औत प्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान पाप ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता, असाध्य शुभ [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

मनि में योगिनी का दोष कहे। बलवान पाप ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता, असाध्य शुभ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

॥ चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण ॥

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणायगुणात्मने । समस्त-जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सर-फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजन तुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं प्रवर्तितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिवारश्च नक्षत्रंयोगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नान फलं लभेत ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वजा लगावें, तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर, देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें; स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर फल श्रवण करें। कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, भुनी हुई हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, सफेद जीरा और खाण्ड बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह ३ से ६ माशे तक की मात्रा में चै. शु. १ से १५ तक लगातार स्नानादि से निवृत होकर निराहार-मुख खावें। इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है। (वर्षपर्यन्त रक्त-विकार, ज्वरादि नहीं होते)। यदि १५ दिन सेवन न कर सकें तो चैत्र शुक्ल १ को तो अवश्य करें।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा (वाचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न) करें। मिष्ठान्न आदि भोजन करावें। गीत गायन, वाद्य, कथा-श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलास-युक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य—ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्रयरुगादि वर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्य-संकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्य-जननं संवत्सरस्याढयतां, राज्ञां राजकुले जयो विजयते मन्त्रिफलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु बुद्धिस्तथा, सस्यं सर्वं सुखञ्च वत्सरफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादि-फलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन—सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिन का १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल, व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौर मान से वर्ष संख्या ४३,२०,००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है। ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है। विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्र कलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद-संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुप, छः मनु व्यतीत हो गये हैं। अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं और यह २८वां कलियुग है।

अथ युगकाल-व्यवस्था-सतयुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र, वृद्धि योग में सतयुग की उत्पत्ति हुई है, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी। इसमें श्रीनारायण, मत्स्य, कच्छप, बराह और नृसिंह, ये चार अवतार हुए। श्रीमत्स्य जी ने वेदों के चोर, शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिए। भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किए। श्री बराहजी ने हिरण्याक्ष का वध करके पृथ्वी का उद्धार किया, श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकश्यप का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में पाप ०, पुण्य २० विश्वे था और धर्म अपने चारों पद पर कायम था। गौएं कामधेनु के समान होती थीं। प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेदों के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-पर-स्त्री-पराङमुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वरदान प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां, पद्मनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। इनकी तीन लोक तक जाने की गति थी। वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चंद्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन-योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष की थी। इसमें भगवान् के श्री वामन, श्री परशुराम और श्री रामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्र जी ने महाभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में पाप ५, पुण्य १५ विश्वे था और धर्म तीन पैर का रह गया था। गौएं त्रिकाल दूध देने वाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था। वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्मत तपोनिष्ठ, परस्त्री, पर द्रव्य से पारङमुख होते थे, वह शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी, पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रिय का राज्य था। विचित्र विमान द्वारा वह इन्द्र लोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला पर तौलते थे। शूद्र सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८६,४०,०० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण और श्री बलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया तथा अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलदेव जी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में पाप १०, पुण्य १० विश्वे था और धर्म दो पैर वाला रह गया था। गौएं दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देने वाली होती थीं। प्रायः ताम्र, पीतल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी। एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेद के पारंगत होते थे और कुछ असत्य, विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप-यज्ञ देव-पूजनादि करने वाले, किञ्चित् लोभयुक्त, वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चंद्रवंशी राजा हुए। इनकी समेरु पर्यन्त गति थी और प्रायः चारों वर्ण अपने-२ धर्म पर कायम थे। परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र, व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं, जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका है और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष रहेंगे तब शंभल गांव में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ-२ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जाएगा। गौएं दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र, ताम्रपात्र तथा कागज मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान, संध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे एवं शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से लाभ उठायेंगे। शूद्रलोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जाएगा। धूर्तों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां ज्यादा हस्विनी पैदा होंगी। व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेगी। पतिव्रता कहीं-२ देखने में आयेंगीं। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेगा। गौ-ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता-पिता के साथ सकारण प्रेम रहेगा। राज-व्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कल्किपंचोक्तं चिरन्तने—पिशाच-वदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामे करे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति॥ **कलि-माहात्म्यम्-धर्मः** प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरे गतं पृथ्वी-मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योजितम्। राजानोऽर्थपरा अरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्म-कर्म-रहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्यामृता ये नराः॥ **देव देयत्वं** कपटपटवस्तापस जनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतर वृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति॥ **कलौ गंगायः स्थितिः**- पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिने कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव! भगीरथं प्रति गङ्गायावयञ्चयावद्धरण्यां तृणसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे वड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रजाते॥ इवि॥ कलौ दशहस्त्राणीति वाक्यमन्तिमेकलां ज्ञेयम्। नान्येषु कलिष्विति॥

अथ वर्षराजादि फल विचार सं. २०४५ वि.

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०८९, सृष्टि संवत् १९५५८८५०८९, श्री विक्रम् संवत् २०४५, शक संवत् १९१०, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२२४, कलि संवत् ५०८९, श्री जैन महावीर निर्वाण सम्वत् २५१३-२५१४, श्री बुद्ध सम्वत् २६११-२६१२, हिजरी सन् १४०९-१४१०, फसली सन् १३९५-१३९६, ईस्वी सन् १९८८-१९८९।

वर्षारम्भ में गुरुमान से 'वृष' नामक सम्वत्सर है; इसका फल इस प्रकार लिखा है—

"वृषमाब्देऽखिला क्ष्मेशाः युध्यन्ते वृषभा इव।
मत्ताः प्रसक्ता विप्रेन्द्राः सततं यजतां सुरान्॥"

अर्थात्—नेताओं में परस्पर विरोध, राजनैतिक विषयों में गतिरोध एवं युद्धमय वातावरण बने।

किञ्च—"वृषभे भौमः स्वामी, वर्षा बहुला, परं नृपाणां पीड़ा, छत्रभंगः, ज्येष्ठे-वैशाखेऽन्न महर्घता, धान्ये त्रिगुणो लाभः, आषाढ़ेऽन्न महर्घता, श्रावणे भाद्रपदे महामेघः, आश्विने सर्वधान्य समता, घृतं महर्घम्, पश्चिमेऽन्नं महार्घम्, देशाः उद्वसाः, पश्चिमायां किञ्चित्सुभिक्षम्, आश्विने मेघः, सर्ववस्तु समर्घता, कार्तिके किञ्चिदरिष्टम् मार्गशीर्षे दौस्थ्यम्, पौषादि मासत्रयं महार्घम् परं मध्यमः समयः॥"

इस वर्ष का राजा (ग्रह परिषद् के प्रधान) शुक्र एवम् मन्त्री बुध है। इस वर्ष सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शनि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) गुरु, मेघेश (वर्षा, पानी के स्वामी) मंगल, रसेश (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) सूर्य, नीरसेश (सर्वविध धातु एवं व्यापार आदि के स्वामी) शुक्र, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) मंगल, धनेश (धन दौलत एवं खजाने के मालिक) शुक्र, दुर्गेश (सुरक्षा किंवा प्रतिरक्षा के स्वामी) मंगल हैं। प्रत्येक पदाधिकारी का फल इस प्रकार है—

(१) राजा शुक्र का फल—"शुक्रस्य राज्ये बहु सस्य संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षाः बहुगोप्रसूतिर्वसुन्धरा पार्थिव सौख्य संयुता॥"

अर्थात्—पशुओं के लिए चारा प्रचुरमात्रा में हो, वर्षा आधिक्य से नदियों में बाढ़ की स्थिति बने, फल पर्याप्त हों, गोवंश वृद्धि हो तथा शासकों में परस्पर सौख्यभाव रहे।

(२) मन्त्री बुध का फल—"शशिसुते शुभमन्त्रि समागते स्वपतिना रमते मदन क्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यवमसूर चणान्न महर्घता॥"

अर्थात्—नर-नारी विलासयुक्त जीवन व्यतीत करें। धन-धान्य समृद्धि रहे, वर्षा अधिक हो, जौ, मसूर, चना आदि अनाज मंहगे हों।

(३) सस्येश शनि का फल—शासकों का व्यवहार कठोरतापूर्ण रहे, जनता में रोग से कष्ट हो, प्रजा में अनेक वाद-विवाद खड़े हों।

(४) धान्येश गुरु का फल—इस वर्ष जौ, गेहूं, धान की फसल अच्छी हो।

(५) मेघेश मंगल का फल—दूध, घी, पर्याप्त मात्रा में हों, दुधारु पशु मंहगे हों, फल-फूल एवं धन-धान्य समृद्धि रहे। विलासितामय जीवन जनप्रिय रहे।

(६) रसेश सूर्य का फल—वर्षा कम हो। वस्त्र, तेल, घी सहज उपलब्ध न हों, धनिक वर्ग सुखमय जीवन व्यतीत करें।

(७) नीरसेश शुक्र का फल—कपूर, अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं, सोना, मोती, कपड़े में तेजी आने से निर्धन वर्ग में रोष रहे।

(८) फलेश मंगल का फल—पृथ्वी पर फल-फूल अधिक मात्रा में हों, पुनरपि फलों में रोगभय एवं राजाओं में परस्पर तनाव किंवा युद्धभय वातावरण बने।

(९) धनेश शुक्र का फल—निर्धन एवं धनिक में परस्पर तालमेल रहे, धन लाभ में गरीबों को भी हिस्सा मिले, व्यापार बढ़े, क्रय-विक्रय सुखकर हो, शासक प्रजापालन में तत्पर रहें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१०) दुर्गेश मंगल का फल—प्रजा को नानाविध कष्टों का सामना करना पड़े, व्यापारी वर्ग अफवाहों के कारण क्रय-विक्रय से विशेष लाभान्वित न होंगे ।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दश अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र ही होता है, किन्तु विशेषकर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं वगड़ देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के निकटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश-दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है ।

चतुर्मेघों में 'आवर्त्त' नामक मेघ का फल—वर्षा पर्याप्त मात्रा में हो ।

नवमेघों में 'वरुण' नामक मेघ का फल—वर्षा बहुत अधिक हो, अनेकत्र बाढ़ से हानि के समाचार मिलें ।

बारह नागों में 'पृथुश्रवा' नामक नाग है; फल—वर्षा ऋतु में कहीं वर्षा का अभाव, कहीं अधिक वर्षा से खड़ी फसल को नुकसान पहुंचे ।

रोहिणी का वास 'समुद्र' में है; फल—अधिक जल चाहने वाले अन्न चावलादि की उत्पत्ति अधिक हो, न्यूनवर्षा वाले वागड़ (राजस्थान) आदि क्षेत्रों में भी आगे-पीछे वर्षा से कृषक लोगों को सहारा मिले ।

संवत्सर का वास 'माली' के घर है; फल--वर्षा उत्तम हो ।

संवत् का वाहन 'दादुर' है; फल—वर्षा उत्तम हो, कहीं वर्षा, बाढ़ से हानि हो ।

शनि की दृष्टि—शनि सारा वर्ष धनु राशि में रहेगा; अतः इस वर्ष शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की तरफ रहेगी । पश्चिमी भू-भाग पर कहीं अकाल आदि प्राकृतिक प्रकोप व रोग आदि से हानि हो । कुछ पश्चिमी देशों में राजनैतिक गतिरोध से हानि एवं युद्ध भय से अशान्ति का वातावरण रहे ।

अधिक मास फल—सं. २०४५ वि. में ज्येष्ठ अधिमास है;—**ज्येष्ठद्वये नृपध्वंसो धान्यनिष्पत्तिरुत्तमा**" अर्थात् इस वर्ष दो ज्येष्ठ होने से किसी विशिष्ट गण्यमान्य नेता का निधन व अपदस्थ होने का योग है, वर्षा पर्याप्त होने से धान्य की फसल उत्तम होगी ।

इस वर्ष "**सोमवती अमावस्याएं**" वैशाख कृष्ण एवं पौष कृष्ण में हैं । "**भौमवती अमावस्याएं**" द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण एवं फाल्गुन कृष्ण में हैं । "**शनैश्चरी अमावस्याएं**" वैशाख कृष्ण एवं पौष कृष्ण में हैं ।

वर्षा आदि के विश्वामान—वर्षाविश्वा १३, धान्य १३, तृण १६, शीत १७, तेज १६, वायु ७, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ६, तृषा ६, निद्रा १७, आलस्य १५, उद्यम ६, शान्ति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ १७, मैथुन ७, रसनिष्पत्ति ६, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह ११, उग्रता १५, पाप ६, पुण्य ६, व्याधि ३, व्याधिनाश १३, आचार ६, अनाचार ७, जन्म ११, मृत्यु १५, देशोपद्रव १३, देशस्वास्थ्य १५, चोरभय १६, चोरनाश ६, अग्निभय ३, अग्निशान्ति ३, उद्भिज्ज ७, जरायुज १७, अण्डज ६, स्वेदज ६, टिड्डी १३, तोता ३, भूषक ६, सोना १३, तांबा १६, स्वचक्र ६, परचक्र ११, वृष्टि ६, वृष्टिनाश १३, संवत् विश्वा ५ ।

वर्ष के चार स्तम्भ

(१) जल स्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) १ प्रतिशत है ।

(२) वायु स्तम्भ—(ज्येष्ठ शु. प्रतिपदा को मृग. नक्षत्र) २२ प्रतिशत है ।

(३) तृण स्तम्भ—(वैशा. शु. प्रतिपदा को भर. नक्षत्र) ८ प्रतिशत है ।

(४) अन्न स्तम्भ—(आषा. शु. प्रतिपदा को पुन. नक्षत्र) ७६ प्रतिशत है ।

फल—कुछ प्रान्तों में वर्षा के अभाव से स्थिति गंभीर बने, अकाल की स्थिति से चिन्ता हो । पशुओं के लिए चारे की कमी अनुभव होगी; वायुवेग से दुर्घटनायें कम हों । अनाजों की फसलें अच्छी हों ।

आर्षमान विचार—(वर्ष रक्षा के लिए चार दुर्ग)—

(१) प्रथम आर्ष—(अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ५ प्रतिशत है ।

(२) द्वितीय आर्ष—(सं. २०४४ वि. में पौष अमा. को मूल नक्षत्र) ३४ प्रतिशत है ।

(३) तृतीय आर्ष—(श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) का अभाव है ।

(४) चतुर्थ आर्ष—(कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६५ प्रतिशत है ।

फल—आर्षमान विचार से यह संवत् असन्तोषजनक है । श्रावण में वातावरण अशान्त रहेगा । देश के कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे ।

> **"अखै तीज रोहिणी नहीं होई. पौष अमावस मूल न जोई ।**
> **राखी श्रवणों हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो ।**
> **मही मांह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख बिनाशै ।"**

नव वर्ष प्रवेश—सं. २०४४ में चैत्र कृष्ण अमा. शुक्रवार तदनुसार १८ मार्च १९८८ ई. को उ.भा. नक्षत्र के समय २ घड़ी २६ पल (७ घं. ३० मि.) पर मीन लग्न में नववर्ष का शुभारम्भ होगा ।

॥ नववर्ष प्रवेश कुं.॥

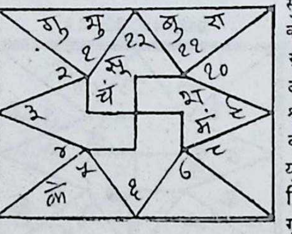

फल—मीन लग्न में नववर्ष प्रवेश हो तो सुखमय वातावरण हो, मध्य प्रदेश में खड़ी फसल को हानि पहुंचे, कहीं विशिष्ट व्यक्ति के दुर्घटनाग्रस्त होने से निधन हो, सत्ता-हस्तान्तरण हो, श्रावण, आश्विन, माघ एवं चैत्र मास विशेष घटनापूर्ण होंगे । श्रावण मास में तूफान, बाढ़ व दुर्घटनाएं अधिक होंगी । वर्ष प्रवेश-कुण्डली के दशमभाव में शनि-मंगल का सम्बन्ध युद्धमय वातावरण बनाएगा । प्रधान शासकों के लिए समय विशेष चिन्तनीय है । इस वर्ष देश आर्थिक संकट से गुजरेगा ।

वर्षेश (जगत्) लग्न—सं. २०४५ वि. में वैशाख कृष्ण द्वादशी बुधवार तदनुसार १३ अप्रैल १९८८ ई. को २४ घटी १४ पल (१५ घं. ४२ मि.) पर शतभिषा नक्षत्र के समय सिंह लग्न में सूर्य मेष राशि में प्रविष्ट होगा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

॥ जगत् लग्न कुं. ॥

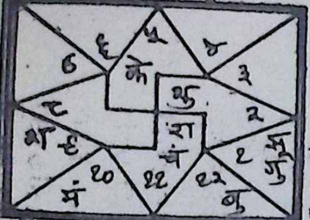

फल—जगत् कुण्डली में लग्नेश सूर्य उच्च होकर गुरु के साथ सम्बन्ध करता है एवं लग्न को गुरु देख रहा है, अतः यह वर्ष धन-धान्यादि से विश्व में समृद्धिमय रहेगा। भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में प्राकृतिक प्रकोप एवं बीमारी आदि से जनता को कष्ट हो, कहीं खड़ी फसल को हानि पहुंचे। शेष मास प्रायः ठीक रहेंगे। संवत् मध्य कुछ विशेष घटनापूर्ण रहेगा।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—जन्म-कुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान् हो तो जन्म राशि से, जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान् हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से वर्षेश लग्न (जगत्-लग्न) आठवें, बारहवें हो तो यह वर्ष उस व्यक्ति के लिये शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिये ग्राम या नगर की जो राशि हो उससे जगत् लग्न आठवें या बारहवें हो उस देश, नगर, ग्राम के लिए वह वर्ष हानिप्रद समझना चाहिये।

जन्म लग्न से जगत् लग्न का फल—१. देह सुख, २. धन लाभ, ३. कुटुम्ब वृद्धि, ४. मित्र सौख्य, ५. पुत्र सौख्य, ६. शत्रु जय, ७. स्त्री सुख, ८. रोगभय, ९. धर्म लाभ, १०. धन लाभ, ११. लाभ सुख, १२. व्यय दुःख।

आर्द्रा प्रवेश कुं.

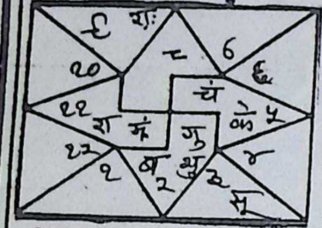

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली—द्वि. शु. ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी मंगलवार तदनुसार २१ जून' ८८ को ३३ घटी २० पल (१८ घं. ४४ मि.) पर पू.फा. नक्षत्र के समय वृश्चिक लग्न में सूर्य-देव आर्द्रा में प्रविष्ट होंगे।

फल—आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में दशम भाव पर मंगल-राहु की दृष्टि होने से एवं आर्द्रा प्रवेश के समय मंगलवार होने से यह वर्ष कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के लिये विशेष भयप्रद है, शस्त्रघात से किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु होगी; शोक व्याप्त होगा। सप्तमी को आर्द्रा प्रवेश शुभ होने पर भी आर्द्रा प्रवेश कुण्डलीगत ग्रह स्थिति शुभ नहीं, कहीं अवर्षा व अतिवर्षा से हानि होगी। कहीं बाढ़ व कहीं सूखा से स्थिति चिन्तनीय बनेगी।

॥ शरद् सस्यजातक कुं. ॥

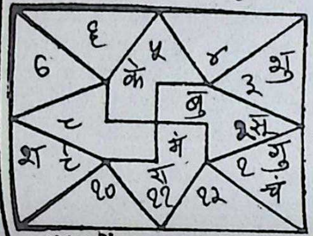

१४ मई' ८८ इष्ट १७।३२

सस्य जातक

१. शरद् सस्यजातक कुण्डली—के अनुसार रवी की फसल अच्छी न होने का संकेत मिलता है। सूर्य से दशमस्थ मं.-रा. एवं बारहवें गुरु-चन्द्र होने से प्राकृतिक आपदा के कारण खड़ी फसल को हानि पहुंचेगी। मूंग, मोठ, बाजरा आदि का भाव तेज रहेगा।

२. ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली—के अनुसार सूर्य से चतुर्थ राहु, सप्तम गुरु एवं दशम भावस्थ केतु होने से ग्रैष्मिक धान्यों की फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि पहुंचेगी। सूर्य से चतुर्थ राहु पर शनि की दृष्टि होने से कुछ भागों में अकाल की छाया पड़ेगी। गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी बनेगी। लेकिन सूर्य पर गुरु दृष्टि होने से तथा सूर्य से बुध द्वादशस्थ होने से भारत के कुछ प्रान्तों में धान्य निष्पत्ति अच्छी भी हो।

॥ ग्रीष्म सस्य जातक कुं. ॥

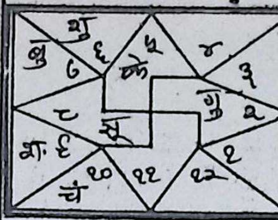

१५ नवं.' ८८ इष्ट

गुर्राफल—सं. २०४४ में भाद्र. शुक्ल तृतीया तदनुसार २७ अगस्त सन् १९८७ ई. गुरुवार को हिजरी सन् १४०८ प्रारम्भ होकर इस वर्ष १४ अगस्त १९८८ ई. (श्रावण शुक्ल द्वितीया) रविवार तक चलेगा। तत्पश्चात् १५ अगस्त सन् ८८ ई. मंगलवार को हिजरी सन् १४०९ प्रारम्भ होगा।

फल—विश्व के अनेक भागों में भयंकर अकाल पड़े, समयानुसार उचित वर्षा न हो, फसल क्षतिग्रस्त हो, भयंकर तेजी से अशान्ति, कहीं युद्धाग्नि प्रज्वलित हो, पशु हानि, फल नष्ट हों, वायुवेग से हानि, तिल, गेहूं एवं गुड़, शक्कर, कपास, खाण्ड में भयंकर तेजी; टिड्डी, चूहादि से हानि अधिक हो। तात्पर्य यह है कि यह वर्ष गुर्रा विचार से शुभ नहीं है।

विंशोत्तरी मतानुसार आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

आय व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्। यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥

अनमोल पुस्तकें

रत्न और रुद्राक्ष धारण	३१)००
रत्न विज्ञान (संपूर्ण दो भाग)	५१)००
रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	१०१)००
शकुन, भाग्य, ग्रह पीड़ा निवारण	६०)००
संपूर्ण स्वर विज्ञान	३६)००
वृहद् स्वप्न ज्योतिष भास्कर	५१)००
सट्टे का कल्पवृक्ष	४५)००
कलीद सट्टा	३१)००
वृहद् हनुमत सिद्धि	७१)००
तात्कालिक भृगु प्रश्नावली	५१)००
महा इन्द्रजाल	१८१)००

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र

हिप्नोटिज्म मैस्मरेजम	१५)००
मोहिनी तन्त्र	८)२५
मन्त्र सिद्धि	१२)००
यन्त्र ,,	१२)००
तन्त्र ,,	१२)००
वशीकरण सिद्धि	१२)००
यक्षिणी भैरव सिद्धि	१२)००-
देवी देवता सिद्धि	१२)००
मनोकामना ,,	१२)००
काला जादू	१२)००
पंच पक्षी तन्त्र	२२)५०
बेम्बे का जादू	६)००

धर्मस्थान ग्रन्थागार २५२६, नई सड़क, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सम्वत् २०४५ वि.)

(लेखक प्रियव्रत शर्मा)

[किसी व्रत-या-उत्सव आदि की तिथि (तारीख) के बारे में जहां कहीं भी शास्त्रीय मतभेद या सामान्य जन को भ्रान्त करने वाली स्थिति हमें दीख पड़ती है, हम उसका तर्क-संगत शास्त्रीय निर्णय इस स्तम्भ में देते हैं। पाठक देख रहे हैं—पिछले कुछ वर्षों से इस स्तम्भ को हमने विस्तार से दिया है। यहां अब हमारा यह प्रयास रहता है कि ऐसे प्रत्येक व्रतोत्सव की तिथि (दिन) का निर्णय शास्त्रीय प्रमाणों से विस्तार पूर्वक कर दिया जाए, जिसके बारे में सामान्य जन के मन में यत्किंचित् भी सन्देह उत्पन्न हो सकता है—प्रियव्रत शर्मा]

(१) नव संवत्सर (२०४५ वि. वर्ष) का प्रारम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही संवत्सर प्रारम्भ होता है। संवत्सराम्भ उदयकालिक प्रतिपदा के दिन किया जाता है। यदि प्रतिपदा की वृद्धि हो (अर्थात् प्रतिपदा दो दिन उदयकाल में व्याप्त हो), अथवा प्रतिपदा क्षीण हो, अर्थात् प्रतिपदा दोनों दिन सूर्योदय काल में व्याप्त न हो तो इन दोनों स्थितियों में संवत्सर आरम्भ पहले दिन ही होना चाहिए;—ऐसा धर्मशास्त्र का आदेश है। इस विषय में धर्म-सिन्धुकार का वचन है—

"तत्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदि वत्सरारम्भः। तत्रौदयिकी प्रतिपद्ग्राह्या दिन द्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।"

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षयः है, अतः उपरोक्त वाक्यानुसार नव संवत्सर का प्रारम्भ १८ मार्च १९८८ (शुक्रवार) को ही मनाया जाएगा और वर्षारम्भ पर्व से सम्बद्ध वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यङ्ग, ध्वजारोहण आदिकृत्य भी इसी दिन होंगे।

(२) सं. २०४५ वि. का राजा—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा जिस वार को उदय व्यापिनी होती है, उस वार का स्वामी ग्रह ही वर्षेश होता है। यदि प्रतिपदा दो दिन उदय व्यापिनी हो (अर्थात् प्रतिपदा की वृद्धि हो) तो पहले दिन के वार के स्वामी ग्रह को ही वर्षेश माना जाता है। यदि प्रतिपदा दोनों दिन उदय व्यापिनी न हो (अर्थात् प्रतिपदा का क्षयः हो) तो भी पहले दिन (उदय व्यापिनी चैत्र कृष्ण अमा.) के वार के स्वामी को ही वर्षेश मानने का विधान है। 'ज्योतिर्निबन्ध' का वाक्य है:—

"चैत्रे सित प्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः। उदय द्वितये पूर्वः, नोदययुग्मेऽपि पूर्वः स्यात्।"

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षयः है, अतः उपरोक्त नियमानुसार चैत्र कृष्ण (सं. २०४४ वि.) का 'वारेश-शुक्र' ही सं. २०४५ वि. का वर्षेश माना जाएगा।

(३) वसन्त नवरात्रारम्भ—अमायुक्ता प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ निषिद्ध है, लेकिन यदि प्रतिपदा सूर्योदय के बाद मुहूर्त (दिनमान के पन्द्रहवें भाग) से कम हो तो नवरात्रारम्भ पहले दिन अमायुक्त प्रतिपदा में ही करने का विधान है। देवी पुराण का वचन है;—

"अमायुक्ता न कर्तव्या प्रतिपच्चण्डिकार्चने। मुहूर्त मात्रा कर्तव्या द्वितीयायां गुणान्विता॥"

इस वाक्य से स्पष्ट है कि—यदि दूसरे दिन प्रतिपदा केवल एक मुहूर्त तक भी हो तो उसी दिन नवरात्रारम्भ करना चाहिए; अर्थात् मुहूर्त से कम हो तो नवरात्रारम्भ पहले ही दिन होना चाहिए। इसी प्रकार धर्मसिन्धुकार का वाक्य है;—

"अस्यामेव (चैत्र शुक्ल पक्षीयायां) प्रतिपदि नवरात्रारम्भः। अत्र परयुता मुहूर्त-मात्रापि ग्राह्या॥"

यह वाक्य भी स्पष्ट करता है कि दूसरे दिन प्रतिपदा केवल एक मुहूर्त भी हो तो उसी दिन नवरात्रारम्भ कर लेना चाहिए। अर्थापत्ति से यहां यह स्पष्ट हो जाता है कि दूसरे दिन एक मुहूर्त से कम प्रतिपदा होने पर पहले ही दिन नवरात्रारम्भ करना चाहिए। इस वर्ष तो दूसरे दिन प्रतिपदा का सर्वथा अभाव है, अतः पहले ही दिन अमायुक्ता प्रतिपदा में ही नवरात्रारम्भ होगा। निर्णयसिन्धु में भी यही बात स्पष्ट रूप से लिखी है;—

"परदिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे तु दर्शयुतापि पूर्वैव ग्राह्या॥"

इस वर्ष प्रतिपदा का क्षयः है, अतः इस वर्ष नवरात्रारम्भ पहले दिन अमायुक्ता प्रतिपदा में ही (१८ मार्च १९८८ ई.) शुक्रवार को करना होगा। घटस्थापन भी इसी दिन किया जाएगा।

इस दिन (१८ मार्च १९८८ को) ग्रस्तोदय सूर्य ग्रहण है, जो प्रातः लगभग सवा सात बजे तक रहेगा। इसलिये ग्रहणकृत्य स्नानादि से निवृत्त होकर ही घटस्थापन करना चाहिए।

(४) श्री गङ्गा दशहरा—ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को श्री गंगा जी का अवतार हुआ था, इसीलिये इस दिन गंगा दशहरा मनाया जाता है। गंगा दशहरा के दिन का निर्णय करने के लिए शास्त्रकारों ने दस योग बतलाए हैं, जो कि ये हैं;—

(१) ज्येष्ठ मास, (२) शुक्ल पक्ष, (३) दशमी तिथि, (४) बुधवार, (५) हस्त नक्षत्र, (६) व्यतीपात योग, (७) गर करण, (८) आनन्द योग, (९) कन्यागत चन्द्र, (१०) वृषस्थ सूर्य।

यदि ज्येष्ठ शुक्ल दशमी दो दिन मिले तो उपरोक्त शेष आठ योगों में से अधिक योग जिस दिन पूर्वाह्न में हों, उसी दिन गंगा दशहरा मनाया जाता है। इस पर्व को दशहरा नाम दिया गया है, शास्त्रों का निर्णय है कि दशहरा पर्व को अधिक मास आने पर अधिक मास में ही मना लेना चाहिए, उसे शुद्ध मास में नहीं ले जाना चाहिये;—

"दशहरासु नोत्कर्षः चतुर्ष्वपि युगादिषु" —(ऋष्यशृङ्ग)

धर्मसिन्धुकार ने भी यही बात कही है—**"ज्येष्ठे मल मासे सति तत्रैव दशहरा कार्या, न तु शुद्धे।"**

इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास है, अतः उक्त नियमानुसार इस ज्येष्ठ अधिकमास की ही शुक्ल दशमी के दिन २६ मई १९८८ ई. को श्री गङ्गादशहरा मनाया जायेगा। इस दिन दशमी पूर्वाह्न व्यापिनी है और उपरोक्त दस योगों में से अधिकतर योग इसी दिन उपलब्ध हैं।

(५) वामन द्वादशी—श्रवणयुता भाद्रशुक्ल द्वादशी में मध्याह्न के समय श्री वामन का अवतार माना गया है; अतः मध्याह्न व्यापिनी द्वादशी के दिन मध्याह्न या अन्यकाल में द्वादशी और श्रवण नक्षत्र का योग होने पर उसी दिन वामन द्वादशी मनानी चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"अतो मध्याह्न व्यापिनी द्वादशी मध्याह्ने ततोऽन्यत्र वा काले श्रवणयुता ग्राह्या;"—धर्मसिन्धुः ।

शास्त्राकार कहते हैं कि यदि द्वादशी का श्रवण नक्षत्र से बिल्कुल योग न हो, एकादशी ही श्रवणयुता हो तो दूसरे दिन मध्याह्न व्यापिनी द्वादशी को भी छोड़कर एकादशी में ही यह व्रत करना चाहिए । धर्मसिन्धु में लिखा है—

"सर्वथा द्वादश्याः श्रवणयोगाभावे एकादश्यामेव श्रवणसत्त्वे ॥
मध्याह्नव्यापिनीमपि द्वादशीं विहाय एकादश्यामेव व्रतं कार्यम् ॥"

इस वर्ष दूसरे दिन (२३ सितं. को) द्वादशी मध्याह्न व्यापिनी तो है, लेकिन श्रवण योग नहीं है । २२ सितं. को द्वादशी श्रवणयुता है, लेकिन वहां यह मध्याह्नव्यापिनी नहीं है । अतः धर्मसिन्धु के उपरोक्त वचन से २२ सितं. को ही वामन जयन्ती मनाई जायेगी; क्योंकि यहां मध्याह्न से अन्यत्र स्पष्टतः द्वादशी श्रवणयुता है ।

(६) दूर्वाष्टमी—रौहिण मुहूर्त्त व्यापिनी भाद्रपद शुक्लाष्टमी को स्त्रियां दूर्वाव्रत करती हैं । यह व्रत सिंहस्थ सूर्य में शुभ माना गया है, लेकिन अगस्त्य तारा उदित होने पर इसे मनाने का निषेध है । यदि भाद्रशुक्लाष्टमी को अगस्त्य उदित हो तो इस व्रत को भाद्रकृष्णाष्टमी के दिन ही मनाने का विधान है ।

"भाद्रशुक्लाष्टम्याम् अगस्त्योदये भाविनि सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात् ।—(हेमाद्रिः)

इस वर्ष भाद्र कृष्णाष्टमी के ही दिन पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि प्रान्तों में अगस्त्य उदित हो जाएगा, अतः इस दिन भी दूर्वाव्रत न हो सकेगा । इस स्थिति में निबन्धकारों का निर्णय है कि दूर्वाव्रत को और भी पहले श्रावण शुक्लाष्टमी को ही करना चाहिए । इस निर्णय के अनुसार इस वर्ष २० अगस्त १९८८ ई० को ही दूर्वाष्टमी व्रत होगा; क्योंकि इसी दिन श्रावण शुक्लाष्टमी रौहिण व्यापिनी है, इस दिन सूर्य भी सिंहस्थ है ।

(७) शारद् नवरात्रारम्भ—चित्रा और वैधृति में कलश स्थापन अशुभ लिखा है, अतः जहां प्रतिपदा इन (चित्रा-वैधृति) से पूरी तरह व्याप्त हो, वहां अभिजित मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) में घटस्थापन करने का विधान है;—

"सम्पूर्णा प्रतिपद्देव चित्रायुक्ता यदा भवेत् ।
वैधृत्या वापि युक्ता स्यात्तदा मध्यन्दिने रवौ ॥"
अभिजित् मुहूर्त्तो यस्तत्र स्थापनमिष्यते ।-(रुद्रयामल)

इस वर्ष आश्विन शुक्ल प्रतिपदा सूर्योदय से सूर्यास्त तक चित्रा नक्षत्र और वैधृति योग से व्याप्त है, अतः "इस दिन अभिजित मुहूर्त्त में (दोपहर में ११ घं. ४७ मि. से) १२ घं. ३३ मि. तक) घटस्थापन किया जाएगा ।"

(८) वैकुण्ठ चतुर्दशी—कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी को वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाई जाती है । इसे मनाने की दो परम्पराएं हैं;—

(१) कुछ श्रद्धालु इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण करके विष्णु पूजा करते हैं;—ऐसे लोग निशीथ व्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं । इनके लिए निशीथव्यापिनी चतुर्दशी को इस पर्व को मनाने का विधान है । यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्याप्त हो, उसी दिन विष्णु पूजक भक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं;—

"केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या ।
दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ-प्रदोषोभय-व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः ॥"(धर्मसिंधुः)

(२) दूसरी परम्परा यह है कि पहले दिन उपवास करके अरुणोदय व्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजा करके बाद में प्रातः पारणा की जाती है । इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदय व्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो, उस दिन उपवास करते हैं । वे उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं । यहां धर्मसिन्धु का वचन है;—

"पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा अरुणोदय व्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य प्रातः पारणं कार्यम् । तथाच—चतुर्दशी युक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः । उभयत्रारुणोदय व्याप्तौ परत्रारुणोदये पूजा, पूर्वत्र उपवासः । उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशी युक्ताहोरात्रे एव अरुणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च ।"

इस वर्ष २२ नवम्बर १९८८ ई० को चतुर्दशी निशीथ व्यापिनी नहीं है, अतः "वैकुण्ठ चतुर्दशी २१ नवम्बर को ही होगी, क्योंकि इसी दिन चतुर्दशी अरुणोदय में व्याप्त है ।"

(९) भीष्म पञ्चक प्रारम्भ—भीष्म पञ्चक व्रत सामान्यतया कार्तिक शुक्ल एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक मनाया जाता है । शास्त्रों का निर्णय है कि यह व्रत पूरे पांच दिन तक चलना चाहिए—

पञ्चाहं पञ्चगव्याशी भीष्मायार्घ्यं च पञ्चसु ।
अहःस्वपि तथा दद्यान्मन्त्रेणानेन सुव्रत ॥
"सत्यव्रताय शुचये गाङ्गेयाय महात्मने ।
भीष्मायैतद्ददाम्यर्घ्यमा जन्म ब्रह्मचारिणे ॥"

'पद्मपुराण' का यह वचन स्पष्टतः संकेत करता है कि भीष्म पञ्चक व्रत की अवधि पूरे पांच दिन की है । इसके अतिरिक्त पुराणों में भीष्म पञ्चक व्रत के पांच दिनों में प्रतिदिन दिए जाने वाले पांच विभिन्न अनुष्ठानों का भी पृथक-२ स्पष्ट निर्देश है, जैसे—

प्रथमेऽह्नि हरे पादौ पूजयेत्कमलैर्द्विज ।
द्वितीये बिल्वपत्रेण जानुदेशं समर्चयेत् ॥

पञ्चमे तु दिने स्नात्वा विधिवत्पूज्य केशवम् ।
पापस्य प्रतिमा कार्या रौद्रवक्त्रातिभीषणा ॥

यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की तिथियों में से कोई तिथि क्षयः हो जाए तो दशमी से ही भीष्मपञ्चक व्रत प्रारम्भ करना चाहिए, ताकि इस व्रत के लिए पूरे पांच दिन प्राप्त हो सकें । यही बात 'धर्मसिन्धुकार' ने इस प्रकार कही है—"एकादश्यादि दिन पञ्चके भीष्म पञ्चक व्रत मुक्तम् । तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक पौर्णमास्यां समापनीयम् । यदि शुद्धैकादश्यामारम्भे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पञ्चदिनात्मक व्रत-समाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामारम्भः ।"

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल द्वादशी के क्षयः के कारण एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि केवल चार दिन की ही बनती है, अतः इस वर्ष उपरोक्त निर्णयानुसार भीष्म पञ्चक का प्रारम्भ कार्तिक शुक्ल दशमी शनिवार (१९ नवं.' ८८) से ही होगा ।

[शेष पृष्ठ ??३ पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, चैत्र शुक्ल पक्ष १														तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(१९ मार्च से २ अप्रै. तक, सन् १९८८ ई.), उत्तरायण, वसन्त ऋतु
दि.मा.														प्र.	ग्रं.	श.	मु.	प्रवेश काल	भा. स्टें. टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन—प्रातः वुध को पूर्व में एवं मंगल–शनि को याम्योत्तरासन्न देख सकेंगे ! सायं गुरु–शुक्र पश्चिम में दृश्य होंगे ।
घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	चैत्र	मार्च	फाल्गु.	रज्जब	घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम्	१	शु.	५४	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय होने से इस वर्ष चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ, वर्षफल A
२९|५१	२	श.	४७	३८	रे.	४८	४४	ब्र.	३९	१८	वा.	२१	९	६	१९	२९	३०	मे. ४८।४४	६	३१	६	२९	११	४	५६	५९	पंचक समाप्त ४८।४४, चन्द्र दर्शन मु. ३०, चन्द्र व्रत
२९|५७	३	र.	४२	२	अ.	४५	०	ऐं.	३१	३९	तै.	१४	५०	७	२०	३०	शा'	मेष	६	३०	६	२९	११	५	५६	३४	सायन मेष में सूर्य २१।५५, शावान मु. प्रारम्भ, गौरी तृतीया B
३०|२	४	चं.	३८	४	भ.	४२	५५	वै.	२५	१६	व.	१०	३	८	२१	चै.'	२	वृ. ५७।५१	६	२९	६	३०	११	६	५६	९	भ. १०।३ उ. ३८।४ या., शक चैत्र C
३०|७	५	मं.	३६	०	कृ.	४२	४३	वि.	२०	२४	ब.	७	२	९	२२	२	३	वृष	६	२७	६	३०	११	७	५५	४०	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, हयव्रत
३०|१२	६	बु.	३५	५५	रो.	४४	२७	प्री.	१७	४	कौ.	५	५८	१०	२३	३	४	वृष	६	२६	६	३१	११	८	५५	९	मंगल उ.षा. में ३५।५, स्कन्द षष्ठी
३०|१७	७	गु.	३७	४९	मृ.	५८	६	आ.	१५	१८	ग.	६	५२	११	२४	४	५	मि. १६।१६	६	२५	६	३२	११	९	५४	३७	भ. ३७।४९ उ.,
३०|२०	८	शु.	४१	३२	आ.	५३	२८	सौ.	१५	०	वि.	९	४०	१२	२५	५	६	मिथुन	६	२४	६	३२	११	१०	५४	२	भ. ९।४१ या., गुरु अश्वि. ४ में ३४।२८, शुक्र कृत्ति. में ८।३५, D
३०|२४	९	श.	४६	४०	पुन.	६०	०	शो.	१५	५६	वा.	१४	६	१३	२६	६	७	क. ४३।२९	६	२२	६	३३	११	११	५३	२६	वुध पू.भा. में ०।३५श्रीराम नवमीव्र. (पुनर्वसु योग), नवरात्र समाप्त
३०|२८	१०	र.	५२	५०	पुन.	०	१०	अ.	१७	४७	तै.	१९	४५	१४	२७	७	८	कर्क	६	२१	६	३४	११	१२	५२	४६	
३०|३२	११	चं.	५९	२८	पु.	७	४२	सु.	२०	१३	व.	२६	९	१५	२८	८	९	कर्क	६	२०	६	३४	११	१३	५२	४	भ. २६।९ उ. ५९।२८ या., मंगल मकर में ३१।४८, शुक्र वृष में E
३०|३६	१२	मं.	६०	०	आ.	१५	३२	घृ.	२२	५०	व.	३२	४५	१६	२९	९	१०	सिं. १५।३२	६	१९	६	३५	११	१४	५१	२१	कामदा एकादशी व्रत (वैष्णव)
३०|४०	१२	बु.	६	३	म.	२३	१३	शू.	२५	१७	वा.	६	३	१७	३०	१०	११	सिंह	६	१८	६	३६	११	१५	५०	३५	सूर्य रेवती में ५०।२, प्रदोष व्रत
३०|४६	१३	गु.	१२	८	पू.फा.	३०	२२	गं.	२७	१८	तै.	१२	८	१८	३१	११	१२	क. ४६।५७	६	१६	६	३६	११	१६	४९	४६	अनङ्ग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी, श्री जैन महावीर जयन्ती
३०|५०	१४	शु.	१७	२३	उ.फा.	३६	३९	वृ.	२८	३९	व.	१७	२३	१९	अ.'	१२	१३	कन्या	६	१५	६	३७	११	१७	४८	५६	भ. १७।२३ उ. ४९।२९ या., वुध मीन में १३।३५, अप्रैल प्रारम्भF
३०|५५	१५	श.	२१	३५	ह.	४१	५४	ध्रु.	२९	१२	व.	२१	३५	२०	२	१३	१४	कन्या	६	१४	६	३७	११	१८	४८	२	वैशाख स्नान प्रा., श्री हनुमान जयन्ती (द. भारत)

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'वृष' नामक सम्वत्सर है । वर्षान्त तक संकल्प में इसे ही प्रयोग में लाएं ।

A श्रवण तैलाभ्यङ्ग, अपूपदान एवं नवरात्र प्रारम्भ(घटस्थापन) १८ मार्च(शुक्र) सन् १९८८ को ही होगा, (देखें -"सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था"), B (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य ज., महाविषुव दिन, C (१९१०) प्रारम्भ D श्री भवानी जन्म, श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री मनसा देवी (चण्डीगढ़), अशोकाष्टमी E २२।३५, कामदा एकादशी व्रत (स्मार्त) F श्री सत्यनारायण व्रत

चैत्र शु. ८ शुक्र, इष्ट ५७।१५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	८	१०	०	०	८	१०	४
११	२०	२८	१९	१०	२७	८	२८	२८
५१	५१	१६	५५	५	३१	३८	५८	५८
१६	५७	१?	३	१४	७	४८	२५	२५
५९	७२०	४०	९२	१३	९२	१	३	३
२४	४१	२८	५८	३३	१	३२	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.भा. ३	पुन. १	उ.षा. [illegible]	शत. ४	अश्वि. ४	कृति. १	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

कुण्डली सूर्योदये

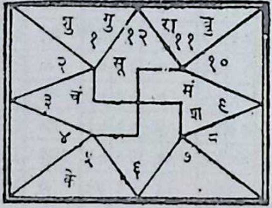

लोक भविष्य—इस पक्ष में शनि-मंगल का राशि सम्बन्ध चल रहा है, परन्तु शनि-मंगल पर वृहस्पति की दृष्टि होने से कोई नेष्ट घटना की सम्भावना नहीं । घी, तेल, आदि उपयोगी वस्तुओं में तेजी रहने से निर्धन वर्ग में आक्रोश दिखाई देगा । मकर राशि में मंगल का संचार जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी का सूचक है—**"मकरे च स्थिते भौमे घृत, तैल महर्घता । सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीड़नम् ॥"** जनता में भय रोगोपद्रव हों ।

कुण्डली सूर्योदये

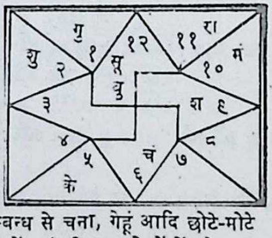

चैत्र शु. १५ शनि, इष्ट ५८।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	९	११	०	१	८	१०	४
१९	२६	३	२	११	५	८	२८	२८
४५	४१	३९	५७	५४	३६	४८	३२	३२
२३	४५	४२	५८	४५	३१	१८	५९	५९
५९	७५१	४०	१०४	१३	५८	०	३	३
६	५०	२५	१३	५२	५०	४५	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
रेव. १	चित्रा २	उ.षा. ३	पू.भा. ४	अश्वि. ४	कृति. ३	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्ष के मध्य तक शनि–मंगल के सम्बन्ध से चना, गेहूं आदि छोटे-मोटे अनाज, दालें, रसकस, गुड़, खांड, शक्कर, चांदी आदि धातु, लकड़ी, सूत, सण, बिनौला, सरसों एवं घी तथा तेलों में जोरदार तेजी आयेगी, व्यापारी उत्तम लाभ ले सकेंगे । २८ मार्च के लगभग रुई. चांदी, सोना, तांबा, गुड़, खांड, घी, तेल, अलसी, ऊन में कुछ मंदा आकर तुरन्त तेजी आयेगी, इस समय वायदा के व्यापारी विशेष लाभ ले सकते हैं ।

आकाश लक्षण—पक्षारम्भ में २४ मार्च तक उत्तरी भारत में तापमान कुछ बढ़ेगा । २५ मार्च से १ अप्रैल तक लंका के पश्चिमी छोर, भूटान, सिक्कम, आसाम, बंगला देश, हि. प्र., पूर्वी आसाम, बंगाल, बिहार, मैसूर, मध्य प्रदेश, उत्तरी राजस्थान में बादल चाल व वर्षा के योग हैं ।

शकुन विचार—यदि चैत्र शु. ७ को आकाश मेघाच्छन्न रहे तो आगे वर्षा ऋतु में वायु का प्रकोप एवं आकाश निर्मल रहता है, इस समय गेहूं के स्टाक से श्राव. में लगभग त्रिगुणित लाभ हो ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, वैशाख कृष्ण पक्ष २ (३ से १६ अप्री. तक, सन् १९८८ ई.), उत्तरायण वसन्त ऋतु

ता. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—७ अप्रै. को बुध पूर्व में दीखना बन्द होगा। उषःकाल में मंगल पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिम कपाल में दीखेगा। सूर्यास्त अनन्तर गुरु पश्चिम में दश्य होगा एवं शुक्र पश्चिम कपाल में पूरी चमक के साथ दिखाई देगा।
३१	०	१	र.	२४	३९	चि.	४६	३	व्या.	२८	५३	कौ.	२४	३९	२१	३	१४	१५	तु. १३।५८	६	१३	६	३८	११	१९	४७	८	बुध उ.भा. में १०।५२
३१	५	२	चं.	२६	३१	स्वा.	४९	१	ह.	२७	३९	ग.	२६	३१	२२	४	१५	१६	तुला	६	११	६	३९	११	२०	४६	११	भ. ५६।५२ उ.,
३१	१०	३	मं.	२७	१३	वि.	५०	५३	व.	२५	३०	वि.	२७	१३	२३	५	१६	१७	वृ. ३५।२५	६	१०	६	३९	११	२१	४५	११	भ. २७।१३ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३१	१३	४	बु.	२६	४८	अनु.	५१	४१	सि.	२२	२९	बा.	२६	४८	२४	६	१७	१८	वृश्चिक	६	९	६	४०	११	२२	४४	११	
३१	१८	५	गु.	२५	१५	ज्ये.	५१	२३	व्य.	१८	३६	तै.	२५	१५	२५	७	१८	१९	ध. ५१।२३	६	८	६	४१	११	२३	४३	९	शुक्र रोहि. में ३१।५, बुध पूर्व में अस्त, यूरेनश वक्री
३१	२२	६	शु.	२२	४०	मू.	५०	६	व.	१३	५१	व.	२२	४०	२६	८	१९	२०	धनु	६	७	६	४१	११	२४	४२	३	भ. २२।४० उ. ५०।५३ या.
३१	२७	७	श.	१९	६	पू.षा.	४७	५२	प.	८	२१	ब.	१९	६	२७	९	२०	२१	धनु	६	६	६	४२	११	२५	४०	५८	गुरु भर. १ में ५।२२
३१	३१	८	र.	१४	३५	उ.षा.	४४	४३	शि.	२ / ५५	४ / २	कौ.	१४	३५	२८	१०	२१	२२	म. २। ५	६	४	६	४२	११	२६	३९	५०	बुध रेवती में ३१।१०, शनि वक्री ५८।३२
३१	३६	९	चं.	९	१२	श्र.	४०	४८	सा.	४७	२४	ग.	९	१२	२९	११	२२	२३	मकर	६	३	६	४३	११	२७	३८	३९	भ. ३६।९ उ.,
३१	४०	१०	मं.	३	७	ध.	३६	१६	शु.--	३९	१८	वि.	३	७	३०	१२	२३	२४	कुं. ८।३२	६	२	६	४४	११	२८	३७	२८	भ. ३।७ या., पंचक प्रा. ८।३२, मंगल श्रवण में २४।१८, वरूथिनी †
अवम्		११	मं.	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथि क्षय
३१	४४	१२	बु.	४९	२२	श.	३१	१५	शु.	३०	४९	कौ.	२२	५१	वै.' १	१३	२४	२५	कुम्भ	६	१	६	४४	११	२९	३६	१४	सं. सूर्य प्रविश. मेष में २४।१४, मु. १५ पुण्य काल ८।१४ बाद ‡
३१	४९	१३	गु.	४२	१५	पू.भा	२६	३	ब्र.	२२	१०	ग.	१५	४८	२	१४	२५	२६	मी. १२।२१	६	०	६	४५	०	०	३४	५९	भ. ४२।१५ उ., प्रदोष व्रत, नेपच्यून वक्री
३१	५४	१४	शु.	३५	२०	उ.भा	२०	५९	ऐं.	१३	३७	वि.	८	४८	३	१५	२६	२७	मीन	५	५९	६	४६	०	१	३३	४३	भ. ८।४८ या.,
३१	५८	३०	श.	२८	५३	रे.	१६	१८	वै.	५ / ४७	३ / ३०	च.	२	७	४	१६	२७	२८	मे. १६।१८	५	५८	६	४६	०	२	३२	२६	पंचक समाप्त १६।१८, शनैश्चरी अमा.

† एकादशी व्रत (स्मार्त), श्री वल्लभाचार्य जयन्ती ‡ वरूथिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), वैशाखी (पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्र.)

वैशाख कृष्ण ८ रवि इष्ट ५८।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	९	९	११	०	१	८	१०	४
२७	१३	९	१७	१३	१३	८	२८	२८
३७	१६	२	३२	४६	१३	५१	७	७
१७	५५	३०	६	३०	२८	२८	३३	३३
५८	८९१	४०	११५	१४	५४	०	३	३
५३	२४	१७	५३	६	४६	३	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४	१	४	१	१	१	३	३	१
रेव.	श्रव.	उ.षा.	रेव.	भर.	रोहि.	मूल	पू.भा.	उ.फा.

कुण्डली सूर्योदये

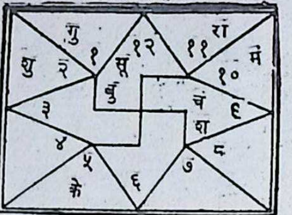

लोकभविष्य—इस पक्ष में शनि, यूरेनश, नेपच्यून वक्री हो जाते हैं, अमावस शनिवारी है, अतः कहीं यान दुर्घटना से हानि एवं प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसल को हानि होगी। आगे नानाविध रोगों से जनता को कष्ट उठाना पड़े। पक्षमध्य में श्रवण नक्षत्र का मंगल मंहगाई की ओर शासन का ध्यानाकर्षण करेगा, जिससे जनजीवनोपयोगी वस्तुओं को सुलभ कराने का प्रयास होगा।

कुण्डली सूर्योदये

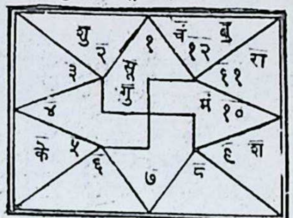

वैशाख कृष्ण ३० शनि, इष्ट ५८।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	९	११	०	१	८	१०	४
३	१०	१३	२९	१५	१८	८	२७	२७
२९	८	३	२८	११	३२	४९	४८	४८
५९	३५	५२	३८	२४	४०	४०	२८	२८
५८	८४२	४०	१३४	१४	५०	०	३	३
४२	५८	१०	३	१४	५३	३८	११	११
—	—	मा	मा	मा	ना	व	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	—
२	४	१	४	१	३	३	३	१
अश्वि.	अश्वि.	श्रव.	रेव.	भर.	रोहि.	मूल	पू.भा.	उ.फा.

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, गुड़, खांड, चावल व अनाजों में कोई खास चाल नहीं बनेगी, ७ अप्रै. के लगभग सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खांड, दाख, छुहारा; नारियल व ऊन में कुछ मन्दा आकर तुरन्त तेजी बनेगी, विचार पूर्वक काम करें। १० अप्रैल से बाजार का रुख जोरदार तेजी का बनेगा। वायदा व्यापार के उत्तम चांस इस मास से हैं। मन्दे में खरीदें, तेजी में बेचें।

आकाश लक्षण—अप्रैल ७, १०, १३, १४, १६ में भूटान, सिक्किम, हिमाचल प्र., पूर्वी आसाम आदि में बादल चाल व वर्षा के योग हैं। कुछ स्थानों पर बिजली चमके एवं वायु का जोर हो। उत्तरी भारत में तापमान बढ़ेगा।

शकुन विचार—वैशाख कृष्ण अमावस को रेवती नक्षत्र हो तो वर्ष श्रेष्ठ एवं सुभिक्ष रहे। वैशाख कृष्ण ११ के दिन यदि प्रवल मेघों से आकाश ढका रहे तो अनाजों का स्टाक निकाल दें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ | **तारीखें** | **चन्द्र राशि** | **चण्डीगढ़** | **उदय-कालिक** (१७ अप्रै. से १ मई सन् १९८८ ई. तक), उ., वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

वि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. वैशाख	अं. अंग्रे.	श. चैत्र	मु. शाबा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	मा. स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—बुध अस्त है। २३ अप्रै. को गुरु अस्त होगा। प्रातः मंगल को याम्योत्तरासन्न एवं शनि को पश्चिम कपाल में देखें। सायं शुक्र को पश्चिम में देख सकेंगे।
३२	२	१	र.	२३	१८	अ.	१२	२४	प्री.	५०	४६	ब.	२३	१८	५	१७	२८	२९	मेष	५	५७	६	४७	०	३	३१	४	चन्द्र दर्शन मु. १५, बुध अश्वि. मेष में १४।२
३२	६	२	चं.	१८	५८	भ.	९	३६	आ.	४५	७	कौ.	१८	५८	६	१८	२९	र.'	वृ. २४।२०	५	५५	६	४८	०	४	२९	४३	रमजान मु. प्रा., श्री शिवाजी जयन्ती, श्री परशुराम ज., (प्रदोष A
३२	११	३	मं.	१६	६	कृ.	८	२२	सौ.	४०	४३	ग.	१६	६	७	१९	३०	२	वृष	५	५४	६	४८	०	५	२८	१८	भ. ४५।३३ उ., सा. वृष में सूर्य ५१।१२, ग्रीष्म ऋतु प्रा., अक्षय ३
३२	१५	४	बु.	१५	०	रो.	८	४५	शो.	३७	४६	वि.	१५	०	८	२०	३१	३	मि. ३९।५३	५	५३	६	४९	०	६	२६	५३	भ. १५।० या., अगस्त्य अस्त, गुरु वार्धक्य प्रा. २४।२
३२	२०	५	गु.	१५	५०	मृ.	११	१	अ.	३६	२१	बा.	१५	५०	९	२१	वै.'	४	मिथुन	५	५२	६	५०	०	७	२५	२५	शक वैशाख प्रा., श्री शंकराचार्य जयन्ती
३२	२५	६	शु.	१८	३१	आ.	१५	७	सु.	३६	२०	तै.	१८	३१	१०	२२	२	५	मिथुन	५	५१	६	५०	०	८	२३	५५	शुक्र मृग. में ५१।२, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती
३२	२९	७	श.	२२	५२	पुन.	२०	४९	धृ.	३७	३२	व.	२२	५२	११	२३	३	६	क. ४।२४	५	५०	६	५१	०	९	२२	२३	भ. २२।५२ उ. ५५।४२ या., बुध भर. में ३३।२८, गुरु भर. २ B
३२	३३	८	र.	२८	३१	पु.	२७	४७	शू.	३९	३८	ब.	२८	३१	१२	२४	४	७	कर्क	५	४९	६	५२	०	१०	२०	४६	गुरु अस्त २३ अप्रै.
३२	३७	९	चं.	३४	५२	आ.	३५	२६	गं.	४२	११	बा.	१	४६	१३	२५	५	८	सि. ३५।२६	५	४८	६	५२	०	११	१९	१२	श्री जानकी जयन्ती
३२	४१	१०	मं.	४१	१९	म.	४३	१२	वृ.	४४	४७	तै.	८	५	१४	२६	६	९	सिंह	५	४७	६	५३	०	१२	१७	३५	
३२	४५	११	बु.	४७	१८	पू.फा.	५०	२९	ध्रु.	४७	१	व.	१४	१७	१५	२७	७	१०	सिंह	५	४६	६	५४	०	१३	१५	५४	भ. १४।१८ उ. ४७।१८ या., सूर्य भर. में ४।१५, मोहिनी ११ व्र. (स.)
३२	४९	१२	गु.	५२	१५	उ.फा.	५६	४६	व्या.	४८	२७	ब.	१९	४६	१६	२८	८	११	कं. ७।३	५	४५	६	५४	०	१४	१४	११	
३२	५५	१३	शु.	५५	५४	ह.	६०	०	ह.	४८	५५	कौ.	२४	५	१७	२९	९	१२	कन्या	५	४४	६	५५	०	१५	१२	२७	बुध कृतिका में ५२।४५, प्रदोष व्रत
३२	५९	१४	श.	५८	२	ह.	१	५०	व.	४८	१३	ग.	२६	५८	१८	३०	१०	१३	तु. ३३।३६	५	४३	६	५६	०	१६	१०	४०	भ. ५८।२ उ, श्री नृसिंह जयन्ती
३३	३	१५	र.	५८	४४	चि.	५	२३	सि.	४६	२४	वि.	२८	२३	१९	म.'	११	१४	तुला	५	४३	६	५६	०	१७	८	५२	भ. २८।२३ या., बुध वृष में ३१।५०, मई प्रारम्भ, श्री कूर्म ज., C

A व्यापिनी तृतीया) B में ११।५७, गुरु अस्त २४।२, श्री गंगा जन्म C श्री बुध जयन्ती, श्री सत्यनारायन व्रत, वैशाख स्नान समाप्त

वैशा. शु. ८ रवि, इष्ट ५६।१२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	९	०	०	१	८	१०	४
११	२२	१८	१६	१७	२४	८	२७	२७
१८	५२	२४	२३	५	५७	४१	२३	२३
२८	९	१८	१०	३२	२६	५१	२	२
५८	७०८	३९	१२०	१४	४४	१	३	३
२५	५३	५५	५७	१८	९	२५	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
अश्वि. ४	आश्ले. २	श्रव. ३	भर. १	भर. २	मृग. १	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

कुण्डली सूर्योदये

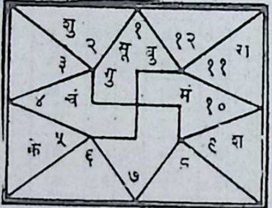

लोक भविष्य—मेष राशिस्थ बुध-गुरु दोनों पक्षारम्भ में ही अस्त हैं—"यद्यस्तमेत्य जगतो गुरुरल्प-वृष्टिः", आगे वर्षा कुछ प्रान्तों में कम होगी, कृषक चिन्तित रहेंगे। १६ से १८ अप्रैल तक सूर्य चन्द्र गुरु मेष में ही रहते हैं—"दिननाथेन्दु गुरवः यदैकत्र समाश्रिताः। उत्तरस्यां दिशिभयं प्रजाः कन्दन्ति नित्यशः॥" उत्तर में प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई और चांदी में अच्छी मंदी आ सकती है, अन्य सभी में घटाबढ़ी चलेगी, २२ अप्रै. को चांदी, सोना, तिल, उड़द, मूंग, मोठ मन्दे रहेंगे। गुड़, खांड, शक्कर में कुछ तेजी ही रहेगी। २३ अप्रैल को विचारपूर्वक काम करें, रुई एवं शेयर बाजार तेज रहें तथा सोना, चांदी एवं अनाजों में मन्दा बनेगा, पक्षान्त में गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, तिल, तेल में तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—पक्षारम्भ से २१ अप्रैल तक ग्रीष्म ऋतु के आगमन का अनुभव होगा। २२ अप्रैल से १ मई तक, विशेषतः २३ अप्रैल को भूटान आदि में एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भी वर्षा, वायु के लक्षण दिखाई देंगे।

कुण्डली सूर्योदये

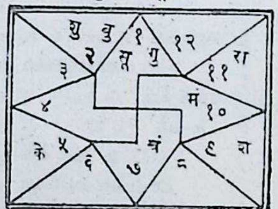

वैशा. शु. १५ रवि, इष्ट ५९।२८

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	९	१	०	१	८	१०	४
१८	१८	२३	०	१८	२९	८	२७	२७
६	१५	२	५५	४५	४४	३०	०	०
३४	३१	५३	८	४५	१४	६	४६	४६
५८	७८७	३९	११०	१४	३६	२	३	३
१०	७	३८	१८	१९	२०	२	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	—
भर. २	स्वा. ४	श्रव. ४	कृत्ति. २	भर. २	मृग. २	मूल ३	पू.भा. ३	उ.फा. १

शकुन विचार—वैशाख शुक्ल पंचमी को सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त यदि पूर्व की हवा चले, तो अन्न का संग्रह करना चाहिए आगे तेजी से काफी लाभ रहेगा। यदि वैशाख शु. पंचमी को सन्ध्या के समय हवा का जोर हो एवं बादल हों तो भाद्रपद में धान्य तेज रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, प्र० ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ (२ से १५ मई सन् १९८८ ई. तक), उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु

ग्रह दर्शन—गुरु अस्त है। पक्षारम्भ में ही बुध सायं पश्चिम में दीखने लगेगा। प्रातः मं. को याम्योत्तरासन्न शनि को पश्चिम कपाल में देखें। सूर्यास्तानन्तर शुक्र पश्चिम कपाल में चमकता दीखेगा।

वि. मा. घ.	वि. मा. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. अंग्रे.	अं.	श.	मु.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३	८	१	चं.	५८	३	स्वा.	७	३३	व्य.	४३	२६	बा.	२८	२४	२०	२	१२	१५	वृ. ५३।१६	५	४२	६	५७	०	१८	७	२	मंगल धनि. में २५।२५, शुक्र मिथुन में २५।३२, बुध पश्चिम में उदित,
३३	१२	२	मं.	५६	६	वि.	८	२३	व.	३९	३४	तै.	२७	६	२१	३	१३	१६	वृश्चिक	५	४१	६	५८	०	१९	५	१०	
३३	१६	३	बु.	५३	१८	अनु.	८	४	प.	३४	५०	ब.	२४	४३	२२	४	१४	१७	वृश्चिक	५	४०	६	५८	०	२०	३	१६	भ. २४।४३ उ. ५३।१८ या.,
३३	१९	४	गु.	४९	४१	ज्ये.	६	५२	शि.	२९	२६	ब.	२१	२९	२३	५	१५	१८	ध. ६।५२	५	३९	६	५९	०	२१	१	२१	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३३	२२	५	शु.	४५	२६	मू.	४	५६	सि.	२३	३०	कौ.	१७	३४	२४	६	१६	१९	धनु	५	३८	७	०	०	२१	५९	२४	बुध रोहि. में ५१।५५
३३	२६	६	श.	४०	४६	पू.षा.	२, ५९	५५, ३१	सा.	१७	९	ग.	१३	६	२५	७	१७	२०	म. १६।४१	५	३८	७	०	०	२२	५७	२६	भ. ४०।४६ उ., गुरु भर. ३ में १०।५५, जन्मदिन A
३३	३०	७	र.	३५	४७	श्र.	५६	२१	शु.	१०	३२	वि.	८	१६	२६	८	१८	२१	मकर	५	३७	७	१	०	२३	५५	२७	भ. ८।१६ या., राहु पू.भा. २ में केतु पू.फा. ४ में ३१।४५
३३	३४	८	चं.	३०	३२	ध.	५२	५५	शु.	३, ५९	४०, ३५	बा.	३	९	२७	९	१९	२२	कुं. २४।३८	५	३६	७	२	०	२४	५३	२५	पंचक प्रारम्भ २४।३८
३३	३८	९	मं.	२५	६	श.	४९	२३	ऐं.	४९	२६	ग.	२५	६	२८	१०	२०	२३	कुम्भ	५	३५	७	२	०	२५	५१	२३	भ. ५२।२१ उ., सूर्य कृत्ति. में ५०।२२
३३	४२	१०	बु.	१९	३६	पू.	४५	४८	वै.	४२	१६	वि.	१९	२६	२९	११	२१	२४	मी. ३१।४२	५	३५	७	३	०	२६	४९	२१	भ. १९।३६ या.
३३	४५	११	गु.	१४	५	उ.	४२	१४	वि.	३५	६	बा.	१४	५	३०	१२	२२	२५	मीन	५	३४	७	४	०	२७	४७	१६	मंगल कुम्भ में ३५।१५, अपरा ११ व्रत (स.), भद्रकाली ११ (पं.)
३३	४८	१२	शु.	८	४०	रे.	३८	५६	प्री.	२८	७	तै.	८	४०	३१	१३	२३	२६	मे. ३८।५६	५	३३	७	४	०	२८	४५	९	पंचक समाप्त ३८।५६, प्रदोष व्रत
३३	५१	१३	श.	३	३८	अ.	३६	५	आ.	२१	२८	व.	३	३८	ज्ये.	१४	२४	२७	मेष	५	३३	७	५	०	२९	४३	३	भ. ३।३८ उ. ३१।२९ या., सं. सूर्य वृष में १७।३२, मु. ३० B
अवम्		१४	श.	५९	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः,
३३	५४	३०	र.	५५	२५	भ.	३३	५५	सौ.	१५	२१	च.	२७	२९	२	१५	२५	२८	वृ. ४८।३७	५	३२	७	६	१	०	४०	५४	बुध मृग में ५५।५२, वट सावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमावस

A श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर

B पुण्यकाल १।३२ बाद

प्र. ज्येष्ठ कृ. ८ चन्द्र इष्ट ५९।४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१०	९	१	०	२	८	१०	४
२५	८	२८	१५	२०	३	८	२६	२६
५१	१६	१८	१०	४०	५६	११	३५	३५
१०	४५	३३	२४	१२	१०	२७	२०	२०
५७	९०	३९	६१	१४	२४	२	३	३
५९	४३	१३	५१	१७	३९	४२	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ
४	१	२	२	३	४	३	२	४
भर.	शत.	धनि.	रोहि.	भर.	मृग.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

कुण्डली सूर्योदये

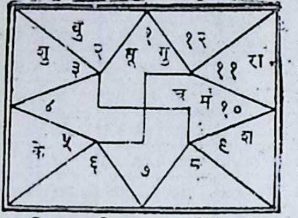

लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगल कुंभ में आकर राहु के साथ मेल करेगा एवं राहु-मंगल पर शनि की दृष्टि भी है, ईराक, ईरान, पाकिस्तान, बंगला देश एवं अन्य मुस्लिम राज्यों में कहीं अशान्ति एवं कहीं आन्तरिक कलह जोर पकड़ेगा। भारत के कुछ प्रान्तों में भी राजनैतिक अस्थिरता के लक्षण नजर आएंगे। रोग विशेष से जनता परेशान हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में शुक्र-शनि का दृष्टि सम्बन्ध गेहूं, जौ, चना, चावलों में तेजी एवं रुई, कपास, सूत, वस्त्र, बारदाना, तिलहन एवं तेलों में जोरदार तेजी या मन्दी बनेगी, बाजार का रुख देखकर काम करें। ८ मई के लगभग बाजार का रुख बदलेगा। १२ मई के लगभग रुई और चांदी में जोरदार घटा-बढ़ी होगी। गेहूं, चना आदि अनाजों एवं दालों में गुड़, खांड एवं तिलहन, सोना में तूफानी तेजी बनेगी। विचारपूर्वक काम करें। यह तेजी कुछ लम्बी चलेगी।

कुण्डली सूर्योदये

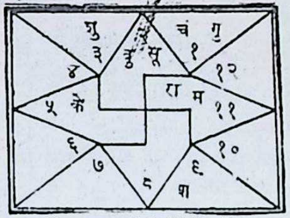

प्र. ज्येष्ठ कृ. ३० रवि, इष्ट ५९।५५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
१	१	१०	१	०	२	८	१०	४
१	२	२	२३	२२	५	७	२६	२६
३८	३५	१२	२४	५	५६	५४	१६	१६
४१	५०	५३	५३	४०	५७	६	१५	१५
५७	८०८	३८	६८	१४	१३	३	३	३
५२	३३	४९	४९	१२	२७	९	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	—
२	२	३	१	३	४	३	२	४
कृत्ति.	कृत्ति.	धनि.	मृग.	भर.	मृग.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

आकाश लक्षण—इस पक्ष में तापमान उत्तरोत्तर बढ़ेगा, लेकिन कुछ प्रांतों में मई २, ६, ७, ८ १२, १४ के लगभग वायुवेग के साथ बूंदा-बांदी, खण्ड वृष्टि होने के योग हैं।

शकुन विचार—ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को यदि दक्षिण की वायु चले तो घी, तिल, तेल खरीदें, आश्विन में लाभ होगा। अगर ज्येष्ठ में दक्षिण दिशा में मेघ गरजें तो तिलहन के स्टाक से चार मास में उत्तम लाभ होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, प्र. (अधिक) ज्ये. शुक्ल पक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र राशि | पञ्चाङ्ग | उदय-कालिक (१६ से ३१ मई सन् १९८८ ई. तक), उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. वैशा.	मु. रमजान	प्रवेश काल घ. प.	भा. स्टै. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३३	५७	१	चं.	५२	५१	कृ.	३२	४५	शो.	९	५६	कि.	२४	८	३	१६	२६	२९	वृष	५	३१	७	६	१	१	३८	४५
३४	०	२	मं.	५१	४०	रो.	३२	५२	अ.	५	३०	बा.	२२	१६	४	१७	२७	३०	वृष	५	३१	७	७	१	२	३६	३४
३४	३	३	बु.	५२	२	मृ.	३४	२८	सु.	२	१३	तै.	२१	५१	५	१८	२८	श.'	मि. ३।४०	५	३०	७	८	१	३	३४	२२
३४	६	४	गु.	५४	७	आ.	३७	४३	धृ.	५९ / ०	२७ / ११	व.	२३	४	६	१९	२९	२	मिथुन	५	३०	७	८	१	४	३२	८
३४	९	५	शु.	५७	५१	पुन.	४२	३६	गं.	६०	०	व.	२५	५९	७	२०	३०	३	क. २६।२०	५	२९	७	९	१	५	२९	५४
३४	१२	६	श.	६०	०	पु.	४८	५१	गं.	०	५	कौ.	३०	२४	८	२१	३१	४	कर्क	५	२९	७	१०	१	६	२७	३७
३४	१५	६	र.	२	५७	आ.	५६	९	वृ.	१	४१	तै.	२	५७	९	२२	जे.'	५	सिं. ५६। ९	५	२८	७	१०	१	७	२५	१९
३४	१८	७	चं.	९	०	म.	६०	०	ध्रु.	४	३	व.	९	०	१०	२३	२	६	सिंह	५	२८	७	११	१	८	२२	०
३४	२१	८	मं.	१५	२३	म.	३	५५	व्या.	६	४२	व.	१५	२३	११	२४	३	७	सिंह	५	२७	७	११	१	९	२०	३९
३४	२४	९	बु.	२१	२४	पू.फा.	११	२६	ह.	९	१०	कौ.	२१	२४	१२	२५	४	८	कं. २८। ७	५	२७	७	१२	१	१०	१८	१६
३४	२६	१०	गु.	२६	३१	उ.फा.	१८	१०	व.	११	१	ग.	२६	३१	१३	२६	५	९	कन्या	५	२६	७	१३	१	११	१५	५३
३४	२८	११	शु.	३०	१०	ह.	२३	३२	सि.	११	५०	वि.	३०	१०	१४	२७	६	१०	तु. ५५।२३	५	२६	७	१३	१	१२	१३	२७
३४	३०	१२	श.	३२	५	चि.	२७	१४	व्य.	११	२०	व.	१	८	१५	२८	७	११	तुला	५	२६	७	१४	१	१३	१०	०
३४	३३	१३	र.	३२	१३	स्वा.	२९	१३	व.	९	२७	कौ.	२	९	१६	२९	८	१२	तुला	५	२५	७	१४	१	१४	८	३१
३४	३५	१४	चं.	३०	३६	वि.	२९	२८	प.	६	१०	ग.	१	२४	१७	३०	९	१३	वृ. १४।१२	५	२५	७	१५	१	१५	६	२
३४	३७	१५	मं.	२७	२९	अनू.	२८	१३	शि.	५५ / १	५० / ३४	व.	२७	२९	१८	३१	१०	१४	वृश्चिक	५	२५	७	१६	१	१६	३	३२

ग्रह दर्शन—गुरु १९ मई को प्रातः पूर्व में ही दीखने लगेगा। उषाः काल में मंगल याम्योत्तरासन्न एवं शनि पश्चिम में ही दीखेगा। सायं बुध-शुक्र को पश्चिम में देखें।

मल (अधिक) मास प्रारम्भ, वक्री यूरेनस मूल २ में

चन्द्रदर्शन मु. ३०

शव्वाल मुस्लिम प्रारम्भ

भ. २३।५ उ. ५४।७ या., गुरु उदित ४८।५

शुक्र आर्द्रा में २५।३५, सायन मिथुन में सूर्य ५०।१७

गुरु भरणी ४ में १५।१०

मंगल शत. में ५५।२५, शुक्र वक्री ६।४५, शाक ज्येष्ठ प्रारम्भ, A

भ. ९।० उ. ४२।१२ या., बुध मिथुन में १।५

सूर्य रोहि. में ४०।५७, वक्री शुक्र मृग. में ३९।२५

भ. ५८।२१ उ. श्री गंगा दशहरा (देखें 'संदिग्ध व्र. पर्व व्यवस्था')

भ. ३०।१० या., पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.)

शनि प्रदोष व्रत

भ. ३०।३६ उ. ५९।२ या., श्री सत्यनारायण व्रत

बुध वक्री ५३।३८, व. वेंकटेश(प्लूटो) स्वाती ३ में, श्री काञ्ची B

गुरु उदित १९ मई

A गुरु वाल्य समाप्त ४८।५ B मठाधीश जगद्गुरु अनन्त श्री वृद्ध शङ्कराचार्य जन्मोत्सव

प्र. (अधिक) ज्ये. शु. ८ मं., इष्ट ०।७

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१०	२	०	२	८	१०	४
९	१२	७	०	२३	६	७	२५	२५
२०	३५	२१	३८	५८	४३	२७	५०	५०
४५	२	१२	२५	३९	४	५	४९	४९
५७	[illegible]	३८	३५	१४	४	३	३	३
३९	३६	९	३६	०	४१	३९	११	११
—	—	मा	मा	मा	व	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
४	४	२	३	४	१	३	२	४
कृत्ति.	मघा	शत.	मृग.	भर.	आर्द्रा	मूल	पू.भा.	उ.फा.

फुण्डली सूर्योदये

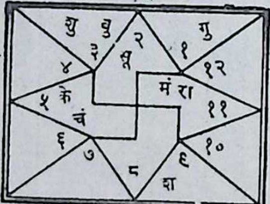

लोक भविष्य—ज्येष्ठ अधिमास है;—शास्त्रों में "द्विज्येष्ठ नृप विग्रहः" फल लिखा है। राजनीतिज्ञों में परस्पर कलह एवं आपसी विरोध बढ़ेगा। विरोधी देशों में परस्पर तनाव से अशान्ति हो, चीन, पाक एवं अन्य यावन देशों की नीति से विश्व में हलचल हो। किसी विशिष्ट राजनयिक के निधन से शोक व्याप्त होगा। खड़ी फसलों को हानि होगी, मंहगाई बढ़ेगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१९ मई के लगभग चांदी में तेजी बनेगी, सोना एवं गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा आदि में अकस्मात मन्दा आने का योग है। २२ मई के लगभग बाजारों में चल रही मन्दे की लाईन बदल सकती है, बाज़ार का रुख देखकर काम करें, गुड़ में तेजी की लम्बी लाईन चलती रहेगी। २३ मई के लगभग तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खांड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा एवं मिर्च में तेजी का वातावरण रहे।

फुण्डली सूर्योदये **प्र. (अधिक) ज्ये. शु. १५ मं., इष्ट ०।१२**

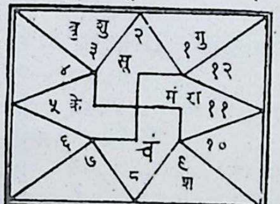

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१०	२	०	२	८	१०	४
१६	१०	११	३	२५	५	७	२५	२५
३	१६	४६	३	३६	१९	०	२८	२८
४४	२७	१०	११	६	३२	२६	३३	३३
५७	[illegible]	३७	२	१३	२१	४	३	३
२८	१६	२५	२	४७	२६	०	११	११
—	—	मा	मा	मा	व	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	३	२	३	४	४	३	२	४
रोहि.	अनु.	शत.	मृग.	भर.	मृग.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

आकाश लक्षण—१८ मई तक गर्मी जोड़ पकड़ेगी, तत्पश्चात् १९ मई से मासान्त तक, विशेषतः मई १९ से २३ एवं ३१ मई को हिमाचल प्रदेश, सिक्कम, भूटान, शिलांग एवं लंका के पश्चिमी छोर में वर्षा एवं बादल चाल के योग हैं।

शकुन विचार—जिस वर्ष पीपल के फल फूल अधिक हों, तो उस वर्ष मोठ बाजरा कम, तथा अन्य सब अनाजों की पैदावार श्रेष्ठ होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, द्वि. (अधिक) ज्ये. कृष्ण पक्ष ६ | तारीखे | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (१ से १४ जून सन् १९८८ ई. तक), उत्तरायण, ग्रीष्म ऋतु

ग्रह दर्शन—बुध ४ जून को तथा शुक्र १० जून को अस्त हो जाएंगे। प्रातः मं. याम्योत्तरासन्न एवं गुरु पूर्व में होगा। शनि सूर्यास्त बाद पूर्व में उदित होकर लगभग सारी रात दीखेगा।

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. ज्येष्ठ	अ. जून	श. ज्येष्ठ	मु. हाडा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४०	१	बु.	२३	११	ज्ये.	२५	४६	सा.	४६	२५	कौ.	२३	११	१६	१	११	१५	घ. २५।४६	५	२५	७	१६	१	१७	०	५६	**जून प्रारम्भ**
३४	४२	२	गु.	१८	०	मू.	२२	३२	शु.	४२	१६	ग.	१८	०	२०	२	१२	१६	धनु	५	२४	७	१७	१	१७	५८	२७	भ. ४५।७ उ.,
३४	४३	३	शु.	१२	१४	पू.षा.	१८	४३	शु.	३४	५५	वि.	१२	१४	२१	३	१३	१७	म. ३२।४२	५	२४	७	१७	१	१८	५५	५४	भ. १२।१४ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३४	४५	४	श.	६	१५	उ.षा.	१४	४१	ब्र.	२७	१६	बा.	६	१५	२२	४	१४	१८	मकर	५	२४	७	१८	१	१९	५३	१९	गुरु कृत्ति. १ में ३९।३७, बुध पश्चिम में अस्त
अवम्		५	श.	५६	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथि क्षय
३४	४७	६	र.	५४	२१	श्र.	१०	४०	ऐं.	१९	४८	ग.	२७	४	२३	५	१५	१९	कुं. ३८।४५	५	२४	७	१८	१	२०	५०	४४	भ. ५४।२१ उ., पंचक प्रा. ३८।४५, वक्री शनि मूल २ में ०।५७
३४	४९	७	चं.	४८	४८	ध.	६	५०	वै.	१२	२७	वि.	२१	३४	२४	६	१६	२०	कुम्भ	५	२४	७	१९	१	२१	४८	९	भ. २१।३५ या.
३४	५०	८	मं.	४३	३९	श.	३	२०	वि.	५५/५८	३५/५४	बा.	१६	१३	२५	७	१७	२१	मी. ४५।५८	५	२४	७	१९	१	२२	४५	३१	सूर्य मृग. में ३६।३, शुक्र वार्द्धक्य प्रारम्भ १२।०
३४	५२	९	बु.	३८	५३	पू.भा.	०/५७	१३/३४	आ.	५२	१९	तै.	११	१६	२६	८	१८	२२	मीन	५	२४	७	२०	१	२३	४२	५५	
३४	५३	१०	गु.	३४	३७	रे.	५५	२४	सौ.	४६	२१	व.	६	४५	२७	९	१९	२३	मे. ५५।२४	५	२३	७	२०	१	२४	४०	१८	भ. ६।४५ उ. ३४।३७ या., पंचक समाप्त ५५।२४
३४	५४	११	शु.	३०	५३	अ.	५३	४७	शो.	४०	५१	ब.	२	४५	२८	१०	२०	२४	मेष	५	२३	७	२०	१	२५	३७	३९	वक्री बुध वृष में ४५।७, वक्री शुक्र वृष में ३६।५, पुरुषोत्तमा A
३४	५५	१२	श.	२७	४५	भ.	५२	४८	अ.	३५	४९	तै.	२७	४५	२९	११	२१	२५	मेष	५	२३	७	२१	१	२६	३५	२	शनि प्रदोश व्रत
३४	५६	१३	र.	२५	२०	कृ.	५२	३७	सु.	३१	२४	व.	२५	२०	३०	१२	२२	२६	वृ. ७।४५	५	२३	७	२१	१	२७	३२	२४	भ. २५।२० उ. ५४।३५ या.
३४	५७	१४	चं.	२३	४९	रो.	५३	२२	धृ.	२७	४३	श.	२३	४९	३१	१३	२३	२७	वृष	५	२३	७	२२	१	२८	२९	४३	मंगल पू.भा. में २९।५२
३४	५९	३०	मं.	२३	२१	मृ.	५५	१८	शू.	२४	५३	ना.	२३	२१	आ'	१४	२४	२८	मि. २४।२०	५	२३	७	२२	१	२९	२७	५	सं. सूर्य मियुन में ३४।३८, मु. ३०, पुण्यकाल १८।३८ बाद., B

शुक्र अस्त १० जून

A एकादशी व्रत (स.), शुक्र पश्चिम में अस्त १२।० B भौमवती अमावस, मल (अधिक) मास समाप्त

द्वि. (अधि.) ज्ये. कृ. ८ मं., इष्ट ०।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
१	१०	१०	२	०	२	८	१०	४
२२	१९	१६	१	२७	२	६	२५	२५
४५	१६	५	४७	११	७	३१	६	६
४७	३९	३३	५५	५१	२७	३८	१८	१८
५७	७४१	३६	२५	१३	३४	४	३	३
२३	४१	३२	२९	३२	५	१५	११	११
—	—	मा	व	मा	व	व	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
रोहि. ४	शत. ४	शत. ३	मृग. ३	कृत्ति. १	मृग. ३	मूल २	पू.भा. २	पू.फा. ४

कुण्डली सूर्योदये

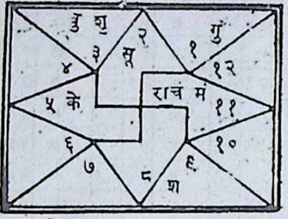

लोक भविष्य—इस पक्ष में बुध-शुक्र दोनों वक्र होकर वृष राशि में प्रविष्ट होते हैं, साथ ही शुक्र भी अस्त हो जाता है—इटली, रोम, जापान में भूकम्प भय, वर्मा, स्याम, चीन एवं अमेरिका में राजनैतिक हलचल रहे। कुछ प्रान्तों में वर्षा का अभाव एवं कुछ प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप व अधिक वर्षा से हानि होगी। सू.-बु.-शु. एकत्र होने से अनाज मंहगे हों;—"एक राशौ यदा स्युस्ते सौम्य शुक्र विनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥"

कुण्डली सूर्योदये

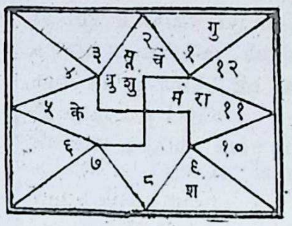

द्वि. (अधि.) ज्ये. कृ. ३० मं., इष्ट ०।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क
१	१	१०	१	०	१	८	१०	४
२९	२४	२०	२८	२८	२७	६	२४	२४
२७	४९	१८	११	४५	५२	१	४४	४४
२०	०	२	२३	३३	४३	२२	२	२
५७	७७४	३५	३३	१३	३७	४	३	३
२०	२९	२५	९	११	१९	२४	११	११
—	—	मा	व	मा	व	व	व	व
—	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
मृग. २	मृग. १	पू.भा. १	मृग. २	कृत्ति. १	मृग. २	मूल २	पू.भा. २	पू.फा. ४

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई में मन्दे के बाद तेजी आएगी। गेहूं, चना आदि अनाजों में ४० दिन में अच्छी तेजी आएगी। तिल, घी, पाट, हैसियन एवं लाल मिर्च में तेजी आएगी। ७ जून से पक्षान्त तक पाट, वारदाना, रेशम, सूत, कपास, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना तथा सोना में तेजी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षण—पक्षारम्भ में गर्मी का प्रकोप वढेगा एवं अनेकत्र गर्म हवा से तापमान ऊँचा रहेगा। लेकिन जून ४, १०, ११ एवं १४ को कुछ प्रान्तों में खण्डवृष्टि एवं वादल चाल रहेगी।

शकुन विचार—जिस वर्ष भूमि में फैलने वाली जड़ी बूटियों में फूल लगें, और आक के फल पककर फूटें और उनमें रुई उड़ने लगे तो चावल, मोठ, चने, तिल की फसल उत्तम होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, द्वि. (शुद्ध) ज्ये. शुक्ल पक्ष ७ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक (१५ से २९ जून सन् १९८८ ई. तक), उ.-दक्षिणायन, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. शव्वाल	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	मा. स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३५	०	१	बु.	२४	११	श्रा.	५८	३२	गं.	२३	५	ब.	२४	११	२	१५	२५	२६	मिथुन	५	२४	७	२२	२	०	२४	२४	चन्द्रदर्शन मु. १५
३५	१	२	गु.	२६	२२	पुन.	६०	०	वृ.	२२	२०	कौ.	२६	२२	३	१६	२६	जि'	क. ४६।५६	५	२४	७	२३	२	१	२१	४४	जिल्काद मु. प्रारम्भ, रम्भा व्रत
३५	१	३	शु.	२९	५६	पुन.	३	५	ध्रु.	२२	४०	ग.	२९	५६	४	१७	२७	२	कर्क	५	२४	७	२३	२	२	१९	३	श्री महाराणा प्रताप जयन्ती (राजस्थान)
३५	१	४	श.	३४	४९	पु.	९	०	व्या.	२४	३	व.	२	२२	५	१८	२८	३	कर्क	५	२४	७	२३	२	३	१६	२१	भ. २।२२ उ. ३४।४९ या., उमा पूजन व्रत, बलिदान दिन A
३५	१	५	र.	४०	३९	श्ला.	१५	५९	ह.	२६	१२	व.	७	४४	६	१९	२९	४	सिं. १५।५९	५	२४	७	२३	२	४	१३	३९	गुरु फुलि. २ वृष में ४२।१२, शुक्र पूर्व में उदित ४८।१ (शुक्रोदय १९ जून)
३५	१	६	चं.	४७	१	म.	२३	३७	व.	२८	५०	कौ.	१३	५०	७	२०	३०	५	सिंह	५	२४	७	२४	२	५	१०	५७	
३५	१	७	मं.	५३	१८	पू.फा.	३१	२५	सि.	३१	३४	ग.	२०	९	८	२१	३१	६	कं. ४८।१४	५	२४	७	२४	२	६	८	१३	भ. ५३।१८ उ., सूर्य आर्द्रा में ३३।२०, सायन कर्क में सूर्य १०।२५, B
३५	१	८	बु.	५८	४८	उ.फा.	३८	४१	व्य.	३३	५१	वि.	२६	३	९	२२	आ'	७	कन्या	५	२५	७	२४	२	७	५	२८	भ. २६।३ या., वक्री शुक्र रोहि. में ०।२५, बुध पूर्व में उदित C
३५	१	९	गु.	६०	०	ह.	४४	५१	व.	३५	१८	वा.	०	५४	१०	२३	२	८	कन्या	५	२५	७	२४	२	८	२	४४	
३५	१	९	शु.	३	१	चि.	४९	२६	प.	३५	३३	कौ.	३	१	११	२४	३	९	तु. १७। ४	५	२५	७	२४	२	८	५९	५८	बुध मार्गी २९।२
३५	०	१०	श.	५	२७	स्वा.	५२	४	शि.	३४	१६	ग.	५	२७	१२	२५	४	१०	तुला	५	२५	७	२५	२	९	५७	१२	भ. ३५।४० उ.,
३५	०	११	र.	५	५२	वि.	५२	४४	सि.	३१	२३	वि.	५	५२	१३	२६	५	११	वृ. ३७।३४	५	२६	७	२५	२	१०	५४	२६	भ. ५।५२ या., निर्जला एकादशी व्रत (स.), चम्पक द्वादशी
३५	०	१२	चं.	४	१८	अनु.	५१	३१	सा.	२९	५६	बा.	४	१८	१४	२७	६	१२	वृश्चिक	५	२६	७	२५	२	११	५१	३८	सोम प्रदोष व्रत
३५	०	१३	मं.	०	५२	ज्ये.	४८	३८	शु.	२१	२	तै.	०	५२	१५	२८	७	१३	ध. ४८।४८	५	२६	७	२५	२	१२	४८	५१	भ. ५५।५० उ.,
अवम्		१४	मं.	५५	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षय
३४	५९	१५	बु.	४९	३३	मू.	४४	२९	शु.	१३	५६	वि.	२२	४२	१६	२९	८	१४	धनु	५	२७	७	२५	२	१३	४६	३	भ. २२।४२ या., श्री सत्यनारायण व्र., वटसावित्री व्र (पूर्णिमा पक्ष)

A श्री गुरु अर्जुन देव जी B दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रारम्भ C शुक्र बाल्य. समाप्त ४८।१, शक आषाढ़ प्रारम्भ

द्वि. (शुद्ध) ज्ये. शु. ८ बुध., इष्ट ०।१२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	१०	१	१	१	८	१०	४
७	२	२४	२४	०	२३	५	२४	२४
५	२१	५६	४६	२९	२०	२५	१८	१८
४१	१९	१२	४२	३२	६	५६	३६	३६
५७	[illegible]	३३	१०	१२	२७	४	३	३
१५	२३	५२	४९	४४	३६	२६	११	११
—	—	मा	व	मा	व	व	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा १	उ.फा. २	पू.भा. २	मृग. १	कृत्ति. २	मृग. १	मूल २	पू.भा. २	पू.फा. ४

कुण्डली सूर्योदये

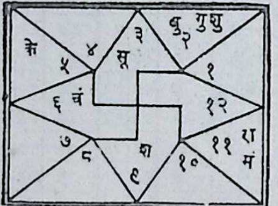

लोक भविष्य—इस पक्ष में वृहस्पति वृष राशि में प्रवेश करेगा। वृष राशि में गुरु का फल इस प्रकार लिखा है—"वृषे जीवे सुभिक्षं स्यात् गोरस्य महर्घता। स्वल्प वृष्टिः प्रजापीड़ा सस्यानां बहुधा भवेत्॥" वर्षा कम पुनरपि सुभिक्ष रहे। वृहत्संहिता के अनुसार पूर्वी भाग में मलेरिया, चेचक, निमोनिया, हैजा आदि से कष्ट भय बने। श्रावण, भाद्रपद में पशुओं को हानि होगी। इस पक्ष में शुक्रोदय एवं गुरु-शुक्र युद्ध कहीं युद्ध विभीषिका को जन्म देगा। २१ जून को मंगल-राहु की अंशात्मक युति भी कहीं दुर्घटना एवं आगजनी आदि से हानि कारक है। **ग्रहचाल और बाजार का रुख**—१९ जून के लगभग रुई, चांदी, गेहूं, चना, घी, तेल में तेजी का वातावरण बनेगा। सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड में भी पक्ष मध्य में अच्छी तेजी का वातावरण बनेगा। २२ जून के लगभग बाजार का रुख बदल सकता है, विचार पूर्वक कार्य करें। २४ जून से गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में तेजी एवं तेल तिलहन में मन्दे का वातावरण बनेगा।

कुण्डली सूर्योदये

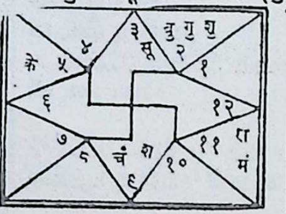

द्वि. (शुद्ध) ज्ये. शु. १५ बुध., इष्ट ०।७

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	१०	१	१	१	८	१०	४
१३	२	२८	२५	१	२०	४	२३	२३
४६	४३	४८	६	५७	५१	५५	५६	५६
१०	४७	३२	२९	१६	९	७	२१	२१
५७	[illegible]	३२	२२	१२	१२	४	३	३
११	५३	१४	५०	१५	१५	२०	११	११
—	—	मा	मा	मा	व	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
आर्द्रा ३	मूल १	पू.भा. ३	मृग. १	कृत्ति. २	रोहि. ४	मूल २	पू.भा. २	पू.फा. ४

आकाश लक्षण—इस पक्ष में १५ से २५ जून के मध्य पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, बम्बई, भूटान, शिलांग, सिक्कम आदि में अनेकत्र बादल चाल व वर्षा के योग हैं। विशेषतः १९ से २४ जून तक वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार—यदि ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को बादल गरजें, आकाश मेघाच्छन्न रहे, दक्षिण की हवा चले तो उस समय तिल का स्टाक करें, आगे कार्तिक में उत्तम लाभ मिलेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१०, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ८ | तारीख | चन्द्र राशि | घण्टौणड़ | उदय-कालिक | (३० जून से १३ जुला. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, वर्षा ऋतु

ग्रह दर्शन—प्रातः मंगल को पश्चिम कपाल में, गुरु को पूर्व में तथा उससे नीचे शुक्र तथा बुध देखें, सायं शनि को पूर्व में देखें।

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. आषाढ़	अं. जून	श. आषाढ़	मु. ज़िल्का.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	विवरण
३४|५८	१	गु.	४२	२७	पू.षा.	३९	२८	ब्र.	५७/५	१८/५८	बा.	१६	०	१७	३०	९	१५	म. ५३। ५	५	२७	७	२५	२	१४	४३	१४	
३४|५७	२	शु.	३४	५२	उ.षा.	३३	५७	ऐं.	४८	२७	तै.	८	३९	१८	जु'	१०	१६	मकर	५	२७	७	२५	२	१५	४०	२६	
३४|५६	३	श.	२७	१३	श्र.	२८	२०	वि.	३९	३३	व.	१	३	१९	२	११	१७	कुं. ५५।४०	५	२८	७	२५	२	१६	३७	३७	मंगल मीन में १३।५०, जुलाई प्रारम्भ
३४|५५	४	र.	१९	४९	ध.	२२	५९	प्री.	३०	५६	बा.	१९	४९	२०	३	१२	१८	कुम्भ	५	२८	७	२५	२	१७	३४	४८	भ. १।३ उ. २७।१३ या., पंचक प्रा. ५५।४०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३४|५४	५	चं.	१२	५४	श.	१८	९	आ.	२२	४५	तै.	१२	५४	२१	४	१३	१९	कुम्भ	५	२९	७	२५	२	१८	३२	१	
३४|५३	६	मं.	६	४१	पू.भा.	१४	२	सौ.	१५	११	व.	६	४१	२२	५	१४	२०	मी. ०। ४	५	२९	७	२५	२	१९	२९	११	शुक्र मार्गी ११।१०
३४|५२	७	बु.	१	२२	उ.भा.	१०	४९	शो.	८	२२	व.	१	२२	२३	६	१५	२१	मीन	५	२९	७	२५	२	२०	२६	२४	भ. ६।४१ उ. ३४।२ या., सूर्य पुन. में ३२।२०, गुरु कृत्तिका ३ A
अवम्	८	बु.	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	बुध मिथुन में ४३।४७
३४|५०	९	गु.	५३	३३	रे.	८	३३	अ.	५७/२	०/१८	तै.	२५	१६	२४	७	१६	२२	मे. ८।३३	५	३०	७	२४	२	२१	२३	३७	अष्टमी तिथि क्षय
३४|४८	१०	शु.	५१	८	अ.	७	१३	धृ.	५२	३६	व.	२२	५०	२५	८	१७	२३	मेष	५	३०	७	२४	२	२२	२०	४९	पंचक समाप्त ८।३३, मंगल उ.भा. में ४३।७
३४|४६	११	श.	४९	४४	भ.	६	५५	शू.	४८	५७	व.	२०	२६	२६	९	१८	२४	वृ. २२। ७	५	३१	७	२४	२	२३	१८	३	भ. २२।२० उ. ५१।८ या.,
३४|४४	१२	र.	४९	१८	कृ.	७	३६	गं.	४६	५	कौ.	१९	३१	२७	१०	१९	२५	वृष	५	३१	७	२४	२	२४	१५	१८	योगिनी एकादशी व्रत (स.)
३४|४२	१३	चं.	४९	५७	रो.	९	१६	वृ.	४४	५	ग.	१९	३७	२८	११	२०	२६	मि.४०।३८	५	३२	७	२४	२	२५	१२	३१	राहु पू.भा. १ में केतु, पू.फा. ३ में २५।४२
३४|४०	१४	मं.	५१	४३	मृ.	१२	१	ध्रु.	४२	५६	वि.	२०	५०	२९	१२	२१	२७	मिथुन	५	३२	७	२३	२	२६	९	४७	भ. ४९।५७ उ., सोम प्रदोष व्रत
३४|३८	३०	बु.	५४	३३	आ.	१५	४९	व्या.	४२	३९	च.	२३	८	३०	१३	२२	२८	मिथुन	५	३३	७	२३	२	२७	७	३	भ. २०।५० या., बुध आर्द्रा में ३२।१२

A में ५२।२५

आषाढ़ कृ. ७ बुध, इष्ट ०।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	११	९	१	१	८	१०	४
२०	१४	२	२९	४	२०	४	२३	२३
२६	८	२८	१९	२१	१६	२५	३४	३४
२५	५७	१८	५५	३१	०	१५	५	५
५७	८११	३०	५४	११	४	४	३	३
१२	२९	१३	५७	४३	२२	९	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुन. १	उ.भा. ४	पू.भा. ४	मृग. २	कृत्ति. ३	रोहि. ४	मूल २	पू.भा. २	पू.फा. ४

कुण्डली सूर्योदये

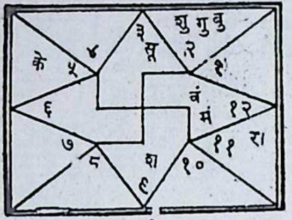

लोक भविष्य—गुरु-शुक्र युद्ध यथावत् चल रहा है, विरोधी देशों में परस्पर तनाव बढ़ेगा। मुस्लिम देशों में विशेष उपद्रव होंगे, वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप से कहीं जनधन हानि व फसल को हानि हो, कहीं सूखा रहने से अकाल की स्थिति बनेगी, कहीं युद्ध विभीषिका से वातावरण अशान्त बनेगा। पक्षान्त में बुध आर्द्रा में प्रविष्ट होकर वायुवेग के साथ वर्षा का योग बनाता है। "आर्द्रायां वृष्टिरतुला ग्रहपाताः प्रवाहतः।"

कुण्डली सूर्योदये

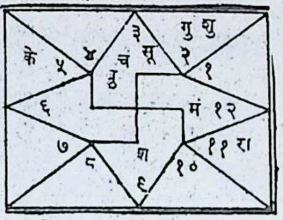

आषाढ़ कृ. ३० बुध, इष्ट ५९।५३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
२	२	११	२	१	१	८	१०	४
२८	२९	६	८	४	२१	३	२३	२३
४	४	२०	४२	५२	४९	५३	८	८
१०	२९	३२	४६	५६	५५	९	३९	३९
५७	८११	२७	८९	११	२०	३	३	३
१५	१६	२४	२४	२	३४	४८	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	—
पुन. ३	पुन. ३	उ.भा. १	आर्द्रा १	कृत्ति. ३	रोहि. ४	मूल २	पू.भा. १	पू.फा. ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में बाजार अस्थिर रहें, इस समय अनाज, घी, गुड़ के संग्रह से आगे लाभ मिल सकेगा। ५ जुलाई के लगभग रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, कपास, बिनौला, एरंड, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल एवं चना, जौ तथा सुगन्धित पदार्थों में तेजी आयेगी पक्षान्त तक तेजी प्रधान रहे।

आकाश लक्षण—जून के पूर्वार्घ में ६ जुलाई तक सार्वजनिक वर्षा के कारण कृषक वर्ग प्रसन्न रहे, लेकिन तत्पश्चात् बादल चाल बूंदा-बांदी हो परन्तु ११ जुलाई तक वर्षा की कुछ प्रान्तों में कमी भी अनुभव होगी। पुनरपि १० से १३ जुलाई तक वर्षा हो।

शकुन विचार—आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली चमके और मेघ गर्जना हो या वर्षा हो तो आगे धान्य तेज हो, दो मास तक वर्षा की कमी से कष्ट, राजनैतिक अस्थिरता भी रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० आषाढ़ शुक्ल पक्ष ९ (१४ से २९ जुलाई सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, वर्षा ऋतु

ग्रह दर्शन—बुध २२ जुलाई को पूर्व में अस्त होगा। प्रातः मंगल पश्चिम कपाल में तथा गुरु-शुक्र पूर्व में होंगे। सायं शनि को पूर्व कपाल में देखें।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज़िल्का.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३६	१	गु.	५८	३४	पुन.	२०	४३	ह.	४३	१५	कि.	२६	३३	३१	१४	२३	२९	क. ४।३७	५	३३	७	२३	२	२८	४	१८	
३४	३४	२	शु.	६०	०	पु.	२६	४३	व.	४४	४१	बा.	३१	५	३२	१५	२४	३०	कर्क	५	३४	७	२३	२	२९	१	३५	चन्द्र दर्शन मु. १५, श्री जगदीश रथोत्सव (पुरी)
३४	३२	२	श.	३	३६	श्रा.	३३	३८	सि.	४६	४८	कौ.	३	३६	श्रा'	१६	२५	जि'	सिं. ३३।३८	५	३५	७	२२	२	२९	५८	५२	सं. सूर्य कर्क में १।१०, मु. १५, पुण्यकाल १७।१० तक, जिल्हिज A
३४	३०	३	र.	९	२९	म.	४१	१४	व्य.	४९	२६	ग.	९	२९	२	१७	२६	२	सिंह	५	३५	७	२२	३	०	५६	८	भ. ४२।४२ उ., शुक्र मृग. में ५४।१२
३४	२७	४	चं.	१५	५६	पू.फा.	४९	१०	व.	५२	१७	वि.	१५	५६	३	१८	२७	३	सिंह	५	३६	७	२१	३	१	५३	२६	भ. १५।५६ या.
३४	२५	५	मं.	२२	२४	उ.फा.	५६	५२	प.	५४	५५	बा.	२२	२४	४	१९	२८	४	कं. ६।६	५	३६	७	२१	३	२	५०	४५	सूर्य पुष्य में ३०।४०
३४	२२	६	बु.	२८	२३	ह.	६०	०	शि.	५६	५९	तै.	२८	२३	५	२०	२९	५	कन्या	५	३७	७	२१	३	३	४८	२	बुध पुन. में ४५।२२
३४	२०	७	गु.	३३	१९	ह.	३	४९	सि.	५८	२	ग.	०	५१	६	२१	३०	६	तु. ३६।३८	५	३७	७	२०	३	४	४५	२०	भ. ३३।१९ उ., विवस्वत सप्तमी
३४	१७	८	शु.	३६	४२	चि.	९	२८	सा.	५७	४८	वि.	५	१	७	२२	३१	७	तुला	५	३८	७	२०	३	५	४२	३९	भ. ५।१ या., सायन सिंह में सूर्य ३७।१०, बुध पूर्व में अस्त
३४	१४	९	श.	३८	११	स्वा.	१३	२५	शु.	५६	०	बा.	७	५६	८	२३	श्रा'	८	वृ. ५९।५३	५	३९	७	१९	३	६	३९	५७	व. शनि मूल १ में १६।१०, शक श्रावण प्रा., वेंकटेश (प्लूटो) मार्गी
३४	११	१०	र.	३७	३२	वि.	१५	२२	शु.	५२	२९	तै.	७	५१	९	२४	२	९	वृश्चिक	५	३९	७	१९	३	७	३७	१६	गुरु कृत्ति. ४ में ७।७
३४	८	११	चं.	३४	४९	अनु.	१५	१३	ब्र.	४७	२०	व.	६	११	१०	२५	३	१०	वृश्चिक	५	४०	७	१८	३	८	३४	३५	भ. ६।११ उ. ३४।४९ या., बुध कर्क में ५०।२५, हरिशयनी B
३४	६	१२	मं.	३०	१३	ज्ये.	१३	८	ऐं.	४०	४०	ब.	२	३१	११	२६	४	११	ध. १३।८	५	४१	७	१७	३	९	३१	५५	भौम प्रदोष व्रत
३४	३	१३	बु.	२३	५६	मू.	९	१८	वै.	३२	४२	तै.	२३	५६	१२	२७	५	१२	धनु	५	४१	७	१७	३	१०	२९	१४	बुध पुष्य में २७।५
३४	०	१४	गु.	१६	२४	पू.षा.	४/५७	४/५३	वि.	२३	४३	व.	१६	२४	१३	२८	६	१३	म. १७।३१	५	४२	७	१६	३	११	२६	३४	भ. १६।२४ उ. ४२।१२ या., श्री सत्यनारायण व्रत, शिवशयनोत्सव C
३३	५७	१५	शु.	८	१	श्र.	५१	१३	प्री.	१४	६	ब.	८	१	१४	२९	७	१४	मकर	५	४२	७	१५	३	१२	२३	५६	शुक्र मिथुन में ३४।२२, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, संन्यासियों का D

A मु. प्रारम्भ B एकादशी व्रत (स.) C कोकिला व्रत D चातुर्मास्य व्रत नियम प्रारम्भ

आषाढ़ शु. ८ शुक्र, इष्ट ५९।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	११	२	१	१	८	१०	४
६	१७	१०	२४	६	२५	३	२२	२२
३९	५	१२	१६	२८	५२	२०	४०	४०
३७	३९	१२	४५	३८	५४	५४	२	२
५७	[illegible]	२३	[illegible]	१०	३४	३	३	३
१७	१७	३१	४३	७	१४	१६	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पुष्य	स्वा.	उ.भा.	पुन.	कृत्ति.	मृग.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

कुण्डली सूर्योदये

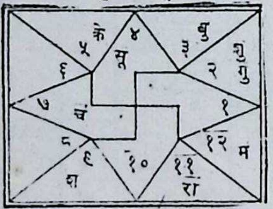

लोक भविष्य—कर्क संक्रांति शनिवारी है, कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से जनता परेशान हो किंवा कहीं अतिवर्षण से हानि भी होगी; कहीं सेनाओं में झड़प के समाचार मिलेंगे,—"आषाढ़े कर्क संक्रांतिः क्रूरवारे ऽल्पवर्षणम् । क्षत्रियाणां क्षयोऽन्योन्यम्" इस पक्ष में शनि वक्र होकर मूल के प्रथम चरण में आजाता है; सीमा प्रान्तों पर सैनिक गतिविधि बढ़ेगी, नेताओं में राजनैतिक मतभेद बढ़ेंगे। व्यापार सम्बन्धी नीति में कुछ परिवर्तन होगा, रोग विशेष से परेशानी बने।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चांदी, सोना, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग एवं चावल में कुछ मन्दा आकर तेजी का ही रुख रहेगा। १९ जुलाई के लगभग तेल, तिल, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा हल्दी एवं सोना, चांदी में तेजी आएगी। पक्षान्त में कुछ मन्दे का रिएक्शन आएगा।

कुण्डली सूर्योदये

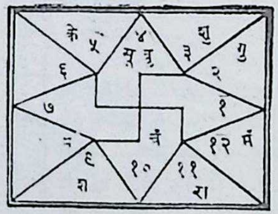

आषाढ़ शु. १५ शुक्र, इष्ट ५९।३०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	११	३	१	२	८	१०	४
१३	२५	१२	८	७	०	२	२२	२२
२०	२४	४६	३९	३७	१७	५९	१७	१७
४६	३४	१४	१०	६	१२	२७	४६	४६
५७	[illegible]	१९	[illegible]	९	४२	२	३	३
२१	१३	५१	१०	२०	५	४७	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	—	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पुष्य	धनि.	उ.भा.	पुष्य	कृत्ति.	मृग.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

आकाश लक्षण—इस पक्ष में १६ से २३ जुलाई तक वायुवेग के साथ हानि एवं कहीं सूखा व कहीं अधिक वर्षा से हानि हो। जुलाई १६, २०, २१, २३, २४, २५, २७ एवं २८ को हि. प्र., बम्बई, गोआ, पंजाब, हरियाणा में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार—आषाढ़ शु. पंचमी को यदि पश्चिम की वायु चले, बादल गरजें, वर्षा हो, इन्द्र धनुष भी दिखाई दे तो अन्न का संग्रह करने से कार्तिक में लाभ मिले। यदि आषाढ़ी पूर्णिमा को चन्द्र पर परिवेष हो तो फसल उत्तम, जनता सुखी रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० श्रावण कृष्ण पक्ष १० (३० जुला. से १२ अग. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायण, वर्षा ऋतु

वि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. श्राव.	अं. जुलाई	श. श्राव.	मु. जिल्हिज	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—बुध अदृश्य है। प्रातः मं. पश्चिम में, गुरु-शुक्र पूर्व में होंगे। सायं शनि को पूर्व कपाल में देखें।
अवम्	१	शु.	५९	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षय
३३।५४	२	श.	५०	१८	ध.	४४	२१	आ.	४४	७	तै.	२४	४४	१५	३०	८	१५	कुं. १७।४७	५	४३	७	१५	३	१३	२१	१७	पंचक प्रारम्भ १७।४७, अशून्य शयन व्रत, काञ्चीमठाधीश जगद्गुरु A
३३।५०	३	र.	४१	४५	श.	३७	४९	शो.	४४	२८	व.	१६	१	१६	३१	९	१६	कुम्भ	५	४४	७	१४	३	१४	१८	३९	भ. १६।२ उ. ४१।४५ या.,
३३।४७	४	चं.	३३	५२	पू.भा.	३१	५५	अ.	३५	२१	ब.	७	४८	१७	अ.'	१०	१७	मी. १८।२४	५	४४	७	१३	३	१५	१६	३	अगस्त प्रारम्भ, श्री गणे चतुर्थी व्रत, लोकमान्य श्री तिलक पुण्यतिथि
३३।४४	५	मं.	२६	५६	उ.भा.	२९	५९	सु.	२७	२	कौ.	०	२४	१८	२	११	१८	मीन	५	४५	७	१३	३	१६	१३	२७	सूर्य आश्ले. में २७।४५, बुध आश्ले. में ४८।५२
३३।४१	६	बु.	२१	१४	रे.	२३	१७	धृ.	१९	४५	व.	२१	१४	१९	३	१२	१९	मे. २३।१७	५	४५	७	१२	३	१७	१०	५२	भ. २१।१४ उ. ४९।४ या., पंचक समाप्त २३।१७
३३।३७	७	गु.	१६	५३	अ.	२०	५६	शू.	१३	३३	ब.	१६	५३	२०	४	१३	२०	मेष	५	४६	७	११	३	१८	८	२०	
३३।३३	८	शु.	१३	५८	भ.	२०	०	गं.	८	३१	कौ.	१३	२८	२१	५	१४	२१	वृ. ३५।९	५	४७	७	१०	३	१९	५	४८	
३३।३०	९	श.	१२	३३	कृ.	२०	३३	वृ.	४	४१	ग.	१२	३३	२२	६	१५	२२	वृष	५	४७	७	१०	३	२०	३	१७	भ. ४२।३३ उ.,
३३।२६	१०	र.	१२	३३	रो.	२२	२९	ध्रु.	२	०	वि.	१२	३३	२३	७	१६	२३	मि. ५४।६	५	४८	७	९	३	२१	०	४८	भ. १२।३३ या., शुक्र आर्द्रा में २४।३७
३३।२३	११	चं.	१३	५२	मृ.	२५	४२	व्या.	५९	२१ ४३	बा.	१३	५२	२४	८	१७	२४	मिथुन	५	४८	७	८	३	२१	५८	२०	कामदा एकादशी व्रत (स.)
३३।२०	१२	मं.	१६	२९	आ.	३०	८	व.	५९	५९	तै.	१६	२९	२५	९	१८	२५	मिथुन	५	४९	७	७	३	२२	५५	५३	बुध मघा सिंह में २४।४२, भौम प्रदोष व्रत
३३।१५	१३	बु.	२०	११	पुन	३५	३५	सि.	६०	०	व.	२०	११	२६	१०	१९	२६	क. १९।१४	५	५०	७	६	३	२३	५३	२९	भ. २०।११ उ. ५२।३१ या.
३३।११	१४	गु.	२४	५२	पु.	४१	५८	सि.	१	१	श.	२४	५२	२७	११	२०	२७	कर्क	५	५१	७	५	३	२४	५१	६	
३३। ७	३०	शु.	३०	२४	आ.	४९	६	व्य.	२	४५	ना.	३०	२४	२८	१२	२१	२८	सि. ४९।६	५	५१	७	४	३	२५	४८	४२	हरियाली अमावस

A शङ्कराचार्य अनन्त श्री जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज का जन्मोत्सव

श्रावण कृ. ८ शुक्र, इष्ट ५९।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
३	१	११	३	१	२	२	१०	४
२०	५	१४	२३	८	५	८	२१	२१
२	२१	५२	११	३९	३१	४१	५५	५५
३५	८	४१	२१	४५	७	४१	३१	३१
५७	७८०	१५	१२०	८	४८	२	३	३
३०	४९	३२	५८	२७	१४	१३	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले. २	कृत्ति. ३	उ.भा. ४	आश्ले. २	कृत्ति. ४	मृग. ४	मूल १	पू.भा. १	पू.फा. ३

कुण्डली सूर्योदये

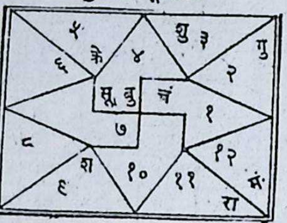

लोक भविष्य—३ अगस्त को बुध-सूर्य की अंशात्मक युति होगी, इस पक्ष में अकाशीय विजली से कहीं हानि होगी। सूर्य-बुध आश्लेषा में हैं—"आश्लेषायां महावृष्टिः" किसी प्रान्त में बाढ़ से हानि हो, इस मास में पांच शनिवार हैं;—रोग भय. विग्रह, उत्पात आदि से संसार में शान्ति भंग होगी। यत्र-तत्र विग्रह विरोध, सैन्य संघर्ष से हानि होगी। अग्निभय, प्रकृति प्रकोप, गृहकलह से प्रजा प्रीड़ित होगी।—"शनिवाराः यदा पञ्च पाताले कंपते फणी। महर्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही॥"

कुण्डली सूर्योदये

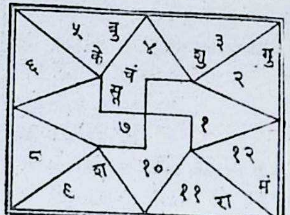

श्रावण कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५९।८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
३	४	११	४	१	२	८	१०	४
२६	१	१६	६	९	११	२	२१	२१
४५	५८	२६	४९	३६	२३	२७	३३	३३
२९	३८	४५	२१	०	३८	०	१५	१५
५७	७०१	१०	१११	७	५२	१	३	३
३९	८	३४	६	२९	५८	३७	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
आश्ले. ४	मघा १	उ.भा. ४	मघा ३	कृत्ति. ४	आर्द्रा २	मूल १	पू.भा. १	पू.फा. ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२ अगस्त के लगभग सोना, चांदी, रुई, विनौला, गेहूं, मूंग, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड अलसी, मूंगफली में अच्छी तेजी आने का योग है। ७ अगस्त के करीब गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना, मूंग, मोठ में कुछ मन्दा बनेगा। पक्षान्त में गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी बनने का योग है।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में सार्वजनिक वर्षा के योग हैं। विशेषतः २ से १२ जुलाई तक अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा होगी।

शकुन विचार—श्रावण कृष्ण पंचमी के दिन आकाश बादलों से ढका हो, परन्तु वर्षा न हो तो सर्वविधि अनाज तेज होते हैं, इस दिन वर्षा हो तो अनाजों में विशेष मन्दा आता है। श्रावण में चित्रा, स्वाती, विशाखा इन नक्षत्रों पर वर्षा न हो तो यहां आगे दुर्भिक्ष रहें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० श्रावण शुक्ल पक्ष ११ (१३ से २७ अगस्त सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, वर्षा-शरद् ऋतु

दि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. जिल्हिज्ज	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा. स्टं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३३।३	१	श	३६	३१	म.	५६	४४	व.	५	१	कि.	३	२८	२९	१३	२२	२९	सिंह	५	५२	७	३	३	२६	४६	२२	नक्त व्रत प्रारम्भ
३२।५९	२	र.	४३	२	पू.फा.	६०	०	प.	७	३८	बा.	९	४६	३०	१४	२३	३०	सिंह	५	५२	७	२	३	२७	४४	१	चन्द्र दर्शन मु. ३०, मंगल रेवती में १५।३२
३२।५५	३	चं.	४९	३३	पू.फा.	४	३८	शि.	१०	२६	तै.	१६	१७	३१	१५	२४	मु'	कं. २१।३५	५	५३	७	१	३	२८	४१	४३	**मुहर्रम मु. (हिजरी सन् १४०९) प्रा., मधुश्रवा ३, संधारा ३, A**
३२।४९	४	मं.	५५	४५	उ.फा.	१२	२७	सि.	१३	७	व.	२२	३९	भा'	१६	२५	२	कन्या	५	५४	७	०	३	२९	३९	२९	भ. २२।३९ उ., ५५।४५ या., सं. सूर्य मघा सिंह में २१।२५ B
३२।४५	५	बु.	६०	०	ह.	१९	४९	सा.	१५	२८	ब.	२८	२७	२	१७	२६	३	तु. ५३। २	५	५४	६	५९	४	०	३७	९	**नाग पंचमी**
३२।४१	५	गु.	१	९	चि.	२६	१५	शु.	१७	५	बा.	१	९	३	१८	२७	४	तुला	५	५५	६	५८	४	१	३४	५३	श्री कल्कि जयन्ती
३२।३७	६	शु.	५	१८	स्वा.	३१	२२	शु.	१७	४०	तै.	५	१८	४	१९	२८	५	तुला	५	५५	६	५७	४	२	३२	३९	
३२।३४	७	श.	७	५५	वि.	२४	४९	ब्र.	१७	१	व.	७	५५	५	२०	२९	६	वृ. १८।५७	५	५६	६	५६	४	३	३०	२६	भ. ७।५५ उ., ३८।१७ या., गोस्वामी श्री तुलसी ज., दूर्वाष्टमी, C
३२।३०	८	र.	८	३९	अनु.	३६	२२	ऐं.	१४	५१	ब.	८	३९	६	२१	३०	७	वृश्चिक	५	५७	६	५५	४	४	२८	१३	
३२।२५	९	चं.	७	२१	ज्ये.	३५	५६	वै.	११	५	कौ.	७	२१	७	२२	३१	८	ध. ३५।५६	५	५७	६	५४	४	५	२६	२	शुक्र पुन. में २४।५०, सायन कन्या में सूर्य ५६।३०, शरद् ऋतु प्रा.
३२।२२	१०	मं.	४	६	मू.	३३	३६	वि.	५ / ५८	४५ / ४५	ग.	४	६	८	२३	भा'	९	धनु	५	५८	६	५३	४	६	२३	५२	भ. ३१।३३ उ., ५९।० या., शक भाद्र. प्रा., पवित्रा ११ व्र.(स्मार्त)
अवम्	११	मं.	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथि क्षय
३२।१७	१२	बु.	५२	१८	पू.षा.	२९	३१	आ.	५०	४०	ब.	२५	३९	९	२४	२	१०	म. ४३। ८	५	५९	६	५२	४	७	२१	४२	बुध उ.फा. में २९।२, पवित्रा एकादशी व्रत (वैष्णव)
३२।१३	१३	गु.	४४	१९	उ.षा	२४	०	सौ.	४१	३१	कौ.	१८	१९	१०	२५	३	११	मकर	५	५९	६	५१	४	८	१९	३५	प्रदोष व्रत
३२।८	१४	शु.	३५	२५	श्र.	१७	२६	शो.	३१	२९	ग.	९	५२	११	२६	४	१२	कु. ४३।४९	६	०	६	५०	४	९	१७	२८	भ. ३५।२५ उ., पंचक प्रारम्भ ४३।४९, मंगल वक्री ३।३२, बुध D
३२।४	१५	श.	२६	१	ध.	१०	१२	अ.	२१	२	वि.	०	४३	१२	२७	५	१३	कुम्भ	६	०	६	४९	४	१०	१५	२२	भ. ०।४३ या., श्री सत्यनारायण व्र., श्रावणी पूर्णिमा, यजुर्वेदियों E

ग्रह दर्शन—१६ अगस्त को बुध पश्चिम में उदित होगा, सायं शनि पूर्व कपाल में दीखेगा। प्रातः मंगल को पश्चिम में, शुक्र को पूर्व में तथा उससे ऊपर गुरु को देखा जा सकेगा।

A हरयाली तीज, भारत स्वतन्त्रता दिन B मु. ३०, पुण्य काल ५।२५ बाद, बुध पू.फा. में ३३।४५, बुध पश्चिम में उदित, गुरु रोहि. १ में १६।१० C (देखें–"संदिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था") D कन्या में ३६।४०, ऋग्वेदियों का उपाकर्म E का उपाकर्म, रक्षाबन्धन(राखी) (६ घं. १७ मि. बाद), हयग्रीवोत्पत्ति

श्रावण शु. ८ रवि, इष्ट ५८।५३

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	११	४	१	२	८	१०	४
५	२१	१७	२२	१०	१९	२	२१	२१
२४	३९	३३	३६	३७	३९	१६	४	४
५७	२३	३६	५८	५४	५२	५४	३८	३८
५७	[illegible]	३	९८	६	५७	०	३	३
४७	३२	२७	११	६	३५	४५	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	२	१	३	१	४	१	१	३
मघा	ज्ये.	रेव.	पू.फा.	रोहि.	आर्द्रा	मूल	पू.भा.	पू.फा.

कुण्डली सूर्योदये

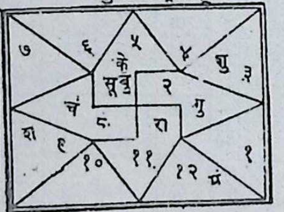

लोक भविष्य—सिंह संक्रांति मंगलवार की है,– "सिंहेऽर्के श्रावणे भौमे मतं वार्बाह वृष्टये।" वर्षा से कहीं अनाजों की फसल को हानि पहुंचे, लेकिन रेवती नक्षत्र का मंगल सुभिक्ष कारक होने से उपरोक्त योग का प्रभाव किसी प्रान्त विशेष में ही होगा। राहु पर शनि की दृष्टि कहीं भय-रोगोपद्रव एवं दुर्घटना में हानि कारक है। श्रावण शुक्ल में तिथि क्षय होने से आगे कार्तिक मास में कहीं विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक हो, श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिः भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्॥

कुण्डली सूर्योदये

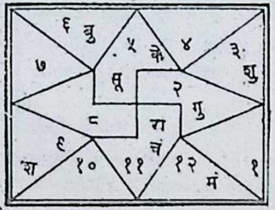

श्रावण शु. १५ शनि, इष्ट ५८।४५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	११	५	१	२	८	१०	४
११	१८	१७	२	११	२५	२	२०	२०
१२	५८	४१	५	१२	३१	१३	४५	४५
४	४	३१	३४	४	३९	४७	३३	३३
५७	[illegible]	१	८९	५	६०	०	३	३
५६	०	३६	५९	७	१	१०	११	११
—	—	व	मा	मा	मा	व	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१	१	२	३	२	३	२	२	३
मघा	शत.	रेव.	उ.फा.	रोहि.	पुन.	मूल	पू.भा.	पू.फा.

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१४ अगस्त के लगभग गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में मन्दी रहे। इस समय चांदी में विशेष तेजी आ सकती है। १६ अगस्त को सिंह संक्रांति मंगलवारी है, अतः चांदी, सोना, रुई, गुड़, खांड, शक्कर, तिल, तैल, एरण्ड, सरसों तथा लाल रंग की चीजों में तेजी आयेगी, शेयर बाजार कुछ मन्दे रहेंगे। पक्षान्त में २४ अगस्त के लगभग गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर खांड, हल्दी में उत्तम तेजी आने का योग है।

आकाश लक्षण—अगस्त १४, १६, १७, २२, २५ को बादल चाल व कहीं खण्ड वृष्टि का योग है। भूटान, सिक्किम, आसाम, बंगाल, हि. प्र. के कुछ भागों में वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार—श्रावण शुक्ल सप्तमी को जहां सूर्योदय बादलों में हो वहां आगे उत्तम वर्षा होगी। श्रावण शुक्ल पंचमी से यदि दो दिन के अन्दर बराबर वर्षा होती रहे, एवं दक्षिण-पश्चिम की वायु भी चलती रहे तो अन्न तेज एवं दुर्भिक्ष हो। यदि आकाश निर्मल हो तो गेहूं, जौ, चना, चावल का स्टाक करें आगे लाभ रहेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० भाद्रपद कृष्ण पक्ष १२														तारीखें				चन्द्र राशि	चण्डीगढ़				उदय-कालिक				(२८ अग. से ११ सित. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, शरद् ऋतु
दि. मा.														प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल	भा.स्टें.टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन—प्रातः मं. पश्चिम की ओर जाता, शुक्र पूर्व कपाल में देदीप्यमान तथा गुरु याम्योत्तरासन्न दिखाई देगा । सायं शनि पूर्व कपाल में एवं बुध पश्चिम में उदय होगा ।
घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	भाद्र.	अगस्त	भाद्र.	मुहर्रम	घ. प.	सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१|५९	१	र.	१६	३४	श.	५५	५५	सु.	१०	२७	कौ.	१६	३४	१३	२८	६	१४	मी. ४२|२२	६	१	६	४८	४	११	१३	१९	
३१|५५	२	चं.	७	२४	उ.भा.	४८	५८	धृ.	५०	१५	ग.	७	२४	१४	२९	७	१५	मीन	६	१	६	४६	४	१२	११	१६	भ. ३३|११ उ., ५८|५८ या.
अवम्	३	चं.	५८	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय
३१|५०	४	मं.	५१	४०	रे.	४३	२३	गं.	४१	२२	ब.	२५	१९	१५	३०	८	१६	मे. ४३|२३	६	२	६	४५	४	१३	९	१५	पंचक समाप्त ४३|२३, सूर्य पू.फा. में ११|७, शनि मार्गी ५८|४० A
३१|४६	५	बु.	४५	३७	अ.	३९	९	वृ.	३३	३१	कौ.	१८	३८	१६	३१	९	१७	मेष	६	३	६	४४	४	१४	७	१७	
३१|४२	६	गु.	४१	१५	भ.	३६	३०	ध्रु.	२६	५७	ग.	१३	२६	१७	सि'	१०	१८	वृ. ५१|१७	६	३	६	४३	४	१५	५	२०	भ. ४१|१५ उ., शुक्र कर्क में २४|२, सितम्बर प्रारम्भ
३१|३८	७	शु.	३८	४३	कृ.	३५	३९	व्या.	२१	५०	वि.	९	५९	१८	२	११	१९	वृष	६	४	६	४२	४	१६	३	२४	भ' ९|५९ या., बुध हस्त में २६|१२, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत B
३१|३४	८	श.	३८	४	रो.	३६	३९	ह.	१८	१३	बा.	८	२४	१९	३	१२	२०	वृष	६	४	६	४१	४	१७	१	३१	अगस्त्य उदित, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव), गोकुलाष्टमी C
३१|३०	९	र.	३९	१२	मृ.	३९	२३	व.	१६	२	तै.	८	३८	२०	४	१३	२१	मि. ८| १	६	५	६	३९	४	१७	५९	४०	शुक्र पुष्य में ३७|४०, गुग्गा नौमी
३१|२५	१०	चं.	४१	५९	आ.	४३	४३	सि.	१५	१०	व.	१०	३६	२१	५	१४	२२	मिथुन	६	६	६	३८	४	१८	५७	५२	भ. १०|३६ उ., ४१|५९ या.
३१|२०	११	मं.	४६	१०	पुन	४९	२५	व्य.	१५	३०	ब.	१४	४	२२	६	१५	२३	क. ३३| ०	६	६	६	३७	४	१९	५६	४	अजा एकादशी व्रत स., वेंकटेश(प्लूटो) स्वाती ४ में
३१|१६	१२	बु.	५१	२५	पु.	५६	५	व.	१६	४५	कौ.	१८	४७	२३	७	१६	२४	कर्क	६	७	६	३६	४	२०	५४	२०	मंगल उ.भा. में ४२|२५, यूरेनस मार्गी
३१|११	१३	गु.	५७	२७	आ.	६०	०	प.	१८	४२	ग.	२४	२६	२४	८	१७	२५	कर्क	६	७	६	३४	४	२१	५२	३७	भ. ५७|२७ उ., प्रदोप व्रत
३१| ६	१४	शु.	६०	०	आ.	३	२८	शि.	२१	८	वि.	३०	४०	२५	९	१८	२६	सिं. ३|२८	६	८	६	३३	४	२२	५०	५५	भ. ३०|४० या.
३१| १	१४	श.	३	५३	म.	११	१५	सि.	२३	४६	श.	३	५३	२६	१०	१९	२७	सिंह	६	८	६	३२	४	२३	४९	१७	नक्त व्रत समाप्त
३०|५६	३०	र.	१०	२६	पू.फा.	१९	६	सा.	२६	२६	ना.	१०	२६	२७	११	२०	२८	कं. ३६| १	६	९	६	३१	४	२४	४७	४१	राहु शत. ४ में, केतु पू.फा. २ में १७|५७, सूर्य ग्रहण (चूड़ामणि D

A श्री गणेश चतुर्थी व्रत, बहुला चतुर्थी व्रत B स्मार्त, श्री कृष्ण जयन्ती C (नन्दोत्सव) D योग), कुशोत्पाटिनी अमा., पिठोरी अमा.,

भाद्रपद कृ. ८ शनि, इष्ट ५८\|३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	११	५	१	३	८	१०	४
१७	२८	१७	१२	११	२	२	२०	२०
५८	१	१२	६	४४	३९	१४	२३	२३
१५	४५	१४	२९	१२	१७	३४	१८	१८
५८	७५८	७	८०	३	६२	०	३	३
११	२५	३२	७	५३	२७	३१	११	११
—	—	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा. २	मृग. २	रेव. १	हस्त १	रोहि. १	पुन. ४	पुष्य १	पू.भा. १	पू.फा. ३

कुण्डली सूर्योदये

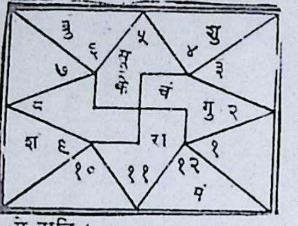

लोक भविष्य—इस मास में पांच रविवार होने से जन जीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाई बढ़े । भाद्र. कृष्ण ८ को शनिवार एवं रोहिणी नक्षत्र होने से भी अनाजों में तेजी की सूचना मिलती है—"**भाद्रपदाष्टमी कृष्णा रोहिणी मन्द संयुता । शुक्रार्कवारौ स्यातां वा गोधूमान महर्घता ॥**" देश की प्रगति में कुछ बाधाएं उपस्थित होंगी । चीन, बंगला देश एवं अन्य मुस्लिम राष्ट्रों के लिए समय ठीक नहीं । कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि ।

कुण्डली सूर्योदये

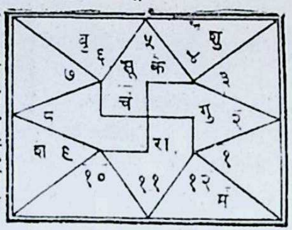

भाद्रपद कृ. ३० रवि, इष्ट ५८\|२२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	११	५	१	३	८	१०	४
२५	४	२५	२२	१२	११	२	१९	१९
४४	२३	५०	१	१०	७	२१	५७	५७
२९	३८	३६	३	३	२	१९	५२	५२
५८	७११	१३	६५	२	६४	१	३	३
२६	९	२०	५८	२३	४३	१७	११	११
—	—	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पू.फा. ४	उ.फा. ३	उ.भा. ४	हस्त ४	रोहि. १	पुष्य ३	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में जीरा, गुड़, खांड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, हींग एवं लाल मिर्च में तेजी का वातावरण रहेगा । १ सितम्बर को कर्क राशि में आकर पहले रुई में मन्दे का वातावरण बनायेगा । चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर भी मन्दे रहेंगे । लेकिन तिलहन में तेजी ही रहे, ७ सितम्बर के लगभग बाजार का रुख बदल सकता है । पक्षान्त में बाजार तेज रहेंगे ।

आकाश लक्षण—अगस्त ३०, ३१, सितम्बर १, २, ३, ६, ७ को कहीं बादल चाल व कहीं बूंदाबांदी के योग हैं ।

शकुन विचार—भाद्र कृष्ण तृतीया को यदि बादल चाल हो तो अनाजों के स्टाक से आगे छटे मास में उत्तम लाभ की आशा रखें । भाद्र. कृष्ण अष्टमी को शनिवार एवं रोहिणी नक्षत्र होने से गेहूं, जौ, चना, हल्दी, धनियां, जीरा, गुड़, तिल, तैल का स्टाक करें आगे तीन मास में ही उत्तम लाभ मिलेगा; गौर करें ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० भाद्रपद शुक्ल पक्ष १३																तारीखें				चन्द्र राशि	घण्टाघर				उदय-कालिक				(१२ से २५ सितम्बर सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, शरद् ऋतु
वि.मा.																प्र.	अं.	श.	मु.	प्रवेश काल	भा. स्टैं. टा.				स्पष्ट सूर्य				ग्रह दर्शन—प्रातः मं. पश्चिम में, शुक्र पूर्वकपाल में तथा गुरु प. कपाल में नत होगा। सायं शनि को याम्योत्तरासन्न में एवं बुध को पश्चिम में देख सकेंगे।
																भाद्रपद	सितं.	भाद्रपद	मुहर्रम		सू. उ.		सू. अ.						
घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.						घ. प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	५२	१	चं.	१६	५२	उ.फा.	२६	४७	शु.	२८	५७	ब.	१६	५२	२८	१२	२१	२९	कन्या	६	१०	६	२९	४	२५	४६	५	सूर्य उ.फा. में ५५।२०
३०	४८	२	मं.	२२	५०	ह.	३३	५८	शु.	३१	४	कौ.	२२	५०	२९	१३	२२	३०	कन्या	६	१०	६	२८	४	२६	४४	३३	चन्द्र दर्शन मु. ३०, बुध चित्रा में १०।३२, सामवेदियों का उपाकर्म, A
३०	४४	३	बु.	२८	५	चि.	४०	२७	ब्र.	३२	३७	ग.	२८	५	३०	१४	२३	स'	तु. ७।१२	६	११	६	२७	४	२७	४३	२	सफर मु. प्रा., श्री वराह ज., हरितालिका व्रत, गौरी तृतीया
३०	४०	४	गु.	३२	२२	स्वा.	४५	५६	ऐं.	३३	२४	व.	०	१४	३१	१५	२४	२	तुला	६	११	६	२६	४	२८	४१	३१	भ. ०।१४ उ., ३२।२२ या., कलङ्क चतुर्थी (चन्द्रास्त B
३०	३५	५	शु.	३५	२६	वि.	५०	१२	वै.	३३	१५	व.	३	५४	आ'	१६	२५	३	वृ. ३४। ८	६	१२	६	२४	४	२९	४०	४	सं. सूर्य कन्या में २०।२५, मु. ४५, पुण्यकाल ४।२५ बाद, ऋषि ५
३०	३०	६	श.	३७	५	अनु.	५३	३	वि.	३२	१	कौ.	६	१६	२	१७	२६	४	वृश्चिक	६	१२	६	२३	५	०	३८	३८	शुक्र आश्ले. में ४।३८, सूर्य षष्ठी व्रत
३०	२५	७	र.	३७	५	ज्ये.	५४	१५	प्री.	२९	३०	ग.	७	५	३	१८	२७	५	ध. ५४।१५	६	१३	६	२२	५	१	३७	१२	भ. ३७।५ उ.,
३०	२०	८	चं.	३५	२३	मू.	५३	४८	आ.	२५	३९	वि.	६	१४	४	१९	२८	६	धनु	६	१४	६	२१	५	२	३५	४९	भ. ६।१४ या., श्री राधाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ
३०	१५	९	मं.	३२	१	पू.षा.	५१	४१	सौ.	२०	२६	बा.	३	४२	५	२०	२९	७	धनु	६	१४	६	१९	५	३	३४	२७	बुध तुला में २८।२२, श्री चन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)
३०	१०	१०	बु.	२६	५८	उ.षा.	४७	५७	शो.	१३	५२	ग.	२६	५८	६	२१	३०	८	म. ५।४५	६	१५	६	१८	५	४	३३	७	भ. ५३।४३ उ., नेपच्यून मार्गी
३०	५	११	गु.	२०	२८	श्र.	४२	५३	अ.	६ ५७	४ १०	वि.	२०	२८	७	२२	३१	९	मकर	६	१५	६	१७	५	५	३१	४९	भ. २०।२८ या., सायन तुला में सूर्य ४४।४२, पद्मा एकादशी C
३०	०	१२	शु.	१२	४८	ध.	३६	४४	धृ.	४७	३६	बा.	१२	४८	८	२३	आ'	१०	कु. ९।४८	६	१६	६	१५	५	६	३०	३२	पंचक प्रा. ९।४८, गुरु वक्री ५८।२, शक आश्विन प्रा., प्रदोष व्रत
२९	५६	१३	श.	४	१४	श.	२९	५०	शू.	३७	२२	तै.	४	१४	९	२४	२	११	कुम्भ	६	१६	६	१४	५	७	२९	१६	भ. ५५।८ उ., अनन्त चतुर्दशी
अवम्		१४	श.	५५	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः
२९	५१	१५	र.	४५	५१	पू.भा.	२२	३४	गं.	२६	५३	वि.	२०	२९	१०	२५	३	१२	मी. ९।२३	६	१७	६	१३	५	८	२८	३	भ. २०।२९ या., श्री सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध

A मेला बाबा गुसाईंश्राणां (फुराली, पं.), B रात्रि ८ बजकर २३ मि.) श्री सिद्धिविनायक ४ C व्रत (स.), श्री वामन द्वादशी, (श्रवण-१२ योग) देखें ('सन्दिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था'), श्रवण १२, विषुव दिन

भाद्र. शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५८।१०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	११	५	१	३	८	१०	४
३	१४	१३	२९	१२	१९	२	१९	१९
३२	१९	४९	३८	२३	५१	३४	३२	३२
४०	४९	३७	७	३८	१८	१६	२५	२५
५८	[illegible]	१६	४३	०	६६	२	३	३
३८	१५	५५	२६	४९	३१	३	११	११
—	—	व	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.फा. ३	पू.षा. १	उ.भा. ४	चित्रा २	रोहि. १	अश्ले. १	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदये

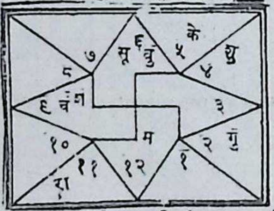

लोक भविष्य—भाद्र. शु. षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र होने से शुभ है। फसल अच्छी होगी, कृषक वर्ग प्रसन्न रहेगा। शनि एवं मंगल की सूर्य पर दृष्टि कहीं प्रधान शासक के लिए चिन्तनीय स्थिति बना देगी, विरोधी ग्रुप सिर उठाएगा। विश्व के किसी देश विशेष में प्रधान पद रिक्त होने का कारण बनेगा। कहीं मंत्री-मण्डल में आपसी विरोध बढ़ेगा एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा। दुर्घटना किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि का भी योग बनता है।

कुण्डली सूर्योदये

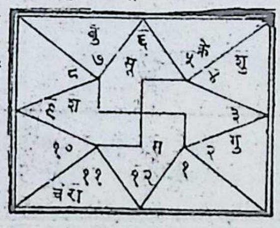

भाद्र. शु. १५ रवि, इष्ट ५८।२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	११	६	१	३	८	१०	४
९	१२	१२	२	१२	२६	२	१९	१९
२४	१७	५	५४	२५	३३	४७	१३	१३
५५	३०	१८	२१	३१	२८	५६	२१	२१
५८	[illegible]	१७	१५	०	६७	२	३	३
५०	३७	४३	१०	२३	४३	३६	११	११
—	—	व	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	—
उ.फा. ४	उ.भा. ३	उ.भा. ३	चित्रा ३	रोहि. १	अश्ले. ३	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी व नारियल तेज रहेंगे। १६ सितम्बर के लगभग चांदी व शेयरों में कुछ मन्दा सम्भव है, परन्तु अधिकतर बाजारों में प्रायः तेजी ही रहेगी। २० सितम्बर के लगभग गुड़, सोना आदि में जोरदार तेजी आए तथा तेल, तिलहन में भी तेजी से उत्तम लाभ मिले।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में वायुवेग के साथ कुछ प्रान्तों में साधारण वर्षा होगी। ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे।

शकुन विचार—भाद्रपद शुक्ल नवमी को यदि वर्षा हो तो अकालभय हो, यदि एकादशी को वर्षा हो तो आगे अन्न सस्ता हो। यदि भाद्र शुक्ल पूर्णिमा को बादल, बिजली, मेघ गर्जना हो तो आगे अन्न सस्ता हो। यदि आकाश निर्मल रहे तो अन्न संग्रह से आगे उत्तम लाभ मिले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० आश्विन कृष्ण पक्ष १४ (२६ सितं. से १० अक्टू. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायण, शरद् ऋतु

ग्रह दर्शन—५ अक्टूबर को बुध पश्चिम में अस्त हो जायेगा । प्रातः शुक्र पूर्व में एवं गुरु पश्चिम में होगा । सायं शनि याम्योत्तरासन्न तथा मंगल पूर्व में उठ रहा होगा ।

वि. मा. घ. प.		तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. आश्वि.	बं. सितं.	श. आश्वि.	मु. सफर	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२९	४६	१	चं.	३६	५१	उ.भा.	१५	२४	वृ.	१६	३१	बा.	११	२१	११	२६	४	१३	मीन	६	१८	६	१२	५	९	२६	५२	सूर्य हस्त में ३३।४८, महालय(श्राद्ध) प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध
२९	४२	२	मं.	२८	३०	रे.	८	४२	ध्रु.	६ ५७	३३ २३	तै.	२	४०	१२	२७	५	१४	मे. ८।४२	६	१८	६	१०	५	१०	२५	४३	भ. ५४।५१ उ., पंचक समाप्त ८।४२, द्वितीया श्राद्ध
२९	३८	३	बु.	२१	१३	अ.	२ ५८	४६ ३१	ह.	४९	१२	वि.	२१	१३	१३	२८	६	१५	मेष	६	१९	६	९	५	११	२४	३५	भ. २१।१३ या., बुध वक्री ४४।५, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया A
२९	३३	४	गु.	१५	२५	कृ.	५५	५०	व.	४२	२४	बा.	१५	२५	१४	२९	७	१६	वृ. १२।५०	६	१९	६	८	५	१२	२३	३०	शुक्र मघा सिंह में ०।३०, पंचमी श्राद्ध
२९	२९	५	शु.	११	२४	रो.	५४	५९	सि.	३७	६	तै.	११	२४	१५	३०	८	१७	वृष	६	२०	६	७	५	१३	२२	२७	षष्ठी श्राद्ध
२९	२४	६	श.	९	२३	मृ.	५६	१५	व्य.	३३	२७	व.	९	२३	१६	अ'	९	१८	मि. २५।३७	६	२०	६	५	५	१४	२१	२६	भ. ९।२३ उ. ३९।२६ या., अक्टूबर प्रारम्भ, सप्तमी श्राद्ध
२९	१९	७	र.	९	३०	आ.	५९	३१	व.	३१	२९	ब.	९	३०	१७	२	१०	१९	मिथुन	६	२१	६	४	५	१५	२०	२८	श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी श्राद्ध, श्री महात्मा गान्धी जयन्ती
२९	१५	८	चं.	११	३९	पुन	६०	०	प.	३१	०	कौ.	११	३९	१८	३	११	२०	क. ४८।१६	६	२२	६	३	५	१६	१९	३३	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
२९	११	९	मं.	१५	३४	पुन	४	३१	शि.	३१	४८	ग.	१५	३४	१९	४	१२	२१	कर्क	६	२२	६	२	५	१७	१८	३९	भ. ४८।१५ उ., दशमी श्राद्ध
२९	७	१०	बु.	२०	५६	पु.	११	०	सि.	३३	३६	वि.	२०	५६	२०	५	१३	२२	कर्क	६	२३	६	०	५	१८	१७	४८	भ. २०।५६ या., बुध पश्चिम में अस्त
२९	२	११	गु.	२७	१२	आ.	१८	२४	सा.	३५	५९	बा.	२७	१२	२१	६	१४	२३	सि. १८।२४	६	२३	५	५९	५	१९	१६	०	घ. बुध कन्या में १२।४२, शनि मूल २ में ३३।४८, इन्दिरा ११ B
२८	५७	१२	शु.	३३	५३	म.	२६	१६	शु.	३८	३८	कौ.	.०	३२	२२	७	१५	२४	सिंह	६	२४	५	५८	५	२०	१६	१३	द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, मघा श्राद्ध
२८	५३	१३	श.	४०	३२	पू.फा.	३४	९	शु.	४१	१४	ग.	७	१२	२३	८	१६	२५	कं. ५१। १	६	२५	५	५७	५	२१	१५	२९	भ. ४०।३२ उ., शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
२८	४८	१४	र.	४६	४४	उ.फा.	४१	३७	ब्र.	४३	२९	वि.	१३	३८	२४	९	१७	२६	कन्या	६	२५	५	५५	५	२२	१४	४८	भ. १३।३८ या., शस्त्र विष आदि से मरे हुओं का श्राद्ध
२८	४४	३०	चं.	५२	१५	ह.	४८	२६	ऐं	४५	१३	च.	१९	२९	२५	१०	१८	२७	कन्या	६	२६	५	५४	५	२३	१४	७	सूर्य चित्रा में ५।५७, शुक्र पू.फा. में ३४।२२, सोमवती अमा, C

A श्राद्ध, चतुर्थी श्राद्ध B व्रत(स.) , एकादशी श्राद्ध , C अमा, पूर्णिमा एवं चतुर्दशी का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, मेला फल्गु(हरियाणा)

आश्वि. कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५७।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	११	६	१	४	८	१०	४
१७	१	९	१	१२	५	३	१८	१८
१६	५८	४६	४५	१६	४०	११	४७	४७
३०	३८	४९	३८	४४	९	१३	५४	५४
५९	७२१	१६	४२	२	६९	३	३	३
७	४५	११	१०	०	६	१८	११	११
—	—	व	व	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
हस्त ३	पुन. ४	उ.भा. २	चित्रा ३	रोहि. १	मघा २	मूल १	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदये

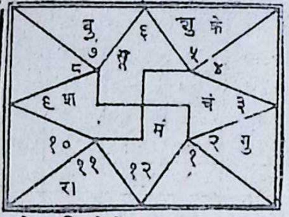

लोक भविष्य—इस पक्ष में पांच चन्द्रवार शुभ फलदायक हैं । भारत में प्रगतिपद योजनायें बनें । इस पक्ष में शुक्र सिंह राशि में आकर वर्षा की कमी करेगा, मंहगाई बढ़ेगी—"दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेम-रक्तं चतुष्पदः । धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः ॥" इस पक्ष में धनुस्थ शनि स्पेन, अमेरिका, रूस, पाक, टर्की एवं ईराक, ईरान के शासकों के लिए नेष्ट है । कहीं आन्तरिक अशान्ति एवं कहीं राष्ट्र में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी ।

कुण्डली सूर्योदये

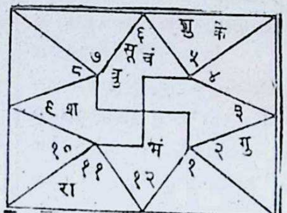

आश्वि. कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५७।४०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	११	५	१	४	८	१०	४
२४	२५	८	२४	११	१३	३	१८	१८
११	११	२	४६	५८	४७	३६	२५	२५
११	१०	४८	५४	३२	९	७	३९	३९
५९	७२७	१२	७१	३	७०	३	३	३
२४	५९	४३	९	३	१०	५३	११	११
—	—	व	व	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	—
चित्रा १	चित्रा २	उ.भा. २	चित्रा १	रोहि. १	पू.फा. १	मूल २	शत. ४	पू.फा. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में घी, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में मन्दा रहेगा । २९ सितं. के लगभग सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लाल चन्दन और मजीठ, घी, रसादि पदार्थ एवं पशु तेज होंगे । पक्ष मध्य में अनाजों एवं गुड़, रसकस, खांड, हल्दी में तेजी जोरदार बनेगी ।

आकाश लक्षण—पक्षारम्भ से १ अक्टूबर तक सिक्किम, शिलांग, आसाम, बंगाल, काठमाण्डू, दार्जीलिंग में सामान्य वर्षा होगी । कुछ प्रान्तों में बादल चाल एवं खण्ड वृष्टि हो । २ अक्टूबर से पक्षान्त तक वायुवेग से कहीं हानि हो ।

शकुन विचार—आश्विन कृष्ण दशमी-एकादशी किंवा द्वादशी को यदि बिजली चमके, बादल गरजें आगे अनाजों (विशेषतः गेहूं) की खड़ी फसल को हानि पहुंचे । इस समय गेहूं के स्टाक से [illegible] भाव मिलेगा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० आश्विन शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक (११ से २५ अक्टू. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, शरद्-हेमन्त ऋतु

दि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. आश्विन	अं. अक्टू.	श. आश्विन	मु. सफर	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	मा. स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—१८ अक्टूबर को बुध प्रातः पूर्व में दृश्य होगा, इस समय गुरु को पश्चिम में एवं शुक्र को पूर्व में देख सकेंगे। सायं शनि को पश्चिम कपाल में तथा मंगल को पूर्व में देखें।
२८|४०	१	मं.	५६	५३	चि.	५४	२६	वै.	४६	१७	कि.	२४	३४	२६	११	१९	२८	तु. २१।२६	६	२७	५	५३	५	२४	१३	३१	मातामह (नाना) का श्राद्ध, शारद् नवरात्र प्रारम्भ (घटस्थापन A
२८|३५	२	बु.	६०	०	स्वा.	५९	२थ	वि.	४६	३५	बा.	२८	४०	२७	१२	२०	२९	तुला	६	२७	५	५२	५	२५	१२	५६	चन्द्र दर्शन मु. १५, व. बुध हस्त में ११।२२
२८|३०	२	गु.	०	२६	वि.	६०	०	प्री.	४६	६	कौ.	०	२६	२८	१३	२१	१'	वृ. ४७।२५	६	२८	५	५१	५	२६	१२	२२	रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ
२८|२५	३	शु.	३	०	वि.	३	२५	आ.	४४	४६	ग.	३	०	२९	१४	२२	२	वृश्चिक	६	२९	५	४९	५	२७	११	५१	भ. ३३।४४ उ.,
२८|२०	४	श.	४	२७	अनु.	६	२०	सौ.	४२	३०	वि.	४	२७	३०	१५	२३	३	' वृश्चिक	६	२९	५	४८	५	२८	११	५२	भ. ४।२७ या., उपाङ्गललिता व्रत
२८|१५	५	र.	४	४२	ज्ये.	८	६	शो.	३९	२०	बा.	४	४२	का'	१६	२४	४	ध. ८। ६	६	३०	५	४७	५	२९	१०	५३	सं. सूर्य तुला में ४६।२८, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न B
२८|१०	६	चं.	३	४६	मू.	८	४३	अ.	३५	१२	तै.	३	४६	२	१७	२५	५	धनु	६	३१	५	४६	६	०	१०	२८	सरस्वती पूजन
२८| ६	७	मं.	१	३६	पू.षा.	८	५	सु.	३०	२	व.	१	३६	३	१८	२६	६	म. २२।३६	६	३१	५	४५	६	१	१०	४	भ. १।३६ उ. २६।५२ या., बुध पूर्व में उदित, श्री दुर्गाष्टमी, C
अवम्	८	मं.	५८	८	उ.षा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथि क्षय
२८| २	९	बु.	५३	०	०	६	११	धृ.	२३	५२	बा.	२५	३४	४	१९	२७	७	मकर	६	३२	५	४४	६	२	९	४१	महा नवमी, नवरात्र समाप्त, सरस्वती विसर्जन
२७|५८	१०	गु.	४७	३८	श्र.	३ ५८	६ ५५	शू.	१६	४५	तै.	२०	१९	५	२०	२८	८	फु. ३१। १	६	३३	५	४३	६	३	९	१९	पंचक प्रा. ३१।१, बुध मार्गी २३।२८, विजया दशमी (दशहरा), D
२७|५४	११	शु.	४०	४७	श.	५३	४२	गं.	८ ५९	४४ ४७	व.	१४	१२	६	२१	२९	९	कुम्भ	६	३३	५	४२	६	४	९	१	भ. १४।१२ उ. ४०।४७ या., शुक्र उ.फा. में ५२।३२, पापांकुशा E
२७|५०	१२	श.	३३	१०	पू.भा.	४७	५४	ध्रु.	५०	२८	व.	६	५८	७	२२	३०	१०	मी. ३४।२१	६	३४	५	४१	६	५	८	४३	शनि प्रदोष व्रत (३४ घ. १४ पल तक प्रदोष)
२७|४५	१३	र.	२५	५	उ.भा.	४१	३८	व्या.	४१	१	तै.	२५	५	८	२३	का	११	मीन	६	३५	५	४०	६	६	८	२६	सूर्य स्वाती में ३१।४२, सायन वृश्चिक में सूर्य ७।०, शक कार्तिक F
२७|४०	१४	चं.	१६	४९	रे.	२५	१८	ह.	३१	१९	व	१६	४९	९	२४	२	१२	मे. ३५।१८	६	३५	५	३९	६	७	८	१३	भ. १६।४९ उ. ४२।४८ या., पंचक समाप्त ३५।१८, शुक्र कन्या G
२७|३५	१५	मं	८	४६	अ.	२९	२१	व.	२१	५३	ब.	८	४६	१०	२५	३	१३	मेष	६	३६	५	३८	६	८	८	०	कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्री वाल्मीकि जयन्ती

A दोपहर ११ घं. ४० मि. से १२ घं. ३३ मि. तक) (देखें-संदिग्ध व्रत एवं व्यवस्था), C महाष्टमी, सरस्वती के लिए बलिदान D सीमोल्लंघन, अपराजिता पूजन, श्री माध्वाचार्य ज.
E एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप F प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ G में ४०।१०, श्री सत्यनारायण व्रत, शरद् पूर्णिमा, कोजागर व्रत, B से पहले, सरस्वती आवाहन,

आश्वि. शु. ७ मंगल, इष्ट ५७।२७

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	११	५	१	४	८	१०	४
२	७	६	१८	११	२३	४	१८	१८
७	५८	४०	४	२६	११	९	०	०
७	१६	४४	५८	१६	५९	२४	१३	१३
५९	[illegible]	६	८	४	७१	४	३	३
३७	३५	५६	३	५०	८	३०	११	११
—	—	व	व	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
चित्रा ३	उ.षा. ४	उ.भा. २	हस्त ३	रोहि. २	पू.फा. ३	मूल २	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदये

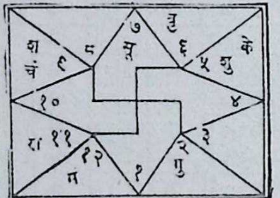

लोक भविष्य—इस पक्ष में २०, २१, २२ एवं २४, २५ अक्टूबर को दिग्दाह योग बन रहा है, कहीं प्राकृतिक आपदाएं कष्ट देंगी,—"सूर्याद्विघुः पंचम सप्तमः स्यात् । क्षोणिसुतो याति तथारि गेहे दिग्दाह योगो मुनिभिः प्रदिष्टः, स जात उल्का पतनादिकारी ॥ पक्षान्त में बुध-शुक्र का एकराशि सम्बन्ध व्यापारिक क्षेत्र में विशेष उथल-पुथल करने वाला है, खाद्य वस्तुओं में विशेष महर्घता होने से गरीबों में अशान्ति रहेगी। मध्य प्रदेश में कहीं जन-धन हानि का समाचार मिले।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में अनाजों में कुछ मन्दा रहने के बाद पक्ष मध्य में गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, तांबा में तेजी बनेगी, तिल, घी, लाल मिर्च में भी तेजी रहेगी। २० अक्टूबर के लगभग रुई में पहले मन्दी बाद में तेजी रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनोला, मूंगफली, कपूर, चन्दन एवं अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दी आयेगी। पक्षान्त में अनाज, गुड़, खांड, ऊनी व रेशमी वस्त्र तेज रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदये

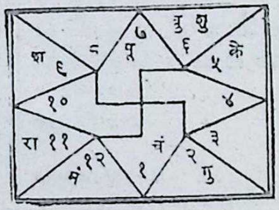

आश्वि. शु. १५ मंगल, इष्ट ५७।१५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	११	५	१	५	८	१०	४
९	२०	६	२०	१०	१	४	१७	१७
५	८	९	४५	४८	३२	४२	३७	३७
३	२६	१२	४७	५४	१४	२४	५७	५७
५९	[illegible]	१	५७	५	७१	५	३	३
५०	४०	१७	५८	५९	५३	०	११	११
—	—	व	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वा. १	भर. ३	उ.भा. २	हस्त ४	रोहि. २	उ.फा. २	मूल २	शत. ४	पू.फा. २

आकाश लक्षण—१५ अक्टूबर से पक्षान्त तक हि. प्र., पंजाब, हरयाणा, सिक्किम, भूटान, शिलांग आदि में कहीं बादल चाल, कहीं खण्ड वृष्टि व कहीं हिम शिखरों पर हिमपात से शरद् ऋतु के आगमन की सूचना मिलेगी, तापमान कम रहेगा।

शकुन विचार—आश्विन शुक्ल पूर्णिमा के दिन बादल हों तो धान्य संग्रह से चैत्र में लाभ मिलेगा;—आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभ प्रदोयतः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० कार्तिक कृष्ण पक्ष १६ (२६ अक्टू. से ९ नवं. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायण, हेमन्त ऋतु

वि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. कार्ति.	अं. अक्टू.	रा. कार्ति.	मु. र.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टै.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—प्रातः पूर्व में बुध-शुक्र को तथा गुरु को पश्चिम में देख सकेंगे । सायं शनि पश्चिम कपाल में तथा मंगल पूर्व में दृश्य होगा ।
२७|३०	१	बु.	१	२३	म.	२४	१३	सि.	१३	५	कौ.	१	२३	११	२६	४	१४	वृ. ३८।१४	६	३७	५	३७	६	९	७	४९	
क्षयम्	२	बु.	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथि क्षयः
२७|२६	३	गु.	५०	१०	कृ.	२०	१६	व्य.	५/५८	१६/३२	व.	२२	३५	१२	२७	५	१५	वृष	६	३८	५	३६	६	१०	७	४२	भ. २२।३५ उ. ५०।१० या.
२७|२३	४	शु.	४७	५	रो.	१७	५६	प.	५३	२०	ब.	१८	३७	१३	२८	६	१६	मि. ४७।४४	६	३८	५	३५	६	११	७	३५	मंगल मार्गी १२।१०, बुध चित्रा में २४।३५, श्री गणेश ४ व्रत, A
२७|१८	५	श.	४६	४	मृ.	१७	३१	शि.	४९	५१	कौ.	१६	३४	१४	२९	७	१७	मिथुन	६	३९	५	३४	६	१२	७	३१	
२७|१४	६	र.	४७	९	आ.	११	१०	सि.	४७	५७	ग.	१६	३६	१५	३०	८	१८	मिथुन	६	४०	५	३३	६	१३	७	२९	भद्रा ४७।९ उ.,
२७|१०	७	चं.	५०	२०	पुन.	२२	५१	सा.	४७	३८	वि.	१८	४४	१६	३१	९	१९	क. ६।५६	६	४१	५	३२	६	१४	७	३०	भ. १८।४४ या.
२७| ६	८	मं.	५५	१२	पु.	२८	२१	शु.	४८	३७	बा.	२२	४६	१७	न.१	१०	२०	कर्क	६	४१	५	३१	६	१५	७	३२	शुक्र हस्त में ५९।५, नवम्बर प्रा., अहोई अष्टमी (पंजाब)
२७| २	९	बु.	६०	०	आ.	३५	१४	शु.	५०	३५	तै.	२८	१६	१८	२	११	२१	सि. ३५।१४	६	४२	५	३०	६	१६	७	३७	बुध तुला में २५।१२, व. गुरु कृत्ति. ४ में ३२।३८
२६|५८	९	गु.	१	२०	म.	४२	५८	ब्र.	५३	५	ग.	१	२०	१९	३	१२	२२	सिंह	६	४३	५	२९	६	१७	७	४५	भ. ३४।४२ उ.,
२६|५४	१०	शु.	८	४	पू.फा.	५०	५०	ऐं.	५५	३७	वि.	८	४	२०	४	१३	२३	सिंह	६	४४	५	२८	६	१८	७	५४	भ. ८।४ या.
२६|५०	११	श.	१४	४६	उ.फा.	५८	२२	वै.	५७	५१	बा.	१४	४६	२१	५	१४	२४	कं. ७।४३	६	४५	५	२८	६	१९	८	५	सूर्य विशा. में ५१।४२, रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, B
२६|४५	१२	र.	२०	५५	ह.	६०	०	वि.	५९	२४	तै.	२०	५५	२२	६	१५	२५	कन्या	६	४५	५	२७	६	२०	८	१९	बुध स्वाती में ४७।५७, प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, यम को दीपदान
२६|४०	१३	चं.	२६	३	ह.	५	२	प्री.	६०	०	व.	२६	३	२३	७	१६	२६	तु. ३७।४९	६	४६	५	२६	६	२१	८	३५	भ. २६।३ उ., ५८।० या., नरक चतुर्दशी, श्री हनुमान ज. (उ. भा.)
२६|३६	१४	मं.	२९	५८	चि.	१०	३६	प्री.	०/५९	८/५२	श.	२९	५८	२४	८	१७	२७	तुला	६	४७	५	२५	६	२२	८	५२	
२६|२३	३०	बु.	३२	३८	स्वा.	१४	५८	सौ.	५८	३९	च.	१	१८	२५	९	१८	२८	तुला	६	४८	५	२५	६	२३	९	१२	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, श्री जैन महावीर निर्वाण दिवस

A करक चतुर्थी (करवा चौथ), चन्द्रोदय रात्रि ८ बजकर १० मि. पर B (प्रदोष व्यापिनी द्वादशी)

कार्ति. कृ. ८ मंगल, इष्ट ५७।२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	११	५	१	५	८	१०	४
१६	२२	६	२९	१०	९	५	१७	१७
४	२४	१६	१८	४	५७	१८	१५	१५
३६	३४	४४	४८	७	२९	४३	४२	४२
६०	[illegible]	४	८७	६	७२	५	३	३
६	५७	९	४०	५६	३५	२६	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वा. १	आश्ले. २	उ.भा. २	चित्रा २	रोहि. ४	उ.फा. ४	पुष्य २	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदये

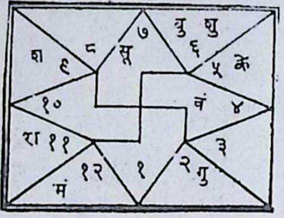

लोक भविष्य—कार्तिक कृ. प्रतिपदा बुधवारी होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, खड़ी फसल को हानि पहुंचे,—**"कार्तिके प्रथमे पक्षे प्रथमा बुध संयुता । जायते मध्यमा वृष्टिः अनावृष्टिः क्वचिद् भवेत् ॥"** इस पक्ष में बुध, नीचस्थ सूर्य के साथ सम्बन्ध करेगा, विश्व में कुछ नई समस्यायें उजागर होंगी; चीन, जापान, नेपाल, लंका आदि में कोई नया घटना चक्र चले । यावन राष्ट्रों में युद्धभय व्याप्त हो ।

कुण्डली सूर्योदये

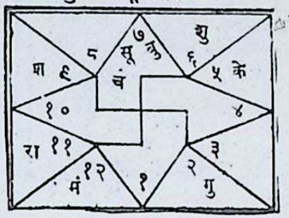

कार्ति. कृ. ३० बुध, इष्ट ५९।४५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	११	६	१	५	८	१०	४
२४	२८	७	११	९	१९	६	१६	१६
६	४७	१०	३९	५	४०	३	५०	५०
१६	२२	४२	२६	४१	१८	५०	१५	१५
६०	[illegible]	९	९६	७	७३	२	३	३
२०	१	५७	३	४३	१२	५४	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा. २	विशा. ३	उ.भा. २	स्वा. २	कृत्ति. ४	हस्त ३	पुष्य २	शत. ४	पू.फा. २

ग्रहचाल और बाजार का रुख—२८ अक्टूबर के लगभग रुई में विशेष मन्दे का झटका आने का योग है, चांदी में तेजी बनेगी । इस समय वायदा व्यापारी सावधान रहें, पहले जिन चीजों में तेजी थी उनमें मन्दी बनेगी तथा जिन चीजों में मन्दा था उनमें तेजी बनने का योग है । नवम्बर प्रारम्भ में यदि अनाज मन्दे हों तो खरीदें, आगे लाभ रहेगा । गुड़, खांड, शक्कर में घटा-बढ़ी चलेगी । अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला और मूंगफली में मन्दा बनेगा । पक्षान्त में अनाज, गुड़, खाँड एवं तिलहन तेज रहें ।

आकाश लक्षण—२६ से २९ अक्टूबर के मध्य हि. प्र. एवं अन्य उत्तरी भारत में कहीं बादलचाल एवं बूंदा-बांदी होगी । ३० अक्टूबर से ४ नवम्बर तक हवा का जोर रहे । पर्वतीय भागों पर हिमपात एवं शीत जोर पकड़ेगी । ता. ५ से ९ नवम्बर तक खण्ड वृष्टि हो ।

शकुन विचार—कार्तिक कृष्ण में सूर्य पर परिवेष दिखाई दे तो अलसी, सरसों, तिल, तेल तेज होंगे, इस स्थिति में शीघ्र ही स्टाक करें, निःसन्देह लाभ की स्थिति बनेगी । दीपावली की शाम को यदि जोरदार वायु चले तो आगामी शीतकालीन फसलें पर्याप्त न हों, तेजी रहे ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० कार्तिक शुक्ल पक्ष १७ (१० से २३ नवं. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु

ग्रह दर्शन—१० नवम्बर को बुध पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शुक्र पूर्व में होगा। इस समय गुरु पश्चिम में अस्त होता दीखेगा। सायं शनि पश्चिम में तथा मंगल पूर्व कपाल में होगा।

वि.मा. घ. प.		तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवं.	श. कार्तिक	मु. र.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा. स्टैं. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	२९	१	गु.	३४	१	वि.	१८	७	शो.	५६	३०	कि.	३	१९	२६	१०	१९	२९	वृ. २।२०	६	४९	५	२४	६	२४	९	३३	बुध पूर्व में अस्त, अन्नकूट, गोवर्धनपूजा, बलिपूजा
२६	२५	२	शु.	३४	१७	अनु.	२०	७	अ.	५३	३२	बा.	४	९	२७	११	२०	३०	वृश्चिक	६	४९	५	२३	६	२५	९	५६	चन्द्र दर्शन मु. १५, यमद्वितीया, भाई दूज, विश्वकर्मापूजा,
२६	२२	३	श.	३३	३५	ज्ये.	२१	१०	सु.	४९	४९	तै.	३	५६	२८	१२	२१	र'	ध. २१।१०	६	५०	५	२३	६	२६	१०	२१	शुक्र चित्रा में ५६।३५, रवी-उस्सानी मु. प्रारम्भ
२६	१९	४	र.	३१	५८	मू.	२१	१८	धृ.	४५	२४	व.	२	४७	२९	१३	२२	२	धनु	६	५१	५	२२	६	२७	१०	४८	भ. २।४७ उ. ३१।५८ या., राहु शत. ३ में केतु पू.फा. १ में १०।७
२६	१६	५	चं.	२९	३५	पू.षा.	२०	४०	शू.	४०	२४	ब.	०	४६	३०	१४	२३	३	म. ३५।२०	६	५२	५	२२	६	२८	११	१४	जन्म दिन श्री जवाहरलाल नेहरू, बाल दिवस, ज्ञान पंचमी (जैन)
२६	१३	६	मं.	२६	३०	उ.षा.	१९	१९	गं.	३४	५१	तै.	२६	३०	मा'	१५	२४	४	मकर	६	५३	५	२१	६	२९	११	४३	सं. सूर्य वृश्चिक में ४७।५२, मु. ३०, पुण्यकाल अगले दिन A
२६	१०	७	बु.	२२	४०	श्र.	१७	१६	वृ.	२८	४१	व.	२२	४०	२	१६	२५	५	कु. ४५।५३	६	५४	५	२१	७	०	१२	१४	भ. २२।४० उ. ५०।२४ या., पंचक प्रारम्भ ४५।५३
२६	६	८	गु.	१८	८	ध.	१४	३०	ध्रु.	२१	५९	व.	१८	८	३	१७	२६	६	कुम्भ	६	५४	५	२०	७	१	१२	४३	गोपाष्टमी, बलिदान दिन लाला लाजपतराय जी
२६	३	९	शु.	१२	५८	श.	११	७	व्या.	१४	४६	कौ.	१२	५८	४	१८	२७	७	मी. ५३।७	६	५५	५	२०	७	२	१३	१६	शुक्र तुला में २२।४७, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी
२५	५९	१०	श.	७	११	पू.भा.	७	७	ह.	$\overset{७}{५८}$	$\overset{३}{५६}$	ग.	७	११	५	१९	२८	८	मीन	६	५६	५	१९	७	३	१३	५०	भ. ३४।३ उ., सूर्य अनु. में ६।७, प्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त्त)B
२५	५६	११	र.	०	५५	उ.भा.	$\overset{२}{५७}$	$\overset{३७}{५३}$	सि.	५०	२९	वि.	०	५५	६	२०	२९	९	मे. ५७।५३	६	५७	५	१९	७	४	१४	२४	भ. ०।५५ या., पंचक समाप्त ५७।५३, प्रबो. एकादशी व्र. (वैष्णव)C
अदम्		१२	र.	५४	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथि क्षय
२५	५४	१३	चं.	४७	५४	अ.	५२	५	व्य.	४२	१७	कौ	२१	८	७	२१	३०	१०	मेष	६	५८	५	१८	७	५	१५	०	बुध वृश्चिक में २३।०, सोम प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी, D
२५	५२	१४	मं.	४१	३७	भ.	४८	४६	व.	३४	६	ग.	१४	४६	८	२२	मा'	११	मेष	६	५९	५	१८	७	६	१५	३७	भ. ४१।३७ उ., सायन धनु में सूर्य २।१२, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ
२५	४९	१५	बु.	३६	१	कृ.	४५	३	प.	२९	२९	वि.	८	४९	९	२३	२	१२	वृ. २।४७	७	०	५	१८	७	७	१६	१६	भ. ८।४९ या., बुध अनु. में २८।४८, शुक्र स्वाती में ४७।४५, E

A मध्याह्न से पहले, बुध विशा. में ८।२२, शनि मूल ३ में ५७।३३ B भीष्म पंचक प्रारम्भ (देखें—"संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था") C तुलसी विवाह D (देखें—'संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था')
E श्री सत्यनारायण व्रत, कार्तिक स्नान समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्कर (राज.), रामतीर्थ (पं.), कपालमोचन (हर.)

कार्तिक शु. ८ गुरु, इष्ट ५६।३०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	११	६	१	५	८	१०	४
२	१६	८	२४	८	२९	६	१६	१६
९	३१	४८	२९	२	२७	५२	२४	२४
४१	०	४२	५५	१३	४०	१९	४९	४९
६०	[illegible]	१५	९६	८	७३	६	३	३
३१	३०	३	२	७	४०	१५	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा. ४	धन. ३	उ.भा. २	विशा. २	कृत्ति. ४	चित्रा २	मूल ३	शत. ३	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदये

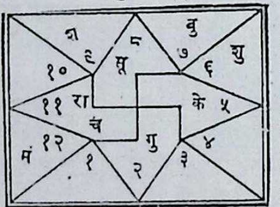

लोक भविष्य—इस पक्ष में वृश्चिक संक्रान्ति मंगलवारी है—"म्लेच्छेषु रोगाम्मरणाय मन्दः"—रोग-भय व्याप्त हो, कहीं दुर्घटना से जनहानि हो। पक्ष-मध्य में तुला राशि का शुक्र विश्व में आरोग्य क्षेमकारक है—"यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किञ्चित्-किञ्चिद्विरोधकृत्॥" उ. प्र., म. प्र. एवं कुछ अन्य भागों में राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा।

कुण्डली सूर्योदये

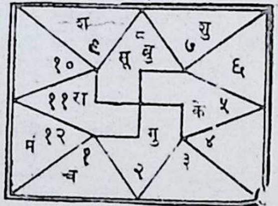

कार्तिक शु. १५ बुध, इष्ट ५६।१५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	११	७	१	६	८	१०	४
८	१२	१०	४	७	६	७	१६	१६
१३	३७	२७	३	१३	५०	३०	५	५
७	४६	२३	३७	१३	३१	३१	४४	४४
६०	[illegible]	१८	९५	८	७४	६	३	३
३९	५९	१९	३	१०	०	३०	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	
अनु. २	रोहि. १	उ.भा. ३	अनु. १	कृत्ति. ४	स्वा. १	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में अनाज, घी आदि मंहगे रहेंगे। पक्ष मध्य में गुड़, रुई, सोना व चांदी आदि धातुओं के भाव तेज रहें, फिर भी सूर्य पर गुरु की दृष्टि होने से बाजारों में जोरदार तेजी की उम्मीद नहीं है। १८ नवम्बर के लगभग रुई, चांदी में पहले कुछ तेजी के बाद मन्दा बनेगा। गुड़, खांड तेज रहें। पक्षान्त में घी, तेल, सरसों, रुई और चांदी में तेजी का वातावरण रहे।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में उरत्त-पूर्वी लंका, मद्रास, मैसूर स्टेट, बंगलादेश के तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा के योग हैं। इस पक्ष में हिमाचल के तटवर्ती इलाकों में एवं हिमशिखरों पर वर्षा एवं हिमपात के समाचार भी मिलेंगे।

शकुन विचार—कार्तिक शुक्ल पंचमी सोमवारी होने से आगे बाजारों में मन्दा आता है, यह अनुभूत, सभी वस्तुओं में भारी मन्दा आ सकता है। यह मन्दी कार्तिक से आगे १२ मास में ही आती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८ (२४ नवं. से ९ दिसं. सन् १९८८ ई. तक), दक्षिणायन, हेमन्त ऋतु

ग्रह दर्शन—बुध अस्त है। प्रातः शुक्र को पूर्व में देखें। सायं शनि को पश्चिम में, मंगल को पूर्व कपाल में तथा गुरु को पूर्व में ऊपर उठता देख सकेंगे।

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. नव.	श. मार्ग.	मु. रबि.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ.। प.	चण्डीगढ़ मा.स्टै.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४६	१	गु.	३१	२८	रो.	४२	२५	शि.	१६	३२	बा.	३	४५	१०	२४	३	१३	बृष	७	०	५	१८	७	८	१६	५६	
२५	४३	२	शु.	२८	१७	मृ.	४१	१२	सि.	१३	४२	ग.	२८	१७	११	२५	४	१४	मि. ११।४८	७	१	५	१७	७	९	१७	३७	भ. ५७।३३ उ.,
२५	४०	३	श.	२६	५०	आ.	४१	४४	सा.	९	८	वि.	२६	५०	१२	२६	५	१५	मिथुन	७	२	५	१७	७	१०	१८	२०	भ. २६।५० या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५	३८	४	र.	२७	२१	पुन.	४४	१२	शु.	६	४	बा.	२७	२१	१३	२७	६	१६	क. २८।३५	७	३	५	१७	७	११	१९	४	
२५	३५	५	चं.	२९	४९	पु.	४८	२०	शु.	४	३१	तै.	२९	४९	१४	२८	७	१७	कर्क	७	४	५	१७	७	१२	१९	५०	व. गुरु कृत्ति. ३ में ०।४०
२५	३३	६	मं.	३४	७	आ.	५४	२९	ब्र.	४	२४	ग.	१	५८	१५	२९	८	१८	सि. ५४।२९	७	५	५	१६	७	१३	२०	३७	भ. ३४।७ उ.,
२५	३०	७	बु.	३९	५३	म.	६०	०	ऐं.	५	३३	वि.	७	०	१६	३०	९	१९	सिंह	७	६	५	१६	७	१४	२१	२७	भ. ७।० या.
२५	२८	८	गु.	४६	२८	म.	१	३९	वै.	७	३४	बा.	१३	११	१७	दि'	१०	२०	सिंह	७	६	५	१६	७	१५	२२	१७	बुध ज्येष्ठा में ५५।४२, दिसम्बर प्रा., श्री महाकाल भैरवाष्टमी
२५	२६	९	शु.	५३	१५	पू.फा.	९	२४	वि.	९	५९	तै.	१९	५१	१८	२	११	२१	कं. २६।२०	७	७	५	१६	७	१६	२३	९	सूर्य ज्येष्ठा में १६।३७
२५	२४	१०	श.	५९	३८	उ.फा.	१७	७	प्री.	१२	२१	व.	२६	२६	१९	३	१२	२२	कन्या	७	८	५	१६	७	१७	२४	३	भ. २६।२६ उ., ५९।३८ या.
२५	२२	११	र.	६०	०	ह.	२४	९	आ.	१४	१०	ब.	३२	७	२०	४	१३	२३	तु. ५७।०	७	९	५	१६	७	१८	२४	५८	शुक्र विशा. में ३४।१०
२५	२०	११	चं.	४	३५	चि.	२९	५३	सौ.	१५	५	बा.	४	३५	२१	५	१४	२४	तुला	७	१०	५	१६	७	१९	२५	५५	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)
२५	१८	१२	मं.	८	१६	स्वा.	३४	१२	शो.	१४	५४	तै.	८	१६	२२	६	१५	२५	तुला	७	१०	५	१६	७	२०	२६	५२	भौम प्रदोष व्रत, वेंकटेश (प्लूटो) विशाखा१ में
२५	१६	१३	बु.	१०	१९	वि.	३६	५५	अ.	१३	२७	व.	१०	१९	२३	७	१६	२६	वृ. २१।१४	७	११	५	१६	७	२१	२७	५०	भ. १०।१९ उ. ४०।३१ या.
२५	१४	१४	गु.	१०	४४	अनु.	३८	९	सु.	१०	४६	श.	१०	४४	२४	८	१७	२७	वृश्चिक	७	१२	५	१७	७	२२	२८	५१	मेला पुरमण्डल, देविका स्नान (जम्मू)
२५	१२	३०	शु.	९	४५	ज्ये.	३८	७	धृ.	७	०	ना.	९	४५	२५	९	१८	२८	ध. ३८। ७	७	१३	५	१७	७	२३	२९	५०	यूरेनस मूल ३ में

मार्ग. कृ. ८ गुरु, इष्ट ५६।००

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	११	७	१	६	८	१०	४
१६	२४	१३	१६	६	१६	८	१५	१५
१९	१	७	४०	८	४३	२३	४०	४०
२	३२	७	२९	३२	४३	३०	१८	१८
६०	[illegible]	२१	९४	७	७४	६	३	३
५२	३४	५८	१४	५४	२२	४६	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु. ४	पू.फा. ४	उ.भा. ३	ज्ये. १	कृत्ति. ३	स्वा. ४	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदये

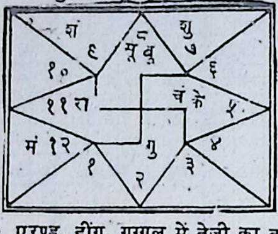

लोक भविष्य—इस पक्ष में प. बंगाल, उ. प्र. एवं कर्नाटक में विशेष राजनैतिक घटना चक्र चलेगा। फ्रांस, बंगला देश, अफगानिस्तान, जापान में भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि का योग है। पक्ष मध्य में ज्येष्ठा नक्षत्र का बुध देश में राजनैतिक उथल-पुथल का संकेत देता है। राजस्थान आदि कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे।

गृहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में घी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गल में तेजी का वातावरण बनेगा। ४ दिसम्बर के लगभग रुई व अनाज मन्दे होंगे। पक्षान्त में मार्कीट का रुख बदल सकता है। इस पक्ष में बाजार में उतार-चढ़ाव अधिक आयेंगे, वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें, अन्यथा हानि भय है।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पंजाब के तलहटी वाले भाग में एवं हरियाणा, मैसूर स्टेट में बादल चाल व खण्ड वृष्टि के योग हैं। हि. प्र., जम्मू, काश्मीर एवं लाहौल स्पीती भाग में जोरदार हिमपात होगा। शीत लहर से अनेक व्यक्ति प्रभावित होंगे।

कुण्डली सूर्योदये

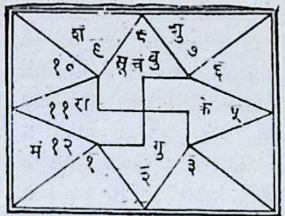

मार्ग. कृ. ३० शुक्र, इष्ट ५५।४३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	११	७	१	६	८	१०	४
२४	३	१६	२९	५	२६	९	१५	१५
२६	५७	१३	१३	७	३९	१८	१४	१४
३०	४८	४३	५९	२७	३५	१९	५२	५२
६१	[illegible]	२४	९४	७	७४	६	३	३
१	४५	५९	२०	१३	३८	५७	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	उ	उ	व	अ
ज्ये. ३	मूल २	उ.भा. ४	ज्ये. ४	कृत्ति. ३	विशा. २	मूल ३	शत. ३	पू.फा. १

शकुन विचार—यदि माघ कृ. पंचमी को बादल हों, घटाएं उठने लगें, तो हिमपात एवं ओला आदि से खड़ी फसल नष्ट होती है एवं अनाज तेज रहता है। मार्ग कृ. सप्तमी को रात-दिन आकाश निर्मल रहे, बादल न हों तो वैशाख में अन्न सस्ता हो, यदि बादल हों तो अन्न तेज रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वि. सं. २०४५, शाक १९१० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९ — (१० से २३ दिसं. सन् १९८८ ई. तक), व. उत्तरायन, हेमं. शि. ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. र.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ भा.स्टें.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१०	१	श.	७	३३	मू.	३६	५९	शू.	२/५६	१६/४५	ब.	७	३३	२६	१०	१९	२६	धनु	७	१३	५	१७	७	२४	३०	५२
२५	८	२	र.	४	२३	पू.षा.	३५	६	वृ.	५०	४०	कौ.	४	२३	२७	११	२०	३०	म. ४९।३०	७	१४	५	१७	७	२५	३१	५५
२५	७	३	चं.	०	३५	उ.षा.	३२	४१	ध्रु.	४४	१८	ग.	०	३५	२८	१२	२१	ज'	मकर	७	१५	५	१७	७	२६	३२	५७
यवम्		४	चं.	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	६	५	मं.	५१	४८	श्र.	२९	५३	व्या.	३७	३४	ब.	२४	४	२९	१३	२२	२	कु. ५८।२३	७	१५	५	१८	७	२७	३४	१
२५	५	६	बु.	४७	१	ध.	२६	५३	ह.	३०	४२	कौ.	१९	२४	३०	१४	२३	३	कुम्भ	७	१६	५	१८	७	२८	३५	५
२५	४	७	गु.	४२	९	श.	२३	४५	व.	२३	४४	ग.	१४	३५	पौ'	१५	२४	४	कुम्भ	७	१७	५	१८	७	२९	३६	८
२५	३	८	शु.	३७	१५	पू.भा.	२०	३३	सि.	१६	४२	वि.	९	४२	२	१६	२५	५	मी. ६।२१	७	१७	५	१९	८	०	३७	१३
२५	२	९	श.	३२	२०	उ.भा.	१७	२०	व्य.	९	३९	बा.	४	४७	३	१७	२६	६	मीन	७	१८	५	१९	८	१	३८	१८
२५	१	१०	र.	२७	२५	रे.	१४	७	व.	२/५५	३७/३५	ग.	२७	२५	४	१८	२७	७	मे. १४। ७	७	१९	५	१९	८	२	३९	२२
२५	०	११	चं.	२२	४०	अ.	११	०	शि.	४८	४५	वि.	२२	४०	५	१९	२८	८	मेष	७	१९	५	२०	८	३	४०	२८
२४	५९	१२	मं.	१८	१४	भ.	८	११	सि.	४२	२२	बा.	१८	१४	६	२०	२९	९	वृ. २२।३६	७	२०	५	२०	८	४	४१	३४
२४	५९	१३	बु.	१४	१८	कृ.	५	४९	सा.	३६	२२	तै.	१४	१८	७	२१	३०	१०	वृष	७	२०	५	२१	८	५	४२	३८
२५	०	१४	गु.	११	९	रो.	४	८	शु.	३१	४	व.	११	९	८	२२	पौ'	११	मि. ३३।४६	७	२१	५	२१	८	६	४३	४५
२५	१	१५	शु.	९	४	मृ.	३	३०	शु.	२६	४२	ब.	९	४	९	२३	२	१२	मिथुन	७	२१	५	२२	८	७	४४	५२

ग्रह दर्शन—बुध अस्त है। पक्षारम्भ में ही शनि अदृश्य हो जायेगा। प्रातः शुक्र को पूर्व में देखें। सायं मंगल याम्योत्तरासन्न तथा गुरु पूर्व में दृश्य होगा।

म. रेव. में ५८।४८, बुध मूल धनु में २५।०, शनि अस्त

चन्द्र दर्शन मु. ३०

भ. २८।२७ उ. ५८।२० या., शुक्र वृश्चिक में ३६।४२, जमद- A

चतुर्थी तिथि क्षयः

पंचक प्रा. ५८।२३, बलिदान दिन श्री गुरु तेगबहादुर जी

गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी

भ. ४२।९ उ., सं. सूर्य मूल धनु में २३।२८, मु. १५, पुण्यकाल B

भ. ९।४२ या.

भ. ५५।२ उ., पंचक समाप्त १४।७, बुध पू.षा. में ५२।१५

भ. २२।४० या., मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती, C

भौम प्रदोष व्रत

सायन मकर में सूर्य ३४।३०, उत्तरायण, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, D

भ. ११।९ उ. ४०।६ या., शक पौष प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण E

A उल-अव्वल मु. प्रारम्भ B ७।२८ बाद, शुक्र अनु. में १७।१६, शनि मूल ४ में ५३।२२, मित्र सप्तमी C मौन एकादशी (जैन) D पिशाच मोचन श्राद्ध E व्रत, श्री दत्तात्रेय जयन्ती

मार्ग. शु. ८ शुक्र, इष्ट ५५।३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	११	८	१	७	८	१०	४
१	११	१९	१०	४	५	१०	१४	१४
३३	३२	१५	१५	१९	२२	७	५२	५२
४३	३०	१९	३२	२४	२७	१८	३६	३६
६१	[illegible]	२७	९८	६	७४	७	३	३
२	५६	९	४६	२१	४५	२	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
१	३	१	४	३	१	४	३	१
मूल	उ.भा.	रेव.	मूल	कृत्ति.	अनु.	मूल	शत.	पू.फा.

कुण्डली सूर्योदये

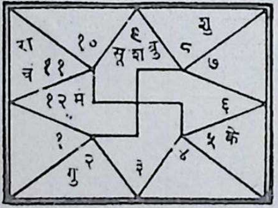

लोक भविष्य—इस पक्ष में बुध धनु राशि में सूर्य एवं शनि के साथ सम्बन्ध करता है, कहीं शासक एवं शासित में वैमत्य कहीं जनाक्रोश से स्थिति बिगड़े एवं राजनैतिक गतिरोध बना रहे—"धने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजा विरोध कृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति ॥" पशुओं में रोगभय व्याप्त हो। रेवती नक्षत्र का मंगल भी रोगों को जन्म देता है। अमेरिका, जापान एवं मुस्लिम राष्ट्रों के प्रधान नेताओं को किसी समस्या का सामना करना पड़े।

कुण्डली सूर्योदये

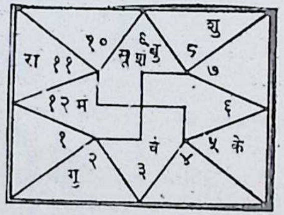

मार्ग. शु. १५ शुक्र, इष्ट ५५।२३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	११	८	१	७	८	१०	४
८	१८	२२	२१	३	१४	१०	१४	१४
४१	५	३१	१८	३८	६	५६	३०	३०
१२	१२	१	५९	११	१३	४७	२१	२१
६१	[illegible]	२८	९४	५	७४	७	३	३
७	१४	५८	२५	१५	५५	६	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ
३	४	२	३	३	४	४	३	१
मूल	आर्द्रा	रेव.	पू.षा.	कृत्ति.	अनु.	मूल	शत.	पू.फा.

ग्रहचाल और बाजार का रुख—रुई, शेयर, सोना, गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में पक्ष के प्रारम्भ में कुछ तेजी रहेगी। १२ दिसं. के बाद अनाजों में कुछ मन्दा, रुई, शेयर, चांदी, अफीम में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी हो। १५ दिसं. के लगभग रुई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चांदी में पहले कुछ तेजी आकर तुरन्त कुछ देर बाद अचानक मन्दा आ सकता है। हानि से बचें।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में २३ दिसम्बर तक कहीं वर्षा होगी, कहीं बिजली की कड़क के साथ हानि, कहीं ओलापात व हिमपात के समाचार मिलेंगे।

शकुन विचार—यदि मार्ग. शु. में धनिष्ठा नक्षत्र के समय बादल गरजें तो जनता में रोगभय व्याप्त हो—"मार्गशीर्षे धनिष्ठायां तूर्याब्दोऽम्बरे भवेत्। घातातुरस्तदा राष्ट्रे व्याधिर्भवति दारुणः ॥" इस पक्ष में यदि आकाश में इन्द्रधनुष दिखाई दे तो वर्षा अच्छी होगी, अनाज का स्टाक न करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० पौष कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक (२४ दिसं. १९८८ से ७ जन. सन् १९८९ ई. तक), उ.अयन, शिशिर ऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. पौष	अं. दिसं.	श. पौष	मु. ज.उ.	प्रवेश काल घ. प.	भा.स्टें.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—शनि अस्त है । पक्षारम्भ से ही बुध को सायं पश्चिम की ओर देख सकेंगे । इस समय मंगल याम्योत्तरासन्न एवं गुरु पूर्व में देखा जा सकेगा । प्रातः शुक्र पूर्व में दीखेगा ।
२५	२	१	श.	८	१८	आ.	४	७	ब्र.	२३	२३	कौ.	८	१८	१०	२४	३	१३	क. ५०।४०	७	२२	५	२२	८	८	४५	५७	बुध पश्चिम में उदित
२५	३	२	र.	९	३	पुन.	६	१२	ऐं.	२१	१७	ग.	९	३	११	२५	४	१४	कर्क	७	२२	५	२३	८	९	४७	५	भ. ४०।१७ उ., शुक्र ज्येष्ठा में ५८।४८
२५	४	३	चं.	११	३१	पु.	९	५४	वै.	२०	२९	वि.	११	३१	१२	२६	५	१५	कर्क	७	२३	५	२४	८	१०	४८	१२	भ. ११।३१ या., श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५	५	४	मं.	१५	३५	आ.	१५	६	वि.	२०	५३	बा.	१५	३५	१३	२७	६	१६	सिं. १५। ६	७	२३	५	२४	८	११	४९	२१	बुध उ.षा. में २०।१२, व. गुरु कृत्ति. २ में ३२।४०
२५	६	५	बु.	२१	२	म.	२१	४३	प्री.	२२	१७	तै.	२१	२	१४	२८	७	१७	सिंह	७	२३	५	२५	८	१२	५०	२६	सूर्य पू.षा. में २६।५८
२५	७	६	गु.	२७	२९	पू.फा.	२९	१३	आ.	२४	२६	व.	२७	२९	१५	२९	८	१८	कं. ४६। ९	७	२४	५	२६	८	१३	५१	३८	भ. २७।२९ उ., बुध मकर में २९।५५
२५	८	७	शु.	३४	१६	उ.फा.	३७	०	सौ.	२६	५०	वि.	०	५३	१६	३०	९	१९	कन्या	७	२४	५	२६	८	१४	५२	४८	भ. ०।५३ या.
२५	९	८	श.	४०	४५	ह.	४४	२९	शो.	२९	३	बा.	७	३१	१७	३१	१०	२०	कन्या	७	२४	५	२७	८	१५	५३	५७	ई. सन् १९८८ समाप्त
२५	११	९	र.	४६	१६	चि.	५१	२	अ.	३०	४०	तै.	१३	३०	१८	ज.'	११	२१	तु. १७।४४	७	२५	५	२८	८	१६	५५	७	ई. सन् १९८९ आरम्भ
२५	१२	१०	चं.	५०	१५	स्वा.	५६	५	सु.	३१	१३	व.	१८	१६	१९	२	१२	२२	तुला	७	२५	५	२८	८	१७	५६	१९	भ. १८।१६ उ. ५०।१५ या., जन्म दिन श्री पार्श्वनाथ (जैन)
२५	१३	११	मं.	५२	२८	वि.	५९	२५	धृ.	३०	२८	व.	२१	२१	२०	३	१३	२३	वृ. ४३।३०	७	२५	५	२९	८	१८	५७	२९	सफला एकादशी व्रत (स.)
२५	१४	१२	बु.	५२	४६	अनु.	६०	०	शू.	२८	१७	कौ.	२२	३७	२१	४	१४	२४	वृश्चिक	७	२५	५	३०	८	१९	५८	४०	
२५	१५	१३	गु.	५१	११	अनु.	०	५४	गं.	२४	३७	ग.	२१	५८	२२	५	१५	२५	वृश्चिक	७	२५	५	३१	८	२०	५९	५२	भ. ५१।११ उ., बुध श्रवण में २६।५०, शुक्र मूल धनु में ३८।१७, A
२५	१६	१४	शु.	४८	३	ज्ये.	०/५८	३७/५१	वृ.	१९	३७	वि.	१९	३७	२३	६	१६	२६	ध. ०।३७	७	२६	५	३१	८	२२	१	३	भ. १९।३७ या.
२५	१७	३०	श.	४३	३७	पू.षा.	५५	५२	ध्रु.	१३	३०	च.	१५	५०	२४	७	१७	२७	धनु	७	२६	५	३२	८	२३	२	१३	मंगल अश्वि. मेष में ४१।१३, शनैश्चरी अमावस्या

A प्रदोष व्रत

पौष कृ. ८ शनि, इष्ट ५५।१५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	११	९	१	७	८	१०	४
१६	२५	२६	३	३	२४	११	१४	१५
५०	२८	२८	३९	१	५	५३	४	४
१५	१२	५०	१८	७	५३	३२	५४	५४
६१	७२२	३०	८८	३	७५	७	३	३
११	४५	३९	२	४९	२	४	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
पू.षा. २	चित्रा १	रेव. ३	उ.षा. ३	कृत्ति. २	ज्ये. ३	मूल ४	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदये

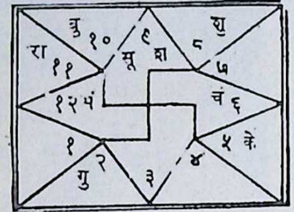

लोक भविष्य—इस पक्ष में मकर राशि का बुध शुभाशुभ दोनों प्रकार का फल करेगा, लेकिन धनुस्थ सूर्य-शुक्र-शनि खड़ी फसलों की हानि के सूचक हैं, मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी, महर्घता से जनाक्रोष बढ़े। पक्षान्त में मेषस्थ मंगल प्रजा में आतंक भय बनाता है, कहीं दुर्घटना में जनहानि का समाचार भी मिलेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई में मन्दी, तिल, घी, लाल मिर्च, तेल, सोना, चांदी, चायल, सरसों, हींग में मन्दे का वातावरण बने। अनाजों में भी प्रायः कुछ मन्दा बने। २८ दिसंबर से तिल तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खांड, हल्दी, गुग्गल, चांदी तेज होंगे। इस समय सोना, चांदी में अच्छी तेजी का योग है। पक्षान्त में गुड़, खांड, अलसी, घी, तेल में जोरदार तेजी आएगी।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में २४ दिसम्बर ८८ से लेकर २ जनवरी ८९ तक कुछ प्रान्तों में बादल चाल एवं बूंदा-बांदी के योग हैं। आकाशीय बिजली आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। शीत लहर व हिमपात से कुछ स्थानों पर हानि हो। पक्षान्त में वर्षा होगी।

कुण्डली सूर्योदये

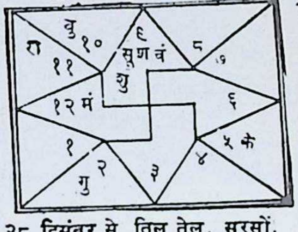

पौष कृ. ३० शनि, इष्ट ५५।१०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	०	९	१	८	८	१०	४
२३	२६	०	१३	२	२	१२	१३	१३
५८	३०	७	१	३८	५१	४२	४२	४२
२९	७	६	३१	३२	१८	५३	३९	३९
६१	७५५	३१	६५	२	७५	७	३	३
१०	३७	५०	४	२६	६	०	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
पू.षा. ४	पू.षा. ४	अश्वि. १	श्रव. १	कृत्ति. २	मूल १	मूल ४	शत. ३	पू.फा. १

शकुन विचार—पौष अमावस शनिवारी है। अतः यदि इस दिन सूर्य या चन्द्र के चारों ओर परिवेश दिखाई दे तो सभी प्रकार के अनाजों में भारी तेजी आएगी। यहां पौष अमावस को पू.षा. नक्षत्र होने से अनाजों में उत्तम तेजी का विचार है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० पौष शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक (८ से २१ जनवरी सन् १९८९ ई. तक) उत्तरायण, शिशिर ऋतु

पू.षा. नक्षत्र होने से अनाजों में उत्तम तेजी का विचार है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पौ वि. सं. २०४५, शाक १९१० पौष शुक्ल पक्ष २१ (८ से २१ जनवरी सन् १९८९ ई. तक), उत्तरायन, शिशिर ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीख प्र. पौष	अं. जन.	श. पौष	मु. ज.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२५	१९	१	र.	३८	११	उ.षा.	५२	०	व्या.	६ / ५८	२७ / ४४	कि.	१०	५४	२५	८	१८	२८	म. ६।५५	७	२६	५	३३	८	२४	३	२४
२५	२१	२	चं.	३२	१०	श्र.	४७	३७	व.	५०	३५	बा.	५	११	२६	९	१९	२९	मकर	७	२६	५	३४	८	२५	४	३४
२५	२४	३	मं.	२५	५२	ध.	४३	२	सि.	४२	२५	ग.	२५	५२	२७	१०	२०	ज'	कु. १५।१९	७	२६	५	३५	८	२६	५	४४
२५	२६	४	बु.	१९	३१	श.	३८	२९	व्य.	३४	१२	वि.	१९	३१	२८	११	२१	२	कुम्भ	७	२६	५	३६	८	२७	६	५३
२५	२८	५	गु.	१३	२३	पू.भा.	३४	१४	व.	२६	१३	बा.	१३	२३	२९	१२	२२	३	मी. २०।१८	७	२६	५	३६	८	२८	८	२
२५	३०	६	शु.	७	४१	उ.भा.	३०	२७	प.	१८	३६	तै.	७	४१	मा'	१३	२३	४	मीन	७	२६	५	३७	८	२९	९	९
२५	३३	७	श.	२	३०	रे.	२७	१२	शि.	११	२४	व.	२	३०	२	१४	२४	५	मे. २७।१२	७	२६	५	३८	९	०	१०	१६
अवम्		८	श.	५७	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	३६	९	र.	५४	०	भ्र.	२४	३५	सि.	४ / ५८	४२ / ३४	बा.	२५	५८	३	१५	२५	६	मेष	७	२५	५	३९	९	१	११	२१
२५	३९	१०	चं.	५०	५२	भ.	२२	४२	शु.	५२	५८	तै.	२२	२६	४	१६	२६	७	वृ. ३७।२५	७	२५	५	४०	९	२	१२	२७
२५	४२	११	मं.	४८	३०	कृ.	२१	३३	शु.	४८	६	व.	१९	४१	५	१७	२७	८	वृष	७	२५	५	४१	९	३	१३	३२
२५	४४	१२	बु.	४७	४	रो.	२१	१४	ब्र.	४३	५४	व.	१७	४७	६	१८	२८	९	मि. ५१।३३	७	२५	५	४२	९	४	१४	३४
२५	४६	१३	गु.	४६	३८	मृ.	२१	५२	ऐं.	४०	२९	कौ.	१६	५१	७	१९	२९	१०	मिथुन	७	२५	५	४२	९	५	१५	३८
२५	४८	१४	शु.	४७	१६	भ्रा.	२३	३०	वं.	३७	५४	ग.	१६	५७	८	२०	३०	११	मिथुन	७	२४	५	४३	९	६	१६	४०
२५	५१	१५	श.	४९	८	पुन.	२६	१६	वि.	३६	१४	वि.	१८	१२	९	२१	मा'	१२	क. १०।३४	७	२४	५	४४	९	७	१७	४१

ग्रह दर्शन—१२ जन. के बाद शनि को प्रातः पूर्व में देख सकेंगे। बुध १८ जन. को पश्चिम में अदृश्य हो जायेगा। प्रातः शुक्र पूर्व में देखें। मायं मंगल याम्योत्तरासन्न तथा गुरु पूर्व में होगा।

चन्द्र दर्शन मु. ३०

भ. ५२।४२ उ., पंचक प्रा. १५।१९, सूर्य उ.षा. में ३३।३५, A

भ. १९।३१ या.

शनि उदित, लोहड़ी (पंजाब, हि.प्र., जम्मू-का.)

सं. सूर्य मकर में ४६।५५, मु. ३०, पुण्यकाल आगामी सारा दिन, B

भ. २।३० उ. ३०।१३ या., पंचक समाप्त २७।१२, अवतार दिन C

अष्टमी तिथि क्षयः

राहु शत. २ में, केतु मघा ४ में २।२७

बुध वक्री १।३५, शुक्र पू.षा. में १७।३०

भ. १९।४१ उ. ४८।३० या., पुत्रदा एकादशी व्रत (स.)

बुध पश्चिम में अस्त

प्रदोष व्रत

भ. ४७।१६ उ., सायन कुम्भ में सूर्य २।०, सूर्य अभिजित् में D

भ. १८।१२ या., शक माघ प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, माघ E

A जमद उस्सानी मु. प्रारम्भ B शनि पू.षा. १ में १५।०, नेपच्यून पू.षा. २ में C श्री गुरु गोविन्द सिंह जी D २२।५५, गुरु मार्गी २७।३५ E स्नान प्रारम्भ

पौष शु. ७ शनि, इष्ट ५५।१०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	०	९	१	८	८	१०	४
१	६	३	१८	२	११	१३	१३	१३
६	३१	५३	४	२५	३६	३१	२०	२०
२७	३२	११	४७	४९	५९	३१	२३	२३
६१	[illegible]	३२	६	०	७५	६	३	३
७	७	५२	२४	५९	७	५२	११	११
—	—	मा	मा	व	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
उ.षा. २	कृत्ति. २	अश्वि. २	श्रव. ३	कृत्ति. २	मूल ४	पू.षा. १	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदये

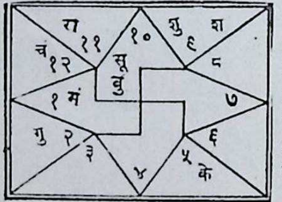

लोक भविष्य—पाक्षिक ग्रह स्थिति के अनुसार शीत रोग से कष्ट भय व्याप्त होगा। काश्तकार लोग विशेष लाभ की स्थिति में रहेंगे—"गोधूम वर्जित मही तदसौ फलं स्यात् अस्वस्थता धनुषि मानुषजाति रोगः" धनुस्थ शनि के उदय का फल इस प्रकार लिखा है। मंहगाई जोर पकड़ेगी। कहीं प्रदर्शन कहीं अशान्ति से वातावरण क्षुब्ध हो।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दा रहे। उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खांड, लाल शक्कर तेज रहें। १३ जनवरी के लगभग कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में उत्तम तेजी का योग है तथा घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खांड एवं रुई में भी तेजी आयेगी। १६ जनवरी को विचार पूर्वक काम करें, जोरदार तेजी या मन्दी आएगी। पक्षान्त में अचानक लाईन बदल सकती है।

आकाश लक्षण—८ से १८ जनवरी तक लंका के पूर्वी तट, शिलांग, हि.प्र., पू. पंजाब, उ.प्र., आदि में कहीं बादल चाल कहीं खण्ड वृष्टि व कहीं कोहरा से शीत लहर जोर पकड़ेगी। २०, २१ जनवरी को भी वायु वर्षा का योग है।

कुण्डली सूर्योदये

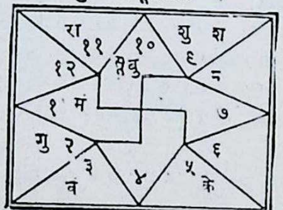

पौष शु. १५ शनि, इष्ट ५५।१५

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	०	९	१	८	८	१०	४
८	९	७	१४	२	२०	१४	१२	१२
१३	२४	४५	५२	२३	२२	१९	५८	५८
५२	१२	४५	८	१५	४५	१	८	८
६१	[illegible]	३३	६६	०	७५	६	३	३
१	११	४१	४२	२८	७	४१	११	११
—	—	मा	व	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	व	अ	अ
उ.षा. ४	पुष्य २	अश्वि. ३	श्रव. २	कृत्ति. २	पू.षा. ३	पू.षा. १	शत. २	मघा ४

शकुन विचार—पौष शुक्ल सप्तमी-अष्टमी या नवमी को आकाश मेघाच्छन्न हो, बादल गरजें तो सुभिक्ष रहे। यहां पौष शुक्ल एकादशी को कृत्तिका नक्षत्र होने से गुड़, लाल मिर्च आदि लाल चीजों में तेजी आएगी, ऐसा शकुन शास्त्र से ज्ञात होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० माघ कृष्ण पक्ष २२ (२२ जन. से ६ फर. सन् १९८९ ई. तक), उ. अयन, शिशिर ऋतु

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. माघ	अं. जन.	श. माघ	मु. ना.उ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—३१ जनवरी को प्रातः बुध पूर्व में दीखने लगेगा। इस समय शनि एवं शुक्र पूर्व में होंगे, सायं गुरु-मंगल याम्योत्तरासन्न होंगे।
२५	५४	१	र.	५२	१८	पु.	३०	१७	प्री.	३५	३३	बा.	२०	४३	१०	२२	२	१३	कर्क	७	२४	५	४५	९	८	१८	४१	
२५	५८	२	चं.	५६	४०	आ.	३५	२८	आ.	३५	४७	तै.	२४	२६	११	२३	३	१४	सि. ३५।२८	७	२३	५	४६	९	९	१९	४१	सूर्य श्रवण में ३६।५०, जन्म दिन नेताजी श्री सुभाष
२६	१	३	मं.	६०	०	म.	४१	४७	सौ.	३६	५६	व.	२६	२६	१२	२४	४	१५	सिंह	७	२३	५	४७	९	१०	२०	४०	भ. २६।२६ उ., सूर्य अभिजित् से निवृत्त ३२।१२
२६	४	३	बु.	२	१३	पू.फा.	४९	१	शो.	३८	४८	वि.	२	१३	१३	२५	५	१६	सिंह	७	२२	५	४८	९	११	२१	३८	भ. २।१३ या., व. बुध उ.पा. में ५६।२३, श्री गणेश चतुर्थी व्रत, A
२६	७	४	गु.	८	३६	उ.फा.	५६	४५	अ.	४१	७	बा.	८	३६	१४	२६	६	१७	कं. ५।४२	७	२२	५	४९	९	१२	२२	३६	शुक्र उ.पा. में ५६।४०, भारत गणतन्त्र दिवस
२६	९	५	शु.	१५	२१	ह.	६०	०	सु.	४३	३५	तै.	१५	२१	१५	२७	७	१८	कन्या	७	२१	५	५०	९	१३	२३	३३	
२६	१२	६	श.	२२	२	ह.	४	३४	धृ.	४५	४७	व.	२२	२	१६	२८	८	१९	तु. ३८।१८	७	२१	५	५१	९	१४	२४	२९	भ. २२।२ उ. ५५।१ या., जन्म दिन लाला लाजपतराय जी
२६	१५	७	र.	२७	५९	चि.	११	५०	शू.	४७	१६	व.	२७	५९	१७	२९	९	२०	तुला	७	२०	५	५१	९	१५	२५	२५	शुक्र मकर में ३६।२७, जन्म दिन स्वामी विवेकानन्द जी
२६	१८	८	चं.	३२	३९	स्वा.	१८	०	गं.	४७	४३	बा.	०	१९	१८	३०	१०	२१	तुला	७	२०	५	५२	९	१६	२६	२०	बलिदान दिन श्री महात्मा गान्धी
२६	२२	९	मं.	३५	३७	वि.	२२	३९	वृ.	४९	४९	तै.	४	८	१९	३१	११	२२	वृ. ६।२९	७	१९	५	५३	९	१७	२७	१४	मंगल भर. में ४३।१५, बुध पूर्व में उदित
२६	२५	१०	बु.	३६	३७	अनु.	२५	२६	ध्रु.	४४	२४	व.	६	७	२०	फ.	१२	२३	वृश्चिक	७	१९	५	५४	९	१८	२८	८	भ. ६।७ उ. ३६।३७ या., फरवरी प्रारम्भ
२६	२८	११	गु.	३५	३६	ज्ये.	२६	१६	व्या.	४०	२५	व.	६	७	२१	२	१३	२४	ध. २६।१६	७	१८	५	५५	९	१९	२९	०	षटतिला एकादशी व्रत (स.)
२६	३२	१२	शु.	३२	३६	मू.	२५	९	ह.	३४	५३	कौ.	४	९	२२	३	१४	२५	धनु	७	१७	५	५६	९	२०	२९	५२	
२६	३५	१३	श.	२७	५३	पू.षा.	२२	१९	व.	२८	१	ग.	०	१४	२३	४	१५	२६	म. ३६।१९	७	१७	५	५७	९	२१	३०	४२	भ. २७।५३ उ. ५४।५० या., शनि प्र. व्रत, मेरुत्रयोदशी (जैन)
२६	३९	१४	र.	२१	४७	उ.षा.	१८	५	सि.	२०	२	श.	२१	४७	२४	५	१६	२७	मकर	७	१६	५	५८	९	२२	३१	३२	सूर्य धनिष्ठा में ४७।४७, बुध मार्गी ३७।५२, यूरेनस मूल ४ में, B
२६	४३	३०	च.	१४	३८	श्र.	१२	४७	व्य.	११	११	ना.	१४	३८	२५	६	१७	२८	कु. ३६।४८	७	१५	५	५८	९	२३	३२	२०	पंचक प्रारम्भ ३६।४८, शुक्र श्रवण में ३५।५७, सोमवती अमा. C

B 'अर्धोदय योग' (सायं ३।५९ बाद अगले सूर्योदय तक)

C मौनी अमावस, कुम्भ महापर्व (प्रयाग), कुम्भ पर्व का 'प्रमुख स्नान दिवस', 'महोदय योग' (मध्याह्न के ११ घं. ४३ मि. तक)

A संकट चतुर्थी (चन्द्रोदय रात्रि २१।५

माघ कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ५५।२५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	क.
९	६	०	९	१	९	८	१०	४
१७	२७	१२	४	२	१	१५	१२	१२
२२	४०	५२	३५	३४	३८	१७	२९	२९
३७	२८	२८	१४	४५	४८	५२	३१	३१
६०	[illegible]	२४	४४	२	७५	६	३	३
५५	३९	३३	१९	१८	८	२१	११	११
—	—	मा	व	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
श्रव. ३	विशा. ३	कृत्ति. ४	उ.षा. ३	कृत्ति. २	उ.षा. २	पू.षा. १	शत. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदये

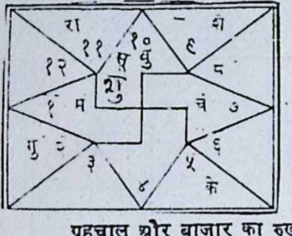

कहीं राजनैतिक विप्लव, राष्ट्राध्यक्षों के लिए, समय उलझनपूर्ण है। कहीं आगे सूखा से परेशानी हो। सू.-बु.-शु. ये तीनों मकरस्थ हैं अतः वर्षा की कमी से अनाजों के भाव तेज होंगे—"एकराशिंगता ह्येते सौम्य-शुक्र दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥"

कुण्डली सूर्योदये

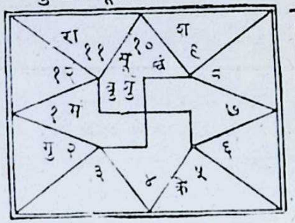

माघ कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ५५।३७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	०	९	१	९	८	१०	४
२४	३	१६	२	२	१०	१९	१२	१२
२८	५४	५५	२१	५४	२४	१	७	७
४२	९	५५	१६	५३	३८	२४	१५	१५
६०	[illegible]	३५	११	३	७५	६	३	३
४८	४९	४	४६	३९	६	२	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
धनि. १	धनि. ४	भर. २	उ.षा. २	कृत्ति. २	श्रव. १	पू.षा. १	शत. २	मघा ४

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्ष के पूर्वार्ध में बाजार प्रायः मन्दे में रहेंगे। लगभग २९ जनवरी के बाद गुड़, खांड, घी, गेहूं, चना आदि सब अनाजों में तेजी का वातावरण बनेगा। रुई, चांदी में घटा-बढ़ी के बाद अन्त में परिणाम तेजी का ही रहता है। यह तेजी ५ फरवरी तक सामान्यतः चलेगी। ६ फरवरी को सोमवती अमावस का प्रभाव बाजारों पर मन्दी कारक ही रहेगा।

आकाश लक्षण—२२ से २९ जनवरी तक पंजाब, हि. प्र., हरयाणा, लंका में बिजली की गर्जना के साथ कहीं वर्षा होगी, एवं हि. प्र., जम्मू-कश्मीर में जबरदस्त हिमपात से उत्तरी भारत में जोरदार शीतलहर चलेगी। जनवरी ३१, फरवरी ५ को भी बादल चाल एवं बूंदा-बांदी होगी।

शकुन विचार—माघ कृष्ण तृतीया को बिना बरपे मेघ गरजें, तो गेहूं और जौ का स्टाक करें, आगे तेजी से लाभ मिलेगा। यदि माघ कृष्ण षष्ठी को आकाश साफ हो तो कपास के स्टाक से आगे लाभ मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

आगे लाभ मिलता है ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० माघ शुक्ल पक्ष २३ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डीगढ़ | उदय-कालिक | (७ से २० फरवरी सन् १९८९ ई. तक), उत्तरायन, शिशिर-वसन्त ऋतु

दि.मा. घ.प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. माघ	अं. फर.	श. माघ	मु. ज.ऊ.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	सू. उ. घं.	सू. उ. मि.	सू. अ. घं.	सू. अ. मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—शुक्र अस्त है । प्रातः बुध-शनि पूर्व में होंगे । सायं मंगल-गुरु याम्योत्तरासन्न होंगे ।
२६|४७	१	मं.	६	४८	ध.	६	४८	व.	१/५२	४६/०	ब.	६	४८	२६	७	१८	२९	कुम्भ	७	१४	५	५९	९	२४	३३	७	चन्द्र दर्शन मु. १५
बवम्	२	मं.	५८	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथि क्षय
२६|५२	३	बु.	५०	४५	श.	०/५४	३५/२२	शि.	४२	३०	तै.	२४	४५	२७	८	१९	र'	मी. ४०।५५	७	१४	६	०	९	२५	३३	५३	रज्जब मु. मास प्रारम्भ
२६|५६	४	गु.	४३	९	उ.भा.	४८	४४	सि.	३३	११	व.	१६	५७	२८	९	२०	२	मीन	७	१३	६	१	९	२६	३४	३६	भ. १९।५७ उ. ४३।९ या., तिल चतुर्थी, कुन्द चतुर्थी, वरद चतुर्थी
२७|०	५	शु.	३६	२०	रे.	४३	४९	सा.	२४	२६	ब.	९	४५	२९	१०	२१	३	मे. ४३।४९	७	१२	६	२	९	२७	३५	१८	पंचक समाप्त ४३।४९, श्री पंचमी, वसन्त पंचमी
२७|५	६	श.	३०	३०	अ.	३९	५४	शु.	१६	२८	कौ.	३	२५	३०	११	२२	४	मेष	७	११	६	३	९	२८	३५	५९	रथ सप्तमी (अगले अरुणोदय वाली)
२७|९	७	र.	२५	४८	भ.	३७	९	शु.	९	२३	व.	२५	४८	फा'	१२	२३	५	वृ. ५१।४८	७	१०	६	३	९	२९	३६	३९	भ. २५।४८ उ. ५४।७ या., सं. सूर्य कुम्भ में २३।७, मु. १५, A
२७|१३	८	चं.	२२	२५	कृ.	३५	४३	ब्र.	३/५८	१९/२१	ब.	२२	२५	२	१३	२४	६	वृष	७	९	६	४	१०	०	३७	१४	गुरु कृत्ति. ३ में १।२०, शनि पू.षा. २ में २८।५५, श्री भीष्माष्टमी
२७|१८	९	मं.	२०	२७	रो.	३५	४०	वै.	५४	२०	कौ.	२०	२७	३	१४	२५	७	वृष	७	९	६	५	१०	१	३७	५०	
२७|२२	१०	बु.	१९	४९	मृ.	३६	५४	वि.	५१	३५	ग.	१९	४९	४	१५	२६	८	मि. ६।१७	७	८	६	६	१०	२	३८	२४	भ. ५०।१० उ., शुक्र वार्द्धक्य प्रारम्भ ४८।००
२७|२७	११	गु.	२०	३१	आ.	३९	२६	प्री.	४९	४७	वि.	२०	३१	५	१६	२७	९	मिथुन	७	७	६	७	१०	३	३८	५५	भ. २०।३१ या., जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी, (देखें B
२७|३१	१२	शु.	२२	३२	पुन.	४३	११	आ.	४८	५५	बा.	२२	३२	६	१७	२८	१०	क. २७।१५	७	६	६	७	१०	४	३९	२६	शुक्र धनि. में १५।३२, प्रदोप व्रत
२७|३५	१३	श.	२५	४०	पु.	४७	५९	सौ.	४८	५२	तै.	२५	४०	७	१८	२९	११	कर्क	७	५	६	८	१०	५	३९	५५	सूर्य शत. में ५९।४०, बुध श्रवण में ४४।१५, C
२७|४०	१४	र.	२९	५२	आ.	५२	४६	शो.	४९	३६	व.	२९	५२	८	१९	३०	१२	सि. ५३।४६	७	४	६	९	१०	६	४०	२०	भ. २९।५२ उ.,
२७|४५	१५	चं.	३५	०	म.	६०	०	अ.	५१	१	वि.	२	२६	९	२०	फा'	१३	सिंह	७	३	६	१०	१०	७	४०	४६	भ. २।२६ या., शक फाल्गुन प्रा., खग्रास चन्द्र ग्रहण (चूड़ामणि D

शुक्र अस्त १८ फरवरी

A पुण्यकाल ७।७ बाद, महाजया सप्तमी, आरोग्य सप्तमी, B 'संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था', C सायन मीन में सूर्य ३९।५८, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, शुक्र पूर्व में अस्त ४८।००, वेंकटेश (प्लूटो) वक्री, D योग), श्री सत्यनारायण व्रत, माघ स्नान समाप्त, जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी

माघ शु. ८ चन्द्र, इष्ट ५५।५२

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	०	९	१	९	८	१०	४
१	१४	२१	५	३	१९	१६	११	११
३३	३०	२	४२	२४	१०	४२	४४	४४
४१	५५	४५	१०	१९	१२	३४	०	०
६०	[illegible]	३५	४७	४	७५	५	३	३
३७	२३	३१	२०	५६	३	३९	११	११
—	--	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३	२	३	३	३	३	२	२	४
धनि.	रोहि.	भर.	उ.षा.	कृत्ति.	श्रव.	पू.षा.	शत.	मघा

कुण्डली सूर्योदये

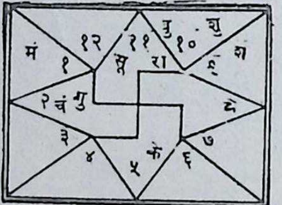

मोक्ष भविष्य—इस पक्ष में आगे मंगल एवं पीछे सूर्य है, अतः वर्षा की कमी रहेगी । खग्रास चन्द्र ग्रहण सिंह राशिस्थ चन्द्र के समय है, अतः आगामी समय प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए विशेष कष्ट प्रद है—"**सिंहे च ग्रहणे पीड़ा सर्वेषां वनवासिनाम् । नृपाणां नृप तुल्यानां मनुजानां धनक्षमयः ॥**" विकासशील देशों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा । इस पक्ष में धनिष्ठा नक्षत्र का शुक्रास्त देश में आन्तरिक अशान्ति करेगा । मिश्र, लंका, जापान, चीन एवं यावन राष्ट्रों में प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो ।

कुण्डली सूर्योदये

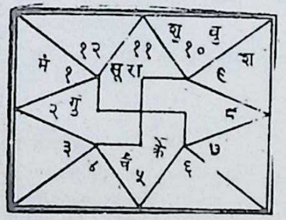

माघ शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५६।७

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	०	९	१	९	८	१०	४
८	१२	२५	१२	४	२७	१७	११	११
३७	२९	१२	१९	२	५५	२०	२२	२२
१८	९	२२	२५	३०	१८	५८	४४	४४
६०	[illegible]	३५	६७	६	७४	५	३	३
२४	१३	५१	१५	८	५९	१४	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
१	४	४	१	३	२	२	२	४
शत.	मघा	भर.	श्रव.	कृत्ति.	धनि.	पू.षा.	शत.	मघा

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्ष मध्य में घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली, राई में तेजी और रुई, पाट, अलसी, एरण्ड, गेहूं आदि अनाज एवं गुड़, खांड, शक्कर में कुछ मन्दे का रुख बने । पक्षान्त में सोना, चांदी, सूत, सण, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल तेज होंगे । सावधान—रुई एवं चीनी में जोरदार तेजी या मन्दी दो मास में चलेगी, विचार पूर्वक काम करें ।

आकाश लक्षण—७ से १५ फरवरी तक ऋतु परिवर्तन के लक्षण अनुभव होंगे । १६ फरवरी से पक्षान्त तक विशेषतः १८ फरवरी को बादल चाल किंवा खण्ड वृष्टि के योग हैं ।

शकुन विचार—यदि माघ की पूर्णमासी के दिन बादल हों तो अन्न के संग्रह से सातवें मास अच्छा लाभ रहे । यदि इस दिन आकाश साफ रहे एवं मेघ किंवा किसी प्रकार का गर्द गुबार न हो तो आगे आषाढ़ में प्रत्येक प्रकार का अनाज सस्ता रहेगा, वर्षा खूब होगी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४ (२१ फर. से ७ मार्च सन् १९८९ ई. तक), उ. अयन, वसन्त ऋतु

ग्रह दर्शन—प्रातः बृ.-श. पूर्व में तथा सायं मं.-गु. परस्पर आसन्न खमध्य से पश्चिम कपाल में नत दीखेंगे। शुक्र अस्त है।

दि. मा. घ. प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीखें प्र. फाल्गु.	अं. फर.	श. फाल्गु.	मु. रज्जब	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. / प.	चण्डीगढ़ मा.स्टैं.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२७|५०	१	मं.	४०	५२	म.	०	२६	सु.	५२	५५	बा.	७	५६	१०	२१	२	१४	सिंह	७	२	६	१०	१०	८	४१	९	
२७|५४	२	बु.	४७	१७	पू.फा.	७	३९	धृ.	५५	१३	तै.	१४	५	११	२२	३	१५	कं. २४।३५	७	१	६	११	१०	९	४१	३१	शुक्र कुम्भ में ३६।०
२७|५९	३	गु.	५३	५८	उ.फा.	१५	२०	शू.	५७	४२	व.	२०	३७	१२	२३	४	१६	कन्या	७	०	६	१२	१०	१०	४१	५२	भ. २०।३७ उ. ५३।५८ या., मंगल कृत्ति. में २२।४५
२८|३	४	शु.	६०	०	ह.	२३	७	गं.	६०	०	व.	२७	१६	१३	२४	५	१७	तु. ५६।५२	६	५९	६	१३	१०	११	४२	१०	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२८|७	४	श.	०	३५	चि.	२०	३८	गं.	०	६	बा.	०	३५	१४	२५	६	१८	तुला	६	५८	६	१३	१०	१२	४२	२८	
२८|११	५	र.	६	४१	स्वा.	३७	३२	वृ.	२	८	तै.	६	४१	१५	२६	७	१९	तुला	६	५६	६	१४	१०	१३	४२	४४	
२८|१६	६	चं.	११	५०	वि.	४३	१९	ध्रु.	३	३०	व.	११	५०	१६	२७	८	२०	वृ. २६।५२	६	५५	६	१५	१०	१४	४२	५९	भ. ११।५० उ. ४३।४४ या., शुक्र शत. में ५६।२५
२८|२१	७	मं.	१५	३७	अनु.	४७	३९	व्या.	३	५१	ब.	१५	३७	१७	२८	९	२१	वृश्चिक	६	५४	६	१६	१०	१५	४३	१२	मंगल वृष में ५५।५०
२८|२६	८	बु.	१७	४४	ज्ये.	५०	१४	ह.	३	०	कौ.	१७	४४	१८	मा'	१०	२२	ध. ५०।१४	६	५३	६	१६	१०	१६	४३	२४	बुध धनि. में ४८।१५, **मार्च प्रारम्भ**
२८|३०	९	गु.	१७	५४	मू.	५०	५१	व.	० ५९	४२ ४८	ग.	१७	५४	१९	२	११	२३	धनु	६	५२	६	१७	१०	१७	४३	३४	भ. ४६।५८ उ.,
२८|३५	१०	शु.	१६	२	पू.षा.	४९	३३	व्य.	५१	१५	वि.	१६	२	२०	३	१२	२४	धनु	६	५१	६	१८	१०	१८	४३	४२	भ. १६।२ या.
२८|३९	११	श.	१२	१५	उ.षा.	४६	२६	व.	४४	२७	बा.	१२	१५	२१	४	१३	२५	म. ३।४६	६	५०	६	१८	१०	१९	४३	५०	सूर्य पू.भा. में १६।७, विजया एकादशी व्रत (स.), श्री बाल A
२८|४३	१२	र.	६	४३	श्र.	४१	४३	प.	३६	१४	तै.	६	४३	२२	५	१४	२६	मकर	६	४८	६	१९	१०	२०	४३	५५	भ. ५९।३८ उ., प्रदोष व्रत
अवम्	१३	र.	५९	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय
२८|४८	१४	चं.	५१	२८	ध.	३५	४६	शि.	२६	५९	वि.	२५	३३	२३	६	१५	२७	कु. ८।४५	६	४७	६	२०	१०	२१	४३	५९	भ. २५।३३ या., पंचक प्रारम्भ ८।४५, **बुध कुम्भ में ३१।१०**, B
२८|५२	३०	मं.	४२	३७	शत.	२८	५८	सि.	१७	०	च.	१७	२	२४	७	१६	२८	कुम्भ	६	४६	६	२०	१०	२२	४८	०	**सोमवती अमावस्या**

A शङ्कराचार्य (श्री काञ्ची मठ) का जन्मोत्सव, **B श्री महा शिवरात्रि व्रत**

फाल्गु. कृ. ८ बुध, इष्ट ५६।३२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	१	९	१	१०	८	१०	४
१७	१	०	२३	५	९	१८	१०	१०
४०	२२	३६	३१	३	९	५	५४	५४
९	४	३५	१४	२७	५५	४४	७	७
६०	७११	३६	८२	७	७४	४	३	३
११	७	१३	३४	३२	५५	३८	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
शत. ४	मूल २	कृत्ति. २	धनि. २	कृत्ति. ३	शत. २	पू.षा. ३	शत. ३	मघा ४

कुण्डली सूर्योदये

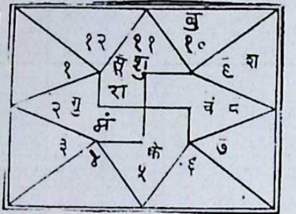

लोक भविष्य—कुंभस्थ शुक्र सुर्य बु. राहु कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनाते हैं। वृष राशि में मं. गु. का सम्बन्ध भी वर्षा का अवरोधक है। इस पक्ष में 'चतुर्ग्रही योग' पशुओं में रोगभय कारक है—"**चतुर्ग्रहाः घ्नन्ति चतुष्पदांश्च**" नाना प्रकार के रोगों से जन जीवन भी क्षुब्ध रहेगा। यान दुर्घटना में कहीं जन-धन हानि का समाचार मिलेगा। फाल्गुन कृ. प्रतिपदा को पू.फा. नक्षत्र का योग आगे सुभिक्ष कारक है—"**फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वा फाल्गुनि योगतः। सर्वदोषान्नि हत्येवं सुभिक्षं भुवि जायते॥**"

कुण्डली सूर्योदये

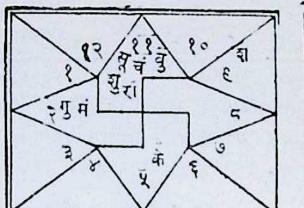

घाल्गु. कृ. ३० मं., इष्ट ५६।५०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१	१०	१	१०	८	१०	४
२३	२७	४	२	५	१६	१८	१०	१०
४०	२	१४	६	५०	३९	३२	३५	३५
५२	१८	२३	२७	५०	१७	२३	३	३
६०	८११	३६	९०	८	७४	४	३	३
२	४९	२५	१६	२४	५३	११	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	—
पू.भा. ३	पू.भा. ३	कृत्ति. ३	धनि. ३	कृत्ति. ३	शत. ३	पू.षा. २	शत. ३	मघा ४

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, चांदी, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, चावल में अस्थाई मन्दा आकर सहसा तेजी बनेगी, वायदा व्यापारी लाभ ले सकते हैं। २७ फरवरी को गेहूं, गुड़, खांड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी तेज। पक्षांत में अलसी, रुई में कुछ मन्दा आकर तेजी बनेगी।

आकाश लक्षण—२१ से २५ फरवरी तक कहीं बादल चाल सम्भव, लेकिन २६ फरवरी से ७ मार्च तक तापमान कुछ बढ़ने लगेगा, इसी मध्य २८ फरवरी एवं ७ मार्च के लगभग कहीं बूंदा-बांदी का योग है।

शकुन विचार—यदि फाल्गुन में बादल हों, परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षाकाल में अच्छी वर्षा हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाके १९१० फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५ | तारीखें | चन्द्र राशि | चण्डोगढ़ | उदय-कालिक | (८ से २२ मार्च सन् १९८९ ई. तक), उत्तरायन, वसन्त ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. मार्च	श. फाल्गु.	मु. रज.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	भा.स्टें.टा. सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२८	५७	१	बु.	३३	२४	पू.भा.	२१	४४	सा.	६ ५५	३३ ५२	कि.	८	१	२५	८	१७	२९	मी. ८।३२	६	४५	६	२१	१०	२३	४३	०	
२९	२	२	गु.	२४	१७	उ.भा.	१४	२९	शु.	४५	४०	कौ.	२४	१७	२६	९	१८	३०	मीन	६	४४	६	२२	१०	२४	४३	५८	चन्द्रदर्शन मु. ३०, जन्मदिन श्री रामकृष्ण परमहंस
२९	६	३	शु.	१५	४२	रे.	७	४१	ब्र.	३५	५६	ग.	१५	४२	२७	१०	१९	शा.	मे. ७।४१	६	४३	६	२३	१०	२५	४३	५३	भ. ४१।५१ उ., पंचक समाप्त ७।४३, बुध शत. में ५६।२५, शुक्र A
२९	१०	४	श.	८	१	अ.	१ ५६	४५ ४५	ऐं.	२७	३	वि.	८	१	२८	११	२०	२	मेष	६	४१	६	२३	१०	२६	४३	४६	भ. ८।१ या.
२९	१५	५	र.	१	३३	कृ.	५३	४४	वै.	१९	१७	बा.	१	३३	२९	१२	२१	३	वृ. ११। ०	६	४०	६	२४	१०	२७	४३	३८	
अवम्		६	र.	५६	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथि क्षय
२९	२०	७	चं.	५३	३२	रो.	५२	१७	वि.	१२	५३	ग.	२५	५	३०	१३	२२	४	वृष	६	३९	६	२४	१०	२८	४३	२७	भ. ५३।३२ उ., गुरु कृत्ति. ४ में ३६।१५
२९	२५	८	मं.	५२	१५	मृ.	५२	३७	प्री.	७	५४	वि.	२२	५३	चै.'	१४	२३	५	मि. २२।२७	६	३८	६	२५	१०	२९	४३	१३	भ. २२।५३ या., **सं. सूर्य मीन में १६।५०,** मु. ३०, पुण्यकाल B
२९	३०	९	बु.	५२	५२	आ.	५४	४७	आ.	४	२३	बा.	२२	३४	२	१५	२४	६	मिथुन	६	३६	६	२६	११	०	४२	५८	
२९	३५	१०	गु.	५५	१२	पुन.	५८	३७	सौ.	२	२०	तै.	२४	२	३	१६	२५	७	क. ४२।४०	६	३५	६	२६	११	१	४२	३९	
२९	४०	११	शु.	५८	५७	पु.	६०	०	शो.	१	३५	व.	२७	४	४	१७	२६	८	कर्क	६	३४	६	२७	११	२	४२	२०	भ. २७।५ उ. ५८।५७ या., सूर्य उ.भा. में ३७।५०, मंगल रोहि. C
२९	४६	१२	श.	६०	०	पु.	३	५१	अ.	१	५४	ब.	३१	२७	५	१८	२७	९	कर्क	६	३३	६	२८	११	३	४१	५८	शुक्र मीन में ३९।५०, राहु शत. १ में केतु मघा ३ में ५८।३८, D
२९	५१	१२	र.	३	५८	आ.	१०	११	सु.	३	८	बा.	३	५८	६	१९	२८	१०	सिं. १०।११	६	३१	६	२८	११	४	४१	३३	बुध पू.भा. में ६।२, प्रदोष व्रत
२९	५७	१३	चं.	९	४४	म.	१७	१४	धृ.	४	५८	तै.	९	४४	७	२०	२९	११	सिंह	६	३०	६	२९	११	५	४१	७	सायन मेष में सूर्य ३६।३२, महाविषुव दिन
३०	२	१४	मं.	१६	४	पू.फा.	२४	४८	शू.	७	१४	व.	१६	४	८	२१	३०	१२	कं. ४१।४४	६	२९	६	३०	११	६	४०	३९	भ. १६।१४ उ., ४९।२० या., शुक्र उ.भा. में २०।४२, बुध पूर्व में E
३०	७	१५	बु.	२२	३६	उ.फा.	३२	३२	गं.	९	४३	ब.	२२	३६	९	२२	चै.'	१३	कन्या	६	२८	६	३०	११	७	४०	७	शक चैत्र (१९११) प्रा., होली, होलाष्टक समाप्त, जन्म दिन F

ग्रह दर्शन—शुक्र अस्त है। २१ मार्च को बुध प्रातः पूर्व में अदृश्य हो जाएगा। इस समय शनि याम्योत्तरासन्न होगा। सायं मंगल-गुरु पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न दीखेंगे।

A पू.भा. में ३७।५२, शाबान मु. मास प्रारम्भ B ०।५० बाद, होलाष्टक प्रारम्भ C में २५।१२, आमलकी एकादशी व्रत (स्मार्त) D आमलकी एकादशी व्रत (वैष्णव), गोविन्द द्वादशी
E अस्त, श्री सत्यनारायण व्रत, होलिका दहन (देखें "संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था") F श्री चैतन्य महाप्रभु

फाल्गु. शु. ८ मंगल, इष्ट ५७।१०

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१	१०	१	१०	८	१०	४
०	७	८	१३	६	२५	१८	१०	१०
४०	३९	२९	३	५२	२२	५९	१२	१२
१३	३८	४७	२७	१९	५८	५६	४७	४७
५९	७७१	३६	९८	९	७४	३	३	३
४४	२४	३५	३६	१७	४३	३७	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ
पू.भा. ४	आर्द्रा १	कृत्ति. ४	शत. २	कृत्ति. ४	पू.भा. २	पू.षा. २	शत. २	मघा ४

कुण्डली सूर्योदये

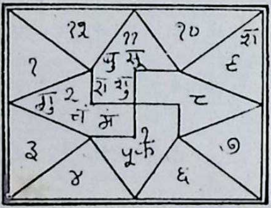

लोक भविष्य—मीन संक्रांति क्रूरवारी है, शुक्र भी मीनराशि में सूर्य के साथ आ जाता है, अतः इस पक्ष में शुभाशुभ दोनों प्रकार का फल होगा। **"मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न सन्देहो लोकाः सर्वे निरामयाः॥"** मंहगाई बनी रहे, लेकिन जनता में अमन, चैन एवं सुख समृद्धि रहेगी। इस पक्ष में रविवार को तिथि क्षयः किसी प्रान्त में विशेष रूप से अकाल की स्थिति को जन्म देगा।

कुण्डली सूर्योदये

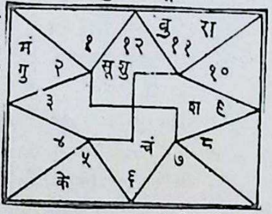

फाल्गु. शु. १५ बुध, इष्ट ५७।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१	१०	१	११	८	१०	४
८	१४	१३	२६	८	५	१९	९	९
३७	५६	२२	४६	९	२०	२६	४७	४७
१५	२८	५९	४६	५३	२९	२४	२१	२१
५९	७१०	३६	१०८	१०	७४	२	३	३
३०	२१	४५	३६	१२	३७	५५	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	—
उ.भा. २	हस्त २	रोहि. २	पू.भा. ३	कृत्ति. ४	उ.भा. १	पू.षा. २	शत. १	मघा ३

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्ष मध्य तक बाजारों में अनिश्चितता रहे एवं गुड़, रसकस, अनाज एवं तिल-तेल में सामान्यतः तेजी और मन्दी के रिएक्शन आएंगे। १४ मार्च से तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना में तेजी बनेगी। अनाजों में अच्छी तेजी के बाद मन्दा आएगा। १८ मार्च के लगभग चांदी, रुई एवं तिलहन में तेजी का उछाला आएगा।

आकाश लक्षण—८ से १३ मार्च तक तापमान बढ़ेगा, आकाश निर्मल रहेगा। १५ से २२ मार्च तक विशेषतः १७, १८ १९, २१ मार्च को कहीं बादल चाल रहेगी।

शकुन विचार—यदि फाल्गुन शुक्ल पूर्णमासी के दिन वर्षा हो वा मेघ गर्जे, तो फसल को रोली (काल अंगारी रोग) लगने से हानि हो, ऐसी स्थिति में अन्न संग्रह से ७वें मास में लाभ होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्री वि. सं. २०४५, शाक १९१० चैत्र कृष्ण पक्ष २६ (२३ मार्च से ६ अप्रै. सन् १९८९ ई. तक), उत्तरायण, वसन्त ऋतु

ग्रह दर्शन—शुक्र-बुध अस्त हैं। प्रातः शनि याम्योत्तरासन्न होगा। सायं मंगल-गुरु को पश्चिम कपाल में देखें।

वि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	तारीख प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. चैत्र	मु. शाबा.	चन्द्र राशि प्रवेश काल घ. प.	चण्डीगढ़ मा.स्टें.टा. सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	१२	१	गु.	२९	५	ह.	४०	१२	धृ.	१२	११	कौ.	२९	५	१०	२३	२	१४	कन्या	६	२७	६	३१	११	८	३९	३५	वसन्तारम्भ उत्सव, धूलि वन्धन, होला मेला श्री आनन्दपुर साहेब(पं.)
३०	१७	२	शु.	५५	२१	चि.	४७	३६	ध्रु.	१४	३२	तै.	२	१३	११	२४	३	१५	तु. १३।५४	६	२५	६	३२	११	९	३९	२	बुध मीन में ४३।५६
३०	२०	३	श.	४१	४	स्वा.	५४	२७	व्या.	१६	३३	व.	८	१२	१२	२५	४	१६	तुला	६	२४	६	३२	११	१०	३८	२४	भ. ८।१२ उ. ४१।४ या.,
३०	२४	४	र.	४६	४	वि.	६०	०	ह	१८	५	व.	१३	३४	१३	२६	५	१७	वृ. ४४। ०	६	२३	६	३३	११	११	३७	४७	बुध उ.भा. में ३१।४०, श्री गणेश चतुर्थी व्रत
३०	२८	५	चं.	५०	४	वि.	०	३८	व.	१८	५८	कौ.	१८	४	१४	२७	६	१८	वृश्चिक	६	२२	६	३३	११	१२	३७	८	
३०	३२	६	मं.	५२	४६	अनु.	५	४४	सि.	१०	५९	ग.	२१	२५	१५	२८	७	१९	वृश्चिक	६	२०	६	३४	११	१३	३६	२५	भ. ५२।४६ उ.,
३०	३६	७	बु.	५३	५९	ज्ये.	९	३२	व्य.	१७	५५	वि.	२३	२२	१६	२९	८	२०	ध. ९।३२	६	१९	६	३५	११	१४	३५	४३	भ. २३।२२ या.
३०	४०	८	गु.	५३	२९	मू.	११	५०	व.	१५	३८	बा.	२३	४४	१७	३०	९	२१	धनु	६	१८	६	३५	११	१५	३४	५८	मेला शीतला माता (कुराली, पंजाव)
३०	४६	९	शु.	५१	१२	पू.षा.	१२	२६	प.	११	५९	तै.	२२	२०	१८	३१	१०	२२	म. २७।१०	६	१७	६	३६	११	१६	३४	११	सूर्य रेवती में ५।५२
३०	५०	१०	श.	४७	९	उ.षा.	११	१७	शि.	६	५६	व.	१९	१०	१९	अ'	११	२३	मकर	६	१५	६	३७	११	१७	३३	२२	भ. १९।१० उ. ४७।९ या., शुक्र रेवती में ४।५३, अप्रैल प्रारम्भ
३०	५५	११	र.	४१	२३	श्र.	८	२४	सि.	०/५२	२७/३०	व.	१४	१६	२०	२	१२	२४	कु. ३६। ९	६	१४	६	३७	११	१८	३२	३२	पंचक प्रारम्भ ३६।९, बुध रेवती में २२।३०, गुरु रोहि. १ में A
३१	०	१२	चं.	३४	११	ध.	३/५७	५४/४५	शु.	४३	३८	कौ.	७	४७	२१	३	१३	२५	कुम्भ	६	१३	६	३८	११	१९	३१	४०	सोम प्रदोष व्रत
३१	६	१३	मं.	२५	५१	पू.भा.	५१	१६	शु.	३३	४८	ग.	०	३१	२२	४	१४	२६	मी. ३७।५५	६	१२	६	३८	११	२०	३०	४६	भ. २५।५१ उ. ५१।१८ या.
३१	१२	१४	बु.	१६	४४	उ.भा.	४३	५२	ब्र.	२३	२१	श.	१६	४४	२३	५	१५	२७	मीन	६	११	६	३९	११	२१	२९	४९	मेला पिहोवा(कुरुक्षेत्र)
३१	१५	३०	गु.	७	१४	रे.	३६	२२	ऐं.	१२	३९	ना.	७	१४	२४	६	१६	२८	मे. ३६।२२	६	९	६	४०	११	२२	२८	५१	पंचक समाप्त ३६।३२, शनि पू.षा. ३ में ४२।७, चान्द्र सम्वत्सर B

A १७।२, पाप मोचनी एकादशी व्रत (स.) B पूर्ण, नव सम्वत्सर (वि. सं. २०४६) प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, तैलाभ्यङ्ग

चैत्र कृ. ८ गुरु, इष्ट ५८।०

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	११	१	११	८	१०	४
१६	२३	१८	११	९	१५	१९	९	९
३२	२७	१७	५१	३४	१७	४७	२१	२१
१६	५९	२१	५३	२२	७	१०	५४	५४
५९	८१०	३६	११८	११	७४	२	३	३
१४	३१	५२	५२	०	३०	११	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
उ.भा. ४	पू.षा. ४	रोहि. ३	उ.भा. ३	कृत्ति. ४	उ.भा. ४	पू.षा. २	शत. १	मघा ३

कुण्डली सूर्योदये

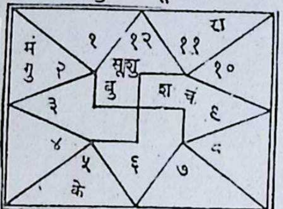

लोक भविष्य—सू., बु., शु. तीनों रेवती नक्षत्र में हैं तथा सू., बु., शु., चं. मीनस्थ हैं—"एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेनवा॥" यावन राष्ट्रों में कहीं जन-संहार से आशान्ति व्याप्त हो। कहीं प्राकृतिक प्रकोप, तूफान, दुर्भिक्ष आदि से भी हानि के समाचार मिलेंगे। ३० मार्च से वर्षान्त तक बुध अतिचारी रहेगा—किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा, कहीं राजनैतिक अस्थिरता एवं मन्त्रिमंडल में विशेष परिवर्तन होंगे।

कुण्डली सूर्योदये

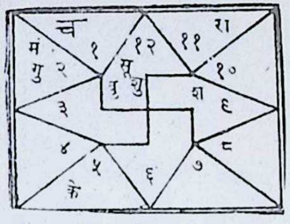

चैत्र कृ. ३० गुरु, इष्ट ५८।१२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	१	११	१	११	८	१०	४
२३	५	२२	२६	१०	२३	२०	८	८
२६	३४	३५	५	५३	५८	०	५९	५९
१७	१८	४०	४६	१६	२३	२६	३९	३९
५९	८०२	३६	१२५	११	७४	१	३	३
०	२३	५६	१	३६	२४	३१	११	११
—	—	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
—	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ
रेव. ३	अश्वि. २	रोहि. ४	रेव. ३	रोहि. १	रेव. ३	पू.षा. ३	शत. १	मघा ३

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, गुड़, खांड, शक्कर, बिनौला एवं दालवाना में अच्छी तेजी एवं मन्दी बनेगी। पक्ष मध्य में अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसन, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल तेज होंगे, परन्तु शीघ्र ही इन चीजों में मन्दा आ सकता है। लाल चीजों में प्रायः तेजी का रुख रहेगा। पक्षान्त से कपास, जीरा, सरसों, जौ, ज्वार में आगे तेजी से लाभ मिलेगा।

आकाश लक्षण—मार्च २४, अप्रैल १, २, को कुछ वादल चाल रहे। इस पक्ष में गर्मी का प्रकोप उत्तरोत्तर बढ़ेगा।

शकुन विचार—यदि चैत्र कृ. सप्तमी को आकाश मेघाच्छन्न रहे, तो गुड़, खांड, गेहूं, मसरी व सोना में तेजी आती है। चन्द्रमौलि-शंकर चरण, बार-बार शिर नाय। संवत् यह पूरण कियो, गिरा गणेश मनाय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

भा.स्टैं.टा. में दिये गए तिथि, नक्षत्र आदि को समझाने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी-पलों में दिये गये तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अतः वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाय तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किये जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा.स्टैं.टा. में तिथि, नक्षत्रों, योगों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र, राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हें समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक हैं, इसे समझ लेना चाहिए—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात् दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमशः २५, २६, २७, २८, २९, ३० एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया है। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ हो लिखा गया हैं। नीचे दिये गये उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा।

(१) २३ जनवरी १९८८ ई. शनिवार को पू.भा. के आगे ९ घं. १ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि पू.भा. नक्षत्र इस दिन प्रातः ९ बजकर १ मिनट तक रहेगा।

(२) २२ जनवरी १९८८ ई. शुक्रवार को वरीयान् योग के आगे १४ घं. ३१ मि. लिखा है। इसका अभिप्राय यह है, कि इस दिन वरीयान् योग दिन के २ बजकर ३१ मिनट पर समाप्त होगा।

(३) १ जनवरी सन् १९८८ ई. शुक्रवार को पौष शुक्ल त्रयोदशी के आगे २८ घं. ० मि. लिखा है। इसका अभिप्राय है, कि १ जनवरी की समाप्ति (रात्रि के १२ बजे के बाद) २ जनवरी की रात के ४ बजे त्रयोदशी समाप्त होगी। ध्यान रहे; यद्यपि यहाँ त्रयोदशी की समाप्ति के समय अंग्रेजी तारीख २ जनवरी ही होगी, एवं अंग्रेजी पद्धति के अनुसार वार भी शनि ही होगा, परन्तु भारतीय ज्योतिष के अनुसार उस समय वार शुक्र ही माना जाएगा। क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही बदलता है। यही कारण है;—इस तिथि के आगे शुक्रवार ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों हम यह कह सकते हैं कि—यहां पंचांग में तिथि आदि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों वहां घण्टों में से २४ घटा कर शेष घण्टा-मिनटों को अग्रिम तारीखों का टाईम समझें। स्पष्टीकरण के लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिये—

२२ जनवरी शुक्रवार को मीन राशि में चन्द्र का प्रवेशकाल २७ घं. ३१ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि—२३ जनवरी को सूर्योदय से पहले ३ बजकर ३१ मि. पर चन्द्रमा मीन राशि में प्रविष्ट होगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय शुक्रवार ही होगा।

नोट—जिस तिथि या नक्षत्र के आगे टाईम (घं. मि.) नहीं लिखा है अर्थात् (— — —) इस तरह का चिन्ह लगाया है, उस तिथि, नक्षत्र की वृद्धि समझनी चाहिए। अर्थात्—वह तिथि या नक्षत्र पूरे दिन (सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक) रहेगा।

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४४ वि., सन् १९८८ ई.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि B में केतु उ.फा. २ में २३।१२
पौष शुदी पक्ष (सं. २०४४ वि.)									
१ जन.	१३	शु.	२८। ०	रो.	२८।३४	शु.	२१।५६	वृष	शनि उदित A २९।१९
२	१४	श.	२९।२४	मृ.	३०।२९	शु.	२१।४७	मि. १७।३२	भ. २९।२४ उ., गुरु रेव. ४ में A
३	१५	र.	३१।११	आ.	— —	ब्र.	२१।५५	मिथुन	भ. १८।१८ या., राहु पू.भा. ४B
माघ कृष्ण पक्ष (सं. २०४४ वि.)									
४	१	चं.	— —	आ.	८।४५	ऐं.	२२।१७	क. २८।३९	मंगल अनु. में ९।४९, बुध C
५	१	मं.	९।१६	पुन.	११।१८	वै.	२२।५४	कर्क	
६	२	बु.	११।४१	पु.	१४।१०	वि.	२३।४४	कर्क	भ. २५।० उ., बु. म. में १५।१
७	३	गु.	१४।१९	आश्ले.	१७।१४	प्री.	२४।४०	सि. १७।१४	भ. १४।१९ या.
८	४	शु.	१७। ३	म.	२०।२२	आ.	२५।३९	सिंह	C उ.षा. में १४।१९, शुक्र D
९	५	श.	१९।४२	पू.फा.	२३।२४	सौ.	२६।३१	क. ३०। ५	D धनि. में ३।१९
१०	६	र.	२२। ३	उ.फा.	२६। ८	शो.	२७। ७	कन्या	भ. २२।३ उ., शुक्र कुम्भ में E
११	७	चं.	२३।५३	ह.	२८।२०	अ.	२७।१८	कन्या	भ. १०।५८ या., सूर्य उ.षा. F
१२	८	मं.	२५। १	चि.	२९।५०	सु.	२६।५७	तु. १७। ५	बुध श्रव. में १६।२८
१३	९	बु.	२५।१७	स्वा.	३०।२९	धृ.	२५।५५	तुला	E १७।३३ F में १४।५१
१४	१०	गु.	२४।४०	वि.	३०।१७	शू.	२४।१२	वृ. २४।२०	भ. १२।५८ उ. २४।४० या., G
१५	११	शु.	२३।१०	अनु.	२९। ५	गं.	२१।४८	वृश्चिक	शुक्र शत. में २८।२४
१६	१२	श.	२०।५३	ज्ये.	२७।२७	वृ.	१८।४६	ध. २७।२७	G सं. सूर्य मकर में २१।२२, H
१७	१३	र.	१७।५८	मू.	२५। ५	ध्रु.	१५।१२	धनु	भ. १७।५८ उ. २८।१६ या.
१८	१४	चं.	१४।३५	पू.षा.	२२।१९	व्या.	{११।१४ ३१।१}	म. २७।३४	H शनि मूल २ में २२।४७, I
१९	३०	मं.	{१०।५५ ३१।८}	उ.षा.	१९।२०	व.	२६।४९	मकर	I बुध पश्चिम में उदित
माघ शुक्ल पक्ष (सं. २०४४ वि.)									
२० जन.	२	बु.	२७।२९	श्रव.	१६।२०	सि.	२२।२५	कुं. २६।५५	बुध धनि. मे २६।२८, सूर्य J
२१	३	गु.	२४। ४	ध.	१३।३०	व्य.	२८।१९	कुम्भ	सूर्य अभिजित् में १०।२८
२२	४	शु.	२१। ४	श.	११। १	व.	१४।३१	मी. २७।३१	भ. १०।३४ उ., २१।४ या.
२३	५	श.	१८।३७	पू.भा.	९। १	प.	११। ८	मीन	J सायन कुम्भ में २६।२, K
२४	६	र.	१६।४९	उ.भा.	{७।३७ ३०।५२}	शि.	{८।१५ २९।५४}	मे. ३०।५२	सूर्य श्रव. में १७।५, मंग. ज्ये. L L में १०।४, पंचक स. ३०।५२
२५	७	चं.	१५।४१	अ.	३०।४८	सा.	२८।३०	मेष	भ. १५।४१ उ. २७।२८ या., M
२६	८	मं.	१५।१५	भ.	— —	शु.	२६।५०	मेष	शुक्र पू.भा. मे २७।५०
२७	९	बु.	१५।२९	भ.	७।२३	शु.	२६। २	वृ. १३।४०	K पञ्चक प्रा. २६।५५
२८	१०	गु.	१६।१८	कृ.	८।३४	ब्र.	२५।४१	वृष	भ. २८।५८ उ., P १७।४०
२९	११	शु.	१७।३८	रो.	१०।१७	ऐं.	२५।४२	मि. २३।२१	भ. १७।३८ या.
३०	१२	श.	१९।२३	मृ.	१२।२५	वै.	२५।५९	मिथुन	M बुध कुम्भ में २८।५६, सूर्य N
३१	१३	र.	२१।२८	आ.	१४।५२	वि.	२६।३१	मिथुन	N अभिजित् से निवृत्त १४।४
१ फर.	१४	चं.	२३।४९	पुन.	१७।३७	प्री.	२७।१४	क. १०।५६	भ. २३।४९ उ.,
२	१५	मं.	२६।२०	पु.	२०।३२	आ.	२८। ५	कर्क	भ. १३।५ या., गुरु अश्वि. १ O O मेष में २२।५९, बुध वक्री P

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४४ वि., सन् १९८८ ई.)

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (सं. २०४४ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
३फर.	१	बु.	२८।५९	आश्ले.	२३।३४	सौ.	२९। ०	सिं. २३।२४	A पश्चिम में अस्त
४	२	गु.	— —	म.	२६।४०	शो.	२९।५७	सिंह	शुक्र मीन में ११।२४, बुध A
५	२	शु.	७।३८	पू.फा.	२९।४०	अ.	३०।४९	सिंह	भ. २०।५४ उ.,
६	३	श.	१०।११	उ.फा.	— –	सु.	— —	कं. १२।२१	भ. १०।११ या., सूर्य धनि. B
७	४	र.	१२।३०	उ.फा.	८।२८	सु.	७।३१	कन्या	B में २०।१७, शुक्र उ.भा. C
८	५	चं.	१४।२५	ह.	१०।५६	धृ.	७।५८	तु. २३।५४	C में ३०।२४
९	६	मं.	१५।४७	चि.	१२।५२	शू.	८। १	तुला	भ. १५।४७ उ. २८।८ या., D
१०	७	बु.	१६।२८	स्वा.	१४।११	गं.	{ ७।३५ ३०।३४	तुला	D वक्री बुध मकर में १४।४९
११	८	गु.	१६।२१	वि.	१४।४४	ध्रु.	२८।४५	वृ. ८।३६	F मूल धनु में ७।२०,
१२	९	शु.	१५।२६	अनु.	१४।३०	व्या.	२६।३९	वृश्चिक	भ. २६।३५ उ.,
१३	१०	श.	१३।४४	ज्ये.	१३।२९	ह.	२३।४६	ध. १३।२९	भ. १३।४४ या., सं. सूर्य E
१४	११	र.	११।१९	मू.	११।४७	व.	२०।२१	धनु	E कुम्भ में १०।२१, मंगल F
१५	१२	चं.	{ ८।१८ २८।४६	पू.षा.	{ ९।२९ ३०।४६	सि.	१६।३१	म. १४।४८	भ. २८।४६ उ., व. बुध श्रव. G G में १२।१९
१६	१४	मं	२५।१०	श्र.	२७।४९	व्य.	१२।२३	मकर	भ. १४।५८ या., प्लूटो वक्री
१७	३०	बु.	२१।२२	ध.	२४।४६	व.	{ ८। ५ २७।५२	कुं. १४।१८	बुध पूर्व में उदित, पंचक H H प्रारम्भ १४।१८

चैत्र कृष्ण पक्ष (सं. २०४४ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
४मार्च	१	शु	२३।४९	पू.फा.	११।४४	धृ.	११।२२	क. १८।२४	सूर्य पू.भा. में ७।४, बुध धनि. A
५	२	श.	२५।५१	उ.फा.	१४।२३	शू.	११।५९	कन्या	A में १४।४५
६	३	र.	२७।३०	ह.	१६।४२	गं.	१२।२१	तु. २९।४०	भ. १४।४० उ. २७।३० या., B
७	४	चं.	२८।४२	चि.	१८।३८	वृ.	१२।२४	तुला	B राहु पू.भा. ३ कुम्भ में, केतु C
८	५	मं.	२९।२३	स्वा.	२०। ६	ध्रु.	१२। ६	तुला	C उ.फा. १ सिंह में २०४४
	६	बु.	२९।२८	वि.	२१। ०	व्या.	११।२४	वृ. १४।४६	भ. २९।२८ उ., D में १३।३२
९	७	गु.	२८।५७	अनु.	२१।२०	ह.	१०।१३	वृश्चिक	भ. २७।१२ या., गुरु अश्वि. ३ D
१० ११	८	शु.	२७।४८	ज्ये.	२१। ३	व.	{ ८।३४ ३०।२५	ध. २१। ३	बुध कुम्भ में १०।३६
१२	९	श.	२६। २	मू.	२०। ९	व्य.	२७।३८	धनु	शुक्र भर. में २३।२६
१३	१०	र.	२३।४३	पू.षा.	१८।४०	व.	२४।४१	म. २४।११	भ. १२।५२ उ. २३।४३ या.
१४	११	चं.	२०।५५	उ.षा.	१६।४३	प.	२१।१३	मकर	सं. सूर्य मीन में ७।१३
१५	१२	मं.	१७।४५	श्रव.	१४।२२	शि.	१७।२७	कुं. २५। ४	पञ्चक प्रा. २५।४
१६	१३	बु.	१४।२३	ध.	११।४७	सि.	१३।३०	कुम्भ	भ. १४।२३ उ. २४।३९ या., E
१७	१४	गु.	१०।५५	श.	{ ९। ५ ३०।२७	सा.	{ ९।२९ २९।३१	मी. २५। ७	सूर्य उ.भा. में १५।३२ E बुध शत. में २२।८
१८	३०	शु.	{ ७।३१ २८।२०	उ.भा.	२८। ४	शु.	२५।४८	मीन	

फाल्गुन शुक्ल पक्ष (सं. २०४४ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१८फर.	१	गु.	१७।४०	श.	२१।५१	शि.	२३।३३	कुम्भ	शुक्र रेव. में १३।१३, शनि मू. ३ I
१९	२	शु.	१४।१३	पू.भा.	१९।१४	सि.	१९।३५	मी. १३।५३	सूर्य शत. में २४।४६, सूर्य J
२०	३	श.	११।११	उ.भा.	१७। ४	सा.	१६। ०	मीन	भ. २१।५६ उ.,
२१	४	र.	{ ८।४२ ३०।५४	रे.	१५।२९	शु.	१२।५४	मे. १५।२९	भ. ८।४२ या., पंचक स. १५।२९ I में १३।५२
२२	६	चं.	२९।५१	अ.	१४।३६	शु.	१०।२१	मेष	गुरु अश्वि. २ में २०।२
२३	७	मं.	२१।३५	भ.	१४।२८	ब्र.	८।२४	वृ. २०।३७	भ. २९।३५ उ., बु. मार्गी १६।२३
२४	८	बु.	३०। ५	कृ.	१५। ६	ऐं.	{ ७। ४ ३०।२१	वृष	भ. १७।५० या.
२५	९	गु.	— —	रो.	१६।२७	वि.	३०। ९	मि. २९।२६	यूरेनस मूल ३ में
२६	९	शु.	७।१७	मृ.	१८।२५	प्री.	३०।२२	मिथुन	J सायन मीन में १६।१४
२७	१०	श.	९। ३	आ.	२०।५३	आ.	— —	मिथुन	भ. २२।९ उ.,
२८	११	र.	११।१६	पुन.	२३।४३	आ.	६।५७	क. १७। ०	भ. ११।१६ या.
२९	१२	चं.	१३।४५	पु.	२६।४३	सौ.	७।४६	कर्क	शुक्र अश्वि. मेष में २५।५९
१मार्च	१३	मं.	१६।२२	आश्ले.	२९।४९	शो.	८।४२	सिं. २९।४९	
२	१४	बु.	१९। ०	म.	— —	अ.	९।४०	सिंह	भ. १९।० उ.,
३	१५	गु.	२१।३१	म.	८।५१	सु.	१०।३५	सिंह	भ. ८।१६ या., मंगल पू.षा. K K में २६।२२

चैत्र शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१९	२	श.	२५।३४	रे.	२६। १	ब्र.	२२।१४	मे. २६। १	पंचक समाप्त २६।१
२०	३	र.	२३।१९	अ.	२४।३०	ऐं.	१९। ९	मेष	सायन मेष में सूर्य १५।१७
२१	४	चं.	२१।४२	भ.	२३।३९	वै.	१६।३५	वृ. २९।३७	भ. १०।३० उ. २१।४३ या.
२२	५	मं.	२०।५२	कृ.	२३।३३	वि.	१४।३७	वृष	F ४ में २०।११, शुक्र कृत्ति. G
२३	६	बु.	२०।४८	रो.	२४।१३	प्री.	१३।१६	वृष	मंगल उ.षा. में २०।२८
२४	७	गु.	२१।३३	मृ.	२५।४०	आ.	१२।३२	मि. १२।५६	भ. २१।३३ उ., G में ९।५०
२५	८	शु.	२३। १	आ.	२७।४७	सौ.	१२।२४	मिथुन	भ. १०।१७ या., गुरु अश्वि. F
२६	९	श.	२५। ३	पुन.	— —	शो.	१२।४५	क. २३।४५	बुध पू.भा. में ६।४७
२७	१०	र.	२७।२९	पुन.	६।२५	अ.	१३।२८	कर्क	I शुक्र वृष में १५।२२
२८	११	चं.	३०। ७	पु.	९।२५	सु.	१४।२५	कर्क	भ. १६।४८ उ. ३०।७ या., H
२९	१२	मं.	— —	आश्ले.	१२।३२	धृ.	१५।२७	सिं. १२।३२	H मंगल मकर में १९।४, I
३०	१२	बु.	८।४३	म.	१५।३५	शू.	१६।२४	सिंह	सूर्य रेव. में २६।१९
३१	१३	गु.	११। ८	पू.फा.	१८।२५	गं.	१७।१२	क. २५। ३	
१अप्रै.	१४	शु.	१३।१२	उ.फा.	२०।५५	वृ.	१७।४३	कन्या	भ. १३।१२ उ. २६।२ या., J
२	१५	श.	१४।५२	ह.	२२।५९	ध्रु.	१७।५५	कन्या	J बुध मीन में ११।४१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८८ ई.)

वैशाख कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
३ अप्रै.	१	र.	१६। ४	चि.	२४।३८	व्या.	१७।४६	तु. ११।४८	बुध उ.भा. में १०।३४
४	२	चं.	१६।४८	स्वा.	२५।४८	ह.	१७।१५	तुला	भ. २८।५५ उ., A पूर्व में अस्त
५	३	मं.	१७। ३	वि.	२६।३२	व.	१६।२२	वृ. २०।२०	भ. १७।३ या., B वक्री ३०।३
६	४	बु.	१६।५२	अनु.	२६।४९	सि.	१५। ९	वृश्चिक	C ९।२७, मंगल श्रव. में १५।४६
७	५	गु.	१६।१४	ज्ये.	२६।४१	व्य.	१३।३४	ध. २६।४१	शुक्र रोहि. में १८।३४, बुध A
८	६	शु.	१५।११	मू.	२६। ९	व.	११।३९	धनु	भ. ११।११ उ. २६।२७ या.,
९	७	श.	१३।४४	पू.षा.	२५।१४	प.	९।२६	धनु	गुरु भर. १ में ८।१५
१०	८	र.	११।५४	उ.षा.	२३।५७	शि.	६।५४ २८। ५	म. ६।५४	बुध रेव. में १८।३४, शनि B
११	९	चं.	९।४४	श्र.	२२।२२	सा.	२५। १	मकर	भ. २०।३० उ.,
१२	१०	मं.	७।१७ २९। ४	ध.	२०।३२	शु.	२१।४५	कुं. ९।२७	भ. ७।१७ या., पंचक प्रा. C
१३	१२	बु.	२५।४६	श.	१८।३१	शु.	१८।२०	कुम्भ	सं. सूर्य अश्वि. मेष में १५।४२
१४	१३	गु.	२२।५४	पू.भा.	१६।२५	ब्र.	१४।५२	मी. १०।५६	भ. २२।५४ उ.,
१५	१४	शु.	२०। ७	उ.भा.	१४।२२	ऐं.	११।२५	मीन	भ. ९।३० या.
१६	३०	श.	१७।३१	रे.	१२।२९	वै.	८। ६ २८।५८	मे. १२।२९	पंचक समाप्त १२।२९

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२ मई	१	चं.	२८।५५	स्वा.	८।४३	व्य.	२३। ५	वृ. २७। ०	मंगल धनि. में १५।५२, शुक्र A
३	२	मं.	२८। ८	वि.	९। २	व.	२१।३०	वृश्चिक	A मिथुन में १५।५५, बुध B
४	३	बु.	२६।५९	अनु.	८।५४	प.	१९।३६	वृश्चिक	भ. १५।३३ उ. २६।५९ या.
५	४	गु.	२५।३२	ज्ये.	८।२४	शि.	१७।२६	ध. ८।२४	B पश्चिम में उदित
६	५	शु.	२३।४९	मू.	७।३७	सि.	१५। २	धनु	बुध रोहि. में २६।२५
७	६	श.	२१।५६	पू.षा.	६।३६ २९।२६	सा.	१२।२९	म. १२।१८	भ. २१।५६ उ., गुरु भर. ३ C
									D २ केतु पू.फा. ४ में १८।२९
८	७	र.	१९।५६	श्रव.	२८। ९	शु.	९।४९	मकर	भ. ८।५६ या., राहु पू.भा. D
९	८	चं.	१७।४९	ध.	२६।४६	शु.	७ । ४ २८।१४	कुं. १५।२७	पञ्चक प्रा. १५।२७
									F सूर्य वृष में १२।३४
१०	९	मं.	१५।३८	श.	२५।२१	ऐं.	२५।२२	कुम्भ	भ. २६।३१ उ., सूर्य कृत्ति. में E
११	१०	बु.	१३।२५	पू.भा.	२३।५४	वै.	२२।२९	मी. १८।१६	भ. १३।२५ या. C में १०।१०
१२	११	गु.	११।१२	उ.भा.	२२।२८	वि.	१९।३६	मीन	मंगल कुम्भ में १९।४०
१३	१२	शु.	९। १	रे.	२१। ८	प्री.	१६।४८	मे. २१। ८	पंचक समाप्त २१।८
१४	१३	श.	७। ० २९।१६	अ.	१९।५९	आ.	१४। ८	मेष	भ. ७।० उ. १८।८ या., सं. F
									बुध मृग. में २७।५३ E २५।४४
१५	३०	र.	२७।४२	भ.	१९। ६	सौ.	११।४०	वृ. २४।५९	

वैशाख शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१७	१	र.	१५।१६	अ.	१०।५४	प्री.	२६।१६	मेष	बुध अश्वि. मेष में ११।३४
१८	२	चं.	१३।३०	भ.	९।४७	आ.	२३।५८	वृ. १५।३९	D में सूर्य २३।२३
१९	३	मं.	१२।२१	कृ.	९।१५	सौ.	२२।११	वृष	भ. २४।७ उ., सायन वृष D
२०	४	बु.	११।५३	रो.	९।२३	शो.	२१। ०	मि. २१।५०	भ. ११।५३ या.
२१	५	गु.	१२।१२	मृ.	१०।१७	अ.	२०।२५	मिथुन	E बुध भर. में १९।१३, गुरु F
२२	६	शु.	१३।१६	आ.	११।५४	सु.	२०।२३	मिथुन	शुक्र मृग. में २६।१६
२३	७	श.	१४।५९	पुन.	१४।१०	धृ.	२०।५१	क. ७।३६	भ. १४।५९ उ. २८।७ या., E
२४	८	र.	१७।१४	पु.	१६।५६	शू.	२१।४१	कर्क	F भर. २ में १०।३८ गुरु G
२५	९	चं.	१९।४५	आश्ले.	१९।५९	गं.	२२।४१	सिं. १९।५९	G अस्त १५।२७
२६	१०	मं.	२२।१९	म.	२३। ४	वृ.	२३।४२	सिंह	I १८।२७
२७	११	बु.	२४।४२	पू.फा.	२५।५८	ध्रु.	२४।३५	सिंह	भ. ११।३० उ. २४।४२ या., H
२८	१२	गु.	२६।३९	उ.फा.	२८।२८	व्या.	२५। ८	क. ८।३४	H सूर्य भरणी में ७।२८
२९	१३	शु.	२८। ६	ह.	— —	ह.	२५।१८	कन्या	बुध कृत्ति. २६।५१
३०	१४	श.	२८।५६	ह.	६।२७	व.	२५। १	तु. १९। ९	भ. २८।५६ उ.,
१ मई	१५	र.	२९।१२	चि.	७।५२	सि.	२४।१६	तुला	भ. १७।४ या., बुध वृष में I

प्र. (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१६	१	चं.	२६।४०	कृ.	१८।३७	शो.	९।३०	वृष	G गुरु उदित २४।४४
१७	२	मं.	२६।११	रो.	१८।४०	अ.	७।४३	वृष	H मिथुन में सूर्य २५।३६
१८	३	बु.	२६।१९	मृ.	१९।१८	सु.	६।२३	मि. ६।५८	I वक्री ८।१०, गुरु बाल्य J
१९	४	गु.	२७। ९	आ.	२०।३५	धृ.	५।३४ २९।१७	मिथुन	भ. १४।४४ उ. २७।९ या., G
									J समाप्त २४।४३
२०	५	शु.	२८।३८	पुन.	२२।३१	गं.	— —	क. १६। १	शुक्र आर्द्रा में १५।४३, सायन H
२१	६	श.	— —	पु.	२५। १	गं.	५।३१	कर्क	गुरु भर. ४ में ११।३३
२२	६	र.	६।३९	आश्ले.	२७।५६	वृ.	६। ८	सिं. २७।५६	मंगल शत. में २७।३८, शुक्र I
२३	७	चं.	९। ४	म.	— —	ध्रु.	७। ५	सिंह	भ. ९।४ उ., २२।२० या., K
२४	८	मं.	११।३६	म.	७। १	व्या.	८। ८	सिंह	सूर्य रोहि. में २१।५०, वक्री L
२५	९	बु.	१४। १	पू.फा.	१०। १	ह.	९। ७	क. १६।४२	K बुध मिथुन में ५।५४
२६	१०	गु.	१६। ३	उ.फा.	१२।४२	व.	९।५१	कन्या	भ. २८।४६ उ.,
२७	११	शु.	१७।३०	ह.	१४।५१	सि.	१०।१०	तु. २७।३५	भ. १७।३० या.
२८	१२	श.	१८।१६	चि.	१६।१९	व्य.	९।५८	तुला	L शुक्र मृग. में २१।१३
२९	१३	र.	१८।१९	स्वा.	१७। ६	व.	९।१२	तुला	
३०	१४	चं.	१७।४०	वि.	१७।१२	प.	७।५३	वृ. ११।१०	भ. १७।४० उ. २९।२ या.
३१	१५	मं.	१६।२४	अनु.	१६।४२	शि.	६। ३ २७।४५	वृश्चिक	बुध वक्री २६।५२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८८ ई.)

द्वि. (अधिक) ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१ जून	१	बु.	१४।४१	ज्ये.	१५।४४	सा.	२५।११	ध. १५।४४	A पश्चिम में अस्त
२	२	गु.	१२।३६	मू.	१४।२५	शु.	२२।२०	धनु	भ. २३।२७ उ., C में ५।४७
३	३	शु.	१०।१८	पू.षा.	१२।५३	शु.	१९।२१	म. १८।२९	भ. १०।१८ या.
४	४	श.	७।५४ २९।१९	उ.षा.	११।१७	ब्र.	१६।२०	मकर	गुरु कृत्ति. १ में २१।१५, बुध A B २०।५४, व. शनि मूल २ C
५	६	र.	२७। ८	श्र.	९।४०	ऐं.	१३।१९	कुं. २०।५४	भ. २७।२८ उ., पञ्चक प्रा. B
६	७	चं.	२४।५५	ध.	८। ८	वै.	१०।२३	कुम्भ	भ. १४।२ या.
७	८	मं.	२२।५१	श.	६।४४	वि.	७।३४ २८।५०	मी. २३।४७	सूर्य मृग. में १९।४९, शुक्र D D वार्द्धक्य प्रा. १०।१२
८	९	बु.	२०।५७	पू.भा.	५।२८ २८।२५	आ.	२६।१९	मीन	E पंचक समाप्त २७।३३
९	१०	गु.	१९।१४	रे.	२७।३३	सौ.	२३।५६	मे. २७।३३	भ. ८।५ उ. १९।१४ या., E
१०	११	शु.	१७।४५	अ.	२६।५४	शो.	२१।४४	मेष	वक्री बुध वृष में २३।२६, F
११	१२	श.	१६।२९	भ.	२६।३०	अ.	१९।४३	मेष	F वक्री शुक्र वृष में १९।४९, G
१२	१३	र.	१५।३१	कृ.	२६।२६	सु.	१७।५७	वृ. ८।२९	भ. १५।३१ उ. २७।१३ या.,
१३	१४	चं.	१४।५५	रो.	२६।४४	धृ.	१६।२८	वृष	मंगल पू.भा. में १७।२०
१४	३०	मं.	१४।४४	मृ.	२७।३१	शू.	१५।२१	मि. १५। ७	सं. सूर्य मिथुन में १९।१४ G शुक्र पश्चिम में अस्त १०।११

आषाढ़ कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
३० जून	१	गु.	२२।२६	पू.षा.	२१।१४	ब्र.	७।५० २८।२२	म. २६।४१	B सूर्य पुन. म १८।२५, गुरु C C कृत्ति. ३ में २६।२७
१ जुला.	२	शु.	१९।२४	उ.षा.	१९। २	वै.	२४।५०	मकर	मंगल मीन में १०।५९
२	३	श.	१६।२१	श्रव.	१६।४८	वि.	२१।१७	कुं. २७।४४	भ. ५।५२ उ. १६।२१ या., A
३	४	र.	१३।२४	ध.	१४।४०	प्री.	१७।५१	कुम्भ	A पंचक प्रा. २७।४४
४	५	चं.	१०।३८	श.	१२।४४	आ.	१४।३५	कुम्भ	शुक्र मार्गी ९।५७
५	६	मं.	८। ९	पू.भा.	११। ६	सौ.	११।३३	मी. ५।३१	भ. ८।९ उ. १९।५ या., B
६	७	बु.	६। २ २८।१८	उ.भा.	९।४९	शो.	८।५०	मीन	बुध मिथुन में २३।० D उ.भा. में २२।४४
७	९	गु.	२६।५५	रे.	८।५५	अ.	६।२५ २८।१८	मे. ८।५५ ...	पंचक समाप्त ८।५५, मंगल D
८	१०	शु.	२५।५८	अ.	८।२४	धृ.	२६।३३	मेष	भ. १४।२६ उ. २५।५८ या.
९	११	श.	२५।२४	भ.	८।१७	शू.	२५। ६	वृ. १४।२१	E ३ में १५।४८
१०	१२	र.	२५।१५	कृ.	८।३४	गं.	२३।५८	वृष	राहु पू.भा. १ में केतु पू.फा. E
११	१३	चं.	२५।३१	रो.	९।१४	वृ.	२३।१०	मि. २१।४७	भ. २५।३१ उ.,
१२	१४	मं.	२६।१४	मृ.	१०।२१	ध्रु.	२२।४३	मिथुन	भ. १३।५२ या., बुध आर्द्रा F
१३	३०	बु.	२७।२२	आ.	११।५३	व्या.	२२।३६	मिथुन	F में १८।२५

द्वि. (शुद्ध) ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१५	१	बु.	१५। ४	आ.	२८।४८	गं.	१४।३८	मिथुन	H शुक्र पूर्व में उदित २४।३६
१६	२	गु.	१५।५६	पुन.	— —	वृ.	१४।२०	क. २४।१०	I में १८।४४, सायन कर्क में J
१७	३	शु.	१७।२२	पुन.	६।३८	ध्रु.	१४।२८	कर्क	J सूर्य ९।३४
१८	४	श.	१९।२०	पु.	९। ०	व्या.	१५। १	कर्क	भ. ६।२१ उ. १९।२० या.
१९	५	र.	२१।४०	आश्ले.	११।४८	ह.	१५।५३	सि. ११।४८	गुरु कृत्ति. २ वृष में २२।१७, H
२०	६	चं.	२४।१३	म.	१४।५१	व.	१६।५६	सिंह	K रोहि. में ५।३५, बुध पूर्व L
२१	७	मं.	२६।४४	पू.फा.	१७।५९	सि.	१८। २	क. २४।४२	भ. २६।४४ उ., सूर्य आर्द्रा I
२२	८	बु.	२८।५६	उ.फा.	२०।५३	व्य.	१८।५७	कन्या	भ. १५।५० या., वक्री शुक्र K
२३	९	गु.	— —	ह.	२३।२१	व.	१९।३२	कन्या	L में उदित
२४	९	शु.	६।३७	चि.	२५।११	प.	१९।३८	तु. १२।१५	बुध मार्गी १५।५०
२५	१०	श.	७।३६	स्वा.	२६।१५	शि.	१९। ८	तुला	भ. १९।४१ उ.,
२६	११	र.	७।४७	वि.	२६।३१	सि.	१७।५९	वृ. २०।२८	भ. ७।४७ या.
२७	१२	चं.	७। ९	अनु.	२६। २	सा.	१६।१२	वृश्चिक	
२८	१३	मं.	५।४७ २७।४६	ज्ये.	२४।५३	शु.	१३।५१	ध. २४।५३	भ. २७।४६ उ.,
२९	१५	बु.	२५।१६	मू.	२३।१४	शु.	११। १	धनु	भ. १४।३१ या.

आषाढ़ शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१४	१	गु.	२८।५९	पुन.	१३।५१	ह.	२२।५१	क. ७।२३	H म सूर्य २०।३०, बुध पूर्व I
१५	२	शु.	— —	पु.	१६।१५	व.	२३।२७	कर्क	
१६	२	श.	७। १	आश्ले.	१९। २	सि.	२४।१८	सिं. १९। २	सं. सूर्य कर्क में ६।३ I में अस्त
१७	३	र.	९।२३	म.	२२। ५	व्य.	२५।२२	सिंह	भ. २२।४० उ., शुक्र मृग. में G
१८	४	चं.	११।५८	पू.फा.	२५।१६	व.	२६।३१	सिंह	भ. ११।५८ या. G २७।१६
१९	५	मं.	१४।३४	उ.फा.	२८।२१	प.	२७।३४	क. ८। २	सूर्य पुष्य में १७।५२
२०	६	बु.	१६।५८	ह.	— —	शि.	२८।२५	कन्या	बुध पुन. में २३।४६
२१	७	गु.	१८।५७	ह.	७। ९	सि.	२८।५०	तु. २०।१६	भ. १८।५७ उ.,
२२	८	शु.	२०।१९	चि.	९।२५	सा.	२८।४५	तुला	भ. ७।३८ या., सायन सिंह H
२३	९	श.	२०।५५	स्वा.	११। १	शु.	२८। ३	वृ. २६।३६	व. शनि मूल १ में १२।७
२४	१०	र.	२०।४०	वि.	११।४८	शु.	२६।३९	वृश्चिक	गुरु कृत्ति. ४ में ८।३०
२५	११	चं.	१९।३६	अनु.	११।४५	ब्र.	२४।३६	वृश्चिक	भ. ८।८ उ., १९।३६ या., J
२६	१२	मं.	१७।४६	ज्ये.	१०।५६	ऐं.	२१।५७	ध. १०।५६	J बुध कर्क में २५।४९
२७	१३	बु.	१५।१६	मू.	९।२४	वैं.	१८।४९	धनु	बुध पुष्य में १६।३१
२८	१४	गु.	१२।१५	पू.षा.	७।१९ २८।५१	वि.	१५।११	म. १२।४२	भ. १२।१५ उ. २२।३५ या.
२९	१५	शु.	८।५५ २८।२३	श्र.	२६।११	प्री.	११।२१	मकर	शुक्र मिथुन में १९।२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८८ ई.)

श्रावण कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
३०जुला.	२	श.	२५।५०	घ.	२३।२८	आ.	७।२२ २७।२२	कु. १२।५०	पञ्चक प्रा. १२।५०
३१	३	र.	२२।२६	श.	२०।५१	ग्रो.	२३।३१	कुम्भ	भ. १२।८ उ. २२।२६ या.
१ अग.	४	चं.	१९।१७	पू.भा.	१८।३०	अ.	१९।५२	मी. १३। ६	A आश्ले. में २५।१८
२	५	मं.	१६।३१	उ.भा.	१६।३३	सु.	१६।३४	मीन	सूर्य आश्ले. में १६।५१, बुध A
३	६	बु.	१४।१५	रे.	१५। ४	धृ.	१३।३९	मे. १५। ४	भ. १४।१५ उ. २५।२३ या. B
४	७	गु.	१२।३१	अ.	१४। ९	शू.	११।१२	मेष	B पंचक समाप्त १५।४
५	८	शु.	११।२२	भ.	१३।४७	गं.	९।११	वृ. १९।५१	
६	९	श.	१०।४८	कृ.	१४। १	वृ.	७।४०	वृष	भ. २२।४८ उ.,
७	१०	र.	१०।४९	रो.	१४।४८	ध्रु.	६।३६	मि. २७।२६	भ. १०।४९ या., शुक्र आर्द्रा C
८	११	चं.	११।२१	मृ.	१६। ५	व्या.	५।५७ २९।४३	मिथुन	C में १५।३७
९	१२	मं.	१२।२५	आ.	१७।५२	व.	२९।४९	मियुन	बुध मघा सिंह में १५।४२
१०	१३	बु.	१३।५४	पुन.	२०। ४	सि.	— —	क. १३।३२	भ. १३।५४ उ. २६।५०° या.
११	१४	गु.	१५।४७	पु.	२२।३८	सि.	६।१५	कर्क	
१२	३०	शु.	१८। १	आश्ले.	२५।३०	व्य.	६।५७	सि. २५।३०	

भाद्रपद कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२८ अग.	१	र.	१२।३८	श.	७। ८ २८।१५	सु.	१०।१२	मी. २२।५८	
२९	२	चं.	८।५९ २९।३६	उ.भा.	२५।३७	धृ.	६। ४ २६। ८	मीन	भ. १९।१७ उ. २९।३६ या. B १५।४०
३०	४	मं.	२६।४२	रे.	२३।२३	गं.	२२।३५	मे. २३।२३	पंचक स. २३।२३, सूर्य पू.फा. A
३१	५	बु.	२४।१८	अ.	२१।४२	वृ.	१९।२७	मेष	A में १०।२९, शनि मार्गी २९।३०
१सितं.	६	गु.	२२।३३	भ.	२०।३९	ध्रु.	१६।५०	वृ. २६।३४	भ. २२।३३ उ., शुक्र कर्क में B
२	७	शु.	२१।३३	कृ.	२०।१९	व्या.	१४।४८	वृष	भ. १०।४ या., बुध हस्त में C
३	८	श.	२१।१८	रो.	२०।४४	ह.	१३।२२	वृष	अगस्त्य उदित C १६।३२
४	९	र.	२१।४६	मृ.	२१।५०	व.	१२।३०	मि. ९।१७	शुक्र पुष्य में २१।९
५	१०	चं.	२२।५३	आ.	२३।३५	सि.	१२।१०	मिथुन	भ. १०।१९ उ. २२।५३ या.
६	११	मं.	२४।३४	पुन.	२५।५२	व्य.	१२।१८	क. १९।१८	
७	१२	बु.	२६।४१	पु.	२८।३३	व.	१२।४९	कर्क	मंगल उ.भा. में २३।४
८	१३	गु.	२९। ६	आश्ले.	— —	प.	१३।३६	कर्क	भ. २९।६ उ.,
९	१४	शु.	— —	आश्ले.	७।३१	शि.	१४।३५	सि. ७।३१	भ. १८।२४ या.
१०	१४	श.	७।४२	म.	१०।३९	सि.	१५।३९	सिंह	D २ में १३।२०
११	३०	र.	१०।१९	पू.फा.	१३।४७	सा.	१६।४४	क. २०।३३	राहु शत. ४ में केतु पू.फा. D

श्रावण शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१३	१	श.	२०।२८	म.	२८।३३	व.	७।५२	सिंह	
१४	२	र.	२३। ५	पू.फा.	— —	प.	८।५६	सिंह	मंगल रेव. में १२।६
१५	३	चं.	२५।४२	पू.फा.	७।४४	शि.	१०। ३	क. १४।३१	
१६	४	मं.	२८।१२	उ.फा.	१०।५२	सि.	११। ९	कन्या	भ. १४।५७ उ. २८।१२ या., D
१७	५	बु.	— —	ह.	१३।५०	सा.	१२। ५	तु. २७। ७	D सं. सू. मघा सिंह में १४।२७, E
१८	५	गु.	६।२२	चि.	१६।२५	शु.	१२।४५	तुला	E बुध पू.फा. में १९२४, गुरु F
१९	६	शु.	८। ३	स्वा.	१८।२८	शु.	१३। ०	तुला	F रोहि. १ में १२।२२, बुध G
२०	७	श.	९। ६	वि.	१९।५२	ब्र.	१२।४४	वृ. १३।३१	भ. ९।६ उ. २१।१५ या.
२१	८	र.	९।२४	अनु.	२०।२९	ऐं.	११।५३	वृश्चिक	G पश्चिम में उदित
२२	९	चं.	८।५४	ज्ये.	२०।२०	वै.	१०।२३	ध. २०।२०	शुक्र पुन. में १३।५३, सायन H
२३	१०	मं.	७।३६ २९।३५	मू.	१९।२४	वि.	८।१६ २९।३२	धनु	भ. १८।३६ उ. २९।३५ या. H कन्या में सूर्य २८।३३
२४	१२	बु.	२६।५४	पू.षा.	१७।४७	आ.	२६।१५	म. २३।१४	बुध उ.फा. में १७।३५
२५	१३	गु.	२३।४३	उ.षा.	१५।३५	सौ.	२२।३५	मकर	I २३।३२, मंगल वक्री ७।२५, J
२६	१४	शु.	२०।१०	श्रव.	१२।५८	शो.	१८।३५	कुं. २३।३२	भ. २०।१० उ., पंचक प्रा. I
२७	१५	श.	१६।२५	घ.	१०। ५	अ.	१४।२५	कुम्भ	भ. ६।१८ या. J बुध कन्या में २०।३९

भाद्रपद शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१२	१	च.	१२।५४	उ.फा.	१६।५२	शु.	१७।४४	कन्या	सूर्य उ.फा. में २८।१८
१३	२	मं.	१५।१८	ह.	१९।४५	शु.	१८।३६	कन्या	बुध चित्रा में १०।२३
१४	३	बु.	१७।२५	चि.	२२।२१	ब्र.	१९।१३	तु. ९। ४	
१५	४	गु.	१९। ८	स्वा.	२४।३४	ऐं.	१९।३३	तुला	भ. ६।१६ उ. १९।८ या.
१६	५	शु.	२०।२२	वि.	२६।१७	वै.	१९।३०	वृ. १९।५१	सं. सूर्य कन्या में १४।२२
१७	६	श.	२१। २	अनु.	२७।२६	वि.	१९। १	वृश्चिक	शुक्र आश्ले. में ८।३
१८	७	र.	२१। ३	ज्ये.	२७।५५	प्री.	१८। १	ध. २७।५५	भ. २१।३ उ.,
१९	८	चं.	२०।२३	मू.	२७।४५	आ.	१६।२९	धनु	भ. ८।४३ या.
२०	९	मं.	१९। २	पू.षा.	२६।५४	सौ.	१४।२५	धनु	बुध तुला में १७।३५
२१	१०	बु.	१७। २	उ.षा.	२५।२५	शो.	११।४८	म. ८।३३	भ. २७।४४ उ.,
२२	११	गु.	१४।२७	श्र.	२३।२४	अ.	८।४१ २९। ७	मकर	भ. १४।२७ या., सायन तुला E E में सूर्य २४।१८
२३	१२	शु.	११।२३	ध.	२०।५८	धृ.	२५।१८	कुं. १०।११	पंचक प्रा. १०।११, गुरु वक्री F
२४	१३	श.	७।५८ २८।२०	श.	१८।१२	शू.	२१।१३	कुम्भ	भ. २८।२० उ.,
२५	१५	र.	२४।३८	पू.भा.	१५।१८	गं.	१७। २	मी. १०। २	F २९।३० भ. १४।२९ या.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८८ ई.)

आश्विन कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२६सितं.	१	चं.	२१। २	उ.भा.	१२।२७	वृ.	१२।५४	मीन	सूर्य हस्त में १९।४९
२७	२	मं.	१७।४२	रे.	९।४७	ध्रु.	८।५५ २९।१२	मे. ९।४७	भ. २८।१५ उ., पंचक स. ९।४७
२८	३	बु.	१४।४८	अ.	७।२९ २९।४४	ह.	२६। ०	मेष	भ. १४।४८ या., बुध वक्री२३।५७
२९	४	गु.	१२।२९	कृ.	२८।३९	व.	२३।१७	वृ. ११।२७	शुक्र मघा सिंह में ६।३१
३०	५	शु.	१०।५४	रो.	२८।२०	सि.	२१।१०	वृष	
१ अक.	६	श.	१०। ५	मृ.	२८।५०	व्य.	१९।४३	मि. १६।३५	भ. १०।५ उ. २२।७ या.
२	७	र.	१०। ९	आ.	३०।१०	व.	१८।५७	मिथुन	
३	८	चं.	११। १	पुन.	— —	प.	१८।४५	क. २५।४०	
४	९	मं.	१२।३६	पुन.	८।११	शि.	१९। ५	कर्क	भ. २५।४१ उ.,
५	१०	बु.	१४।४५	पु.	१०।४७	सि.	१९।४९	कर्क	भ. १४।४५ या., बु. पश्चिम A
६	११	गु.	१७।१६	आश्ले.	१३।४५	सा.	२०।४७	सि. १३।४५	व. बुध कन्या में ११।२८,B
७	१२	शु.	१९।५७	म.	१६।५४	शु.	२१।५१	सिंह	B शनि मूल २ में १९।५४
८	१३	श.	२२।३८	पू.फा.	२०। ४	शु.	२२।५४	क. २६।४९	भ. २२।३८ उ., A में अस्त
९	१४	र.	२५। ७	उ.फा.	२३। ४	ब्र.	२३।४९	कन्या	भ. ११।५३ या.
१०	३०	चं.	२७।२०	ह.	२५।४८	ऐं.	२४।३१	कन्या	सूर्य चित्रा में ८।४९, शुक्र C C पू.फा. में २०।११

आश्विन शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
११	१	मं.	२९।१२	चि.	२८।१३	वै.	२४।५७	तु. १५। १	
१२	२	बु.	— —	स्वा.	३०।१४	वि.	२५। ५	तुला	व. बुध हस्त में ११।०
१३	२	गु.	६।३८	वि.	— —	प्री.	२४।५४	वृ. २५।२६	
१४	३	शु.	७।४१	वि.	७।५१	आ.	२४।२३	वृश्चिक	भ. १९।५९ उ.,
१५	४	श.	८।१६	अनु.	९। १	सौ.	२३।२९	वृश्चिक	भ. ८।१६ या.
१६	५	र.	८।२३	ज्ये.	९।४४	शो.	२२।१४	ध. ९।४४	सूर्य तुला में २६।१७
१७	६	चं.	८। १	मू.	१०। ०	अ.	२०।३५	धनु	G वृश्चिक में सूर्य ९।२३
१८	७	मं.	७। ९ २९।४७	पू.षा.	९।४५	सु.	१८।३२	म. १५।३३	भ. ७।९ उ., १८।२८ या., D D बुध पूर्व में उदित
१९	८	बु.	२७।४५	उ.षा.	९। ०	धृ.	१६। ५	मकर	E मार्गी १५।५६
२०	१०	गु.	२५।३६	श्रव.	७।४७ ३०। ७	शू.	१३।१५	कुं. १८।५७	पंचक प्रारम्भ १८।५७, बुध E F शुक्र उ.फा. में २७।३४
२१	११	शु.	२२।५२	श.	२८। ३	गं.	१०। ३ २९।३३	कुम्भ	भ. १२।१४ उ. २२।५२ या., F H पंचक समाप्त २०।४३, I
२२	१२	श.	१९।५०	पू.भा.	२५।४३	ध्रु.	२६।४५	मी. २०।१८	I शुक्र कन्या में २२।३९
२३	१३	र.	१६।३७	उ.भा.	२३।१४	व्या.	२२।५९	मीन	सूर्य स्वाती में १९।१६, सायन G
२४	१४	चं.	१३।१९	रे.	२०।४३	ह.	१९। ७	मे. २०।४३	भ. १३।१९ उ. २३।४३ या. H
२५	१५	मं.	१०। ७	अ.	१८।२०	व.	१५।२१	मेष	

कार्तिक कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२६ अक.	१	बु.	७।१० २८।३७	भ.	१६।१८	सि.	११।५१	वृ. २१।५५	B क्रांति. ४ में १९।४५
२७	३	गु.	२६।४२	कृ.	१४।४४	व्य.	८।४३ ३०। ३	वृष	भ. १५।३९ उ. २६।४२ या.
२८	४	शु.	२५।२८	रो.	१३।४९	प.	२७।५९	मि. २५।४४	मंगल मार्गी ११।३०, बुध A
२९	५	श.	२५। ५	मृ.	१३।४०	शि.	२६।३६	मिथुन	A चित्रा में १६।२८
३०	६	र.	२५।३२	आ.	१४।२०	सि.	२५।५१	मिथुन	भ. २५।३२ उ.,
३१	७	चं.	२६।४८	पुन.	१५।४९	सा.	२५।४४	क. ९।२७	भ. १४।१० या.
१ नवं.	८	मं.	२८।४६	पु.	१८। २	शु.	२६। ८	कर्क	शुक्र हस्त में ३०।२०
२	९	बु.	— —	आश्ले.	२०।४८	शु.	२६।५६	सि. २०।४८	बुध तुला में १६।४७, व. गुरु B
३	९	गु.	७।१५	म.	२३।५४	ब्र.	२७।५७	सिंह	भ. २०।३६ उ.,
४	१०	शु.	९।५८	पू.फा.	२७। ४	ऐं.	२८।५८	सिंह	भ. ९।५८ या.
५	११	श.	१२।३९	उ.फा.	३०। ५	वै.	२९।५३	क. ९।५०	सूर्य विशा. में २७।२६
६	१२	र.	१५। ७	ह.	— —	वि.	३०।३१	कन्या	बुध स्वाती में २५।५६
७	१३	चं.	१७।११	ह.	८।४७	प्री.	— —	तु. २१।५४	भ. १७।११ उ. २९।५९ या.
८	१४	मं.	१८।४६	चि.	११। १	प्री.	६।४९ ३०।४४	तुला	
९	३०	बु.	१९।५१	स्वा.	१२।४७	सौ.	३०।१६	तुला	

कार्तिक शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१०	१	गु.	२०।२५	वि.	१४। ३	शो.	२९।२५	वृ. ७।४४	बुध पूर्व में अस्त
११	२	शु.	२०।३२	अनु.	१४।५२	अ.	२८।१४	वृश्चिक	E विशा. में १०।१३, शनि F
१२	३	श.	२०।१६	ज्ये.	१५।१८	सु.	२६।४६	ध. १५।१८	शुक्र चित्रा में २९।२८
१३	४	र.	१९।३८	मू.	१५।२२	धृ.	२५। १	धनु	भ. ७।५७ उ. १९।३८ या., C
१४	५	चं.	१८।४२	पू.षा.	१५। ८	शू.	२३। २	म. २१। ०	C राहु शत. ३ में केतु पू.फा. D
१५	६	मं.	१७।२९	उ.षा.	१४।३७	गं.	२०।४९	मकर	सूर्य वृश्चि. में २६।२, बुध E
१६	७	बु.	१५।५८	श्र.	१३।४८	वृ.	१८।२२	कुं. २५।१५	भ. १५।५८ उ. २७।४ या., G
१७	८	गु.	१४।१०	ध.	१२।४२	ध्रु.	१५।४२	कुम्भ	G पंचक प्रा. २५।१५
१८	९	शु.	१२। ६	श.	११।२२	व्या.	१२।५०	मी. २८।१०	शुक्र तुला में १६।२, H ९।२३
१९	१०	श.	९।४९	पू.भा.	९।४७	ह.	९।४५ ३०।३१	मीन	भ. २०।३४ उ., सूर्य अनु. में H F मूल ३ में २९।५१
२०	११	र.	७।१९ २८।४२	उ.भा.	८। ० ३०। ७	सि.	२७। ७	मे. ३०। ७	भ. ७।१९ या., पंचक स. ३०।७ I सूर्य ७।५२ D १ में १०।५४
२१	१३	चं.	२६। ७	अ.	२८।१३	व्य.	२३।५३	मेष	बुध वृश्चिक में १६।१०
२२	१४	मं.	२३।३८	भ.	२६।२९	व.	२०।३७	मेष	भ. २३।३८ उ., सायन धनु में I
२३	१५	बु.	२१।२४	कृ.	२५। १	प.	१७।३४	वृ. ८। ७	भ. १०।३१ या., बुध अनु. J J में १८।३१, शुक्र स्वाती में K K २६।५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८८-८९ ई.)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२४ नवं.	१	गु.	१९।३६	रो.	२३।५९	शि.	१४।४९	वृष	
२५	२	शु.	१८।२०	मृ.	२३।३०	सि.	१२।३०	मि. ११।४४	भ. ३०।३ उ.,
२६	३	श.	१७।४६	आ.	२३।४४	सा.	१०।४१	मिथुन	भ. १७।४६ या.
२७	४	र.	१७।५९	पुन.	२४।४४	शु.	९।२९	क. १८।२९	
२८	५	चं.	१८।५९	पु.	२६।२८	शु.	८।५२	कर्क	व. गुरु कृत्ति. ३ में ७।२०
२९	६	मं.	२०।४४	आश्ले.	२८।५२	ब्र.	८।५०	सिं. २८।५२	भ. २०।४४ उ.,
३०	७	बु.	२३। ३	म.	— —	ऐं.	९।१९	सिंह	भ. ९।५४ या.
१ दिसं.	८	गु.	२५।४२	म.	७।४६	वै.	१०। ८	सिंह	बुध ज्येष्ठा में २९।२३
२	९	शु.	२८।२५	पू.फा.	१०।५३	वि.	११। ७	क. १७।३९	सूर्य ज्येष्ठा में १३।४६
३	१०	श.	३०।५६	उ.फा.	१३।५९	प्री.	१२। ४	कन्या	भ. १७।४१ उ. ३०।५६ या.
४	११	र.	— —	ह.	१६।४७	आ.	१२।४९	तु. २९।५७	शुक्र विशा. में २०।४९
५	११	चं.	८।५९	चि.	१९। ७	सौ.	१३।१२	तुला	
६	१२	मं.	१०।२९	स्वा.	२०।५१	शो.	१३। ८	तुला	वेंकटेश विशा. १ में
७	१३	बु.	११।१९	वि.	२१।५७	अ.	१२।३४	वृ. १५।४१	भ. ११।१९ उ. २३।२४ या.
८	१४	गु.	११।२९	अनु.	२२।२८	सु.	११।३०	वृश्चिक	
९	३०	शु.	११। ६	ज्ये.	२२।२७	धृ.	१०। ०	ध. २२।२७	यूरेनस मूल ३ में

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
१०	१	श.	१०।१४	मू.	२२। १	शू.	८। ८ २९।५६	धनु	बुध मूलधनु में १७।१३, मंगल A A रेव. में ३०।४४, शनि अस्त
११	२	र.	८।५९	पू.षा.	२१।१६	वृ.	२७।३२	म. २७। २	B शुक्र वृश्चिक में २१।५६
१२	३	चं.	७।२६ २९।५१	उ.षा.	२०।१०	ध्रु.	२४।५८	मकर	भ. १८।४० उ. २९।५१ या., B C में १६।४०, शुक्र अनुराधा D
१३	५	मं.	२७।५८	श्रव.	१९।१३	व्या.	२२।१७	कुं. ३०।३६	पंचक प्रारम्भ ३०।३६
१४	६	बु.	२६। ५	ध.	१८। १	ह.	१९।३३	कुम्भ	D में १४।११, शनि मूल ४ मेंE
१५	७	गु.	२४। ९	श.	१६।४७	व.	१६।४६	कुम्भ	भ. २४।९ उ., सूर्य मूल धनु C
१६	८	शु.	२२।११	पू.भा.	१५।३१	सि.	१३।५८	मी. ९।४९	भ. ११।१० या.
१७	९	श.	२०।१४	उ.भा.	१४।१४	व्य.	११।१०	मीन	E २८।३८
१८	१०	र.	१८।१७	रे.	१२।५७	व.	८।२१ २९।३४	मि. १२।५७	भ. २९।२० उ., पंचक समाप्त F F १२।५७, बुध पू.षा. में G
१९	११	चं.	१६।२३	अ.	११।४३	शि.	२६।४९	मेष	भ. १६।२३ या.
२०	१२	मं.	१४।३७	भ.	१०।३६	सि.	२४।१७	वृ. १६।२२	G २८।१२
२१	१३	बु.	१३। ४	कृ.	९।४०	सा.	२१।५३	वृष	सायन मकर में सूर्य २१।९
२२	१४	गु.	११।४८	रो.	९। ०	शु.	१९।४६	मि. २०।५३	भ. ११।४८ उ., २३।२१ या.
२३	१५	शु.	१०।५९	मृ.	८।४५	शु.	१८। २	मिथुन	

पौष कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२४दिसं.	१	श.	१०।४१	आ.	९। १	ब्र.	१६।४३	क. २७।३८	बुध पश्चिम में उदित
२५	२	र.	१०।५९	पुन.	९।५१	ऐं.	१५।५३	कर्क	भ. २३।२९ उ., शुक्र ज्येष्ठा A
२६	३	चं.	११।५९	पु.	११।२०	वै.	१५।३४	कर्क	भ. ११।५९ या.
२७	४	मं.	१३।३७	आश्ले.	१३।२७	वि.	१५।४४	सिं. १३।२७	बुध उ.षा. में १५।२८, व. B
२८	५	बु.	१५।४८	म.	१६। ५	प्री.	१६।१८	सिंह	सूर्य पू.षा. में १९।२२
२९	६	गु.	१८।२४	पू.फा.	१९। ५	आ.	१७।१०	क. २५।५२	भ. १८।२४ उ., बुध मकर C
३०	७	शु.	२१। ७	उ.फा.	२२।१२	सौ.	१८। ८	कन्या	भ. ७।४६ या., C में १९।१९
३१	८	श.	२३।४२	ह.	२५।१२	शो.	१९। २	कन्या	A में ३०।५३
१ जन.	९	र.	२५।५५	चि.	२७।४९	अ.	१९।४१	तु. १४।३१	B गुरु कृत्तिका २ में २०।२७
२	१०	चं.	२७।३१	स्वा.	२९।५१	सु.	१९।५४	तुला	भ. १४।४३ उ. २७।३१ या.
३	११	मं.	२८।२४	वि.	३१।११	धृ.	१९।३६	वृ. २४।५१	D में १८।९, शुक्र मूल धनु E
४	१२	बु.	२८।३२	अनु.	— —	शू.	१८।४४	वृश्चिक	E में २२।४४
५	१३	गु.	२७।५४	अनु.	७।४७	गं.	१७।१६	वृश्चिक	भ. २७।५४ उ., बुध श्रवण D
६	१४	शु.	२६।३९	ज्ये.	७।४१ ३०।५८	वृ.	१५।१७	ध. ७।४१	भ. १५।१७ या.
७	३०	श.	२४।५२	पू.षा.	२९।४७	ध्रु.	१२।५०	धनु	मंगल अश्वि. मेष में २४।७

पौष शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८८	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
८	१	र.	२२।४२	उ.षा.	२८।१४	व्या.	१०। १ ३०।५५	म. ११।२४	F १३।३४, सूर्य उ.षा. में २०।५२ G पू.षा. १ में १३।२६, H
९	२	चं.	२०।१८	श्र.	२६।२८	व.	२७।४०	मकर	H नेपच्यून पू.षा. २ में
१०	३	मं.	१७।४७	ध.	२४।३९	सि.	२४।२४	कुं. १३।३४	भ. २८।३१ उ., पंचक प्रा. F
११	४	बु.	१५।१४	श.	२२।४९	व्य.	२१। ६	कुम्भ	भ. १५।१४ या., J में ८।२४
१२	५	गु.	१२।४७	पू.भा.	२१। ७	व.	१७।५५	मी. १५।३३	शनि उदित K में १४।२५
१३	६	शु.	१०।३०	उ.भा.	१९।३६	प.	१४।५२	मीन	सूर्य मकर में २७।२३, शनि G
१४	७	श.	८।२६ ३०।३५	रे.	१८।१८	शि.	११।५९	मे. १८।१८	भ. ८।२६ उ. १९।३१ या., E Eपंचक समाप्त १८।१८
१५	९	र.	२९। १	अ.	१७।१५	सि.	९।१८ ३०।५१	मेष	राहु शत. २ में केतु मघा ४ J L में सूर्य ८।१२, गुरु मार्गी M
१६	१०	चं.	२७।४६	भ.	१६।३०	शु.	२८।३६	वृ. २२।२३	बुध वक्री ८।३, शुक्र पू.षा. K
१७	११	मं.	२६।४९	कृ.	१६। २	शु.	२६।४०	वृष	भ. १५।१७ उ. २६।४९ या.
१८	१२	बु.	२६।१४	रो.	१५।५४	ब्र.	२४।५९	मि. २८। २	बुध पश्चिम में अस्त
१९	१३	गु.	२६। ४	मृ.	१६। ९	ऐं.	२३।३६	मिथुन	M १८।२६, सूर्य अभिजित् N
२०	१४	शु.	२६।१९	आ.	१६।४८	वै.	२२।३४	मिथुन	भ. २६।१९ उ., सायन कुंभ L
२१	१५	श.	२७। ३	पुन.	१७।५५	वि.	२१।५३	क. ११।३८	भ. १४।४१ या., N में १६।३४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८९ ई.)

माघ कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२२ जन.	१	र.	२८।१९	पु.	१९।३०	प्री.	११।२७	कर्क	A स निवृत्त २०।१५
२३	२	चं.	३०। ३	आश्ले.	२१।३४	आ.	२१।४२	सि. २१।३४	सूर्य श्रवण में २३।१५
२४	३	मं.	— —	म.	२४। ६	सौ.	२२। ९	सिंह	भ. १९।९ उ., सूर्य अभिजित् A
२५	३	बु.	८।१६	पू.फा.	२६।५९	शो.	२२।५४	सिंह	भ. ८।१६ या., व. बुध उ.षा. B
२६	४	गु.	१०।४८	उ.फा.	३०। ४	अ.	२३।४९	क. ९।३६	शुक्र उ.षा. में ३०।२
२७	५	शु.	१३।३०	ह.	— —	सु.	२४।४७	कन्या	B में २९।५५
२८	६	श.	१६।१०	ह.	९।११	धृ.	२५।४०	तु. २२।३८	भ. १६।१० उ. २९।२१ या.
२९	७	र.	१८।३२	चि.	१२। ५	शू.	२६।१५	तुला	शुक्र मकर में २१।५६
३०	८	चं.	२०।२४	स्वा.	१४।३२	गं.	२६।२५	तुला	C बुध पूर्व में उदित
३१	९	मं.	२१।३४	वि.	१६।२३	वृ.	२६। ३	वृ. ९।५५	मंगल भर. में २४।३७, बुध C
१ फर.	१०	बु.	२१।५८	अनु.	१७।२९	ध्रु.	२५। ४	वृश्चिक	भ. ९।४६ उ. २१।५८ या..
२	११	गु.	२१।३२	ज्ये.	१७।४८	व्या.	२३।२८	ध. १७।४८	D मार्गी २२।२५, पूरे. मूल ४ में
३	१२	शु.	२०।२०	मू.	१७।२१	ह.	२१।१५	धनु	E में २१।३८
४	१३	श.	१८।२६	पू.षा.	१६।१२	व.	१८।२९	म. २१।४७	भ. १८।२६ उ. २९।१२ या.
५	१४	र.	१५।५९	उ.षा.	१४।३०	सि.	१५।१७	मकर	सूर्य धनि. में २६।२३, बुध D
६	३०	चं.	१३। ६	श्रव.	१२।२२	व्य.	११।४४	कुं. २३।१०	पंचक प्रा. २३।१०, शुक्र श्रव. E

फाल्गुन कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२१ फर.	१	मं.	२३।२२	म.	७।१२	सु.	२८।१२	सिंह	
२२	२	बु.	२५।५५	पू.फा.	१०। ४	धृ.	२९। ६	क. १६।५१	शुक्र कुम्भ में २१।२५
२३	३	गु.	२८।३५	उ.फा.	१३। ८	शू.	३०। ४	कन्या	भ. १५।१५ उ. २८।३५ या., A
२४	४	शु.	— —	ह.	१६।१३	गं.	— —	तु. २९।४४	A मंगल कृत्ति. में १६।६
२५	४	श.	७।११	चि.	१९।१३	गं.	७। ०	तुला	B शुक्र शत. में २९।२९
२६	५	र.	९।३७	स्वा.	२१।५७	वृ.	७।४८	तुला	
२७	६	चं.	११।३९	वि.	२४।१५	ध्रु.	८।१९	वृ. १७।४०	भ. ११।३९ उ. २४।२४ या., B
२८	७	मं.	१३। ९	अनु.	२५।५८	व्या.	८।२७	वृश्चिक	मंगल वृष में २९।१४
१ मार्च	८	बु.	१३।५९	ज्ये.	२६।५९	ह.	८। ५	धु. २६।५९	बुध धनि. में २६।११
२	९	गु.	१४। १	मू.	२७।१२	व.	७। ९ २९।३४	धनु	भ. २५।३८ उ.,
३	१०	शु.	१३।१६	पू.षा.	२६।४०	व्य.	२७।२१	धनु	भ. १३।१६ या.
४	११	श.	११।४४	उ.षा.	२५।२४	व.	२४।३६	म. ८।२०	सूर्य पू.भा. में १३।१७
५	१२	र.	९।३० ३०।३९	श्र.	२३।२९	प.	२१।१८	मर्कर	भ. ३०।३९ उ.,
६	१४	चं.	२७।२२	ध.	२१। ६	शि.	१७।३५	कुं. १०।१७	भ. १७।१ या., पंचक प्रा. C
७	३०	मं.	२३।४९	श.	१८।२१	सि.	१३।३४	कुम्भ	C १०।१७, बुध कुम्भ में १९।१७

माघ शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
७	१	मं.	९।५८ ३०।४४	ध.	९।५८	व.	७।५७ २८। २	कुम्भ	H श्रवण में २४।४७, सायन E E मीन में सूर्य २३।३, शुक्र J
८	३	बु.	२७।३१	श.	७।२८ २८।५९	शि.	२४।१४	मी. २३।३६	J पूर्व में अस्त २६।१७, K K वैंकटेश (प्लूटो) वक्री
९	४	गु.	२४।२९	उ.भा.	२६।४२	सि.	२०।२९	मीन	भ. १४।० उ. २४।२९ या.
१०	५	शु.	२१।४४	रे.	२४।४४	सा.	१६।५९	मि. २४।४४	पंचक समाप्त २४।४४
११	६	श.	१९।२३	अ.	२३। ९	शु.	१३।४६	मेष	F सूर्य कुम्भ में १६।२५
१२	७	र.	१७।३०	भ.	२२। २	शु.	१०।५६	वृ. २७।५३	भ. १७।३० उ. २८।४९ या. F
१३	८	चं.	१६।,८	कृ.	२१।२७	ब्र.	८।२४ ३०।२९	वृष	गुरु कृत्ति. ३ में ७।४१, शनि G G पू.षा. २ में १८।४३
१४	९	मं.	१५।१९	रो.	२१।२४	वै.	२८।५३	वृष	
१५	१०	बु.	१५। ३	मृ.	२१।५३	वि.	२७।४६	मि. ९।३९	भ. २७।११ उ.,
१६	११	गु.	१५।१९	आ.	२२।५३	प्री.	२७। १	मिथुन	भ. १५।१९ या.
१७	१२	शु.	१६। ६	पुन.	२४।२२	आ.	२६।४०	क. १८। ०	शुक्र धनि. में १३।१९
१८	१३	श.	१७।२१	पु.	२६।१३	सौ.	२६।३८	कर्क	सूर्य शत. में ३०।५६, बुध H
१९	१४	र.	१९। १	आश्ले.	२८।३४	शो.	२६।५४	सि. २८।३४	भ. १९।१ उ.,
२०	१५	चं.	२१। ३	म.	— —	अ.	२७।२७	सिंह	भ. ८।२ या.

फाल्गुन शुक्ल पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
८	१	बु.	२०। ७	पू.भा.	१५।२६	सा.	९।२२ २९। ६	मी. १०।१०	D ९।४७, बुध शत. में २९।१७, E E शुक्र पू.भा. में २१।५२
९	२	गु.	१६।२७	उ.भा.	१२।३१	शु.	२५। ०	मीन	卐 मंगल रोहि. में १६।३९
१०	३	शु.	१२।५९	रे.	९।४७	ब्र.	२१। ५	मि. ९।४७	भ. २३।२६ उ., पंचक समा. D
११	४	श.	९।५४	अ.	७।२३ २९।२०	ऐं.	१७।३१	मेष	भ. ९।५४ या. F में २१।१९
१२	५	र.	७।१७ २९।१९	कृ.	२८।१०	वै.	१४।२३	वृ. ११। ४	J शत. १ में केतु मघा ३ में K M बुध पूर्व में अस्त
१३	७	चं.	२८। ४	रो.	२७।३४	वि.	११।४८	वृष	भ. २८।४ उ., गुरु कृत्ति. ४ F
१४	८	मं.	२७।३२	मृ.	२७।४०	प्री.	९।४७	मि. १५।२८	भ. १५।४८ या., सूर्य मीन G
१५	९	बु.	२७।४५	आ.	२८।३१	आ.	८।२२	मिथुन	G में १३।२२
१६	१०	गु.	२८।४०	पुन.	३०। २	सौ.	७।३१	क. २३।३९	H सूर्य उ.भा. में २१।४४, 卐
१७	११	शु.	३०। ९	पु.	— —	शो.	७।१२	कर्क	भ. १७।२५ उ. ३०।९ या., H
१८	१२	श.	— —	पु.	८। ५	अ.	७।१८	कर्क	शुक्र मीन में २२।२९, राहु J
१९	१२	र.	८। ७	आश्ले.	१०।३६	सु.	७।४६	सि. १०।३६	बुध पू.भा में ८।५६ K ३०।०
२०	१३	चं.	१०।२४	म.	१३।२४	धृ.	८।२९	सिंह	सायन मेष में सूर्य २१।७
२१	१४	मं.	१२।५५	पू.फा.	१६।२४	शू.	९।२३	क. २३।११	भ. १२।५५ उ. २६।१३ या., M
२२	१५	बु.	१५।३०	उ.फा.	१९।२८	गं.	१०।२१	कन्या	L शुक्र उ.भा. में १४।४६, L

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०४५ वि., सन् १९८९ ई.)

चैत्र कृष्ण पक्ष (सं. २०४५ वि.)

तारीख सन् १९८९	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा, राशि, नक्षत्र चार आदि
२३ मार्च	१	गु.	१८। ५	ह.	२२।३१	वृ.	११।१९	कन्या	
२४	२	शु.	२०।३४	चि.	२५।२८	ध्रु.	१२।१४	तु. ११।५९	बुध मीन में २३।५९
२५	३	श.	२२।५०	स्वा.	२८।११	व्या.	१३। १	तुला	भ. ९।४२ उ. २२।५० या.,
२६	४	र.	२४।४८	वि.	— —	ह.	१३।३७	वृ. २३।५९	बुध उ.भा. में १९।३
२७	५	चं.	२६।२३	वि.	६।३७	व.	१३।५७	वृश्चिक	A शुक्र रेव. में ८।१२
२८	६	मं.	२७।२७	अनु.	८।३८	सि.	१३।५६	वृश्चिक	भ. २७।२७ उ.,
२९	७	बु.	२७।५५	ज्ये.	१०। ८	व्य.	१३।२९	ध. १०। ८	भ. १५।४१ या.
३०	८	गु.	२७।४१	मू.	११। २	व.	१२।३३	धनु	B में १५।१४, गुरु. रोहि. C
३१	९	शु.	२६।४६	पू.षा.	११।१५	प.	११। ४	म. १७। ९	सूर्य रेव. में ८।३८
१ अप्रै.	१०	श.	२५। ७	उ.षा.	१०।४६	शि.	९। २	मकर	भ. १३।५६ उ. २५।७ या., A
२	११	र.	२२।४७	श्र.	९।३६	सि.	{ ६।२५ २७।१३	कुं. २०।४२	पंचक प्रा. २०।४२, बुध रेव. B C १ में १३।३
३	१२	चं.	१९।५३	ध.	{ ७।४६ २९।२१	शु.	२३।४०	कुम्भ	D पू.षा. ३ में २३।०
४	१३	मं.	१६।३२	पू.भा.	२६।४२	शु.	१९।४३	मी. २१।२२	भ. १६।३२ उ., २६।४२ या.
५	१४	बु.	१२।५२	उ.भा.	२३।४४	ब्र.	१५।३१	मीन	
६	३०	गु.	९। ३	रे.	२०।४२	ऐं.	११।१३	मे. २०।४२	पंचक समाप्त २०।४२, शनि D

[शेष पृष्ठ ७८ का]

(१०) **महाजया सप्तमी**—एक शास्त्र वचन है कि

"शुक्ल पक्षे तु सप्तम्यां यदा संक्रमते रविः ।
महाजया तदा स्याद्धि सप्तमी भास्कर प्रिया ।।
स्नानं दानं तथा होमः पितृदेवादि पूजनम् ।
सर्वं कोटि गुणं प्रोक्तं भास्करस्य वचो यथा ।।"

इस वर्ष माघ शुक्ल-सप्तमी के दिन १२ फरवरी १९८९ को सूर्य कुम्भ में संक्रमण करता है; अतः "यह सप्तमी "महाजया" संज्ञा वाली है।" प्रयाग-हरिद्वार आदि "तीर्थों पर स्नान-दानादि के लिए इसका विशेष माहात्म्य है।"

(११) **भीष्म द्वादशी**—माघ शुक्ल द्वादशी को भीष्म द्वादशी मनाई जाती है। युग्म वाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी विद्धा ही ली जाती है--"माघ शुक्ल-द्वादशी 'भीष्म द्वादशी'। इयं पूर्वयुता, युग्मवाक्यात् ।"—(भट्टोजिदीक्षित कृत 'तिथि निर्णय')

इस वर्ष भीष्म द्वादशी १६ फरवरी १९८९ ई० को ही होगी, क्योंकि इस दिन यह एकादशी विद्धा है।

(१२) **होलिका दहन**—इस वर्ष २१ मार्च १९८९ को ही फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी है, अतः इसी दिन होलिका दहन होगा; क्योंकि होलिका दहन भद्रा में नहीं किया जाता और इस दिन प्रदोष में भद्रा है, अतः शास्त्र निर्णयानुसार भद्रा के मुख को छोड़कर इसी दिन होलिका दहन करना होगा--"तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे ।।" पूर्णिमा में भद्रा के चतुर्थपाद की पहली पांच घड़ियां ही भद्रा का मुख मानी गई हैं। २१ मार्च १९८९ ई० को भद्रा के मुख का काल प्रदोष काल की समाप्ति के कहीं बाद (रात के १० बजकर ५३ मि. पर) प्रारम्भ होगा। अतः इस दिन प्रदोष में बिना किसी शंका के होलिका दहन कर लेना चाहिए।

[पृष्ठ ७ का शेष]

माघ स्नान के प्रारम्भ में संकल्प—पूरे मासिक माघ स्नान का नियम लेने वाले श्रद्धालु स्नान से पहले दिन ही निम्नांकित मन्त्र से संकल्प करें--

"माघमासमिमं पूर्णं स्नास्येहं देव माधव । तीर्थस्यास्य जले नित्य पापनाशाय मुक्तये ।।"

स्नान मन्त्र—पद्म पुराण में निर्देश है कि माघ स्नान करते समय निम्नांकित मंत्र पढ़ना चाहिए;—

**दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च । प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशम् ।।
मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव । स्नानेनानेन मे देव यथोक्तफलदो भव ।।**

इस मन्त्र को मन ही मन में जपते हुए श्री विष्णु का ध्यान करते हुए स्नान करें, स्नान के समय बातचीत न करें।

दान—त्रिवेणी में माघ स्नान करके प्रतिदिन निर्धनों को तिल और शक्कर (चीनी) दान करें। इसमें ३ भाग तिल और चौथा भाग शक्कर होनी चाहिए। इस विषय में नारद पुराण का वाक्य है—

अहन्यहनि दातव्यास्तिलाः शर्करयान्विताः । त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्करयान्वितः ।।

इस समय तिल-शक्कर के लड्डू या तिल से बने खाद्य पदार्थ भी दान करें। इस पुण्यप्रद अवसर पर दान की भारी महिमा है। तिल, शक्कर के अलावा निर्धनों एवं संत महात्माओं को श्रद्धापूर्वक तिल निर्मित मिठाई, गर्म, रेशमी आदि वस्त्र, अन्न, स्वर्ण आदि का भी यथाशक्ति दान करें। यह दान कुम्भपर्व योगके दिन (६ फर. '८९ को) तो विशेष रूप से करना चाहिए। कुम्भ योग में कलशदान का भी माहात्म्य है।

कर्तव्य और अकर्तव्य—माघ स्नान के दिनों में इन्द्रियों का संयत रखकर नियम-पूर्वक रहना चाहिए। काम, क्रोध और लोभ से दूर रहें। किसी भी प्रकार के पाप की ओर प्रवृत्ति से बचें। माघ स्नानावधि में मूली, गाजर, शलगम आदि के प्रयोग का शास्त्रकारों ने निषेध किया है;—

माघे यत्नेन सन्त्याज्यं मूलकं मदिरोपमम् । पितृणां देवतानां च मूलकं नैव दापयेत् ।।'

माघ स्नान के दिनों में एक मास तक शीत से बचने के लिये अग्नि का सेवन न करें। अग्नि का सेवन केवल होम (यज्ञ) के लिये ही किया जाना चाहिये। ऐसा शास्त्र का आदेश है—

न वह्निं सेवयेत् स्नातोऽह्यस्नातोऽपि वरानने । होमार्थं सेवयेद् वह्निं शीतार्थं न कदाचन ।।

इस प्रकार शास्त्रोक्त विधि-निषेधों का अनुसरण करते हुये स्नान-दानादि द्वारा सर्वथा शुद्ध निष्पाप एवं पुण्य अन्तरात्मा लिये हुए श्रद्धालुओं को प्रयागराज से लौटकर भविष्य में किसी प्रकार का मानसिक, वाचिक एवं शारीरिक पाप करने से सर्वथा विमुख रहने का पूरा प्रयत्न करना चाहिये, ताकि कुम्भ जैसे महापर्व पर स्नान, जप, दानादि से अर्जित महान् पुण्य-संचय पुनः बिखर न जाए;—

"यत्नेन सञ्चितो रक्षन् धर्मार्थो नावसीदति"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.), सन् १९८७-८८ ई०

(१ जनवरी को अयनांश=२३°।४१'।२२")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८७ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८७ ई.
जनवरी १	८ १६ ४ ५०	१ ११ १८ १२	७ १ १३ २६	८ २१ १० २४	११ २६ ३२ ५२	९ १८ १९ ४३	८ १ ४६ ५१	११ ३ २८ ४२	-२३ ५	२५ ४३	४ ४०	१ जनवरी
१९८८ ई. २	८ १७ ५ ५७	१ २३ ४८ ५३	७ १ ५३ १२	८ २२ ४७ ५५	११ २६ ३६ २१	९ १९ ३३ ३४	८ १ ५३ ४७	११ ३ २५ ३२	-२३ ०	२७ ४७	४ ५७	२ १९८८ ई.
३	८ १८ ७ ६	२ ६ ९ ४२	७ २ ३३ १	८ २४ २५ ४६	११ २६ ४० २	९ २० ४७ २५	८ २ ० ४३	११ ३ २२ २१	-२२ ५५	२८ २६	५ ०	३
४	८ १९ ८ १५	२ १८ २१ ४३	७ ३ १२ ५१	८ २६ ३ ५४	११ २६ ४३ ५४	९ २२ १ १३	८ २ ७ ३७	११ ३ १९ १०	-२२ ४९	२७ ४१	४ ४९	४
५	८ २० ९ २२	३ ० २६ २	७ ३ ५२ ४०	८ २७ ४२ १३	११ २६ ४७ ५७	९ २३ १४ ५६	८ २ १४ २९	११ ३ १५ ५९	-२२ ४३	२५ ३८	४ २५	५
६	८ २१ १० ३१	३ १२ २२ ४१	७ ४ ३२ ३२	८ २९ २० ५०	११ २६ ५२ १३	९ २४ २८ ३९	८ २ २१ २१	११ ३ १२ ४८	-२२ ३७	२२ २८	३ ५०	६
७	८ २२ ११ ४०	३ २४ १३ ४४	७ ५ १२ २४	९ ० ५९ ३८	११ २६ ५६ ३९	९ २५ ४२ २१	८ २ २८ ११	११ ३ ९ ३८	-२२ ३०	१८ २३	३ ५	७
८	८ २३ १२ ४७	४ ६ १ ५६	७ ५ ५२ १६	९ २ ३८ ३५	११ २७ १ १७	९ २६ ५५ ५७	८ २ ३४ ५९	११ ३ ६ २७	-२२ २२	१३ ३०	२ १२	८
९	८ २४ १३ ५६	४ १७ ४९ ४१	७ ६ ३२ १०	९ ४ १७ ३९	११ २७ ६ ५	९ २८ ९ ३३	८ २ ४१ ४६	११ ३ ३ १६	-२२ १४	८ २१	१ १३	९
१०	८ २५ १५ ५	४ २९ ४१ १८	७ ७ १२ ५	९ ५ ५६ ४८	११ २७ ११ ५	९ २९ २३ ६	८ २ ४८ ३२	११ ३ ० ५	-२२ ६	२ ४७	० १०	१०
११	८ २६ १६ १२	५ ११ ४२ २	७ ७ ५२ ०	९ ७ ३५ ५२	११ २७ १६ १६	१० ० ३६ ३५	८ २ ५५ १५	११ २ ५६ ५४	-२१ ५७	- २ ५८	० ५४	११
जनवरी १२	८ २७ १७ २०	५ २३ ५६ ६	७ ८ ३१ ५७	९ ९ १४ ५२	११ २७ २१ ३७	१० १ ५० ३	८ ३ १ ५७	११ २ ५३ ४४	-२१ ४८	- ८ ४३	- १ ५६	१२ जनवरी
१३	८ २८ १८ २८	६ ६ २९ २३	७ ९ ११ ५४	९ १० ५३ ३६	११ २७ २७ १०	१० ३ ३ २७	८ ३ ८ ३७	११ २ ५० ३३	-२१ ३९	-१४ १६	- २ ५५	१३
१४	८ २९ १९ ३६	६ १९ २७ २७	७ ९ ५१ ५२	९ १२ ३१ ५७	११ २७ ३२ ५३	१० ४ १६ ४७	८ ३ १५ १५	११ २ ४७ २२	-२१ २९	-१९ २३	- ३ ४७	१४
१५	९ ० २० ४४	७ २ ५३ १३	७ १० ३१ ५२	९ १४ ९ ४८	११ २७ ३८ ४६	१० ५ ३० ६	८ ३ २१ ५१	११ २ ४४ ११	-२१ १८	-२३ ४४	- ४ २८	१५
१६	९ १ २१ ५१	७ १६ ४९ १३	७ ११ ११ ५२	९ १५ ४६ ५३	११ २७ ४४ ५०	१० ६ ४३ २२	८ ३ २८ २५	११ २ ४१ ०	-२१ ७	-२६ ५३	- ४ ५५	१६
१७	९ २ २२ ५९	८ १ १५ ७	७ ११ ५१ ५३	९ १७ २३ १	११ २७ ५१ ४	१० ७ ५६ ३४	८ ३ ३४ ५६	११ २ ३७ ५०	-२० ५६	-२८ २५	- ५ ५	१७
१८	९ ३ २४ ५	८ १६ ५ २३	७ १२ ३१ ५४	९ १८ ५७ ५२	११ २७ ५७ २८	१० ९ ९ ४२	८ ३ ४१ २६	११ २ ३४ ३९	-२० ४४	-२७ ५८	- ४ ५४	१८
१९	९ ४ २५ ११	९ १ १२ ५१	७ १३ ११ ५७	९ २० ३१ १०	११ २८ ४ २	१० १० २२ ४७	८ ३ ४७ ५३	११ २ ३१ २८	-२० ३२	-२५ २८	- ४ २४	१९
२०	९ ५ २६ १७	९ १६ २७ ५९	७ १३ ५२ १	९ २२ २ ३१	११ २८ १० ४७	१० ११ ३५ ४८	८ ३ ५४ १८	११ २ २८ १७	-२० २०	-२१ ८	- ३ ३४	२०
२१	९ ६ २७ २२	१० १ ३८ ४४	७ १४ ३२ ५	९ २३ ३१ ३०	११ २८ १७ ४१	१० १२ ४८ ४६	८ ४ ० ४१	११ २ २५ ७	-२० ७	-१५ २५	- २ २९	२१
२२	९ ७ २८ २६	१० १६ ३६ ८	७ १५ १२ १०	९ २४ ५७ ३८	११ २८ २४ ४५	१० १४ १ ३९	८ ४ ७ १	११ २ २१ ५६	-१९ ५४	- ८ ५१	- १ १५	२२
२३	९ ८ २९ ३०	११ १ १३ ४१	७ १५ ५२ १५	९ २६ २० २२	११ २८ ३१ ५८	१० १५ १४ २९	८ ४ १३ १९	११ २ १८ ४५	-१९ ४०	- १ ५८	० ३	२३
२४	९ ९ ३० ३३	११ १५ २६ १७	७ १६ ३२ २२	९ २७ ३९ ३	११ २८ ३९ २१	१० १६ २७ १४	८ ४ १९ ३३	११ २ १५ ३४	-१९ २६	४ ५०	१ १९	२४
२५	९ १० ३१ ३४	११ २९ १३ ३५	७ १७ १२ २९	९ २८ ५३ ४	११ २८ ४६ ५३	१० १७ ३९ ५५	८ ४ २५ ४६	११ २ १२ २३	-१९ १२	११ १२	२ २८	२५
२६	९ ११ ३२ ३६	० १२ ३७ २३	७ १७ ५२ ३७	१० ० १ ३८	११ २८ ५४ ३५	१० १८ ५२ ३२	८ ४ ३१ ५५	११ २ ९ १३	-१८ ५८	१६ ५३	३ २७	२६
२७	९ १२ ३३ ३६	० २५ ३९ १३	७ १८ ३२ ४५	१० १ ३ ५८	११ २९ २ २५	१० २० ५ ४	८ ४ ३८ २	११ २ ६ २	-१८ ४३	२१ ३७	४ १३	२७
२८	९ १३ ३४ ३४	१ ८ २३ २६	७ १९ १२ ५५	१० १ ५९ १५	११ २९ १० २५	१० २१ १७ ३१	८ ४ ४४ ५	११ २ २ ५१	-१८ २७	२५ १५	४ ४६	२८
२९	९ १४ ३५ ३२	१ २० ५२ १९	७ १९ ५३ ५	१० २ ४६ ४०	११ २९ १८ ३३	१० २२ २९ ५४	८ ४ ५० ६	११ १ ५९ ४०	-१८ १२	२७ ३५	५ ४	२९
३०	९ १५ ३६ २९	२ ३ ९ २४	७ २० ३३ १५	१० ३ २५ २२	११ २९ २६ ५१	१० २३ ४२ ११	८ ४ ५६ ४	११ १ ५६ २९	-१७ ५६	२८ ३२	५ ८	३०
३१	९ १६ ३७ २४	२ १५ १७ ४३	७ २१ १३ २६	१० ३ ५४ ३५	११ २९ ३५ १६	१० २४ ५४ २३	८ ५ १ ५८	११ १ ५३ १९	-१७ ३९	२८ ५	४ ५८	३१
फरवरी १	९ १७ ३८ १९	२ २७ १८ २४	७ २१ ५३ ३९	१० ४ १३ ३९	११ २९ ४४ ५१	१० २६ ६ ३१	८ ५ ७ ५०	११ १ ५० ८	-१७ २३	२६ १९	४ ३४	१ फरवरी
२	९ १८ ३९ ११	३ ९ १३ ४२	७ २२ ३३ ५१	१० ४ २१ ५९	११ २९ ५२ ३३	१० २७ १८ ३२	८ ५ १३ ३८	११ १ ४६ ५७	-१७ ६	२३ २३	३ ५९	२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घ. ३० मि., भा. स्टै. टा.), सन् १९८८ ई०

(१ फरवरी को अयनांश=२३°।४१'।२८")

तारीख		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
	३	९ १९ ४० ४	३ २१ ५ ४१	७ २३ १४ ४	१० ४ १९ १६	० ० १ २४	१० २८ ३० २९	८ ५ १९ २३	११ १ ४३ ४६	−१६ ४९	१९ २९	३ १४	३
	४	९ २० ४० ५५	४ २ ५४ ५९	७ २३ ५४ १८	१० ४ ५ २३	० ० १० २४	१० २९ ४२ २१	८ ५ २५ ५	११ १ ४० ३६	−१६ ३१	१४ ५०	२ २१	४
	५	९ २१ ४१ ४४	४ १४ ४३ ५५	७ २४ ३४ ३२	१० ३ ४० २६	० ० १९ ३१	११ ० ५४ ५	८ ५ ३० ४३	११ १ ३७ २५	−१६ १३	९ ३९	१ २१	५
	६	९ २२ ४२ ३३	४ २६ ३५ १६	७ २५ १४ ४८	१० ३ ५ १	० ० २८ ४६	११ २ ५ ४५	८ ५ ३६ १७	११ १ ३४ १४	−१५ ५५	४ ६	० १७	६
	७	९ २३ ४३ २२	५ ८ ३० ५२	७ २५ ५५ ४	१० २ १९ ५५	० ० ३८ ९	११ ३ १७ २०	८ ५ ४१ ४९	११ १ ३१ ३	−१५ ३७	− १ ३७	− ० ४८	७
	८	९ २४ ४४ ८	५ २० ३४ ३७	७ २६ ३५ २१	१० १ २६ १४	० ० ४७ ४०	११ ४ २८ ४८	८ ५ ४७ १६	११ १ २७ ५२	−१५ १८	− ७ २१	− १ ५२	८
	९	९ २५ ४४ ५३	६ २ ५० ५४	७ २७ १५ ३८	१० ० २५ ३६	० ० ५७ १८	११ ५ ४० ९	८ ५ ५२ ४०	११ १ २४ ४२	−१४ ५९	−१२ ५४	− २ ५१	९
	१०	९ २६ ४५ ३९	६ १५ २३ ५	७ २७ ५५ ५६	९ २९ १९ ३७	० १ ७ ४	११ ६ ५१ २५	८ ५ ५८ १	११ १ २१ ३१	−१४ ४०	−१८ ४	− ३ ४६	१०
	११	९ २७ ४६ २२	६ २८ १५ ५९	७ २८ ३६ १५	९ २८ १० १४	० १ १६ ५७	११ ८ २ ३४	८ ६ ३ १७	११ १ १८ २०	−१४ २१	−२२ ३४	− ४ २७	११
	१२	९ २८ ४७ ४	७ ११ ३४ ५	७ २९ १६ ३४	९ २६ ५९ २६	० १ २६ ५७	११ ९ १३ ३७	८ ६ ८ २९	११ १ १५ ९	−१४ १	−२६ ४	− ४ ५७	१२
	१३	९ २९ ४७ ४५	७ २५ १९ ५	७ २९ ५६ ५४	९ २५ ४९ ७	० १ ३७ ५	११ १० २४ ३३	८ ६ १३ ३८	११ १ ११ ५८	−१३ ४१	−२८ १०	− ५ १२	१३
	१४	१० ० ४८ २५	८ ९ ३२ १२	८ ० ३७ १५	९ २४ ४० ५९	० १ ४७ १९	११ ११ ३५ २२	८ ६ १८ ४३	११ १ ८ ४८	−१३ २१	−२८ ३२	− ५ ८	१४
फरवरी	१५	१० १ ४९ ४	८ २४ ११ ५९	८ १ १७ ३६	९ २३ ३६ ४७	० १ ५७ ४०	११ १२ ४६ ४	८ ६ २३ ४४	११ १ ५ ३७	−१३ १	−२९ ५७	− ४ ४५	१५ फरवरी
	१६	१० २ ४९ ४२	९ ९ ११ ५८	८ १ ५७ ५८	९ २२ ३७ ४०	० २ ८ ८	११ १३ ५६ ४०	८ ६ २८ ४०	११ १ २ २६	−१२ ४०	−२३ २६	− ४ २	१६
	१७	१० ३ ५० १८	९ २४ २४ २९	८ २ ३८ २०	९ २१ ४४ ४३	० २ १८ ४३	११ १५ ७ ७	८ ६ ३३ ३३	११ ० ५९ १५	−१२ २०	−१८ १६	− ३ १	१७
	१८	१० ४ ५० ५२	१० ९ ४० १३	८ ३ १८ ४३	९ २० ५८ ३९	० २ २९ २५	११ १६ १७ २६	८ ६ ३८ २१	११ ० ५६ ४	−११ ५९	−११ ५६	− १ ४७	१८
	१९	१० ५ ५१ २६	१० २४ ४७ ३८	८ ३ ५९ ७	९ २० १९ ५९	० २ ४० १२	११ १७ २७ ३८	८ ६ ४३ ५	११ ० ५२ ५४	−११ ३८	− ४ ५७	− ० २६	१९
	२०	१० ६ ५१ ५७	११ ९ ३८ २८	८ ४ ३९ ३१	९ १९ ४८ ५४	० २ ५१ ६	११ १८ ३७ ४१	८ ६ ४७ ४५	११ ० ४९ ४३	−११ १६	२ ११	० ५६	२०
	२१	१० ७ ५२ २७	११ २४ ६ ५३	८ ५ १९ ५५	९ १९ २५ २८	० ३ २ ७	११ १९ ४७ ३७	८ ६ ५२ २०	११ ० ४६ ३२	−१० ५५	९ १	२ १२	२१
	२२	१० ८ ५२ ५५	० ८ ८ १४	८ ६ ० २०	९ १९ ९ ३४	० ३ १३ १३	११ २० ५७ २३	८ ६ ५६ ५१	११ ० ४३ २१	−१० ३३	१५ १२	३ १७	२२
	२३	१० ९ ५३ २२	० २१ ४२ २४	८ ६ ४० ४५	९ १९ १ ०	० ३ २४ २५	११ २२ ७ २	८ ७ १ १७	११ ० ४० ११	−१० ११	२० २६	४ १०	२३
	२४	१० १० ५३ ४७	१ ४ ५१ २५	८ ७ २१ ११	९ १८ ५९ ३०	० ३ ३५ ४३	११ २३ १६ ३०	८ ७ ५ ३९	११ ० ३६ ०	− ९ ४९	२४ ३१	४ ४७	२४
	२५	१० ११ ५४ १०	१ १७ ३७ १२	८ ८ १ ३७	९ १९ ४ ३७	० ३ ४७ ७	११ २४ २५ ५०	८ ७ ९ ५६	११ ० ३३ ४९	− ९ २७	२७ १५	५ ९	२५
	२६	१० १२ ५४ ३१	२ ० ४ ६	८ ८ ४२ ३	९ १९ १६ ५	० ३ ५८ ३७	११ २५ ३५ ०	८ ७ १४ ९	११ ० ३० ३८	− ९ ५	२८ ३३	५ १६	२६
	२७	१० १३ ५४ ५०	२ १२ १६ ३९	८ ९ २२ २९	९ १९ ३३ २७	० ४ १० १२	११ २६ ४३ ०	८ ७ १८ १६	११ ० २७ २७	− ८ ४३	२८ २६	५ ८	२७
	२८	१० १४ ५५ ७	२ २४ १७ ४८	८ १० २ ५७	९ १९ ५६ २१	० ४ २१ ५३	११ २७ ५२ ५०	८ ७ २२ १९	११ ० २४ १७	− ८ २०	२६ ५८	४ ४७	२८
	२९	१० १५ ५५ २३	३ ६ ११ ४२	८ १० ४३ २४	९ २० २४ २३	० ४ ३३ ३८	११ २९ १ ३०	८ ७ २६ १७	११ ० २१ ६	− ७ ५८	२४ १८	४ १४	२९
मार्च	१	१० १६ ५५ ३६	३ १८ २ ३	८ ११ २३ ५१	९ २० ५७ १४	० ४ ४५ २९	० ० ९ ५९	८ ७ ३० ११	११ ० १७ ५५	− ७ ३५	२० ३७	३ २९	१ मार्च
	२	१० १७ ५५ ४७	३ २९ ५० ४१	८ १२ ४ १९	९ २१ ३४ ३०	० ४ ५७ २५	० १ १८ १८	८ ७ ३३ ५९	११ ० १४ ४४	− ७ १२	१६ ८	२ ३६	२
	३	१० १८ ५५ ५७	४ ११ ४० २९	८ १२ ४४ ४८	९ २२ १५ ५५	० ५ ९ २६	० २ २६ २६	८ ७ ३७ ४२	११ ० ११ ३४	− ६ ४९	११ २	१ ३६	३
	४	१० १९ ५६ ६	४ २३ ३४ ४	८ १३ २५ १७	९ २३ १ ११	० ५ २१ ३३	० ३ ३४ २३	८ ७ ४१ २१	११ ० ८ २३	− ६ २६	५ ३१	० ३२	४
	५	१० २० ५६ १०	५ ५ ३२ २४	८ १४ ५ ४५	९ २३ ४९ ५९	० ५ ३३ ४३	० ४ ४२ ७	८ ७ ४४ ५४	११ ० ५ १२	− ६ ३	० १४	० ३४	५
	६	१० २१ ५६ १५	५ १७ ३७ ५५	८ १४ ४६ १४	९ २४ ४२ ९	० ५ ४५ ५९	० ५ ४९ ४१	८ ७ ४८ २२	११ ० २ १	− ५ ४०	− ६ १	− १ ४०	६
	७	१० २२ ५६ १७	५ २९ ५३ ११	८ १५ २६ ४३	९ २५ ३७ २४	० ५ ५८ १९	० ६ ५७ ३	८ ७ ५१ ४५	१० २९ ५८ ५०	− ५ १६	−११ ४०	− २ ४२	७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ अप्रैल को अयनांशः २३°।४१'।३७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू.क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
मार्च ८	१० २३ ५६ १९	६ १२ १९ २८	८ १६ ७ १२	९ २६ ३५ ३१	० ६ १० ४४	० ८ ४ ११	८ ७ ५५ ३	१० २९ ५५ ४०	– ४ ५३	–१६ ५६	– ३ ३७	८ मार्च
९	१० २४ ५६ १६	६ २४ ५९ ४५	८ १६ ४७ ४२	९ २७ ३६ २२	० ६ २३ १३	० ९ ११ ८	८ ७ ५८ १५	१० २९ ५२ २९	– ४ ३०	–२१ ३६	– ४ २२	९
१०	१० २५ ५६ १२	७ ७ ५७ ९	८ १७ २८ १२	९ २८ ३९ ४५	० ६ ३५ ४६	० १० १७ ५२	८ ८ १ २३	१० २९ ४९ १८	– ४ ६	–२५ १९	– ४ ५९	१०
११	१० २६ ५६ ७	७ २१ ११ ७	८ १८ ८ ४१	९ २९ ४५ ३२	० ६ ४८ २४	० ११ २४ ३२	८ ८ ४ २५	१० २९ ४६ ७	– ३ ४३	–२७ ४८	– ५ १४	११
१२	१० २७ ५६ १	८ ४ ५० १२	८ १८ ४९ १२	१० ० ५३ ३५	० ७ १ ६	० १२ ३० ३९	८ ८ ७ २१	१० २९ ४२ ५६	– ३ १९	–२८ ४२	– ५ १६	१२
१३	१० २८ ५५ ५३	८ १८ ४९ ०	८ १९ २९ ४२	१० २ ३ ४९	० ७ १३ ५२	० १३ ३६ ४२	८ ८ १० १२	१० २९ ३९ ४६	– २ ५५	–२७ ४९	– ५ ०	१३
१४	१० २९ ५५ ४३	९ ३ १० ४७	८ २० १० १२	१० ३ १५ ५८	० ७ २६ ४१	० १४ ४२ ३१	८ ८ १२ ५८	१० २९ ३६ ३५	– २ ३२	–२५ ६	– ४ २४	१४
१५	११ ० ५५ ३२	९ १७ ५१ ४	८ २० ५० ४३	१० ४ ३० ८	० ७ ३९ ३५	० १५ ४८ ६	८ ८ १५ ३८	१० २९ ३३ २४	– २ ८	–२० ४१	– ३ ३१	१५
१६	११ १ ५५ १८	१० २ ४४ ४०	८ २१ ३१ १३	१० ५ ४६ ८	० ७ ५२ ३३	० १६ ५३ २५	८ ८ १८ १३	१० २९ ३० १३	– १ ४४	–१४ ५६	– २ २३	१६
१७	११ २ ५५ २	१० १७ ४५ ६	८ २२ ११ ४३	१० ७ ३ ५३	० ८ ५ ३४	० १७ ५८ २९	८ ८ २० ४२	१० २९ २७ ३	– १ २१	– ८ १५	– १ ४	१७
१८	११ ३ ५४ ४६	११ २ ४४ ४२	८ २२ ५२ १४	१० ८ २३ २३	० ८ १८ ३९	० १९ ३ १७	८ ८ २३ ५	१० २९ २३ ५२	० ५७	– १ ७	– ० १९	१८
१९	११ ४ ५४ २७	११ १७ ३३ ४७	८ २३ ३२ ४४	१० ९ ४४ ३०	० ८ ३१ ४७	० २० ७ ४९	८ ८ २५ २३	१० २९ २० ४१	० ३३	५ ५९	१ ३९	१९
२०	११ ५ ५४ ५	० २ ५ ३४	८ २४ १३ १४	१० ११ ७ १३	० ८ ४४ ५९	० २१ १२ ३	८ ८ २७ ३६	१० २९ १७ ३०	० ९	१२ ३८	२ ५२	२०
२१	११ ६ ५३ ४३	० १६ १५ १०	८ २४ ५३ ४५	१० १२ ३१ ३०	० ८ ५८ १४	० २२ १६ १	८ ८ २९ ४२	१० २९ १४ १९	० १४	१८ २८	३ ५२	२१
२२	११ ७ ५३ १८	० २९ ५८ २६	८ २५ ३४ १५	१० १३ ५७ १८	० ९ ११ ३२	० २३ १९ ४०	८ ८ ३१ ४३	१० २९ ११ ९	० ३८	२३ ९	४ ३६	२२
२३	११ ८ ५२ ५०	१ १३ १५ २५	८ २६ १४ ४४	१० १५ २४ ३३	० ९ २४ ५३	० २४ २३ १	८ ८ ३३ ३८	१० २९ ७ ५८	१ २	२६ २९	५ ५	२३
२४	११ ९ ५२ २१	१ २६ ८ ११	८ २६ ५५ १३	१० १६ ५३ १८	० ९ ३८ १७	० २५ २६ ३	८ ८ ३५ २७	१० २९ ४ ४७	१ २५	२८ १९	५ १७	२४
२५	११ १० ५१ ४९	२ ८ ३८ ४९	८ २७ ३५ ४२	१० १८ २३ २७	० ९ ५१ ४४	० २६ २८ ४५	८ ८ ३७ ११	१० २९ १ ३६	१ ४९	२८ ३८	५ १३	२५
२६	११ ११ ५१ १६	२ २० ५१ ५७	८ २८ १६ ११	१० १९ ५५ ३	० १० ५ १४	० २७ ३१ ७	८ ८ ३८ ४८	१० २८ ५८ २५	२ १२	२७ ३२	४ ५५	२६
२७	११ १२ ५० ४०	३ २ ५२ ३८	८ २८ ५६ ३९	१० २१ २८ १	० १० १८ ४७	० २८ ३३ ८	८ ८ ४० २०	१० २८ ५५ १५	२ ३६	२५ १०	४ २४	२७
२८	११ १३ ५० १	३ १४ ४४ ३१	८ २९ ३७ ७	१० २३ २ २४	० १० ३२ २२	० २९ ३४ ४७	८ ८ ४१ ४६	१० २८ ५२ ४	२ ५९	२१ ४४	३ ४३	२८
२९	११ १४ ४९ २१	३ २६ ३२ ३७	९ ० १७ ३५	१० २४ ३८ १२	० १० ४६ ०	१ ० ३६ ४	८ ८ ४३ ६	१० २८ ४८ ५३	३ २३	१७ २७	२ ५२	२९
३०	११ १५ ४८ ३७	४ ८ २१ ३०	९ ० ५८ १	१० २६ १५ २०	० १० ५९ ४१	१ १ ३६ ५८	८ ८ ४४ २१	१० २८ ४५ ४२	३ ४६	१२ ३१	१ ५४	३०
३१	११ १६ ४७ ५२	४ २० १३ ४९	९ १ ३८ २७	१० २७ ५३ ५४	० ११ १३ २३	१ २ ३७ २८	८ ८ ४५ २९	१० २८ ४२ ३१	४ ९	७ ६	० ५१	३१
अप्रैल १	११ १७ ४७ ५	५ २ १३ ५	९ २ १८ ५३	१० २९ ३३ ५२	० ११ २७ ८	१ ३ ३७ ३५	८ ८ ४६ ३१	१० २८ ३९ २१	४ ३३	१ २३	० १५	१ अप्रैल
२	११ १८ ४६ १४	५ १४ २२ ९	९ २ ५९ १८	११ १ १५ १२	० ११ ४० ५६	१ ४ ३७ १५	८ ८ ४७ २८	१० २८ ३६ १०	४ ५६	– ४ २७	– १ २२	२
३	११ १९ ४५ २३	५ २६ ४१ ४५	९ ३ ३९ ४२	११ २ ५७ ५८	० ११ ५४ ४५	१ ५ ३६ ३१	८ ८ ४८ १८	१० २८ ३२ ५९	५ १९	–१० १३	– २ २५	३
४	११ २० ४४ २९	६ ९ १३ ३५	९ ४ २० ७	११ ४ ४२ ११	० १२ ८ ३७	१ ६ ३५ २१	८ ८ ४९ ३	१० २८ २९ ४८	५ ४२	–१५ ३९	– ३ २२	४
५	११ २१ ४३ ३२	६ २१ ५८ ५३	९ ५ ० २९	११ ६ २७ ४५	० १२ २२ ३०	१ ७ ३३ ४२	८ ८ ४९ ४१	१० २८ २६ ३७	६ ५	–२० ३२	– ४ १०	५
६	११ २२ ४२ ३५	७ ४ ५७ ७	९ ५ ४० ५१	११ ८ १४ ५०	० १२ ३६ २६	१ ८ ३१ ३६	८ ८ ५० १४	१० २८ २३ २७	६ २७	–२४ ३१	– ४ ४७	६
७	११ २३ ४१ ३६	७ १८ ९ २	९ ६ २१ १३	११ १० ३ २२	० १२ ५० २३	१ ९ २९ १	८ ८ ५० ४१	१० २८ २० १६	६ ५०	–२७ १८	– ५ ८	७
८	११ २४ ४० ३३	८ १ ३५ २५	९ ७ १ ३३	११ ११ ५३ १८	० १३ ४ २२	१ १० २५ ५४	८ ८ ५१ १	१० २८ १७ ५	७ १२	–२८ ३५	– ५ १४	८
९	११ २५ ३९ ३०	८ १५ १५ १७	९ ७ ४१ ५३	११ १३ ४४ ४७	० १३ १८ २३	१ ११ २२ १९	८ ८ ५१ १६	१० २८ १३ ५४	७ ३५	–२८ ९	– ५ २	९
१०	११ २६ ३८ २६	८ २९ ९ ६	९ ८ २२ १३	११ १५ ३७ ४३	० १३ ३२ २६	१ १२ १८ ११	८ ८ ५१ २५	१० २८ १० ४४	७ ५७	–२५ ५८	– ४ ३२	१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ मई को अयनांशः २३°४१'४१")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू.क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
अप्रैल ११	११ २७ ३७ १७	९ १३ १६ ५५	९ ९ २ ३०	११ १७ ३२ ६	० १३ ४६ ३०	१ १३ १३ २८	८ ८ ५१ २८	१० २८ ७ ३३	८ १९	-२२ १०	- ३ ४६	११ अप्रैल
१२	११ २८ ३६ १०	९ २७ ३६ १९	९ ९ ४२ ४७	११ १९ २७ ५९	० १४ ० ३६	१ १४ ८ १४	८ ८ ५१ २५	१० २८ ४ २२	८ ४१	-१६ ५९	- २ ४४	१२
१३	११ २९ ३५ ०	१० १२ ५ २७	९ १० २३ २	११ २१ २५ २०	० १४ १४ ४३	१ १५ २ २४	८ ८ ५१ १६	१० २८ १ ११	९ ३	-१० ४९	- १ ३२	१३
१४	० ० ३३ ४६	१० २६ ४१ ९	९ ११ ३ १७	११ २३ २४ ५	० १४ २८ ५१	१ १५ ५५ ५५	८ ८ ५१ १	१० २७ ५८ ०	९ २५	- ४ १	० १३	१४
१५	० १ ३२ ३३	११ ११ १७ १२	९ ११ ४३ ३०	११ २५ २४ १७	० १४ ४३ १	१ १६ ४८ ५०	८ ८ ५० ४०	१० २७ ५४ ५०	९ ४६	३ ०	१ ६	१५
१६	० २ ३१ १८	११ २५ ४८ १३	९ १२ २३ ४२	११ २७ २५ ४९	० १४ ५७ १३	१ १७ ४१ ६	८ ८ ५० १३	१० २७ ५१ ३९	१० ७	९ ४९	२ २१	१६
१७	० ३ २९ ५९	० १० ८ ३५	९ १३ ३ ५२	११ २९ २८ ३८	० १५ ११ २४	१ १८ ३२ ४०	८ ८ ४९ ४०	१० २७ ४८ २८	१० २९	१६ १	३ २५	१७
१८	० ४ २८ ४१	० २४ ११ ३३	९ १३ ४४ २	० १ ३२ ४१	० १५ २५ ३८	१ १९ २३ ३३	८ ८ ४९ २	१० २७ ४५ १७	१० ५०	२१ १६	४ १६	१८
१९	० ५ २७ १९	१ ७ ५३ ३३	९ १४ २४ ९	० ३ ३७ ५०	० १५ ३९ ५२	१ २० १३ ४०	८ ८ ४८ १८	१० २७ ४२ ७	११ ११	२५ १४	४ ५१	१९
२०	० ६ २५ ५६	१ २१ १२ ५४	९ १५ ४ १६	० ५ ४४ ०	० १५ ५४ ७	१ २१ ३ ३	८ ८ ४७ २७	१० २७ ३८ ५६	११ ३१	२७ ४२	५ ८	२०
२१	० ७ २४ ३१	२ ४ ८ २०	९ १५ ४४ २०	० ७ ५० ५६	० १६ ८ २२	१ २१ ५१ ३८	८ ८ ४६ ३१	१० २७ ३५ ४५	११ ५२	२८ ३५	५ १०	२१
२२	० ८ २३ ३	२ १६ ४२ १२	९ १६ २४ २२	० ९ ५८ ३४	० १६ २२ ३९	१ २२ ३९ २४	८ ८ ४५ ३०	१० २७ ३२ ३४	१२ १२	२७ ५७	४ ५६	२२
२३	० ९ २१ ३४	२ २८ ५८ १४	९ १७ ४ २३	० १२ ६ ३९	० १६ ३६ ५६	१ २३ २६ १९	८ ८ ४४ २२	१० २७ २९ २३	१२ ३२	२५ ५७	४ २९	२३
२४	० १० २० २	३ १० ५९ ४५	९ १७ ४४ २१	० १४ १४ ५६	० १६ ५१ १४	१ २४ १२ २०	८ ८ ४३ ९	१० २७ २६ १३	१२ ५२	२२ ४८	३ ५०	२४
२५	० ११ १८ २८	३ २२ ५२ ९	९ १८ २४ १८	० १६ २३ १०	० १७ ५ ३२	१ २४ ५७ २६	८ ८ ४१ ५१	१० २७ २३ २	१३ १२	१८ ४५	३ २	२५
२६	० १२ १६ ५३	४ ४ ४१ २	९ १९ ४ १३	० १८ ३१ ७	० १७ १९ ५०	१ २५ ४१ ३५	८ ८ ४० २६	१० २७ १९ ५१	१३ ३१	१४ ०	२ ६	२६
२७	० १३ १५ १४	४ १६ ३० ३१	९ १९ ४४ ५	० २० ३८ २५	० १७ ३४ ९	१ २६ २४ ४५	८ ८ ३८ ५७	१० २७ १६ ४०	१३ ५०	८ ४४	१ ५	२७
२८	० १४ १३ ३४	४ २८ २५ ५०	९ २० २३ ५६	० २२ ४४ ४९	० १७ ४८ २८	१ २७ ६ ५१	८ ८ ३७ २१	१० २७ १३ २९	१४ ९	३ ८	० १	२८
२९	० १५ ११ ५२	५ १० ३१ ३६	९ २१ ३ ४४	० २४ ५० ०	० १८ २ ४७	१ २७ ४७ ५४	८ ८ ३५ ४०	१० २७ १० १९	१४ २८	- २ ४०	- १ ४	२९
३०	० १६ १० ८	५ २२ ५० ११	९ २१ ४३ २९	० २६ ५३ ३८	० १८ १७ ६	१ २८ २७ ५१	८ ८ ३३ ५४	१० २७ ७ ८	१४ ४७	- ८ २८	- २ ७	३०
मई १	० १७ ८ २१	६ ५ २४ ४९	९ २२ २३ १३	० २८ ५५ २६	० १८ ३१ २६	१ २९ ६ ३८	८ ८ ३२ ३	१० २७ ३ ५७	१५ ५	-१४ ३	- ३ ५	१ मई
२	० १८ ६ ३४	६ १८ १५ ३१	९ २३ २ ५३	१ ० ५५ ८	० १८ ४५ ४५	१ २९ ४४ १४	८ ८ ३० ६	१० २७ ० ४६	१५ २३	-१९ ९	- ३ ५५	२
३	० १९ ४ ४४	७ १ २२ ३८	९ २३ ४२ ३१	१ २ ५२ २६	० १९ ० ४	२ ० २० ३४	८ ८ २८ ४	१० २६ ५७ ३६	१५ ४१	-२३ २८	- ४ ३३	३
४	० २० २ ५२	७ १४ ४५ २६	९ २४ २२ ६	१ ४ ४७ ८	० १९ १४ २३	२ ० ५५ ३८	८ ८ २५ ५६	१० २६ ५४ २५	१५ ५८	-२६ ३७	- ४ ५८	५
५	० २१ ० ५९	७ २८ २० ४८	९ २५ १ ३८	१ ६ ३९ ३	० १९ २८ ४२	२ १ २९ २२	८ ८ २३ ४४	१० २६ ५१ १४	१६ १५	-२८ १८	- ५ ६	४
६	० २१ ५९ ४	८ १२ ६ ५१	९ २५ ४१ ७	१ ८ २७ ५४	० १९ ४३ १	२ २ १ ४३	८ ८ २१ २६	१० २६ ४८ ३	१६ ३२	-२८ १५	- ४ ५७	६
७	० २२ ५७ ८	८ २६ १ ४७	९ २६ २० ३४	१ १० १३ २६	० १९ ५७ १९	२ २ ३२ ३५	८ ८ १९ ४	१० २६ ४४ ५२	१६ ४९	-२६ २६	- ४ ३०	७
८	० २३ ५५ ११	९ १० २ २३	९ २६ ५९ ५७	१ ११ ५६ ०	० २० ११ ३८	२ ३ २ १	८ ८ १६ ३६	१० २६ ४१ ४२	१७ ५	-२२ ५९	- ३ ४७	८
९	० २४ ५३ १०	९ २४ ७ ३६	९ २७ ३९ १७	१ १३ ३४ ५७	० २० २५ ५५	२ ३ २९ ५३	८ ८ १४ ४	१० २६ ३८ ३१	१७ २२	-१८ ११	- २ ५०	९
१०	० २५ ५१ १०	१० ८ १६ ४५	९ २८ १८ ३३	१ १५ १० २४	० २० ४० १२	२ ३ ५६ १०	८ ८ ११ २७	१० २६ ३५ २०	१७ ३७	-१२ २१	- १ ४२	१०
११	० २६ ४९ ९	१० २२ २७ २८	९ २८ ५७ ४६	१ १६ ४२ १५	० २० ५४ २९	२ ४ २० ४९	८ ८ ८ ४५	१० २६ ३२ ९	१७ ५३	- ५ ५३	० २८	११
१२	० २७ ४७ ६	११ ६ ३८ ४७	९ २९ ३६ ५६	१ १८ १० २४	० २१ ८ ४५	२ ४ ४३ ४१	८ ८ ५ ५८	१० २६ २८ ५८	१८ ८	० ५२	० ४८	१२
१३	० २८ ४५ २	११ २० ४९ ३	१० ० १६ ०	१ १९ ३४ ४७	० २१ २२ ०	२ ५ ४ ४९	८ ८ ३ ७	१० २६ २५ ४८	१८ २३	७ ३५	२ ०	१३
१४	० २९ ४२ ५७	० ४ ५४ ७	१० ० ५५ २	१ २० ५५ २३	० २१ ३७ १४	२ ५ २४ ८	८ ८ ० ११	१० २६ २२ ३७	१८ ३८	१३ ५२	३ ५	१४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ जून को अयनांश: २३°।४१'।४६")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
मई १५	१ ० ४० ५०	० १८ ५० ५१	१० १ ३४ ०	१ २२ १२ ६	० २१ ५१ २८	२ ५ ४१ ३२	८ ७ ५७ ११	१० २६ १९ २६	१८ ५२	१९ २३	३ ५८	१५ मई
१६	१ १ ३८ ४१	१ २ ३५ ५०	१० २ १२ ५३	१ २३ २४ ५३	० २२ ५ ४०	२ ५ ५६ ५७	८ ७ ५४ ६	१० २६ १६ १५	१९ ६	२३ ४८	४ ३६	१६
१७	१ २ ३६ ३३	१ १६ ४ २३	१० २ ५१ ४२	१ २४ ३३ ४२	० २२ १९ ५२	२ ६ १० २४	८ ७ ५० ५७	१० २६ १३ ५	१९ २०	२६ ५०	४ ५८	१७
१८	१ ३ ३४ २१	१ २९ १४ ३१	१० ३ ३० २७	१ २५ ३८ २७	० २२ ३४ ३	२ ६ २१ ४४	८ ७ ४७ ४४	१० २६ ९ ५४	१९ ३३	२८ १८	५ ३	१८
१९	१ ४ ३२ ९	२ १२ ५ ३८	१० ४ ९ ६	१ २६ ३९ ६	० २२ ४८ १२	२ ६ ३० ५८	८ ७ ४४ २७	१० २६ ६ ४३	१९ ४६	२८ ११	४ ५३	१९
२०	१ ५ २९ ५६	२ २४ ३७ १५	१० ४ ४७ ४२	१ २७ ३५ ३६	० २३ २ २०	२ ६ ३८ ०	८ ७ ४१ ६	१० २६ ३ ३२	१९ ५९	२६ ३७	४ २८	२०
२१	१ ६ २७ ४०	३ ६ ५२ ३	१० ५ २६ १२	१ २८ २७ ५०	० २३ १६ २७	२ ६ ४२ ४२	८ ७ ३७ ४१	१० २६ ० २१	२० ११	२३ ४८	३ ५२	२१
२२	१ ७ २५ २३	३ १८ ५३ ५७	१० ६ ४ ३७	१ २९ १५ ४५	० २३ ३० ३२	२ ६ ४५ १२	८ ७ ३४ १३	१० २५ ५७ ११	२० २३	१९ ५९	३ ६	२२
२३	१ ८ २३ ५	४ ० ४६ २६	१० ६ ४२ ५८	१ २९ ५९ २०	० २३ ४४ ३६	२ ६ ४५ २०	८ ७ ३० ४१	१० २५ ५३ ०	२० ३५	१५ २६	२ १२	२३
२४	१ ९ २० ४५	४ १२ ३५ २	१० ७ २१ १२	२ ० ३८ २५	० २३ ५८ ३९	२ ६ ४३ ४	८ ७ २७ ५	१० २५ ५० ४९	२० ४६	१० २०	१ १३	२४
२५	१ १० १८ २४	४ २४ २५ ३८	१० ७ ५९ २१	२ १ १३ १	० २४ १२ ३९	२ ६ ३८ २३	८ ७ २३ २६	१० २५ ४७ ३८	२० ५७	४ ५१	० ११	२५
२६	१ ११ १६ १	५ ६ २२ ३९	१० ८ ३७ २५	२ १ ४३ ४	० २४ २६ ३९	२ ६ ३१ १९	८ ७ १९ ४४	१० २५ ४४ २७	२१ ८	० ५१	० ५३	२६
२७	१ १२ १३ ३६	५ १८ ३१ ३९	१० ९ १५ २२	२ २ ८ २६	० २४ ४० ३६	२ ६ २१ ४६	८ ७ १५ ५८	१० २५ ४१ १७	२१ १८	− ६ ३६	−१ ५५	२७
२८	१ १३ ११ १०	६ ० ५७ २९	१० ९ ५३ १३	२ २ २९ १०	० २४ ५४ ३१	२ ६ ९ ५०	८ ७ १२ ९	१० २५ ३८ ६	२१ २८	−१२ १४	−२ ५२	२८
२९	१ १४ ८ ४२	६ १३ ४२ २५	१० १० ३० ५९	२ २ ४५ ११	० २५ ८ २५	२ ५ ५५ २२	८ ७ ८ १८	१० २५ ३४ ५५	२१ ३७	−१७ ३०	−३ ४३	२९
३०	१ १५ ६ १४	६ २६ ४८ ३७	१० ११ ८ ३८	२ २ ५६ ३२	० २५ २२ १६	२ ५ ३८ ३७	८ ७ ४ २३	१० २५ ३१ ४४	२१ ४६	−२२ ६	−४ २३	३०
३१	१ १६ ३ ४४	७ १० १६ २७	१० ११ ४६ १०	२ ३ ३ ११	० २५ ३६ ६	२ ५ १९ ३२	८ ७ ० २६	१० २५ २८ ३३	२१ ५५	−२५ ४१	−४ ५०	३१
जून १	१ १७ १ १२	७ २४ २ ४३	१० १२ २३ ३५	२ ३ ५ १३	० २५ ४९ ५३	२ ४ ५८ ६	८ ६ ५६ २६	१० २५ २५ २३	२२ ३	−२७ ५२	−५ १	१ जून
२	१ १७ ५८ ४१	८ ८ ४ ९	१० १३ ० ५४	२ ३ २ ४१	० २६ ३ ३९	२ ४ ३४ ३१	८ ६ ५२ २४	१० २५ २२ १२	२२ ११	−२८ १९	−४ ५४	२
३	१ १८ ५६ ८	८ २२ १६ ३०	१० १३ ३८ ६	२ २ ५५ ४७	० २६ १७ २२	२ ४ ८ ४५	८ ६ ४८ १९	१० २५ १९ १	२२ १९	−२६ ५६	−४ २९	३
४	१ १९ ५३ ३३	९ ६ ३३ ३१	१० १४ १५ ९	२ २ ४४ ३३	० २६ ३१ ३	२ ३ ४१ ३	८ ६ ४४ १२	१० २५ १५ ५०	२२ २६	−२३ ४७	−३ ४७	४
५	१ २० ५० ५९	९ २० ५१ १४	१० १४ ५२ ५	२ २ २९ २१	० २६ ४४ ४१	२ ३ ११ ३२	८ ६ ४० ३	१० २५ १२ ४०	२२ ३३	−१९ ११	−२ ५०	५
६	१ २१ ४८ २४	१० ५ ६ ४५	१० १५ २८ ५३	२ २ १० २३	० २६ ५८ १८	२ २ ४० १८	८ ६ ३५ ५१	१० २५ ९ २९	२२ ३९	−१३ ३०	−१ ४४	६
७	१ २२ ४५ ४७	१० १९ १६ ३९	१० १६ ५ ३३	२ १ ४७ ५५	० २७ ११ ५१	२ २ ७ २७	८ ६ ३१ ३८	१० २५ ६ १८	२२ ४५	− ७ ९	० ३१	७
८	१ २३ ४३ १०	११ ३ २० २०	१० १६ ४२ ५	२ १ २२ २६	० २७ २५ २३	२ १ ३३ २२	८ ६ २७ २३	१० २५ ३ ७	२२ ५१	० ३०	० ४४	८
९	१ २४ ४० ३४	११ १७ १७ ४१	१० १७ १८ २०	२ ५४ १६	० २७ ३८ ५१	२ ० ५८ ९	८ ६ २३ ६	१० २४ ५९ ५६	२२ ५६	६ ७	१ ५५	९
१०	१ २५ ३७ ५५	० १ ७ ६	१० १७ ५४ ४१	२ ० २३ ५६	० २७ ५२ १७	२ ० २१ ५९	८ ६ १८ ४८	१० २४ ५६ ४६	२३ १	१२ २३	२ ५८	१०
११	१ २६ ३५ १७	० १४ ४८ २१	१० १८ ३० ४६	१ २९ ५१ ५४	० २८ ५ ४०	१ २९ ४५ ९	८ ६ १४ २८	१० २४ ५३ ३५	२३ ५	१७ ५९	३ ५१	११
१२	१ २७ ३२ ३९	० २८ २० ४५	१० १९ ६ ४१	१ २९ १८ ४७	० २८ १९ १	१ २९ ७ ४७	८ ६ १० ७	१० २४ ५० २४	२३ ९	२२ ३७	४ २९	१२
१३	१ २८ २९ ५९	१ ११ ४१ ३३	१० १९ ४२ २६	१ २८ ४५ ३	० २८ ३२ १८	१ २८ ३० १३	८ ६ ५ ४५	१० २४ ४७ १३	२३ १३	२६ ०	४ ५३	१३
१४	१ २९ २७ २०	१ २४ ४९ ०	१० २० १८ २	१ २८ ११ २३	० २८ ४५ ३३	१ २७ ५२ ४३	८ ६ १ २२	१० २४ ४४ २	२३ १६	२७ ५६	५ ०	१४
१५	२ ० २४ ४०	२ ७ ४३ २९	१० २० ५३ २७	१ २७ ३८ १४	० २८ ५८ ४४	१ २७ १५ २४	८ ५ ५६ ५८	१० २४ ४० ५२	२३ १९	२८ १८	४ ५२	१५
१६	२ १ २१ ५९	२ २० २१ ४२	१० २१ २८ ४२	१ २७ ६ १८	० २९ ११ ५३	१ २६ ३८ ३५	८ ५ ५२ ३३	१० २४ ३७ ४१	२३ २१	२७ १०	४ ३०	१६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ जुलाई को अयनांशः २३°।४१'।५०")

तारीख		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू.क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. त्रि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
जून	१७	२ २ १९ १८	३ २ ४५ २०	१० २२ ३ ४५	१ २६ ३६ २	० २९ २४ ५८	१ २६ २ ३२	८ ५ ४८ ७	१० २४ ३४ ३०	२३ २३	२४ ४२	३ ५५	१७ जून
	१८	२ ३ १६ ३६	३ १४ ५४ ४४	१० २२ ३८ ३९	१ २६ ७ ५९	० २९ ३७ ०	१ २५ २७ २१	८ ५ ४३ ४१	१० २४ ३१ १९	२३ २४	२१ ९	३ १०	१८
	१९	२ ४ १३ ५३	३ २६ ५२ ५८	१० २३ १३ २०	१ २५ ४२ ४०	० २९ ५० ५८	१ २४ ५३ २४	८ ५ ३९ १५	१० २४ २८ ८	२३ २५	१६ ४७	२ १७	१९
	२०	२ ५ ११ ११	४ ८ ४४ ९	१० २३ ४७ ४९	१ २५ २० २४	१ ० ३ ५३	१ २४ २० ४६	८ ५ ३४ ४९	१० २४ २४ ५८	२३ २६	११ ४९	१ १८	२०
	२१	२ ६ ८ २६	४ २० ३१ ४६	१० २४ २२ ७	१ २५ १ ३८	१ ० १६ ४४	१ २३ ४९ ३१	८ ५ ३० २३	१० २४ २१ ४७	२३ २६	६ २७	० १६	२१
	२२	२ ७ ५ ४१	५ २ २१ १९	१० २४ ५६ १२	१ २४ ४६ ४२	१ ० २९ ३२	१ २३ २० ६	८ ५ २५ ५६	१० २४ १८ ३६	२३ २६	० ५१	० ४७	२२
	२३	२ ८ २ ५६	५ १४ १८ ४२	१० २५ ३० ४	१ २४ ३५ ५३	१ ० ४२ १६	१ २२ ५२ ३०	८ ५ २१ ३०	१० २४ १५ २५	२३ २६	– ४ ५०	– १ ४८	२३
	२४	२ ९ ० १०	५ २६ २८ २०	१० २६ ३ ४४	१ २४ २९ १९	१ ० ५४ ५६	१ २२ २६ ४८	८ ५ १७ ५	१० २४ १२ १५	२३ २५	–१० २७	– २ ४६	२४
	२५	२ ९ ५७ २३	६ ८ ५५ ४६	१० २६ ३७ ९	१ २४ २७ २०	१ १ ७ ३२	१ २२ ३ १०	८ ५ १२ ४०	१० २४ ९ ४	२३ २३	–१५ ४७	– ३ ३७	२५
	२६	२ १० ५४ ३६	६ २१ ४५ ४६	१० २७ १० २२	१ २४ २९ ५७	१ १ २० ४	१ २१ ४१ ४५	८ ५ ८ १५	१० २४ ५ ५३	२३ २२	–२० ३६	– ४ १८	२६
	२७	२ ११ ५१ ४८	७ ५ ० १	१० २७ ४३ २०	१ २४ ३७ १८	१ १ ३२ ३२	१ २१ २२ ३२	८ ५ ३ ५१	१० २४ २ ४२	२३ १९	–२४ ३३	– ४ ४८	२७
	२८	२ १२ ४८ ०	७ १८ ३९ ४५	१० २८ १६ ४	१ २४ ४९ २८	१ १ ४४ ५६	१ २१ ५ ३९	८ ४ ५९ २९	१० २३ ५९ ३१	२३ १७	–२७ १६	– ५ २	२८
	२९	२ १३ ४६ १०	८ २ ४३ ४७	१० २८ ४८ ३२	१ २५ ६ २९	१ १ ५७ १६	१ २० ५१ ९	८ ४ ५५ ७	१० २३ ५६ २१	२३ १४	–२८ २२	– ४ ५८	२९
	३०	२ १४ ४३ २१	८ १७ ६ ४०	१० २९ २० ४६	१ २५ २८ १९	१ २ ९ ३१	१ २० ३८ ५४	८ ४ ५० ४७	१० २३ ५३ १०	२३ १०	–२७ ३५	– ४ ३६	३०
जुलाई	१	२ १५ ४० ३२	९ १ ४२ ४०	१० २९ ५२ ४३	१ २५ ५५ १	१ २ २१ ४३	१ २० २९ ९	८ ४ ४६ २७	१० २३ ४९ ५९	२३ ७	–२४ ५५	– ३ ५६	१ जुलाई
	२	२ १६ ३७ ४२	९ १६ २५ ३	११ ० २४ २४	१ २६ २६ ३२	१ २ ३३ ४९	१ २० २१ ४९	८ ४ ४२ ९	१० २३ ४६ ४८	२३ २	–२० ३५	– २ ५९	२
	३	२ १७ ३४ ५३	१० १ ५ ३०	११ ० ५५ ५०	१ २७ २ ४८	१ २ ४५ ५२	१ २० १६ ४९	८ ४ ३७ ५३	१० २३ ४३ ३७	२२ ५८	–१५ ०	– १ ५१	३
	४	२ १८ ३२ ४	१० १५ ३८ ४०	११ १ २६ ५७	१ २७ ४३ ५१	१ २ ५७ ४९	१ २० १४ १४	८ ४ ३३ ३८	१० २३ ४० २७	२२ ५३	– ८ ३७	० ३६	५
	५	२ १९ २९ १३	११ ० ० ५८	११ १ ५७ ४७	१ २८ २९ ३३	१ ३ ९ ४२	१ २० १३ ५५	८ ४ २९ २६	१० २३ ३७ १६	२२ ४७	– १ ५२	० ४१	४
	६	२ २० २६ २५	११ १४ ८ ५७	११ २ २८ १८	१ २९ १९ ५५	१ ३ २१ ३१	१ २० १७ ०	८ ४ २५ १५	१० २३ ३४ ५	२२ ४१	४ ५२	१ ५४	६
	७	२ २१ २३ ३७	११ २८ २ २६	११ २ ५८ ३१	२ ० १४ ५२	१ ३ ३३ १४	१ २० २० २२	८ ४ २१ ६	१० २३ ३० ५४	२२ ३५	११ १४	२ ५९	७
	८	२ २२ २० ४८	० ११ ४२ ७	११ ३ २८ २५	२ १ १४ १९	१ ३ ४४ ५२	१ २० २६ ५५	८ ४ १६ ५९	१० २३ २७ ४४	२२ २९	१६ ५८	३ ५२	८
	९	२ २३ १८ १	० २५ ७ २९	११ ३ ५७ ५८	२ २ १८ १६	१ ३ ५६ २६	१ २० ३५ ३८	८ ४ १२ ५४	१० २३ २४ ३३	२२ २२	२१ ४७	४ ३२	९
	१०	२ २४ १५ १५	१ ८ १९ ४१	११ ४ २७ १२	२ ३ २६ ३७	१ ४ ७ ५५	१ २० ४६ ३०	८ ४ ८ ५२	१० २३ २१ २२	२२ १४	२५ २४	४ ५६	१०
	११	२ २५ १२ २७	१ २१ १९ ४२	११ ४ ५६ ५	२ ४ ३९ १७	१ ४ १९ १८	१ २० ५९ २५	८ ४ ४ ५२	१० २३ १८ ११	२२ ६	२७ ३९	५ ५	११
	१२	२ २६ ९ ४१	२ ४ ६ ४२	११ ५ २४ ३५	२ ५ ५६ १६	१ ४ ३० ३६	१ २१ १४ २१	८ ४ ० ५५	१० २३ १५ ०	२१ ५८	२८ २३	४ ५८	१२
	१३	२ २७ ६ ५६	२ १६ ४१ २२	११ ५ ५२ ४५	२ ७ १७ २८	१ ४ ४१ ४९	१ २१ ३१ १४	८ ३ ५७ १	१० २३ ११ ५०	२१ ५०	२७ ३८	४ ३७	१३
	१४	२ २८ ४ १०	२ २९ ४ २९	११ ६ २० ३२	२ ८ ४२ ४६	१ ४ ५२ ५६	१ २१ ४९ ५५	८ ३ ५३ ९	१० २३ ८ ३९	२१ ४१	२५ ३०	४ ३	१४
	१५	२ २९ १ २५	३ ११ १५ ४५	११ ६ ४७ ५६	२ १० १२ १०	१ ५ ३ ५८	१ २२ १० २९	८ ३ ४९ २१	१० २३ ५ २८	२१ ३१	२२ १४	३ १८	१५
	१६	२ २९ ५८ ४१	३ २३ १६ ५६	११ ७ १४ ५७	२ ११ ४५ ३०	१ ५ १४ ५४	१ २२ ३२ ४८	८ ३ ४५ ३५	१० २३ २ १७	२१ २२	१८ ३	२ २५	१६
	१७	३ ० ५५ ५६	४ ५ १० ३२	११ ७ ४१ ३२	२ १३ २२ ३८	१ ५ २५ ४४	१ २२ ५६ ४५	८ ३ ४१ ५३	१० २२ ५९ ६	२१ १२	१३ १२	१ २६	१७
	१८	३ १ ५३ १३	४ १६ ५८ २६	११ ८ ७ ४४	२ १५ ३ ३१	१ ५ ३६ २८	१ २३ २२ २३	८ ३ ३८ १४	१० २२ ५५ ५६	२१ १	७ ५५	० २३	१८
	१९	३ २ ५० ३०	४ २८ ४४ ४२	११ ८ ३३ ३१	२ १६ ४७ ५५	१ ५ ४७ ७	१ २३ ४९ ३६	८ ३ ३४ ३९	१० २२ ५२ ४५	२० ५१	२ २२	० ४०	१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ अगस्त को अयनांश: २३°।४१'।५५")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
जुलाई २०	३ ३ ४७ ४६	५ १० ३४ ३	११ ८ ५८ ५२	२ १८ ३५ ४०	१ ५ ५७ ३९	१ २४ १८ १७	८ ३ ३१ ७	१० २२ ४९ ३४	२० ४०	– ३ १६	–१ ४२	२० जुलाई
२१	३ ४ ४५ २	५ २२ ३० १८	११ ९ २३ ४६	२ २० २६ ३२	१ ६ ८ ५	१ २४ ४८ २७	८ ३ २७ ३९	१० २२ ४६ २३	२० २८	– ८ ५१	–२ ४१	२१
२२	३ ५ ४२ २०	६ ४ ३९ २८	११ ९ ४८ १३	२ २२ २० २०	१ ६ १८ २५	१ २५ २० २	८ ३ २४ १५	१० २२ ४३ १३	२० १६	–१४ १३	–३ ३३	२२
२३	३ ६ ३९ ३७	६ १७ ५ ३९	११ १० १२ १२	२ २४ १६ ४५	१ ६ २८ ३८	१ २५ ५२ ५४	८ ३ २० ५४	१० २२ ४० २	२० ४	–१९ ८	–४ १७	२३
२४	३ ७ ३६ ५४	६ २९ ५३ ५६	११ १० ३५ ४३	२ २६ १५ २८	१ ६ ३८ ४५	१ २६ २७ ८	८ ३ १७ ३८	१० २२ ३६ ५१	१९ ५२	–२३ २०	–४ ४९	२४
२५	३ ८ ३४ ११	७ १३ ८ ३२	११ १० ५८ ४५	२ २८ १६ १६	१ ६ ४८ ४६	१ २७ २ ३५	८ ३ १४ २५	१० २२ ३३ ४०	१९ ३९	–२६ ३०	–५ ७	२५
२६	३ ९ ३१ २९	७ २६ ५० १९	११ ११ २१ १८	३ ० १८ ४६	१ ६ ५८ ४०	१ २७ ३९ १७	८ ३ ११ १७	१० २२ ३० २९	१९ २६	–२८ १४	–५ ८	२६
२७	३ १० २८ ४७	८ १० ५९ २०	११ ११ ४३ १९	३ २ २२ ३८	१ ७ ८ २७	१ २८ १७ ६	८ ३ ८ १३	१० २२ २७ १९	१९ १३	–२८ १३	–४ ५२	२७
२८	३ ११ २६ ६	८ २५ ३२ ५५	११ १२ ४ ५०	३ ४ २७ ३२	१ ७ १८ ७	१ २८ ५६ ३	८ ३ ५ १३	१० २२ २४ ८	१८ ५९	–२६ १६	–४ १६	२८
२९	३ १२ २३ २६	९ १० २३ ५०	११ १२ २५ ४८	३ ६ ३३ ११	१ ७ २७ ४०	१ २९ ३६ ७	८ ३ २ १८	१० २२ २० ५७	१८ ४५	–२२ ३०	–३ २२	२९
३०	३ १३ २० ४६	९ २५ २४ ३४	११ १२ ४६ १४	३ ८ ३९ १०	१ ७ ३७ ६	२ ० १७ १२	८ २ ५९ २७	१० २२ १७ ४६	१८ ३१	–१७ १२	–२ १४	३०
३१	३ १४ १८ ७	१० १० २६ ४७	११ १३ ६ ५	३ १० ४५ २०	१ ७ ४६ २६	२ ० ५९ १७	८ २ ५६ ४०	१० २२ १४ ३५	१८ १६	–१० ५१	० ५६	३१
अगस्त १	३ १५ १५ २९	१० २५ २० ५२	११ १३ २५ २३	३ १२ ५१ १९	१ ७ ५५ ३८	२ १ ४२ २२	८ २ ५३ ५९	१० २२ ११ २५	१८ १	– ३ ५७	० २५	१ अगस्त
२	३ १६ १२ ५२	११ १० १ १६	११ १३ ४४ ३	३ १४ ५६ ५३	१ ८ ४ ४२	२ २ २६ २२	८ २ ५१ २१	१० २२ ८ १४	१७ ४६	३ ४	१ ४३	२
३	३ १७ १० १५	११ २४ २२ १९	११ १४ २ १०	३ १७ १ ५१	१ ८ १३ ३९	२ ३ ११ १६	८ २ ४८ ४९	१० २२ ५ ३	१७ ३०	९ ४६	२ ५३	३
४	३ १८ ७ ४१	० ८ २२ ३०	११ १४ १९ ३९	३ १९ ६ ३	१ ८ २२ २९	२ ३ ५७ ४	८ २ ४६ २१	१० २२ १ ५२	१७ १४	१५ ४९	३ ५१	४
५	३ १९ ५ ७	० २२ २ ७	११ १४ ३६ २८	३ २१ ९ १४	१ ८ ३१ ११	२ ४ ४३ ४१	८ २ ४३ ५९	१० २१ ५८ ४२	१६ ५८	२० ५६	४ ३५	५
६	३ २० २ ३५	१ ५ २१ ८	११ १४ ५२ ४१	३ २३ ११ २१	१ ८ ३९ ४५	२ ५ ३१ ७	८ २ ४१ ४१	१० २१ ५५ ३१	१६ ४२	२४ ५२	५ २	६
७	३ २१ ० ५	१ १८ २१ ५७	११ १५ ८ १३	३ २५ १२ १९	१ ८ ४८ १२	२ ६ १९ २१	८ २ ३९ २८	१० २१ ५२ २०	१६ २५	२७ २४	५ १३	७
८	३ २१ ५७ ३५	२ १ ७ १०	११ १५ २३ ३	३ २७ ११ ५७	१ ८ ५६ ३०	२ ७ ८ २०	८ २ ३७ २०	१० २१ ४९ ९	१६ ८	२८ २८	५ ८	८
९	३ २२ ५५ ७	२ १३ ३७ ५०	११ १५ ३७ १४	३ २९ १० १७	१ ९ ४ ४१	२ ७ ५८ १	८ २ ३५ १८	१० २१ ४५ ५८	१५ ५१	२८ २	४ ४८	९
१०	३ २३ ५२ ४१	२ २५ ५६ २९	११ १५ ५० ४२	४ १ ७ १३	१ ९ १२ ४३	२ ८ ४८ २६	८ २ ३३ २०	१० २१ ४२ ४८	१५ ३४	२६ १३	४ १६	१०
११	३ २४ ५० १६	३ ८ ५ २३	११ १६ ३ २६	४ ३ २ ४४	१ ९ २० ३७	२ ९ ३९ ३२	८ २ ३१ २८	१० २१ ३९ ३७	१५ १६	२३ १२	३ ३२	११
१२	३ २५ ४७ ५१	३ २० ५ २०	११ १६ १५ २९	४ ४ ५६ ४४	१ ९ २८ २३	२ १० ३१ १५	८ २ २९ ४१	१० २१ ३६ २६	१४ ५८	१९ १३	२ ३९	१२
१३	३ २६ ४५ २९	४ १ ५८ ३८	११ १६ २६ ४५	४ ६ ४९ २१	१ ९ ३६ ०	२ ११ २३ ३८	८ २ २७ ०	१० २१ ३३ १५	१४ ४०	१४ ३१	१ ४०	१३
१४	३ २७ ४३ ८	४ १३ ४७ ४६	११ १६ ३७ १९	४ ८ ४० २७	१ ९ ४३ २९	२ १२ १६ ३६	८ २ २६ २३	१० २१ ३० ५	१४ २२	९ १९	० ३६	१४
१५	३ २८ ४० ४७	४ २५ ३४ ६	११ १६ ४७ ६	४ १० ३० ४	१ ९ ५० ४८	२ १३ १० ९	८ २ २४ ५३	१० २१ २६ ५४	१४ ३	३ ४८	० २९	१५
१६	३ २९ ३८ २९	५ ७ २१ २१	११ १६ ५६ ६	४ १२ १८ १५	१ ९ ५७ ५९	२ १४ ४ १८	८ २ २३ २८	१० २१ २३ ४३	१३ ४४	– १ ५१	–१ ३२	१६
१७	४ ० ३६ ११	५ १९ ११ ५०	११ १७ ४ २२	४ १४ ४ ५७	१ १० ५ २	२ १४ ५८ ५७	८ २ २२ ८	१० २१ २० ३२	१३ २५	– ७ २७	–२ ३३	१७
१८	४ १ ३३ ५३	६ १ ९ ४२	११ १७ ११ ४९	४ १५ ५० १२	१ १० ११ ५४	२ १५ ५४ ९	८ २ २० ५४	१० २१ १७ २१	१३ ६	–१२ ५०	–३ २७	१८
१९	४ २ ३१ ३८	६ १३ १९ ३३	११ १७ १८ २८	४ १७ ३४ १	१ १० १८ ३८	२ १६ ४९ ५२	८ २ १९ ४६	१० २१ १४ ११	१२ ४६	–१७ ५१	–४ १३	१९
२०	४ ३ २९ २३	६ २५ ५४ ४२	११ १७ २४ २१	४ १९ १६ २५	१ १० २५ १३	२ १७ ४६ ३	८ २ १८ ४३	१० २१ १० ०	१२ २७	–२२ १३	–४ ४८	२०
२१	४ ४ २७ ९	७ ८ २९ ५२	११ १७ २९ २२	४ २० ५७ २२	१ १० ३१ ३८	२ १८ ४२ ४३	८ २ १७ ४६	१० २१ ७ ४९	१२ ७	–२५ ४०	–५ १०	२१

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ सितम्बर को अयनांशः २३°।४१'।५९")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
अगस्त २२	४ ५ २४ ५७	७ २१ ३९ २३	११ १७ ३३ ३६	४ २२ ३६ ५८	१ १० ३७ ५४	२ १९ ३९ ५२	८ २ १६ ५४	१० २१ ४ ३८	११ ४७	–२७ ५३	–५ १६	२२ अगस्त
२३	४ ६ २२ ४४	८ ५ १४ ५५	११ १७ ३७ ३	४ २४ १५ ९	१ १० ४४ ०	२ २० ३७ २७	८ २ १६ ९	१० २१ १ २७	११ २६	–२८ ३२	–५ ६	२३
२४	४ ७ २० ३४	८ १९ १७ ५८	११ १७ ३९ ३६	४ २५ ५१ ५७	१ १० ४९ ५७	२ २१ ३५ २७	८ २ १५ २९	१० २० ५८ १६	११ ६	–२७ २४	–४ ३७	२४
२५	४ ८ १८ २५	९ ३ ४७ ४४	११ १७ ४१ २१	४ २७ २७ २४	१ १० ५५ ४३	२ २२ ३३ ५४	८ २ १४ ५५	१० २० ५५ ६	१० ४५	–२४ २५	–३ ५०	२५
२६	४ ९ १६ १६	९ १८ ३८ ५२	११ १७ ४२ १७	४ २९ १ २९	१ ११ १ २०	२ २३ ३२ ४५	८ २ १४ २७	१० २० ५१ ५५	१० २५	–१९ ४६	–२ ४७	२६
२७	४ १० १४ ९	१० ३ ४५ ४०	११ १७ ४२ १९	५ ० ३४ ११	१ ११ ६ ४७	२ २४ ३१ ०	८ २ १४ ४	१० २० ४८ ४४	१० ४	–१३ ४६	–१ ३१	२७
२८	४ ११ १२ ४	१० १८ ५८ ४	११ १७ ४१ ३१	५ २ ५ ३४	१ ११ १२ ४	२ २५ ३१ ३९	८ २ १३ ४७	१० २० ४५ ३३	९ ४३	– ६ ५५	० ८	२८
२९	४ १२ १० ०	११ ४ ७ ४	११ १७ ३९ ५५	५ ३ ३५ ३३	१ ११ १७ ११	२ २६ ३१ ४०	८ २ १३ ३७	१० २० ४२ २३	९ २१	० १८	१ १६	२९
३०	४ १३ ७ ५८	११ १९ ४ १७	११ १७ ३७ २४	५ ५ ४ ११	१ ११ २२ ७	२ २७ ३२ ३	८ २ १३ ३२	१० २० ३९ १२	९ ०	७ २४	२ ३३	३०
३१	४ १४ ५ ५८	० ३ ४१ २४	११ १७ ३४ ३	५ ६ ३१ २८	१ ११ २६ ५३	२ २८ ३२ ४९	८ २ १३ ३२	१० २० ३६ १	८ ३८	१३ ५६	३ ३८	३१
सितम्बर १	४ १५ ३ ५९	० १७ ५४ २६	११ १७ २९ ५१	५ ७ ५७ २१	१ ११ ३१ २९	२ २९ ३३ ५६	८ २ १३ ३९	१० २० ३२ ५०	८ १७	१९ ३४	४ २८	१ सितम्बर
२	४ १६ २ २	१ १ ४२ ३	११ १७ २४ ४९	५ ९ २१ ४९	१ ११ ३५ ५४	३ ० ३५ २२	८ २ १३ ५२	१० २० २९ ३९	७ ५५	२३ ५९	५ १	२
३	४ १७ ० ७	१ १५ ३ ३६	११ १७ १८ ५८	५ १० ४४ ५२	१ ११ ४० ८	३ १ ३७ ९	८ २ १४ १०	१० २० २६ २९	७ ३३	२६ ५८	५ १६	३
४	४ १७ ५८ १५	१ २८ १ ४५	११ १७ १२ १४	५ १२ ६ २९	१ ११ ४४ १२	३ २ ३९ १७	८ २ १४ ३४	१० २० २३ १८	७ ११	२८ २५	५ १५	४
५	४ १८ ५६ २६	२ १० ४० १०	११ १७ ४ ४२	५ १३ २६ ३६	१ ११ ४८ ५	३ ३ ४१ ४४	८ २ १५ ५	१० २० २० ७	६ ४९	२८ २०	४ ५८	५
६	४ १९ ५४ ३६	२ २३ १ २१	११ १६ ५६ २४	५ १४ ४५ ९	१ ११ ५१ ४७	३ ४ ४४ २८	८ २ १५ ४१	१० २० १६ ५६	६ २६	२६ ४९	४ २८	६
७	४ २० ५२ ५०	३ ५ ९ २९	११ १६ ४७ १५	५ १६ २ ९	१ ११ ५५ १७	३ ५ ४७ ३१	८ २ १६ २२	१० २० १३ ४६	६ ४	२४ ४	३ ४६	७
८	४ २१ ५१ ७	३ १७ ८ २४	११ १६ ३७ २१	५ १७ १७ ३१	१ ११ ५८ ३७	३ ६ ५० ५३	८ २ १७ १०	१० २० १० ३५	५ ४२	२० १८	२ ५५	८
९	४ २२ ४९ २३	३ २९ ० १८	११ १६ २६ ४३	५ १८ ३१ ९	१ १२ १ ४६	३ ७ ५४ २९	८ २ १८ ४	१० २० ७ २४	५ १९	१५ ४६	१ ५६	९
१०	४ २३ ४७ ४४	४ १० ४८ २५	११ १६ १५ २२	५ १९ ४३ १	१ १२ ४ ४३	३ ८ ५८ २५	८ २ १९ ३	१० २० ४ १३	४ ५६	१० ४०	० ५३	१०
११	४ २४ ४६ ७	४ २२ ३५ ४५	११ १६ ३ १९	५ २० ५३ २	१ १२ ७ २९	३ १० २ ३६	८ २ २० ८	१० २० १ २	४ ३३	५ १३	० १२	११
१२	४ २५ ४४ २९	५ ४ २३ ३८	११ १५ ५० ३६	५ २२ १ ३	१ १२ १० ३	३ ११ ७ २	८ २ २१ १९	१० १९ ५७ ५२	४ ११	– ० २६	–१ १७	१२
१३	४ २६ ४२ ५५	५ १६ १४ ४७	११ १५ ३७ १६	५ २३ ७ १	१ १२ १२ २६	३ १२ ११ ४५	८ २ २२ ३६	१० १९ ५४ ४१	३ ४८	– ६ ४	–२ १९	१३
१४	४ २७ ४१ २३	५ २८ ११ ५७	११ १५ २३ २०	५ २४ १० ४७	१ १२ १४ ३७	३ १३ १६ ४२	८ २ २३ ५९	१० १९ ५१ ३०	३ २५	–११ ३३	–३ १५	१४
१५	४ २८ ३९ ५१	६ १० १६ ३८	११ १५ ८ ५२	५ २५ १२ १२	१ १२ १६ ३७	३ १४ २१ ५३	८ २ २५ २७	१० १९ ४८ १९	३ २	–१६ ३९	–४ ३	१५
१६	४ २९ ३८ २२	६ २२ ३२ २७	११ १४ ५३ ५२	५ २६ ११ ८	१ १२ १८ २४	३ १५ २७ २०	८ २ २७ २	१० १९ ४५ ८	२ ३८	–२१ ११	–४ ४१	१६
१७	५ ० ३६ ५५	७ ५ १ २१	११ १४ ३८ २२	५ २७ ७ २४	१ १२ २० १	३ १६ ३३ ०	८ २ २८ ४२	१० १९ ४१ ५८	२ १५	–२४ ५१	–५ ६	१७
१८	५ १ ३५ २७	७ १७ ४६ ५१	११ १४ २२ ३१	५ २८ ० ४७	१ १२ २१ २५	३ १७ ३८ ५२	८ २ ३० २७	१० १९ ३८ ४७	१ ५२	–२७ २३	–५ १७	१८
१९	५ २ ३४ ३	८ ० ५२ २९	११ १४ ६ १४	५ २८ ५१ ७	१ १२ २२ ३८	३ १८ ४४ ५९	८ २ ३२ १९	१० १९ ३५ ३६	१ २९	–२८ ३१	–५ १२	१९
२०	५ ३ ३२ ४०	८ १४ १९ ४९	११ १३ ४९ ३७	५ २९ ३८ ७	१ १२ २३ ३८	३ १९ ५१ १८	८ २ ३४ १६	१० १९ ३२ २५	१ ५	–२८ १	–४ ५०	२०
२१	५ ४ ३१ १८	८ २८ ११ ४	११ १३ ३२ ४२	६ ० २१ ३३	१ १२ २४ २७	३ २० ५७ ४९	८ २ ३६ १९	१० १९ २९ १५	० ४२	–२५ ४७	–४ १०	२१
२२	५ ५ २९ ५८	९ १२ २७ ३	११ १३ १५ ३२	६ १ १ ९	१ १२ २५ ४	३ २२ ४ ३३	८ २ ३८ २७	१० १९ २६ ४	० १९	–२१ ५२	–३ १५	२२
२३	५ ६ २८ ४०	९ २७ ४ ४७	११ १२ ५८ १०	६ १ ३६ ३४	१ १२ २५ २९	३ २३ ११ २९	८ २ ४० ४१	१० १९ २२ ५३	–० ५	–१६ ३२	–२ ५	२३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ अक्टूबर को अयनांशः २३°।४२'।१३")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू.क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई.
सितम्बर २४	५ ७ २७ २३	१० १२ ० ३०	११ १२ ४० ३९	६ २ ७ २९	१ १२ २५ ४२	३ २४ १८ ३७	८ २ ४३ ०	१० १९ १९ ४२	−० २८	−१० ७	० ४६	२४ सितम्बर
२५	५ ८ २६ ८	१० २७ ८ २	११ १२ २३ ०	६ २ ३३ ३३	१ १२ २५ ४२	३ २५ २५ ५७	८ २ ४५ २५	१० १९ १६ ३१	−० ५१	−३ ३	० ३८	२५
२६	५ ९ २४ ५५	११ १२ १७ ३०	११ १२ ५ १८	६ २ ५४ २१	१ १२ २५ ३१	३ २६ ३३ २८	८ २ ४७ ५६	१० १९ १३ २१	−१ १५	४ १२	१ ५८	२६
२७	५ १० २३ ४५	११ २७ २० ७	११ ११ ४७ ३५	६ ३ ९ ३१	१ १२ २५ ८	३ २७ ४१ ११	८ २ ५० ३२	१० १९ १० १०	−१ ३८	११ ९	३ १०	२७
२८	५ ११ २२ ३६	० १२ ७ ३८	११ ११ २९ ५१	६ ३ १८ ३८	१ १२ २४ ३२	३ २८ ४९ ४	८ २ ५३ १३	१० १९ ६ ५९	−२ १	१७ २२	४ ८	२८
२९	५ १२ २१ २९	० २६ ३१ ५४	११ ११ १२ १६	६ ३ २१ १६	१ १२ २३ ४४	३ २९ ५७ ८	८ २ ५५ ०	१० १९ ३ ४८	−२ २५	२२ २६	४ ४८	२९
३०	५ १३ २० २५	१ १० २९ १८	११ १० ५४ ४६	६ ३ १७ ३	१ १२ २२ ४४	४ १ ५ २४	८ २ ५८ ५२	१० १९ ० ३७	−२ ४८	२६ ४	५ १०	३०
अक्टूबर १	५ १४ १९ २२	१ २३ ५९ ०	११ १० ३७ २४	६ ३ ५ ३९	१ १२ २१ ३३	४ २ १३ ४९	८ ३ १ ४९	१० १८ ५७ २७	−३ ११	२८ ५	५ १४	१ अक्टूबर
२	५ १५ १८ २२	२ ७ १ ११	११ १० २० १८	६ २ ४६ ४१	१ १२ २० ९	४ ३ २२ २६	८ ३ ४ ५२	१० १८ ५४ १६	−३ ३४	२८ २८	५ १	२
३	५ १६ १७ २५	२ १९ ३९ २९	११ १० ३ २६	६ २ २० ३	१ १२ १८ ३२	४ ४ ३१ १३	८ ३ ७ ०	१० १८ ५१ ५	−३ ५८	२७ १९	४ ३४	३
४	५ १७ १६ ३०	३ १ ५८ ३८	११ ९ ४६ ४९	६ १ ४५ ३८	१ १२ १६ ४४	४ ५ ४० ९	८ ३ ११ १३	१० १८ ४७ ५४	−४ २१	२४ ५१	३ ५५	५
५	५ १८ १५ ३७	३ १४ २ २३	११ ९ ३० ३८	६ १ ३ २८	१ १२ १४ ४४	४ ६ ४९ १५	८ ३ १४ ३१	१० १८ ४४ ४४	−४ ४४	२१ १९	३ ६	४
६	५ १९ १४ ४८	३ २५ ५५ ५९	११ ९ १४ ४५	६ ० १४ ०	१ १२ १२ ३१	४ ७ ५८ ३२	८ ३ १७ ५५	१० १८ ४१ ३३	−५ ७	१६ ५८	२ ९	६
७	५ २० १३ ०	४ ७ ४४ २२	११ ८ ५९ २०	५ २९ १७ ४३	१ १२ १० ७	४ ९ ७ ५७	८ ३ २१ २३	१० १८ ३८ २२	−५ ३०	१२ १	१ ८	७
८	५ २१ १३ १४	४ १९ ३० ३६	११ ८ ४४ २६	५ २८ १५ ३३	१ १२ ७ ३१	४ १० १७ ३२	८ ३ २४ ५७	१० १८ ३५ ११	−५ ५३	६ ३९	० ४	८
९	५ २२ १२ ३१	५ १ १८ ३७	११ ८ २९ ५८	५ २७ ८ ३९	१ १२ ४ ४३	४ ११ २७ १६	८ ३ २८ ३५	१० १८ ३२ ०	−६ १६	१ ३	−१ ०	९
१०	५ २३ ११ ४९	५ १३ ११ ४३	११ ८ १६ ७	५ २५ ५८ ३२	१ १२ १ ४४	४ १२ ३७ ७	८ ३ ३२ १९	१० १८ २८ ५०	−६ ३९	−४ ३७	−२ २	१०
११	५ २४ ११ ११	५ २५ ११ १०	११ ८ २ ४८	५ २४ ४६ ५४	१ ११ ५८ ३२	४ १३ ४७ ९	८ ३ ३६ ७	१० १८ २५ ३९	−७ १	−१० १०	−२ ५९	११
१२	५ २५ १० ३५	६ ७ १९ ९	११ ७ ५० ५	५ २३ ३५ ४५	१ ११ ५५ ९	४ १४ ५७ १९	८ ३ ४० ०	१० १८ २२ २८	−७ २४	−१५ २५	−३ ४९	१२
१३	५ २६ ९ ५८	६ १९ ३७ ३०	११ ७ ३८ ४	५ २२ २८ ०	१ ११ ५१ ३५	४ १६ ७ ३५	८ ३ ४३ ५८	१० १८ १९ १७	−७ ४६	−२० ६	−४ २८	१३
१४	५ २७ ९ २६	७ २ ६ १९	११ ७ २६ ४२	५ २१ २२ ४७	१ ११ ४७ ४९	४ १७ १८ १	८ ३ ४८ १	१० १८ १६ ६	−८ ९	−२४ ०	−४ ५६	१४
१५	५ २८ ८ ५६	७ १४ ४७ ११	११ ७ १५ ५९	५ २० २४ ५३	१ ११ ४३ ५२	४ १८ २८ ३४	८ ३ ५२ ८	१० १८ १२ ५६	−८ ३१	−२६ ४९	−५ ९	१५
१६	५ २९ ८ २५	७ २७ ४१ ४९	११ ७ ६ ५	५ १९ ३४ ०	१ ११ ३९ ४५	४ १९ ३९ १४	८ ३ ५६ २०	१० १८ ९ ४५	−८ ५३	−२८ १६	−५ ७	१६
१७	६ ० ७ ५८	८ १० ५० ३४	११ ६ ५६ ५०	५ १८ ५४ २८	१ ११ ३५ २६	४ २० ५० २	८ ४ ० ३७	१० १८ ६ ३४	−९ १५	−२८ ११	−४ ४९	१७
१८	६ १ ७ ३२	८ २४ १५ २५	११ ६ ४८ २३	५ १८ २४ १५	१ ११ ३० ५६	४ २२ ० ५७	८ ४ ४ ५८	१० १८ ३ २३	−९ ३७	−२६ २७	−४ १६	१८
१९	६ २ ७ ७	९ ७ ५८ १६	११ ६ ४० ४४	५ १८ ४ ५८	१ ११ २६ १६	४ २३ ११ ५९	८ ४ ९ २४	१० १८ ० १३	−९ ५९	−२३ ८	−३ २६	१९
२०	६ ३ ६ ४४	९ २१ ५८ ५१	११ ६ ३३ ४८	५ १७ ५६ ५५	१ ११ २१ २६	४ २४ २३ ७	८ ४ १३ ५४	१० १७ ५७ २	−१० २०	−१८ २५	−२ २४	२०
२१	६ ४ ६ २३	१० ६ १७ ३१	११ ६ २७ ४२	५ १८ ० ३	१ ११ १६ २५	४ २५ ३४ २३	८ ४ १८ २९	१० १७ ५३ ५१	−१० ४२	−१२ ३५	−१ ११	२१
२२	६ ५ ६ ३	१० २० ५२ ५८	११ ६ २२ २५	५ १८ १३ ०	१ ११ ११ १४	४ २६ ४५ ४४	८ ४ २३ ७	१० १७ ५० ४०	−११ ३	−५ ५७	० ७	२२
२३	६ ६ ५ ४५	११ ५ ४० ९	११ ६ १७ ५४	५ १८ ३८ १७	१ ११ ५ ५४	४ २७ ५७ ११	८ ४ २७ ५०	१० १७ ४७ २९	−११ २४	१ ५	१ २६	२३
२४	६ ७ ५ ३०	११ २० ३३ ३६	११ ६ १४ ११	५ १९ १२ १३	१ ११ ० २३	४ २९ ८ ४६	८ ४ ३२ ३७	१० १७ ४४ १९	−११ ४५	८ ५	२ ३९	२४
२५	६ ८ ५ १५	० ५ २६ १३	११ ६ ११ १८	५ १९ ५४ ५९	१ १० ५४ ४३	५ ० २० २८	८ ४ ३७ २९	१० १७ ४१ ८	−१२ ६	१४ ३८	३ ४२	२५
२६	६ ९ ५ ३	० २० ८ २६	११ ६ ९ १२	५ २० ४५ ४७	१ १० ४८ ५४	५ १ ३२ १४	८ ४ ४२ २४	१० १७ ३७ ५७	−१२ २७	२० १६	४ २८	२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ नवम्बर को अयनांशः २३°।४२'।७")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	–अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई
अक्टूबर २७	६ १० ४ ५३	१ ४ ३३ ६	११ ६ ७ ५५	५ २१ ४३ ४६	१ १० ४२ ५५	५ २ ४४ ७	८ ४ ४७ २४	१० १७ ३४ ४६	–१२ ४७	२४ ३६	४ ५७	२७ अक्टूबर
२८	६ ११ ४ ४५	१ १८ ३४ ५४	११ ६ ७ २५	५ २२ ४८ ५	१ १० ३६ ४८	५ ३ ५६ ६	८ ४ ५२ २७	१० १७ ३१ ३५	–१३ ७	२७ २०	५ ७	२८
२९	६ १२ ४ ३८	२ २ ९ २४	११ ६ ७ ४३	५ २३ ५७ ५६	१ १० ३० ३२	५ ५ ८ ११	८ ४ ५७ ३५	१० १७ २८ २५	–१३ २७	२८ २१	४ ५९	२९
३०	६ १३ ४ ३४	२ १५ १६ ४३	११ ६ ८ ४९	५ २५ १२ ३४	१ १० २४ ८	५ ६ २० २२	८ ५ २ ४६	१० १७ २५ १४	–१३ ४७	२७ ४२	४ ३५	३०
३१	६ १४ ४ ३३	२ २७ ५९ १९	११ ६ १० ४०	५ २६ ३१ २१	१ १० १७ ३५	५ ७ ३२ ४०	८ ५ ८ १	१० १७ २२ ३	–१४ ६	२५ ३६	३ ५८	३१
नवम्बर १	६ १५ ४ ३३	३ १० १९ ५९	११ ६ १३ १८	५ २७ ५३ ३६	१ १० १० ५५	५ ८ ४५ १	८ ५ १३ २०	१० १७ १८ ५२	–१४ २६	२२ २०	३ ११	१ नवम्बर
२	६ १६ ४ ३६	३ २२ २४ ३४	११ ६ १६ ४४	५ २९ १८ ४८	१ १० ४ ७	५ ९ ५७ २९	८ ५ १८ ४३	१० १७ १५ ४२	–१४ ४५	१८ १०	२ १६	२
३	६ १७ ४ ४२	४ ४ १७ ३१	११ ६ २० ५३	६ ० ४६ २८	१ ९ ५७ ११	५ ११ १० ४	८ ५ २४ ९	१० १७ १२ ३१	–१५ ४	१३ २२	१ १७	३
४	६ १८ ४ ४९	४ १६ ४ ४५	११ ६ २५ ४८	६ २ १९ ८	१ ९ ५० ८	५ १२ २२ ४२	८ ५ २९ ३९	१० १७ ९ २०	–१५ २२	८ ७	० १४	४
५	६ १९ ४ ५८	४ २७ ५१ ५२	११ ६ ३१ २८	६ ३ ४७ २९	१ ९ ४२ ५९	५ १३ ३५ २९	८ ५ ३५ १२	१० १७ ६ ९	–१५ ४१	२ ३५	० ४९	५
६	६ २० ५ १०	५ ९ ४२ २९	११ ६ ३७ ५३	६ ५ २० ११	१ ९ ३५ ४३	५ १४ ४८ १५	८ ५ ४० ४९	१० १७ २ ५८	–१५ ५९	– ३ ३	–१ ५०	६
७	६ २१ ५ २४	५ २१ ४० ५४	११ ६ ४५ १	६ ६ ५३ ५५	१ ९ २८ २१	५ १६ १ ९	८ ५ ४६ ३०	१० १६ ५९ ४८	–१६ १७	– ८ ३८	–२ ४७	७
८	६ २२ ५ ३९	६ ३ ५० ३२	११ ६ ५२ ५२	६ ८ २८ ३१	१ ९ २० ५३	५ १७ १४ ७	८ ५ ५२ १३	१० १६ ५६ ३७	–१६ ३४	–१३ ५८	–३ ३६	८
९	६ २३ ५ ५७	६ १६ १२ १४	११ ७ १ २६	६ १० ३ ४५	१ ९ १३ १९	५ १८ २७ ११	८ ५ ५८ ०	१० १६ ५३ २६	–१६ ५२	–१८ ५१	–४ १७	९
१०	६ २४ ६ १६	६ २८ ४७ २२	११ ७ १० ४२	६ ११ ३९ २६	१ ९ ५ ४१	५ १९ ४० १८	८ ६ ३ ५०	१० १६ ५० १५	–१७ ९	–२३ ०	–४ ४६	१०
११	६ २५ ६ ३६	७ ११ ३६ २३	११ ७ २० ३९	६ १३ १५ २९	१ ८ ५७ ५८	५ २० ५३ ३०	८ ६ ९ ४४	१० १६ ४७ ४	–१७ २५	–२६ ७	–५ ०	११
१२	६ २६ ६ ५९	७ २४ ३७ ३३	११ ७ ३१ १८	६ १४ ५१ ४६	१ ८ ५० १०	५ २२ ६ ४७	८ ६ १५ ४०	१० १६ ४३ ५४	–१७ ४२	–२७ ५५	–५ ०	१२
१३	६ २७ ७ २४	८ ७ ५० २५	११ ७ ४२ ३५	६ १६ २८ ११	१ ८ ४२ १८	५ २३ २० ७	८ ६ २१ ३९	१० १६ ४० ४३	–१७ ५८	–२८ १०	–४ ४४	१३
१४	६ २८ ७ ४७	८ २१ १४ ३६	११ ७ ५४ ३३	६ १८ ४ ३६	१ ८ ३४ २३	५ २४ ३३ २९	८ ६ २७ ४१	१० १६ ३७ ३२	–१८ १४	–२९ ४६	–४ १२	१४
१५	६ २९ ८ १५	९ ४ ४८ ३०	११ ८ ७ १०	६ १९ ४१ ४	१ ८ २६ २५	५ २५ ४६ ५७	८ ६ ३३ ४७	१० १६ ३४ २१	–१८ २९	–२३ ४८	–३ २५	१५
१६	७ ० ८ ४३	९ १८ ३२ ३०	११ ८ २० २३	६ २१ १७ २८	१ ८ १८ २३	५ २७ ० २८	८ ६ ३९ ५५	१० १६ ३१ ११	–१८ ४४	–१९ २८	–२ २६	१६
१७	७ १ ९ १०	१० २ २७ २१	११ ८ ३४ १५	६ २२ ५३ ४४	१ ८ १० २०	५ २८ १४ २	८ ६ ४६ ५	१० १६ २८ ०	–१८ ५९	–१४ १	–१ १८	१७
१८	७ २ ९ ४१	१० १६ ३१ ०	११ ८ ४८ ४२	६ २४ २९ ५५	१ ८ २ १३	५ २९ २७ ४०	८ ६ ५२ १९	१० १६ २४ ४९	–१९ १४	– ७ ४७	० ४	१८
१९	७ ३ १० १२	११ ० ४६ ३०	११ ९ ३ ४५	६ २६ ५ ५७	१ ७ ५४ ६	६ ० ४१ २०	८ ६ ५८ ३४	१० १६ २१ ३८	–१९ २८	– १ ६	१ ११	१९
२०	७ ४ १० ४४	११ १५ ९ ४८	११ ९ १९ २३	६ २७ ४१ ४८	१ ७ ४५ ५७	६ १ ५५ ४	८ ७ ४ ५३	१० १६ १८ २७	–१९ ४१	५ ४२	२ २२	२०
२१	७ ५ ११ १९	११ २९ ३७ २९	११ ९ ३५ ३३	६ २९ १७ ३१	१ ७ ३७ ४६	६ ३ ८ ५२	८ ७ ११ १४	१० १६ १५ १७	–१९ ५५	१२ १४	३ २४	२१
२२	७ ६ ११ ५३	० १४ ५ २१	११ ९ ५२ १९	७ ० ५३ ३	१ ७ २९ ३६	६ ४ २२ ४२	८ ७ १७ ३७	१० १६ १२ ६	–२० ८	१८ ६	४ १३	२२
२३	७ ७ १२ २९	० २८ २७ ५७	११ १० ९ ३५	७ २ २८ २४	१ ७ २१ २५	६ ५ ३६ ३४	८ ७ २४ ३	१० १६ ८ ५५	–२० २१	२२ ५५	४ ४६	२३
२४	७ ८ १३ ७	१ १२ ३७ ४६	११ १० २७ २३	७ ४ ३ ३७	१ ७ १३ १३	६ ६ ५० ३१	८ ७ ३० ३१	१० १६ ५ ४४	–२० ३३	२६ १७	५ ०	२४
२५	७ ९ १३ ४६	१ २६ २९ ४५	११ १० ४५ ४२	७ ५ ३८ ४०	१ ७ ५ ३	६ ८ ४ ३१	८ ७ ३७ १	१० १६ २ ३४	–२० ४५	२८ ०	४ ५६	२५
२६	७ १० १४ २६	२ १० ० २५	११ ११ ४ ३१	७ ७ १३ ३३	१ ६ ५६ ५३	६ ९ १८ ३२	८ ७ ४३ ३३	१० १५ ५९ २३	–२० ५६	२७ ५९	४ ३५	२६
२७	७ ११ १५ ९	२ २३ ६ ५०	११ ११ २३ ४७	७ ८ ४८ १९	१ ६ ४८ ४४	६ १० ३२ ३८	८ ७ ५० ८	१० १५ ५६ १२	–२१ ८	२६ २२	४ १	२७
२८	७ १२ १५ ५२	३ ५ ५० ३	११ ११ ४३ ३४	७ १० २२ ५७	१ ६ ४० ३७	६ ११ ४६ ४५	८ ७ ५६ ४४	१० १५ ५३ १	–२१ १८	२३ २५	३ १५	२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) सन् १९८८ ई०

(१ दिसम्बर को अयनांशः २३°।४२'।११")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८८ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८८ ई
नवम्बर २९	७ १३ १६ ३७	३ १८ १३ ३	११ १२ ३ ४८	७ ११ ५७ २७	१ ६ ३२ ३२	६ १३ ० ५६	८ ८ ३ २३	१० १५ ४९ ५०	−२१ २९	१९ २८	२ २१	२९ नवम्बर
३०	७ १४ १७ २५	४ ० १८ ५१	११ १२ २४ २८	७ १३ ३१ ५४	१ ६ २४ २९	६ १४ १५ १०	८ ८ १० ३	१० १५ ४६ ४०	−२१ ३९	१४ ४७	१ २१	३०
दिसम्बर १	७ १५ १८ १३	४ १२ १३ १	११ १२ ४५ ३५	७ १५ ६ १४	१ ६ १६ २९	६ १५ २९ २६	८ ८ १६ ४६	१० १५ ४३ २९	−२१ ४८	९ ३८	० १९	१ दिसम्बर
२	७ १६ १९ २	४ २४ १ ३२	११ १३ ७ ७	७ १६ ४० २९	१ ६ ८ ३२	६ १६ ४३ ४३	८ ८ २३ ३०	१० १५ ४० १८	−२१ ५७	४ ११	० ४३	२
३	७ १७ १९ ५४	५ ५ ४९ ६	११ १३ २९ ५	७ १८ १४ ४३	१ ६ ० ३८	६ १७ ५८ ५	८ ८ ३० १६	१० १५ ३७ ७	−२२ ६	− १ २४	−१ ४४	३
४	७ १८ २० ४७	५ १७ ४१ ३६	११ १३ ५१ २८	७ १९ ४८ ५३	१ ५ ५२ ४८	६ १९ १२ २९	८ ८ ३७ ३	१० १५ ३३ ५६	−२२ १४	− ६ ५९	−२ ४०	४
५	७ १९ २१ ४२	५ २९ ४४ २४	११ १४ १४ १३	७ २१ २३ ४	१ ५ ४५ २	६ २० २६ ५६	८ ८ ४३ ५२	१० १५ ३० ४६	−२२ २२	−१२ २२	−३ ३०	५
६	७ २० २२ ३७	६ १२ ० ३१	११ १४ ३७ २२	७ २२ ५७ १२	१ ५ ३७ २०	६ २१ ४१ २३	८ ८ ५० ४३	१० १५ २७ ३५	−२२ ३०	−१७ २३	−४ ११	६
७	७ २१ २३ ३३	६ २४ ३३ १५	११ १५ ० ५५	७ २४ ३१ २२	१ ५ २९ ४४	६ २२ ५५ ५३	८ ८ ५७ ३५	१० १५ २४ २४	−२२ ३७	−२१ ४६	−४ ४१	७
८	७ २२ २४ ३२	७ ७ २४ ३०	११ १५ २४ ४९	७ २६ ५ ३३	१ ५ २२ १२	६ २४ १० २६	८ ९ ४ २८	१० १५ २१ १३	−२२ ४३	−२५ १५	−४ ५८	८
९	७ २३ २५ २९	७ २० ३३ ३	११ १५ ४९ ६	७ २७ ३९ ४४	१ ५ १४ ४७	६ २५ २४ ५९	८ ९ ११ २३	१० १५ १८ २	−२२ ४९	−२७ २८	−४ ५९	९
१०	७ २४ २६ ३०	८ ३ ५७ ४८	११ १६ १३ ४३	७ २९ १३ ५९	१ ५ ७ २७	६ २६ ३९ ३५	८ ९ १८ १९	१० १५ १४ ५२	−२२ ५५	−२८ ९	−४ ४४	१०
११	७ २५ २७ ३१	८ १७ ३६ ३३	११ १६ ३८ ४२	८ ० ४८ १९	१ ५ ० १४	६ २७ ५४ १३	८ ९ २५ १६	१० १५ ११ ४१	−२३ ०	−२७ ९	−४ १२	११
१२	७ २६ २८ ३०	९ १ २४ ५६	११ १७ ४ ०	८ २ २२ ३९	१ ४ ५३ ७	६ २९ ८ ५१	८ ९ ३२ १४	१० १५ ८ ३०	−२३ ५	−२४ २९	−३ २६	१२
१३	७ २७ २९ ३२	९ १५ २० २०	११ १७ २९ ३८	८ ३ ५७ ६	१ ४ ४६ ७	७ ० २३ ३२	८ ९ ३९ १३	१० १५ ५ १९	−२३ ९	−२० २१	−२ २७	१३
१४	७ २८ ३० ३५	९ २९ २० ४३	११ १७ ५५ ३६	८ ५ ३१ ३६	१ ४ ३९ १५	७ १ ३८ १५	८ ९ ४६ १३	१० १५ २ ९	−२३ १३	−१५ ३	−१ १८	१४
१५	७ २९ ३१ ३६	१० १३ २३ ८	११ १८ २१ ५२	८ ७ ६ ९	१ ४ ३२ ३०	७ २ ५२ ५६	८ ९ ५३ १४	१० १४ ५८ ५८	−२३ १६	− ८ ५८	० ४	१५
१६	८ ० ३२ ४०	१० २७ २७ ४०	११ १८ ४८ २६	८ ८ ४० ४९	१ ४ २५ ५३	७ ४ ७ ४१	८ १० ० १५	१० १४ ५५ ४७	−२३ १९	− २ २५	१ १०	१६
१७	८ १ ३३ ४३	११ ११ ३२ ३०	११ १९ १५ १९	८ १० १५ ३२	१ ४ १९ २४	७ ५ २२ २७	८ १० ७ १८	१० १४ ५२ ३६	−२३ २१	४ १४	२ २०	१७
१८	८ २ ३४ ४५	११ २५ ३७ २६	११ १९ ४२ २८	८ ११ ५० १८	१ ४ १३ ३	७ ६ ३७ १२	८ १० १४ २०	१० १४ ४९ २५	−२३ २३	१० ४०	३ २१	१८
१९	८ ३ ३५ ५०	० ९ ४१ ४४	११ २० ९ ५४	८ १३ २५ ८	१ ४ ६ ५१	७ ७ ५२ १	८ १० २१ २४	१० १४ ४६ १४	−२३ २५	१६ ३४	४ १०	१९
२०	८ ४ ३६ ५४	० २३ ४२ ७	११ २० ३७ ३७	८ १४ ५९ ०	१ ४ ० ४८	७ ९ ६ ५०	८ १० २८ २८	१० १४ ४३ ४	−२३ २६	२१ ३४	४ ४४	२०
२१	८ ५ ३७ ५७	१ ७ ३६ ६	११ २१ ५ ३५	८ १६ ३४ ४९	१ ३ ५४ ५५	७ १० २१ ३८	८ १० ३५ ३२	१० १४ ३९ ५३	−२३ २६	२५ २०	५ १	२१
२२	८ ६ ३९ २	१ २१ २० ४२	११ २१ ३३ ४९	८ १८ ९ ३९	१ ३ ४९ १०	७ ११ ३६ ३०	८ १० ४२ ३७	१० १४ ३६ ४२	−२३ २६	२७ ३४	५ ०	२२
२३	८ ७ ४० ८	२ ४ ५१ १२	११ २२ २ १८	८ १९ ४४ २३	१ ३ ४३ ३६	७ १२ ५१ २२	८ १० ४९ ४२	१० १४ ३३ ३१	−२३ २६	२८ ८	४ ४२	२३
२४	८ ८ ४१ १२	२ १८ ५ १२	११ २२ ३१ १	८ २१ १८ ५९	१ ३ ३८ ११	७ १४ ६ १३	८ १० ५६ ४७	१० १४ ३० २१	−२३ २५	२७ ३	४ ९	२४
२५	८ ९ ४२ १९	३ १ १ २६	११ २२ ५९ ५९	८ २२ ५३ २४	१ ३ ३२ ५६	७ १५ २१ ८	८ ११ ३ ५३	१० १४ २७ १०	−२३ २४	२४ ३१	३ २४	२५
२६	८ १० ४३ २५	३ १३ ३८ ३३	११ २३ २९ ११	८ २४ २७ ३२	१ ३ २७ ५१	७ १६ ३६ ३	८ ११ १० ५९	१० १४ २३ ५९	−२३ २२	२० ५०	२ ३०	२६
२७	८ ११ ४४ ३३	३ २५ ५८ २२	११ २३ ५८ ३६	८ २६ १ १७	१ ३ २२ ५७	७ १७ ५० ०	८ ११ १८ ४	१० १४ २० ४८	−२३ २०	१६ १९	१ २९	२७
२८	८ १२ ४५ ४०	४ ८ ४ ५	११ २४ २८ १४	८ २७ ३४ ३१	१ ३ १८ १३	७ १९ ५ ५६	८ ११ २५ १०	१० १४ १७ ३७	−२३ १७	११ १४	० २६	२८
२९	८ १३ ४६ ४८	४ १९ ५८ ३७	११ २४ ५८ ४	८ २९ ७ ९	१ ३ १३ ४०	७ २० २० ५४	८ ११ ३२ १६	१० १४ १४ २७	−२३ १४	५ ५०	० ३८	२९
३०	८ १४ ४७ ५७	५ १ ४७ १२	११ २५ २८ ८	९ ० ३८ ५७	१ ३ ९ १८	७ २१ ३५ ५३	८ ११ ३९ २१	१० १४ ११ १६	−२३ १०	० १६	−१ ४०	३०
३१	८ १५ ४९ ६	५ १३ ३५ ३४	११ २५ ५८ २३	९ २ ९ ४५	१ ३ ५ ७	७ २२ ५० ५३	८ ११ ४६ २७	१० १४ ८ ५	−२३ ६	−५ १९	−२ ३७	३१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८९ ई०

(१ जनवरी को अयनांशः २३°।४२'।१६")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८९ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	–अं. क.	–अं. क.	अं. क.	सन् १९८९ ई.
जनवरी १	८ १६ ५० १५	५ २५ २८ १२	११ २६ २८ ५०	९ ३ ३९ १८	१ ३ १ ७	७ २४ ५ ५३	८ ११ ५३ ३२	१० १४ ४ ५४	–२३ १	–१० ४४	–३ २८	१ जनवरी
२	८ १७ ५१ २६	६ ७ ३० ५७	११ २६ ५९ २९	९ ५ ७ २०	१ २ ५७ १८	७ २५ २० ५५	८ १२ ० ३६	१० १४ १ ४४	–२२ ५६	–१५ ४९	–४ ११	२
३	८ १८ ५२ ३६	६ १९ ४९ १३	११ २७ ३० १८	९ ६ ३३ ३०	१ २ ५३ ४१	७ २६ ३५ ५७	८ १२ ७ ४०	१० १३ ५८ ३३	–२२ ५१	–२० २४	–४ ४३	३
४	८ १९ ५३ ४६	७ २ २६ १	११ २८ १ १९	९ ७ ५७ २८	१ २ ५० १५	७ २७ ५० ०	८ १२ १४ ४४	१० १३ ५५ २२	–२२ ४५	–२४ ११	–५ २	४
५	८ २० ५४ ५७	७ १५ २४ ३१	११ २८ ३२ ३१	९ ९ १८ ४७	१ २ ४७ १	७ २९ ६ ५	८ १२ २१ ४७	१० १३ ५२ ११	–२२ ३८	–२६ ५२	–५ ६	५
६	८ २१ ५६ ८	७ २८ ४६ १३	११ २९ ३ ५१	९ १० ३६ ५७	१ २ ४३ ०	८ ० २१ ८	८ १२ २८ ५०	१० १३ ४९ ०	–२२ ३१	–२८ ८	–४ ५४	६
७	८ २२ ५७ १८	८ १२ २८ ५६	११ २९ ३५ २४	९ ११ ५१ २४	१ २ ४१ १०	८ १ ३६ १३	८ १२ ३५ ५२	१० १३ ४५ ५०	–२२ २४	–२७ ४३	–४ २६	७
८	८ २३ ५८ २९	८ २६ ३० ७	० ० ७ ६	९ १३ १ ३१	१ २ ३८ ३२	८ २ ५१ १८	८ १२ ४२ ५३	१० १३ ४२ ३९	–२२ १६	–२५ ३३	–३ ४०	८
९	८ २४ ५९ ३९	९ १० ४५ ४४	० ० ३८ ५६	९ १४ ६ ३५	१ २ ३६ ६	८ ४ ६ २४	८ १२ ४९ ५३	१० १३ ३९ २८	–२२ ८	–२१ ४४	–२ ४०	९
१०	८ २६ ० ४९	९ २५ ९ ७	० १ १० ५७	९ १५ ५ ५०	१ २ ३३ ५२	८ ५ २१ २९	८ १२ ५६ ५२	१० १३ ३६ १७	–२१ ५९	–१६ ३५	–१ ३०	१०
११	८ २७ १ ५८	१० ९ ३५ २२	० १ ४३ ७	९ १५ ५८ २७	१ २ ३१ ५१	८ ६ ३६ ३६	८ १३ ३ ५०	१० १३ ३३ ६	–२१ ५०	–१० २९	० १३	११
१२	८ २८ ३ ७	१० २४ ० १५	० २ १५ ३५	९ १६ ४३ ३२	१ २ ३० २	८ ७ ५१ ४१	८ १३ १० ४७	१० १३ २९ ५६	–२१ ४१	– ३ ५१	१ ५	१२
१३	८ २९ ४ १४	११ ८ १८ ५८	० २ ४७ ५२	९ १७ २० १२	१ २ २८ २५	८ ९ ६ ४८	८ १३ १७ ४३	१० १३ २६ ४५	–२१ ३१	२ ५६	२ १८	१३
१४	९ ० ५ २२	११ २२ २९ ४१	० ३ २० २८	९ १७ ४७ ३५	१ २ २७ १	८ १० २१ ५४	८ १३ २४ ३८	१० १३ २३ ३४	–२१ २१	९ ३०	३ २२	१४
१५	९ १ ६ २७	० ६ ३१ ३२	० ३ ५३ ११	९ १८ ४ ४७	१ २ २५ ४९	८ ११ ३६ ५९	८ १३ ३१ ३१	१० १३ २० २३	–२१ १०	१५ ३१	४ १४	१५
१६	९ २ ७ ३४	० २० २२ ३९	० ४ २६ ३	९ १८ ११ ११	१ २ २४ ५०	८ १२ ५२ ६	८ १३ ३८ २३	१० १३ १७ १३	–२० ५९	२० ४०	४ ४९	१६
१७	९ ३ ८ ३९	१ ४ ३ ३	० ४ ५९ २	९ १८ ६ १०	१ २ २४ ३	८ १४ ७ १३	८ १३ ४५ १३	१० १३ १४ २	–२० ४७	२४ ४०	५ ८	१७
१८	९ ४ ९ ४२	१ १७ ३२ ४६	० ५ ३२ ८	९ १७ ४९ २८	१ २ २३ २९	८ १५ २२ १८	८ १३ ५२ २	१० १३ १० ५१	–२० ३५	२७ १४	५ ९	१८
१९	९ ५ १० ४६	२ ० ५० ४	० ६ ५ २२	९ १७ २१ ५	१ २ २३ ७	८ १६ ३७ २५	८ १३ ५८ ४९	१० १३ ७ ४०	–२० २३	२८ १३	४ ५४	१९
२०	९ ६ ११ ४९	२ १३ ५४ ४२	० ६ ३८ ४३	९ १६ ४१ २७	१ २ २२ ५७	८ १७ ५२ ३२	८ १४ ५ ३५	१० १३ ४ २९	–२० १०	२७ ३६	४ २३	२०
२१	९ ७ १२ ५१	२ २६ ४६ ३३	० ७ १२ ११	९ १५ ५१ २३	१ २ २३ ०	८ १९ ७ ३८	८ १४ १२ १९	१० १३ १ १९	–१९ ५७	२५ २९	३ ३९	२१
२२	९ ८ १३ ५२	३ ९ २४ १२	० ७ ४५ ४५	९ १४ ५२ ८	१ २ २३ १५	८ २० २२ ४५	८ १४ १९ १	१० १२ ५८ ८	–१९ ४४	२२ ९	२ ४६	२२
२३	९ ९ १४ ५३	३ २१ ४८ २३	० ८ १९ २६	९ १३ ४५ २६	१ २ २३ ४३	८ २१ ३७ ५२	८ १४ २५ ४२	१० १२ ५४ ५७	–१९ ३०	१७ ५१	१ ४५	२३
२४	९ १० १५ ५३	४ ४ ० ३४	० ८ ५३ १४	९ १२ ३३ १०	१ २ २४ २३	८ २२ ५२ ५८	८ १४ ३२ २०	१० १२ ५१ ४६	–१९ १६	१२ ५३	० ४०	२४
२५	९ ११ १६ ५२	४ १६ १ ३२	० ९ २७ ७	९ ११ १७ ४५	१ २ २५ १६	८ २४ ८ ४	८ १४ ३८ ५७	१० १२ ४८ ३५	–१९ १	७ ३१	० २६	२५
२६	९ १२ १७ ५२	४ २७ ५४ २९	० १० १ ७	९ १० १ १९	१ २ २६ २०	८ २५ २३ १२	८ १४ ४५ ३२	१० १२ ४५ २५	–१८ ४६	१ ५६	–१ ३०	२६
२७	९ १३ १८ ५०	५ ९ ४३ २१	० १० ३५ १२	९ ८ ४६ १४	१ २ २७ ३७	८ २६ ३८ २०	८ १४ ५२ ४	१० १२ ४२ १४	–१८ ३१	– ३ ४०	–२ ३०	२७
२८	९ १४ १९ ४७	५ २१ ३१ १७	० ११ ९ २३	९ ७ ३४ २९	१ २ २९ ६	८ २७ ५३ २६	८ १४ ५८ ३४	१० १२ ३९ ३	–१८ १५	– ९ ८	–३ २३	२८
२९	९ १५ २० ४५	६ ३ २३ २४	० ११ ४३ ४०	९ ६ २७ ५४	१ २ ३० ४७	८ २९ ८ ३४	८ १५ ५ ३	१० १२ ३५ ५२	–१७ ५९	–१४ १८	–४ ८	२९
३०	९ १६ २१ ४१	६ १५ २५ ८	० १२ १८ २	९ ५ २७ ४५	१ २ ३२ ४०	९ ० २३ ४१	८ १५ ११ २८	१० १२ ३२ ४२	–१७ ४३	–१९ १	–४ ४३	३०
३१	९ १७ २२ ३७	६ २७ ४० २८	० १२ ५२ २८	९ ४ ३५ १४	१ २ ३४ ४५	९ १ ३८ ४८	८ १५ १७ ५२	१० १२ २९ ३१	–१७ २७	–२३ २	–५ ६	३१
फरवरी १	९ १८ २३ ३२	७ १० १५ ७	० १३ २७ १	९ ३ ५० ५५	१ २ ३७ ३	९ २ ५३ ५६	८ १५ २४ १३	१० १२ २६ २०	–१७ १०	–२६ ६	–५ १५	१ फरवरी
२	९ १९ २४ २६	७ २३ ११ ५६	० १४ १ ३९	९ ३ १५ ६	१ २ ३९ ३२	९ ४ ९ ४	८ १५ ३० ३२	१० १२ २३ ९	–१६ ५३	–२७ ५५	–५ ८	२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि., भा. स्टैं. टा.) सन् १९८९ ई०

(१ फरवरी को अयनांशः २३°।४०'।२०")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू. क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८९ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	−अं. क.	−अं. क.	अं. क.	सन् १९८९ ई.
फरवरी ३	९ २० २५ १९	८ ६ ३४ १	० १४ ३६ २०	९ २ ४७ ५९	१ २ ४२ १३	९ ५ २४ १०	८ १५ ३६ ४७	१० १२ १९ ५८	−१६ ३५	−२८ १२	−४ ४५	३ फरवरी
४	९ २१ २६ १२	८ २० २२ ३५	० १५ ११ ७	९ २ २९ २०	१ २ ४५ ५	९ ६ ३९ १७	८ १५ ४३ १	१० १२ १६ ४८	−१६ १८	−२६ ४५	−४ ५	४
५	९ २२ २७ ४	९ ४ ३४ ५०	० १५ ४५ ५९	९ २ १८ ५८	१ २ ४८ १०	९ ७ ५४ २६	८ १५ ४९ १२	१० १२ १३ ३७	−१५ ५९	−२३ ३५	−३ ९	५
६	९ २३ २७ ५३	९ १९ ७ १३	० १६ २० ५४	९ २ १६ २५	१ २ ५१ २६	९ ९ ९ ३१	८ १५ ५५ १९	१० १२ १० २६	−१५ ४१	−१८ ५१	−१ ५९	६
७	९ २४ २८ ४२	१० ३ ५४ ९	० १६ ५५ ५५	९ २ २१ १६	१ २ ५४ ५३	९ १० २४ ३८	८ १६ १ २४	१० १२ ७ १५	−१५ २३	−१२ ५५	० ४०	७
८	९ २५ २९ ३०	१० १८ ४६ ५८	० १७ ३० ५९	९ २ ३३ २	१ २ ५८ ३२	९ ११ ३९ ४४	८ १६ ७ २६	१० १२ ४ ४	−१५ ४	− ६ १३	० ४२	८
९	९ २६ ३० १६	११ ३ ३८ ३०	० १८ ६ ७	९ २ ५१ १३	१ ३ २ २२	९ १२ ५४ ५०	८ १६ १३ २५	१० १२ ० ५४	−१४ ४५	० ४९	२ १	९
१०	९ २७ ३० ०	११ १८ २२ १८	० १८ ४१ २०	९ ३ १५ १९	१ ३ ६ २३	९ १४ ९ ५५	८ १६ १९ २१	१० ११ ५७ ४३	−१४ २५	७ ४४	३ १२	१०
११	९ २८ ३१ ४३	० २ ५१ ४२	० १९ १६ ३६	९ ३ ४४ ५५	१ ३ १० ३६	९ १५ २५ ०	८ १६ २५ १४	१० ११ ५४ ३२	−१४ ६	१४ ७	४ ९	११
१२	९ २९ ३२ २५	० १७ ३ ४४	० १९ ५१ ५६	९ ४ १९ ३१	१ ३ १४ ५९	९ १६ ४० ५	८ १६ ३१ ४	१० ११ ५१ २१	−१३ ४६	१९ ३९	४ ५०	१२
१३	१० ० ३३ ३	१ ० ५७ १४	० २० २७ १८	९ ४ ५८ ४३	१ ३ १९ ३४	९ १७ ५५ ७	८ १६ ३६ ५१	१० ११ ४८ १०	−१३ २६	२३ ५९	५ १२	१३
१४	१० १ ३३ ४१	१ १४ ३० ५५	० २१ २ ४५	९ ५ ४२ १०	१ ३ २४ १९	९ १९ १० १२	८ १६ ४२ ३४	१० ११ ४४ ०	−१३ ६	२६ ५४	५ १७	१४
१५	१० २ ३४ १८	१ २७ ४६ १८	० २१ ३८ १६	९ ६ २९ ३०	१ ३ २९ १५	९ २० २५ १५	८ १६ ४८ १३	१० ११ ४१ ४९	−१२ ४५	२८ १४	५ ४	१५
१६	१० ३ ३४ ५१	२ १० ४५ २४	० २२ १३ ४९	९ ७ २० २३	१ ३ ३४ २२	९ २१ ४० १५	८ १६ ५३ ५०	१० ११ ३८ ३८	−१२ २५	२७ ५८	४ ३६	१६
१७	१० ४ ३५ २४	२ २३ २८ ५९	० २२ ४९ २६	९ ८ १४ ३४	१ ३ ३९ ३९	९ २२ ५५ १७	८ १६ ५९ २३	१० ११ ३५ २७	−१२ ४	२६ १३	३ ५५	१७
१८	१० ५ ३५ ५६	३ ५ ५९ २४	० २३ २५ ६	९ ९ ११ ४८	१ ३ ४५ ७	९ २४ १० १९	८ १७ ४ ५२	१० ११ ३२ १७	−११ ४३	२३ १२	३ ३	१८
१९	१० ६ ३६ २४	३ १८ १८ ५२	० २४ ० ४८	९ १० ११ ४७	१ ३ ५० ४४	९ २५ २५ १९	८ १७ १० १७	१० ११ २९ ६	−११ २२	१९ ९	२ ३	१९
२०	१० ७ ३६ ५२	४ ० २८ ४	० २४ ३६ ३४	९ ११ १४ २४	१ ३ ५६ ३२	९ २६ ४० १९	८ १७ १५ ३९	१० ११ २५ ५५	−११ ०	१४ २३	० ५९	२०
२१	१० ८ ३७ १८	४ १२ २९ ९	० २५ १२ २२	९ १२ १९ २५	१ ४ २ ३०	९ २७ ५५ १८	८ १७ २० ५८	१० ११ २२ ४४	−१० ३९	९ ७	० ८	२१
२२	१० ९ ३७ ४२	४ २४ २४ २२	० २५ ४८ १३	९ १३ २६ ४०	१ ४ ८ ३८	९ २९ १० १७	८ १७ २६ १२	१० ११ १९ ३३	−१० १७	३ ३४	−१ १३	२२
२३	१० १० ३८ ६	५ ६ १४ ४६	० २६ २४ ७	९ १४ ३६ ३	१ ४ १४ ५६	१० ० २५ १७	८ १७ ३१ २३	१० ११ १६ २३	− ९ ५५	− २ ३	−२ १५	२३
२४	१० ११ ३८ २८	५ १८ ३ १३	० २७ ० ४	९ १५ ४७ २३	१ ४ २१ २४	१० १ ४० १५	८ १७ ३६ २९	१० ११ १३ १२	− ९ ३३	− ७ ३५	−३ ११	२४
२५	१० १२ ३८ ४८	५ २९ ५३ १	० २७ ३६ ३	९ १७ ० ३४	१ ४ २८ १	१० २ ५५ १२	८ १७ ४१ ३२	१० ११ १० १	− ९ ११	−१२ ५२	−३ ५९	२५
२६	१० १३ ३९ ७	६ ११ ४६ ३१	० २८ १२ ५	९ १८ १५ ३२	१ ४ ३४ ४७	१० ४ १० १०	८ १७ ४६ ३१	१० ११ ६ ५०	− ८ ४८	−१७ ४२	−४ ३७	२६
२७	१० १४ ३९ २५	६ २३ ४७ ५६	० २८ ४८ ९	९ १९ ३२ ८	१ ४ ४१ ४३	१० ५ २५ ७	८ १७ ५१ २५	१० ११ ३ ४०	− ८ २६	−२१ ५४	−५ ३	२७
२८	१० १५ ३९ ४०	७ ६ १ ५२	० २९ २४ १५	९ २० ५० २०	१ ४ ४८ ४९	१० ६ ४० ३	८ १७ ५६ १६	१० ११ ० २९	− ८ ३	−२५ १५	−५ १९	२८
मार्च १	१० १६ ३९ ५६	७ १८ ३१ ४१	१ ० ० २४	९ २२ १० ४	१ ४ ५६ ३	१० ७ ५४ ०	८ १८ १ २	१० १० ५७ १८	− ७ ४०	−२७ २८	−५ १५	१ मार्च
२	१० १७ ४० ९	८ १ २२ ४	१ ० ३६ ३५	९ २३ ३१ १४	१ ५ ३ २७	१० ९ ९ ५५	८ १८ ५ ४४	१० १० ५४ ७	− ७ १८	−२८ १९	−४ ५८	२
३	१० १८ ४० २०	८ १४ ३७ ११	१ १ १२ ४८	९ २४ ५३ ४८	१ ५ १० ५९	१० १० २४ ५०	८ १८ १० २२	१० १० ५० ५६	− ६ ५५	−२७ ३५	−४ २५	३
४	१० १९ ४० ३१	८ २८ १८ २४	१ १ ४९ ३	९ २६ १७ ४६	१ ५ १८ ४०	१० ११ ३९ ४६	८ १८ १४ ५५	१० १० ४७ ४६	− ६ ३२	−२५ ११	−३ ३६	४
५	१० २० ४० ३८	९ १२ २६ ४८	१ २ २५ २०	९ २७ ४३ १	१ ५ २६ ३०	१० १२ ५४ ४०	८ १८ १९ २४	१० १० ४४ ३५	− ६ ९	−२१ १२	−२ ३३	५
६	१० २१ ४० ४६	९ २७ १ १	१ ३ १ ४०	९ २९ ९ ३६	१ ५ ३४ २८	१० १४ ९ ३४	८ १८ २३ ४८	१० १० ४१ २४	− ५ ४५	−१५ ४८	−१ १८	६
७	१० २२ ४० ५०	१० ११ ५५ ६	१ ३ ३८ ०	१० ० ३७ २३	१ ५ ४२ ३५	१० १५ २४ २५	८ १८ २८ ८	१० १० ३८ १३	− ५ २२	− ९ २३	−० ४	७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

सन् १९८९ ई०

(१ मार्च को अयनांशः २३°।४२'।२४")

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सू.क्रां.	चं. क्रां.	चन्द्रशर	तारीख
सन् १९८९ ई.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	सन् १९८९ ई.
मार्च ८	१० २३ ४० ५२	१० २७ २ १८	१ ४ १४ २३	१० २ ६ २७	१ ५ ५० ५०	१० १६ ३९ १७	८ १८ ३२ २३	१० १० ३५ ३	-४ ५९	-२ २०	१ २७	८ मार्च
९	१० २४ ४० ५४	११ १२ १४ ७	१ ४ ५० ४८	१० ३ ३६ ४३	१ ५ ५९ १४	१० १७ ५४ १०	८ १८ ३६ ३४	१० १० ३१ ५२	-४ ३५	४ ५२	२ ४४	९
१०	१० २५ ४० ५२	११ २७ १९ ३७	१ ५ २७ १४	१० ५ ८ ११	१ ६ ७ ४५	१० १९ ८ ५९	८ १८ ४० ४०	१० १० २८ ४१	-४ १२	११ ४५	३ ४८	१०
११	१० २६ ४० ४८	० १२ १० ४३	१ ६ ३ ४२	१० ६ ४० ५१	१ ६ १६ २४	१० २० २३ ४९	८ १८ ४४ ४१	१० १० २५ ३०	-३ ४८	१७ ५०	४ ३७	११
१२	१० २७ ४० ४३	० २६ ४१ १९	१ ६ ४० ११	१० ८ १४ ४४	१ ६ २५ ११	१० २१ ३८ ३८	८ १८ ४८ ३७	१० १० २२ १९	-३ २५	२२ ४६	५ ६	१२
१३	१० २८ ४० ३५	१ १० ४६ २१	१ ७ १६ ४१	१० ९ ४९ ४६	१ ६ ३४ ६	१० २२ ५३ २५	८ १८ ५२ २८	१० १० १९ ९	-३ १	२६ १३	५ १६	१३
१४	१० २९ ४० २५	१ २४ २५ १५	१ ७ ५३ १४	१० ११ २६ ०	१ ६ ४३ ९	१० २४ ८ १२	८ १८ ५६ १५	१० १० १५ ५८	-२ ३७	२८ १	५ ८	१४
१५	११ ० ४० १३	२ ७ ३९ ३८	१ ८ २९ ४७	१० १३ ३ २७	१ ६ ५२ १९	१० २५ २२ ५८	८ १८ ५९ ५६	१० १० १२ ४७	-२ १४	२८ ९	४ ४३	१५
१६	११ १ ३९ ५७	२ २० ३१ २	१ ९ ६ २२	१० १४ ४२ ३	१ ७ १ ३६	१० २६ ३७ ४१	८ १९ ३ ३३	१० १० ९ ३६	-१ ५०	२६ ४४	४ ४	१६
१७	११ २ ३९ ४१	३ ३ ३ ३०	१ ९ ४२ ५८	१० १६ २१ ५४	१ ७ ११ ०	१० २७ ५२ २६	८ १९ ७ ४	१० १० ६ २५	-१ २६	२३ ५९	३ १५	१७
१८	११ ३ ३९ २२	३ १५ २१ १६	१ १० १९ ३६	१० १८ २ ५७	१ ७ २० ३२	१० २९ ७ ९	८ १९ १० ३१	१० १० ३ १५	-१ ३	२० १२	२ १७	१८
१९	११ ४ ३८ ०	३ २७ २७ ०	१ १० ५६ १४	१० १९ ४५ १२	१ ७ ३० १०	११ ० २१ ४९	८ १९ १३ ५२	१० १० ० ४	-० ३९	१५ ३७	१ १५	१९
२०	११ ५ ३८ ३७	४ ९ २५ ४	१ ११ ३२ ५४	१० २१ २८ ४३	१ ७ ३९ ५६	११ १ ३६ ३१	८ १९ १७ ८	१० ९ ५६ ५३	-० १५	१० ३०	० ९	२०
२१	११ ६ ३८ १३	४ २१ १७ २४	१ १२ ९ ३५	१० २३ १३ २८	१ ७ ४९ ४८	११ २ ५१ ११	८ १९ २० १९	१० ९ ५३ ४२	० ८	५ ३	० ५६	२१
२२	११ ७ ३७ ४४	५ ३ ६ ५९	१ १२ ४६ १६	१० २४ ५९ २८	१ ७ ५९ ४७	११ ४ ५ ५०	८ १९ २३ २४	१० ९ ५० ३१	० ३२	-० ३३	-१ ५८	२२
२३	११ ८ ३७ १५	५ १४ ५६ २८	१ १३ २२ ५९	१० २६ ४६ ४९	१ ८ ९ ५३	११ ५ २० २९	८ १९ २६ २४	१० ९ ४७ २१	० ५६	-६ ७	-२ ५५	२३
२४	११ ९ ३६ ४५	५ २६ ४६ ४९	१ १३ ५९ ४४	१० २८ ३५ २२	१ ८ २० ५	११ ६ ३५ ६	८ १९ २९ १९	१० ९ ४४ १०	१ १९	-११ २९	-३ ४५	२४
२५	११ १० ३६ ११	६ ८ ४० २४	१ १४ ३६ २९	११ ० २५ १३	१ ८ ३० २३	११ ७ ४९ ४२	८ १९ ३२ ९	१० ९ ४० ५९	१ ४३	-१६ २७	-४ २४	२५
२६	११ ११ ३५ ३६	६ २० ३९ ४५	१ १५ १३ १५	११ २ १६ २५	१ ८ ४० ४८	११ ९ ४ १९	८ १९ ३४ ५३	१० ९ ३७ ४८	२ ७	-२० ४९	-४ ५३	२६
२७	११ १२ ३५ १	७ २ ४६ १२	१ १५ ५० ३	११ ४ ८ ५५	१ ८ ५१ १९	११ १० १८ ५४	८ १९ ३७ ३१	१० ९ ३४ ३८	२ ३०	-२४ २३	-५ ९	२७
२८	११ १३ ३४ २१	७ १५ २ ५५	१ १६ २६ ५१	११ ६ २ ४२	१ ९ १ ५६	११ ११ ३३ २७	८ १९ ४० ४	१० ९ ३१ २७	२ ५४	-२६ ५३	-५ ११	२८
२९	११ १४ ३३ ४१	७ २७ ३३ ३०	१ १७ ३ ४०	११ ७ ५७ ४९	१ ९ १२ ३९	११ १२ ४८ १	८ १९ ४२ ३२	१० ९ २८ १६	३ १७	-२८ ७	-४ ५९	२९
३०	११ १५ ३३ ०	८ १० २० २१	१ १७ ४० ३०	११ ९ ५४ १४	१ ९ २३ २८	११ १४ २ ३४	८ १९ ४४ ५४	१० ९ २५ ५	३ ४०	-२७ ५४	-४ ३१	३०
३१	११ १६ ३२ १६	८ २३ २७ ५९	१ १८ १७ २१	११ ११ ५१ ५३	१ ९ ३४ २२	११ १५ १७ ७	८ १९ ४७ १०	१० ९ २१ ५४	४ ४	-२६ ७	-३ ४९	३१
अप्रैल १	११ १७ ३१ ३०	९ ६ ५८ ३०	१ १८ ५४ १३	११ १३ ५० ४५	१ ९ ४५ २२	११ १६ ३१ ३७	८ १९ ४९ २१	१० ९ १८ ४४	४ २७	-२२ ४९	-२ ५३	१ अप्रैल
२	११ १८ ३० ४२	९ २० ५४ ३२	१ १९ ३१ ६	११ १५ ५० ४८	१ ९ ५६ २८	११ १७ ४६ ७	८ १९ ५१ २९	१० ९ १५ ३३	४ ५०	-१८ ७	-१ ४५	२
३	११ १९ २९ ५४	१० ५ १६ ५९	१ २० ७ ५९	११ १७ ५१ ५९	१ १० ७ ३९	११ १९ ० ३७	८ १९ ५३ २६	१० ९ १२ २२	५ १३	-१२ १६	० २९	३
४	११ २० २९ ३	१० २० २ २३	१ २० ४४ ५३	११ १९ ५४ ११	१ १० १८ ५५	११ २० १५ ५	८ १९ ५५ १९	१० ९ ९ ११	५ ३६	-५ ३६	० ५१	४
५	११ २१ २८ ९	११ ५ ६ ४	१ २१ २१ ४८	११ २१ ५७ १८	१ १० ३० १७	११ २१ २९ ३२	८ १९ ५७ ७	१० ९ ६ ०	५ ५९	१ ३१	२ ९	५
६	११ २२ २७ १५	११ २० २० २९	१ २१ ५८ ४४	११ २४ १ १४	१ १० ४१ ४४	११ २२ ४३ ५९	८ १९ ५८ ५०	१० ९ २ ५०	६ २२	८ ३६	३ १९	६
७	११ २३ २६ १७	० ५ ३४ १८	१ २२ ३५ ४०	११ २६ ५ ४६	१ १० ५३ १६	११ २३ ५८ २३	८ २० ० २६	१० ८ ५९ ३९	६ ४४	१५ ११	४ १४	७
८	११ २४ २५ १७	० २० ३७ ४१	१ २३ १२ ३६	११ २८ १० ४७	१ ११ ४ ५२	११ २५ १२ ४७	८ २० १ ५७	१० ८ ५६ २८	७ ७	२० ४६	४ ५१	८
९	११ २५ २४ १६	१ ५ २२ ४	१ २३ ४९ ३४	११ ० १६ ३	१ ११ १६ ३३	११ २६ २७ १२	८ २० ३ २१	१० ८ ५३ १७	७ २९	२४ ५७	५ ८	९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यूरेनस नेपच्यून एवं वेंकटेश (प्लूटो)
(५ घं. ३० मि. भा.स्टैं.टा. सं. २०४५ वि.)

तारीख १९८८		यूरेनस रा.अं.क.	नेपच्यून रा.अं.क.	वेंकटेश (प्लूटो) रा.अं.क.
मार्च	२०	८। ७।१४	८।१६।२१	६।१८।३३
	३१	८। ७।१९	८।१६।२८	६।१८।१९
अप्रैल	१०	८। ७।१९	८।१६।३०	६।१८। ४
	२०	८। ७।१४	८।१६।२९	६।१७।४९
	३०	८। ७। ५	८।१६।२४	६।१७।३२
मई	१०	८। ६।५०	८।१६।१५	६।१७।१४
	२०	८। ६।३२	८।१५। ५	६।१६।५८
	३१	८। ६। ९	८।१५।५२	६।१६।४३
जून	१०	८। ५।४४	८।१५।३७	६।१६।२९
	२०	८। ५।२०	८।१५।२२	६।१६।१८
	३०	८। ४।५७	८।१५। ७	६।१६।१०
जुलाई	१०	८। ४।३६	८।१४।५१	६।१६। ५
	२०	८। ४।१६	८।१४।३६	६।१६। ४
	३१	८। ३।५८	८।१४।२०	६।१६। ५
अगस्त	१०	८। ३।४१	८।१४। ७	६।१६।११
	२०	८। ३।२७	८।१३।५६	६।१६।२०
	३१	८। ३।२०	८।१३।४८	६।१६।३३
सितंम्बर	१०	८। ३।२१	८।१३।४४	६।१६।४८
	२०	८। ३।२६	८।१३।४३	६।१७। ६
	३०	८। ३।३६	८।१३।४५	६।१७।२६
अक्तूबर	१०	८। ३।५०	८।१३।५०	६।१७।४८
	२०	८। ४।१०	८।१४। ०	६।१८।११
	३१	८। ४।३६	८।१४।१२	६।१८।३६
नवंबर	१०	८। ५। ४	८।१४।२७	६।१९। १
	२०	८। ५।३५	८।१४।४४	६।१९।२५
	३०	८। ६। ९	८।१५। ४	६।१९।४९
दिसंबर	१०	८। ६।४४	८।१५।२५	६।२०।११
	२०	८। ७।२०	८।१५।४७	६।२०।३०
	३१	८। ७।५७	८।१६।१०	६।२०।४६
जनवरी	१०	८। ८।३४	८।१६।३३	६।२०।५९
१९८९	२०	८। ९। ९	८।१६।५६	६।२१।१०
	३१	८। ९।४२	८।१७।१७	६।२१।१९
फरवरी	१०	८।१०।१२	८।१७।३८	६।२१।२६
	२०	८।१०।३८	८।१७।५६	६।२१।२८
	२८	८।११। ०	८।१८। ९	६।२१।२७
मार्च	१०	८।११।१७	८।१८।२१	६।२१।२२
	२०	८।११।३०	८।१८।३०	६।२१।१३
	३१	८।११।३६	८।१८।३६	६।२०।५९
अप्रैल	१०	८।११।३८	८।१८।४१	६।२०।४५

ग्रहों के उदयास्त

ग्रह	उदयास्त दिशा	तारीख
बुध	पू.अ.	७- ४-८८
,,	प.उ.	२- ५-८८
,,	प.अ.	४- ६-८८
,,	पू.उ.	२२- ६-८८
,,	पू.अ.	२२- ७-८८
,,	प.उ.	१६- ८-८८
,,	प.अ.	५-१०-८८
,,	पू.उ.	१८-१०-८८
,,	पू.अ.	१०-११-८८
,,	प.उ.	२४-१२-८८
,,	प.अ.	१८- १-८९
,,	पू.उ.	३१- १-८९
,,	पू.अ.	२१- ३-८९
गुरु	प.अ.	२३- ४-८८
,,	पू.उ.	१९- ५-८८
शुक्र	प.अ.	१०- ६-८८
,,	पू.उ.	१९. ६-८८
,,	पू.अ.	१८- २-८९
शनि	प.अ.	१०-१२-८८
,,	पू.उ.	१२- १-८९

उपर्यंकित कालम में—

पू=पूर्व, प=पश्चिम, उ=उदय, अ=अस्त समझें।

नोट—मंगल-गुरु एवं शनि का सूर्य कैन्द्रिक उदय पूर्व में तथा अस्त पश्चिम में ही होता है।

ग्रहों के उदयास्त—ग्रहों के उदयास्त दो प्रकार के हैं।

(१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त, (२) सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त। दैनिक उदयास्त भू-भ्रमण के कारण होते हैं। पृथ्वी के अक्ष भ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य-चन्द्र के समान प्रतिदिन उदित होकर अस्त होता है। सूर्य-चन्द्र के दैनिक उदयास्तकाल इस पंचांग में दिए रहते हैं। अन्य ग्रहों के दैनिक उदयास्त फलित एवं धार्मिक कृत्यों के निरुपयोगी होने से नहीं दिए जाते। सूर्य के समीप हो जाने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है एवं सूर्य से दूर हो जाने पर दृश्य (उदित) हो जाता है।

ग्रहों के वक्र-मार्ग

ग्रह	वक्र-मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	२६- ८-८८
,,	मार्गी	२८-१०-८८
बुध	वक्री	३१- ५-८८
,,	मार्गी	२४- ६-८८
,,	वक्री	२८- ९-८८
,,	मार्गी	२०-१०-८८
,,	वक्री	१६- १-८९
,,	मार्गी	५- २-८९
गुरु	वक्री	२४- ९-८८
,,	मार्गी	२०- १-८९
शुक्र	वक्री	२२- ५-८८
,,	मार्गी	४- ७-८८
शनि	वक्री	११- ४-८८
,,	मार्गी	३१- ८-८८
यूरेनस	वक्री	७- ४-८८
,,	मार्गी	७- ९-८८
नेपच्यून	वक्री	१४- ४-८८
,,	मार्गी	२१- ९-८८
वेंकटेश	मार्गी	२३- ७-८८
,,	वक्री	१८- २-८९

ग्रहों की समकल युतियां
(वि. सं. २०४५)

युतग्रह	तारीख
सू.बु.	२०- ४-८८
,,	१३- ६-८८
,,	३- ८-८८
सू.बु.	११-१०-८८
,,	१-११-८८
,,	२५- १-८९
,,	४- ४-८९
सू.गु.	३- ५-८८
सू.शु.	१३- ६-८८
,,	५- ४-८९
सू.श.	२७-१२-८८
सू.रा.	२४- २-८९
सू.के.	६- ९-८८
सू.यू.	२१-१२-८८
सू.ने.	३१-१२-८८
सू.वे.(प्लू.)	५-११-८८
मं.गु.	११- ३-८९
मं.रा.	२१-६-८८
बु.गु.	२५- ४-८८
बु.शु.	१०- ६-८८
,,	१- २-८९
,,	४- ४-८९
बु.श.	१७-१२-८८
बु.रा.	१३- ३-८९
बु.के.	२१- ८-८८
बु.यू.	१५-१२-८८
बु.ने.	२०-१२-८८
बु.वें.(प्लू.)	१५-१२-८८
शु.श.	१६- १-८९
शु.रा.	३- ३-८९
शु.के.	१५-१०-८८
शु.यु.	१३- १-८९
शु.ने.	१९- १-८९
शु.वें.(प्लू.)	२०-१२-८८
श.यू.	२०-१०-८८
श.ने.	४- ३-८९

सप्तवार व्रत कथा	६)००
सत्यनारायण व्रत कथा	५)००
वैष्णो देवी व्रत कथा	५)००
सोमवार व्रत कथा	५)००
मंगलवार व्रत कथा	५)००
बुधवार व्रत कथा	५)००
बृहस्पतिवार व्रत कथा	५)००
शुक्रवार व्रत कथा	५)००
शनिवार व्रत कथा	५)००
रविवार व्रत कथा	५)००
श्री लक्ष्मी पूजन विधि भा. टी.	६)००
महालक्ष्मी व्रत कथा	६)००
हरतालिका व्रत कथा	६)००
विश्वकर्मा पूजन विधि	६)००
बत्तीस पूर्णमासी व्रत कथा	६)००
अनन्त व्रत कथा	६)००
दुर्गा नवरात्र व्रत कथा	६)००
दुर्गा पूजन हवन पद्धति	६)००
सर्वदेव पूजा पद्धति	६)००

पता—धर्मसन ग्रन्थाकार, नई सड़क, दिल्ली-६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति एवं शर (५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) (सं. २०४५ वि.)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति एवं शर (५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.) (सं. २०४५ वि.)

		मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि	
		क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
मार्च	२०	−२२।५२	−०।३८	−११।३५	−२।५८	११।२४	−०।५९	१८।२६	२।१४	−२२।१७	१। ८
१९८८	२६	−२२।२३	−०।४५	− ८।३४	−२।१८	११।५२	−०।५८	२०।३९	२।४१	−२२।१७	१। ८
अप्रैल	१	−२१।४८	−०।५२	− ४।५१	−२।२२	१२।२०	−०।५८	२२।३५	३। ७	−२२।१६	१। ९
	७	−२१। ७	−१। ०	− ०।२८	−२। ८	१२।४८	−०।५७	२४।१४	३।३०	−२२।१६	१। ९
	१३	−२०।२१	−१। ९	+४।२९	−१।३६	१३।१६	−०।५६	२५।३३	३।५१	−२२।१६	१। ९
	१९	−१९।२९	−१।१७	९।४८	०।४७	१३।४४	−०।५६	२६।३४	४। ७	−२२।१६	१। ९
	२५	−१८।३३	−१।२७	१५। ५	०।१५	१४।११	−०।५५	२७।१५	४।१९	−२२।१६	१।१०
मई	१	−१७।३३	−१।३६	१९।४०	१।१७	१४।३८	−०।५५	२७।३८	४।२४	−२२।१६	१।१०
	७	−१६।२९	−१।४६	२२।५९	२। ५	१५। ४	−०।५५	२७।४४	४।२१	−२२।१६	१।१०
	१३	−१५।२२	−१।५६	२४।४८	२।२६	१५।२९	−०।५४	२७।३४	४। ८	−२२।१६	१।१०
	१९	−१४।१२	−२। ७	२५।२०	२।१५	१५।५४	−०।५४	२७। ८	३।४२	−२२।१६	१।१०
	२५	−१३। १	−२।१८	२४।५१	१।३१	१६।१८	−०।५४	२६।२७	३। १	−२२।१६	१।१०
	३१	−११।४९	−२।२९	२३।३८	०।१४	१६।४१	−०।५४	२५।२८	२। २	−२२।१७	१।१०
जून	६	−१०।३७	−२।४१	२१।५८	−१।२५	१७। ३	−०।५४	२४।११	०।४८	−२२।१७	१। ९
	१२	− ९।२५	−२।५३	२०।१२	−३। ४	१७।२४	−०।५४	२२।३९	०।३६	−२२।१७	१। ९
	१८	− ८।१४	−३। ५	१८।५२	−४।१२	१७।४४	−०।५४	२१। २	−१।५८	−२२।१८	१। ९
	२४	− ७। ५	−३।१८	१८।२५	−४।३१	१८। ३	−०।५४	१९।३५	−३। ९	−२२।१८	१। ८
	३०	− ५।५९	−३।३०	१८।५६	−४। ५	१८।२१	−०।५४	१८।३२	−४। १	−२२।१८	१। ८
जुलाई	६	− ४।५६	−३।४३	२०। ८	−३। ७	१८।३७	−०।५५	१७।५६	−४।३४	−२२।१९	१। ७
	१२	− ३।५८	−३।५६	२१।३४	−१।५२	१८।५२	−०।५५	१७।४६	−४।५२	−२२।१९	१। ६
	१८	− ३। ५	−४। ९	२२।३७	०।३२	१९। ६	−०।५५	१७।५४	−४।५६	−२२।१९	१। ५
	२४	− २।१८	−४।२१	२२।३५	०।३८	१९।१९	−०।५६	१८।१५	−४।५१	−२२।२०	१। ५
	३०	− १।३७	−४।३४	२१। २	१।२६	१९।३१	−०।५६	१८।४१	−४।३८	−२२।२०	१। ४
अगस्त	५	− १। ५	−४।४५	१८। ४	१।४५	१९।४१	−०।५६	१९। ७	−४।१९	−२२।२१	१। ३
	११	− ०।४१	−४।५६	१४।१०	१।४०	१९।५०	−०।५७	१९।२७	−३।५७	−२२।२१	१। २
	१७	− ०।२५	−५। ६	९।४८	१।१५	१९।५८	−०।५७	१९।३९	−३।३१	−२२।२२	१। १
	२३	− ०।२०	−५।१३	५।२०	०।३७	२०। ५	−०।५८	१९।३८	−३। ३	−२२।२३	१। ०
	२९	− ०।२३	−५।१८	+०।५६	०। ९	२०।१०	−०।५९	१९।२३	−२।३४	−२२।२४	०।५९
सितंबर	४	− ०।३४	−५।१९	− ३।१३	०।५९	२०।१४	−०।५९	१८।५१	−२। ४	−२२।२५	०।५८
	१०	− ०।५३	−५।१५	− ७। ०	−१।५१	२०।१७	−१। ०	१८। २	−१।३५	−२२।२६	०।५७
	१६	− १।१८	−५। ७	−१०।१४	−२।४०	२०।१९	−१। ०	१६।५५	−१। ६	−२२।२७	०।५६
	२२	− १।४४	−४।५३	−१२।४१	−३।२०	२०।२०	−१। १	१५।३१	०।३७	−२२।२९	०।५५
	२८	− २। ८	−४।३४	−१३।५२	−३।४२	२०।१९	−१। २	१३।५०	०।११	−२२।३०	०।५४
अक्टूबर	४	− २।२७	−४।११	−१३। ३	−३।२६	२०।१७	−१। २	११।५४	०।१४	−२२।३१	०।५३
	१०	− २।३९	−३।४[illegible]	− ९।४२	−२।१०	२०।१४	−१। २	९।४५	०।३६	−२२।३३	०।५२
	१६	− २।४२	−३।१७	− ५।२५	०।११	२०।१०	−१। ३	७।२४	०।५६	−२२।३४	०।५१
	२२	− २।३३	−२।४९	− ३।२४	१।२५	२०। ५	−१। ३	४।५३	१।१२	−२२।३५	०।५०
	२८	− २।१४	−२।२२	− ४।३३	२। ९	१९।५८	−१। ३	२।१६	१।२६	−२२।३७	०।४९
नवंबर	३	− १।४५	−१।५६	− ७।३४	२। ३	१९।५१	−१। ३	+०।२७	१।३७	−२२।३८	०।४९
	९	− १। ८	−१।३३	−११।१५	१।३७	१९।४३	−१। ३	−३।१२	१।४४	−२२।३९	०।४८
	१५	− ०।२५	−१।११	−१४।५४	१। ०	१९।३४	−१। २	−५।५७	१।४८	−२२।३९	+०।४७
	२१	+ ०।३१	−०।५२	−१८।१२	+०।२०	१९।२५	−१। २	−८।३९	१।४९	−२२।४०	०।४७
नवम्बर	२७	+१।३०	−०।३५	−२१। ०	−०।२१	१९।१६	−१। १	−२१।१५	१।४८	−२२।४०	०।४६
दिसम्बर	३	२।३३	−०।१९	−२३।१२	−०।५९	१९। ७	−१। ०	−२३।४२	१।४३	−२२।४०	०।४५
	९	३।४१	−०। ६	−२४।४०	−१।३१	१८।५८	−०।५९	१५।५८	१।३५	−२२।४०	०।४५
	१५	४।५२	+०। ६	−२५।२२	−१।५६	१८।५०	−०।५८	−१८। ०	१।२६	−२२।३९	०।४४
	२१	६। ५	+०।१७	−२५।१२	−२।१०	१८।४३	−०।५७	−२९।४५	१।१४	−२२।३८	०।४४
	२७	७।२०	+०।२६	−२४। ८	−२।१०	१८।३७	−०।५५	−२२।१०	१। १	−२२।३७	०।४३
जनवरी	२	८।३६	+०।३४	−२२।११	−१।५०	१८।३२	−०।५४	−२२।१३	०।४७	−२२।३६	०।४३
१९८९	८	९।५३	+०।४१	−१९।३४	−१। ०	१८।३०	−०।५२	−२२।५२	०।३२	−२२।३४	०।४३
	१४	११। ९	+०।४७	−१६।५७	+०।२४	१८।२८	−०।५०	−२३। ७	०।१६	−२२।३३	०।४२
	२०	१२।२५	+०।५३	−१५।३०	२।१३	१८।२९	−०।४९	−२२।५६	०। ०	−२२।३१	०।४२
	२६	१३।४०	+०।५८	−१५।५७	३।२८	१८।३१	−०।४७	−२२।२०	०।१५	−२२।२८	०।४२
फरवरी	१	१४।५३	+१। २	−१७।२१	३।२२	१८।३५	−०।४६	−२१।१९	०।२९	−२२।२६	०।४२
	७	१६। ३	१। ५	−१८।३५	२।२४	१८।४१	−०।४४	−१९।५५	०।४३	−२२।२४	०।४१
	१३	१७।११	१। ९	−१९।१४	१।१३	१८।४८	−०।४३	−१८।११	०।५५	−२२।२१	०।४१
	१९	१८।१५	१।११	−१९। ९	+०। ८	१८।५७	−०।४१	−१६। ७	−१। ५	−२२।१९	०।४१
	२५	१९।१६	१।१४	−१८।१८	−०।४७	१९। ६	−०।४०	−१३।४८	−१।१४	−२२।१६	०।४१
मार्च	३	२०।१३	१।१६	−१६।४०	−१।२९	१९।१७	−०।३९	−११।२४	−१।२०	−२२।१४	०।४१
	९	२१। ६	१।१७	−१४।१५	−१।५८	१९।२९	−०।३७	− ८।२१	−१।२४	−२२।१२	०।४१
	१५	२१।५३	१।१९	−११। ६	−२।१३	१९।४१	−०।३६	− ५।३८	−१।२६	−२२। ९	०।४१
	२१	२२।३६	१।२०	− ७।१२	−२।१३	१९।५४	−०।३५	− २।४१	−१।२६	−२२। ८	०।४१
	२७	२३।१३	१।२१	− २।३७	−१।५५	२०। ७	−०।३४	+०।२०	−१।२३	−२२। ६	०।४१
अप्रैल	२	२३।४४	१।२१	२।३४	−१।२०	२०।२१	−०।३३	+३।२०	−१।१८	−२२। ५	०।४१
	८	२४। ९	१।२२	८। ७	−०।२६	२०।३४	−०।३२	६।१९	−१।११	−२२। ४	०।४१
	१४	+२४।२८	+१।२२	+१३।३४	+०।३९	+२०।४८	−०।३१	+९।१२	−१। ३	−२२। ३	+०।४०

युरेनस नेपच्यून वेंकटेश (प्लूटो) के क्रान्तिशर (वि. सं. २०४५) (५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा.)

तारीख		युरेनस		नेपच्यून		वेंकटेश (प्लूटो)	
		क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
मार्च '८८	१	—२३।३७	— ०।११	—२२। ८	+ ०।५८	+ ०। २	+१६।२२
अप्रैल	१	—२३।३७	— ०।१२	—२२। ६	+ ०।५९	+ ०।२२	+१६। ४
मई	१	—२३।३८	— ०।१२	—२२। ५	+ ०।५९	+ ०।३९	+१६।३७
जून	१	—२३।३९	— ०।१३	—२२। ६	+ १। ०	+ ०।४८	+१६।३१
जुलाई	१	—२३।३९	— ०।१३	—२२। ९	+ १। ०	+ ०।४४	+१६।१८
अगस्त	१	—२३।३८	— ०।१३	—२२।१३	+ १। ०	+ ०।२८	+१६। १
सितंबर	१	—२३।३८	— ०।१३	—२२।१६	+ ०।५९	+ ०। ४	+१५।४३
अक्टूबर	१	—२३।३८	— ०।१३	—२२।१७	+ ०।५८	— ०।२४	+१५।४१
नवम्बर	१	—२३।३९	— ०।१३	—२२।१७	+ ०।५६	— ०।५०	+१५।२५
दिसंबर	१	—२३।४०	— ०।१३	—२२।१५	+ ०।५५	— १। ८	+१५।२७
जन. '८९	१	—२३।३९	— ०।१३	—२२।१०	+ ०।५४	— १।१६	+१५।३६
फरवरी	१	—२३।३८	— ०।१४	—२२। ५	+ ०।५४	— १।१२	+१५।५०
मार्च	१	—२३।३६	— ०।१४	—२२। १	+ ०।५५	— ०।४९	+१६। ४
अप्रैल	१	—२३।३५	— ०।१५	—२१।५७	+ ०।५५	— ०।४०	+१६। ६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार (सं. २०४५ वि.)

सूर्य चार			मंगल चार			बुध चार	
तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८९ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८९ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार	तारीख सन् १९८८ ई. — नक्षत्र चरण चार
मार्च १७ उ.भा. १	जुलाई ९ पुन.२ मिथुन	अक्तू.३० स्वा. ३ तुला	फर. १२ धनि. ३ कुंभ	मई २३ शत. १ कुंभ	फर. १२ भर. ३ मेष	अप्रैं. २५ भर. २ मेष	अग. ३ आश्ले.१ कर्क
२० २	१२ ३	नवं. २ ४	१५ ४	२८ २	१८ ४	२६ ३	४ २
२४ ३	१६ ४ कर्क	६ विशा. १	१९ शत. १	जून २ ३	२३ कृत्ति. १	२८ ४	६ ३
२७ ४	१९ पुण्य १	९ २	२२ २	७ ४	२८ २ वृष	३० कृत्ति. १	७ ४
३१ रेवती १	२३ २	१२ ३	२५ ३	१३ पू.भा. १	मार्च ६ ३	मई १ २ वृष	९ मघा १ सिंह
अप्रैल ३ २	२६ ३	१६ ४ वृश्चि.	मार्च १ ४	१९ २	१२ ४	३ ३	११ २
६ ३	३० ४	१९ अनु. १	४ पू.भा. १	२५ ३	१७ रोहि. १	५ ४	१३ ३
१० ४	अग. २ आश्ले. १	२२ २	७ २	जुला. १ ४ मीन	२२ २	७ रोहि. १	१४ ४
१३ अश्वि.१ मेष	६ २	२५ ३	११ ३	८ उ.भा. १	२८ ३	९ २	१६ पू.फा. १
१६ २	९ ३	२९ ४	१४ ४ मीन	१४ २	अप्रैं. २ ४	११ ३	१८ २
२० ३	१३ ४	दिसं. २ ज्ये. १	१७ उ.भा. १	२२ ३		१३ ४	२० ३
२३ ४	१६ मघा १ सिंह	५ २	२१ २	३१ ४	**बुध चार**	१६ मृग. १	२२ ४
२७ भर. १	२० २	९ ३	२४ ३	अग. १४ रेवती १	(सन् १९८८ ई.)	१९ २	२४ उ.फा. १
३० २	२३ ३	१२ ४	२७ ४	२६ वक्री	मार्च १९ शत. २	२३ ३ मिथुन	२६ २ कन्या
मई ३ ३	२६ ४	१५ मूल १ धनु	३१ रेवती १	सितं. ७ उ.भा. ४	२१ ३	३१ वक्री	२९ ३
७ ४	३० पू.फा. १	१८ २	अप्रैल ३ २	२१ ३	२४ ४	जून १० मृग. २ वृष	३१ ४
११ कृत्ति. १	सितं. २ २	२२ ३	६ ३	अक्तू. ३ २	२६ पू.भा. १	१७ १	सितं. २ हस्त १
१४ २ वृष	६ ३	२५ ४	**मंगल चार**	१८ १	२८ २	२४ मार्गी	५ २
१७ ३	९ ४	२८ पू.षा. १		२८ मार्गी	३० ३	जुला. २ मृग. २	७ ३
२१ ४	१३ उ.फा. १	(१९८९ ई.)	(१९८८ ई.)	नवं. ६ उ.भा. २	अप्रैं. १ ४ मीन	६ ३ मिथुन	९ ४
२४ रोहि. १	१६ २ कन्या	जन. १ २	मार्च १८ पू.षा. ४	२२ ३	३ उ.भा. १	९ ४	१३ चित्रा १
२८ २	२० ३	४ ३	२३ उ.षा. १	दिसं. २ ४	५ २	१२ आर्द्रा १	१६ २
३१ ३	२३ ४	७ ४	२८ २ मकर	११ रेवती १	७ ३	१४ २	२० ३ तुला
जून ४ ४	२६ हस्त १	१० उ.षा. १	अप्रैल २ ३	१८ २	९ ४	१७ ३	२८ ४
७ मृग. १	३० २	१४ २ मकर	७ ४	२५ ३	१० रेवती १	१९ ४	२८ वक्री
११ २	अक्तू. ३ ३	१७ ३	१२ श्रव. १	(सन् १९८९ ई.)	१२ २	२० पुन. १	२९ चित्रा ३
१४ ३ मिथुन	६ ४	२० ४	१७ २	जन. १ ४	१४ ३	२२ २	अक्तू. ६ २ कन्या
१८ ४	१० चित्रा १	२३ श्रव. १	२२ ३	८ अश्वि. १ मेष	१५ ४	२४ ३	९ १
२१ आर्द्रा १	१३ २	२७ २	२७ ४	१४ २	१७ अश्वि. १ मेष	२६ ४ कर्क	१२ हस्त ४
२५ २	१७ ३ तुला	३० ३	मई २ धनि. १	२० ३	१९ २	२७ पुण्य १	१५ ३
२८ ३	२० ४	फर. ३ ४	७ २	२६ ४	२० ३	२९ २	२० मार्गी
जुलाई २ ४	२३ स्वाती १	६ धनि. १	१२ ३ कुंभ	फर. १ भर. १	२२ ४	३० ३	२५ हस्त ४
५ पुन. १	२७ २	९ २	१७ ४	६ २	२३ भर. १	अग. १ ४	२८ चित्रा १

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार (सं. २०४५ वि.)

बुध चार		गुरु चार	शुक्र चार				केतु चार
तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८८ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८९ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८९ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८८ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८८ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८८ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८९ ई. चार	तारीख नक्षत्र सन् चरण १९८८ ई. चार
नवं. १ चित्रा २	जन. ८ श्रव. २ मकर	अप्रैल ५ रेव. ३ मीन	अप्रै. ११ रोहि. २ वृष	सितं. २३ आश्ले. ३ कर्क	२३ अनु. ४ वृश्चि.	मार्च १८ पू.भा. ४ मीन	मई ८ पू.फा. ४
२ ३ तुला	११ ३	६ ४	१५ ३	२६ ४	२६ ज्ये. १	२१ उ.भा. १	जुला. १० ३
४ ४	१६ वक्री	**गुरु चार**	१८ ४	२९ मघा १ सिंह	२८ २	२४ २	सितं. ११ २
७ स्वाती १	२० श्रव. २		२३ मृग. १	अक्तू. १ २	३१ ३	२६ ३	नवं. १३ १
९ २	२३ १	(सन् १९८८ ई.)	२७ २	४ ३	(सन् १९८९ ई.)	२९ ४	(सन् १९८९ ई.)
११ ३	२६ उ.षा. ४	मार्च २५ अश्वि. ४	मई २ ३ मिथुन	७ ४	जन. ३ ४	अप्रैल १ रेवती १	जन. १५ मघा ४
१३ ४	२८ ३	अप्रै. ९ भर. १	८ ४	१० पू.फा. १	५ मूल १ धनु	४ २	मार्च १९ ३
१५ विशा. १	फर. १ २	२३ २	२० आर्द्रा १	१३ २	८ २	७ ३	
१७ २	५ मार्गी	मई ७ ३	२२ वक्री	१६ ३	११ ३	**शनि चार**	**यूरेनस चार**
१९ ३	१० उ.षा. ३	२१ ४	२४ मृग. ४	१८ ४	१३ ४	(सन् १९८८ ई.)	(सन् १९८८ ई.)
२१ ४ वृश्चि.	१५ ४	जून ४ कृत्ति. १	जून ४ ३	२२ उ.फा. १	१६ पू.षा. १	अप्रै. ११ वक्री	अप्रै. ७ वक्री
२३ अनु. १	१८ श्रव. १	१९ २ वृष	१० २ वृष	२४ २ कन्या	१९ २	जून ५ मूल २	मई १६ मूल २
२५ २	२२ २	जुलाई ६ ३	१४ १	२८ ३	२० ३	जुला. २३ १	सितं ७ मार्गी
२७ ३	२४ ३	२४ ४	२२ रोहि. ४	३० ४	२४ ४	अग. ३० मार्गी	दिसं. ९ मूल ३
३० ४	२७ ४	अग. १६ रोहि. १	जुला. ४ मार्गी	नवं. २ हस्त १	२७ उ.षा. १	अक्तू. ६ मूल २	(सन् १९८९ ई.)
दिसं. २ ज्ये. १	मार्च १ धनि. १	सितं. २४ वक्री	१८ मृग. १	४ २	२९ २ मकर	नवं. १६ ३	फर. ५ ४
४ २	४ २	नवं. २ कृत्ति. ४	२४ २	७ ३	फर. १ ३	दिसं. १५ ४	
६ ३	६ ३ कुंभ	२८ ३	२९ ३ मिथुन	१० ४	५ ४	(सन् १९८९ ई.)	**नेपच्यून चार**
८ ४	८ ४	दिसं. २७ २	अग. ३ ४	१३ चित्रा १	६ श्रव. १	जन. १३ पू.षा. १	(सन् १९८८ ई.)
१० मूल १ धनु	१० शत. १	(सन् १९८९ ई.)	७ आर्द्रा १	१५ २	९ २	फर. १३ २	
१२ २	१३ २	जन. २० मार्गी	११ २	१८ ३ तुला	१२ ३	अप्रै. ६ ३	अप्रै. १४ वक्री
१४ ३	१५ ३	फर. १३ कृत्ति. ३	१५ ३	२१ ४	१४ ४		सितं. २१ मार्गी
१६ ४	१७ ४	मार्च १३ ४	१८ ४	२३ स्वाती १	१७ धनि. १	**राहु चार**	(सन् १९८९ ई.)
१९ पू.षा. १	१९ पू.भा. १	अप्रै. २ रोहि. १	२२ पुन. १	२६ २	१९ २	(सन् १९८८ ई.)	जन. १३ पू.षा. २
२१ २	२१ २	**शुक्र चार**	२५ २	२९ ३	२२ ३ कुंभ	मई ८ पू.भा. २	
२३ ३	२३ ३		२९ ३	दिसं. १ ४	२५ ४	जुला. १० १	**वेंकटेश (प्लूटो) चार**
२५ ४	२४ ४ मीन	(सन् १९८८ ई.)	सितं. १ ४ कर्क	४ विशा. १	२८ शत. १	सितं. ११ शत. ४	मई ३१ स्वा. ३
२७ उ.षा. १	२६ उ.भा. १	मार्च २२ भर. ४	४ पुष्य १	७ २	मार्च २ २	नवं. १३ ३	जुला. २३ मार्गी
२९ २ मकर	२८ २	२५ कृत्ति. १	७ २	१० ३	५ ३		सितं. ६ स्वा. ४
(१८८९ ई.)	३० ३	२८ २ वृष	१० ३	१२ ४ वृश्चि.	८ ४		दिसं. ६ विशा. १
जन. १ ३	३१ ४	३१ ३	१४ ४	१५ अनु. १	१० पू.भा. १	(सन् १९८९ ई.)	
३ ४	अप्रैल २ रेवती १	अप्रै. ४ ४	१७ आश्ले. १	१८ २	१३ २	जन. १५ २	(सन् १९८९ ई.)
५ श्रव. १	४ २	७ रोहि. १	२० २	२० ३	१६ ३	मार्च. १९ १	फर. १८ वक्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.) वि. सं. २०४५

ता.	तिथि	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ चैत्र			१९८८ वैशा.			१९८८ वैशा.			१९८८ प्र.ज्ये.		
मार्च	शु.	घं. मि.	अप्रै.	कृ.	घं. मि.	अप्रै.	शु.	घं. मि.	मई	कृ.	घं. मि.
१९	२	२०।२२	३	१	२०। ६	१७	१	२०।१६	२	१	१९।५३
२०	३	२१।३०	४	२	२१। १	१८	२	२१।२४	३	२	२१। ०
२१	४	२२।३७	५	३	२२। ३	१९	३	२२।२९	४	३	२२। ४
२२	५	२३।४३	६	४	२३। ८	२०	४	२३।३०	५	४	२३। ६
२३	६	०। ०	७	५	०। ०	२१	५	०। ०	६	५	०। ०
२४	७	०।४६	८	६	०।११	२२	६	०।२२	७	६	०। १
२५	८	१।४३	९	७	१।११	२३	७	१। ७	८	७	०।४७
२६	९	२।२९	१०	८	२। ३	२४	८	१।४६	९	८	१।२८
२७	१०	३।१०	११	९	२।४८	२५	९	२।१८	१०	९	२। ४
२८	११	३।४६	१२	१०	३।२८	२६	१०	२।४८	११	१०	२।३६
२९	११	४।१९	१३	१२	४। ३	२७	११	३।१६	१२	११	३। ६
३०	१२	४।४८	१४	१३	४।३६	२८	१२	३।४१	१३	१२	३।३७
३१	१३	५।१३	१५	१४	५। ५	२९	१३	४। ७	१४	१३	४। ९
अप्रै. १	१४	५।३८	१६	३०	५।३५	३०	१४	४।३२	१५	३०	४।४६
२	१५	६। ४				मई १	१५	५। १			

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ प्र.(अधि.)			१९८८ द्वि.(अधि.)			१९८८ द्वि.(शुद्ध)			१९८८ आषा.		
मई	ज्ये.शु.	घं.मि.	जून	ज्ये.कृ.	घं. मि.	जून	ज्ये.शु.	घं. मि.	जून	कृ.	घं. मि.
१६	१	२०।११	१	१	२०।५५	१५	१	२०।५२	३०	१	२०।३६
१७	२	२१।१४	२	२	२१।५४	१६	२	२१।३७	जुला. १	२	२१।२३
१८	३	२२।१०	३	३	२२।४४	१७	३	२२।१५	२	३	२२। ४
१९	४	२२।५९	४	४	२३।२७	१८	४	२२।४८	३	४	२२।३८
२०	५	२३।४२	५	६	०। ०	१९	५	२३।१७	४	५	२३।१०
२१	६	०। ०	६	७	०। ४	२०	६	२३।४३	५	६	२३।४०
२२	६	०।१८	७	८	०।३७	२१	७	०। ०	६	७	०। ०
२३	७	०।४९	८	९	१। ८	२२	८	०। ८	७	९	०।१२
२४	८	१।१७	९	१०	१।३८	२३	९	०।३३	८	१०	०।४५
२५	९	१।४२	१०	११	२।१०	२४	९	०।५९	९	११	१।२२
२६	१०	२। ७	११	१२	२।४५	२५	१०	१।३०	१०	१२	२। ४
२७	११	२।३३	१२	१३	३।२४	२६	११	२। ३	११	१३	२।५३
२८	१२	३। ०	१३	१४	४। ८	२७	१२	२।४३	१२	१४	३।४५
२९	१३	३।३२	१४	३०	४।५८	२८	१३	३।३३	१३	३०	४।४४
३०	१४	४।१०				२९	१५	४।३४			
३१	१५	४।५४									

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ आषा.			१९८८ श्राव.			१९८८ श्राव.			१९८८ भाद्र.		
जुला.	शु.	घं. मि.	जुला.	कृ.	घं. मि.	अग.	शु.	घं. मि.	अग.	कृ.	घं. मि.
१४	१	२०।१४	३०	२	२०।३५	१३	१	१९।४८	२८	१	१९।३७
१५	२	२०।४८	३१	३	२१।१०	१४	२	२०।१३	२९	२	२०।१०
१६	२	२१।१७	अग. १	४	२१।४१	१५	३	२०।३७	३०	४	२०।४३
१७	३	२१।४४	२	५	२२।१२	१६	४	२१। २	३१	५	२१।१९
१८	४	२२।१०	३	६	२२।४५	१७	५	२१।२९	सितं. १	६	२२। ०
१९	५	२२।३३	४	७	२३।२२	१८	५	२१।५८	२	७	२२।४४
२०	६	२२।५९	५	८	०। ०	१९	६	२२।३१	३	८	२३।३५
२१	७	२३।२७	६	९	०। २	२०	७	२३।२१	४	९	०। ०
२२	८	२३।४८	७	१०	०।४८	२१	८	०। ०	५	१०	०।३१
२३	९	०। ०	८	११	१।४०	२२	९	०। १	६	११	१।२९
२४	१०	०।३५	९	१२	२।३७	२३	१०	०।५७	७	१२	२।२८
२५	११	१।२०	१०	१३	३।३५	२४	१२	२। ३	८	१३	३।२७
२६	१२	२।१३	११	१४	४।३४	२५	१३	३।१६	९	१४	४।२३
२७	१३	३।१७	१२	३०	५।३०	२६	१४	४।३०	१०	१४	५।१९
२८	१४	४।२७				२७	१५	५।४४	११	३०	६।११
२९	१५	५।४२									

ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय	ता.	ति.	चन्द्रास्त	ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ भाद्र.			१९८८ आश्वि.			१९८८ आश्वि.			१९८८ कार्ति.		
सितं.	शु.	घं. मि.	सितं.	कृ.	घं. मि.	अक्तू.	शु.	घं. मि.	अक्तू.	कृ.	घं. मि.
१२	१	१९। ७	२६	१	१८।३७	११	१	१८। ५	२६	१	१८।२५
१३	२	१९।३२	२७	२	१९।१३	१२	२	१८।३४	२७	३	१९।१४
१४	३	२०। १	२८	३	१९।५२	१३	२	१९। ९	२८	४	२०।१०
१५	४	२०।३२	२९	४	२०।३७	१४	३	१९।५२	२९	५	२१। ९
१६	५	२१। ९	३०	५	२१।२७	१५	४	२०।४१	३०	६	२२।१०
१७	६	२१।५३	अक्तू. १	६	२२।२३	१६	५	२१।३८	३१	७	२३।१०
१८	७	२२।४५	२	७	२३।२१	१७	६	२२।४२	नवं. १	८	०। ०
१९	८	२३।४६	३	८	०। ०	१८	७	२३।४९	२	९	०। ९
२०	९	०। ०	४	९	०।२१	१९	९	०। ०	३	९	१। ५
२१	१०	०।५३	५	१०	१।२०	२०	१०	०।५९	४	१०	१।५९
२२	११	२। ४	६	११	२।१७	२१	११	२। ८	५	११	२।५२
२३	१२	३।१७	७	१२	३।१३	२२	१२	३।१७	६	१२	३।४७
२४	१३	४।२८	८	१३	४। ७	२३	१३	४।२५	७	१३	४।४२
२५	१५	५।३९	९	१४	५। ०	२४	१४	५।३४	८	१४	५।३८
			१०	३०	५।५४	२५	१५	६।४५	९	३०	६।३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.) वि. सं. २०४५

ता.	ति.	चन्द्रास्त
१९८८ कार्ति.		
नवं.	शु.	घं. मि.
१०	१	१७।५०
११	२	१८।३८
१२	३	१९।३४
१३	४	२०।३६
१४	५	२१।४२
१५	६	२२।५०
१६	७	२३।५७
१७	८	—
१८	९	१। ३
१९	१०	२।१०
२०	११	३।१७
२१	१३	४।१५
२२	१४	५।३४
२३	१५	६।४४

ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ मार्ग.		
नवं.	कृ.	घं. मि.
२४	१	१७।५४
२५	२	१८।५२
२६	३	१९।५४
२७	४	२०।५६
२८	५	२१।५७
२९	६	२२।५५
३०	७	२३।५०
दिसं.१	८	—
२	९	०।४५
३	१०	१।३९
४	११	२।३२
५	११	३।२६
६	१२	४।२४
७	१३	५।२६
८	१४	६।२९
९	३०	७।३१

ता.	ति.	चन्द्रास्त
१९८८ मार्ग.		
दिसं.	शु.	घं. मि.
१०	१	१८।२६
११	२	१९।३३
१२	३	२०।४१
१३	५	२१।५०
१४	६	२२।५७
१५	७	—
१६	८	०। २
१७	९	१। ७
१८	१०	२।१२
१९	११	३।१९
२०	१२	४।२८
२१	१३	५।२६
२२	१४	६।४१
२३	१५	७।४१

ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८८ पौष		
दिसं.	कृ.	घं. मि.
२४	१	१८।४०
२५	२	१९।४२
२६	३	२०।४२
२७	४	२१।३९
२८	५	२२।३३
२९	६	२३।२७
३०	७	—
३१	८	०।२०
जन. १	९	१।१४
('८९)२	१०	२।११
३	११	२।५६
४	१२	३।५६
५	१३	४।५९
६	१४	६। ३
७	१५	७।५४

ता.	ति.	चन्द्रास्त
१९८९ पौष		
जन.	शु.	घं.मि.
८	१	१८।१०
९	२	१९।२१
१०	३	२०।३०
११	४	२१।३८
१२	५	२२।४३
१३	६	२३।४६
१४	७	—
१५	९	०।५६
१६	१०	२। २
१७	११	३। ९
१८	१२	४।२५
१९	१३	५।१८
२०	१४	६।१३
२१	१५	७। ०

ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८९ माघ		
जन.	कृ.	घं. मि.
२२	१	१८।२०
२३	२	१९।१४
२४	३	२०।११
२५	३	२१। ५
२६	४	२१।५८
२७	५	२२।५१
२८	६	२३।४५
२९	७	—
३०	८	०।४३
३१	९	१।४१
फर.१	१०	२।४२
२	११	३।४४
३	१२	४।४४
४	१३	५।३९
५	१४	६।२९
६	३०	७।१२

ता.	ति.	चन्द्रास्त
१९८९ माघ		
फर.	शु.	घं. मि.
७	१	१९।२०
८	३	२०।२९
९	४	२१।३७
१०	५	२२।४३
११	६	२३।५२
१२	७	—
१३	८	१। ०
१४	९	२। ८
१५	१०	३।१०
१६	११	४। ८
१७	१२	४।५९
१८	१३	५।४१
१९	१४	६।१७
२०	१५	६।४८

ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८९ फाल्गु.		
फर.	कृ.	घं. मि.
२१	१	१८।५८
२२	२	१९।५२
२३	३	२०।४५
२४	४	२१।३८
२५	४	२२।३३
२६	५	२३।३१
२७	६	—
२८	७	०।३०
मार्च१	८	१।३०
२	९	२।२९
३	१०	३।२६
४	११	४।१७
५	१२	५। २
६	१४	५।४२
७	३०	६।१९

ता.	ति.	चन्द्रास्त
१९८९ फाल्गु.		
मार्च.	शु.	घं. मि.
८	१	१९।१५
९	२	२०।२५
१०	३	२१।३६
११	४	२२।४७
१२	५	२३।५६
१३	६	—
१४	७	१। ५
१५	८	२। ४
१६	९	२।५६
१७	१०	३।४०
१८	११	४।१७
१९	१२	४।४९
२०	१३	५।१७
२१	१४	५।४३
२२	१५	६। ९

ता.	ति.	चन्द्रोदय
१९८९ चैत्र		
मार्च.	कृ.	घं. मि.
२३	१	१९।३०
२४	२	२०।२२
२५	३	२१।१७
२६	४	२२।१२
२७	५	२३।१०
२८	६	—
२९	७	०।१२
३०	८	१। ६
३१	९	१।५५
अप्रै.१	१०	२।४४
२	११	३।२७
३	१२	४। ६
४	१३	४।४३
५	१४	५।१९
६	३०	५।५६

(उ-उत्तर शृङ्ग) अक्षांश भेद से भारत में चन्द्र दर्शन की तारीखें और उन्नत शृङ्ग के लगभग अंश (द-दक्षिण शृङ्ग) (वि. सं. २०४५)

भारतीय अक्षांश ↓	चन्द्रदर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्रदर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८८ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८९ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८९ ई.	उन्नत शृङ्ग	चन्द्र दर्शन १९८९ ई.	उन्नत शृङ्ग
	मार्च		अप्रै.		मई		जून		जुला.		अग.		सितं.		अक्टू.		नवं.		दिसं.		जन.		फर.		मार्च	
५°	१९	द.२६	१७	द.३१	१७	द.२६	१५	द.१३	१५	उ. ५	१४	उ.२६	१२	उ.३९	१२	उ.४२	११	उ.३६	१०	उ.१९	९	उ. ४	७	द.१४	९	द.२८
१५°	१९	द.१५	१७	द.२०	१७	द.१७	१५	द. ४	१५	उ.१६	१४	उ.३६	१३	उ.४९	१२	उ.५२	११	उ.४६	१०	उ.२९	९	उ.१५	७	द. ३	९	द.१७
२५°	१९	द. ५	१७	द.१४	१७	द. ५	१५	उ. ६	१५	उ.२६	१४	उ.४६	१३	उ.५७	१२	उ.६२	११	उ.५६	१०	उ.४०	९	उ.२६	७	उ. ७	९	द. ६
३५°	१९	उ. ५	१७	द. ६	१७	उ. ५	१५	उ.१६	१५	उ.३६	१४	उ.५६	१३	उ.६७	१२	उ.७२	११	उ.६६	११	उ.५०	९	उ.३६	७	उ.१८	९	उ. ६

गणितकर्ता : सुबोध शर्मा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मार्तण्ड पंचांग में दिये चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त से कुछ प्रमुख शहरों में चन्द्रोदयास्त जानने की विधि

[लेखक—शक्तिधर शर्मा]

इस पंचांग में लग्न सूर्योदयास्तादि के परिवर्तन की सारणियां पिछले समय से दी जाती रही हैं। चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की सारणी इस बार सैद्धान्तिक उपपत्ति से विचार कर बनाई गई है। जो पंचांग प्रेमियों के हितार्थ यहां दी जा रही है। वस्तुतः शुद्ध चन्द्रोदयास्त गणित अपेक्षाकृत कठिन है और यह समझा जाता है कि इसके लिये सूक्ष्म परिणाम देने वाली सारणियां बनाना कठिन है। इस सारणी में विशेषता यह है कि केवल एक फल में ही सभी संस्कार समाविष्ट कर दिये गए हैं, इस प्रकार इसका उपयोग अत्यन्त ही सरल है। आप देखेंगे कि सारणी में उपकरण केवल मात्र चन्द्रक्रांति है—जोकि चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदय वा चन्द्रास्त के समय की लेनी होगी। निरयण ग्रह स्पष्टों वाले पृष्ठों पर इसी पंचांग में राहु के भोगांश के बाद सूर्य की क्रान्ति, तदनन्तर चन्द्रक्रांति एवं चन्द्रशर के कालम हैं जिनसे चन्द्रमा की क्रांति किसी भी अभीष्ट समय के लिये सरलता से ही अनुपात द्वारा जानी जा सकती है। इससे अभीष्ट तारीख के चण्डीगढ़ीय चन्द्रोदयास्त के समय की तात्कालिक चन्द्रक्रांति ज्ञात कर लीजिये। और इसे उपकरण मानकर मद्रास, बंगलौर, कलकत्ता, शिमला, जयपुर, बम्बई व देहली में चन्द्रोदयास्त जानने के लिए निम्नलिखित अनुसार प्रथम या द्वितीय फल ज्ञात करें।

यदि क्रांति धन हो तो (अस्त के लिए प्रथम फल, उदय के लिए द्वितीय फल)।
यदि क्रांति ऋण हो तो (अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिये प्रथम फल)।

इस फल को चिह्नानुसार उदय या अस्त में जोड़ने-घटाने से अभीष्ट स्थानीय चन्द्रोदयास्त ज्ञात हो जाएगा। इस चन्द्रोदयास्त में कभी ही १ या २ मिनट की अशुद्धि हो सकती है। वस्तुतः इस सारणी से प्राप्त परिणाम काफी सूक्ष्म होंगे। चन्द्रोदयास्त गणित में विपुवकाल एवं क्रांति से असकृत्कर्म करना पड़ता है। इस कठिन परिश्रम के विना ही पर्याप्त सूक्ष्म परिणाम इस एकमात्र सारणी की सहायता से सहज ही प्राप्त होंगे। नीचे उदाहरणों से यह प्रक्रिया स्पष्ट हो जाएगी।

कल्पना करो कि हमें तारीख २५ अगस्त १९८७ को चन्द्रास्त का ज्ञान कलकत्ता के लिए करना है। इस पंचांग में २५ अगस्त को चण्डीगढ़ीय चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. पर है। स्पष्ट निरयण ग्रहों वाले पृष्ठों पर २५ अगस्त को चन्द्रक्रांति तथा २६ अगस्त को भी इसका मान देखिये।

२५ अगस्त १९८७ को चन्द्रक्रांति = +११°।६'
२६ ,, ,, ,, =+५°।२९'

ये दोनों प्रातः ५ घं. ३० मि. भा. स्टै. टा. की हैं। क्योंकि चण्डीगढ़ में चन्द्रास्त १९ घं. ३१ मि. का है तो हमें इस समय की चन्द्रक्रांति जानने के लिये अनुपात करना होगा।

यह स्पष्ट है कि एक दिन में चन्द्रक्रान्ति की गति = ११°।६'—५।२९=५°।३७' है। हमारा अभीष्ट समय १९ घं. ३१ मि. का ५ घं. ३० मि. से अन्तर १२ घं. १ मि. आया। इससे क्रान्ति गति अनुपात करने पर अनुपात फल = २°।४८' आया। क्योंकि २५ से बाद २६ अगस्त को क्रांति घटी है अतः इसे ११°।६' में से घटाने पर तात्कालिक चन्द्रक्रांति = +८°।१८' प्राप्त हुई। इसके अंश मात्र ही सारणी का फल प्राप्त करने के लिये पर्याप्त होंगे। अतः चन्द्रक्रांति ८° के सम्मुख कलकत्ता के नीचे हमें प्रथम फल प्राप्त करना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है।) सारणी में देखने से यह फल —५४ मिनट प्राप्त हुआ। अतः १९ घं ३१ मि. 'से ५४ मिनट घटाने पर १८ घं. ३७ मि. भा. स्टै. टा. चन्द्रास्त का समय आया। यदि चन्द्रोदय ज्ञात करना होता तो द्वितीयफल लेना होता। परन्तु शुक्ल पक्ष होने से इस दिन पञ्चाङ्ग में चन्द्रोदय नहीं दिया अतः चन्द्रोदय के उदाहरण के रूप में हम यहां ता. २४ अगस्त के दिन बम्बई में चन्द्रोदय ज्ञात करेंगे। इस दिन चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय =५ घं. २९ मि. इस समय की क्रान्ति हमें निरयणस्पष्ट ग्रहों वाले पृष्ठों से १६°।१५' प्राप्त हुई। (यहां अनुपात करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी क्योंकि चन्द्रक्रान्ति ५ घं. ३० मि. की ही है।) अतः १६° के आगे सारिणी में बम्बई के कालम में से हमें द्वितीय फल लेना होगा (क्योंकि क्रान्ति धन है।) सारणी से देखने पर द्वितीय फल +३४ मि. प्राप्त हुआ अतः ५ घं. २९ मि. में ३४ मिनट जोड़ने पर इस दिन बम्बई में चन्द्रोदय ६ घं. ३ मिनट आया।

स्थानीय चन्द्रोदयास्त का ज्ञान कृष्ण जन्माष्टमी आदि पर्वों तथा करक चतुर्थी आदि व्रतों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। चण्डीगढ़ से दूर के नगरों में भी मार्त्तण्ड पंचाङ्ग की उपयोगिता जनता को इन व्रत-पर्वों के लिये अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगी ऐसी आशा करते हैं। अगले वर्ष सारणी द्वारा ही असकृत्कर्म (Iteration process) से सूक्ष्मतम चन्द्रोदयास्त भारत के किसी भी भाग के लिये ज्ञात करने के लिये सारणियां तथा विधि देंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रोदयास्त-परिवर्तन-सारिणी

चन्द्र-	कलकत्ता		बम्बई		मद्रास		बंगलोर		दिल्ली		जयपुर		शिमला	
क्रान्ति	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल	प्रथम फल	द्वितीय फल
अंश	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट
०	—४८	—४८	+१७	+१७	—१४	—१४	—३	—३	—१	—१	+४	+४	—१	—१
१	—४९	—४८	+१६	+१८	—१५	—१२	—५	—२	—१	—१	+४	+४	—१	—२
२	—५०	—४७	+१४	+१९	—१७	—११	—६	०	—२	—१	+३	+५	—१	—२
३	—५०	—४७	+१३	+२०	—१९	—९	—७	+१	—२	—१	+३	+५	—१	—२
४	—५१	—४५	+१२	+२१	—२१	—८	—९	+३	—२	०	+३	+५	—१	—२
५	—५२	—४४	+११	+२२	—२२	—६	—१०	+४	—२	०	+२	+६	—१	—२
६	—५३	—४३	+१०	+२३	—२३	—५	—१२	+६	—३	०	+२	+६	—१	—२
७	—५३	—४२	+९	+२४	—२५	—३	—१३	+७	—३	०	+२	+६	—१	—२
८	—५४	—४१	+८	+२५	—२६	—२	—१५	+९	—३	०	+१	+७	—१	—२
९	—५५	—४१	+७	+२६	—२८	—१	—१७	+१०	—३	०	+१	+७	—१	—२
१०	—५५	—४०	+६	+२७	—३०	+१	—१९	+१२	—३	+१	०	+८	—१	—२
११	—५६	—३९	+५	+२८	—३१	+३	—२०	+१३	—४	+१	०	+८	—१	—२
१२	—५७	—३८	+४	+२९	—३२	+४	—२१	+१५	—४	+१	०	+८	—१	—२
१३	—५८	—३८	+३	+३०	—३४	+६	—२३	+१७	—४	+१	—१	+९	—१	—२
१४	—५८	—३७	+१	+३१	—३६	+७	—२५	+१९	—४	+१	—१	+९	—१	—२
१५	—५९	—३६	०	+३२	—३७	+९	—२६	+२०	—४	+२	—१	+९	—१	—२
१६	—६०	—३५	—१	+३४	—३९	+१०	—२८	+२२	—५	+२	—२	+१०	—१	—२
१७	—६१	—३४	—२	+३५	—४०	+१२	—३०	+२४	—५	+२	—२	+१०	—१	—२
१८	—६२	—३४	—३	+३६	—४२	+१४	—३१	+२५	—५	+२	—३	+११	—१	—२
१९	—६३	—३३	—४	+३७	—४४	+१६	—३३	+२७	—५	+३	—३	+११	—१	—२
२०	—६३	—३२	—५	+३८	—४६	+१८	—३५	+२९	—६	+३	—३	+११	—१	—२
२१	—६४	—३१	—७	+३९	—४८	+२०	—३६	+३०	—६	+३	—४	+१२	—१	—२
२२	—६५	—३०	—८	+४०	—५०	+२१	—३८	+३२	—६	+३	—४	+१२	—१	—२
२३	—६६	—२९	—९	+४२	—५१	+२३	—४०	+३४	—६	+४	—५	+१३	—१	—२
२४	—६७	—२८	—१०	+४३	—५३	+२५	—४२	+३६	—६	+४	—५	+१३	०	—३
२५	—६८	—२७	—१२	+४४	—५५	+२७	—४४	+३७	—७	+४	—६	+१४	०	—३
२६	—६९	—२६	—१३	+४६	—५७	+२९	—४६	+३९	—७	+४	—६	+१४	०	—३
२७	—७०	—२६	—१५	+४८	—५९	+३१	—४८	+४१	—७	+५	—७	+१५	०	—३
२८	—७१	—२४	—१७	+५०	—६१	+३३	—५०	+४३	—८	+५	—७	+१६	०	—३
२९	—७२	—२३	—१८	+५१	—६३	+३५	—५२	+४५	—८	+५	—८	+१७	०	—३
३०	—७३	—२३	—२०	+५२	—६५	+३७	—५५	+४८	—८	+६	—८	+१७	०	—३

यदि चन्द्र क्रान्ति धन हो तो अस्त के लिये प्रथम फल, उदय के लिए द्वितीय फल लें, यदि चन्द्र-क्रांति ऋण हो तो अस्त के लिए द्वितीय फल तथा उदय के लिए प्रथम फल लें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक लग्नसारणी से लग्न ज्ञान

आगे दी गई दैनिक लग्नसारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (U.T.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इससे गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाइन से दाईं ओर छपे घं.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रैल के आगे धनु से मीन तक के घं.मि. १४ अप्रैल के हैं।

अयनचलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी-थोड़ी स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्नसमाप्तिकाल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्तिकाल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहले ‡ ऐसा और दूसरे के पहले * ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लिए तथा * इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार २९ फरवरी से ३१ दिसम्बर तक के लिए है। २९ फरवरी के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फरवरी को प्रयोग में लाइए।

यहां 'वार्षिकसंस्कार-कोष्ठक' द्वारा शुद्ध लग्न-समाप्तिकाल जानने के उदाहरण देते हैं—

(१) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुन लग्न का प्रारम्भ काल (दूसरे शब्दों में वृष लग्न का समाप्ति काल) बतलाइए?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रैल को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे +२ मिनट लिखा है। अतः ९ घं. ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(२) सन् १९७२ की १ जनवरी को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जनवरी को मकर का समाप्ति काल ९ घं. ५७ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहले बतलाया गया है कि ‡ इस चिह्न वाला संस्कार १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लिए है। ‡ इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट लिए हैं। इन्हें चिह्नानुसार ९ घं. ५७ मिनट में जोड़ने पर १० घं. ० मिनट मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(३) २९ फरवरी सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में २९ फरवरी नहीं है, इसके लिए २८ फरवरी को प्रयोग में लाएंगे। २८ फरवरी के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घं. ३४ मिनट लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में * इस चिह्न वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे —१ मिनट लिखा है। इसे चिह्नानुसार ७ घं. ३४ मि. में से घटाने पर ७ घं. ३३ मिनट कुम्भ का सूक्ष्म समाप्ति-काल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९५७	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" मेरे "गणकमार्त्तण्ड" के लग्न प्रकरण में दिए गए एक बड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन् १९०० से सन् २२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए "गणकमार्त्तण्ड" में एक अद्‌भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्नसारणी चण्डीगढ़ (U.T.) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचांग में आगे एक सारणी दी गई है उसकी सहायता से भारत के प्रसिद्ध ६५ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

वैशाख

अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.
१३	१	७।३६	९।३०	११।४५	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
१४	२	७।३२	९।२६	११।४१	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५४	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
१	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३६	१।१८	२।४२	४। ५
१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३२	१।१४	२।३९	४। १
१४	[illegible]	५।३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.
१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
२४	११	६।४९	९। ३	११।२५	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
१२	३०	५।३४	७।४९	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
१४	[illegible]	५।२६											

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक लग्न सारणी चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

मास	अंग्रेजी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७।४१	१०।३	१२।२३	१४।४१	१७। २	१९।२२	२१।२७	२३। ८	०।३३	१।५५	३।२८	५।२३
	१५	२	७।३७	९।५९	१२।१९	१४।३७	१६।५८	१९।१८	२१।२३	२३। ४	०।२९	१।५१	३।२४	५।१९
	१६	३	७।३३	९।५५	१२।१५	१४।३३	१६।५४	१९।१४	२१।१९	२३। ०	०।२५	१।४७	३।२०	५।१५
	१७	४	७।२९	९।५१	१२।११	१४।२९	१६।५०	१९।१०	२१।१५	२२।५६	०।२१	१।४३	३।१६	५।११
	१८	५	७।२५	९।४७	१२। ७	१४।२५	१६।४६	१९। ६	२१।११	२२।५२	०।१७	१।३९	३।१२	५। ७
	१९	६	७।२१	९।४३	१२। ३	१४।२१	१६।४२	१९। ३	२१। ७	२२।४८	०।१३	१।३६	३। ८	५। ३
	२०	७	७।१७	९।३९	११।५९	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१। ३	२२।४४	०। ९	१।३२	३। ४	४।५९
	२१	८	७।१३	९।३५	११।५५	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२०।५९	२२।४०	०। ५	१।२८	३। ०	४।५५
	२२	९	७। ९	९।३१	११।५१	१४। ९	१६।३१	१८।५१	२०।५५	२२।३६	०। १	१।२४	२।५६	४।५१
	२३	१०	७। ५	९।२७	११।४७	१४। ५	१६।२७	१८।४७	२०।५१	२२।३२	२३।५७	१।२०	२।५३	४।४७
	२४	११	७। १	९।२४	११।४४	१४। १	१६।२३	१८।४३	२०।४८	२२।२८	२३।५४	१।१६	२।४९	४।४३
	२५	१२	६।५७	९।२०	११।४०	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।४४	२२।२५	२३।५०	१।१२	२।४५	४।३९
	२६	१३	६।५३	९।१६	११।३६	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।४०	२२।२१	२३।४६	१। ८	२।४१	४।३५
	२७	१४	६।५०	९।१२	११।३२	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।३६	२२।१७	२३।४२	१। ४	२।३७	४।३१
	२८	१५	६।४६	९। ८	११।२८	१३।४६	१६। ७	१८।२७	२०।३२	२२।१३	२३।३८	१। ०	२।३३	४।२७
	२९	१६	६।४२	९। ४	११।२४	१३।४२	१६। ३	१८।२३	२०।२८	२२। ९	२३।३४	०।५६	२।२९	४।२४
	३०	१७	६।३८	९। ०	११।२०	१३।३८	१५।५९	१८।१९	२०।२४	२२। ५	२३।३०	०।५२	२।२५	४।२०
जुलाई	१	१८	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।४८	२।२१	४।१६
	२	१९	६।३०	८।५२	११।१२	१३।३०	१५।५१	१८।११	२०।१६	२१।५७	२३।२२	०।४४	२।१७	४।१२
	३	२०	६।२६	८।४८	११। ८	१३।२६	१५।४७	१८। ८	२०।१२	२१।५३	२३।१८	०।४१	२।१३	४। ८
	४	२१	६।२२	८।४४	११। ४	१३।२२	१५।४३	१८। ४	२०। ८	२१।४९	२३।१४	०।३७	२। ९	४। ४
	५	२२	६।१८	८।४०	११। ०	१३।१८	१५।४०	१८। ०	२०। ४	२१।४५	२३।१०	०।३३	२। ५	४। ०
	६	२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३६	१७।५६	२०। ०	२१।४१	२३। ६	०।२९	२। १	३।५६
	७	२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१०	१५।३२	१७।५२	१९।५६	२१।३७	२३। २	०।२५	१।५७	३।५२
	८	२५	६। ६	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।२८	१७।४८	१९।५२	२१।३३	२२।५८	०।२१	१।५४	३।४८
	९	२६	६। २	८।२५	१०।४५	१३। २	१५।२४	१७।४४	१९।४९	२१।२९	२२।५५	०।१७	१।५०	३।४४
	१०	२७	५।५८	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।२०	१७।४०	१९।४५	२१।२६	२२।५१	०।१३	१।४६	३।४०
	११	२८	५।५५	८।१७	१०।३०	१२।५४	१५।१६	१७।३६	१९।४१	२१।२२	२२।४७	०। ९	१।४२	३।३६
	१२	२९	५।५१	८।१३	१०।३३	१२।५०	१५।१२	१७।३२	१९।३७	२१।१८	२२।४३	०। ५	१।३८	३।३२
	१३	३०	५।४७	८। ९	१०।२९	१२।४७	१५। ८	१७।२८	१९।३३	२१।१४	२२।३९	०। १	१।३४	३।२९
	१४	३१	५।४३	८। ५	१०।२५	१२।४३	१५। ४	१७।२४	१९।२९	२१।१०	२२।३५	२३।५७	१।३०	३।२५
	१५	३२	५।३९	८। १	१०।२१	१२।३९	१५। ०	१७।२०	१९।२५	२१। ६	२२।३१	२३।५३	१।२६	३।२१
	१६	श्रा १	५।३५											

मास	अंग्रेजी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७।५७	१०।१७	१२।३५	१४।५६	१७।१६	१९।२१	२१। २	२२।२७	२३।४९	१।२२	३।१७	५।३१
	१७	२	७।५३	१०।१३	१२।३१	१४।५२	१७।१२	१९।१७	२०।५८	२२।२३	२३।४५	१।१८	३।१३	५।२७
	१८	३	७।४९	१०। ९	१२।२७	१४।४८	१७। ९	१९।१३	२०।५४	२२।१९	२३।४१	१।१४	३। ९	५।२३
	१९	४	७।४५	१०। ५	१२।२३	१४।४५	१७। ५	१९। ९	२०।५०	२२।१५	२३।३८	१।१०	३। ५	५।१९
	२०	५	७।४१	१०। १	१२।१९	१४।४१	१७। १	१९। ५	२०।४६	२२।११	२३।३४	१। ६	३। १	५।१५
	२१	६	७।३७	९।५७	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९। १	२०।४२	२२। ७	२३।३०	१। २	२।५७	५।११
	२२	७	७।३३	९।५३	१२।११	१४।३३	१६।५३	१८।५७	२०।३८	२२। ३	२३।२६	०।५८	२।५३	५। ७
	२३	८	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।२९	१६।४९	१८।५३	२०।३४	२१।५९	२३।२२	०।५५	२।४९	५। ३
	२४	९	७।२६	९।४६	१२। ३	१४।२५	१६।४५	१८।५०	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४५	४।५९
	२५	१०	७।२२	९।४२	११।५९	१४।२१	१६।४१	१८।४६	२०।२७	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४१	४।५६
	२६	११	७।१८	९।३८	११।५५	१४।१७	१६।३७	१८।४२	२०।२३	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३७	४।५२
	२७	१२	७।१४	९।३४	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।३८	२०।१९	२१।४४	२३। ६	०।३९	२।३३	४।४८
	२८	१३	७।१०	९।३०	११।४८	१४। ९	१६।२९	१८।३४	२०।१५	२१।४०	२३। २	०।३५	२।३०	४।४४
	२९	१४	७। ६	९।२६	११।४४	१४। ५	१६।२५	१८।३०	२०।११	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
	३०	१५	७। २	९।२२	११।४०	१४। १	१६।२१	१८।२६	२०। ७	२१।३२	२२।५४	०।२७	२।२२	४।३६
	३१	१६	६।५८	९।१८	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।२२	२०। ३	२१।२८	२२।५०	०।२३	२।१८	४।३१
अगस्त	१	१७	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७	०।१९	२।१४	४।२८
	२	१८	६।५०	९।१०	११।२८	१३।४९	१६।१०	१८।१४	१९।५५	२१।२०	२२।४३	०।१५	२।१०	४।२४
	३	१९	६।४६	९। ६	११।२४	१३।४६	१६। ६	१८।१०	१९।५१	२१।१६	२२।३९	०।११	२। ६	४।२०
	४	२०	६।४२	९। २	११।२०	१३।४२	१६। २	१८। ६	१९।४७	२१।१२	२२।३५	०। ७	२। २	४।१६
	५	२१	६।३८	८।५८	११।१६	१३।३८	१५।५८	१८। २	१९।४३	२१। ८	२२।३१	०। ३	१।५८	४।१२
	६	२२	६।३४	८।५४	११।१२	१३।३४	१५।५४	१७।५८	१९।३९	२१। ४	२२।२७	०। ०	१।५४	४। ८
	७	२३	६।३१	८।५१	११। ८	१३।३०	१५।५०	१७।५५	१९।३५	२१। १	२२।२३	२३।५६	१।५०	४। ४
	८	२४	६।२७	८।४७	११। ४	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१९।३२	२०।५७	२२।१९	२३।५२	१।४६	४। ०
	९	२५	६।२३	८।४३	११। ०	१३।२२	१५।४२	१७।४७	१९।२८	२०।५३	२२।१५	२३।४८	१।४२	३।५७
	१०	२६	६।१९	८।३९	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४३	१९।२४	२०।४९	२२।११	२३।४४	१।३८	३।५३
	११	२७	६।१५	८।३५	१०।५३	१३।१४	१५।३४	१७।३९	१९।२०	२०।४५	२२। ७	२३।४०	१।३४	३।४९
	१२	२८	६।११	८।३१	१०।४९	१३।१०	१५।३०	१७।३५	१९।१६	२०।४१	२२। ३	२३।३६	१।३१	३।४५
	१३	२९	६। ७	८।२७	१०।४५	१३। ६	१५।२६	१७।३१	१९।१२	२०।३७	२१।५९	२३।३२	१।२७	३।४१
	१४	३०	६। ३	८।२३	१०।४१	१३। २	१५।२२	१७।२७	१९। ८	२०।३३	२१।५५	२३।२८	१।२३	३।३७
	१५	३१	५।५९	८।१९	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२३	१९। ४	२०।२९	२१।५१	२३।२४	१।१९	३।३३
	१६	भा १	५।५५											

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

भाद्रपद

अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.
अगस्त १६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९। ०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२९	५।५१
१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
१८	३	८। ७	१०।२५	१२।४६	१५। ७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१। ७	३।२१	५।४३
१९	४	८। ३	१०।२१	१२।४३	१५। ३	१७। ७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३। ८	१। ३	३।१७	५।३९
२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३९	१४।५९	१७। ३	१८।४४	२०। ९	२१।३२	२३। ४	०।५९	३।१३	५।३६
२१	६	७।५६	१०।१३	१२।३५	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०। ५	२१।२८	२३। १	०।५५	३। ९	५।३२
२२	७	७।५२	१०। ९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०। २	२१।२४	२२।५७	०।५१	३। ५	५।२८
२३	८	७।४८	१०। ५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३। २	५।२४
२४	९	७।४४	१०। १	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१। ८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१। ४	२२।३७	०।३२	२।४६	५। ८
२८	१३	७।२८	९।४६	१२। ७	१४।२७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१। ०	२२।३३	०।२८	२।४२	५। ४
२९	१४	७।२४	९।४२	१२। ३	१४।२३	१६।२८	१८। ९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५। ०
३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८। ५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
३१	१६	७।१६	९।३४	११।५५	१४।१६	१६।२०	१८। १	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर १	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
२	१८	७। ८	९।२६	११।४८	१४। ८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०। ८	२।२२	४।४४
३	१९	७। ४	९।२२	११।४४	१४। ४	१६। ८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२। ९	०। ४	२।१८	४।४०
४	२०	७। ०	९।१८	११।४०	१४। ०	१६। ४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२। ६	०। ०	२।१४	४।३७
५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६। ०	१७।४१	१९। ६	२०।२९	२२। २	२३।५६	२।१०	४।३३
६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५७	१७।३८	१९। ३	२०।२५	२१।५८	२३।५२	२। ६	४।२९
७	२३	६।४९	९। ६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२। ३	४।२५
८	२४	६।४५	९। २	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२३	१८।४७	२०। ९	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१३
११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०। ५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४। ९
१२	२८	६।२९	८।४७	११। ८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०। १	२१।३४	२३।२९	१।४३	४। ५
१३	२९	६।२५	८।४३	११। ४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४। १
१४	३०	६।२१	८।३९	११। ०	१३।२१	१५।२५	१७। ६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७। २	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५३
१६	आ१	६।१३											

आश्विन

अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.
सितम्बर १६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६। ९
१७	२	८।२७	१०।४९	१३। ९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३। ९	१।२३	३।४५	६। ५
१८	३	८।२३	१०।४५	१३। ५	१५। ९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३। ५	१।१९	३।४२	६। १
१९	४	८।१९	१०।४१	१३। १	१५। ५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१। ७	२३। १	१।१५	३।३८	५।५८
२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५। २	१६।४२	१८। ८	१९।३०	२१। ३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८। ४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१। ७	३।३०	५।५०
२२	७	८। ७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८। ०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१। ४	३।२६	५।४७
२३	८	८। ३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१। ०	३।२२	५।४३
२४	९	८। ०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३९
२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९। ६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
२७	१२	७।४८	१०। ९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९। २	२०।३५	२२।३०	०।४४	३। ६	५।२६
२८	१३	७।४४	१०। ५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३। २	५।२२
२९	१४	७।४०	१०। १	१२।२२	१४।२६	१६। ७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६। ३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१८	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर १	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१४	१५।५५	१७।२०	१८।४३	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५। ६
३	१८	७।२४	९।४६	१२। ६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३९	२०।११	२२। ६	०।२०	२।४३	५। ३
४	१९	७।२०	९।४२	१२। २	१४। ६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०। ८	२२। २	०।१६	२।३९	४।५९
५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४। ३	१५।४३	१७। ९	१८।३१	२०। ४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७। ५	१८।२७	२०। ०	२१।५४	०। ८	२।३१	४।५१
७	२२	७। ८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७। १	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०। ५	२।२७	४।४७
८	२३	७। ५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०। १	२।२३	४।४३
९	२४	७। १	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४[illegible]	२१।४३	२३।५७	२।१९	४।३९
१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	[illegible]	[illegible]	२१।३[illegible]	२३।५३	२।१५	४।३५
११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८। ७	१९।४०	२१।३५	२३।४९	२।११	४।३१
१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८। ३	१९।३६	२१।३१	२३।४५	२। ७	४।२७
१३	२८	६।४५	९। ६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२। ३	४।२३
१४	२९	६।४१	९। २	११।२३	१३।२७	१५। ८	१६।३३	१७।५६	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५। ४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
१६	का१	६।३३											

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

मास	अंग्रेजी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८।५५	११।१५	१३।१९	१४। ०	१६।२५	१७।४८	१९।२०	२१।१५	२३।२९	१।५१	४।११	६।२९
	१७	२	८।५१	११।११	१३।१५	१४।५६	१६।२१	१७।४४	१९।१६	२१।११	२३।२५	१।४७	४। ७	६।२५
	१८	३	८।४७	११। ७	१३।११	१४।५२	१६।१७	१७।४०	१९।१३	२१। ७	२३।२१	१।४४	४। ४	६।२१
	१९	४	८।४३	११। ३	१३। ८	१४।४८	१६।१४	१७।३६	१९। ९	२१। ३	२३।१७	१।४०	४। ०	६।१७
	२०	५	८।३९	१०।५९	१३। ४	१४।४४	१६।१०	१७।३२	१९। ५	२०।५९	२३।१३	१।३६	३।५६	६।१३
	२१	६	८।३५	१०।५५	१३। ०	१४।४१	१६। ६	१७।२८	१९। १	२०।५५	२३। ९	१।३२	३।५२	६। ९
	२२	७	८।३१	१०।५१	१२।५६	१४।३७	१६। २	१७।२४	१८।५७	२०।५१	२३। ६	१।२८	३।४८	६। ६
	२३	८	८।२७	१०।४७	१२।५२	१४।३३	१५।५८	१७।२०	१८।५३	२०।४७	२३। २	१।२४	३।४४	६। २
	२४	९	८।२३	१०।४३	१२।४८	१४।२९	१५।५४	१७।१६	१८।४९	२०।४४	२२।५८	१।२०	३।४०	५।५८
	२५	१०	८।१९	१०।३९	१२।४४	१४।२५	१५।५०	१७।१२	१८।४५	२०।४०	२२।५४	१।१६	३।३६	५।५४
	२६	११	८।१५	१०।३५	१२।४०	१४।२१	१५।४६	१७। ८	१८।४१	२०।३६	२२।५०	१।१२	३।३२	५।५०
	२७	१२	८।११	१०।३१	१२।३६	१४।१७	१५।४२	१७। ४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१। ८	३।२८	५।४६
	२८	१३	८। ७	१०।२८	१२।३२	१४।१३	१५।३८	१७। १	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१। ४	३।२४	५।४२
	२९	१४	८। ३	१०।२४	१२।२८	१४। ९	१५।३४	१६।५७	१८।२९	२०।२४	२२।३८	१। ०	३।२०	५।३८
	३०	१५	८। ०	१०।२०	१२।२४	१४। ५	१५।३०	१६।५३	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५६	३।१६	५।३४
	३१	१६	७।५६	१०।१६	१२।२०	१४। १	१५।२६	१६।४९	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५२	३।१२	५।३०
नवम्बर	१	१७	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४८	३। ९	५।२६
	२	१८	७।४८	१०। ८	१२।१२	१३।५३	१५।१८	१६।४१	१८।१३	२०। ८	२२।२२	०।४५	३। ५	५।२२
	३	१९	७।४४	१०। ४	१२। ९	१३।४९	१५।१४	१६।३७	१८। ९	२०। ४	२२।१८	०।४१	३। १	५।१८
	४	२०	७।४०	१०। ०	१२। ५	१३।४६	१५।११	१६।३३	१८। ६	२०। ०	२२।१५	०।३७	२।५७	५।१४
	५	२१	७।३६	९।५६	१२। १	१३।४२	१५। ७	१६।२९	१८। २	१९।५६	२२।११	०।३३	२।५३	५।१०
	६	२२	७।३२	९।५२	११।५७	१३।३८	१५। ३	१६।२५	१७।५८	१९।५२	२२। ७	०।२९	२।४९	५। ७
	७	२३	७।२८	९।४८	११।५३	१३।३४	१४।५९	१६।२१	१७।५४	१९।४९	२२। ३	०।२५	२।४५	५। ३
	८	२४	७।२४	९।४४	११।४९	१३।३०	१४।५५	१६।१७	१७।५०	१९।४५	२१।५९	०।२१	२।४१	४।५९
	९	२५	७।२०	९।४०	११।४५	१३।२६	१४।५१	१६।१३	१७।४६	१९।४१	२१।५५	०।१७	२।३७	४।५५
	१०	२६	७।१६	९।३६	११।४१	१३।२२	१४।४७	१६। ९	१७।४२	१९।३७	२१।५१	०।१३	२।३३	४।५१
	११	२७	७।१२	९।३२	११।३७	१३।१८	१४।४३	१६। ५	१७।३८	१९।३३	२१।४७	०। ९	२।२९	४।४७
	१२	२८	७। ८	९।२९	११।३३	१३।१४	१४।३९	१६। २	१७।३४	१९।२९	२१।४३	०। ५	२।२५	४।४३
	१३	२९	७। ४	९।२५	११।२९	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३०	१९।२५	२१।३९	०। १	२।२१	४।३९
	१४	३०	७। १	९।२१	११।२५	१३। ६	१४।३१	१५।५४	१७।२६	१९।२१	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।३५

मास	अंग्रेजी तारीख	मार्ग. प्रविष्टे	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.
नवम्बर	१५	१	९।१७	११।२१	१३। २	१४।२७	१५।५०	१७।२२	१९।१७	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।३१	६।५३
	१६	२	९।१३	११।१७	१२।५८	१४।२३	१५।४६	१७।१८	१९।१३	२१।२७	२३।५०	२।१०	४।२७	६।४९
	१७	३	९। ९	११।१३	१२।५४	१४।१९	१५।४२	१७।१५	१९। ९	२१।२३	२३।४६	२। ६	४।२३	६।४५
	१८	४	९। ५	११।१०	१२।५०	१४।१६	१५।३८	१७।११	१९। ५	२१।१९	२३।४२	२। २	४।१९	६।४१
	१९	५	९। १	११। ६	१२।४७	१४।१२	१५।३४	१७। ७	१९। १	२१।१५	२३।३८	१।५८	४।१५	६।३७
	२०	६	८।५७	११। २	१२।४३	१४। ८	१५।३०	१७। ३	१८।५७	२१।१२	२३।३४	१।५४	४।१२	६।३३
	२१	७	८।५३	१०।५८	१२।३९	१४। ४	१५।२६	१६।५९	१८।५३	२१। ८	२३।३०	१।५०	४। ८	६।२९
	२२	८	८।४९	१०।५४	१२।३५	१४। ०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१। ४	२३।२६	१।४६	४। ४	६।२५
	२३	९	८।४५	१०।५०	१२।३१	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१। ०	२३।२२	१।४२	४। ०	६।२१
	२४	१०	८।४१	१०।४६	१२।२७	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५६	६।१७
	२५	११	८।३७	१०।४२	१२।२३	१३।४८	१५।१०	१६।४३	१८।३८	२०।५२	२३।१४	१।३४	३।५२	६।१३
	२६	१२	८।३३	१०।३८	१२।१९	१३।४४	१५। ७	१६।३९	१८।३४	२०।४८	२३।१०	१।३०	३।४८	६। ९
	२७	१३	८।३०	१०।३४	१२।१५	१३।४०	१५। ३	१६।३५	१८।३०	२०।४४	२३। ६	१।२६	३।४४	६। ६
	२८	१४	८।२६	१०।३०	१२।११	१३।३६	१४।५९	१६।३१	१८।२६	२०।४०	२३। २	१।२२	३।४०	६। २
	२९	१५	८।२२	१०।२६	१२। ७	१३।३२	१४।५५	१६।२७	१८।२२	२०।३६	२२।५८	१।१८	३।३६	५।५८
	३०	१६	८।१८	१०।२२	१२। ३	१३।२८	१४।५१	१६।२३	१८।१८	२०।३२	२२।५४	१।१४	३।३२	५।५४
दिसम्बर	१	१७	८।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।११	३।२८	५।५०
	२	१८	८।१०	१०।१५	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।१०	२०।२४	२२।४७	१। ७	३।२४	५।४६
	३	१९	८। ६	१०।११	११।५२	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८। ६	२०।२०	२२।४३	१। ३	३।२०	५।४२
	४	२०	८। २	१०। ७	११।४८	१३।१३	१४।३५	१६। ८	१८। २	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१६	५।३८
	५	२१	७।५८	१०। ३	११।४४	१३। ९	१४।३१	१६। ४	१७।५८	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१३	५।३४
	६	२२	७।५४	९।५९	११।४०	१३। ५	१४।२७	१६। ०	१७।५४	२०। ९	२२।३१	०।५१	३। ९	५।३०
	७	२३	७।५०	९।५५	११।३६	१३। १	१४।२३	१५।५६	१७।५१	२०। ५	२२।२७	०।४७	३। ५	५।२६
	८	२४	७।४६	९।५१	११।३२	१२।५७	१४।१९	१५।५२	१७।४७	२०। १	२२।२३	०।४३	३। १	५।२२
	९	२५	७।४२	९।४७	११।२८	१२।५३	१४।१५	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१९	०।३९	२।५७	५।१८
	१०	२६	७।३८	९।४३	११।२४	१२।४९	१४।११	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।१५	०।३५	२।५३	५।१४
	११	२७	७।३५	९।३९	११।२०	१२।४५	१४। ८	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।११	०।३१	२।४९	५।१०
	१२	२८	७।३१	९।३५	११।१६	१२।४१	१४। ४	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२। ७	०।२७	२।४५	५। ७
	१३	२९	७।२७	९।३१	११।१२	१२।३७	१४। ०	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२२। ३	०।२३	२।४१	५। ३
	१४	३०	७।२३	९।२७	११। ८	१२।३३	१३।५६	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५९	०।१९	२।३७	४।५९

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पौष

अंग्रेजी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.
दिसम्बर १५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१५।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१५।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१५। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१५। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१५। १	१६।५५	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
जनवरी १	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४५	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३२	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
१३	मा१	७।२८											

माघ

अंग्रेजी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.
जनवरी १३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
फरवरी १	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४४	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
१२	फा.१	७।११											

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा. स्टै. टा.]

फाल्गुन

	अंग्रेजी तारीख	फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ पं. मि.	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.
	१२	१	८।३६	९।५९	११।३२	१३।२६	१५।४०	१८। ३	२०।२३	२२।४०	१। २	३।२२	५।२६	७। ७
	१३	२	८।३२	९।५५	११।२८	१३।२२	१५।३६	१७।५९	२०।१९	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२३	७। ४
	१४	३	८।२९	९।५१	११।२४	१३।१८	१५।३२	१७।५५	२०।१५	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१९	७। ०
	१५	४	८।२५	९।४७	११।२०	१३।१४	१५।२९	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१५	६।५६
	१६	५	८।२१	९।४३	११।१६	१३।१०	१५।२५	१७।४७	२०। ७	२२।२५	०।४६	३। ६	५।११	६।५२
	१७	६	८।१७	९।३९	११।१२	१३। ६	१५।२१	१७।४३	२०। ३	२२।२१	०।४२	३। २	५। ७	६।४८
	१८	७	८।१३	९।३५	११। ८	१३। ३	१५।१७	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३८	२।५८	५। ३	६।४४
फरवरी	१९	८	८। ९	९।३१	११। ४	१२।५९	१५।१३	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।३४	२।५४	४।५९	६।४०
	२०	९	८। ५	९।२७	११। ०	१२।५५	१५। ९	१७।३१	१९।५१	२२। ९	०।३०	२।५०	४।५५	६।३६
	२१	१०	८। १	९।२३	१०।५६	१२।५१	१५। ५	१७।२७	१९।४७	२२। ५	०।२६	२।४६	४।५१	६।३२
	२२	११	७।५७	९।२०	१०।५२	१२।४७	१५। १	१७।२३	१९।४३	२२। १	०।२२	२।४३	४।४७	६।२८
	२३	१२	७।५३	९।१६	१०।४८	१२।४३	१४।५७	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१९	२।३९	४।४३	६।२४
	२४	१३	७।४९	९।१२	१०।४४	१२।३९	१४।५३	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।१५	२।३५	४।३९	६।२०
	२५	१४	७।४५	९। ८	१०।४०	१२।३५	१४।४९	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।११	२।३१	४।३५	६।१६
	२६	१५	७।४१	९। ४	१०।३६	१२।३१	१४।४५	१७। ७	१९।२७	२१।४५	०। ७	२।२७	४।३१	६।१२
	२७	१६	७।३७	९। ०	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७। ४	१९।२४	२१।४१	०। ३	२।२३	४।२८	६। ८
	२८	१७	७।३४	८।५६	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१७। ०	१९।२०	२१।३७	२३।५९	२।१९	४।२४	६। ५
	१	१८	७।३०	८।५२	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१५	४।२०	६। १
	२	१९	७।२६	८।४८	१०।२१	१२।१५	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।२९	२३।५१	२।११	४।१६	५।५७
	३	२०	७।२२	८।४४	१०।१७	१२।११	१४।२६	१६।४८	१९। ८	२१।२६	२३।४७	२। ७	४।१२	५।५३
	४	२१	७।१८	८।४०	१०।१३	१२। ८	१४।२२	१६।४४	१९। ४	२१।२२	२३।४३	२। ३	४। ८	५।४९
	५	२२	७।१४	८।३६	१०। ९	१२। ४	१४।१८	१६।४०	१९। ०	२१।१८	२३।३९	१।५९	४। ४	५।४५
	६	२३	७।१०	८।३२	१०। ५	१२। ०	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३५	१।५५	४। ०	५।४१
मार्च	७	२४	७। ६	८।२८	१०। १	११।५६	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।३१	१।५१	३।५६	५।३७
	८	२५	७। २	८।२४	९।५७	११।५२	१४। ६	१६।२८	१८।४८	२१। ६	२३।२७	१।४८	३।५२	५।३३
	९	२६	६।५८	८।२०	९।५३	११।४८	१४। २	१६।२४	१८।४४	२१। २	२३।२३	१।४४	३।४८	५।२९
	१०	२७	६।५४	८।१७	९।४९	११।४४	१३।५८	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।२०	१।४०	३।४४	५।२५
	११	२८	६।५०	८।१३	९।४५	११।४०	१३।५४	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२३।१६	१।३६	३।४०	५।२१
	१२	२९	६।४६	८। ९	९।४१	११।३६	१३।५०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।१२	१।३२	३।३६	५।१७
	१३	३०	६।४२	८। ५	९।३८	११।३२	१३।४६	१६। ९	१८।२८	२०।४६	२३। ८	१।२८	३।३२	५।१३
	१४	चै. १	५।३८											

चैत्र

	अंग्रेजी तारीख	चैत्र प्रविष्टे	मीन पं. मि.	मेष पं. मि.	वृष पं. मि.	मिथुन पं. मि.	कर्क पं. मि.	सिंह पं. मि.	कन्या पं. मि.	तुला पं. मि.	वृश्चिक पं. मि.	धनु पं. मि.	मकर पं. मि.	कुम्भ पं. मि.
	१४	१	८। १	९।३४	११।२८	१३।४२	१६। ५	१८।२५	२०।४३	२३। ४	१।२४	३।२९	५। ९	६।३५
	१५	२	७।५७	९।३०	११।२४	१३।३८	१६। १	१८।२१	२०।३८	२३। ०	१।२०	३।२५	५। ६	६।३१
	१६	३	७।५३	९।२६	११।२०	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।२१	५। २	६।२७
	१७	४	७।४९	९।२२	११।१६	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।१७	४।५८	६।२३
	१८	५	७।४५	९।१८	११।१२	१३।२७	१५।४९	१८। ९	२०।२७	२२।४८	१। ८	३।१३	४।५४	६।१९
	१९	६	७।४१	९।१४	११। ९	१३।२३	१५।४५	१८। ५	२०।२३	२२।४४	१। ४	३। ९	४।५०	६।१५
	२०	७	७।३७	९।१०	११। ५	१३।१९	१५।४१	१८। १	२०।१९	२२।४०	१। ०	३। ५	४।४६	६।११
मार्च	२१	८	७।३३	९। ६	११। १	१३।१५	१५।३७	१७।५७	२०।१५	२२।३६	०।५६	३। १	४।४२	६। ७
	२२	९	७।२९	९। २	१०।५७	१३।११	१५।३३	१७।५३	२०।११	२२।३२	०।५२	२।५७	४।३८	६। ३
	२३	१०	७।२५	८।५८	१०।५३	१३। ७	१५।२९	१७।४९	२०। ७	२२।२८	०।४९	२।५३	४।३४	५।५९
	२४	११	७।२२	८।५४	१०।४९	१३। ३	१५।२५	१७।४५	२०। ३	२२।२५	०।४५	२।४९	४।३०	५।५५
	२५	१२	७।१८	८।५०	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४१	१९।५९	२२।२१	०।४१	२।४५	४।२६	५।५१
	२६	१३	७।१४	८।४६	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३७	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।४१	४।२२	५।४७
	२७	१४	७।१०	८।४२	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३३	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।३७	४।१८	५।४३
	२८	१५	७। ६	८।३८	१०।३३	१२।४७	१५।१०	१७।३०	१९।४७	२२। ९	०।२९	२।३३	४।१४	५।३९
	२९	१६	७। २	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५। ६	१७।२६	१९।४३	२२। ५	०।२५	२।३०	४।१०	५।३६
	३०	१७	६।५८	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५। २	१७।२२	१९।४०	२२। १	०।२१	२।२६	४। ७	५।३२
	३१	१८	६।५४	८।२७	१०।२१	१२।३६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५७	०।१७	२।२२	४। ३	५।२८
	१	१९	६।५०	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१३	२।१८	३।५९	५।२४
	२	२०	६।४६	८।१९	१०।१३	१२।२८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४९	०। ९	२।१४	३।५५	५।२०
	३	२१	६।४२	८।१५	१०।१०	१२।२४	१४।४६	१७। ६	१९।२४	२१।४५	०। ५	२।१०	३।५१	५।१६
	४	२२	६।३८	८।११	१०। ६	१२।२०	१४।४२	१७। २	१९।२०	२१।४१	०। १	२। ६	३।४७	५।१२
	५	२३	६।३४	८। ७	१०। २	१२।१६	१४।३८	१६।५८	१९।१६	२१।३७	२३।५७	२। २	३।४३	५। ८
अप्रैल	६	२४	६।३०	८। ३	९।५८	१२।१२	१४।३४	१६।५४	१९।१२	२१।३३	२३।५३	१।५८	३।३९	५। ४
	७	२५	६।२७	७।५९	९।५४	१२। ८	१४।३०	१६।५०	१९। ८	२१।२९	२३।५०	१।५४	३।३५	५। ०
	८	२६	६।२३	७।५५	९।५०	१२। ४	१४।२६	१६।४६	१९। ४	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३१	४।५६
	९	२७	६।१९	७।५१	९।४६	१२। ०	१४।२२	१६।४२	१९। ०	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२७	४।५२
	१०	२८	६।१५	७।४७	९।४२	११।५६	१४।१८	१६।३८	१८।५६	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२३	४।४८
	११	२९	६।११	७।४३	९।३८	११।५२	१४।१४	१६।३४	१८।५२	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।१९	४।४४
	१२	३०	६। ७	७।४०	९।३४	११।४८	१४।११	१६।३१	१८।४८	२१।१०	२३।३०	१।३५	३।१५	४।४१
	१३	१	६। ३											

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.
अकोला (म.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	ऊना (हि.प्र.)	३१।३२	७६।१८	—२४।४८	कोल्हापुर (म.)	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	जोधपुर (राज.)	२६।१८	७३। ४	—३७।४४
अगरतल्ला (त्रि.)	२३।४९	९१।१८	+३५।१२	एकलिंगजी (रा.)	२४।४३	७३।४६	—३४।५६	कोहिमा (ना.)	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	जौनपुर (उ.प्र.)	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६
अंकलेश्वर (गु.)	२१।३८	७३। ३	—३७।४८	एटा (उ.प्र.)	२७।३५	७८।४०	—१५।२०	खन्ना (पं.)	३०।४२	७६।१३	—२५। ८	ज्वालाजी (हि.प्र.)	३१।५३	७६।२२	—२४।३२
अखनूर (का.)	३२।५४	७४।४५	—३१। ०	एर्नाकुलम् (के.)	१०। ०	७६।१५	—२५। ०	खुर्जा (उ.प्र.)	२८।१५	७७।५०	—१८।४०	जालना (म.)	१९।५१	७५।५६	—२६।१६
अजन्ता (म.)	२०।३३	७५।४८	—२६।४८	एलिचपुर (म.)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	गया (विहार)	२४।४९	८५। १	+१०। ४	झरिया (वि.)	२३।५०	८६।३३	+१६।१२
अजमेर (रा.)	२६।२७	७४।४२	—३१।१२	एलेप्पे (के.)	९।३०	७६।२३	—२४।२८	गंगटोक (सि.)	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	झांसी (उ.प्र.)	२५।२७	७८।३७	—१५।३२
अनन्तनाग (का.)	३३।४३	७५।१७	—२८।५२	ऐलोरा (म.)	२०। २	७५।१३	—२९। ८	गढ़शंकर (पं.)	३१।१३	७६।११	—२५।१६	झालरापाटन (रा.)	२४।३२	७६।१२	—२५।१२
अनामलै (ता.)	१०।३४	७६।५०	—२२।४०	औरंगाबाद (आं.)	१९।५३	७५।२३	—२८।२८	गाजियाबाद (उ.प्र.)	२८।४०	७७।२८	—२०। ८	झालावाड़ (रा.)	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अनूपशहर (उ.प्र.)	२८।२१	७८।१६	—१६।५६	कटक (उ.)	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	गाजीपुर (उ.प्र.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	झुंझुनू (रा.)	२८। ६	७५।२५	—२८।२०
अमरावती (म.)	२०।५६	७७।४८	—१८।४८	कटनी (म.प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	गिलगित (का.)	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	टांडाउरमुर (पं.)	३१।४०	७५।४१	—२७।१६
अमरेली (गु.)	२१।३६	७१।१५	—४५। ०	कठुआ (का.)	३२।१७	७५।३६	—२७।३६	गुड़गांव (हरि.)	२८।२७	७७। ४	—२१।४४	टिहरी (उ.प्र.)	३०।२०	७८।३०	—१६। ०
अमरोहा (उ.प्र.)	२८।५४	७८।३१	—१५।५६	कण्डाघाट (हि.प्र.)	३०।५७	७७। ६	—२१।३६	गुर्दासपुर (पं.)	३२। २	७५।२७	—२८।१२	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अमृतसर (पं.)	३१।३७	७४।५५	—३०।२०	कन्नौज (उ.प्र.)	२७। ३	७९।५८	—१०। ८	गोंडा (उ.प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	टोडारायसिंह (रा.)	२६। ०	७५।२९	—२८। ४
अमेठी (उ.प्र.)	२६। ८	८१।५०	— २।४०	कपूर्थला (पं.)	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	गोरखपुर (उ.प्र.)	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला (ह.)	३०।२१	७६।५२	—२२।३२	करतारपुर (पं.)	३१।२७	७५।३२	—२७।५२	गोहाटी (आसाम)	२६।११	९१।४५	+३७। ०	डगशई (हि.प्र.)	३०।५३	७७। ६	—२१।३६
अयोध्या (उ.प्र.)	२६।४८	८२।१४	— १। ४	करनाल (हरि.)	२९।४२	७७। २	—२१।५२	ग्वालियर (म.प्र.)	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	डलहौजी (हि.प्र.)	३२।३२	७५।५९	—२६। ४
अरकोणम् (ता.)	१३। ५	७९।४३	—११। ८	करौली (रा.)	२६।३०	७७। ४	—२१।४४	चण्डीगढ़ (पं.)	३०।४४	७६।५२	—२२।३२	डिवाई (उ.प्र.)	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अर्की (हि.प्र.)	३१। ९	७६।५८	—२२। ८	कलकत्ता (बं)	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	चन्दौसी (उ.प्र.)	२८।२७	७८।४९	—१४।४४	डिब्रूगढ़ (आ.)	२७।२९	९४।५६	+४९।४४
अल्मोड़ा (उ.प्र.)	२९।३७	७९।४०	—११।२०	कसौली (हि.प्र.)	३०।५३	७७। १	—२१।५६	चम्बा (हि.प्र.)	३२।२९	७६।१०	—२५।२०	डीडवाना (राज.)	२७।२४	७४।३४	—३१।४४
अलवर (रा.)	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	कांगड़ा (हि.प्र.)	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	चित्तौड़गढ़ (रा.)	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	डीसा (गु.)	२४।१४	७२।१३	—४१। ८
अलीगढ़ (उ.प्र.)	२७।५४	७८। ६	—१७।३६	कांचीपुरम् (ता.)	१२।५०	७९।४५	—११। ०	चीरापूंजी (मे.)	२५।१७	९१।४७	+३७। ८	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अहमदनगर (म.)	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	काठियावाड़ (गु.)	२२। ०	७१। ०	—४६। ०	चूरू (राज.)	२८।१९	७५। १	—२९।५६	तिरुपति (आंध्र.)	१३।४०	७९।२०	—१२।४०
अहमदाबाद (गु.)	२३। २	७२।३८	—३९।२८	कानपुर (उ.प्र.)	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	छतरपुर (म.प्र.)	२४।५४	७९।३८	—११।२८	त्रिचनापल्ली (ता.)	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आगरा (उ.प्र.)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	कारगिल (का.)	३४।३०	७६।१३	—२५। ८	छपरा (विहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	त्रिचुर (के.)	१०।३०	७६।१५	—२५। ०
आजमगढ़ (उ.प्र.)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	कालका (ह.)	३०।५०	७७। १	—२१।५६	जबलपुर (म.प्र.)	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	त्रिवेन्द्रम् (के.)	८।३०	७६।५७	—२२।१२
आनन्द (गु.)	२२।३२	७३। ०	—३८। ०	काशी (उ.प्र.)	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जम्मू (का.)	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	धराड (गु.)	२४।२३	७१।३७	—४३।३२
आबू (राज.)	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	किसनगढ (राज.)	२७।५३	७०।३७	—४७।३२	जयपुर (राज.)	२६।५५	७५।५२	—२६।३४	थानेसर (हरि.)	२९।५८	७६।५६	—२२।१६
आरा (वि.)	२५।३४	८४।३४	+ ८।१६	कुराली (पं.)	३०।५०	७६।३५	—२३।४०	जलगांव (म.)	२१। ५	७५।४०	—२७।२०	दतिया (म.प्र.)	२५।३९	७८।२७	—१६।१२
आसनसोल (बं.)	२३।४२	८७। १	+१८। ४	कुरुक्षेत्र (हरि.)	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जलपाईगुड़ी (बं.)	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	दमोह (म.प्र.)	२३।५०	७९।२९	—१२। ४
इटारसी (म.प्र.)	२२।३७	७७।४५	—१९। ०	कुल्लू (हि.प्र.)	३१।५८	७७। ६	—२१।३६	जामनगर (गुज.)	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	दरभंगा (विहार)	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
इटावा (उ.प्र.)	२६।४७	७९। २	—१३।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	जालंधर (पं.)	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	दसूआ (पं.)	३१।४९	७५।४२	—२७।१२
इन्दौर (म.प्र.)	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	कुम्भकोणम् (ता.)	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	जालोर (राज.)	२५।२२	७२।३८	—३९।२८	दार्जिलिंग (बं.)	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इम्फाल (मणि.)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	कैथल (ह.)	२९।४८	७६।२६	—२४।१६	जलौन (उ.प्र.)	२६। ८	७९।२३	—१२।२८	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
उज्जैन (म.प्र.)	२३। ९	७५।४३	—२७। ८	कोचीन (के.)	९।५८	७६।१७	—२४।५२	जीन्द (हरि.)	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	दीनानगर (पं.)	३२। ८	७५।३१	—२७।५६
उदयपुर (रा.)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	कोटखाई (हि.प्र.)	३१। ८	७७।३६	—१९।३६	जूनागढ़ (गु.)	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	देवबन्द (उ.प्र)	२९।४२	७७।४३	—१९। ८
उन्नाव (उ.प्र.)	२६।३४	८०।३०	— ८। ०	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	जैसलमेर (राज.)	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	देवरिया (उ.प्र.)	२६।३३	८३।४५	+ ५। ०
ऊधमपुर (का.)	३२।५५	७५। ७	—२९।३२	कोडैकनाल (ता.)	१०।१३	७७।३२	—१९।५२	जोगिन्दर नगर (हि.)	३१।५०	७६।४५	—२३। ०	देवास (म.प्र.)	२२।५८	७६। ६	—२५।३६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
देव प्रयाग (उ.प्र.)	३०। ६	७८।३७	—१५।३२
देहरादून (उ.प्र..)	३०।१६	७८। ४	—१७।४४
द्वारिका (गु.)	२२।१४	६९। ७	—५३।३२
धनबाद (बि.)	२३।४७	८६।३०	+१६। ०
धर्मशाला (हि.प्र.)	३२।१६	७६।२३	—२४।२८
धारवाड़ (क.)	१५।२७	७५। ५	—२९।४०
धौलपुर (रा.)	२६।४२	७७।५३	—१८।२८
नडियाद (गु.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
नरैना (रा.)	२६।५०	७४।११	—३३।१६
नवलगढ़ (रा.)	२७।५१	७५।१८	—२८।४८
नसीराबाद (रा.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
नागपुर (म.)	२१। ९	७९। ९	—१३।२४
नागौर (रा.)	२७।११	७३।४०	—३५।२०
नाचना (रा.)	२७।२९	७१।४५	—४३। ०
नाथद्वारा (रा.)	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
नान्देड़ (म.)	१९। ९	७७।२७	—२०।१२
नाभा (पं)	३०।२५	७६। ९	—२५।३६
नारनौल (ह.)	२८। २	७६।१४	—२५। ४
नालागढ़ (हि.प्र.)	३१। ३	७६।४२	—२३।१२
नाहन (हि.प्र.)	३०।३३	७७।२१	—२०।३६
नासिक (म.)	२०। २	७३।५०	—३४।४०
निम्बहेड़ा (रा.)	२४।३७	७४।४५	—३१। ०
नीमच (म.प्र.)	२४।२७	७४।५२	—३०।३२
नूरपुर (हि.प्र.)	३२।१८	७५।५६	—२६।१६
नैनवा (रा.)	२५।४५	७५।५७	—२६।१२
नैनीताल (उ.प्र.)	२९।२३	७९।३०	—१२। ०
नोहर (राज.)	२९।११	७४।४६	—३०।५६
नौशेरा (का.)	३३।१३	७४।१७	—३२।५२
पचपदरा (रा.)	२५।५५	७२।२१	—४०।३६
पंचमढ़ी (म.प्र.)	२२।३०	७८।२२	—१६।३२
पंचकूला (ह.)	३०।४६	७६।५६	—२२।१६
पंजिम (गोवा)	१५।२९	७३।४९	—३४।४४
पटना (बि.)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
पटियाला (पं.)	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
पटौदी (ह.)	२८।१८	७६।४८	—२२।४८
पठानकोट (पं.)	३२।१७	७५।४२	—२७।१२
पन्ना (म.प्र.)	२४।४४	८०।१४	— ९। ४

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
पाटन (गु.)	२३।५३	७२।१०	—४१।२०
पाण्डिचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८
पालमपुर (हि.प्र.)	३२। ७	७६।३२	—२३।५२
पाली (रा.)	२५।४६	७३।२५	—३६।२०
पुंछ (का.)	३३।५१	७४। ८	—३३।२८
पुरनिया (बि.)	२५।४९	८७।३१	+२०। ४
पुरी (उ.)	१९।४८	८५।५२	+१३।२८
पूना (म.)	१८।३०	७३।५३	—३४।२८
पोरबन्दर (गु.)	२१।३७	६९।४९	—५०।४४
पोर्टब्लेयर	११।४०	९२।४६	+४१। ४
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	२५।५४	८१।५९	— २। ४
प्रतापगढ़ (म.प्र.)	२४। २	७४।४०	—३१।२०
प्रयाग (उ.प्र.)	२५।२८	८१।५४	— २।२४
फगवाड़ा (पं.)	३१।१४	७५।४६	—२६।५६
फतेहाबाद (उ.प्र.)	२७। १	७८।१९	—१६।४०
फतेहाबाद (ह.)	२९।३१	७५।३०	—२८। ०
फरीदकोट (पं.)	३०।४०	७४।४०	—३१।२०
फरीदाबाद (ह.)	२८।२५	७७।२२	—२०।३२
फर्रुखाबाद (उ.प्र.)	२७।२४	७९।३७	—११।३२
फाजिल्का (पं.)	३०।२५	७४। ४	—३३।४४
फिरोजपुर (पं.)	३०।५५	७४।४०	—३१।२०
फुलेरा (रा.)	२६।५२	७५।१६	—२८।५६
फैजाबाद (उ.प्र.)	२६।४७	८२।१२	— १।१२
बंगलोर (क.)	१२।५८	७७।३८	—१९।२८
बटाला (पं.)	३१।४९	७५।१४	—२९। ४
बदायूं (उ.प्र.)	२८। २	७९।१०	—१३।२०
बड़ोदा (गु.)	२२।१८	७३।१२	—३७।१२
बम्बई (म.)	१९। ०	७२।५४	—३८।२४
बद्रीनाथ (उ.प्र.)	३०।४४	७९।३२	—११।५२
बर्दवान (बं.)	२३।१६	८७।५२	+२१।२८
बलिया (उ.प्र.)	२५।४४	८४।११	+ ६।४४
बागलकोट (क.)	१६।१२	७५।४४	—२७। ४
बांकीपुर (बि.)	२५।४०	८५।१२	+१०।४८
बांसवाड़ा (रा.)	२३।३०	७४।२४	—३२।२४
बांदा (उ.प्र.)	२५।३०	८०।२२	— ८।३२
बाराबंकी (उ.प्र.)	२६।५६	८१।१३	— ५। ८
बारामूला (का.)	३४।१०	७४।२०	—३२।४०

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
बालासोर (उ.)	२१।३०	८६।५४	+१७।३६
बालोतरा (रा.)	२५।४९	७२।१५	—४१। ०
बिजनोर (उ.प्र.)	२९।२३	७८।११	—१७।१६
बिलासपुर (म.प्र.)	२२। ५	८२।१३	— १। ८
बिलासपुर हि.प्र.)	३१।१९	७६।५०	—२२।४०
बीकानेर (रा.)	२८। १	७३।२२	—३६।३२
बीजापुर (म.)	१६।५०	७५।४७	—२६।५२
बुलन्दशहर (उ.प्र.)	२८।२४	७७।५४	—१८।२४
बूंदी (रा.)	२५।२७	७५।४१	—२७।१६
वृन्दावन (उ.प्र.)	२७।३३	७७।४४	—१९। ४
बुद्धगया (बि.)	२४।४२	८४।५९	+ ९।५६
भद्रवाह (का.)	३३। १	७५।४३	—२७। ८
भटिण्डा (पं.)	३०।११	७५। ०	—३०। ०
भरतपुर (रा.)	२७।१५	७७।३०	—२०। ०
भरूच (गु.)	२१।४१	७३। १	—३७।५६
भागलपुर (बि.)	२५।१४	८६।५९	+१७।५६
भिवानी (ह.)	२८।४६	७६।१८	—२४।४८
भीनमाल (रा.)	२५। ०	७२।१९	—४०।४४
भुल (गुज.)	२३।१६	६९।४४	—५१। ४
भुवनेश्वर (उ.)	२०।१५	८५।५२	+१३।२८
भोपाल (म.प्र.)	२३।१६	७७।२३	—२०।२८
मऊ (उ.प्र.)	२५।५८	८३।३६	+ ४।२४
मछलीपट्टण (आं.)	१६। ९	८१। ८	— ५।२८
मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८
मद्रास (ता.)	१३। ४	८०।१७	— ८।५२
मथुरा (उ.प्र.)	२७।२८	७७।४१	—१९।१६
मन्दसोर (म.प्र.)	२४। ४	७५। ५	—२९।४०
मंसूरी (उ.प्र.)	३०।२७	७८। ६	—१७।३६
महेसाणा (गु.)	२३।३५	७२।२७	—४०।१२
माछीवाड़ा (पं.)	३०।५५	७६।१५	—२५। ०
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	२८।१७	७६।१४	—२५। ४
माण्डवी (गु.)	२२।५१	६९।३०	—५२। ०
मारवाड़ जं. (रा.)	२५।४३	७३।४०	—३५।२०
मालेगांव (म.)	२०।३०	७४।४०	—३१।२०
मालेरकोटला (पं.)	३०।३१	७५।५९	—२६। ४
मिर्जापुर (उ.प्र.)	२५।१०	८२।३३	+ ०।१२
मीरपुर (का.)	३३।१२	७३।५१	—३४।३६

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
मुगलसराय (उ.प्र.)	२५।१७	८३।११	+ ३।४४
मुंगेर (बि.)	२५।२३	८६।३०	+१६। ०
मुजफ्फर न. (उ.प्र.)	२९।२८	७७।४४	—१९। ४
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८
मुरादाबाद (उ.प्र.)	२८।५१	७८।४९	—१४।४४
मेरठ (उ.प्र.)	२९। १	७७।४५	—१९। ०
मैनपुरी (उ.प्र.)	२७।१४	७९। ३	—१३।४८
मोगा (पं.)	३०।४८	७५।१०	—२९।२०
मोरार (म.प्र.)	२६।१३	७८।१४	—१७। ४
मोरेना (म.प्र.)	२६।२६	७८। ४	—१७।४४
यवतमाल (म.)	२०।२३	७८।११	—१७।१६
चोल (हि.प्र.)	३२।११	७६।२३	—२४।२८
रतलाम (म.प्र.)	२३।२०	७५। ७	—२९।३२
रत्नागिरि (म.)	१७। २	७३।१९	—३६।४४
राजकोट (गु.)	२२।१८	७०।५०	—४६।४०
राजमहेन्द्री (आं.)	१७। ५	८१।४८	— ३।४८
रांची (बि.)	२३।२०	८५।२०	+११।२०
रानीखेत (उ.प्र.)	२९।४०	७९।३०	—११।४८
रापर (गु.)	२३।३२	७०।४०	—४७।२०
रामपुर बुशहर(हि.)	३१।२७	७७।३८	—१९।२८
रायपुर (म.प्र.)	२१।१५	८१।४१	— ३।१६
रायबरेली (उ.प्र.)	२६।१२	८१।१४	— ५। ४
रामेश्वरम् (ता.)	९।१७	७९।२२	—१२।३२
रिवाड़ी (ह.)	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
रीवां (म.प्र.)	२४।३१	८१।१९	— ४।४४
रोपड़ (पं.)	३०।५७	७६।३०	—२४। ०
रोहतक (ह.)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
लखनऊ (उ.प्र.)	२६।५५	८०।५९	— ९। ४
लाडवा (ह.)	२९।५९	७७। ५	—२१।४०
लुधियाना (पं.)	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
लेह (का.)	३४।१०	७७।४०	—१९।२०
लोहारू (ह.)	२८।२६	७५।४७	—२६।५२
वर्धा (म.)	२०।४५	७८।३९	—१५।२४
विजयवाड़ा (आं.)	१६।३१	८०।३९	— ७।२४
विशाखापट्टनम्(आं.)	१७।४२	८३।२०	+ ३।२०
शाहदरा (दिल्ली)	२८।४०	७७।२०	—२०।४०
शाहाबाद (उ.प्र.)	२७।३०	८०। ०	—१०। ०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDE

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. से.
शिमला (हि.प्र.)	३१। ६	७७।१३	—२१। ८	सांगली (म.)	१६।५२	७४।३६	—३१।३६	सीकर (रा.)	२७।३६	७५।१२	—२९।१२	हनुमान गढ (रा.)	२९।३५	७४।२१	—३२।३६
शिलांग (आ.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	सांगानेर (रा.)	२६।४९	७५।४९	—२६।४४	सीतापुर (उ.प्र.)	२७।३२	८०।४३	— ७। ८	हरदोई (उ.प्र.)	२७।२३	८०।१०	— ९।२०
श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६	साम्भर (रा.)	२६।५४	७५।१३	—२९। ८	सुन्दर नगर (हि.प्र.)	३१।३२	७६।५३	—२२।२८	हरिद्वार (उ.प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
श्रीमाधोपुर (रा.)	२७।२५	७५।३२	—२७।५२	सिकन्दराबाद (आं.)	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	सूरत (गु.)	२१।१२	७२।५२	—३८।३२	हाथरस (उ.प्र.)	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
संगरूर (पं.)	३०।१२	७५।५३	—२६।२८	सिन्दरी (रा.)	२५।३३	७१।५५	—४२।२०	सूरतगढ़ (रा.)	२९।१९	७३।५७	—३४।१२	हापुड़ (उ.प्र.)	२८।४३	७७।५०	—१८।४०
सतारा (म.)	१७।४२	७४। २	—३३।५२	सिन्दरी (बं.)	२३।४५	८६।४२	+१६।४८	सोजत (रा.)	२५।५६	७३।४२	—३५।१२	हांसी (ह.)	२९। ६	७६। ०	—२६। ०
सनावर (पं.)	३०।१८	७६।३०	—२४। ०	सिरसा (ह.)	२९।३२	७५। ४	—२९।४४	सोनहाट (म.प्र.)	२३।२९	८२।३०	— ०। ०	हिसार (ह.)	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
सरदार शहर (रा.)	२८।२७	७४।३२	—३१।५२	सिरोही (रा.)	२४।५३	७२।५४	—३८।२४	सोमनाथ (गु.)	२१। ४	७०।२६	—४८।१६	हुबली (क.)	१५।२०	७५।१२	—२९।१२
सरहिन्द (पं.)	३०।३८	७६।२५	—२४।२०	सिलीगुड़ी (बं.)	२६।४२	८८।२५	+२३।४०	सोलन (हि.प्र.)	३०।५५	७७। ९	—२१।२४	हैदराबाद (आं.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
सवाईमाधोपुर (रा.)	२६। ०	७६।३०	—२४। ०	सिवाना (रा.)	२५।३६	७२।२७	—४०।१२	हजारी बाग (बि.)	२३।५९	८५।२५	+११।४०	होशंगाबाद (म.प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
ससाराम (बि.)	२४।५७	८४। ३	+ ६।१२	सिहोरा (म.प्र.)	२३।२९	८०। ९	— ९।२४	हमीरपुर (उ.प्र.)	२५।५८	८०।१२	— ९।१२	होशियारपुर (पं.)	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
सहारनपुर (उ.प्र.)	२९।५८	७७।३३	—१९।४८	सिहभूम (वि.)	२२।२४	८५।३०	+१२।००	हमीरपुर (हि.प्र.)	३१।४१	७६।३१	—२३।५६	होसुर (ता.)	१२।४४	७७।५२	—१८।३२
सागर (म.प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०												

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.	नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण) मि. से.
अकलेरा	२४।२३	७६।३६	२३।३६	एरिनपुरा	२५। ९	७३। ६	३७।३६	खेडब्रह्मा	२४। ५	७३। ३	३७।४८	चोमू	२७। ८	७५।४७	२६।५२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	३१।१२	ओसिया	२६।४३	७२।५५	३८।२०	खेरवाड़ा	२४। ०	७३।३५	३५।४०	छबरा	२४।४०	७६।५०	२२।४०
अनूपगढ़	२९। ७	७३। ६	३७।३६	करोली	२६।३०	७७। १	२१।५६	गंगानगर	२९।४९	७३।५०	३४।४०	छोटी सादड़ी	२४।२४	७४।४२	३१।१२
अमेट	२५।२०	७३।५९	३४। ४	कांकरोली	२५। ४	७३।५४	३४।२४	गंगापुर (भीलवाड़ा)	२५।१३	७४।१६	३२।५६	जयपुर	२६।५५	७५।५२	२६।३२
अलवर	२७।३४	७६।३८	२३।२८	कामन	२७।३९	७७।१६	२०।५६	गंगापुर (टोंक)	२६।२९	७६।४६	२२।५६	जसरासर	२७।४५	७३।५०	३४।४०
अलीगढ़	२५।५८	७६। ७	२५।३०	किशनगढ़	२६।३४	७४।५२	३०।३२	गिराव	२६। २	७०।३५	४७।४०	जसवन्तपुरा	२४।४८	७२।३०	०। ०
आबू	२४।४०	७२।४५	३९। ०	कुशालगढ़	२३।१०	७४।२७	३२।१२	गागरिया	२५।५४	७०।४२	४७।१२	जहाजपुर	२५।३८	७५।१२	२९।१२
आबू रोड	२४।२९	७२।४७	३८।५२	कुचामन	२७। ९	७४।५२	३०।३२	गूढ़ा	२५।१२	७१।४८	४२।४८	जाएल	२७।१५	७४।१२	३३।१२
आमेर	२६।५९	७५।५२	२६।३२	कूरी	२६।४२	७०।४०	४७।२०	घोटारू	२७।१८	७०। ४	४९।४४	जालोर	२५।२२	७२।३८	३९।२८
आसपुर	२३।५८	७४। ३	३३।४८	ककड़ी	२५।५६	७५।१०	२९।२०	चात्सू	२६।३६	७५।५९	२६। ४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५४	४६।२४
आहोर	२५।२३	७२।५२	३८।३२	कोटरा	२४।२२	७३।१०	३७।२०	चारनवाला	२७।५३	७२।१०	४१।२०	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	३७।४४
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	२५।१२	कोटा	२५।१०	७५।५२	२६।३२	चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४०	३१।२०	जोधासर	२८। ७	७३।५०	३४।४०
उतारनी	२६। ६	७१।५८	४२। ८	कोलायत	२७।५०	७२।५७	३८।१२	चिरावा	२८।१५	७५।३८	२७।२८	झालरापाटन	२४।३३	७६।१०	२५।२०
उदयपुर	२४।३५	७३।४१	३५।१६	खण्डेला	२७।३६	७५।३२	२७।५२	चीलो	२७।२२	७३।३०	३६। ०	झालावाड़	२४।३६	७६। ९	२५।२४
एकलिंगजी	२४।४३	७३।४६	३४।५६	खुईआला	२७। ६	७०।२५	४८।२०	चूरू	२८।१९	७५। १	२९।५६	झुंझुनु	२८। ६	७५।२५	२८।२०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजस्थान के नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)	नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
टाडगढ़	२५।४२	७४। ०	३४। ०	पिपलांदा	२३।३५	७४।५०	३०।४०	भीम	२५।३९	७४। ९	३३।२४	शाहपुरा (जयपुर)	२७।२३	७५।५८	२६। ८
टोडाराय सिंह	२६। ०	७५।२९	२८। ४	पिरावा	२४।१३	७६। ३	२५।४८	भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	३१।२०	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	२५।४०	७४।५०	३०।४०
टोंक	२६।११	७५।५०	२६।४०	पिलानी	२८।२३	७५।३५	२७।४०	मकराना	२७। ३	७४।४३	३१। ८	शेओ	२६।११	७१।१५	४५। ०
डीग	२७।२८	७७।२०	२०।४०	पीपार रोड	२६।२७	७३।२७	३६।१२	मण्डलगढ़	२५।१२	७५। ९	२९।२४	शेरगढ़ (जोधपुर)	२६।२५	७२।२१	४०।३६
डीडवाना	२७।२४	७४।३४	३१।४४	पुनासर	२७। २	७३। २	३७।५२	महलां	२६।५०	७५।३०	२८। ०	शेरगढ़ (झालावाड़)	२४।४०	७६।३२	२३।५२
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	३५। ८	पुष्कर	२६।३०	७४।३३	३१।४८	महाजन	२८।४८	७३।५६	३४।१६	श्री गंगानगर	२९।४९	७३।५०	३४।४०
डेगाना	२६।५०	७४।१८	३२।४८	पूगल	२८।३१	७२।४७	३८।५२	मांगरोल	२५।२०	७६।३०	२४। ०	श्री डूंगरगढ़	२८। ६	७४। १	३३।५६
तिजारा	२७।५५	७६।५०	२२।४०	प्रसाद	२४।११	७३।४२	३५।१२	मारवाड़-जंकशन	२५।४३	७३।४५	३५। ०	श्री माधोपुर	२७।२५	७५।३२	२७।५२
थाना कस्बा	२५।१३	७७।२०	२०।४०	फतेहपुर	२८। ०	७५। ०	३०। ०	मालपुरा	२६।१८	७५।२५	२८।२०	श्री मोहनगढ़	२७।१७	७१।१२	४५।१२
थाना गाजी	२७।२५	७६।१९	२४।४४	फलोदी	२७। ९	७२।२२	४०।३२	मावली	२४।४७	७३।५८	३४। ८	सम	२६।५०	७०।३१	४७।५६
दान्ता	२४।१२	७२।४७	३८।५२	फुलेरा	२६।५२	७५।१६	२८।५६	मेड़ता	२६।३९	७४। ९	३३।३६	समदरी	२५।४९	७२।३५	३९।४०
देओरा	२६।३०	७०।४८	४७।१२	बड़ी सादड़ी	२४।२५	७४।२८	३२। ८	मेड़तारोड़	२६।४३	७३।५५	३४।२०	सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	३२। ०
देचू	२६।४७	७२।२०	४०।४०	पोखरन	२६।५५	७१।५५	४२।२०	मियालजर	२६।१८	७०।२२	४८।३२	सरवार	२६। २	७४।५५	३०।२०
देवलिया	२४। ३	७४।४३	३१। ८	बनस्थली	२६।२३	७५।५०	२६।४०	मुकन्दबाड़ा	२४।४९	७५।५९	२६। ४	सरूप सर	२९।२२	७३।३७	३५।३२
देवली	२५।४६	७५।२५	२८।२०	बयाना	२६।५४	७७।१७	२०।५२	मुनवाओ	२५।४३	७०।१५	४९। ०	सवाई माधोपुर	२५।५८	७६।२५	२४।२०
देवीकोट	२६।४२	७१।१२	४५।१२	बान्दनवाड़ा	२६। ९	७४।४२	३१।१२	मोदरी	२४।२५	७३।२५	३६।२०	सहारा	२५।१५	७४।१६	३२।५६
देशनोके	२७।४८	७३।२१	३६।३६	बस्वा	२७। ९	७६।३२	२३।५२	मोहनगढ़	२७।१७	७१।१८	४४।४८	सागवाड़ा	२३।४१	७४। १	३३।५६
देसुरी	२५।२०	७३।३७	३५।३२	बान्दीकुई	२७। ३	७६।३४	२३।४४	रतनगढ़	२८। ५	७४।३९	३१।२४	सांगानेर	२६।४९	७५।४९	२६।४४
धोलपुर	२६।४२	७७।५३	१८।२८	बाड़मेर	२५।४५	७१।२५	४४।२०	राजगढ़	२८।३९	७५।२३	२८।१३	सांगोद	२४।५५	७६।२१	२४।३६
नरैना	२६।५०	७४।११	३३।१६	बाड़ी	२६।३९	७७।३६	१९।३६	रानीवाड़ा	२४।४५	७२।१३	४१। ८	सांचोर	२४।४०	७१।५०	४२।४०
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	२८।४८	बाप	२७।२२	७२।२२	४०।३२	रामगढ़ (जयपुर)	२७।१५	७५।१०	२९।२०	साम्भर	२६।५४	७५।१०	२९।२०
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	३०।५६	बारन	२५। ६	७६।३०	२४। ०	रामगढ़ (जैसलमेर)	२७।२२	७०।३०	४८। ०	सादूलपुर	२८।३८	७५।२४	२८।२४
नागौर	२७।११	७३।४४	३५। ४	बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	३२।२४	रामदेवरा	२७। ०	७१।५२	४२।३२	सिन्दरी	२५।३३	७१।५५	४२।२०
नाचना	२७।२९	७१।४५	४३। ०	बाली	२५।५०	७४। ५	३३।४०	रायसिंह नगर	२९।३२	७३।२७	३६।१२	सिरमुटरा	२६।३१	७७।२२	२०।३२
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५०	३४।४०	बालोतरा	२५।४९	७२।१४	४१। ४	रिखभदेव	२४। ४	७३।४०	३५।२०	सिरोही	२४।५३	७२।५४	३८।२४
निम्बहेड़ा	२४।३७	७४।४५	३१। ०	बिरसलपुर	२८।१०	७२।१५	४१। ०	रींगस	२७।२१	७५।३४	२७।४४	सिवाना	२५।३६	७२।२७	४०।१२
नीम का थाना	२७।४४	७५।४८	२६।४८	बिलारा	२६।१०	७३।४२	३५।१२	रूप नगर	२६।४८	७४।५४	३०।२४	सूरतगढ़	२९।१९	७३।५७	३४।१२
नोखा	२७।३५	७३।२९	३६। ४	बीकानेर	२८। १	७३।२०	३६।४०	रेनी	२८।४१	७५। ५	२९।४०	सीकर	२७।३६	७५। ९	२९।२४
नैनवा	२५।४५	७५।५७	२६।१२	बून्दी	२५।२७	७५।४०	२७।२०	लछमनगढ़	२७।४५	७५। ४	२९।४४	सुजानगढ़	२७।४२	७४।३०	३२। ०
नोहर	२९।११	७४।४६	३०।५६	ब्यावर	२६। ६	७४।२०	३३।२०	लाठी	२७। ३	७१।३०	४४। ०	सोजत	२५।५६	७३।४२	३५।१२
पचपदरा	२५।५५	७२।२१	४०।३६	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	२०। ०	लाडनूं	२७।३९	७४।२३	३२।२८	हनुमानगढ़	२९।३५	७४।२१	३२।३६
प्रतापगढ़	२४। २	७४।४७	३०।५२	भवारी	२५।४३	७२।५२	३८।३२	लालसोट	२६।३४	७६।२३	२४।२८	हिन्डौन	२६।४३	७७। १	२१।५६
पर्वतसर	२६।५२	७४।४७	३०।५२	भंवरगढ़	२५। ६	७६।५०	२२।४०	लूनी	२६। ०	७२।५२	३८।३२				
पल्लू	२८।५६	७४।१३	३३। ८	भाद्रा	२९।१५	७५।२०	२८।४०	लोहारिया	२३।४८	७४।१५	३३। ०				
पाली	२५।४६	७३।२०	३६।४०	भीनमाल	२५। ०	७२।१६	४०।४४	शाहगढ़	२७। ८	६९।५७	५०।१२				

दिल्ली के अक्षांश आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दिल्ली के अक्षांश आदि

नगर, उपनगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
आजादपुर	२८।४३	७७।११	२१।१६
ओखला	२८।३४	७७।१८	२०।४८
कालका जी	२८।३३	७७।१५	२१। ०
किशनगढ़	२८।३१	७७। ८	२१।२८
खिचड़ीपुर	२८।३७	७७।१९	२०।४४
जगतपुर	२८।४४	७७।१४	२१। ४
जफरपुर	२८।४०	७७। १	२१।५६
तुगलकावाद	२८।३१	७७।१६	२०।५६
दिल्ली कैण्ट	२८।३६	७७। ८	२१।२८
दिल्ली (पुरानी)	२८।३८	७७।१२	२१।१२
दिल्ली विश्व-विद्यालय	२८।४२	७७।१३	२१। ८
देवली	२८।३०	७७।१४	२१। ४
दौलतपुर	२८।४४	७७। ६	२१।३६
नई दिल्ली	२८।३६	७७।१२	२१।१२
नांगलोई	२८।४०	७७। २	२१।५२
नांगलोई जाट	२८।४१	७७। ४	२१।४४
नजफगढ़	२८।३७	७६।५९	२२। ४
नानाखेड़ी	२८।३१	७६।५९	२२। ४
पालम	२८।३५	७७। ५	२१।४०
वादली	२८।४५	७७। ९	२१।२४
वाबरपुर	२८।४१	७७।१७	२०।५२
महरौली	२८।३१	७७।११	२१।१६
शकूरपुर	२८।४१	७७। ९	२१।२४
शाहदरा	२८।४०	७७।१८	२०।४८
सफदरजंग	२८।३७	७७।१३	२१। ८

हरियाणा के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अगरोहा	२९।२१	७५।३८	२७।२८
अम्वाला	३०।२१	७६।५२	२२।३२
अलीपुर	२९। ८	७५।५३	२६।२८
उगाला	३०।११	७६।५९	२२। ४
करनाल	२९।४२	७७। २	२१।५२
कलानौर	२८।५१	७६।२४	२४।२४
कालका	३०।५०	७६।५६	२२।१६
कुरुक्षेत्र	२९।५९	७६।५०	२२।४०
केसरी	३०।१४	७६।५४	२२।२४
कैथल	२९।४८	७६।२६	२४।१६
कैरू	२८।४१	७५।५२	२६।३२
खतौली	३०।३६	७६।५८	२२। ८
गुड़गांव	२८।२७	७७। ४	२१।४४
गोरखपुर	२९।२६	७५।४०	२७।२०
गोहाना	२९। ८	७६।४२	२३।१२
गौरोटा	२७।५६	७७।२५	२०।२०
घरौण्डा	२९।३३	७६।५८	२२। ८
घाटासेर	२७।५८	७६। ३	२५।४८
चण्डी मन्दिर (कैण्ट)	३०।४२	७६।५२	२२।३२
चरखी दादरी	२८।३७	७६।१८	२४।४८
चिलकाणा	२९।१२	७६।५९	२२। ४
जगाधरो	३०।१०	७७।१८	२०।४८
जाखल	२९।४८	७५।५०	२६।४०
जींद	२९।१९	७६।१९	२४।४४
झज्जर	२८।३७	७६।३९	२३।२४
झांसा	३०। ७	७६।४४	२३। ४
टोहाना	२९।४२	७५।५४	२६।२४
डोहा	२७।४०	७६।५६	२२।१६
तोशाम	२८।५२	७५।५४	२६।२४
थाना वास	२७।५१	७६। ९	२५।२४
थानेसर	२९।५८	७६।५६	२२।१६
दादरी	२८।३४	७७।३३	१९।४८
दुजाना	२८।४१	७६।३७	२३।३२

हरियाणा के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
घोलेरा	२७।५५	७६। ४	२५।४४
नरवाणा	२९।३७	७६। ७	२५।३२
नांगल चौधरी	२७।५३	७६। ७	२५।३२
नांगल दुर्गु	२७।५३	७६। ३	२५।४८
नाथूसिरी कलां	२९।२२	७५। ८	२९।२८
नारनौल	२८। ३	७६।१४	२५। ४
नारायणगढ़	३०।२९	७७। ८	२१।२८
नाहर	२८।२३	७६।२३	२४।२८
नीलोखेड़ी	२९।५१	७६।५५	२२।२०
नूरपुर	३०।१३	७६।४७	२२।५२
नूह	२८। ७	७७। १	२१।५६
पंचकूला	३०।४२	७६।५२	२२।३२
पटौदी	२८।१८	७६।४८	२२।४८
पलवल	२८। ९	७७।२०	२०।४०
पानीपत	२९।२३	७७। ०	२२। ०
पावरा	२९।२४	७५।४८	२६।४८
पिंजोर	३०।५०	७६।५४	२२।२४
पिपली	२९।५८	७६।५३	२२।२८
पिहोवा	२९।५७	७६।३७	२३।३२
पुण्डरी	२९।४५	७६।३३	२३।४८
पूना हाणा	२७।५२	७७।१२	२१।१२
फतेहाबाद	२९।३१	७५।२८	२८। ८
फरीदावाद	२८।२६	७७।१९	२०।४४
फिरोजपुर झिरखा	२७।४७	७६।५७	२२।१२
वड़ा उचाणा	२९।२७	७६।११	२५।१६
वरवाला	२९।२२	७५।५४	२६।२४
वल्लभगढ़	२८।२१	७७।१९	२०।४४
वहादुरगढ़	२८।४१	७६।५६	२२।१६
वाल समन्द	२९। ५	७५।२९	२८। ४
वास	२९। ६	७६।१२	२५।१२
बुटाणा	२९।११	७६।३८	२३।२८
भट्टू कलां	२९।२३	७५।२१	२८।३६
भाणा	२९।४०	७६।३१	२३।५६
भादसों	२९।५५	७६।५८	२२। ८
भिवानी	२८।४८	७६। ८	२५।२८
मनसादेवी	३०।४३	७६।५१	२२।३६
मनीमाजरा	३०।४२	७६।५२	२२।३२
महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६। ९	२५।२४
मानपुर	२७।५९	७७।१७	२०।५२
माहम	२८।५७	७६।१८	२४।४८
मुलाना	३०।१७	७७। ३	२१।४८
मोहाना	२९। ३	७६।५२	२२।३२
यमुनानगर	३०। ७	७७।१८	२०।४८
रजाबाद	२९।३४	७५।३२	२७।५२
राम्रौली	२७।४२	७६।५६	२२।१६
रादौर	३०। १	७७। ८	२१।२८
रायपुर राणी	३०।३६	७७। २	२१।५२
रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	२३।२०
रिवासा	२८।४८	७५।५७	२६।१२
रोड़ी	२९।४४	७५।१२	२९।१२
रोहतक	२८।५४	७६।३८	२३।२८
लाडवा	२९।५९	७७। ५	२१।४०
लोहारी	२९।२२	७६।५१	२२।३६
लोहारू	२८।२७	७५।४९	२६।४४
शादीपुर जुलाना	२९। ७	७६।२३	२४।२८
शाहावाद	३०।१०	७६।५२	२२।३२
सफीदों	२९।२५	७६।४०	२३।२०
साढौरा	३०।२३	७७।१३	२१। ८
सिरसा	२९।३२	७५। ४	२९।४४
सिवानी	२८।५५	७५।३७	२७।३२
सोनीपत	२८।५९	७७। १	२१।५६
हसनपुर	२७।५८	७७।३०	२०। ०
हांसी	२९। ६	७६। ०	२६। ०
हिसार	२९।१०	७५।४६	२६।५६
होडल	२७।५३	७७।२२	२०।३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंजाब के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकालगढ़	२९।५०	७५।५३	२६।२८
अजनाला	३१।५१	७४।४८	३०।४८
अमरगढ़	३०।२८	७६। १	२५।५६
अमलोह्	३०।३७	७६।१४	२५। ४
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	३०।२०
अटारी	३१।३६	७४।३५	३१।४०
अबोहर	३०। ९	७४।११	३३।१६
अहमदगढ़	३०।४१	७५।५०	२६।४०
आनन्दपुर साहेब	३१।१५	७६।३१	२३।५६
उरमर टाण्डा	३१।४२	७५।३८	२७।२८
ककराला	३०। ४	७६। ७	२५।३२
कपूरथला	३१।२३	७५।२३	२८।२८
करतारपुर	३१।२७	७५।३०	२८। ०
क़ादियां	३१।४९	७५।२३	२८।२८
कादों	३०।४७	७६। ३	२५।४८
कीरतपुर साहेब	३१।११	७६।३४	२३।४४
कुराली	३०।५०	७६।३५	२३।४०
कोट कपूरा	३०।३६	७४।५४	३०।२४
खण्ट	३०।४८	७६।२५	२४।२०
खन्ना	३०।४२	७६।१३	२५। ८
खमाणों कला	३०।५०	७६।२०	२४।४०
खरड़	३०।४५	७६।३७	२३।३२
खेमकरण	३१। ८	७४।३४	३१।४४
गंगूवाल	३१।१७	७६।२८	२४। ८
गढ़दिवाला	३१।४४	७५।४५	२७। ०
गढ़शंकर	३१।१३	७६। ८	२५।२८
गुरदासपुर	३२। २	७५।२७	२८।१२
गोईन्दवाल	३१।२२	७५। ८	२९।२८
गोबिन्दगढ़ मण्डी	३०।४०	७६।१८	२४।४८
घड़ूआ	३०।४७	७६।३३	२३।४८
घनौर	३०।२१	७६।३७	२३।३२
चण्डीगढ़	३०।४५	७६।५०	२२।४०
चमकोर साहेब	३०।५५	७६।२४	२४।२४

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
जगरांव	३०।४७	७५।२९	२८। ४
जण्डयाला	३१।३६	७५। ३	२९।४८
जलालाबाद	३०।३७	७४।१५	३३। ०
जालन्धर	३१।१९	७५।३४	२७।४४
जीरा	३०।५८	७४।५९	३०। ४
जिजों	३१।२१	७६। ९	२५।२४
जेतों	३०।२८	७४।५३	३०।२८
टाण्डा उरमर	देखें	उरमर	टाण्डा
डबवाली	२९।५८	७४।४५	३१। ०
डकाला	३०।१३	७६।२१	२४।३६
डेरा बाबा नानक	३२। २	७५। ४	२९।४४
तपा	३०।१९	७५।२१	२८।३६
तरन तारन	३१।२७	७४।५८	३०। ८
तलवण्डी भाई	३०।५१	७४।५६	३०।१६
दसूआ	३१।४९	७५।३८	२७।२८
दीना नगर	३२। ९	७५।२८	२८। ८
दोराहा मण्डी	३०।४९	७६। २	२५।५२
धारीवाल	३१।५७	७५।१९	२८।४४
धुरी	३०।२२	७५।५२	२६।३२
नकोदर	३१। ७	७५।२९	२८। ४
नंगल डैम	३१।२३	७६।२१	२४।३६
नवां शहर	३१। ७	७६। ८	२५।२८
नाभा	३०।२२	७६। ८	२५।२८
नूरपुर वेदी	३१। ९	७६।२९	२४। ४
नौगावां	३०।४४	७६।२६	२४।१६
पटियाला	३०।२०	७६।२५	२४।२०
पट्टी	३१।१७	७४।५१	३०।३६
पठानकोट	३२।१७	७५।४२	२७।१२
फगवाड़ा	३१।१४	७५।४६	२६।५६
फरीदकोट	३०।४०	७४।४०	३१।२०
फाजिल्का	३०।२५	७४। ४	३३।४४
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	३१।२०
फिल्लौर	३१। १	७५।४७	२६।५२

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
बंगां	३१।११	७५।५९	२६। ४
बटाला	३१।४८	७५।१२	२९।१२
बनूड़	३०।३३	७६।४३	२३। ८
बरनाला	३०।२३	७५।३३	२७।४८
बरेटा	२९।५१	७५।४१	२३।१६
बलाचौर	३१। ३	७६।१८	२४।४८
बसी	३०।३५	७६।५०	२२।४०
बसी पठाणां	३०।४०	७६।२३	२४।२८
बुढ़लाडा	२९।५६	७५।३४	२७।४४
बेला	३०।५६	७६।२३	२४।२८
बोरास	३०।३६	७६।३२	२३।५२
ब्यास	३१।३१	७५।१८	२८।४८
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	३०। ०
भवानीगढ़	३०।१६	७६। २	२५।५२
भाखड़ा डैम	३१।२४	७६।३०	२४। ०
भादसों	३०।३१	७६।१५	२५। ०
भीखी	३०। ५	७५।३४	२७।४४
भुच्चो	३०।१३	७५। ६	२९।३६
भैणी आला	३०।५२	७६। ४	२५।४४
भैणी की माली	३०।५६	७६। २	२५।५२
मजीठा	३१।४६	७४।५७	३०।१२
मण्डी गोविन्दगढ़	देखें	गोविन्दगढ़ मंडी	
मलकाणा	२९।५६	७५। २	२९।५२
मलोट	३०।१३	७४।२९	३२। ४
माच्छीवाड़ा	३०।५५	७६।११	२५।१६
मादपुर	३०।५१	७६। ७	२५।३२
मानकी	३०।४८	७६।१३	२५। ८
मानसा	२९।५९	७५।२३	२८।२८
मालेर कोटला	३०।३१	७५।५२	२६।३२
मुकेरियां	३१।५७	७५।३७	२७।३२
मुक्तसर	३०।२९	७४।३१	३१।५६
मुबारिकपुर	३०।३७	७६।५१	२२।३६
मोगा	३०।४८	७५।१०	२९।२०

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर (ऋण)
	अं. क.	अं. क.	मि. से.
मोरिण्डा	३०।४८	७६।३०	२४। ०
मोहाली	३०।४३	७६।४२	२३।१२
मौड़	३०। ५	७५।१५	२९। ०
राजपुरा	३०।२९	७६।३६	२३।३६
रामपुरा फूल	३०।१७	७५।१४	२९। ४
रायकोट	३०।३९	७५।३६	२७।३६
राहों	३१। ३	७६। ७	२५।३२
रूपनगर	३०।५७	७६।३२	२३।५२
रोपड़	देखें	रूपनगर	
रोणी	३०।३६	७६। ५	२५।४०
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	२६।२४
शार्दूल गढ़	२९।४२	७५।१४	२९। ४
संगरूर	३०।१२	७५।५३	२६।२८
संघोल	३०।४७	७६।२३	२४।२८
सनौर	३०।१८	७६।२८	२४। ८
समराला	३०।५१	७६।११	२५।१६
समाना	३०। ९	७६।१२	२५।१२
सरहिन्द	३०।३८	७६।२२	२४।३२
साधुगढ़	३०।३५	७६।२७	२४।१२
सुनाम	३०। ८	७५।४८	२९।४८
सुल्तानपुर	३१।१२	७५।१२	२९।१२
सोहाणा	३०।४२	७६।४२	२३।१२
होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	२६।१२

अनमोल पुस्तकें

हमारे यहां हर प्रकार की ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें उपलब्ध हैं। यन्त्र-मन्त्र साधना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, हस्तरेखा, सामुद्रिक शास्त्र, अंक ज्योतिष आदि पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवायें।

पता —

धर्मसन प्रकाशन

२५९६, नई सड़क, दिल्ली-६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

—: दुनियाँ के कुछ देशों के स्टैं० टा० का भारतीय स्टैं० टा० से अन्तर :—

देश या प्रदेश के आगे लिखे घं० मि० को उस देश या प्रदेश के स्टैं० टा० में धन (+) ऋण (—) चिह्न के विपरीत घटाने या जोड़ने से उस समय का भा० स्टैं० टा० ज्ञात हो जायेगा।

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर
	घं. मि.
ग्रदन	— २।३०
अफगानिस्तान	— १।००
अर्जेण्टाइना	— ८।३०
आस्ट्रेलिया कैपिटल टैरिटरी, विक्टोरिया, न्यू साऊथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया	+ ४।३०
साऊथ आस्ट्रेलिया, नार्दन टैरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया	+ ४। ०
प. आस्ट्रेलिया	+ २।३०
आस्ट्रिया	— ४।३०
बेलिजियम	— ४।३०
बर्मा	+ १। ०
कनाडा	
न्यू फाउण्ड लैण्ड	— ६। ०*
एटलांटिक टाईम (A.T.)	— ६।३०*
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैन्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०*
पैसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
सिलोन	०। ०
चीन	+ २।३०
कोलम्बिया	—१०।३०
क्यूबा	-- १०।३०*
चैकोस्लावाकिया	— ४।३०
डेन्मार्क	— ४।३०
इजिप्ट (मिस्र)	— ३।३०*
इथोपिया	— २।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर
	घं. मि.
फिन्लैण्ड	— ३।३०
फ्रांस	— ४।३०
जर्मनी	— ४।३०
घाना	— ५।३०
ग्रीस	— ३।३०
हांग कांग	+ २।३०
हंगरी	— ४।३०
इन्डोनेशिया	
सुमात्रा, जावा, बाली, बांगका, बिलीटान	+ १।३०
बोर्नियो, सेलीबिस, टिमोर, फ्लोर्स	+ २।३०
आरु, केई, टनिमबर, मोलुक्कस प० इरियन	+ ३।३०
ईरान (पर्सिया)	— २। ०
इराक	— २।३०
आयरलैंड (उ.)	-- ५।३०*
इजरायल	— ३।३०
इटली, सिसिली	— ४।३०*
जापान	+ ३।३०
जार्डन	— ३।३०
केन्या	— २।३०
कोरिया	+ ३।३०
कुवैत	— २।३०
मलयेशिया गणतन्त्र	
मलाया	+ २। ०
सरवक	+ २।३०
मारिशस	— १।३०

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं. टा. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर
	घं. मि.
मैक्सिको	
सैण्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२।३०
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०
नीदर लैण्ड्स (हालैण्ड)	— ४।३०
न्यूजीलैण्ड	+ ६।३०
पाकिस्तान	— ०।३०
बंगला देश	+ ०।३०
फिलिप्पाइन गणतन्त्र	+ २।३०
पोलैण्ड	— ४।३०*
पुर्त्तगाल	— ४।३०*
राडेशिया, न्यासालैण्ड	— ३।३०
रोमानिया	— ३।३०
सऊदी अरब	
जेद्दा	— २।३०
धहरान, कतर	— १।३०
सिंगापुर	+ २। ०
सोमाली लैण्ड, सोमालिया	— २।३०
साऊथ अफ्रीकन गणतन्त्र	— ३।३०
स्पेन	— ४।३०
सूडान	— ३।३०
स्वीडन	— ४।३०
स्विट्जरलैण्ड	— ४।३०
सीरिया	— ३।३०*
थाईलैण्ड (स्याम)	+ १।३०
टर्की	— ३।३०*
युगांडा	— २।३०
इंग्लैण्ड	— ५।३०*
अमेरिका (U.S.A.)	
ईस्टर्न टाईम (E.T.)	—१०।३०*
सैण्ट्रल टाईम (C.T.)	—११।३०*

देश तथा प्रदेश	देश या प्रदेश के स्टैं.टा. का भा. स्टैं.टा. से अन्तर
	घं. मि.
अमेरिका	
माउण्टेन टाईम (M.T.)	—१२.३०*
पेसिफिक टाईम (P.T.)	—१३।३०*
रूस (U.S.S.R.)	
मास्को,	— २।३०
'ब्लैक सी, से कैस्पियन सी' तक	— १।३०
स्वेर्दलोवस्क, प. कजक	— ०।३०
ओम्स्क, पू. कजक	+ ०।३०
क्रस्नोयार्स्क न्यू साईबेरिया	+ १।३०
इर्कुत्स्क	+ २।३०
याकुत्स्क, चितिन्स्क द. सकलिन	+ ३।३०
खबरोव्स्क, ब्लादिवोस्तक उ. सखलिन	+ ४।३०
मगदन	+ ५।३०
पेत्रोपव्लोव्स्क	+ ६।३०
वियतनाम	
उत्तरी	+ १।३०
दक्षिणी	+ २।३०
वेनेजुएला	— ६।३०
युगोस्लाविया	— ४।३०
नेपाल	०। ०
सिक्कम	०। ०
भूटान	०। ०

* इन स्थलों पर Summer time (ग्रीष्मकालीन समय) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।
जिन देशों में Summer time प्रचलित है वहां गर्मी के दिनों में घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती हैं। इसी 'एक घण्टा आगे किये गए' टाईम को Summer time कहा जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं श्रम साध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीय-काल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश-रेखांश की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए किंच भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्न सारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्न सारणी का ही प्रयोग होता है। आगे १२५ पृष्ठ पर हमने साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्ट-कालिक सूर्य की जरूरत नहीं होती, जब कि प्राचीन विधि में इन सबकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न-साधन विधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदय काल ज्ञात कीजिए। सूर्योदय काल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्ट कालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पञ्चांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कीजिए। अब इस अक्षांश वाली लग्न सारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए :—

आगे २९, ३०, ३१ अक्षांशों की तीन लग्न सारणियां दी गई हैं जो दिल्ली, पंजाब तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में इष्ट कालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को सहायक सारणी (जो आगे दी गई है) के बाईं ओर पहले कालम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाइन में जो पल लिखे हों उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्ट काल के घड़ी पल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी पल" यदि ६० घड़ी से अधिक हों तो उनमें से ६० घड़ी घटाकर शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी पलों" के बराबर (बराबर न मिले तो उनसे कुछ कम) घड़ी पल लग्न सारणी में ढूंढिए जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के बाईं ओर लग्न सारणी के पहले कालम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी पलों का "सारणीस्थ घड़ी पलों" से अन्तर कीजिए। इसे **"सारणीस्थ अन्तर"** कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी पलों" और "अभीष्ट घड़ी पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाइन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला-विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ दें। अब इसमें आगे दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए—वि० सं० २०२९ के वैशाख प्रविष्टे ३ को ५८ घ० ४५ प० इष्ट पर शिमला (हि० प्र०) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा०, २ अंश ३७ क० ४७ वि० है। शिमला के अक्षांश ३१ अं० ६ क० (उत्तर) हैं, अतः ३१ अक्षांश वाली लग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० (मेष) राशि के आगे २ अंश के नीचे २ घ० ५५ प० हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में २ घ० ५५ प० के दाईं ओर ३ अंश के नीचे ३ घ० २ प० लिखे हैं। इनका २ घ० ५५ प० से अन्तर ७ पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कालम में लिखे हुए ७ पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की ३७ क० ४७ वि० नहीं मिली। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर ३४ क० १७ वि० देखें जिनके बिल्कुल ऊपर ४ पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे २ घ० ५५ प० में जोड़ा और इष्ट काल के घ० प० भी इसमें जोड़े तो ६१ घ० ४४ प० (६० घड़ी घटाने पर १ घ० ४४ प०) 'अभीष्ट घड़ी पल' हुए। लग्न सारणी में 'अभीष्ट घड़ी पल' १ घ० ४४ प० नहीं हैं, अतः इस से कुछ कम १ घ० ४० प० सारणी में देखे जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कालम में ११ राशि और बिल्कुल ऊपर की लाइन में २१ अंश लिखे हैं। इन ११ रा० २१ अं० को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी पलों" (१ घ० ४० प०) के दाईं ओर २२ अंश के नीचे १ घ० ४६ प० का १ घ० ४० प० से अन्तर ६ प० "सारणीस्थ अन्तर" है। "अभीष्ट घड़ी पल" (१ घ० ४४ प०) और "सारणीस्थ घड़ी पल" (१ घ० ४० प०) का अन्तर ४ पल है। "सहायक सारणी" की ऊपर वाली लाइन में लिखे गए ४ पल के नीचे "सारणीस्थ अन्तर के बराबर ६ पल के आगे ४० क० ० वि० लिखा है। इन्हें ११ रा० २१ अं० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि० सं० २०२९ के आगे +१ कला लिखा है। इसे चिह्नानुसार ११ रा० २१ अं० ४० क० ० वि० में जोड़ने पर ११ रा० २१ अं० ४१ क० ० वि० निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्न साधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्य स्पष्ट जानने की आवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सबकी आवश्यकता रहती है।

दशम साधन विधि—इष्ट काल के घ० प० में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिन-मान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह 'नतकाल' होगा। नतकाल के घ० प० को इष्ट के घ० प० समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्न सारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए, जैसे कि ऊपर लग्न सारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। **दशम लग्न सारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दशम लग्न साधन का उदाहरणः-वि. सं २०२९ के वैशाख पविष्टे ३ को शिमला में ५८ घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५९ प. हैं अतः दिनार्ध १६ घ. ० प हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प० में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ.४५ प. नतकाल हुआ. जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है।

दशमलग्न सारिणी में स्पष्ट सूर्य की० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारिणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर(३ अं के नीचे)४ घ. ६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर -३६ क. ० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलो को अलग लिखे ३घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा नां ४६ घ. ४७ प "अभीष्ट घड़ी पल" हुए। "दशम लग्न सारणी" में इन "अभीष्ट घटी पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ "सारणीस्थ घ. प." धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं अतः ८ रा.१६ अ.को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। "सारणीस्थ घड़ी पल" ४६।४२ और "अभीष्ट घड़ी पल" ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० प. के आगे ५ प के नीचे ३० क. ० वि. मिलीं. इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० विं. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२९ के आगे दिया गया. अयनांश संस्कार + १ क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अ. ३१ क. ० विं. निरयण दशम लग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल →↓	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	क.वि.	क.वि.	क वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क वि.	क.वि.	क.वि.	क वि.	क वि.	क.वि.
६	१०। ०	२०। ०	३०। ०	४०। ०	५०। ०	६०। ०							
७	८।३४	१७। ९	२५।४३	३४।१७	४२।५१	५१।२६	६०। ०						
८	७।३०	१५। ०	२२।३०	३०। ०	३७।३०	४५। ०	५२।३०	६०। ०					
९	६।४०	१३।२०	२०। ०	२६।४०	३३।२०	४०। ०	४६।४०	५३।२०	६०। ०				
१०	६। ०	१२। ०	१८। ०	२४। ०	३०। ०	३६। ०	४२। ०	४८। ०	५४। ०	६०। ०			
११	५।२७	१०।५५	१६।२२	२१।४९	२७।१६	३२।४४	३८।११	४३।३८	४९। ५	५४।३३	६०। ०		
१२	५। ०	१०। ०	१५। ०	२०। ०	२५। ०	३०। ०	३५। ०	४०। ०	४५। ०	५०। ०	५५। ०	६०। ०	
१३	४।३७	९।१४	१३।५१	१८।२८	२३। ५	२७।४२	३२।१९	३६।५६	४१।३३	४६।१०	५०।४७	५५।२३	६०। ०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला	वि. संवत्	संस्कार कला
२०१०	+१७	२०१६	+१२	२०२२	+७	२०२८	+२	२०३४	—३	२०४०	—८
२०११	+१७	२०१७	+१२	२०२३	+७	२०२९	+१	२०३५	—४	२०४१	—९
२०१२	+१६	२०१८	+११	२०२४	+६	२०३०	+१	२०३६	—४	२०४२	—९
१०१३	+१५	२०१९	+१०	२०२५	+५	२०३१	०	२०३७	—५	२०४३	—१०
२०१४	+१४	२०२०	+९	२०२६	+४	२०३२	—१	२०३८	—६	२०४४	—११
२०१५	+१३	२०२१	+८	२०२७	+३	२०३३	—२	२०३९	—७	२०४५	—१२

दुनिया के किसी भी नगर में सूक्ष्म लग्न-दशम जानने के लिए हमारी "गणक मार्त्तण्ड" पुस्तक की प्रतीक्षा करें जो शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। इस पुस्तक में दुनिया के सभी प्रसिद्ध नगरों(लगभग ७ हजार नगरों) के अक्षांश रेखांश तथा अन्य अनेक लग्नोपयोगी सारणियों के साथ सभी अक्षांशों की सूक्ष्मतम शुद्ध लग्न सारणियां दी गई है, जिनकी मदद से लग्न आवि सभी भाव बिना गुणा भाग के जुबानी ही तुरन्त जाने जा सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)

(पलभा ६।३९।६)

अंश–		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष ०	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४
वृष १	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	६	१६	२६	३६	४६	५६	६
मिथुन २	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५
सिंह ४	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
धनु ८	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१

अंश–		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष १	घ.	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मिथुन २	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
कर्क ३	घ.	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिंह ४	घ.	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	प.	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
कन्या ५	घ.	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तुला ६	घ.	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृश्चिक ७	घ.	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु ८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
मकर ९	घ.	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कुम्भ १०	घ.	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मीन ११	घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार के, जीन्द, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)

(पलभा ६।५५।४२)

अंश–		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष ०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
वृष १	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६
मिथुन २	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७
सिंह ४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३
	प.	२३	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
धनु ८	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९

अंश–		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष १	घ.	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मिथुन २	घ.	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
कर्क ३	घ.	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिंह ४	घ.	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
कन्या ५	घ.	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तुला ६	घ.	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२३
वृश्चिक ७	घ.	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	[illegible]	४६
	प.	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	[illegible]	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु ८	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
मकर ९	घ.	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कुम्भ १०	घ.	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मीन ११	घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, मथा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)
(पलभा ७।१२।१७)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष १	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन २	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क ३	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह ४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु ८	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष १	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन २	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क ३	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१५
सिंह ४	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या ५	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला ६	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक ७	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु ८	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर ९	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१५
कुम्भ १०	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि दे रहे हैं। स्पष्ट-सूर्य द्वारा लग्न स्पष्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' (*Sidereal Time*) की पद्धति को अपनाया है। यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"—इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक-विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट करने की सर्व-साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं।

विधि :— सां.का. (साम्पातिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते हैं, तैयार करें—

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टॅण्डर्ड अन्तर (+ या—)

} ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष—यदि "अक्षांशादि सारणी" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है।

ध्यान रहे—भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही हैं।

(४) **अभीष्ट नगर का स्थानीय मध्यमकाल**—जिस समय लग्नस्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टॅण्डर्ड-टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो वहां) के स्टॅण्डर्ड-अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "स्थानीयमध्यमकाल" बन जाता है। '+' यह चिन्ह जोड़ने की एवं '—' यह चिन्ह घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है।

जैसे – चण्डीगढ़ में दोपहर के १२ घं. ५७ मि. (भा. स्टॅं. टा.) पर स्थानीयमध्यमकाल जानने के लिए हम (भा. स्टॅं. टा.) में से चण्डीगढ़ का स्टॅण्डर्ड अन्तर—२२ मिनट ३२ सैकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सैं. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१ सितं. १९४२ ई. से १५ अक्तू. १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थीं। अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टॅण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे—सन् १९४४ की २० अग. को कोई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन के १२ बजकर ४५ मि. पर पैदा हुआ। इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्मकाल भा.स्टॅं.टा. के अनुसार ११ घं. ४५ मि. मानना होगा।

(५) **अभीष्ट तारीख का अयनांश**—आगे दो [नं. (१) और नं. (२)] अयनांश-सारणियां दी गई हैं। अयनांशसारणी नं. (१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखे अंशादि अयनांश लें और 'अयनांशसारणी' सारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें;—यह अयनांश होगा।

जैसे—१५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए "**अयनांशसारणी**" नं. (१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३ अं. २५ क. २६ वि. प्राप्त किया। इसमें "अयनांशसारणी" नं. (२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं. २५ क. ५३ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ।

(६) **इष्टकालिक साम्पातिककाल**—आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गए हैं। इनके आधार पर 'इष्टकालिक साम्पातिककाल' इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है —

सा. का. कोष्टक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीपईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें। इसमें सा. का. कोष्ठक नं. (३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठाकर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार मिले सा. का. के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा-मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में **स्थानीयमध्यमकाल** के घण्टा-मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं. (४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का. बन जाएगा। इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण—यहांहम १५ जुलाई १९६९ को भा.स्टॅं.टा. के अनुसार प्रातः १० घं. ४५ मि पर चम्बा (हि.प्र.) में सां.का. स्पष्ट करेंगे। अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १० क. (पूर्व) एवं स्टॅं. अन्तर—२५ मि. २० सैं. है। स्टॅण्डर्डअन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे ४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ। सां.का. कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ ई. का सां.का. (६ घं. ४१ मि. २ सैं.) लिया। इससे कोष्ठक नं. (२) से लिया गया १५ जुला. का सां.का. (१२ घं. ४८ मि.४९ सैं.) जोड़ा तो १९ घं. २९ मि. ५१ सैं. हुआ। चम्बा के रेखांश ७६ अं. १० क. के लिए कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार तो ० है। अब १९ घं. २९ मि. ५१ सैं. में चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १० घं. १९ मि. ४० सैं. जोड़ा तो २९ घं. ४९ मि. ३१ सैं. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्ययकाल के १० घं. २० मि. से उठाए गए १ मि. ४२ सैं. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ सैं. हुए। यहां घण्टे २४ से अधिक हैं अतः २४ घं. घटाएं तो ५ घं ५१ मि. १३ सैं. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन तीन बातों को भी ध्यान में रखें :—

[१] यदि धन (+) चिह्न वाले स्टॅण्डर्डअन्तर (स्टॅं. अं.) के मिनटों को स्टॅण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल ४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में २४ मि. जोड़ कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें। जैसे—कलकत्ता में २ जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बजकर ५५ मि.) भा.स्टॅं.टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है। कलकत्ता का रेखांश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८८ अं. २४ क, (पूर्व) और स्टैं अन्तर + २३ मि. ३६ सै. है । स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए २३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि, ३६ सै. हुए । यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ सै. स्थानीय-मध्यमकाल हुआ । अब सां.का. बनाने के लिए कोष्ठक नं. (१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ सै. में कोष्ठक नं. (२) से लिए गए २ जन के ० घं. ३ मि. ५७ सै. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ सै. हुए । इसमें कोष्ठक नं० (३) से कलकत्ता के रेखांश ८८ से प्राप्त—८ सै. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ सै. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं, २ मि. ३७ सै. हुए । इसमें कोष्ठक नं. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ सै. जोड़ने पर ७ घं. २ मि. ४० सै. हुए । क्योंकि स्टैं. टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० सै. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. का प्रयोग में लाइए ।

[२] सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें, कि यदि स्टैं. टा. से (—) ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सां. का. कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे—जयपुर में १५ मार्च १९७० को ० घं. १५ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टैं. अं.—२६ मि. ३२ सै. है । यहां स्टैं.टा. के घं मि. से स्टैं. अं. ज्यादा है, अतः स्टैं.टा. में २४ घं जोड़ कर स्टैं. अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ सै. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं. (१) से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ सै. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ सै. जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ सै. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. (३) वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ सै. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ सै. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था, अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (४) का प्रयोग हम नहीं करेंगे । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११ घं. १६ मि. २२ सै. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए ।

[३] जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं—लीपइयर (२९ फरवरी वाले साल) में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" को प्रयोग में लाना चाहिए । जैसे—मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है । "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१)" में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ सै. मिले । क्योंकि हमारा सन् लीपइयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च) फरवरी के बाद की भी है, इसलिए "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं. ५१ मि. ४५ सै.) ही लेंगे और इन्हें ही ६ घं. ३७ मि. १७ सै. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे—यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो "साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)" से १० फर. के घं. मि. सै. ही उठाने होंगे ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि :—

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश-कला लिखी है, उन्हें अलग नोट कर लें । क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिलें, और यह भी अधिकतर सम्भव है कि आपको अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम) सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम (अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखी लग्न की अंश-कलाएं नोट करें—यह "स्थूलतम लग्न" है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३० मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) । ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ देने से "स्थूललग्न" बन जाएगा । अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह "३ अक्षांशों की लग्नगति" ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें "३ अक्षांशों की लग्नगति" के धन-ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ठ हो जाएगा ।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :—लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशम-लग्न) दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात्—दशम स्पष्ट करने के लिए अक्षांशों की जरूरत नहीं होती ।) अभीष्ट सां. का. के घं.मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न) की अंश-कलाएं उठा लें । यह "स्थूलदशमलग्न" है । सां. का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएँ मिलेंगी । इन्हें 'स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा ।

लग्नसाधन का उदाहरण :—चम्बा (हि. प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सां. का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. हैं । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि.के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह "स्थूलतम लग्न" है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि.के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का. ६ घं ० मि. के आगे १८० अं. ० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६ अं. २६.क. (=३८६ क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सां. का. के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मि० की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७०क. (=४ अं.३०क.) मिलीं । इन्हें "स्थूलतममलग्न" में जोड़ने पर १७८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिए) [भाग १ थ]

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	अक्षांश १७° (उ.)	अक्षांश २०° (उ.)	साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८° (उ.)	अक्षांश ११° (उ.)	अक्षांश १४° (उ.)	आक्षांश २६° (उ.)	अक्षांश ३०° (उ.)
घ मि	दशम अं. क	लग्न अं. क	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	घं. मि.	दशम अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.	लग्न अं. क.
०।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४	१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६
०।३०	८।१०	१००।३	१०१।१५	१०२।२७	१०३।४१	१०४।५७	१२।३०	१८८।१०	२७३।४१	२७२।२७	२७१।११	२६९।५३	२६८।३३
१।०	१६।१७	१०६।५४	१०८।३	१०९।१३	११०।२४	१११।३६	१३।०	१९६।१७	२८०।३९	२७९।२५	२७८।९	२७६।५०	२७५।२९
१।३०	२४।१८	११३।४७	११४।५३	११५।५९	११७।६	११८।१४	१३।३०	२०४।१८	२८७।४३	२८६।३०	२८५।१५	२८३।५७	२८२।३५
२।०	३२।११	१२०।४३	१२१।४५	१२२।४७	१२३।५०	१२४।५२	१४।०	२१२।११	२९४।५७	२९३।४६	२९२।३३	२९१।१६	२८९।५५
२।३०	३९।५५	१२७।४५	१२८।४३	१२९।४०	१३०।३६	१३१।३३	१४।३०	२१९।५५	३०२।२१	३०१।१४	३००।४	२९८।५०	२९७।३२
३।०	४७।२८	१३४।५४	१३५।४५	१३६।३६	१३७।२७	१३८।१८	१५।०	२२७।२८	३०९।५८	३०८।५६	३०७।५१	३०६।४२	३०५।२८
३।३०	५४।५१	१४२।१०	१४२।५५	१४३।३९	१४४।२२	१४५।६	१५।३०	२३४।५१	३१७।४९	३१६।५४	३१५।५५	३१४।५३	३१३।४५
४।०	६२।५	१४९।३३	१५०।१०	१५०।४६	१५१।२३	१५१।५८	१६।०	२४२।५	३२५।५४	३२५।७	३२४।१७	३२३।२३	३२२।२५
४।३०	६९।१२	१५७।३	१५७।३१	१५८।०	१५८।२७	१५८।५५	१६।३०	२४९।१२	३३४।१२	३३३।३५	३३२।५५	३३२।१२	३३१।२६
५।०	७६।११	१६४।३८	१६४।५८	१६५।१७	१६५।३६	१६५।५४	१७।०	२५६।११	३४२।४१	३४२।१५	३४१।४८	३४१।१८	३४०।४५
५।३०	८३।७	१७२।१८	१७२।२८	१७२।३८	१७२।४७	१७२।५७	१७।३०	२६३।७	३५१।१८	३५१।५	३५०।५१	३५०।३६	३५०।१९
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
६।३०	९६।५३	१८७।४२	१८७।३२	१८७।२२	१८७।१३	१८७।३	१८।३०	२७६।५३	८।४१	८।५५	९।९	९।२४	९।४१
७।०	१०३।४९	१९५।२२	१९५।२	१९४।४३	१९४।२४	१९४।६	१९।०	२८३।४९	१७।१९	१७।४५	१८।१२	१८।४२	१९।१५
७।३०	११०।४८	२०२।५७	२०२।२९	२०२।०	२०१।३३	२०१।५	१९।३०	२९०।४८	२५।४८	२६।२५	२७।५	२७।४८	२८।३४
८।०	११७।५५	२१०।२७	२०९।५०	२०९।१४	२०८।३७	२०८।२	२०।०	२९७।५५	३४।६	३४।५३	३५।४३	३६।३७	३७।३५
८।३०	१२५।९	२१७।५०	२१७।५	२१६।२१	२१५।३८	२१४।५४	२०।३०	३०५।९	४२।११	४३।६	४४।५	४५।७	४६।१४
९।०	१३२।३२	२२५।६	२२४।१५	२२३।२४	२२२।३३	२२१।४२	२१।०	३१२।३२	५०।२	५१।४	५२।९	५३।१८	५४।३२
९।३०	१४०।५	२३२।१५	२३१।१७	२३०।२०	२२९।२४	२२८।२७	२१।३०	३२०।५	५७।३९	५८।४६	५९।५६	६१।१०	६२।२८
१०।०	१४७।४९	२३९।१७	२३८।१५	२३७।१३	२३६।१०	२३५।८	२२।०	३२७।४९	६५।३	६६।१४	६७।२७	६८।४४	७०।५
१०।३०	१५५।४२	२४६।१३	२४५।७	२४४।१	२४२।५४	२४१।४६	२२।३०	३३५।४२	७२।१७	७३।३०	७४।४५	७६।३	७७।२५
११।०	१६३।४३	२५३।६	२५१।५७	२५०।४७	२४९।३६	२४८।२४	२३।०	३४३।४३	७९।२१	८०।३५	८१।५१	८३।१०	८४।३१
११।३०	१७१।५०	२५९।५७	२५८।४५	२५७।३३	२५६।१९	२५५।३	२३।३०	३५१।५०	८६।१९	८७।३३	८८।४९	९०।७	९१।२७
१२।०	१८०।०	२६६।४८	२६५।३५	२६४।२०	२६३।४	२६१।४६	२४।०	०।०	९३।१२	९४।२५	९५।४०	९६।५६	९८।१४

अं ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ। अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क हुआ. यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है, अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २६ क. का अन्तर २६ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गतिकलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्नगति धन है अतः इसे "स्थूललग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायनलग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा. ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्नसाधन का उदाहरण :— १५ जुला. १९६६ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर ही चम्बा (हि. प्र.) में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां. का. ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे दशमलग्न ८३ अं ७ क. है, यह "स्थूलदशमलग्न" है। सारणी में सां. का. ५ घं ३० मि. और ६ घं. ० मि. के आगे दशमलग्न क्रमशः ८३ अं. ७ क एवं ९० अं. ० क. है। इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.—५ घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४ अं. ४९ क.) मिलीं। इन्हें "स्थूल दशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं ५६ क. सायनदशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क घटा देने पर ६४ अं. ३० क. (=२ रा. ४ अं. ३० क.) इष्टकालिक निरयण दशमलग्न हुआ।

ध्यान दें :—यहां हमने सां. का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझ कर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में सम्भव नहीं है; इस तथ्य का विस्तारपूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है—वहां पढ़ें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्नसारणी (पूरे भारत के लिये) [भाग २ य]

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थानों के लिए दशम घं. फ.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न घं. फ.
०।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४
०।३०	८।६	१०६।१४	१०७।३४	१०८।५७	११०।२४	१११।५३
१।०	१६।१७	११२।४९	११४।४	११५।२२	११६।४३	११८।७
१।३०	२४।१८	११९।२२	१२०।३३	१२१।४५	१२३।०	१२४।१७
२।०	३२।११	१२५।५६	१२७।०	१२८।७	१२९।१७	१३०।२५
२।३०	३९।५५	१३२।३१	१३३।२९	१३४।२९	१३५।३०	१३६।३२
३।०	४७।२८	१३९।९	१४०।०	१४०।५२	१४१।४५	१४२।४०
३।३०	५४।५१	१४५।५०	१४६।३४	१४७।१८	१४८।४	१४८।५०
४।०	६२।५	१५२।३४	१५३।१०	१५३।४७	१५४।२४	१५५।१
४।३०	६९।१२	१५९।२२	१५९।५०	१६०।१७	१६०।४६	१६१।१४
५।०	७६।११	१६६।१३	१६६।३२	१६६।५०	१६७।९	१६७।२८
५।३०	८३।७	१७३।६	१७३।१५	१७३।२५	१७३।३४	१७३।४४
६।०	९०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०	१८०।०
६।३०	९६।५३	१८६।५४	१८६।४५	१८६।३५	१८६।२६	१८६।१६
७।०	१०३।४९	१९३।४७	१९३।२८	१९३।१०	१९२।५१	१९२।३२
७।३०	११०।४८	२००।३८	२००।१०	१९९।४३	१९९।१४	१९८।४६
८।०	११७।५५	२०७।२६	२०६।५०	२०६।१३	२०५।३६	२०४।५९
८।३०	१२५।९	२१४।१०	२१३।२६	२१२।४२	२११।५६	२११।१०
९।०	१३२।३२	२२०।५१	२२०।०	२१९।८	२१८।१५	२१७।२०
९।३०	१४०।५	२२७।२९	२२६।३१	२२५।३१	२२४।३०	२२३।२८
१०।०	१४७।४९	२३४।४	२३३।०	२३१।५३	२३०।४५	२२९।३५
१०।३०	१५५।४२	२४०।३८	२३९।२७	२३८।१५	२३७।०	२३५।४१
११।०	१६३।४१	२४७।११	२४५।५६	२४४।३८	२४३।१७	२४१।५३
११।३०	१७१।५०	२५३।४६	२५२।२६	२५१।३	२४९।३६	२४८।७
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थानों के लिए दशम घं. फ.	अक्षांश २३° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश २६° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश २९° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश ३२° (उ.) लग्न घं. फ.	अक्षांश ३५° (उ.) लग्न घं. फ.
१२।०	१८०।०	२६०।२५	२५९।१	२५७।३४	२५६।३	२५४।२६
१२।३०	१८८।१०	२६७।१०	२६५।४३	२६४।१२	२६२।३१	२६०।५४
१३।०	१९६।१७	२७४।३	२७२।३४	२७१।०	२६९।२१	२६७।३३
१३।३०	२०४।१८	२८१।९	२७९।३९	२७८।२	२७६।११	२७४।२९
१४।०	२१२।११	२८८।३०	२८६।५९	२८५।२२	२८३।३६	२८१।४५
१४।३०	२१९।५५	२९६।९	२९४।४०	२९३।४	२९१।२०	२८९।२६
१५।०	२२७।२८	३०४।१०	३०२।४४	३०१।१२	२९९।२८	२९७।३८
१५।३०	२३४।५१	३१२।३३	३११।१५	३०९।४८	३०८।१३	३०६।२५
१६।०	२४२।५	३२१।२२	३२०।१३	३१८।५६	३१७।३०	३१५।५४
१६।३०	२४९।१२	३३०।३५	३२९।३९	३२८।३६	३२७।२५	३२६।४
१७।०	२५६।११	३४०।९	३३९।३०	३३८।४५	३३७।५४	३३६।५५
१७।३०	२६३।७	३५०।०	३४९।४०	३४९।१६	३४८।४९	३४८।१९
१८।०	२७०।०	०।०	०।०	०।०	०।०	०।०
१८।३०	२७६।५३	१०।०	१०।२०	१०।४४	११।११	११।४१
१९।०	२८३।४९	१९।५१	२०।३०	२१।१५	२२।६	२३।४
१९।३०	२९०।४८	२९।२५	३०।२१	३१।२४	३२।३५	३३।५५
२०।०	२९७।५५	३८।३८	३९।४७	४१।४	४२।३०	४४।१
२०।३०	३०५।९	४७।२७	४८।४५	५०।१२	५१।४७	५३।३३
२१।०	३१२।३२	५५।५०	५७।१९	५८।४८	६०।३२	६२।२९
२१।३०	३२०।५	६३।५१	६५।२०	६६।५६	६८।४०	७०।३४
२२।०	३२७।४९	७१।३०	७३।११	७४।३८	७६।२४	७८।१५
२२।३०	३३५।४२	७८।५१	८०।२१	८१।५८	८३।४१	८५।३१
२३।०	३४३।४१	८५।५६	८७।२६	८९।०	९०।३९	९२।२६
२३।३०	३५१।५०	९२।५०	९४।१७	९५।४८	९७।२४	९९।६
२४।०	०।०	९९।३५	१००।५९	१०२।२६	१०३।५७	१०५।३४

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. १.

मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	मन्	सां. का. घं. मि. सै.	सन्	सां. का. घं. मि. सै.
१९३६	६।३७।४	१९४३	६।३८।१५	१९५०	६।३९।२७	१९५७	६।४०।४०	१९६४	६।३७।५६	१९७१	६।३९।७	१९७८	६।४०।१९	१९८५	६।४१।३२
१९३७	६।४०।१	१९४४	६।३७।१७	१९५१	६।३८।३०	१९५८	६।३९।४३	१९६५	६।४०।५५	१९७२	६।३८।१०	१९७९	६।३९।२२	१९८६	६।४०।३५
१९३८	६।३९।६	१९४५	६।४०।१६	१९५२	६।३७।३३	१९५९	६।३८।४५	१९६६	६।३९।५७	१९७३	६।४१।१०	१९८०	६।३८।२४	१९८७	६।३९।३८
१९३९	६।३८।८	१९४६	६।३९।१९	१९५३	६।४०।३३	१९६०	६।३७।४७	१९६७	६।३९।०	१९७४	६।४०।१२	१९८१	६।४१।२३	१९८८	६।३८।४०
१९४०	६।३७।११	१९४७	६।३८।२२	१९५४	६।३९।३५	१९६१	६।४०।४७	१९६८	६।३८।३	१९७५	६।३९।१५	१९८२	६।४०।२६	१९८९	६।४१।३९
१९४१	६।४०।१०	१९४८	६।३७।२५	१९५५	६।३८।३८	१९६२	६।३९।५०	१९६९	६।४१।२	१९७६	६।३८।१७	१९८३	६।३९।२९	१९९०	६।४०।४१
१९४२	६।३९।१२	१९४९	६।४०।२५	१९५६	६।३७।४१	१९६३	६।३८।५३	१९७०	६।४०।५	१९७७	=।४१।१६	१९८४	६।३८।३२	१९९१	६।३९।४४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

*साम्पातिक काल कोष्ठक नं. २

ता	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर	ता.
↓	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	घं. मि. से.	↓
१	०।०।०	२।२।१३	३।५२।३७	५।५४।५०	७।५३।७	९।५५।२१	११।५३।३८	१३।५५।५०	१५।५८।४	१७।५६।२१	१९।५८।३४	२१।५६।५०	१
२	०।३।५७	२।६।९	३।५६।३३	५।५८।४७	७।५७।४	९।५९।१७	११।५७।३४	१३।५९।४७	१६।२।०	१८।०।१७	२०।२।३१	२२।०।४७	२
३	०।७।५३	२।१०।६	४।०।३०	६।२।४३	८।१।०	१०।३।१४	१२।१।३१	१४।३।४४	१६।५।५७	१८।४।१४	२०।६।२७	२२।४।४३	३
४	०।११।५०	२।१४।२	४।४।२६	६।६।४०	८।४।५७	१०।७।१०	१२।५।२७	१४।७।४०	१६।९।५३	१८।८।१	२०।१०।२४	२२।८।४०	४
५	०।१५।४६	२।१७।५९	४।८।२३	६।१०।३६	८।८।५३	१०।११।७	१२।९।२४	१४।११।३६	१६।१३।५०	१८।१२।७	२०।१४।२०	२२।१२।३६	५
६	०।१९।४३	२।२१।५५	४।१२।१९	६।१४।३३	८।१२।५०	१०।१५।३	१२।१३।२१	१४।१५।३३	१६।१७।४६	१८।१६।३	२०।१८।१७	२२।१६।३३	६
७	०।२३।३९	२।२५।५२	४।१६।१६	६।१८।२९	८।१६।४६	१०।१९।०	१२।१७।१७	१४।१९।२९	१६।२१।४३	१८।२०।०	२०।२२।१३	२२।२०।३०	७
८	०।२७।३६	२।२९।४८	४।२०।१२	६।२२।२६	८।२०।४३	१०।२२।५६	१२।२१।१४	१४।२३।२६	१६।२५।४०	१८।२३।५६	२०।२६।१०	२२।२४।२७	८
९	०।३१।३२	२।३३।४५	४।२४।९	६।२६।२२	८।२४।३९	१०।२६।५३	१२।२५।१०	१४।२७।२३	१६।२९।३७	१८।२७।५४	२०।३०।६	२२।२८।२३	९
१०	०।३५।२९	२।३७।४२	४।२८।५	६।३०।१९	८।२८।३६	१०।३०।४९	१२।२९।६	१४।३१।२०	१६।३३।३३	१८।३१।५०	२०।३४।३	२२।३२।२०	१०
११	०।३९।२५	२।४१।३९	४।३२।२	६।३४।१६	८।३२।३२	१०।३४।४६	१२।३३।३	१४।३५।१६	१६।३७।३०	१८।३५।४७	२०।३८।०	२२।३६।१६	११
१२	०।४३।२२	२।४५।३५	४।३५।५९	६।३८।१३	८।३६।२९	१०।३८।४२	१२।३६।५९	१४।३९।१३	१६।४१।२६	१८।३९।४३	२०।४१।५६	२२।४०।१३	१२
१३	०।४७।१८	२।४९।३२	४।३९।५६	६।४२।९	८।४०।२५	१०।४२।३९	१२।४०।५६	१४।४३।९	१६।४५।२३	१८।४३।४०	२०।४५।५२	२२।४४।९	१३
१४	०।५१।१५	२।५३।२८	४।४३।५२	६।४६।६	८।४४।२२	१०।४६।३५	१२।४४।५२	१४।४७।६	१६।४९।१९	१८।४७।३७	२०।४९।४९	२२।४८।६	१४
१५	०।५५।१२	२।५७।२५	४।४७।४९	६।५०।२	८।४८।१८	१०।५०।३२	१२।४८।४९	१४।५१।२	१६।५३।१६	१८।५१।३३	२०।५३।४५	२२।५२।२	१५
१६	०।५९।८	३।१।२१	४।५१।४५	६।५३।५९	८।५२।१५	१०।५४।२८	१२।५२।४५	१४।५४।५९	१६।५७।१२	१८।५५।३०	२०।५७।४२	२२।५५।५९	१६
१७	१।३।४	३।५।१८	४।५५।४२	६।५७।५५	८।५६।११	१०।५८।२५	१२।५६।४२	१४।५८।५५	१७।१।९	१८।५९।२६	२१।१।३९	२२।५९।५६	१७
१८	१।७।१	३।९।१४	४।५९।३८	७।१।५२	९।०।८	११।२।२१	१३।०।३८	१५।२।५२	१७।५।५	१९।३।२२	२१।५।३६	२३।३।५३	१८
१९	१।१०।५७	३।१३।११	५।३।३५	७।५।४८	९।४।४	११।६।१८	१३।४।३५	१५।६।४८	१७।९।२	१९।७।१९	२१।९।३२	२३।७।४९	१९
२०	१।१४।५४	३।१७।८	५।७।३१	७।९।४५	९।८।१	११।१०।१५	१३।८।३२	१५।१०।४५	१७।१२।५८	१९।११।१५	२१।१३।२९	२३।११।४६	२०
२१	१।१८।५१	३।२१।५	५।११।२८	७।१३।४१	९।११।५८	११।१४।१२	१३।१२।२९	१५।१४।४१	१७।१६।५५	१९।१५।१२	२१।१७।२५	२३।१५।४२	२१
२२	१।२२।४८	३।२५।१	५।१५।२५	७।१७।३८	९।१५।५५	११।१८।८	१३।१६।२५	१५।१८।३८	१७।२०।५१	१९।१९।८	२१।२१।२२	२३।१९।३९	२२
२३	१।२६।४४	३।२८।५८	५।१९।२२	७।२१।३४	९।१९।५१	११।२२।५	१३।२०।२२	१५।२२।३४	१७।२४।४८	१९।२३।५	२१।२५।१८	२३।२३।३५	२३
२४	१।३०।४१	३।३२।५४	५।२३।१८	७।२५।३१	९।२३।४८	११।२६।१	१३।२४।१८	१५।२६।३१	१७।२८।४४	१९।२७।१	२१।२९।१५	२३।२७।३२	२४
२५	१।३४।३७	३।३६।५१	५।२७।१५	७।२९।२८	९।२७।४४	११।२९।५८	१३।२८।१५	१५।३०।२७	१७।३२।४१	१९।३०।५८	२१।३३।११	२३।३१।२८	२५
२६	१।३८।३४	३।४०।४७	५।३१।११	७।३३।२४	९।३१।४१	११।३३।५४	१३।३२।११	१५।३४।२४	१७।३६।३७	१९।३४।५४	२१।३७।८	२३।३५।२५	२६
२७	१।४२।३०	३।४४।४४	५।३५।८	७।३७।२०	९।३५।३७	११।३७।५१	१३।३६।८	१५।३८।२०	१७।४०।३४	१९।३८।५१	२१।४१।४	२३।३९।२१	२७
२८	१।४६।२७	३।४८।४०	५।३९।५	७।४१।१७	९।३९।३४	११।४१।४७	१३।४०।४	१५।४२।१७	१७।४४।३१	१९।४२।४८	२१।४५।१	२३।४३।१८	२८
२९	१।५०।२३	३।५२।३७	५।४३।१	७।४५।१३	९।४३।३०	११।४५।४४	१३।४४।१	१५।४६।१४	१७।४८।२८	१९।४६।४५	२१।४८।५७	२३।४७।१४	२९
३०	१।५४।२०		५।४६।५८	७।४९।१०	९।४७।२७	११।४९।४१	१३।४७।५७	१५।५०।११	१७।५२।२४	१९।५०।४१	२१।५२।५४	२३।५१।११	३०
३१	१।५८।१६		५।५०।५४		९।५१।२४		१३।५१।५४	१५।५४।७		१९।५४।३८		२३।५५।७	३१
		*लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं.२ को प्रयोग में लाइए।										२३।५९।३	३२

साम्पातिक काल कोष्ठक नं. ३

पूर्व रेखांश →	३०°	३६°	४२°	४८°	५४°	६०°	६६°	७२°	७८°	८४°	९०°	९६°	१०२°	१०८°
सां. का. संस्कार (सेकण्ड)	+३१	+२७	+२३	+१९	+१५	+११	+७	+३	—१	—५	—९	—१३	—१७	—२१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. ४

मि. →	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५
घं. ↓	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	०। ०	०। १	०। २	०। २	०। ३	०। ४	०। ५	०। ६	०। ७	०। ७	०। ८	०। ९
१	०।१०	०।११	०।११	०।१२	०।१३	०।१४	०।१५	०।१६	०।१६	०।१७	०।१८	०।१९
२	०।२०	०।२१	०।२१	०।२२	०।२३	०।२४	०।२५	०।२५	०।२६	०।२७	०।२८	०।२९
३	०।३०	०।३०	०।३१	०।३२	०।३३	०।३४	०।३४	०।३५	०।३६	०।३७	०।३८	०।३९
४	०।३९	०।४०	०।४१	०।४२	०।४३	०।४४	०।४४	०।४५	०।४६	०।४७	०।४८	०।४८
५	०।४९	०।५०	०।५१	०।५२	०।५३	०।५३	०।५४	०।५५	०।५६	०।५७	०।५७	०।५८
६	०।५९	१। ०	१। १	१। २	१। २	१। ३	१। ४	१। ५	१। ६	१। ७	१। ७	१। ८
७	१। ९	१।१०	१।११	१।११	१।१२	१।१३	१।१४	१।१५	१।१६	१।१६	१।१७	१।१८
८	१।१९	१।२०	१।२०	१।२१	१।२२	१।२३	१।२४	१।२५	१।२५	१।२६	१।२७	१।२८
९	१।२९	१।३०	१।३०	१।३१	१।३२	१।३३	१।३४	१।३४	·३५	१।३६	१।३७	१।३८
१०	१।३९	१।३९	१।४०	१।४१	१।४२	१।४३	१।४३	१।४४	१।४५	१।४६	१।४७	१।४८
११	१।४८	१।४९	१।५०	१।५१	१।५२	१।५३	१।५३	१।५४	१।५५	१।५६	१।५७	१।५७
१२	१।५८	१।५९	२। ०	२। १	२। २	२। २	२। ३	२। ४	२। ५	२। ६	२। ६	२। ७
१३	२। ८	२। ९	२।१०	२।११	२।११	२।१२	२।१३	२।१४	२।१५	२।१६	२।१६	२।१७
१४	२।१८	२।१९	२।२०	२।२०	२।२१	२।२२	२।२३	२।२४	२।२५	२।२५	२।२६	२।२७
१५	२।२८	२।२९	२।२९	२।३०	२।३१	२।३२	२।३३	२।३४	२।३४	२।३५	२।३६	२।३७
१६	२।३८	२।३९	२।३९	२।४०	२।४१	२।४२	२।४३	२।४३	२।४४	२।४५	२।४६	२।४७
१७	२।४८	२।४८	२।४९	२।५०	२।५१	२।५२	२।५२	२।५३	२।५४	२।५५	२।५६	२।५७
१८	२।५७	२।५८	२।५९	३। ०	३। १	३। २	३। २	३। ३	३। ४	३। ५	३। ६	३। ६
१९	३। ७	३। ८	३। ९	३।१०	३।११	३।११	३।१२	३।१३	३।१४	३।१५	३।१५	३।१६
२०	३।१७	३।१८	३।१९	३।२०	३।२०	३।२१	३।२२	३।२३	३।२४	३।२५	३।२५	३।२६
२१	३।२७	३।२८	३।२९	३।२९	३।३०	३।३१	३।३२	३।३३	३।३४	३।३४	३।३५	३।३६
२२	३।३७	३।३८	३।३=	३।३९	३।४०	३।४१	३।४२	३।४३	३।४३	३।४४	३।४५	३।४६
२३	३।४७	३।४८	३।४८	३।४९	३।५०	३।५१	३।५२	३।५२	३।५३	३।५४	३।५५	३।५६

अयनांश सारणी नं. १

ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश	ईस्वी	अयनांश
सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.	सन्	अं. क. वि.
१९२१	२२।४५।१३	१९४५	२३। ५।१९	१९६९	२३।२५।२६
१९२२	२२।४६। ३	१९४६	२३। ६।१०	१९७०	२३।२६।१६
१९२३	२२।४६।५४	१९४७	२३। ७। ०	१९७१	२३।२७। ६
१९२४	२२।४७।४४	१९४८	२३। ७।५०	१९७२	२३।२७।५७
१९२५	२२।४८।३४	१९४९	२३। ८।४१	१९७३	२३।२८।४७
१९२६	२२।४९।२५	१९५०	२३। ९।३१	१९७४	२३।२९।३७
१९२७	२२।५०।१५	१९५१	२३।१०।२१	१९७५	२३।३०।२७
१९२८	२२।५१। ५	१९५२	२३।११।११	१९७६	२३।३१।१८
१९२९	२२।५१।५५	१९५३	२३।१२। २	१९७७	२३।३२। ८
१९३०	२२।५२।४५	१९५४	२३।१२।५२	१९७८	२३।३२।५८
१९३१	२२।५३।३६	१९५५	२३।१३।४२	१९७९	२३।३३।४८
१९३२	२२।५४।२६	१९५६	२३।१४।३२	१९८०	२३।३४।३९
१९३३	२२।५५।१६	१९५७	२३।१५।२३	१९८१	२३।३५।२९
१९३४	२२।५६। ७	१९५८	२३।१६।१३	१९८२	२३।३६।१९
१९३५	२२।५६।५७	१९५९	२३।१७। ३	१९८३	२३।३७। ९
१९३६	२२।५७।४७	१९६०	२३।१७।५३	१९८४	२३।३८। ०
१९३७	२२।५८।३७	१९६१	२३।१८।४४	१९८५	२३।३८।५०
१९३८	२२।५९।२८	१९६२	२३।१९।३४	१९८६	२३।३९।४०
१९३९	२३। ०।१८	१९६३	२३।२०।२४	१९८७	२३।४०।३०
१९४०	२३। १। ८	१९६४	२३।२१।१५	१९८८	२३।४१।२०
१९४१	२३। १।५८	१९६५	२३।२२। ५	१९८९	२३।४२।११
१९४२	२३। २।४९	१९६६	२३।२२।५५	१९९०	२३।४३। १
१९४३	२३। ३।३९	१९६७	२३।२३।४५		
१९४४	२३। ४।२९	१९६८	२३।२४।३६		

अयनांश सारणी न. २

तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख →	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	मितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नम्वर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

इस पंचाग में जो पहिले दैनिकलग्नसारणी दी गई है वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) बतलाती है। इसी सारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टै. टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :– दैनिक लग्नसारणी में अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्ति काल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे– मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्तिकाल जाना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्न सारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास के आगे, मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मि. में जोड़ने पर १२ घं. १९ मि. मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्ति काल (भा. स्टै. टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	—१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	—१	—१	—१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	—२	—५	—६	—६	—३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	—१	—४	—८	—११	—१२	—१२	—९	—६	—२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	—१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	—१	—४	—८	—११	—१३	—१३	—९	—६	—२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	—१	—८	—१३	—११	—४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	—२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	—३	—१०	—१५	—१३	—६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	—१	—२	—२	—२	—१	—१	०
कलकत्ता	—३२	—२८	—३०	—३९	—४५	—५३	—६०	—६५	—६३	—५६	—४७	—४०
कांगड़ा	०	—१	—१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	—६	—५	—६	—९	—१३	—१७	—२२	—२४	—२३	—१९	—१५	—११
काशी	—१५	—१३	—१४	—१८	—२४	—२९	—३४	—३७	—३६	—३१	—२५	—२०
कुरूक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	—१	—१	—१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	—५	—८	—७	—२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	—२	—४	—५	—५	—३	—१	+१
गुरदासपुर	+३	—२	—२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	—१८	—१७	—१८	—२१	—२५	—२९	—३४	—३६	—३५	—३१	—२७	—२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	—४	—९	—१३	—१६	—१५	—११	—६	—२
चम्बा	—१	—२	—१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	—३	—५	—४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	—१	—१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	—६	—११	—१६	—१९	—१८	—१३	—७	—२
दिल्ली	+३	+३	+३	+१	—१	—३	—५	—६	—६	—४	—२	०
देहरादून	—५	—५	—५	—५	—५	—५	—६	—६	—६	—५	—५	—५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	—७	—१७	—२६	—३१	—२९	—२०	—११	—२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+३	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चि. मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	—८	—७	—८	—९	—१०	—१२	—१३	—१४	—१४	—१२	—११	—९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	—२४	—२२	—२३	—२७	—३२	—३८	—४२	—४५	—४४	—३९	—३४	—२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	—११	—९	—१०	—१४	—१९	—२४	—२९	—३१	—३१	—२९	—२१	—१९
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	—४	—१०	—८	+३	+१४	+२५
बरेली	—६	—६	—६	—८	—१०	—१२	—१४	—१५	—१५	—१३	—११	—९
बंगलोर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	—१६	—३२	—४०	—३७	—२२	—६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	—२	—४	—६	—८	—९	—९	—७	—५	—३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	—२	—६	—९	—११	—११	—७	—४	०
भुवनेश्वर	—१८	—१४	—१६	—२४	—३४	—४४	—५४	—५८	—५७	—४८	—३८	—२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	—१	—८	—१५	—२०	—१८	—११	—४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	—११	—२७	—४३	—५१	—४८	—३३	—१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	—२	—६	—९	—१०	—१०	—७	—४	०
मण्डी (हि.प्र.)	—२	—३	—३	—२	—१	०	+२	+२	+२	+१	०	—१
मालेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	—१	०	—१	—२	—३	—५	—६	—७	—७	—५	—४	—२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	—२	—३	—३	—१	+१	+२
लखनऊ	—९	—८	—९	—१२	—१५	—१९	—२३	—२५	—२४	—२०	—१७	—१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	—२	—२	—२	—२	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—१	—२
श्रीनगर (क.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	—१	—१	—१	—२	—२	—३	—४	—४	—४	—३	—३	—२
हरिद्वार	—४	—४	—४	—५	—५	—६	—७	—७	—७	—६	—६	—५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	—५	—१७	—२९	—३५	—३३	—२२	—९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+२	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो.ह.श्रवण.				मृ.चि.ध			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र.	०	३	१८	च.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
च.	०	६	०	म.	०	७	०	रा.	१	०	१८
म.	०	४	६	रा.	१	६	०	वृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	वृ.	१	४	०	श.	१	१	९
वृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	च.	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ.स्वा.श.				पुन.वि.पू.भा.				पु.अनु.उ.भा.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	वृ.	२	१	१८	श.	३	०	३
वृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२
शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	च.	१	७	०
र.	०	१०	२४	च.	१	४	०	म.	१	१	९
च.	१	६	०	म.	०	११	६	रा.	२	१०	६
म.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	वृ.	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले.ज्ये.रे.				म.मू.अश्विनी				पू.फा.पू.षा.भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	च.	१	८	०
र.	०	१०	६	च.	०	७	०	म.	१	२	०
च.	१	५	०	म.	०	४	२७	रा.	३	०	०
म.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	वृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	वृ.	०	११	६	श.	३	२	०
वृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्रमिदम्

मङ्गला व. १			पिङ्गला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मङ्गल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहा
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			अ. श्ले. अनु. पू.भा.			म. मू. ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो. उ.फा. पू.षा.			ह. मृ. ह. उ.षा.			जन्म नक्षत्र
म	०	१०	पि	१	१०	धा	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	स.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा.उ.स.
पि	०	२०	धा	[illegible]	[illegible]	भ्रा	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ	५	०	उ	८	०	सि.	११	२०	म.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा	१	१०	भ	३	१०	उ	६	०	सि	९	१०	स.	१३	१०	म	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ	[illegible]	[illegible]	उ	[illegible]	[illegible]	सि.	७	०	स.	१०	२०	म	१	२०	पि	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ	[illegible]	[illegible]	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि	२	१०	स.	५	१०	मं.	१	०	पि	२	२०	धा	५	०	भ्रा.	८	०	भ	११	२०	उ.	१६	०	
स	२	२०	म	०	२०	पि	२	०	धा	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्त-भोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणाकर भोग के पलों से भाग देवें। लब्धांक वर्ष, होगा। फिर शेषांक को १२ से गुणा करे, और भभोग के पलों से भाग दें। लब्धांक मास होगा। फिर ३० से गुणाकर करके भभोग के पलों से भाग दें, लब्धांक दिन होगें। तत्पश्चात् ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी, होगी। फिर शेष को ६० से गुणा कर भभोग के पलों से भाग दे लब्धि पल होगी। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा प्राप्त होती है।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रु नाश:	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ:	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सत्यम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्यं	राजभी	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ	शोक:
मन्था	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ	कष्टम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष-प्रवेश सारिणी

[illegible]	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

[illegible]	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	५	०	१	२	४	५	[illegible]	[illegible]	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	५	२०	३६	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३६	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना—वेधसिद्ध वर्षमान सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान से ८।। पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्मवर्षमानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफल-साधन प्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष (गताब्द) जानें। स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञान हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हो तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना। **मुन्थानयनप्रकारः**—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जानें।

दशा दिनानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन है।

हर्ष स्थान बल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ६ बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वे, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते है।

स्वोच्च बल—सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बु. ३।६, गु. ९।१२।४, शु. २।७।१२, श. १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते है। पुरुष स्त्री बल स्त्रीग्रह (चं. बु. श श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू. मं. बु.) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के लग्नेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	म	श.	म.	गु.	चं.	दिनलग्नेश
गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रिलग्नेश

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पाचवें ९वें भाग का प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है। उनसे प्रेम होता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। फल—कार्य कठिनता एवं गुप्त भाव से सफल हो पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल—शत्रुता उत्पन्न करें, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं। ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं। फल—कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, राशयेश ५, दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियोंमें से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा ॥ कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा ॥ फल—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखमय श्रीवृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग— वर्ष कुण्डली मे लग्नेश-तृतीयेश या चतुर्थेश-नवमेश एक घर में हो या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखे तो उसवर्ष तबदीली होगी। अगर वर्ष-लग्नेश वक्री हो और वह मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाद दृष्टि:
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं. मं. गु.	र. बु.	र. गु. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	. बु.	मित्र-ग्रहा:
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशय: परमोच्चांशा:
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशय: नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुंसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
[illegible]	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
[illegible]	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	स्थिरस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
[illegible]	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
[illegible]	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वापी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
[illegible]	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफवातु	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
[illegible]	युवा	युवा	कुमार	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
[illegible]	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
[illegible]	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
[illegible]	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

[illegible]

मं.	पिं.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो या पञ्चमेश और सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। सूर्येश और चन्द्रमा बली होकर पाँचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करना, फिर उसमें […]०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक […] प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यहतुल्य हो स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न […] चतुर्थ राशि का स्वामी चन्द्र लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न […] स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पर […] वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना बाकी सब रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग—यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ कष्ट भयप्रद होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल हो कर सुखप्रद होता है। गया-गोदावरी यात्रा में, नवरात्र कृत्य में एवं चातुर्मास्य व्रत में गुरु-शुक्रास्त का दोष नहीं होता। शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा सर्व कार्यों में शुभ मानी है। प्रथम बार देव दर्शन एवं प्रथम तीर्थ यात्रा में गुरु-शुक्रास्त अवश्य विचार्य है।

चन्द्र-शुद्धि—अपनी राशि से ४, ८, १२वीं छोड़ अन्य राशियां हों तो चन्द्र-शुद्धि समझें। अभिषेक निषेक, यज्ञोपवीत तथा विवाह में द्वादशस्थ चन्द्र पुरुष को ग्राह्य है। कन्या को १२ चन्द्र का निषेध है।

तारा शुद्धि—अपने नक्षत्र से इष्ट दिन के नक्षत्र तक की संख्या में ९ का भाग देकर २।४।६।८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा, मृ.ह.अनु.रो.स्वा.श्र.ध.श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३. ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक सम रात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन., पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभ काल

भद्रा, ४, ६. ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रांति का दिन। सन्ध्या काल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां, ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी निधन तारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन व्यतिपात, वैधृति योग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघ योग का आधा भाग, जन्म राशि से अष्टम लग्न पाप युक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री-पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल रखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमांत संस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है।

सीमान्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषोमलमासस्य मौढ्यस्य गुरु-शुक्रयोः॥

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णु पूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन पान कराने या सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र-मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों, तब स्तन पान कराना शुभ है। आगे अन्न-प्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती, तीन-उत्तरा, रो., मृ., ह., स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि, गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जल पूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जल पूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक गिनें

५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभ वार में, मृ. रे चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।५।६।७।९।१० इन लग्नों में शुभ ग्रह से युक्त होने पर १।४ ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पाप ग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम-शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे-चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने मे पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णवल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में, ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिरलग्न में शुभदिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बैठावें ।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र—"रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे । आयुः प्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥" इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे, उससे उसकी आजीविका होती है ।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ६ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ६, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, १२ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है । किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं ।

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्ममास, जन्मनक्षत्र ४, ६, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ६, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु, या मीन लग्न में वृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है । इस संस्कार के समयपर करने से मनुष्य के हार्निया (आंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है ।

कन्या का नासिका वेधन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिनके प्रथमप्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है ।

मुण्डन मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत मे प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य मे चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन को छोड़ कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ.. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है । लड़के की माता को पांचमास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष में अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है । जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए ।

मुण्डन कर्म में विशेष—स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्मं वः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं, वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं । वर्जित काल शनि, रवि, भौमवार, हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना भोजन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोज के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ।

विशेष कल—यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है । किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य से नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं । वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं ।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है । लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं ।

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत्., अश्विनी, मू., तीनों उत्तरा, रो, पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ६, १० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी संबंधी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सूर्य, भौम, शनिवार हों, ४।६।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं ।

सीने पिरोने (सूचि कर्म) का मुहूर्त—अश्वि. पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ. श. ये वार, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं ।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है । देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो, उसे यज्ञ कहते हैं । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक की गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाए तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं । उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं । माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृ., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेध रहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य हैं) सू. चं. बु, (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है । किन्तु सोपपदा तिथी जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्यान्ह से पहले शुभ है । शु. गु. चं. और लग्नेश, ६।८ वे स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में, और १।५।८वें में पापग्रह अशुभ है । शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का सम्पूर्ण चन्द्रमा; लग्न में हो तो शुभ होता है । गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है । यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक से उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले। अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

सांझे व्यापार (सांझेदारी) में परस्पर अशुभ षडष्टक तथा गण-दोष नहीं होना चाहिए।

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	भेष	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारे ताराओं में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा.
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म.
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	२ पं	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा	पूषा.
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व.	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा.	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू. षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ. षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व.	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व.	अंध	चरचल	मृदंग	४	आश्ले	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व.	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा.
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाम	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक।

स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी और चतुर्थ मित्र समझना चाहिए।

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मूहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उस में गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणों वाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी है। उसका विवरण यह है, कि—नाड़ी दोष की जगह (३), गण महादोष की जगह (१), भकूट महादोष षड्ष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश मे (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया, वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चिन्ह(+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं हैं। वहां निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष हैं इसलिए सम्बन्ध अशुभ हैं। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इसमें अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हों और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हों तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ हैं।

नाड़ी-दोष-परिहार—यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो, अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। **आवश्यक दोष शान्ति**—द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण, वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र, सुवर्ण, नव पंचम में कांसी चांदी, अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्।—(गुरुः)। महादोष एकनाड़ी हो तो अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थं महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ३१ रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षड्ष्टके वा। तारा विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः। गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥

मिलान के बिना ही विवाह—जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता—स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए गण-गुण मेलापनादि विचार शास्त्र विहित नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			म.			[illegible]			मीन		
	चरण	अ १	भ १	कृ ।	कृ ॥।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ॥।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ॥।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ॥।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ॥।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ॥।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ १	३१ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ १६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	२६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ १	२३	२८ १	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	२७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	९॥ १३६	२३ २३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२५॥	२८ १	२८ १	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२३॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१९ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ॥।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१९ १
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१३॥ १६	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४॥ -१	२८ -१	२६	२६	२७	१९ १
	मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१७ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२५॥	१७॥ ३	२१॥	१९ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -१६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२९
	आ १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ १	२९	२९
	पुन ॥।	२८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३६	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१२ ३५	१६ ३५	१७॥ १	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१६ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	२६॥ ३	१७॥ ३	१६॥	१९	२६॥	२०॥	२६ ५+	२५ ५+	२०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	२९ -५	१७ ३५	२० -५	१७ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	२२॥ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	१२॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	२४॥ ३५	१६ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ २३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ १५
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	२६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ १	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ २६	१८॥ १६	१३ ३६
	पू.फा १	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	२८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२३॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ २३	[illegible]	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	२७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१९॥ ३६	२९॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ॥।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	२१॥	२९॥ ३	२९॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१९॥ १२४	२५॥ ४+	१९॥ १२४	१८ १३	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	२६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	२७ ३	२८	२६
	ह १	११ २३६	१८॥ ६	१७॥ १६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	१२	२२॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२८ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२९	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ १३२	१३॥ ३६	२६ ३	२६	२६
	चि ॥	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२१ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	२८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ -४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	११	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १२२	१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेलापक सारिणी

	→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	पादा	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	श १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
	चि ।।	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८।। १६	१०।। ३६	१२ ३५	२० १५	१८।। ५+	१९	११ ३	२५	२४।।	१०।। १३	१७।। १२	१७।। १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७।। ०	३३।।	२३।। ४	६।। ३४	२०।। ४	२७	१६ १३	२१ १	२३।। १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१३।। १५	१२ २६	३ १३६३	२
	स्वा १	२८ ३+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३५	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७।।	२६	११½ ३	१२।। ३	२४	२५।।	२५।। ४	२७।। ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१।। ४	१६।। ४	२३	२७	१८ ३	२१।। ३	२३।। ३	२६	२१ ५+	२३ ५२	२५ ५+	१८।। ६	१९ ६	१९ ३९
	वि ।।।	३१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८।। ५+	२० १५	२० ५+	२०।।	२०।।	१७ ३	१६।। ३	१८।। १	१७।। १२	१७।। १४२	१८।। ४+	२६ ४-	३३।।	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१।। ४	२७	२१ १	१३ १३	१५।। १३	१५।। ३	२३।।	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३।। २६	१२।। १६२	१४ ३३
वृश्चिक	वि ।	१६।। ६+	१६।। १६	१४।। १६	१३।। ३	१३।। १३	२७	११ ६	१२।। १६	१२।। ६	१८ -५	१८ ५-	१४।। -३५	२४।। ३	२२।। १	२१।। १२	१७ १२	१८	२६	२१।। ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१।।	२१।। ४+	१५।। ४१	७।। १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५।।	१६।। १	१५ १५	१८ १६३	१० ३८
	अनु १	२३।। ६	१४।। ३६	१८।। -६	२३।।	२७।।	२८।। ३	१० ३६	१५ २६	१७ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४।।	२०।। ३	२८	२४	२५	२१ ३	६।। ३४	२०।। ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५।। २८+	१३।। ३४	२१।। ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४।।	२४ ५+	९७ ३५	२८ ५+
	ज्ये १	१० ३३	१७।। १६	२३।। -६	२८।।	२३।। १	२८	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९।। ३३	१९ ५+	२५ -५	३१	२०।। १	१५।। १३	११ १३	११ ३	२४	१६।। ४	१४।। ४	१९ ४	३१।।	१०	२८ ३	२४ ०२३४	१६।। १४	१६।। ०४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	२।। १३५	२० १५	२० +५
धन	मू १	१९।। ३५	१९ १५	२५ ५+	१६।। ६	१३।। १६	१३।। ६	२१	१४ १३	१२ ३	७।। ३६	१७।। ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९।। १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२।। ४+	१६।। +२४	१९ ३४	२८ ३	२८ ०१	१५।। १	१३।। १४	१४।। ४	१६।। ४	२८।।	२१।। ३	१४।। १३	१६।। १३	८।। १	२७
	पूषा १	२५।। -५	१७।। ३५	१९।। -१२५	१४ १६२	१८।। ३	१०।। ३६	१६ ३	२६	२७	२२।। ६	१४।। २३६	१६।। १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८।।	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६।। -१४	१५।। ३४	१७।। -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२।। ४	५।। १३४	४।। ३	२३।। १	२८।।	२८।।	२२।। ३	३०।।
	उषा ।	२४ ५	२५।। ५-	११।। १३५	६ १३६	१० २३६	१६।। २६	२५ २+	२६	२७	२२।। ६	२२।। ६	८।। १६३	८।। १५३	२४ ५+	२५ ५+	२८।।	२८।।	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८।। १३४	२३।। ४+	१७।। -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३ १०	२।। १	२३।। १	२८।।	२९।।	३०।।	२२ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८।।	१४।। १३	१२ १३५	१६ २३५	२२।। २५+	१९।। २६+	२४।। -६	२१।। -६	२८	२८	१४ १३	४।। १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५।। १५	२२।। -१	२१।। ३	१४।। १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४।। १८	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५।। १+	१५।। +१४	६।। १+	२१।। ४+	२१।।	३०।।	२२।। ३
	श्र १	२८	२७	१४।। ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९।। -६	२१।। -६	२८	२८ ७+	१४ ३	५।। ३६	१८।। ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१९ ५	२४	२१।। ३	१४।। ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२।। ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७।। ४+	२०।। ४+	२८।।	२९।।	२३ ०
	ध ।।	२०	११ १३२	२६	२३।। +५।।	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४।। -६	२२	१३ ३	२७	१८।। ६	४।। १३६	१०।। १६	१५।। १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८।।	२६	१२ ३	२६	१७ ४	६।। ३४१	१४।। ४१	२५।। १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७।। १४	२४।। १	१५ १३	२२।। +२
	ध ।।	१९।।	१०।। १३२	२५।।	३०	२५।। १	१७।। ३	११ ३५	१८ १५	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४।।	१०।। १३	१८।। १	१७।। १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४।। -५	२५	११ ३	२५	२९।।	१५।। १३	२३।। १	१६।। १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७।। १	२६।। १४	६।। १३४	१९।। ४३
	श १	१४।। ३	२०।। १	२६।।	३१	२५ १	२८।।	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६।। ३६	१३ ६	१९ ६	२५।।	१९।। १	११।। १३	२०।। १३६	२०।। २३६	२५ ६	२६ +५	२१ -५	२६ ४+	२६।।	२०	१८ ३	२३।। ३	२४।। १	२४।। १	१७ १४	१७।। ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	१९ ०१	८ १३४०	१४।। १४	१५।। ४
	पूभा ।।।	१७।। ३	२४।। २+	१९।। -१	२४ -१	३०	३०	२३।। ५+	१७ ३५	१७ ३५	११।। ३६	१९।। ६	१२ १६	२८।। १	२४।।	१६।। ३	१५।। ३६	१५।। ३६+	१७।। १६	१८।। १५-	२६ ५+	२० -१५	२०।। १	२६।।	११ १३	१५ १३	२९।।	२६।।	२२।। +४	२२।। -४	१८।। -१४	२८ -१	१९ १०	२८ ३	१६ १४	२२ ०४	१९।। ४३
मीन	पूभा ।	२४।। ०४	२२।। ४२	१६।। -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७।। ३	१७।। ३	१७ ०३	२५ ५	१७।। १५	१६।। -१६	२२।। ६+	१४।। ०६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८।। ३	१२।। १३	११ -१५	२५ +५	८।। १३५	१४ १२	२८।।	२८।।	२८।।	२८।।	२४।। १	१५।। १४	७ १०४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०।। +-
	उभा १	२३।। ४+	१५।। ३४	१८।। -१४	२१ १	२६	१८ ३	२७ ३	२५	२६।।	२३ ५	१९ ३५	२० १५	२७।। -१६	१५ ०६	२६।। ६+	२७	२६	९ १३२	२ २०३२	११ ५	११।। १०२	२८ ३५२	१८ ०५	२० -१५	२३।। -१	२१।। ३	२९।।	२९।।	२९।।	१४।। १३	५।। १३४	[illegible]	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ५+	२३।। ४+	१०।। ३४	११ ३	१७ ३	२९	२५	२४	२५	२४।। ५	२६ ५	१३ ३५	२२ ३६	२३।। ६+	२३।। ६+	२४	२५	११	१२ ६	१० १०३	४ १०६	२०।। ३५	२६ ५+	२९ ५+	२६	२८।।	२०।। ३	१९।। ३	२१।। ३	२३।। -२	२३।। ४२	[illegible]	१७।। ४२	२२।। +२	३३	२८ ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह-मेलापक-विचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा—वैधव्ययोग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष—दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढय, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्र में विवाह निषेध—समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होतीं है तथा वर-वधु जाति से च्युत हो जाते हैं तुल्यसपिण्ड मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान—(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए दोषा दिका मेलापक सारिणी से विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिएं—(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण मुहूर्त—उ. ३, रो. कृ. पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभलग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को संस्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये स्नातः स्नाते धरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीवे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त—उ. षा., स्वा., श्र., पूर्वा. ३, अनु., ध., कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवें। **तद्यथा** "मासत्रया-दूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्यः—रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धि न चिन्तयेत्। वशिष्ठः-तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धो पाणिग्रहोमतः॥ विवाह लग्न के समय कन्या ऋतुमती हो तो—स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः। युंजानामाहुति हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधु की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या सङ्कल्प के समय "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वर" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	सार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कटौ	३	साधनादर्पः
चरणे	४	साधनाढितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त—अधिकमास रहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग मा फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष मि. सिंह. क. तु. ध. मी. लग्न हो, लग्न से १।५।७।९।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मन्त्रदीक्षा लेना उत्तम है। विशेष—सत्तीर्थ पर सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेने समय मास तथा पञ्चाङ्गशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त—चै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में अथवा या तिथि-र्यस्य देवस्य तस्यां वा) रो. मृ. पुन. पु. उ. ३, ह. स्वा. त्रि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्र के उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे, शिवस्य चरे, दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न-गण्डान्त होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाह मासः—(विवाहमुक्तावली)-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। त्याज्यो ऽर्कों धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन), जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना निषिद्ध है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप बनाकर जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करने और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभकार्यों में मरणाशौच—साहेचिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिये गये हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि—गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा, ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. चं.) शुद्धि प्रथम देखें। "झष-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ॥ बृहस्पतिः ॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽप्याष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्चे उच्चांशके प्राप्तः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिस्थो भादिगोऽपि चेत् ॥ (रणवीर ज्यो. नि.)

तुलाराशौ अपूज्यः रविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरवि-परिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्स-वशिष्ठ गौतम-पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः। (मु०प्र०सा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१ ध. मी. कर्क
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७ राशि में
नेष्टगुरुः—४।८।१२ हो तो नेष्ट
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११ गुरु भी
पूज्यरविः—२।५।९ श्रेष्ठ है।
विशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२

कन्या-वरयोः तैलादि-स्थापन (बन्न)

दिन संख्या

राशि→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.→	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहित-तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि. श्र. धनिष्ठास्वपि शुभम् ॥ विवाह में विशेष कर लग्न और नक्षत्र की प्रधानता है।

सभी कार्यों में लग्नशुद्धि—जन्म राशि से आठवीं, बारहवीं राशि न हो तथा लग्न से आठवें बारहवें कोई ग्रह न हो तो लग्न शुद्धि समझें।

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले ३।६।९ इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पसीना, कूटना, मंगल कलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घड़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोवा बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुद्ध होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इसवर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम्	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) पातदोष-ज्ञानार्थ चक्र

रा.	मृ.	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा	उभा.	रे	वि.	नक्षत्र
आर्द्रा	मृ.	म.	कृ	भ	कृ	भ	रो	भ	भ	अ		सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आ	मृ.	आ	मृ	भ	आ.	ज्ये	पुन	भ	ज्ये		
शत.	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उपा	ध	भ	वि	ध		
पूफा	ध.	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा.	म		
चि.	म.	ह.	उभा	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	पूफा.	पूफा		
मू.	ह.	रे.	पूभा	म.	रे	पूफा.	उभा	उषा	मू.	स्वा.		

हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेधदोष चक्रम्

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो	मृ.	म.	उ फा	ह.	स्वा	अनु	मू.	उ. पा.	उ. भा.	रे.	विवाह न.
[illegible]	[illegible]	पू. पा.	उ. भा	[illegible]	[illegible]	मृ	पुन		उ ह. फा.		ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में शत्रुग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड; व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वे, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हों तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणदोष ज्ञानार्थं चक्रम्

बाण नाम	गतांशा: प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	बाण: वर्ज्या:	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चोर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययो: वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोष:

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशय:
२	४	६		८	१०	तिथय

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य हैं।
—कश्यप

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) वशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे, बांगर) जांगले (फ़िरोजपुर; भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाह्लीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तितं भं त्याज्यंत्तुविद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता:॥

विशेष-परिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातं सर्वत्र वर्ज्यंश्च भुजंगपात:॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:। युतिदोषाय न भवेद्दाम्पत्यो: श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहार:—पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभेनैव कृत्स्नत: (नारद:)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत:॥ अस्यापवाद:—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।—एकार्गलोपग्रहपात-लत्ता-जामित्रकर्तयुदयास्त दोषा:। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा:॥ मु. वि.।

उक्तानुक्तास्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु:।
केन्द्रसंस्थ: सितो वाऽपि चन्द्रमान् मरुतो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च पाप	०	शु	रा.	०	च. शु. लग्नेश:	सर्वे	चं. मं. शुभा: लग्नेश:	०	मं.	०	श.	त्याज्या:
च. मं.	कुलिक क्रांतिसाम्यञ्च				चं.	श.	चं. मं.	विद्धंभञ्च				गोधूली त्याज्या:

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लग्न-भंग दोष:—व्यये शनि चेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रकला न शस्ता: । लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभा राग्नि मदे च सर्वे (अस्तोऽब्जगुरुराशी) ॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहो न शुभप्रद: । वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादि वृद्धिद: ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं स्वष्टमो राशिरेव च । यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद: ॥ पञ्चवाधिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग:, बादरायण:—मासशून्याश्चयास्तारा राशयो वधिरादय: । गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता: ।

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वो: सा कर्तरी स्यादृजु-वक्रगत्योः । तावेव सौम्यौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्ति: ॥ इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषांश्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न । भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीच नवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न ॥

दोषापवादा: ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे । तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगणै: सह ॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु: । केन्द्रसंस्थ: सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा: । ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग: शशी ॥ अब्दायनर्तु भा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवा: । ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे ॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये । सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत ॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् । यूनं विहाय दैत्येज्य: सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद-वाक्यों में सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना ।

तारा शुद्धि—अपने जन्मनक्षत्र से अभीप्सित दिन के नक्षत्र तक की संख्या गिन कर ९ से भाग दें । यदि २, ४, ६, ८ या ९ शेष बचे तो तारा शुद्धि समझें ।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहा:	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विशो-पकाधिकम् ।
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	।।/		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयक: । गोधूलिक: स: विज्ञेय: शेषा: धूलिमुखा: स्मृता: ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । । तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति । लग्नं विशुद्धे सति यौवंयुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते ॥ मार्ग माघ, फाल्गुन में संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर, वै. चै. में गौओं की धूलि से आकाश आच्छादित होने पर ज्येष्ठ आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रा. भा. आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है ।

गोधूलिके त्याज्य दोष:—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी । तथा गोधूलिके त्याज्य: पञ्चदोषैस्तु दूषित: । "अस्तं याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने मे कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना ।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त.—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र, आयु, प्रीति लाभ देता है । ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं ।

पुनर्विवाहे (रोत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम् ।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भाग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यक साभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु: । अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय: ।

वधु प्रवेश का मुहूर्त—जब वधु विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधुप्रवेश कहा जाता है । विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है । ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता । १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढ़त्व का भी विचार नहीं करना । व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा । अमासंक्रांति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य, अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियों में ५। ८। ११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधुप्रवेश शुभ है ।

वधु-प्रवेश-समय :—वधुप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त: । दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश: ।

विवाहत: प्रथमे वर्षे वधु-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षयमास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है । विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उसमास का कोई दोष नहीं ।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं । विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को, २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन, श्र. ध. श. मृ. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष :—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु ।
न चात्र ऋक्षं न तिथिर्नयोगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ।

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेध :—जिस दिशा में शुक्र उदय हो, वह दिशा 'सम्मुख' होती है । अथवा मेष, सिंह, धनु में शुक्र हो तो पूर्व में; वृष, कन्या, मकर में हो तो दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ में हो तो पश्चिम में; कर्क, वृश्चिक, मीन में हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है। ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि युवति वधु जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट :—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व-पश्चिम कपाल में स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष :—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शचिमुक्ताफलान्वितम् । महाश्वेतगवा युक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि में प्रथम पहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों में भी तोता, चिड़ा तथा बन्दर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि रे. एषु. नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषण धारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ी चक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ, १३ तक नेष्ट, २० तक श्रेष्ठ, २२ तक नेष्ट, २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय में शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष :—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम् ।
निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ।

भूषण घट्टन मुहूर्तः—ह. व. पुष्य अश्वि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३, रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त :—ह. चि. रो. रे उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभदशा भी चलती हो तो दुकान खोलना शुभ है । चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृगृहात्पितृगृहागमन मुहूर्तः—पूर्वा ३ भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु, च. ब. श. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पु. ३ ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्ट चक्रः—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें ।

गुरुपुष्य एवं रविपुष्य में व्यापार प्रारम्भ करना शुभ है । साझे व्यापार में गण दोष एवं अशुभ षडष्टक न हो, देव-राक्षस में बैर, अपने गण में परम प्रीति जानें ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नौकरी) मुहूर्तः—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामा रहिततिथौ. र. बु. वृ. शु. वारेषु शुभः । लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्तः—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३, ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभ लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्र कोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्तः—पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्ध रहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ६।४ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित कालः—मंगलवार संक्रांति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुधवार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मूल नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्तः—शाम का समय शुभ चौघड़िया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते हैं । बुधवार नई ईंट बनाने में विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रय-विक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पू.भा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३, आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तियौ शुभदिने उत्तम शकुनं विचार्य क्रय-विक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्रः—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि., वारों में बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये हैं ।

वस्तु बेचने का नक्षत्रः—पू.फा., पू.भा., पू.षा., वि. कृ. श्ले. म. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोटः—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सच हैं।

खातिक (अर्थी) का मुहूर्त— ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्लो. म. ज्ये. पू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो. ऐसा होवे तो उत्तम है। लग्न में पाप ग्रह हो तो अनुकूल है।

गृहादि निर्माण में आयविचार

शयनात् पादकर्तुर्नक्षत्रं यावत् गणना कार्या स्थान फलम्		
मस्तक	७	धनलाभ:
पृष्ठे	७	हानि:नीःस्वम्
हृदये	७	सुखलाभ:
पादे	७	पर्यटनम्

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान, ५ वृषभ, ६ गदर्भ:, ७ हस्ती, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि समसंख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ हैं।

घर का नक्षत्र और व्ययज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक ग्राम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है:

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर या काली ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. गु. शु. श. वारों में, रो. म. चित्रा ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व आयादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति।
द कुक्षौ	४	लाभ: शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश:
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति वार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. बृ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—'संक्रांति मिति दिन पांचवें सप्तम् नवम जोय। दस इक्कीस २४ में षट् दिन पृथवी साय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता: घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीया:। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी-शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूप-विचार:

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नै	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति:	पुत्रनाश:	स्त्रीनाश:	गृहेशनाश:	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारी तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहृतं तद्‌गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नाशे द्वाभ्यां च शेष सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:॥

अथ चुल्लिचक्र विचार:

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ मुख के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा तंदूर, स्टोव, गैस, चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभन:। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेय: सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयो:॥ (यहां चान्द्रमास लेना)। उत्तरा ३., अनु., रो., मृ., चि., रे इन नक्षत्रों में रिक्तामा रहित तिथियों में चं.बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में, अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण-पुष्पमालायुक्त-कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग. फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो सौर चैत्र. वैशा०. ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्यकोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा. ज्ये. आषा. ईशान, भा. भा. आश्वि. में वायव्य कातिक मार्ग. पौष में नैऋत्य, माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय—वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग, माघ, में ईशान, में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थानं.	नः	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	७
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह. तीनों [उ., रो. ध. श. म., पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। और जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-जल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्, जल का वास भी "गृहमध्ये कूप विचार" से भूमि पर विचारे।'

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर पूभा.उभा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये बहुजलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़ कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिए शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र में दिन नक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थं शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थं कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३, पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिसदिन हवन करना हो उसदिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना। पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुख कारक होता है. शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेष्वथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतुना-मुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः॥ दुर्भगं गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हवन में शाकल्य-विचार—तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव, यव का आधा शक्कर और सब का आधा घृत, असमर्थता में यथाशक्ति घृत लेना चाहिये।

दग्धग्रहमुखे हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शांति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ; आयसी प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय संपूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचारः—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा—अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना, फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना। ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ण की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है, समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन—गुरु, शुक्रवार १,५,६,११,१५, तिथि, मृग. पुन. ऽश्ले. म., पू. फा., वि., ऽनु., मूल, पू. षा., उ. भा. नक्षत्र में-घर जमीन का सौदा करना शुभ है।

हल-प्रवहण मुहूर्तः—मृ.रे.चि.अनु.रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि.स्वा. पु.श्र. ध.श.म.मू.वि.एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे,१।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम् सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने					बीजवपने राहुचक्रम् सूर्याद् नक्षत्रात् दिनर्भं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. र. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।
विशेषः-रवौ रौद्रा (आर्द्रा) धपादस्थे भूमौ संजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त :—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. चं. गु. शुक्रवार शुभ हैं।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र, उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो, तो गाय लेना अशुभ है। उ.फा. नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४,५,२६,२७ वें) नक्षत्रों को छोड़कर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है। भैंस लेने के लिए भी यही क्रम है, परन्तु वहां उ.फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करे, नक्षत्रों की शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। बैल खरीदना हो तो भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे, परन्तु यहां उ.फा. से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशुभ है, शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापन चक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वायकर्म नेष्ट	सुख शुभ	फलम्

लता-वृक्षारोपण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो ह- पुष्य, अश्वि- श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेधः—तृणकाष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि काम कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त—कृष्णपक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार, तिथि, अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उफा. ह. चि. स्वा ऽनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि., अश्वि., हस्त., चित्रा., अनु., पुष्य., ज्ये., पुन., एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. मं. शु.च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे, चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़ कर शुभ तिथियों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्तः —

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध, अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा ; रो, उत्तरा ३, पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या। तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्या-

दिग्द्वारलग्नानि				
१।५।९	२।६।१०	३।७।१२	४।८।१२	शुभम्
२।२।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	अधम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१	म०म०

दिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टम शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित हैं।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्							नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व. आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर.	ईशा.	दिशा पू०	द.	प.	उ.
चं.श. च.श.	गुरु	सू.शु.	सू. शु.	भौम	मं.बु.	बु.श.	नक्ष. ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य दैत्येज्य-दिवाकराणाम्।
दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दधि शुक्र को यवान्न, शनि को उड़द तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यात्रा में काल ज्ञान

शनी	पूर्वं
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋ त्ये
भौमे	पश्चिम
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
संम्मुखेनष्ट: पृष्ठे शुभ:	

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ	पश्चिम	वायं०	उत्तरे०	ईशा०दिशत
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और वाएं की शुभ, युद्ध यात्रा की बाएं ओर की ओर सम्मुख की विशेष त्याज्य है। **सभयशूल** :—उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामूहूर्त गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। वृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषा काल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय:। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्वं	दक्षि.	पश्चि.	उत्तर
मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चि मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू	द.	पू.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पद:। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषा:लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति॥ **सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा**—करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थ:।

सर्वाङ्क सिद्धि योग:—शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। **विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है।** बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र खट्टे फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैंता) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त में यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम् / रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	मं	बु.	गु	शु	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥	शु.	व	का.	उ.	अ.	रो.	ला.
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७॥	अ.	रो	ला.	श.	च.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।	च.	का	उ.	श	रो.	ला,	श.
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५	रो.	ला	शु	चं.	का.	उ.	अ.
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८॥	का.	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२॥	ला.	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।	उ	अ	रो	ला.	शु.	च.	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०	श.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

चतुर्घटिका मुहूर्त में चर लाभ अमृत शुभ हैं शेष अशुभ हैं।

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बांयते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहु मिले चलते प्रात:काल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, शीशा, श्वेत वृषभ गोदधि सर्षप, कमल निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदनरहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि ससुतस्त्री, गोरी कन्या, धोत्रा, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि**—वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त-घट भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार-युद्ध, कटुम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन छिक्का, दुष्ट-वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा-मनुष्य, दक्षिण में गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्त चक्रम्

पी.	मा	का.	चं.	वै	ज्ये	आ.	श्रा	मा	आ	का.	मा.	पूर्वं	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दु:ख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	कष्ट	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिशा शूल ले जावे वामे । राहु योगिनी पूठ ॥
सम्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा से सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३, अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहनि चन्द्रताराकुल्ये सति शुभम् ।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त—म.रे.चि.अनु.रो.,उ. ३, ह.अ. पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. गु.शु.श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।६।११।१२ एषु लग्नेषु, १।४।७।१०।५।६ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः । चि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि ।४।६।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि । मंगल का मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है । विशेष :—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् ।
नवमे जातु नो कुर्याद्दिनेवारे तिथाविति ॥

घातचन्द्र, घातवार आदि का चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु,	श.	श	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु.	घातवार
मं.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मो.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	स्त्रीचं.घात
का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ	प्री.	सु.	अ.गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	६	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

कार्य सिद्ध्यर्थ यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें । तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं । **"घात-तिथिर्घात-वारः घात-नक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ॥"** कार, स्कूटर, बाईसाइकिल आदि की खरीद घातचन्द्र में वर्जित है ।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्वफल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है । जो फल पल्लीपात का कहा है, वही फल सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने । सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है ।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य सम्बन्धः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धन प्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयोः	शुभम्.	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभ;
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यर्क्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है । तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है । पु. अश्विनी. रो. मू. पुनः उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है । अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः ।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें । जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पाप-ग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है । उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है ।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती हैं । मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं पीन सरदी घास फल हींनी । छीकि पीठि की कुशल उचारे, बाई कारज सब सवारे ॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भारे । छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे ॥२॥ ऊची छींक कहे जयकारी । नीची छींक होय भय कारी । अपनी छींक महा दुखदाई । ऐसे छींक विचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है । भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले ।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजनं । वामांगे पृष्ठतश्चैव पट् छिक्कास्तु शुभावहा ॥ सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है । एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे । यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंग-स्फुरण-फलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-वृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	बादलीकेपगृहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	गहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	मांधी कबूतर	गहस्वा. ना.
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	मिश्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिन का पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं-विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वारा:
तापम्:	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

रवौ भौम व्यतीपाते
संक्रांतौ वैधृतावपि।
षाठ्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च
तैलाभ्यंगो न पर्वसु।

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्टकार्य नाश करता है। विशेषकर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष को दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापना कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुख दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे)। घृतच्छाया पात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे, यह विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काकविष्ठा विचार—शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः-रोगः। भुजयोः—प्रियार्तिः। उदरे-शोकः। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयोः—वाहनपीड़ा। पादयोः-प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे-यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थं हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अंकप्रश्न तथा फल वर्णन—प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि. ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न मे देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ट भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से ।'दृष्ट श्रुत, अनुभूत प्रार्थित, कल्पित' ये पांच प्रकार के स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं । छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है । सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है । इतना विशेष है कि—बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है । सुस्वप्न देखकर पुन: स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थचित्त से स्वप्न का वर्णन करे, शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे ।

शुभस्वप्न—राजा हाथी, गौ, बैल, विप्र, देवता, अनेक बालक, वृद्ध, गुरु, श्वेत-वस्त्र वाली स्त्री, रत्न, इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना, महल पर्वत, सिंह, अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान रथ शय्यादि का ज्वलन; स्व-शिर का छेदन, स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण, रक्त पीत पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्रधनुष का देखना, छाछ, अस्थि कपास, नमक, इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु, स्वप्न में देखना धनै-श्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है । यदि कोई क्लर्क वा मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियो में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी ।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो । यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले । स्वप्न में बिच्छु, या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो । श्वेतवस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊ छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना, ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले । मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्यलाभ करता है । गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है । बगला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है । स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है । मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना, लाभ करता है । हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो । नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कोष्ट-पूर्ति करता है । ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है । राजा, गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दरफल संयुक्त देखना पिछड़े काम सिद्ध होंगे, ऐसा जानना । घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले । बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो । अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसका समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ा है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति होगी ।

शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अत: सोवे नहीं ।

अशुभ स्वप्न—लालवस्त्र पहिनना, सूर्य-चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का पड़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास, भस्म, तेल, लोहा मिलना या देखना इससे संकट व मृत्यु हो । शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करना है । शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है । मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है । तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है । अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो । हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूतप्रेत चांडालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं । नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ गीदड़ बिलाव, भैंस, सर्प मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है । गौ, हस्ती, देव, विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है । अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे । कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा । यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो । यदि अपने को कैद में देखे तो दु:ख से छूटे । बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे । तूफान देखे तो दु:ख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो । स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाए। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है । मुंण्डित-केश नर, भिक्षुक तथा सूखी-नदी, सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है ।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष मे, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है । अथवा—रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे, उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे, उस घटी को चार से गुणा करे, जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्नफल मिलेगा ।

अशुभस्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्र नाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए । अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दु:स्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु यत्कर्म परिकीर्तितम्
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टेण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है।

चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है।

मंगल की होरा—युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्दमा के कार्यों में उत्तम होती है।

बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन-लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिए शुभ होती है।

गुरु की होरा—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है।

शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्द्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है। शनि की होरा—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिषशास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फलदायक माना है। सात ग्रहों की सात ही होरा हैं। प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है। फिर दिन रात के २४ घंटों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है। होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कर्मों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा। स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की अभीष्ट कार्य-सिद्ध्यर्थ ग्रह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी।

वार →	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बृ.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है। आपने कार्य-सिद्ध्यर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है। तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि—किस-किस समय पर होता है। उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घन्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है। इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए। जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं। जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन शुक्रवार है। इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाए तो शुभ रहेगा।

ठेकेदारों का टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है।

नव: नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो, प्रातः सूर्योदय के चढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्यं दर्ज्या	ति. ५ न. ह.	ति. ५ न. मृ.	ति. ७ न. अ.	ति. ८ न. अनु.	ति. ९ न. पु.	ति. १० न. रे.	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग (अधमाः तिथयः)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९ १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	५	९	१०	११
व्या जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्तं	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्तं	६	४	२	१४	१२	१०	२१
दुर्मुहूर्त	१४	९।१२	४।७	८	६	९	१।२
यमघण्टयोगः	ग	वि.	आ.	म.	कृ.	रो.	ह.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुगम प्रश्न विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धता पूर्वक 'ॐ श्री कीर्ति भवान्यै नमः' इस मन्त्र को श्रद्धा पूर्वक सात बार पढ़कर नीचे दिये गए चारों यन्त्रों पर क्रमशः अंगुली रक्खें। फिर यन्त्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रक्खी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकद्दमे का प्रश्न हो तो "मुकद्दमा का फल" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "नौकरी का फल" वाली उत्तरावली में··· इत्यादि) अपना उत्तर देखें। उदाहरण लीजिए—आपका प्रश्न मुकद्दमे के विषय में है कि जीत होगी कि नहीं? आपने चारों यन्त्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रक्खी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर शेष ५ बचा। अब आप अपना उत्तर "मुकद्दमे का फल" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिये। उत्तर है— "विशेष खर्च करके जीत होगी"। यहां पर यह स्मरण रहे कि यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें।

नोट—प्रश्न एक ही बार करना चाहिए बार-बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुल रखने के लिए चार यन्त्र

यन्त्र सम्मुख

४	३	८
९	५	१
२	७	६

यन्त्र ऊर्ध्वमुख

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यन्त्र अधोमुख

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यन्त्र विमुख

८	३	४
१	५	९
६	७	२

उत्तरावली

मित्र मिलाप फल (१)

१. मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२. मित्र विश्वासघाती है।
३. मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४. मित्र धोखा देगा।
५. मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६. मित्र बड़ा कष्टमय युक्त है।
७. मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८. मित्र मतलबी है।
९. मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)

१. मुकद्दमा देर से होगा।
२. मुकद्दमे में जीत होगी।
३. हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४. कुछ कुछ जीत होगी।
५. विशेष खर्च करके जीत होगी।
६. कष्ट अधिक होगा।
७. तुम्हारी हार होगी।
८. सुलह हो जायेगी।
९. पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)

१. गमन मत करो लाभ नहीं है।
२. देशाटन में लाभ-हानि बराबर है।
३. भूल कर भी मत जाओ हानि होगी।
४. शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६. शकुनविचार कर गमन करो लाभहोगा
७. यात्रा पीड़ा कारक होगी।
८. यात्रा में आराम मिलेगा।
९. यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)

१. पशु से पूरा लाभ होगा।
२. पशु से हानि लाभ सम।
३. पशु मत खरीदो भला नहीं।
४. तेरा विचार ठीक नहीं है।
५. फायदा रहेगा तो सही।
६. आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७. पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८. तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९. लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)

१. इस माल में लाभ उत्तम होगा।
२. इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३. यह काम घाटे का है।
४. चोरी या नुकसान का भय है।
५. साझी या व्यापारी दंगा करेगा।
६. माल से सवाया लाभ होगा।
७. माल कुछ देर से लाभ देगा।
८. खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९. माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)

१. नौकरी जरूर मिलेगी।
२. देर से मिलेगी धीरज धरो।
३. काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४. खर्च करने से कार्य बनेगा।
५. यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६. शत्रु रुकावट करेंगे ग्रह दान दो।
७. किसी की सहायता से काम बनेगा।
८. इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९. काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)

१. अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२. विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३. मनोकामना पूरी होगी।
४. विद्या सामान्य सफलता देगी।
५. विद्या हो परम लाभकारी होगी।
६. उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७. अच्छे दरजे में पास होगा।
८. विद्या में विशेष लाभ न हो।
९. विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)

१. परदेशी शीघ्र ही आयेगा।
२. बीमारी से लाचार है।
३. मार्ग में चला आ रहा है।
४. दूर देशान्तरों में विचरता है।
५. रास्ते से ठगा गया है।
६. अभी मन में लौटने का नहीं है।
७. वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८. खर्च में तंग है कैसे आये।
९. परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)

१. शत्रु दुष्ट है दमन होगा।
२. शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३. शत्रु द्वारा विशेष हानि होये।
४. मित्र की सहायता से भय हो।
५. शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६. विश्वास न करो उससे भय है।
७. राज्य की सहायता से भय मिटे।
८. सुलह की जायेगी।
९. शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

मंत्र सिद्ध करने का फल (१०)

१. इस साधना में उपद्रव होगा।
२. मन निश्चित चंचल होगा।
३. यह साधना शुभ नहीं।
४. साधना गुरु कृपा से पूर्ण होगी।
५. प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६. साधना सफल नहीं होगी।
७. देरी बाद सिद्ध होगी।
८. परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९. इस सिद्धि को खेल मत समझो।

बाग लगाने का फल (११)

१. बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२. बाग देर से फल देगा।
३. बाग लगाने में लाभ नहीं।
४. बाग अधिक रुपया खा जावेगा।
५. जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६. बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७. बाग लाभप्रद होगा।
८. बाग लगाना कलह का मूल होना।
९. मनोरथ सफल होगा।

शासक के दर्शन का फल (१२)

१. विचार छोड़ दो कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा
५. लाभ हुआ चाहता है बैरी रोकता है
६ राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं है
७. राजा आदर करे जगत में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो पश्चाताप हो
९. राजा का दर्शन सफल होगा।

बन्ध मोक्ष का फल (१३)

१. खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२. नहीं छूटेगा, कितनी ही कोशिश करो
३. जल्दी छूटेगा, देर नहीं होगी।
४. रुपया खर्च करने से छूटेगा।
५. धन खर्च करने से छूटेगा।
६. देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७. सिफारिस से छूटेगा।
८. जल्दी छूट जाएगा।
९. अभी नहीं छूटेगा।

मकान बनाने में हानि-लाभ (१४)

१. मकान बनाओ सुख मिलेगा।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा।
३. इस कार्य में लाभ नहीं मत करो।
४. द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५. इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६. मकान निर्बल खराब बनेगा।
७. इस मकान से लाभ होगा।
८. इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९. पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

इच्छा पूरी होगी कि नहीं (१५)

१. इच्छा शीघ्र ही पूर्ण हो.
२. अधूरी इच्छा पूर्ण होगी.
३. इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४. निष्फलता है।
५. देर से होगी।
६. इच्छा पूर्ति में कुछ विघ्न, बाधायें।
७. इच्छा पूर्ण होगी।
८. इच्छा पूर्ण न होगी।
९. किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

दुकान करूं या नहीं (१६)

१. दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२. दुकान करने से लाभ नहीं।
३. दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४. दुकान से लाभ है, खर्च बहुत होगा।
५. दुकान मत करो, हानि है।
६. लाभ-हानि समान है न करो।
७. लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८. दुकान में लाभ न होगा।
९. दुकान में लाभ अच्छा होगा।

खेती करूं या नहीं (१७)

१. खेती में लाभ रहेगा।
२. वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३. खेती को कीड़े का भय है।
४. मनोकामना सिद्ध होगी।
५. जितनी मेहनत उतना लाभ।
६. खेती करो पर सावधानी से।
७. खेती में ओले का भय है।
८. वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९. खेती में हानि रहेगी मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१८)

१. यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२. ग्रह दशा खराब है, शांति करो।
३. यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४. चिन्ता न करो आराम होगा।
५. रोगी की आबी हवा बदली करो।
६. रोगी को पथ्य से रखो।
७. चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी है।
८. आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक है
९. होनहार में किसी का वश नहीं चलता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संतान भाग्य में क्या है फल (१९) १. सन्तान आपके भाग्य में नहीं। २. प्रेत शांति से होगी। ३. संतान होगी कमजोर। ४. इष्टदेव की पूजा से। ५. नेमव्रत से होगी। ६. गया या पिहोए विधि से। ७. होकर नष्ट होने का भय है। ८. संतान की आशा छोड़ो। ९. सप्ताह श्रवण से होगी।	**तबादले का प्रश्न (२३)** १. तबादला होगा। २. कुछ रुकावट के साथ होगा। ३. तबादले में विघ्न आवे। ४. तबादला अभी नहीं। ५. तबादला होगा। ६. तबादले में देर है। ७. तबादला जरूर होवे। ८. अभी ठहरो। ९. देरी से होगा।	**रोजगार प्रश्न फल (२७)** १. रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा। २. विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा ३. किसी प्रकार की ठेकेदारी करो। ४. जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा। ५. अब इस व्यापार में हानि होगी। ६. दुश्मन नुकसान करेंगे, सावधान। ७. रोजगार ठीक होने में देर है। ८. खोटे ग्रह की दशा है ! अभी चुप रहो ९. जो विचार है वह पूर्ण नहीं होगा।	**खोया पशु किधर मिलेगा (३१)** १. पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा। २. पश्चिम में गया है, मिलेगा। ३. उ.-प. के कोण में गया है, नहीं मिलेगा ४. उत्तर दिशा में ढूढ़ो, मिलेगा। ५. पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने से मिलेगा ६. उत्तर में ही मिलेगा। ७. पूर्वोत्तरकोण में गया है, मिलना कठिन है ८. दक्षिण में गया है मिलेगा। ९. पश्चिम में गया है खर्च से मिलेगा।	**इस काम में लाभ है कि नहीं (३५)** १. इस काम से सुख लाभ होगा। २. इस काम में दुःख एवं हानि होगी। ३. इस काम में हानि-लाभ समान होगा ४. इस काम में हानि दुःख होगा। ५. इसमें लाभ सुख है। ६. लाभ सुख मध्यम है। ७. सुख लाभ होगा। ८. सावधान, हानि दुःख होगा। ९. सुख लाभ होगा।	**इसे कोई रोग है या ग्रह-दोष या कोई और पीड़ा (३९)** १. कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है। २. रोग से ही पीड़ित है। ३. ग्रहकृत मानसिक रोग है। ४. प्रेत पीड़ा है, शांति करावें। ५. शत्रुकृत टोना आदि कसर है। ६. ग्रह पीड़ा है, शांति करावें। ७. शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें ८. रोग कष्टसाध्य है शिवार्चन करें। ९. कर्मजन्य फल से विवश है।
धर्म दीक्षा फल (२०) १. धर्म में प्रीति थोड़ी हो। २. धर्म में अधिक प्रीति हो। ३. धर्म करते रोग हो। ४. धर्म में यश बढ़े। ५. धर्म से आकुलता हो। ६. धर्म से नाम स्थिर रहे। ७. धर्म करते मृत्यु हो। ८. धर्म से वृत्ति उखड़े। ९. धर्म दीक्षा से शांति मिले।	**कर्ज लेने देने का परिणाम क्या है (२४)** १. यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है। २. जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे। ३. लेने देने का नतीजा खराब रहेगा। ४. अन्त में मुश्किल होगी। ५. दिया सो खोया, लिया सो कमाया। ६. इस जगह हानि-लाभ समान है। ७. लेने देने में कोई हरज नहीं। ८. अन्त समय अदालत में जाना होगा। ९. नफा नुकसान बराबर रहेगा।	**चोरी गई का फल (२८)** १. वस्तु शीघ्र मिलेगी। २. खर्च करने पर माल मिलेगा। ३. पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा। ४. चोर पक्का है माल न मिलेगा। ५. किसी की मदद से माल मिलेगा। ६. चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी है। ७. माल आधा नष्ट हो गया है। ८. माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ दो। ९. चोर छोटी आयु का है माल मिलेगा।	**मेरा यह वर्ष कैसा है (३२)** १. यह वर्ष शुभ रहेगा। २. वर्ष कष्टप्रद है। ३. वर्ष मध्यम है। ४. वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है। ५. वर्ष शुभ लाभप्रद है। ६. वर्ष साधारण है। ७. वर्ष शुभ है। ८. वर्ष हानिकारक है, ग्रह शांति करो। ९. इस वर्ष भाग्य वृद्धि होगी।	**मुझे यहां लाभ होगा या अन्य स्थान पर (३६)** १. अन्य स्थान पर जाओ लाभ होगा। २. इसी स्थान पर लाभ होगा, धैर्य करो ३. अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है। ४. अन्य स्थान पर लाभ रहेगा। ५. यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होगा ६. यहीं ठहरो दूसरी जगह भी कष्ट होगा ७. यह स्थान मत छोड़ो देर से लाभ होगा ८. दूसरी जगह जाना ठीक है। ९. यहींपरिश्रमकरो ग्रहशांतिसे लाभहोगा	**क्या नलकूपादि लगाना ठीक है (४०)** १. शीघ्र जल मिलेगा। २. खण्डित जल मिलेगा। ३. सुन्दर जल मिलेगा। ४. जल नहीं मिलेगा। ५. अमृत जल मिलेगा। ६. जल मिलेगा। ७. मिश्रित कम जल मिलेगा। ८. अभी जल नहीं मिलेगा। ९ जल कम वा क्षार मिलेगा।
अनाज खरीद फल (२१) १. अनाज में भारी लाभ होगा। २. नफा टोटा समान रहेगा। ३. घाटा रहेगा। ४. माल के खराब होने का भय है। ५. सांझी व्यापार न करे। ६. देर से बिकेगा। ७. अनाज में सवाये होंगे। ८. बेचना ठीक है, लेना मत। ९. प्रश्न फल अशुभ है।	**गर्भ में क्या है ? फल (२५)** १. इस गर्भ की सुखाशा नहीं। २. पुत्री का जन्म होगा। ३. शुभ लक्षण वाला पुत्र है। ४. लड़की होगी पर आयु कम। ५. गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे। ६. पुत्र का जन्म होगा। ७. दीर्घायु पुत्र होगा। ८. कन्या जन्मेगी। ९. जोड़े बालक होंगे।	**गुप्त चिंता का फल (२९)** १. मन की इच्छा पूर्ण होगी। २. काम बनने में कुछ देर है। ३. काम का नतीजा खराब होगा। ४. किसी का भरोसा मत करो। ५. चिंता न करो काम बनेगा। ६. मन की मन ही में रहेगी। ७. तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है। ८. देरी से काम बनेगा। ९. चिंता सच्ची है किसी की मदद लो।	**वह प्राणी जीवित है या नहीं (३३)** १. जीवित नहीं। २. वह जीवित है। ३. जीवित नहीं है। ४. जीवन में सन्देह है। ५. जीवित है। ६. जीवित नहीं है। ७. जीवित है। ८. जीवित नहीं। ९. जीवित है।	**यह खबर झूठी है या सच्ची (३७)** १. यह खबर ठीक सच्ची है। २. यह बात झूठी है। ३. बात सच्ची है। ४. बात झूठी है। ५. बात सत्य है। ६. सत्य है। ७. कुछ-कुछ सत्य है। ८. निराधार झूठी है। ९. सच्ची है।	**इस व्यक्ति से मेरा काम सिद्ध होगा कि नहीं (४१)** १. इस व्यक्ति द्वारा सफलता होगी। २. इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा। ३. कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी। ४. इससे काम सिद्ध न होगा। ५. इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जायेगा। ६. यह दिल से काम नहीं करेगा। ७. बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा। ८. इससे कुछ आशा न करो। ९. मिलो, कार्य बनेगा।
पुत्र गोद लेने का फल (२२) १. गोद लेने से नाम रहेगा। २. यह लड़का वफादार नहीं। ३. लड़का खर्च करायेगा। ४. लड़का अच्छा नहीं है। ५. अच्छी निभेगी। ६. सावधानी से गोद लेना। ७. बे-मुहब्बत निकलेगा। ८. घर में अनबन रहेगी। ९. सुखदायी नहीं है।	**विवाह शादी का फल (२६)** १. विवाह देरी से होगा। २. विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं। ३. विवाह न होगा। ४. विवाह जरूर होगा। ५. विवाह में रुकावटें होंगी। ६. किसी की खुशामद करो। ७. खर्च करो काम बनेगा। ८. थोड़ी विलम्ब से होगा। ९. स्त्री-गुण वाली मिलेगी।	**क्या मुझे सांझा व्यापार से लाभ होगा (३०)** १. साझे में लाभ होगा। २. सांझे में लाभ कम होगा। ३. सांझे में हानि का भय है। ४. लाभ होगा परन्तु ठहर कर। ५. हानि का भय है। ६. लाभ होगा। ७. लाभ होगा, अंत में गड़बड़ी का भय है। ८. लाभ की आशा व्यर्थ है। ९. लाभ होगा विश्वास रखो।	**यह व्यक्ति विश्वास योग्य है या नहीं (३४)** १. विश्वास योग्य है। २. विश्वास योग्य कम है। ३. विश्वास योग्य नहीं। ४. ईमादार है। ५. भरोसा कर सकते हैं। ६. भरोसा मत करो। ७. विश्वास पात्र है। ८. विश्वास योग्य नहीं है। ९. विश्वास पात्र है।	**मेरा आज का दिन अच्छा है या बुरा ? (३८)** १. आज का दिन अच्छा है। २. आज सावधान रहें। ३. अच्छा दिन है। ४. खराब है। ५. अच्छा दिन है। ६. अशुभ चिन्ताप्रद है। ७. शुभ दिन है। ८. बहुत ज्यादा खराब है। ९. मध्यम है।	**मुझे इस काम में सफलता मिलेगी, कि नहीं ? (४२)** १. सफलता की कम आशा है। २. बड़े परिश्रम से सफलता मिलेगी। ३. सफलता मिलेगी। ४. सफल होना मुश्किल है। ५. सफल हो जाओगे, डटे रहो। ६. सफलता देर से मिलेगी। ७. किसी की सहायता से सफलता मिले ८. सफलता की आशा नहीं। ९. निराशा के बाद सफलता मिले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०४५ वि.)

समय शुद्धि

(१) ज्येष्ठ अधिक मास—इस वर्ष ज्येष्ठ अधिक मास है । अत: ज्येष्ठ प्रविष्टा ३, तदनुसार १६ मई सन् १९८८ ई. से आषाढ़ प्रविष्टा १, तदनुसार १४ जून '८८ तक कोई भी शुभ कृत्य न होगा ।

(२) गुरु अस्त—वैशाख प्रविष्टे ११ से ज्येष्ठ प्रविष्टे ५ (२३ अप्रैल से १८ मई '८८) तक गुरु अस्त रहेगा ।

(३) शुक्र अस्त—ज्येष्ठ प्रविष्टे २८ से आषाढ़ प्रविष्टे ५ (१० से १८ जून '८८) तक शुक्र पश्चिम में अस्त रहेगा । इसके बाद शुक्र पुन: फाल्गुन प्रविष्टे ७ (१८ फर. '८९) को पूर्व में अस्त होकर संवत् के अन्त तक अदृश्य ही रहेगा ।

अक्षांश भेद से भारत के विभिन्न प्रदेशों में गुरु-शुक्रोदयास्त

अक्षांश→	+१५°	+२५°	+३०°	+३५°
गुरु अस्त	२३ अप्रै. '८८	२३ अप्रै. '८८	२३ अप्रै. '८८	२३ अप्रै. '८८
गुरु उदित	१६ मई '८८	१८ मई '८८	१९ मई '८८	२१ मई '८८
शुक्र पश्चिम में अस्त	१० जून '८८	१० जून '८८	१० जून '८८	९ जून '८८
शुक्र पूर्व में उदित	१९ जून '८८	१९ जून '८८	१९ जून '८८	२० जून '८८
शुक्र पूर्व में अस्त	३ मार्च '८९	२२ फर. '८९	१८ फर. '८९	११ फर. '८९

इस वर्ष शुक्रास्त की तिथि में भारी अन्तर—इस वर्ष फरवरी-मार्च '८९ में होने वाले शुक्रास्त की तिथि में अक्षांश भेद से दक्षिण और उत्तर भारत के विभिन्न नगरों में लगभग ३० दिन तक का अन्तर देखने में मिलेगा । सान्ध्यकालीन लालिमा की अक्षांश भेद से होने वाली न्यूनाधिकता के कारण ऐसा अन्तर कई बार उत्पन्न होता है ।

ध्यान रहे—यहां नीचे दिये गये विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्त की तारीखें पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., दिल्ली आदि की ही ली गई हैं । अन्य प्रान्तों के लिए विवाहादि मुहूर्त्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में उदयास्त की तारीखों का ध्यान रखना जरूरी है ।

यदि गुरु-शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर ही विवाह-मुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी, मांइयां-हत्थ (माष हस्त) आदि विवाहांगकृत्यों का प्रारम्भ गुरु-शुक्र के अस्त होने से पहले ही कर लेना चाहिए ।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा ये चार विवाह के नक्षत्र कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से हम यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं । अन्य ऋग्वेदियों, सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं ।

प्रमाणार्थ देखिये—पारस्कर गृह्य (कात्यायन) सूत्र—"उद्गयने आपूर्यमाणपक्षे कुमार्या: पाणिगृह्णीयात् ॥१॥" "त्रिषु-त्रिषु उत्तरादिषु ॥२॥" हरिहर भाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—"उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि तेषु कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु, उ.फा., ह., चित्रा । उ.षा., श्र., ध. । उ.भा., रे., अश्विनी" इसी प्रमाण अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सागर के छपे) के पृष्ठ २१८ पर "विवाहे नक्षत्र निर्णय:" में वेद-व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—"चित्रा-श्रवण-धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि, तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम् ।"

और भी देखिये—जैसे मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत मुहूर्त्त में अग्राह्य है—(मरणञ्च भौमे) और वही मंगलवार सामवेदियों के यज्ञोपवीत में शुभ होने से ग्राह्य है । ऐसे ही इस नक्षत्र-चतुष्टयी का भी विवाह में वेद व सूत्र भेद से ग्राह्याग्राह्यत्व (शुभाशुभत्व) समझना चाहिए । उपरोक्त वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी हमने विवाह-मुहूर्त्त लिखे हैं, पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें ।

मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैंडर्ड टाईम (रेलवे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें ।

यहां विवाह मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है । सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है । भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है । कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है ।

यहां दिए गए मुहूर्तों में जहां युति, वेध, कर्त्तरी, दग्धातिथि, अष्टमस्थ भौम, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र-शुक्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध माना गया है ।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०४५ वि.)

सूचना—(१) कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. के घं. मि. दिए गए हैं ।
(२) तारीख वाले कालम में सूर्योदयकालिक तारीखें लिखी गई हैं ।

मास पक्ष	ति. वार	प्रवि.	तारीख १९८८ ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
द्वि.(शु.)ज्ये.शु.	८ बु.	आषा. ९	जून २२	हस्त	IIIIIIISII	ल. २ (मं. दा.), (मीन में दग्धा)
,, ,, ,,	९ गु.	,, १०	,, २३	हस्त	IIIIIऽरो.ISII	ल. गोधूलि
,, ,, ,,	९ शु.	,, ११	,, २४	स्वा.	IIIIIIISII	ल. १ (२५।११ बाद) (चं. दा.)
,, ,, ,,	११ र.	,, १३	,, २६	अनु.	ऽसू.SIIIऽअ.IIII	ल. १ (२६।३१ बाद) (चं.दा.), २ (मं.चं.दा.)
,, ,, ,,	१२ चं.	,, १४	,, २७	अनु.	ऽसू.SIIIIIIII	दि. ल. ६, गोधू., १० (श.दा.), १२(२४।५० तक) (शु. दा.)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (संवत् २०४५ विक्रमी)

मास पक्ष	ति. वार	प्रवि.	तारीख १९८८ ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
आषा. कृ.	१ गु.	आषा. १७	जून ३०	उ.षा.	।।।ऽबु.।ऽचौ.।।।।	ल. १० (२१।२४ बाद) (श.दा.), १२ (शु.दा.), १, २, (२६।४१ से २८।२२ तक) (मं.दा.), (पादवेध दृष्टचा बुधवेध नहीं), (गणित से क्रांति-साम्य नहीं)
,, ,,	२ शु.	,, १८	जुला. १	श्रव.	।ऽ।।।।।।।	ल. १ (२६।२ बाद), २
,, ,,	३ श.	,, १९	,, २	धनि.	।।।।।ऽरो.।।।।	लग्न गोधूलि १, २
,, ,,	६ मं.	,, २२	,, ५	उ.भा.	ऽचं.बु.श.।।।।ऽ अ.ऽ।।।	ल. गोधूलि. १०(श.दा.), १, २
,, ,,	७ बु.	,, २३	,, ६	रेवती	ऽमं.शु.।।।।।।ऽ।ऽ	ल. गोधू. १०(श.दा.), २, (मेष ल. में दग्धातिथि)
,, शु.	५ मं.	श्राव. ४	,, १९	उ.फा.	।।।।ऽरा.ऽनृ.ऽऽ।ऽ	ल. गोधू. २(२७।१९ तक) दग्धापरिहार है आवश्यके
,, ,,	८ शु.	,, ७	,, २२	स्वाती	।ऽ।।।ऽचौ.।ऽ।।	ल. गोधूलि, १ (चं.दा.)
,, ,,	१० र.	,, ९	,, २४	अनु.	।।।।।ऽरो.।ऽ।।	ल. गोधू., १ (चं.दा.), २ (चं.दा.), (गणित से क्रांतिसाम्य नहीं)।
,, ,,	१४ गु.	,, १३	,, २८	उ.षा.	।।।ऽशु.।।।ऽ।।	ल. १ (२३।२८ बाद), २ (२३।२८ तक शु. पादवेध)
,, ,,	१५ शु.	,, १४	,, २९	श्रवण	।।।।ऽसू.ऽनृ.।ऽ।।	लग्न १ (शु. दा.), २ (२४।५९ तक)
,, ,,	१५ शु.	,, १४	,, २९	धनि.	।।।।।ऽनृ.ऽ।।।	ल. २ (२६।११ बाद)
श्राव. कृ.	२ श.	,, १५	,, ३०	धनि.	।।।।।ऽनृ.ऽ।।।	लग्न गोधूलि
,, ,,	५ मं.	,, १८	अग. २	रेवती	।।।।।।।ऽ।ऽ	ल. गो., १ (शु.दा.), २, (दग्धा का परिहार है)
,, ,,	९ श.	,, २२	,, ६	रोहि.	।।।।।ऽअ.।ऽ।।	ल. गोधूलि, १ (२२।४८ तक), (शु.दा.)
,, ,,	१० र.	,, २३	,, ७	मृग.	।।।।।।ऽऽ।।	ल. गोधूलि, १ (शु.दा.)
,, शु.	१ श.	,, २९	,, १३	मघा	।।ऽबु.ऽचं.।।।।।।	ल. १ (शु.दा.), २
,, ,,	५ गु.	भाद्र ३	,, १८	स्वाती	।।।।।ऽअ.।।।।	ल. गोधू., १ (चं.शु.दा.), ४
,, ,,	७ श.	,, ५	,, २०	अनु.	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल. १(शु.दा.), २(चं.दा.), ४
,, ,,	१२ बु.	,, ९	,, २४	उ.षा.	ऽसू.।।।।ऽरो.।।।।	ल. गोधूलि, १ (शु.दा.), २ (२३।१४ बाद)
भाद्र कृ.	१ र.	,, १३	,, २८	उ.भा.	ऽश.।।।ऽबु.।।।।।	ल. ४ (२८।१५ बाद)

मास पक्ष	ति. वार	प्रवि.	तारीख १९८८ ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
भाद्र कृ.	२ चं.	भाद्र १४	अग. २९	उ.भा.	ऽश.।।।ऽबु.।।।।।	लग्न गोधूलि
,, ,,	७ शु.	,, १८	सितं. २	रोहि.	।ऽऽगु.।।।।ऽ।।	लग्न १, ४
,, ,,	८ श.	,, १९	,, ३	रोहि.	।ऽऽगु.।।ऽरो.।ऽ।।	दि. ल. ८ (१३।२२ तक) (रा. गु.चं.दा.) गोधूलि
,, ,,	८ श.	,, १९	,, ३	मृग.	।।।।।ऽरो.ऽऽ।।	ल. १ (२०।४४ बाद), ४
,, ,,	९ र.	,, २०	,, ४	मृग.	।।।।।।ऽऽ।।	ल. गोधू., १ (२०।३८ तक)
,, शु.	१० बु.	आश्वि. ६	,, २१	उ.षा.	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	दि. ल. ८(११।४८ तक), (गु.रा.दा.), २ (शु.दा.)
,, ,,	१० बु.	,, ६	,, २१	श्रव.	।।।।।।।।।	ल. ४(२५।२५ बाद)(चं.दा.)
,, ,,	११ गु.	,, ७	,, २२	श्रव.	।।।।।ऽचौ.।।।।	ल. २(२२।१२ तक)(शु.दा.)
,, ,,	११ गु.	,, ७	,, २२	धनि.	।।।ऽशु.ऽऽचौ.ऽ।।।	ल. ४ (चं.दा.), (पादवेध से शुक्रवेध नहीं)
,, ,,	१२ शु.	,, ८	,, २३	धनि.	।।।ऽशु.ऽऽचौ.ऽ।।।	दि. ल. ८ (गु.रा.दा.) (पाददृष्टि से शुक्रवेध नहीं)
आश्वि. शु.	३ शु.	,, २९	अक्टू. १४	अनु.	।।।।।।।।।	दि. ल. १० (श.शु.दा.), १ (चं.दा.), २ (११।५९ तक) (चं.दा.)
,, ,,	९ बु.	कार्ति. ४	,, १९	श्रव.	।।।।।ऽअ.।।।।	दि. ल. ८ (९।० बाद) (गु.रा.दा.), २ (कर्क में चन्द्रकर्त्तरी दोष)
,, ,,	१३ र.	,, ८	,, २३	रेवती	।।ऽ।ऽशु.ऽबु.ऽ चौ.।।।।	ल. ४ (२३।१४ बाद), (पाददृष्टचा शुक्रवेध नहीं)
,, ,,	१४ चं.	,, ९	,, २४	रेवती	।ऽ।ऽशु.ऽबु.।।।।।	ल. ८ (गु.रा दा.), १० (१३।१९ तक शु.श.दा.) पाददृष्टचा शुक्रवे. नहीं है
कार्ति. कृ.	४ शु.	,, १३	,, २८	मृग.	।।।।।ऽअ.।ऽ।।	ल. ४ (शु.दा.)
,, ,,	९ बु.	,, १८	नवं. २	मघा	।।।।।।।ऽ।।	ल.४(२४।२ बाद, शु.दा.) (२४।२ तक क्रां.सां. है)
,, ,,	९ गु.	,, १९	,, ३	मघा	।।।।।ऽरो.।ऽ।।	दि.ल.८ (गु.रा.दा.), गो. २
,, शु.	१ गु.	,, २६	,, १०	अनु.	।।।।ऽगु.ऽचौ.।।।।	लग्न ४ (शु.दा.)
,, ,,	२ शु.	,, २७	,, ११	अनु.	।।।।ऽगु.।।।।।	दि. ल. १० (श.दा.)
मार्ग. कृ.	१ गु.	मार्ग. १०	,, २४	रोहि.	।।।।ऽबु.सू.ऽरो. ।ऽ।।	दि. ल. १० (श.दा.) ४ (२२।४७) तक
,, ,,	२ शु.	,, ११	,, २५	मृग.	ऽरा.।।।।।ऽ।।।	दि.ल.१०(११।४४ तक) (शु.दा.), गोधू., रा. ल. ४ (२२।१८ तक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (संवत् २०४५ विक्रमी)

मास पक्ष	ति. वार	प्रवि.	तारीख १९८८ ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
मार्ग. कृ.	९ शु.	मार्ग. १८	दिसं. २	उ.फा.	ऽबु.।।।।।ऽऽ।।	लग्न गोधूलि, ४
,, ,,	१० श.	,, १९	,, ३	उ.फा.	ऽबु.।।।।ऽरो.ऽऽ।ऽ	दि. ल. १० (श.दा.), (दग्धा का परिहार है)
,, ,,	११ र.	,, २०	,, ४	चित्रा	।।।।।।ऽऽ।।	ल. गो., ४(२०।५३ तक), (२०।५३ बाद मृत्युपंचक)
,, शु.	३ चं.	,, २८	,, १२	उ.षा.	।।।।।ऽरो.।।।।	ल. गोधूलि
,, ,,	५ मं.	,, २९	,, १३	श्रव.	।।।।।ऽरो.।ऽ।।	ल. गोधू., (१७।३१ बाद मृत्युपंचक)
पौष ,,	१२ बु.	माघ ६	जन. १८	रोहि.	।।।।।ऽनृ.।।।ऽ	दि. ल. १२, (दग्धा का परिहार है), (गणित से क्रांतिसाम्य नहीं ।)
माघ कृ.	४ गु.	,, १४	,, २६	उ.फा.	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १२(९।४९ बाद) (चं.दा.), गोधूलि

मास पक्ष	ति. वार	प्रवि.	तारीख १९८९ ई.	विवाह नक्षत्र	दशदोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
माघ कृ.	५ शु.	माघ १५	जन. २७	हस्त	।।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	दि. ल.१२ (चं.दा.), गोधू.
,, ,,	६ श.	,, १६	,, २८	चित्रा	ऽचं.।।।।।।।।।	दि. ल. १२ (चं.दा.)
,, ,,	९ मं.	,, १९	,, ३१	अनु.	ऽशु.।।।ऽगु.ऽरोऽऽ।।	ल. गोधूलि, आवश्यके
,, शु.	४ गु.	,, २८	फर. ९	उ.भा.	।।।।।ऽरो.।।।।	दिन लग्न २
,, ,,	५ शु.	,, २९	,, १०	रेवती	ऽश.ऽ।।।।ऽऽ।।	दि. ल. २, (गोधूलि में मृत्युपंचक)
,, ,,	१० बु.	फाल्गु. ४	,, १५	मृग.	।ऽ।ऽ।बु.।ऽश्र.।ऽ।।	ल. २ गोधू., (पाददृष्टि से मीन लग्न में बुधवेध है)

सं. २०४६ वि. में गुरु-शुक्रोदयास्त—वि. सं. २०४५ की माघ शुक्ल त्रयोदशी को पूर्व में अस्त शुक्र वि. सं. २०४६ की वैशाख कृष्ण दशमी को पश्चिम में उदित होगा। शुक्र फिर इसी वर्ष माघ कृष्ण पंचमी को अस्त होकर माघ कृष्ण एकादशी को उदित होगा। इस वर्ष गुरु ज्येष्ठ कृष्ण नवमी को अस्त होकर आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी को उदित होगा।

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०४५ वि.)

नीचे कोष्ठक में अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की विस्तृत सूची दी गई है। अशुद्ध मुहूर्तों के आगे उन दोषों का निर्देश किया गया है, जिनके कारण वहां विवाह नहीं हो सकता।

तिथि	वार	तारीख १९८८	विवाह नक्षत्र	दोष
१२ अप्रैल तक मीनस्थ सूर्य				
वैशा. शु.	१ र.	अप्रै. १७	अश्वि.	क्षीण चन्द्र, सूर्ययुति
,, ,,	३ मं.	,, १९	रोहि.	शुक्रयुति
,, ,,	४ बु.	,, २०	रोहि.	भद्रा, शुक्रयुति
,, ,,	४ बु.	,, २०	मृग.	लग्नाभाव
ज्येष्ठ अधिकमास, गुरु-शुक्रास्त (२३ अप्रैल से १८ जून तक)				
द्वि.ज्ये. शु.	९ गु.	जून २३	चित्रा	भौमवेध, राहुवेध
,, ,,	९ शु.	,, २४	चित्रा	भौम-राहुवेध
,, ,,	१० श.	,, २५	स्वाती	मृत्यु पंचक
,, ,,	१३ मं.	,, २८	मूल	शनियुति
,, ,,	१५ बु.	,, २९	मूल	शनियुति
आषा. कृ.	२ शु.	जुला. १	उ.षा.	वैधृति
,, ,,	३ श.	,, २	श्रव.	लग्नाभाव
,, ,,	४ र.	,, ३	धनि.	लग्नाभाव
,, ,,	७ बु.	,, ६	उ.भा.	लग्नाभाव
,, ,,	९ गु.	,, ७	रेव.	लग्नाभाव

तिथि	वार	तारीख १९८८	विवाह नक्षत्र	दोष
आषा. कृ.	९ गु.	जुला. ७	अश्वि.	केतुवेध
,, ,,	१० शु.	,, ८	अश्वि.	केतुवेध
,, ,,	१२ र.	,, १०	रोहि.	शुक्रयुति
आषा. शु.	२ श.	,, १६	मघा	संक्रान्ति, व्यतिपात
,, ,,	३ र.	,, १७	मघा	व्यतीपात
,, ,,	४ चं.	,, १८	उ.फा.	परिघार्ध
,, ,,	५ मं.	,, १९	हस्त	भौमवेध
,, ,,	६ बु.	,, २०	हस्त	भौमवेध
,, ,,	७ गु.	,, २१	हस्त	भौमवेध
,, ,,	७ गु.	,, २१	चित्रा	राहुवेध
,, ,,	८ शु.	,, २२	चित्रा	राहुवेध
,, ,,	९ श.	,, २३	स्वाती	गणित से क्रान्तिसाम्य,
,, ,,	११ चं.	,, २५	अनु.	लग्नाभाव
,, ,,	१२ मं.	,, २६	मूल	शनियुति
,, ,,	१३ बु.	,, २७	मूल	शनियुति
,, ,,	१४ गु.	,, २८	श्रव.	लग्नाभाव
श्राव. कृ.	४ चं.	अग. १	उ.भा.	भौमयुति

तिथि	वार	तारीख १९८९	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. कृ.	५ मं.	अग. २	उ.भा.	भौमयुति
,, ,,	६ बु.	,, ३	रेव.	लग्नाभाव
,, ,,	६ बु.	,, ३	अश्वि.	भुजङ्गपात, केतुवेध
,, ,,	७ गु.	,, ४	अश्वि.	भुजङ्गपात, केतुवेध
,, ,,	१० र.	,, ७	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,,	११ चं.	,, ८	मृग.	लग्नाभाव
श्राव. शु.	३ चं.	,, १५	उ.फा.	मासान्त, भौमवेध
,, ,,	४ मं.	,, १६	उ.फा.	भौमवेध, संक्रान्ति
,, ,,	४ मं.	,, १६	हस्त	संक्रान्ति
,, ,,	५ बु.	,, १७	हस्त	लग्नाभाव
,, ,,	५ बु.	,, १७	चित्रा	राहुवेध
,, ,,	५ गु.	,, १८	चित्रा	राहुवेध
,, ,,	६ शु.	,, १९	स्वती	लग्नाभाव
,, ,,	८ र.	,, २१	अनु.	लग्नाभाव
,, ,,	९ चं.	,, २२	मूल	शनियुति
,, ,,	१० मं.	,, २३	मूल	शनियुति
,, ,,	१३ गु.	,, २५	उ.षा.	लग्नाभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अशुद्ध विवाह मुहूर्त (सं. २०४५ वि.)

तिथि	वार	तारीख १९८८	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. शु.	१३ गु.	अग. २५	श्रव.	सूर्यवेध
,, ,,	१४ शु.	,, २६	श्रव.	सूर्यवेध
,, ,,	१४ शु.	,, २६	धनि.	लग्नाभाव
,, ,,	१५ श.	,, २७	धनि.	लग्नाभाव
भाद्र. कृ.	२ चं.	,, २९	रेव.	भुजङ्गपात, भौमयुति
,, ,,	४ मं.	,, ३०	रेव.	भुजङ्गपात, भौमयुति
,, ,,	४ मं.	,, ३०	अश्वि.	सूर्य-केतुवेध
,, ,,	५ बु.	,, ३१	अश्वि.	सूर्य-केतुवेध
भाद्र. शु.	१ चं.	सितं. १२	उ.फा.	ग्रहणशूल
,, ,,	१ चं.	,, १२	हस्त	ग्रहणशूल-भौमवेध
,, ,,	२ मं.	,, १३	हस्त	ग्रहणशूल-भौमवेध
,, ,,	२ मं.	,, १३	चित्रा	ग्रहणशूल
,, ,,	३ बु.	,, १४	चित्रा	ग्रहणशूल
,, ,,	३ बु.	,, १४	स्वाती	ग्रहणशूल-राहुवेध
,, ,,	४ गु.	,, १५	स्वाती	राहुवेध-मासान्त
,, ,,	५ शु.	,, १६	अनु.	संक्रान्ति
,, ,,	६ श.	,, १७	अनु.	मृत्यु पंचक
,, ,,	७ र.	,, १८	मूल	भद्रा, शनियुति
,, ,,	८ चं.	,, १९	मूल	शनियुति
,, ,,	९ मं.	,, २०	उ.षा.	लग्नाभाव
,, ,,	१५ र.	,, २५	उ.भा.	प्रोष्ठपदी, भौमयुति
श्राद्ध पक्ष (२६ सितं. से १० अक्टू.'८८)				
आश्वि. शु.	१ मं.	अक्टू. ११	चित्रा	क्षीणचन्द्र, वैधृति
,, ,,	१ मं.	,, ११	स्वा.	राहुवेध
,, ,,	२ बु.	,, १२	स्वा.	राहुवेध
,, ,,	४ श.	,, १५	अनु.	मासान्त, भद्रा
,, ,,	५ र.	,, १६	मूल	संक्रान्ति, शनियुति
,, ,,	६ चं.	,, १७	मूल	शनियुति
,, ,,	७ मं.	,, १८	उ.षा.	मृत्यु पंचक
,, ,,	९ बु.	,, १९	उ.षा.	लग्नाभाव
,, ,,	१० गु.	,, २०	श्रव.	नक्षत्रान्त
,, ,,	१० गु.	,, २०	धनि.	भुजङ्गपात
,, ,,	१२ श.	,, २२	उ.भा.	भौमयुति
,, ,,	१३ र.	,, २३	उ.भा.	भौमयुति
,, ,,	१४ चं.	,, २४	अश्वि.	केतुवेध
,, ,,	१५ मं.	,, २५	अश्वि.	केतुवेध

तिथि	वार	तारीख १९८८	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्ति. कृ.	३ गु.	अक्टू. २७	रोहि.	मृत्यु पंचक
,, ,,	४ शु.	,, २८	रोहि.	परिवार्घ
,, ,,	५ श.	,, २९	मृग.	लग्नाभाव
,, ,,	१० शु.	नवं. ४	उ.फा.	लग्नाभाव
,, ,,	११ श.	,, ५	उ.फा.	वैधृति
,, ,,	११ श.	,, ५	हस्त	भौमवेध, वैधृति
,, ,,	१२ र.	,, ६	हस्त	भौमवेध
,, ,,	१३ चं.	,, ७	हस्त	क्षीणचन्द्र, भौमवेध
,, ,,	१३ चं.	,, ७	चित्रा	क्षीणचन्द्र
कार्ति. शु.	३ श.	,, १२	मूल	शनियुति
,, ,,	४ र.	,, १३	मूल	शनियुति
,, ,,	५ चं.	,, १४	उ.षा.	भुजङ्गपात, मासान्त
,, ,,	६ मं.	,, १५	उ.षा.	संक्रान्ति, भुजङ्गपात
,, ,,	६ मं.	,, १५	श्रव.	संक्रान्ति
,, ,,	७ बु.	,, १६	श्रव.	लग्नाभाव
,, ,,	७ बु.	,, १६	धनि.	लग्नाभाव
,, ,,	८ गु.	,, १७	धनि.	मृत्यु पंचक
,, ,,	१० श.	,, १९	उ.भा.	भीष्मपंचक, भौमयुति
कार्ति. शु.	११ र.	नवं. २०	उ.भा.	भीष्मपंचक, भौमयुति
,, ,,	११ र.	,, २०	रेव.	भीष्मपंचक
,, ,,	११ र.	,, २०	अश्वि.	केतुवेध-भीष्मपंचक
,, ,,	१३ चं.	,, २१	अश्वि.	भीष्मपंचक-केतुवेध
,, ,,	१५ बु.	,, २३	रोहि.	भीष्मपंचक
मार्ग. कृ.	१ गु.	,, २४	मृग.	लग्नाभाव
,, ,,	६ मं.	,, २९	मघा	भद्रा
,, ,,	७ बु.	,, ३०	मघा	भद्रा, वैधृति
,, ,,	१० श.	दिसं. ३	हस्त	भौमवेध
,, ,,	११ र.	,, ४	हस्त	भौमवेध
,, ,,	११ चं.	,, ५	चित्रा	मृत्यु पंचक
,, ,,	११ चं.	,, ५	स्वाती	राहुवेध
,, ,,	१२ मं.	,, ६	स्वती	राहुवेध
मार्ग. शु.	१ श.	,, १०	मूल	भुजङ्गपात, शनियुति
,, ,,	२ र.	,, ११	उ.षा.	लग्नाभाव
,, ,,	३ चं.	,, १२	श्रव.	लग्नाभाव
,, ,,	५ मं.	,, १३	धनि.	मृत्यु पंचक
,, ,,	६ बु.	,, १४	धनि.	मासान्त

तिथि	वार	तारीख	विवाह नक्षत्र	दोष
धनुस्थ रवि (१५ दिसं.'८८ से १२ जन.'८९)				
पौष शु.	६ शु.	जन. १३	उ.भा.	संक्रान्ति
,, ,,	६ शु.	,, १३	रेव.	संक्रान्ति
,, ,,	७ श.	,, १४	रेव.	लग्नाभाव
,, ,,	७ श.	,, १४	अश्वि.	केतुवेध, भौमयुति
,, ,,	९ र.	,, १५	अश्वि.	केतुवेध, भौमयुति
,, ,,	११ मं.	,, १७	रोहि.	लग्नाभाव
,, ,,	१२ बु.	,, १८	मृग.	सूर्यवेध
,, ,,	१३ गु.	,, १९	मृग.	सूर्यवेध
माघ. कृ.	२ चं.	,, २३	मघा	(२३।१५ वाद सूर्यवेध एवं मृत्यु पंचक)
,, ,,	३ मं.	,, २४	मघा	सूर्यवेध
,, ,,	३ बु.	,, २५	उ.फा.	लग्नाभाव
,, ,,	४ गु.	,, २६	हस्त	लग्नाभाव
,, ,,	६ श.	,, २८	हस्त	लग्नाभाव
,, ,,	७ र.	,, २९	चित्रा	लग्नाभाव
,, ,,	७ र.	,, २९	स्वाती	राहुवेध, भुजङ्गपात
,, ,,	८ चं.	,, ३०	स्वाती	भुजङ्गपात, राहुवेध
,, ,,	१० बु.	फर. १	अनु.	भौमवेध
,, ,,	११ गु.	,, २	मूल	लग्नाभाव
,, ,,	१२ शु.	,, ३	मूल	दग्धा का परिहार नहीं
माघ. शु.	१ मं.	,, ७	धनि.	क्षीण चन्द्र, सूर्ययुति
,, ,,	३ बु.	,, ८	उ.भा.	लग्नाभाव
,, ,,	४ गु.	,, ९	रेव.	लग्नाभाव
,, ,,	५ शु.	,, १०	अश्वि.	लग्नाभाव
,, ,,	६ श.	,, ११	अश्वि.	मासान्त
,, ,,	८ चं.	,, १३	रोहि.	मृत्यु पंचक
,, ,,	९ मं.	,, १४	रोहि.	वैधृति
,, ,,	९ मं.	,, १४	मृग.	(पाद विचार से बुधवेध)

१८ फरवरी १९८९ ई. से संवत् के अन्त तक शुक्रास्त है।

मुहूर्तों में ग्रहण दोष :—जिस दिन सूर्य या चन्द्र का ग्रहण हो वह दिन और ग्रहण के दिन के बाद वाले तीन दि[illegible] (ये चार दिन) शुभ कृत्यों के लिए वर्जित किए जाते हैं [illegible] ग्रहण दोष को "ग्रहण शूल" कहा जाता [illegible]

प्रागेकाहस्त्र्यहं पश्चात्तद्दिनं [illegible]
त्यजेत् [illegible] सर्व [illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सं. २०४५ में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०४५ में कुल कितने विवाह-मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए यहां नीचे "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" दे रहे हैं। सं. २०४५ के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पहले दिए गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह-मुहूर्त्त में किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक" में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह-मुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि अमुकराशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाले दिन भी इस कोष्ठक में दिए गए हैं। लड़का-लड़की की राशियों वाले कालमों में जो-जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों में लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मकर राशि वाले लड़के और धनुराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०४५ में अगस्त के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे अगस्त की केवल २, ६, ७ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कालम में धनु के आगे अगस्त की ६, ७, १३, १८, २०, २४ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि अग. में मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह अगस्त में केवल ६, ७ तारीखों को ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं। उपरोक्त प्रकार से विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए।

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०४५ वि.) (१९ मार्च' ८८ से ६ अप्रैल' ८९ तक)

(कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. के घं. मि. हैं)

जन्म या नाम राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष	जून २२, २३, २४, ३०, जुला. १, २, ५, ६, अग. १८, २४, २८, २९, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १९, २३, २४, २८, नवं. २, ३, जन. १८, २६, २७, २८, फर. ९, १०, १५।	१३ अप्रैल से १३ जून १६ अग. से १५ सितं. १६ अक्टू. से १४ नवं. १५ दिसं. से १२ जन.	जून २२, २३, २४, ३०, जुला. १, २, ५, ६, १९, २२, २८, २९, ३०, अग. २, ६, ७, १३, १८, २४, २८, २९, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १९, २३, २४, २८, नवं. २, ३, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, फर. ९, १०, १५।	वर्षारम्भ से १९ जून
वृष	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ बाद), जुला. १, २, ५, ६, १९, २२, २४, २८, २९, ३०, अग. २, ६, ७, सितं. २१, २२, २३, अक्टू. १४, १९, २३, २४, २८, नवं. १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३९ बाद), ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ९, १०, १५।	१४ मई से १५ जुला. १६ सितं. से १० अक्टू. १५ नवं. से १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर.	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ बाद), जुला. १, २, ५, ६, १९, २२, २४, २८, २९ ३०, अग. २, ६, ७, १८, २०, २४ (२३।१४ बाद), २८, २९, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १९, २३, २४, २८, नवं. १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३९ बाद), ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ९, १०, १५।	पूरा वर्ष
मिथुन	जून २४, २६, २७, ३० (२६।४१ तक), जुला. २ (२७।४४ बाद), ५, ६, २२, २४, ३०, अग. २, ६, ७, १३, १८, २०, २४ (२३।१४ तक), २८, २९, सितं. २, ३, ४, अक्टू. २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३९ तक), फर. १५।	१४ जून से १५ अग. १६ अक्टू. से १४ नवं. १५ दिसं. से १२ जन. १२ फर. से १३ मार्च	जून २४, २६, २७, ३० (२६।४१ तक), जुला. २ (२७।४४ बाद), ५, ६, २२, २४, ३०, अग. २, ६, ७, १३, १८, २०, २४ (२३।१४ तक), २८, २९, सितं. २, ३, ४, २३, अक्टू. १४, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३९ तक), जन. १८, ३१, फर. ९, १०, १५।	२० जून से वर्षान्त तक
कर्क	जुला. १९, २४, २८, २९, अग. २, ६, ७, १३, २०, २४, २८, २९, सितं. २, ३, ४, २१, २२, अक्टू. १४, नवं. २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ९, १०।	१६ जुला. से १५ सितं. १५ नवं. से १४ दिसं. १३ जन. से ११ फर. १४ मार्च से १२ अप्रै.	जून २२, २३, २६, २७, ३०, जुला. १, २ (२७।४४ तक), ५, ६, १९, २४, २८, २९, अग. २, ६, ७, १३, २०, २४, २८, २९, सितं. २, ३, ४, २१, २२, अक्टू. १४, १९, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ९, १०, १५।	वर्षारम्भ से १९ जून

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०४५ वि.)

(कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. के घं. मि. हैं)

जन्म या नाम राशि	लड़का	लड़के के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़की के लिए पूज्य गुरु
सिंह	जून २२, २३, २४, ३०, जुला. १, २, अग. १८, २४, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १६, २८, नवं. २, ३, जन. १८, २६, २७, २८, फर. १५ ।	१३ अप्रै. से १३ मई १६ अग. ,, १५ अक्टू. १५ दिसं. ,, १२ जन. १२ फर. ,, १३ मार्च	जून २२, २३, २४, ३०, जुला. १, २, १६, २२, २८, २६, ३०, अग. ६, ७, १३, १८, २४, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १६, २८, नवं. २, ३, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, फर. १५ ।	२० जून से वर्षान्त तक
कन्या	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ बाद), जुला. १, २, ५, ६, १६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, १३, सितं. २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ ।	१४ मार्च से १२ अप्रै. १४ मई ,, १३ जून १६ सितं. ,, १४ नवं. १३ जन. ,, ११ फर.	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ बाद), जुला. १, २, ५, ६, १६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, १३, १८, २०, २४, (२३।१४ बाद), २८, २६, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ ।	वर्षारम्भ से १६ जून तक
तुला	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ तक), जुलाई २ (२७।४४ बाद), ५, ६, १६, २२, २४, ३०, अग. २, १३, १८, २०, २४(२३।१४ तक), २८, २६, सितं. ४, अक्टू. २३, २४, नवं. २, ३, १०, ११, २५ (११।४४ बाद), दिसं. २, ३, ४, फर. १५ (६।३६ बाद) ।	१३ अप्रै. से १३ मई १४ जून ,, १५ जुला. १६ अक्टू. ,, १४ दिसं. १२ फर. ,, १३ मार्च	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३० (२६।४१ तक), जुला. २ (२७।४४ बाद), ५, ६, १६, २२, २४, ३०, अग. २, १३, १८, २०, २४ (२३।१४ तक), २८, २६, सितं. ४, २३, अक्टू. १४, २३, २४, नवं. २, ३, १०, ११, २५ (११।४४ बाद), दिसं. २, ३, ४, जन. २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ (६।३६ बाद) ।	२० जून से वर्षान्त तक
वृश्चिक	जुला. १६, २२, २४, २८, २६, अग. २, ६, ७, १३, १८, २०, २४, २८, २६, सितं. २, ३, २१, २२, अक्टू. १४, नवं. २४, २५ (११।४४ तक), दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १० ।	१४ मार्च से १२ अप्रै. १४ मई ,, १३ जून १६ जुला. ,, १५ अग. १५ नवं. ,, १२ जन.	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २ (२७।४४ तक), ५, ६, १६, २२, २४, २८, २६, अग. २, ६, ७, १३, १८, २०, २४, २८, २६, सितं. २, ३, २१, २२, अक्टू. १४, १६, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५ (११।४४ तक), दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ (६।३६ तक) ।	वर्षारम्भ से १६ जून तक
धनु	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, अग. १८, २०, २४, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २८, नवं. २, ३, १०, ११, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. १५ ।	१३ अप्रै. से १३ मई १४ जून ,, १५ जुला. १६ अग. ,, १५ सितं. १५ दिसं. ,, ११ फर.	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, १६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. ६, ७, १३, १८, २०, २४, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५, दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. १५ ।	२० जून से वर्षान्त तक
मकर	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, ५, ६, १६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, सितं. २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २३, २४, २८, नवं. १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३६ बाद), ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ ।	१४ मई से १३ जून १६ जुला. ,, १५ अग. १६ सितं. ,, १५ अक्टू. १३ जन. ,, १३ मार्च	जून २२, २३, २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, ५, ६, १६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, १८, २०, २४, २८, २६, सितं. २, ३, ४, २१, २२, २३, अक्टू। १४, १६, २३, २४, २८, नवं. १०, ११, २४, २५, दिसं. २ (१७।३६ बाद), ३, ४, १२, १३, जन.. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ ।	वर्षारम्भ से १६ जून तक
कुम्भ	जून २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, ५, ६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, १३, १८, २०, २४, २८, २६, सितं. ४, अक्टू. १६, २३, २४, नवं. २, ३, १०, ११, २५ (११।४४ बाद), दिसं. २ (१७।३६ तक), १२, १३, फर. १५ (६।३६ बाद) ।	१४ मार्च से १२ अप्रै. १४ जून ,, १५ जुला. १६ अग. ,, १५ सितं. १६ अक्टू. ,, १४ नवं. १२ फर. ,, १३ मार्च	जून २४, २६, २७, ३०, जुला. १, २, ५, ६, २२, २४, २८, २६, ३०, अग. २, १३, १८, २०, २४, २८, २६, सितं. ४, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २३, २४, नवं. २, ३, १०, ११, २५ (११।४४ बाद), दिसं. २ (१७।३६ तक), १२, १३, जन. ३१, फर. ६, १०, १५ (६।३६ बाद) ।	पूरा वर्ष
मीन	जुला. १६, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, १३, २०, २४, २८, २६, सितं. २, ३, २१, २२, २३, अक्टू. १४, नवं. २४, २५ (११।४४ तक), दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १० ।	१४ मार्च से १३ मई १६ जुला. ,, १५ अग. १६ सितं. ,, १५ अक्टू. १५ नवं. ,, १४ दिसं.	जून २२, २३, २६, २७, ३०, जुला. १, २, ५, ६, १६, २४, २८, २६, ३०, अग. २, ६, ७, १३, २०, २४, २८, २६, सितं. २, ३, २१, २२, २३, अक्टू. १४, १६, २३, २४, २८, नवं. २, ३, १०, ११, २४, २५ (११।४४ तक), दिसं. २, ३, ४, १२, १३, जन. १८, २६, २७, २८, ३१, फर. ६, १०, १५ (६।३६ तक) ।	२० जून से वर्षान्त तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, उपनयन, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश तथा विपणादि मुहूर्त्त (सं. २०४५)

वि. सं. २०४५ से २१२६ तक के अधिक मास

वि. संवत्	शक संवत्	ई. सन्	अधिक मास
२०४५	१९१०	१९८८	ज्येष्ठ
२०४८	१९१३	१९९१	वैशाख
२०५०	१९१५	१९९३	भाद्रपद
२०५३	१९१८	१९९६	आषाढ़
२०५६	१९२१	१९९९	ज्येष्ठ
२०५८	१९२३	२००१	आश्विन
२०६१	१९२६	२००४	श्रावण
२०६४	१९२९	२००७	ज्येष्ठ
२०६७	१९३२	२०१०	वैशाख
२०६९	१९३४	२०१२	भाद्रपद
२०७२	१९३७	२०१५	आषाढ़
२०७५	१९४०	२०१८	ज्येष्ठ
२०७७	१९४२	२०२०	आश्विन
२०८०	१९४५	२०२३	श्रावण
२०८३	१९४८	२०२६	ज्येष्ठ
२०८६	१९५१	२०२९	चैत्र
२०८८	१९५३	२०३१	भाद्रपद
२०९१	१९५६	२०३४	आषाढ़
२०९४	१९५९	२०३७	ज्येष्ठ
२०९६	१९६१	२०३९	आश्विन
२०९९	१९६४	२०४२	श्रावण
२१०२	१९६७	२०४५	ज्येष्ठ
२१०५	१९७०	२०४८	चैत्र
२१०७	१९७२	२०५०	भाद्रपद
२१११	१९७६	२०५४	आषाढ़
२११३	१९७८	२०५६	वैशाख
२११५	१९८०	२०५८	आश्विन
२११८	१९८३	२०६१	श्रावण
२१२१	१९८६	२०६४	ज्येष्ठ
२१२४	१९८९	२०६७	चैत्र
२१२६	१९९१	२०६९	श्रावण

मुण्डन मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल (मा.स्टैं.टा.)
			१९८८ ई.		
वैशा. शु. ४	बु.	वैशा. ८	अप्रै. २०	मृग.	११।५३ से १५।३० तक
			१९८९ ई.		
पौष शु. १३	गु.	माघ ७	जन. १९	मृग.	१४।५७ तक
माघ कृ. ५	शु.	,, १५	,, २७	हस्त	
,, ,, ११	गु.	,, २१	फर. २	ज्ये.	१६।३६ तक
,, शु. ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	
,, ,, १०	बु.	फाल्गु. ४	,, १५	मृग.	

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
			१९८८ ई.		
वैशा. शु. ५	गु.	वैशा. ९	अप्रै. २१	आर्द्रा	१०।१७ से १२।१२ तक
			१९८९ ई.		
माघ कृ. १०	बु.	माघ २०	फर. १	अनु.	९।४६ तक
,, शु. ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	

विद्यारम्भ मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
			१९८९ ई.		
माघ कृ. ५	शु.	माघ १५	जन. २७	हस्त	
,, ,, १०	बु.	,, २०	फर. १	अनु.	९।४६ तक
,, ,, १२	शु.	,, २२	,, ३	मूल	
,, शु. ३	बु.	,, २७	,, ८	पू.भा.	७।२८ बाद
,, ,, ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	
,, ,, १०	बु.	फाल्गु. ४	,, १५	मृग.	

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त (सं २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
			१९८८ ई.		
चैत्र शु. ३	र.	चैत्र ७	मार्च २०	अश्वि.	
,, ,, १०	र.	,, १४	,, २७	पुष्य	
,, ,, ११	चं.	,, १५	,, २८	आश्ले.	९।२५ बाद
,, ,, १२	मं.	,, १६	,, २९	आश्ले.	११।२० तक
वैशा. कृ. २	चं.	,, २२	अप्रै. ४	स्वा.	
			१९८९ ई.		
माघ कृ. २	चं.	माघ ११	जन. २३	आश्ले.	
,, ,, ४	गु.	,, १४	,, २६	उ.फा.	१४।४८ बाद
,, ,, ५	शु.	,, १५	,, २७	हस्त	
,, शु. ३	बु.	,, २७	फर. ८	पू.भा.	
,, ,, ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	
,, ,, १०	बु.	फाल्गु. ४	,, १५	मृग.	

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल (मा.स्टैं.टा.)
			१९८८ ई.		
वैशा. कृ. १३	गु.	वैशा. २	अप्रै. १४	उ.भा.	१६।२५ बाद
,, शु. ४	बु.	,, ८	,, २०	मृग.	११।५३ से १५।३० तक
मार्ग. कृ. १	गु.	मार्ग. १०	नवं. २४	रोहि.	
,, ,, २	शु.	,, ११	,, २५	मृग.	
,, ,, ५	चं.	,, १४	,, २८	पुष्य	१४।४५ तक
,, ,, ११	चं.	,, २०	दिसं. ५	चित्रा	१७।५५ तक

गृहारम्भ मुहूर्त्त सं. (२०४५) सन् १९८८ ई०

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
श्राव. कृ. २	श.	श्राव. १५	जुला. ३०	घनि.	
कार्ति. कृ. ३	गु.	कार्ति. १२	अक्टू. २७	रोहि.	१४।४४ से १५।३९ तक
,, ,, ५	श.	,, १४	,, २९	मृग.	१२।२८ तक
,, शु. ७	बु.	मार्ग. २	नवं. १६	घनि.	१३।४८ से १५।५८ तक
मार्ग. कृ. २	शु.	,, ११	,, २५	मृग.	
			१९८९ ई.		
पौष. शु. १२	बु.	माघ ६	जन. १८	रोहि.	१४।४२ तक
माघ कृ. ४	गु.	,, १४	,, २६	उ.फा.	१०।४८ बाद

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त (सं. २०४५) सन् १९८८ ई०

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
वैशा. कृ. ७	शं.	चैत्र २७	अप्रै. ९	उ.षा.	२५।१४ बाद
द्वि.ज्ये. शु. ९	शु.	आषा. ११	जून २४	स्वा.	२५।११ बाद
,, ,, १०	श.	,, १२	,, २५	स्वा.	१९।४१ तक
,, ,, १२	चं.	,, १४	,, २७	अनु.	२४।५० तक
मार्ग. कृ. १०	श.	मार्ग. १९	दिसं. ३	उ.फा.	१२।४७ तक
,, ,, ११	चं.	,, २१	,, ५	चित्रा	१७।५५ तक
,, शु. १३	बु.	पौष ७	,, २१	रोहि.	९।४० से १३।४ तक
			१९८९ ई.		
माघ कृ. १०	बु.	माघ २०	फर. १	अनु.	९।४६ तक

विपणि (दुकान खोलने का) मुहूर्त्त (सं. २०४५) सन्न १९८८ ई०

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुभ काल
वैशा. शु. १	र.	वैशा. ५	अप्रै. १७	अश्वि.	९।४२ तक
,, ,, ४	बु.	,, ८	,, २०	मृग.	११।५३ से १५।३० तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख १९८९ ई.	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
पौष. शु. १२	बु.	माघ ६	जन. १८	रोहि.	१४।४२ तक
,, ,, १३	गु.	,, ७	,, १९	मृग.	१४।५७ तक
माघ कृ. १	र.	,, १०	,, २२	पुष्य	१८।१८ तक
,, ,, ४	गु.	,, १४	,, २६	उ.फा.	१०।४८ बाद
,, ,, ५	शु.	,, १५	,, २७	हस्त	
,, ,, ६	श.	,, १६	,, २८	हस्त	७।५९ तक
,, ,, ६	श.	,, १६	,, २८	चित्रा	९।११ से १६।१० तक
,, ,, ७	र.	,, १७	,, २९	चित्रा	१०।५३ तक
,, ,, १०	बु.	,, २०	फर. १	अनु.	९।४६ तक
,, शु. ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	
,, ,, १०	बु.	फाल्गु. ४	,, १५	मृग.	

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के उपरोक्त मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहित वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता हैं।

उपनयन में विशेष—अत्यावश्यकता की स्थिति में चन्द्र-बल देखकर किसी सत्तीर्थ पर बिना उपनयन मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। अपने कुल परम्परागत वेद के उपाकर्म के दिन (श्रावण शुक्ल पूर्णिमा आदि को) भी बिना मुहूर्त्त के यज्ञोपवीत संस्कार किया जा सकता है।

चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, (२) अक्षय (वैशाख शुक्ल) तृतीया, (३) विजया दशमी, (४) दीपावली (प्रदोष समय)—ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। पंजाबी ग्रामीण जनता इन्हें अणपुच्छ (जिनके लिए ज्योतिषी से पूछने की जरूरत नहीं ऐसे) मुहूर्त्त कहा करती है। इन मुहूर्त्तों में विवाहादि के अतिरिक्त कोई भी शुभ काम करने के लिए नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं।

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

नीचे सात्त्विक देव, तामस देव, श्री गणेश, दुर्गा, शिव और सरस्वती की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिए गए हैं। सात्त्विक देव प्रतिष्ठा के मुहूर्त्तों में श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती आदि भी सात्त्विक प्रकृति के देवताओं की और तामसदेव प्रतिष्ठा के मुहूर्त्तों में श्री महाकाली, भैरव, नृसिंह आदि तामस प्रकृति के देवताओं की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। यद्यपि गणेश, दुर्गा, शिव और सरस्वती—इन चार सात्त्विक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है फिर भी मुहूर्त्त-शास्त्रों में इन चारों की प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्त काल बतलाए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। इस प्रकार यह समझ लेना चाहिए कि सात्त्विक देव प्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम-कृष्ण, गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्व प्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समान रूप से प्रयोग में लाए जा सकते हैं। जबकि श्री गणेश, दुर्गा, शिव, सरस्वती—इन चार देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप में लिखे गए प्रतिष्ठा मुहूर्त्त केवल इन्हीं चारों के लिए ही हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्न काल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है।

जलाशय (बावड़ी, तालाब आदि) और उपवन की प्रतिष्ठा के लिए सात्त्विक देव प्रविष्ठ वाले मुहूर्त्तों को ही प्रयोग में लाना चाहिए।

सात्त्विक देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख १९८८ ई.	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
चैत्र शु. २	श.	चैत्र ६	मार्च १९	रेव.	
,, ,, ३	र.	,, ७	,, २०	अश्वि.	
,, ,, ६	बु.	,, १०	,, २३	रोहि.	
,, ,, ७	गु.	,, ११	,, २४	मृग.	
,, ,, ९	श.	,, १३	,, २६	पुन.	
,, ,, १०	र.	,, १४	,, २७	पुष्य	
,, ,, १५	श.	,, २०	अप्रै. २	हस्त	
वैशा. कृ. १	र.	,, २१	,, ३	चित्रा	
,, ,, २	चं.	,, २२	,, ४	स्वा.	
,, ,, ८	र.	,, २८	,, १०	उ.षा.	
,, ,, ९	चं.	,, २९	,, ११	श्रव.	९।४४ बाद
पौष कृ. १	श.	पौष १०	दिसं. २४	पुन.	९।१ बाद
,, ,, ७	शु.	,, १६	,, ३०	उ.फा.	७।४६ बाद
,, ,, ८	श.	,, १७	,, ३१	हस्त	
			१९८९ ई.		
,, ,, १०	चं.	,, १९	जन. २	स्वा	
,, शु. २	चं.	,, २६	,, ९	श्रव.	
,, ,, १२	बु.	माघ ६	,, १८	रोहि.	
,, ,, १३	गु.	,, ७	,, १९	मृग.	
माघ कृ. १	र.	,, १०	,, २२	पुष्य	
,, ,, ४	गु.	,, १४	,, २६	उ.फा.	१०।४८ बाद
,, ,, ५	शु.	,, १५	,, २७	हस्त	
,, ,, ६	श.	,, १६	,, २८	चित्रा	९।११ बाद

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख १९८९ ई.	नक्षत्र	शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ. ७	र.	माघ १७	जन. २९	चित्रा	१०।५३ तक
,, ,, ८	चं.	,, १८	,, ३०	स्वा.	
,, ,, १०	बु.	,, २०	फर. १	अनु.	९।४६ तक
,, शु. ५	शु.	,, २९	,, १०	रेव.	

तामस देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

तिथि	वार	प्रवि.	तारीख	नक्षत्र	शुद्ध काल
द्वि.ज्ये. शु. ९	शु.	आषा. ११	जून २४	चित्रा	७।३५ बाद
,, ,, १०	श.	,, १२	,, २५	स्वा.	
,, ,, १२	चं.	,, १४	,, २७	अनु.	
आषा. कृ. ५	चं.	,, २१	जुला. ४	शत.	११।३२ तक
,, ,, १०	शु.	,, २५	,, ८	अश्वि.	७।१२ तक
,, शु. ६	बु.	श्राव. ५	,, २०	हस्त	
,, ,, ७	गु.	,, ६	,, २१	चित्रा	७।९ बाद
,, ,, ८	शु.	,, ७	,, २२	चित्रा	७।३८ से ८।१३ तक
,, ,, ८	शु.	,, ७	,, २२	स्वा.	९।२५ बाद
मार्ग. कृ. १	गु.	मार्ग. १०	नवं. २४	रोहि.	
,, ,, २	शु.	,, ११	,, २५	मृग.	
,, ,, ५	चं.	,, १४	,, २८	पुष्य	
,, ,, १०	श.	,, १९	दिसं. ३	उ.फा.	
,, शु. १०	र.	पौष ४	,, १८	रेव.	८।२१ तक
,, ,, १३	बु.	,, ७	,, २१	रोहि.	९।४० से १३।१४ तक

[शेष पृष्ठ १ पर]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding

दैनिक उपयोग में आने वाले शुभ मुहूर्त निकालना सरल बात है

ज्योतिष कालशास्त्र है। शुभ काल (मुहूर्त) में किया गया कार्य निर्विघ्न रूप से शीघ्र ही सम्पन्न एवं सफल होकर सुख-समृद्धिकारक होता है—ज्योतिष की मुहूर्त-शाखा का यह सिद्धान्त है। मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा आदि के मुहूर्तों का विस्तृत विवेचन पृ० पंचांग के अन्त में दिया गया है। आभूषण, स्वर्ण, वस्त्र आदि खरीदना, पहनना, यात्रा आरम्भ करना, मुकद्दमा दायर करना, ग्रह-शान्त्यर्थ, रत्न धारण करना, किसी परीक्षा-प्रतियोगिता या नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भरना आदि-आदि कार्यों के शुभ मुहूर्त जानने के लिए अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। अगले पृष्ठों पर हमने तीन शुभ योगों (सर्वार्थसिद्धि, रवि और सिद्धि योगों) के आरम्भ और समाप्त होने की तारीखें एवं समय (भा. स्टें. टा.) दिया है। इन योगों के समय जो कार्य किए जाएं वे सफल होते हैं।

सर्वार्थसिद्धि आदि योगों के बारे में आवश्यक विवरण नीचे दिया जा रहा है—

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग

वारों का विशेष नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर 'सर्वार्थसिद्धि योग' बनते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृह-प्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतिपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिक मास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थसिद्धि योग बनता है, उसे 'अमृतसिद्धि योग' की विशेष संज्ञा दी गई है। अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें 'गुरु पुष्यामृत' भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योगों को कोष्ठकों में दिया गया है। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे कोष्ठक के दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सार्वार्थसिद्धि योगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय आदि विवाह ही करना चाहिए—ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न-शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग जिन्हें 'गुरु पुष्यामृत' कहा जाता है, अत्यन्त शुभ माने गए हैं।

रवि योग

रवि योग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है—रवि योग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है ("कुयोग विध्वंस-कराः शुभेषु")। इस योग में वे सभी काम किए जा सकते हैं जो सर्वार्थसिद्धि योगों में किए जा सकते हैं।

सिद्धि योग

सिद्धि योग भी सर्वार्थसिद्धि और रवि योगों की भांति ही महत्वशाली है। सर्वार्थसिद्धि और रवि योगों में किए जाने वाले सभी कार्य इनमें भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि सिद्धि योग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग

(बहुमूल्य चीजें खरीदने के लिए विशेष मुहूर्त)

यद्यपि पूर्वोक्त तीन, (सर्वार्थसिद्धि आदि) शुभ योगों में भी जमीन, गहने, हीरे-जवाहरात, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टेलीविजन, आभूषण, घोड़ा, गाय-भैंस आदि बहुमूल्य चीजें खरीदी जा सकती हैं, तथापि इसके लिए त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग ज्यादा महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि कोई चीज त्रिपुष्कर योग के समय खरीदी जाए तो वह निकट भविष्य में तिगुनी, द्विपुष्कर योग में खरीदी जाए तो दुगुनी हो जाती है। अतः इन योगों में बहुमूल्य चीजें खरीदिए या बैंक में रुपया जमा करवाइए। इन योगों में मुकद्दमा दायर करना तथा दवा खरीदना अच्छा नहीं समझा जाता।

इन योगों के समय अपनी कोई कीमती चीज बेचिए नहीं, अन्यथा आगे चलकर उससे तिगुनी या दुगुनी बेचने की स्थिति पैदा हो सकती है। धन या अन्य सम्पत्ति के संचय के लिए ये योग अद्वितीय हैं।

यदि इन योगों में कोई चीज गुम हो जाए तो निकट भविष्य में उससे दुगुनी, तिगुनी हानि हो सकती है, अतः सावधान रहना चाहिए।

अशुभ योग

हुताशन, क्रकच, विष, काल वेला, यमघण्ट आदि कुछ योग अशुभ माने गये हैं। ये योग भी वार, नक्षत्र और तिथियों के योग (मेल) से बनते हैं। इन योगों में किया कार्य विफल होता है। मुहुर्त्त शास्त्रकारों का मत है कि जहां 'सर्वार्थसिद्धि' रवि योग और सिद्धि नाम वाले शुभ योग हों वहां इन (हुताशन आदि) अशुभ योगों का कुप्रभाव नष्ट हो जाता है। यही कारण है हमने इन अशुभ योगों का प्रारम्भ और समाप्ति काल यहां नहीं दिया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर्वार्थसिद्धि योग (सं. २०४५ वि.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति तारीख	समाप्ति समय
(सन् १९८८ ई.)		(सन् १९८८ ई.)	
मार्च २०	सू. उ.	मार्च २१	०।३०
,, २२	सू. उ.	,, २२	२३।३३
,, २३	सू. उ.	,, २४	सू. उ.
,, २६	३।४७	,, २६	सू. उ.
,, २७	६।२५	,, २८	सू. उ.
,, २८	सू. उ.	,, २८	९।२५
,, २९	सू. उ.	,, २९	१२।३२
अप्रैल (६	सू. उ.	अप्रैल ७	२।४९)बु.
,, १०	सू. उ.	,, १०	२३।५७
,, ११	सू. उ.	,, ११	२२।२२
,, (१५	१४।२२	,, १६	सू.उ.)शु.
,, १७	सू. उ.	,, १७	१०।५४
,, १९	सू. उ.	,, १९	९।१५
,, २०	सू. उ.	,, २१	सू. उ.
,, २२	११।५४	,, २३	सू. उ.
,, २४	सू. उ.	,, २४	१६।५६
(मई ४	सू. उ	मई ४	८।५४)बु.
,, ८	५।२६	,, ८	सू. उ.
,, १२	२२।२८	,, १३	सू. उ.
(,, १३	सू. उ.	,, १३	२१।८)शु.
,, १६	१८।३७	,, १७	सू. उ.
,, १८	सू. उ.	,, १८	१९।१८
,, १९	२०।३५	,, २०	सू. उ.
,, २०	सू. उ.	,, २०	२२।३१
,, २८	१६।१९	,, २९	सू. उ.
,, ३०	१७।१२	,, ३१	सू. उ.
जून ४	११।१७	जून ५	सू. उ.
,, ९	सू. उ.	,, १०	३।३३
,, १०	सू. उ.	,, ११	२।५४
,, १३	सू. उ.	,, १४	सू. उ.
,, १६	सू. उ.	,, १७	सू. उ.
,, १७	सू. उ.	,, १७	६।३८
,, २२	२०।५३	,, २३	सू. उ.
,, २५	सू. उ.	,, २६	२।१५
,, २७	सू. उ.	,, २८	२। २

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति तारीख	समाप्ति समय
जुलाई १	१९। २	जुलाई २	सू. उ.
,, २	सू. उ.	,, २	१६।४८
,, ५	११। ६	,, ६	सू. उ.
,, ७	सू. उ.	,, ८	सू. उ.
,, ८	सू. उ.	,, ८	८।२४
,, ११	सू. उ.	,, १२	सू. उ.
,, १४	सू. उ.	,, १५	सू. उ.
,, २०	सू. उ.	,, २१	सू- उ.
,, २३	सू. उ.	,, २३	११। १
,, २५	सू. उ.	,, २५	११।४५
,, २९	सू. उ.	,, ३०	२।११
अगस्त २	सू. उ.	अगस्त २	१६।३३
,, ४	सू. उ.	,, ४	१४। ९
(,, ६	१४। १	,, ७	सू. उ.)श.
(,, ८	सू. उ.	,, ८	१६।५)चं.
(,, ११	सू. उ.	,, ११	२२।३८)गु.
,, १७	सू. उ.	,, १७	१३।५०
,, २६	सू. उ.	,, २६	१२।५८
,, २९	४।१५	,, २९	सू. उ.
(,, ३०	२३।२३	,, ३१	सू. उ.)मं.
(सितं. ३	सू. उ.	सितं. ३	२०।४४)श.
,, ११	१३।४७	,, १२	सू. उ.
,, १९	३।५५	,, १९	सू. उ.
,, २५	१५।१८	,, २६	सू. उ.
(,, २७	९।४७	,, २८	सू. उ.)मं.
,, २९	५।४४	,, २९	सू. उ.
अक्तू. ९	सू. उ.	अक्तू. ९	२३।४
(,, ९	२३। ४	,, १०	सू. उ.)र.
,, १६	९।४४	,, १७	सू. उ.
,, २३	सू. उ.	,, २३	२३।१४
(,, २५	सू. उ.	,, २५	१८।२०)मं.
,, २६	१६।१८	,, २७	सू. उ.
,, ३१	१५।४९	नवं. १	सू. उ.
नवं. १	१८। २	,, २	सू. उ.
,, ४	सू. उ.	,, ५	३। ४
(,, ६	सू. उ.	,, ७	सू. उ.)र.

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति तारीख	समाप्ति समय
नवं. १०	४३। ३	नवं. ११	सू. उ.
,, २०	सू. उ.	,, २०	८। ०
,, २३	२।२९	,, २३	सू. उ.
,, २३	सू. उ.	,, २४	सू. उ.
,, २८	०।४४	,, २८	सू. उ.
,, २८	सू. उ.	,, २९	२।२८
,, २९	सू. उ.	,, ३०	४।५२
दिसं. २	सू. उ.	दिसं. २	१०।५३
(,, ४	सू. उ.	,, ४	१६।४७)र.
(,, ७	२१।५३	,, ८	सू. उ.)बु.
,, ८	सू. उ.	,, ८	२२।२८
,, ११	२१।१६	,, १२	सू. उ.
,, १२	२०।१०	,, १३	सू. उ.
,, १८	१२।५७	,, १९	सू. उ.
,, २०	१०।३६	,, २१	सू. उ.
,, २१	सू. उ.	,, २२	सू. उ.
,, २५	९।५१	,, २६	सू. उ.
,, २६	सू. उ.	,, २६	११।२०
,, २७	सू. उ.	,, २७	१३।२७
सन् १९८९ ई.		सन् १९८९ ई.	
(जन. ४	सू. उ.	जन. ५	सू.उ.)बु.
,, ८	सू. उ.	,, ९	४।१४
,, ९	सू. उ.	,, १०	२।२८
(,, १३	१९।३६	,, १४	सू.उ.)शु.
,, १५	सू. उ.	,, १५	१७।१५
,, १७	सू. उ.	,, १७	१६। २
,, १८	सू. उ.	,, १९	सू. उ.
,, २०	१६।४८	,, २१	सू. उ.
,, २२	सू. उ.	,, २२	१९।३०
फर. ५	सू. उ.	फर. ५	१४।३०
,, १०	२।४२	,, १०	सू. उ.
(,, १०	सू. उ.	,, ११	०।४४)शु.
,, ११	०।४४	,, ११	सू. उ.
,, १३	२१।२७	,, १४	सू. उ.
,, १५	सू. उ.	,, १५	२१।५३
,, १६	२२।५३	,, १७	सू. उ.

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति तारीख	समाप्ति समय
फर. १७	सू. उ.	फर. १८	०।२२
,, २५	१९।१३	,, २६	सू. उ.
,, २८	०।१५	,, २८	सू. उ.
मार्च ५	१।२४	मार्च ५	सू. उ.
,, ९	१२।३१	,, १०	सू. उ.
(,, १०	सू. उ.	,, १०	९।४७)शु.
,, १०	९।४७	,, ११	सू. उ.
,, १३	सू. उ.	,, १४	३।३४
(,, १४	३।३४	,, १४	सू.उ.)चं.
,, १६	सू. उ.	,, १७	६। २
,, २२	१९।२८	,, २३	सू. उ.
,, २५	सू. उ.	,, २६	४।११
,, २७	६।३७	,, २८	सू. उ.
अप्रैल १	१०।४६	अप्रैल २	सू. उ.
,, ५	२।४२	,, ५	सू. उ.
,, ६	सू. उ.	,, ७	सू. उ.

रवि योग (सं. २०४५ वि.)

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्ति तारीख	समाप्ति समय
(सन् १९८८ ई.)		(सन् १९८८ ई.)	
मार्च २१	०।३०	मार्च २१	२३।३९
,, २२	२३।३३	,, २४	०।१३
,, २६	३।४७	,, २८	९।२५
,, ३१	१८।२५	अप्रैल १	२०।५५
अप्रैल ८	२।४१	,, ९	२। ९
,, १९	९।१५	,, २०	९।२३
,, २१	१०।१७	,, २२	११।५४
,, २४	१६।५६	,, २६	२३। ४
,, २७	७।२८	,, २८	१।५८
,, ३०	६।२७	मई १	७।५२
मई ७	६।३६	,, ८	५।२६
,, १८	१९।१८	,, १९	२०।३५
,, २०	२२।३१	,, २२	१। ४
,, २४	७। १	,, २४	२१।५[illegible]
,, २५	१०। १	,, [illegible]	[illegible]
,, २९	१७। ९	,, [illegible]	[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रवि योग, सिद्धि योग, त्रिपुष्कर योग तथा द्विपुष्करादि योग (सं. २०४५ वि.)

रवियोग

प्रारम्भ तारीख	प्रारम्भ समय	समाप्त तारीख	समाप्त समय
जून ५	६।४०	जून ६	८। ८
,, १७	६।३८	,, १८	६। ०
,, १९	११।४८	,, २०	१४।५१
,, २३	२३।२१	,, २६	२।१५
,, २८	२। २	,, २९	०।५३
जुलाई ४	१२।४४	जुलाई ५	११। ६
,, ५	१८।२५	,, ६	९।४९
,, १६	१९। २	,, १७	२२। ५
,, १९	११।१६	,, २०	१७।५२
,, २०	४।२१	,, २१	७। ९
,, २३	११। १	,, २५	११।४५
,, २७	९।२४	,, २८	७।१९
अग. ३	१५। १	अग. ४	१४। ९
,, १५	७।४४	,, १६	१०।५२
,, १६	१४।२७	,, १७	१३।५०
,, १८	१६।२५	,, १९	१८।२८
,, २१	२०।२९	,, २३	१९।२४
,, २५	१५।३५	,, २६	१२।५८
सितं. १	२०।३९	सितं. २	२०।१९
,, १४	२२।२१	,, १६	०।३४
,, १७	२।१७	,, १८	३।२६
,, २०	३।४५	,, २२	१।२५
,, २३	२०।५८	,, २४	१८।१२
अक्तू. १	४।२०	अक्तू. २	४।५०
,, १४	७।५१	,, १५	९। १
,, १६	९।४४	,, १७	१०। ०
,, १९	९। ०	,, २१	६। ७
,, २३	१।४३	,, २३	१९।१६
,, २३	२३।१४	,, २४	२०।४३
,, ३०	१४।२०	,, ३१	१५।४९
नवं. १२	१५।१८	नवं. १३	१५।२२
,, १४	१५। ८	,, १५	१४।३७
,, १७	१२।४२	,, १९	९।२३
,, १९	९।४७	,, २०	८। ०
,, २२	४।१३	,, २३	२।२९
नवं. २९	२।२८	नवं. ३०	४।५२
दिसं. ११	२२।१६	दिसं. १२	२०।१०
,, १३	१९।१३	,, १४	१८। १
,, १७	१४।१४	,, १९	११।४३
,, २१	९।४०	,, २२	९। ०
,, २८	१६। ५	,, २८	१९।२२
,, २९	१९।२२	,, ३०	२२।१२
(सन् १९८९ ई.)		(सन् १९८९ ई.)	
जन. १०	२।२८	जन. १०	२०।५२
,, ११	०।४९	,, ११	२२।४९
,, १२	२११७	,, १३	१९।३६
,, १५	१७।१५	,, १७	१६। २
,, १९	१६। ९	,, २०	१६।४८
,, २८	९।११	,, २९	१२। ५
फर. ९	४।५९	फर. १०	२।४२
,, ११	०।४४	,, ११	२३। ९
,, १३	२१।२७	,, १५	२१।५३
,, १८	०।२२	,, १९	०।१६
,, १९	६।५६	,, २०	४।३४
,, २६	२१।५७	,, २८	०।१५
मार्च १०	९।४७	मार्च ११	७।२३
,, १२	५।२०	,, १३	४।१०
,, १५	३।४०	,, १७	६। २
,, २०	१३।२४	,, २१	१६।२४
,, २८	८।३८	,, २९	१०। ८
अग. २	सू.उ.	अग. २	१६।३३
सितं. १९	३।५५	सितं. १९	सू.उ.
,, २९	५।४४	,, २९	सू.उ.
अक्तू. ७	१६।५४	अक्तू. ८	सू.उ.
,, १६	९।४४	,, १७	सू.उ.
,, २६	१६। ८	,, २७	सू.उ.
नवं. ४	सू.उ.	नवं. ५	३। ४
,, १३	सू.उ.	,, १३	१५।२२
,, २३	सू.उ.	,, २४	१। १
दिसं. २	सू.उ.	दिसं. २	१०।५३
,, १२	२०।१०	,, १३	सू.उ.
,, २१	सू.उ.	,, २१	९।४०
(१९८९)		(१९८९)	
जन. ९	सू.उ.	जन. १०	२।२८
फर. ६	सू.उ.	फर. ६	१२।२२
,, १६	२२।५३	,, १७	सू.उ.
,, २५	१९।१३	,, २६	सू.उ.
मार्च १६	सू.उ.	मार्च १७	६। २
,, २५	सू.उ.	,, २६	४।११
अप्रै. ५	२।४२	अप्रै. ५	सू.उ.
दिसं. २५	सू.उ.	दिसं. २५	९।५१
(१९८९)		(१९८९)	
जन. ४	४।२४	जन. ४	७।११
,, ८	२२।४८	,, ९	४।१४
मार्च ४	११।४४	मार्च ५	१।२४

सिद्धि योग

(सन् १९८८ ई.)		(सन् १९८८ ई.)	
अप्रै. ११	सू.उ.	अप्रै. ११	२२।२२
मई १९	२०।३५	मई २०	सू. उ.
,, २८	१६।१९	,, २९	सू. उ.
जून १६	सू.उ.	जून १७	सू. उ.
,, २५	सू.उ.	,, २६	२।१५
जुला. ५	११। ६	जुला. ६	सू. उ.
,, १४	सू.उ.	,, १४	१३।५१
,, २३	सू.उ.	,, २३	११। १

त्रिपुष्कर योग

(१९८८)		(१९८८)	
अप्रै. २३	सू.उ.	अप्रै. २३	१४।१०
मई ३	सू.उ.	मई ३	९। २
,, ७	२१।५६	,, ८	५।२६
जून २१	१७।५९	जून २२	२।४४
जुला. ५	११। ६	जुला. ६	सू.उ.
,, १०	सू.उ.	,, १०	८।३४
अग. २०	सू.उ.	अग. २०	९। ६
,, २८	१२।३८	,, २९	४।१५
सितं. ७	०।३४	सितं. ७	१।५२
अक्तू. २२	सू.उ.	अक्तू. २२	१९।५०
नवं. ५	१२।३९	नवं. ६	६। ५
दिसं. २०	१०।३६	दिसं. २०	१४।३७
,, २४	१०।४१	,, २५	सू.उ.

द्विपुष्कर योग

(१९८८)		(१९८८)	
अप्रै. ३	१६। ४	अप्रै. ४	०।३८
मई १७	१८।४०	मई १८	२।११
,, २८	सू.उ.	,, २८	१६।१९
जुला. ३०	सू.उ.	जुला. ३०	२३।२८
अक्तू. १	१०। ५	अक्तू. २	४।५०
(१९८९)		(१९८९)	
जन. २८	१६।१०	जन. २९	१२। ५
फर. ७	९।५८	फर. ८	६।४४
अप्रै. २	२२।४७	अप्रै. ३	सू.उ.

दो प्रकार के सिद्धियोग :—मूहूर्त्त-शास्त्रों में सिद्धियोग दो प्रकार के वतलाए गए हैं—

(१) तिथि और वारों के योग से उत्पन्न सिद्धि योग। इसके अनुसार शुक्रवार को नन्दा, वुधवार को भद्रा, शनिवार को रिक्ता, मंगलवार को जया और गुरुवार को पूर्णा तिथि होने पर सिद्धियोग होता है।

(२) वारों और नक्षत्रों के योग से उत्पन्न सिद्धि योग इसके अनुसार रविवार को मूल, सोमवार को श्रवण, मंगलवार को उ.भा. वुधवार को कृत्तिका, गुरुवार को पुनर्वसु, शुक्रवार को पू.फा. तथा शनिवार को स्वाती नक्षत्र होने पर सिद्धि योग बनता है।

यहाँ दिए गए सिद्धि योग वार और नक्षत्र से उत्पन्न हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत द्वारा अन्तरिक्ष विज्ञान-क्षेत्र में प्रगति

लेखकः—डा. शक्तिधर शर्मा

आजकल अन्तरिक्ष-विज्ञान का क्षेत्र बहुत बड़ा हो गया है। पुराने समय में तो "ज्योतिष-विज्ञान" के अन्तर्गत ही आकाश में घटने वाली प्रत्येक घटना का अध्ययन किया गया। परन्तु अब वर्तमान युग में ऋतु-विज्ञान (Meteorology) तथा आकाश में भेजे जाने वाले आदमी के बनाए कृत्रिम अन्तिरक्ष यान भी इसी में शामिल हैं। अन्तिरक्ष-यात्रा सम्बन्धी विषय भी इसी क्षेत्र के अन्तर्गत मान लिए गए हैं। आजकल वैज्ञानिकों में परस्पर काफी मतभेद है कि कौन-२ से विषय इस परिधि में लिए जाएं ? परन्तु अधिकतर विद्वान् Aeronomy, Astronomy तथा Astrophysics आदि सभी विषय अन्तरिक्ष-विज्ञान में ही मानते हैं। हम यहां भारत द्वारा इन विज्ञान-क्षेत्रों में की गई उन्नति के बारे में कुछ विवरण दे रहे हैं।

अप्रैल १९७५ में आर्यभट उपग्रह छोड़ने के बाद भारत अन्तरिक्ष-विज्ञान के क्षेत्र में उतर चुका है। इसके बाद रोहिणी II आदि योजनाओं में भले ही पूर्ण सफलता न मिली हो, परन्तु इन सभी प्रयोगों से वैज्ञानिकों को काफी कुशलता प्राप्त हुई है। सन् १९८४ की ५वीं योजना के अन्तर्गत APPLE (Ariane Passenger Payloed experiment) जिसका भार ६७० किलो ग्राम था। एरियाने राकेट की सहायता से कक्षा में लाया गया और इसे पृथ्वी की गति के सापेक्ष स्थिर बनाकर टिका दिया गया। भले ही इसके उत्क्षेपण (Lauching) में यूरोपियन स्पेस-एजैन्सी की सहायता की गई। परन्तु इसके निर्माण में जो कुशलता भारतीय वैज्ञानिकों ने दिखलाई, उससे हमारा देश अन्तरिक्ष-विज्ञान के आठ देशों में गिना जाने लगा है। इसका सन्देश-संचार-उपकरण स्पेस-एजैन्सी-ऐप्लिकेशन-सैण्टर, अहमदाबाद ने तथा इसकी संरचना हिन्दुस्तान ऐरोनाटिक्स लिमिटेड ने तैयार की। बैंगलूर के ISRO सैटेलाइट केन्द्र ने संरचना के साथ-२ इलैक्ट्रोनिकी और थर्मल पावर एवं ट्रैकिङ्ग-कमाण्ड-सिस्टम बनाने में श्लाघनीय सफलता प्राप्त की। त्रिवेन्द्रम के विक्रम साराभाई केन्द्र ने इसे स्थिर बनाने की तकनीक ज्ञात की। ऐसे सैटेलाईट पृथ्वी के घूमने के साथ-२ इस ढंग से घुमाए जाते हैं कि इनकी स्थिति पृथ्वी के सापेक्ष एक ही स्थान पर रहती है। APPLE १०२° पूर्व सुमात्रा के ऊपर टिका दिया गया और इसका एंटीना नागपुर की तरफ रखा गया। नई दिल्ली, गौहाटी, कलकत्ता, भुवनेश्वर, बम्बई, विशाखापटनम और पूना में आटोमैटिक फोटो ट्रांसमिशन सैंटर बनाए गए। इसके बाद INSAT-I छोड़ा गया, जो कि ७४° पू. रेखांश पर टिका दिया। लेह-ऐजवाल, कैवरत्ती, पोर्टब्लेयर, कार, निकोबार, देहली और मद्रास के केन्द्रों में इसके माध्यम से दूर के स्थानों के साथ सन्देश संचार होने लगे। INSAT योजनाओं में काफी सफलताएं मिलीं। इनके अतिरिक्त अमेरिका, जापान आदि के सैटेलाइट्स की सहायता से भी भारत ने काम लेना प्रारम्भ कर दिया। इनके माध्यम से तूफान, आंधी, बादल, वर्षा, बर्फ आदि के विषय में जानकारी मिलती है तथा रेडियो, टेलीवीजन के प्रसारण में भी सहायता प्राप्त होती है। इनके माध्यम से टैली काम्यूनिकेन्स (दूर सञ्चारण) में भी काफी सुविधा हो जाती है। अतः पोस्ट एवं टैलीग्राफ विभागों ने भी बहुत बड़ी योजनाएं INTELSAT आदि प्रारम्भ कीं और इनमें बहुत प्रशंसनीय सफलता प्राप्त की।

जैसा कि हम पहिले ही बता चुके हैं—"अन्तरिक्ष विज्ञान" शीर्षक में भौतिक-ज्योतिष-विज्ञान आदि क्षेत्र भी आते हैं, अतः हम इन क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा प्राप्त सफलताओं के संक्षिप्त विवरण भी यहां दे रहे हैं—जो कि ज्योतिष शास्त्र से अधिक सम्बन्ध रखते हैं।

सौर परिवार के विषय में कौडे कैनाल "इण्डियन इन्स्टीच्यूट आफ ऐस्ट्रोफिजिस" (I.I.A.) बैंगलूर, हैदराबाद और उदयपुर सौर-वेधशाला में काम हो रहा है। सूर्य से आ रहे अधिक ऊर्जा वाले कणों के विषय में फिजिकल रिचर्स लैबोरेटोरी (P.R.L.) अहमदाबाद और टाटा इन्स्टीच्यूट आफ फण्डामैण्टल रिसर्च (T.I.F.R.) बम्बई में अनुसन्धान कार्य चल रहा है।

पिछले वर्षों में कुछ पुच्छल तारों धूम्रकेतुओं के स्पैक्ट्रम सम्बन्धी आंकड़े भी एकत्रित किए गए। इकेपासेकी (१९६५), कोहेटूक (१९७४), वैन्नेट और (१९७५) धूम्रकेतुओं के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त की गई। इस बार १९८५-८६ में हैली धूम्रकेतु के अध्ययन में भारत ने इन्टरनैशनल हैली-वाच योजना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। I.I.A. बैंगलूर, ओस्मानिया यूनीवर्सिटी, हैदराबाद, नैनीताल की उत्तर प्रदेश-प्रान्तीय वेधशाला आदि केन्द्रों में हैली धूमकेतु के स्पैक्ट्रम तथा फोटोमीट्रिक आंकड़ों के बारे में अनुसन्धान कार्य अब भी निरन्तर चल रहा है।

कैवलूर वेधशाला में यूरेनस के बिम्ब के चारों ओर गोल कङ्कणाकार वलय का भी पता लगाया है। नैनीताल वेधशाला एवं अन्य देशों की वेधशालाओं में प्राप्त किए गए आंकड़ों की सहायता से भी इस खोज की सच्चाई के प्रमाण मिल चुके हैं और यह प्राप्ति अब सत्य मानी गई है।

सन् १९६९ से ही T.I.F.R. बम्बई, I.I.T. कानपुर, P.R.L. अहमदाबाद में अन्य देशों से मिले चन्द्रमा के धरातल से प्राप्त सैम्पल्स पर भी अनुसन्धान कार्य हुआ है। ब्रह्माण्ड किरणों के विषय में T.I.F.R., P.R.L. न्यूक्लियर फिजिक्स लैबोरेटोरी श्रीनगर, कलकत्ता एवं पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ में काफी वर्षों से अनुसन्धान कार्य चल रहे हैं। रेडियो ऐस्ट्रानामी के क्षेत्र में T.I.F.R. बम्बई तथा रमन रिसर्च इंस्टिट्यूट बैंगलूर में अनुसन्धान चल रहे हैं। इन्होंने गैलेक्टिक एवं ऐक्स्ट्रा-गैलेक्टिक रेडियो स्रोत ज्ञात करने में काफी सफलता प्राप्त की है। ऊटकमण्ड (Ooty) का ८००० म^{२} क्षेत्रफल और ३.७ मैगाहर्ट्ज वाले रेडियो टैलीस्कोप की सहायता से ०.५ से २ फ्लक्स फ्लाई (=१०$^{-२८}$ Watts/M^{२}/HZ) तक के ऊर्जा स्रोतों की खोज निरन्तर चल रही है। कोहेटूक धूम्रकेतु की प्लाज्मा पुच्छ में स्पैक्ट्रम की सूक्ष्म संरचना का अध्ययन भी नहीं हुआ। इससे नई प्राप्तियों के द्वार खुल गए हैं।

आप्टिकल ज्योतिष विज्ञान अर्थात् आंखों से दृश्य प्रकाश के माध्यम से का[...]रने वाले टैलीस्कोप्स सम्बन्धी विज्ञान के क्षेत्र में युगल तारों, नोवा, सुपर नोवा आ[...] खोज नैनीताल, हैदराबाद, कैवलूर और T.I.F.R. बम्बई आदि केन्द्रों में चल रही [...]।

[शेष [...]]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

[शेष पृष्ठ १६५ का]

ऐक्स-रे ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र में भी काफी काम चल रहा है। थुम्बा आदि स्थान, जहां पृथ्वी का चुम्बकीय आकर्षण प्रभाव काफी कम है—एतत्सम्बन्धी प्रयोगों के लिए बहुत ही उपयुक्त स्थान सिद्ध हुए हैं। ऐक्स-रे ऐस्ट्रानामी आजकल का बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय है। इससे ऐक्स-रे, जुड़वें तारागों, ऐक्स-रे फल्सर्स आदि तथा Black holes अर्थात् अन्तरिक्ष में अदृश्य परन्तु अत्यधिक ऊर्जा वाले काले पदार्थ रन्ध्रों का पता चलता है। TERLS थुम्बा आदि से छोड़े गए बैलून और राकेटों के माध्यम से ऐक्स-रे ज्योतिष विज्ञान में अनुसन्धान कार्य चल रहे हैं। हैदराबाद के अनुसन्धान-ग्रुप के वेधों से यह बात सिद्ध हो गई है कि थोड़ी X-Ray ऊर्जा वाले स्रोत भी अन्तरिक्ष में विद्यमान हैं।

अन्त में हम यह कह देना चाहते हैं कि भारतवर्ष में अन्तरिक्ष-विज्ञान के सभी क्षेत्रोंमें काफी प्रगति हुई है और अनुसन्धान कार्यक्रम योजनाएं निरन्तर चल रहे हैं। वह दिन दूर नहीं, जबकि हमारा देश भी अन्तरिक्ष-विज्ञान सम्बन्धी अनुसन्धान कार्यों में प्रगतिशील देशों के साथ संघर्ष में आगे बढ़ने के प्रयत्नों में सफलता प्राप्त करेगा। आशा है कि यहां के युवा वैज्ञानिकों को यूरेनस ग्रह के वलय (Rings) आदि ज्योतिष-विज्ञान सम्बन्धी मौलिक प्राप्तियों तथा राकेश शर्मा के स्पेस मिशन्स में हिस्सा लेने जैसी अन्तरिक्ष-विज्ञान सम्बन्धी उपलब्धियों से उत्साह एवं प्रेरणाएं मिलेंगी और वे अपने देश की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ज्योतिष-अन्तरिक्ष-विज्ञान के क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देते

[शेष पृष्ठ ३४ का]

त्रिभेशो यदा वा जन्मपोचेर्थपहेशो यदा वास्तगो याङ्गनाथस्त्रिकस्थः।
तदा हायने मानवानामरिष्टं ध्रुवं वायुरोगो भवेद्व योगात् ॥४८॥

यदि त्रिराशीश, जन्म लग्नेश, मुन्थेश अथवा वर्ष लग्नेश अस्त हो या त्रिक में स्थित हो तो उस वर्ष जातक को वात रोग से निश्चित कष्ट हो।

शरीरे ज्वरं पित्तरोगादि बाधां प्रलापं तथा दाह शूलादिकं च।
सरक्तं विरेकातिसारं च घातं तथाग्नेर्भयं चास्तगौ सूर्य भौमौ ॥४९॥

सप्तम में सूर्य, मंगल होने पर जातक को ज्वर, पित्तरोग, प्रलाप (?), दाह, शूल, खूनी बवासीर, विरेक, चोट और आग से कष्ट होता है।

यद्राशिगौ सूर्य-गुरू प्रसूतौ वर्षे स राशिः यदि चारि भावे।
भौमान्वितः स्फोटक रोग भीतिं सौम्यान्वितः सर्वरुजं तनोति ॥५०॥

जन्म के समय सूर्य और गुरु जिस राशि में हों वही राशि यदि वर्ष लग्न में छठे भाव में हो और उसमें मङ्गल स्थित हो तो फोड़ा-फुंसी (रक्त विकार) से कष्ट होता है। यदि वह शत्रुभाव गत राशि सौम्य ग्रह से युक्त हो तो (सभी प्रकार के रोग) पैदा होते हैं।

केन्द्र त्रिकोणे जननेऽर्कपुत्रो वर्षे यदा लग्नगतः स राशिः।
चन्द्रो मृगे सप्तमगो नराणां करोति मृत्युं च जलोदराद्यैः ॥५१॥

जन्म के समय शनि केन्द्र या त्रिकोण में जिस राशि में हो, वर्ष कुण्डली में वह राशि लग्न में आजाए और मकरस्थ चन्द्रमा सप्तम में स्थित हो तो जलोदर आदि रोगों से जातक की मृत्यु होती है।

तनौ जन्मनाथोऽस्तगो वर्षकाले द्विषट् [illegible]न्ध्रनाथा यदा केन्द्रगाः स्युः।
ज्वरः-कम्प-तन्द्रादि रोगाः भवन्ति [illegible]रे (यदां वास्तुल वारियोगे) ॥५२॥

जन्म के समय लग्नेश लग्न में और वर्ष लग्न में वह सप्तम में तथा द्वितीयेश, षष्ठेश और अष्टमेश केन्द्र स्थित हों तो ज्वर, कम्पन, शिथिलता आदि कष्ट होते हैं..........

[शेष पृष्ठ १९९ का]

श्री गणपति प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं २०४५)

तिथि वार प्रवि. तारीख नक्षत्र शुद्ध काल (भा.स्टैं.टा.)

१९८८ ई.

चैत्र शु. २ श. चैत्र ६ मार्च १९ रेव.
वैशा. कृ. ४ बु. ,, २४ अप्रै. ६ अनु.

१९८९ ई.

माघ कृ. ४ गु. माघ १४ जन. २६ उ.फा. १०।४८ तक

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

१९८८ ई.

वैशा. कृ. १४ शु. वैशा. ३ अप्रै. १५ उ.भा. ६।३० तक

१९८९ ई.

माघ कृ. १४ र. माघ २४ फर. ५ उ.पा.

श्री दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

१९८८ ई.

चैत्र शु. ९ श. चैत्र १३ मार्च २६ पुन.

१९८९ ई.

पौष. शु. ९ र. माघ ३ जन. १५ अश्वि.

श्री सरस्वती प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सं. २०४५)

चैत्र शु. २ श. चैत्र ६ मार्च १९ रेव.
,, ,, ९ श. ,, १३ अप्रै. २६ पुन. १०।२ बाद

१९८९ ई.

पौष शु. ९ र. माघ ३ जन. १५ अश्वि.
माघ शु. ५ शु. माघ २९ फर. १० रेव.

"सरल विवाह पद्धति"
द्वारा
हिन्दी में विवाह संस्कार कराइए।
अपने निकट के पुस्तक विक्रेता के खरीदें
अथवा प्रकाशक
रामेश्वर दास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट,
डी-36, साउथ एक्सटैंशन भाग एक
नई दिल्ली-110049 से मंगवाएँ।
मूल्य: दस रुपए / डाक खर्च अलग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रह स्थिति आलेख

आजकल गणकसंयन्त्र (Computers) से आलेख रूप ग्रह स्थितियों के चित्र बनने लग गए हैं। आधुनिक फलित ज्योतिषी लोग अपने कार्यालयों में ऐसे चित्र टांगे रखते हैं। इनके आधार पर बड़ी सरलता से ग्रह स्थिति गोचर का बोध सदैव रहता है।

ध्यान रहे—इन आलेखों से सूक्ष्म ग्रह स्थिति का ज्ञान नहीं होता परन्तु केवल दृष्टिपात मात्र से ग्रह स्थिति का आभास रहता है। सूक्ष्म ग्रह स्थिति के लिए तो आलेख बहुत बड़े बनने चाहिएं। बड़े नक्शों की शक्लों में भी ये सूक्ष्मता के लिए बनाए जाते हैं। परन्तु हम अपने पाठकों के लिए छोटे पैमाने पर वि. सं. २०४५ में ग्रह स्थिति (**निरयण भोगांशों**) का आलेख दे रहे हैं। ज्योतिषी लोग इनको काट कर दीवार पर टांग लें और इनके उपयोग का अभ्यास करें।

आलेख से ग्रह स्थिति जानने की विधि—आलेख में ग्रहों के पथ-वक्र (Curve) सारे वर्ष के लिए राशियों के साथ दिखलाए हैं। मन्द ग्रहों के लिए ऊपर नक्षत्र भी लिख दिये गए हैं। पथ-वक्रों पर ग्रहों के नाम भी दिखलाए हैं। जिस मास तारीख को ग्रह स्थिति जाननी हो उस तारीख के ऊपर लम्ब-भूत दिशा में पैमाना रखकर देखें। जिस ग्रह की स्थिति जाननी हो उसके पथ-वक्र को जहां भी पैमाना काटे उस बिन्दु के ऊपर गुजरती हुई तारीखों वाली रेखा के समानान्तर रेखा खींचें। वह राशियों वाली अक्ष रेखा को जहां काटे वहीं ग्रह की राश्यादि स्थिति होगी। जिस बिन्दु पर ग्रह का पथवक्र तारीख रेखा के समानान्तर हो जाए और आगे नीचे की तरफ आने लगे उस बिन्दु के नीचे की तारीख के लगभग वक्री होगा। यदि यह वक्र समानान्तर होकर आगे ऊपर उठे वहां ग्रह मार्गी होगा। इस प्रकार स्थूल रूप में ग्रहों के वक्र-मार्ग की लगभग तारीख का बोध हो सकता है।

इस आलेख से ग्रहों की भोगांश युतियों की लगभग तारीख तथा युतिराशि, नक्षत्र आदि भी सहज ही देखने मात्र से जाने जा सकते हैं। जहां दो ग्रहों के पथ-वक्र एक दूसरे को काटते हैं। वहां की तारीख के दिन एवं तारीख-अक्ष के समानान्तर रेखा से कटी राशि आदि स्थिति पर ही इन दोनों की युति होगी। इसी प्रकार वर्ष भर में आपस में काटने की संख्या से यह भी मालूम हो जाएगा कि ये ग्रह इस वर्ष में कितनी बार युति स्थिति में आएंगे। उदाहरणार्थ—बुध का पथ-वक्र सूर्य के पथ-वक्र को इस वर्ष भर में छः बार काटता है। अतः बुध-सूर्य की भोगांश युति इस वर्ष ६ बार होगी।

इस प्रकार सारे वर्ष ग्रह स्थिति राशिप्रवेश-वक्रमार्ग युति आदि का आपको **हमेशा** ध्यान रहेगा। इस के बोध रहने से जातक व मेदिनी फलादेश आप ग्रह-गोचर आदि से सहज ही कर सकेंगे। एक पेज पर सारी ग्रहस्थिति देखने से आपको विहङ्गम दृष्टि एवं सौविध्य प्राप्त होगा। यदि आलेख बड़ा हो तो आपको सूक्ष्मतर परिणाम प्राप्त होंगे। अगले वर्ष ऐसे बड़े आलेख देने का प्रयत्न करेंगे।

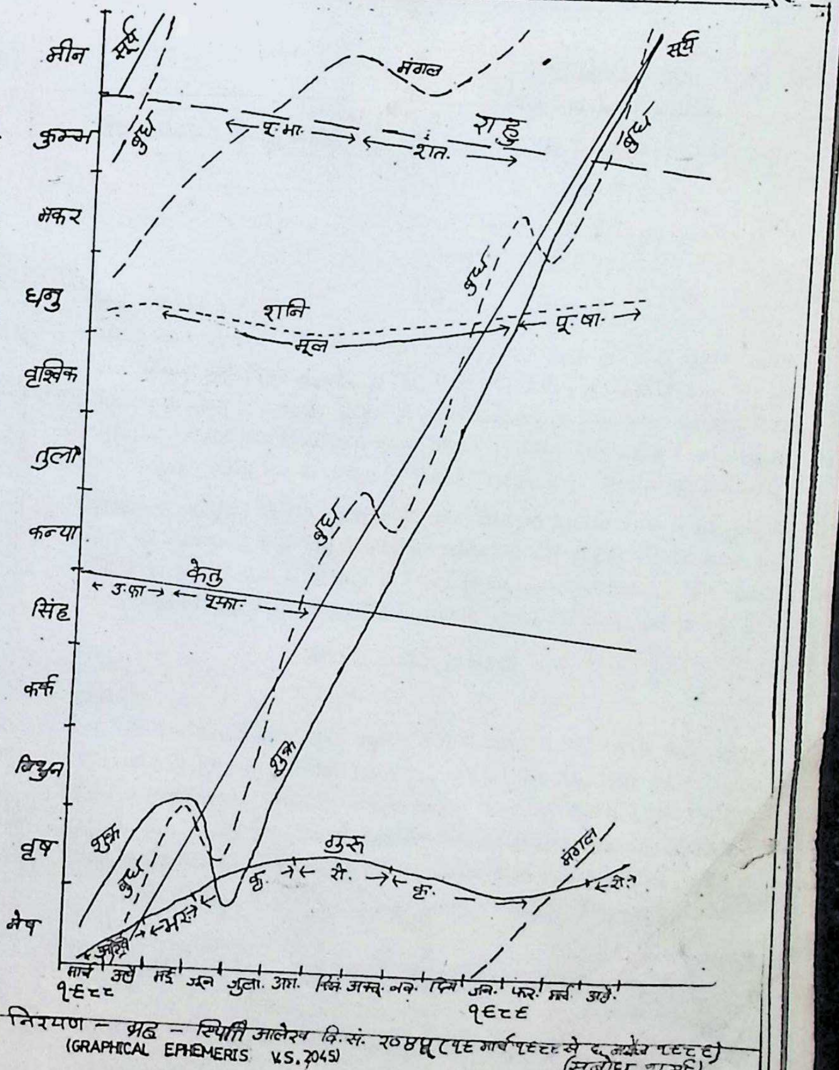

निरयण – ग्रह – स्थिति आलेख वि.सं. २०४५ (१६ मार्च १९८८ से ५ अप्रैल १९८९)
(GRAPHICAL EPHEMERIS V.S. 2045)
(सुबोध शर्मा)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by

यहां इस ग्रहण के विषय में विशेष रूप से निर्देश कर देना चाहते हैं कि यद्यपि यह सूर्य ग्रहण प्रायः सम्पूर्ण भारत वर्ष में (केवल काश्मीर-जम्मू के कुछ भागों को छोड़कर) सर्वत्र दिखाई देगा। इस ग्रहण में कुरुक्षेत्र से सूर्य बिम्ब का केवल ८.६ प्रतिशत भाग ग्रस्त दीखेगा। चण्डीगढ़ में तो केवल ६ प्रतिशत भाग ही ग्रस्त होगा। सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थों में लिखा है कि चन्द्र ग्रहण में तो चन्द्रमा का द्वादश भाग भी ग्रस्त होने पर दीखता है, परन्तु सूर्य की चमक अधिक होने से इसके ग्रहण में यदि सूर्य बिम्ब की ३ कला तुल्य (अर्थात् लगभग केवल १/८) भाग मात्र (३२ कला=१२ अंगुल=सूर्य बिम्ब) ही ग्रस्त हो तो भी उसे साधारणतया जनता नहीं देख सकती।

इसका सूतक स्नान-फल और माहात्म्य तो है ही। कुरुक्षेत्र में यह ग्रहण लगभग १ घं. १० मि. तक लगेगा (देहली में लगभग १ घं. २० मि. तक) इस पर्वकाल में ग्रहण के मध्य से पहिले एवं बाद के कुछ मिनटों तक तो यह कालिख लगे चश्मे आदि से देखा जा सकेगा, यन्त्रों से तो यह सारा समय देखा जा सकता है। नोट करें यह ग्रहण विगत वर्ष सन् १९८७ के २३ सितम्बर के ग्रहण से काफी भिन्न है। यह ग्रहण उत्तर भारत में थोड़ा ही ग्रस्त (एवं अन्तिम उत्तर पूर्वी छोर में अदृश्य) होगा, और दक्षिण के स्थान मद्रास, बैंगलूर आदि में इस ग्रहण में सूर्य बिम्ब का काफी बड़ा भाग ग्रस्त दीखेगा। जबकि २३ सितम्बर १९८७ वाले सूर्य ग्रहण में उत्तर भारत के भागों पर ग्रासमान काफी (लगभग आधा बिम्ब) था, और दक्षिण के स्थानों बैंगलूर, मद्रास आदि में यह बहुत मामूली ही ग्रसा हुआ था।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का भारत में सर्वप्रथम आरम्भ प्रातः ७ घं. २० मि. पर होगा। अतः सूतक १० सितं. १९८८ की सायं ७ बजकर २० मि. पर प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण पू. फा. नक्षत्र एवं सिंह राशि में होगा, अतः यह ग्रहण पू.फा. एवं सिंह राशि में जन्म लेने वालों के लिये विशेष अशुभ होगा।

ज. राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	कष्ट	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	मृत्यु	स्त्रीपतिकष्ट	सुख

सूर्य ग्रहण देखने की विधि—ध्यान रहे सूर्य ग्रहण नंगी आंखों से या काला चश्मा लगाकर कभी न देखें। अन्धा हो जाने का खतरा है। इसका कारण यह है कि ग्रहण के समय (विशेषतः काफी ग्रासमान या खग्रास होने पर) वे तरंगें (Optical Woves) जो आंखों को दृश्य हैं छाया के कारण कट जाती हैं-और इस तरह सूर्य की चमक खत्म हो जाने के कारण हम उसे खुली आंखों से देखने लग जाते हैं ऐसी स्थिति में आंखें तो चुंधियाती नहीं परन्तु पर्याप्त क्षणों के लिए खुली आंखों से देखने पर इन्हें पराबैंगनी (Ultra-violet rays) आदि तरंगें प्रभावित कर देती हैं, जो कि आंखों के प्रकाश-संग्राही नाड़ी संस्थान को खराब कर देती हैं। मनुष्य की आंखें तो इलैक्ट्रो मैग्नैटिक स्पैक्ट्रम के बहुत थोड़े भाग को ही देख सकती हैं। अतः वैज्ञानिक भी टैलिस्कोप आदि में भी विशेष फिल्टर आदि लगाकर वेध करते हैं। साधारण लोग पूरी तरह कालिख पुते व वैल्डिंग वाले शीशे के द्वारा सूर्य ग्रहण देख सकते हैं। यदि जल में प्रतिबिम्ब देखा जाए तब भी कोई हानि नहीं पहुंचती। आंखें खुली अवस्था में बिम्ब नहीं देख सकतीं, चुंधिया जाएंगी-परन्तु दक्षिण के मद्रास, बैंगलूर आदि स्थानों पर जहां काफी अधिक ग्रासमान होगा, जनता सावधानी बरते।

इसके अतिरिक्त ७ मार्च १९८९ का खण्डग्रास सूर्य ग्रहण का भूमण्डल पर प्रथम स्पर्श भारतीय समयानुसार रात्रि ६ घं. ४८ मि. पर होगा, और अन्तिम मोक्ष रात्रि १ घं. २६ मि. पर होगा। यह पश्चिम देशों में ही देखा जा सकेगा।

विधिपूर्वक चिकित्सा द्वारा

निसन्तान व्यक्ति सन्तान प्राप्त करें

Dr. GUPTA आयुर्वेदिक तथा ऐलोपैथिक पद्धति द्वारा चिकित्सा करती हैं तथा हमारे देश की जलवायु के अनुसार इलाज करके शारीरिक तथा मानसिक रोगों से मुक्त करती हैं। इनकी चिकित्सा द्वारा देहली तथा आस-पास के विभिन्न प्रान्तों से आकर अनेक निसन्तान दम्पत्ति सन्तान प्राप्त कर चुके हैं। Dr. Gupta इस विधि द्वारा ३० साल से सफल इलाज कर रही हैं। यदि आप अभी तक निसन्तान हैं तो एक बार अवश्य पधारें और सन्तान रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक बनायें।

कील तथा मुहासे

सुन्दरता को नष्ट कर देते हैं। अधिकांश इनका इलाज भी कम मिलता है। हमने अपने अनुभव तथा अनुसन्धान से इसकी विशेष चिकित्सा निकाली है। केवल लगाने की औषधी ही नहीं बल्कि खाने की औषधी से रक्त विकार को दूर करके ही इस रोग से निश्चित छुटकारा मिलता है। अतः आप पत्र द्वारा परामर्श लें या मिलें।

नोट—पहले पत्र द्वारा अपनी उमर, मासिक धर्म, Seminal Report आदि भेजें। उत्तर मिलने पर फिर स्वयं मिलकर Check-up करावें। जो दम्पत्ति चिकित्सा के योग्य होंगे उनका ही इलाज किया जायेगा। व्यर्थ ही किसी का पैसा तथा समय बरबाद नहीं किया जायेगा। पूरी तरह सही Test करके बताया जायेगा कि कितना समय लगेगा। निराश न होकर सम्पर्क करें। V.P.P. द्वारा औषधी भेजने का पूरा प्रबन्ध है।

मैनेजर
डॉ. गुप्ता क्लीनिक
26-ई, कमला नगर,
दिल्ली-११०००७

Manager
Dr. GUPTA'S CLINIC
26-E, Kamla Nagar,
DELHI-110007

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

अब जन्मपत्री पुस्तक रूप में

जन्म अक्षर पत्रिका

जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में
साइज : ५×७ से. मी. पृष्ठ संख्या—८
मूल्य : १.०० रु० डाक व्यय अलग
प्लास्टिक कवर : १.५० रु०

जन्माक्षर पत्रिका

पुस्तक के मुख पृष्ठ पर गणपति जी का बहुरंगी चित्र है। जन्मपत्री (टेवा) पुस्तक रूप में एक व्यक्ति की जन्मपत्री आसानी से बनाई जा सकती है। आवश्यक विवरण के साथ जन्मलग्न कुण्डली तथा चन्द्रलग्न कुण्डली दी हैं। दस पृष्ठों पर गणित व फलित आदि लिखा जा सकता है। बड़ी जन्मपत्री भी सुगमता से बनाई जा सकती है। जेब में रखने योग्य है।

साइज : ४×६½ से. मी. पृष्ठ संख्या—१६
मूल्य १.२५ रु० डाक व्यय अलग
प्लास्टिक कवर १.७५ रु०

षड्वर्गीय जन्म पत्रिका

इस पुस्तक में जन्मलग्न, चन्द्रलग्न, सूर्य स्पष्टग्रह, द्वादश भाव, चलित भाव, होरा चक्र, द्रेष्काण, सप्तमांश, द्वादशांश, पंचधामैत्री, दशा-अन्तर्दशा के कोष्ठक तथा फलित लिखने के लिए पृष्ठ दिए गए हैं। पुस्तक विशेष मोटे-चिकने कागज से तैयार कराई गई है।

साइज : ६½×९½ से. मी. पृष्ठ संख्या २८
मूल्य ३.०० रु० डाक व्यय अलग
प्लास्टिक कवर ४.०० रु०

जन्मांग पत्रिका

मुख पृष्ठ पर गणेशजी महाराज का रंगीन नयनाभिराम चित्र से सुशोभित इस पुस्तक में किसी एक व्यक्ति के जन्म का प्रारम्भिक आवश्यक विवरण, सूर्यादि स्पष्टग्रह, जन्मलग्न, चन्द्रलग्न, विंशोत्तरी-महादशा चक्र, दशा-अन्तर्दशा के कोष्ठक तथा फलित लिखने के लिए तीन पृष्ठ दिए गए हैं।

कम काम और यजमान से अधिक पारिश्रमिक प्राप्ति चाहने वालों के लिए अच्छी पुस्तक है।

साइज : ६½×९½ से. मी. पृष्ठ संख्या १२
मूल्य २.०० रु० डाक व्यय अलग
प्लास्टिक कवर ३.०० रु०

सप्तवर्गीय जन्म पत्रिका

षड्वर्गीय जन्म पत्रिका में दी गई सभी विशेषताओं के अतिरिक्त नैसर्गिक चक्र, तात्कालिक मैत्री, चक्र सप्तवर्गीय कोष्ठक आदि एवं फलादेश लिखने के लिए छः पृष्ठ दिए गए हैं।

विशेष मोटे चिकने कागज से पुस्तक तैयार की गई है।

साइज : ६½×९½ से. मी. पृष्ठ संख्या ४०
मूल्य ४.०० रु० डाक व्यय अलग
प्लास्टिक कवर ५.०० रु०

बढ़िया चिकने मोटे कागज पर छपे टेवा, जन्मपत्री, वर्षफल, विवाह चिट्ठी तथा विवाह लग्न फार्म हर समय तैयार मिलते हैं।

प्रकाशक :
नाथ पुस्तक भण्डार
दरीबा कलां, दिल्ली ११०००६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'श्री महा दुर्गासप्तशती'

वाराणसी के शीर्षस्थ विद्वान् याज्ञिक सम्राट वेणीराम गौड़, वेदाचार्य ने श्री दुर्गा-सप्तशती के शुद्ध रूप का सरल हिन्दी अनुवाद किया है। बहुत मोटे अक्षरों में छपी प्रस्तुत पुस्तक के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में पाठ के अनुरूप माँ दुर्गा का चित्र है। इसके अतिरिक्त शतचण्डी, सहस्रचण्डी, अयुतचण्डी, लक्षचण्डी प्रयोग, दुर्गापाठ-हवन, बलिदान तथा प्रत्येक अध्याय के अंत में हवन सामग्री—दुर्गा यन्त्र, सप्तशती यन्त्र, नवार्ण यन्त्र, मन्त्र घटार्गल तथा अनेक विशेष स्तोत्र भी अनुवाद सहित दिये हैं। मूल-पाठ करने अथवा अनुवाद सहित पढ़ने वालों दोनों के लिए बहुत उपयोगी है। पृष्ठ सं. ४८८ मूल्य: रुपये २१.०० डाक व्यय अलग।

'श्रीसूक्त'

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिए ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट—श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिए मंत्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र वेणीराम गौड़) ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिए मंत्र, कुबेर पूजन व श्रीयंत्र व उसकी पूजन-विधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिए हैं, जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मूल्य: ८.०० रु० डाक व्यय अलग

'मंत्र रामायण'

मनुष्य की सफलता में विपत्तियां सहायक होती हैं। इनसे टक्कर लेने का सशक्त उपाय मंत्र शक्ति है।

श्रीतुलसीदासजी कृत रामचरितमानस के दोहे-चौपाई मंत्रों का कार्य करते हैं। ऐसे ही मंत्रों का संग्रह इस पुस्तक में बाबा पारसनाथ जी ने किया है। साथ ही अनेक राम-स्तुतियां, राम-रक्षास्तोत्र—हिन्दी अनुवाद सहित आदि भी दिए हैं। इन मंत्रों का रामायण के साथ सम्पुट लगाकर पाठ करने से हरेक मनोकामना अवश्य पूरी होती है।

सप्तम संस्करण मूल्य: रुपये ८.००

डाक व्यय अलग

पूजा-पाठ की धार्मिक, ज्योतिष, चिकित्सा व कर्मकाण्ड की पुस्तकें, बहुरंगी जन्मपत्री तथा टेवा फार्म, जन्मपत्री पुस्तक रूप में, विवाह चिट्ठी, विवाह लग्न फार्म, जन्त्री, पंचांग तथा ताम्र पत्र पर श्री यंत्र, दुर्गा बीसा यंत्र, नवग्रह यंत्र, लक्ष्मी यंत्र, कुबेर यंत्र, बगलामुखी यन्त्र सभी प्रकार के यंत्र शुद्ध, सुन्दर और सस्ते मिलने का पता :—

नाथ पुस्तक भण्डार-१९४, दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष: २७५३४४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu